# تحریرات لقمان

رشحات قلم

قاری لقمان شاہد

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

# تحریرات لقمان

رشحات قلم

قاری لقمان شاہد

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اللہ کے نام سے شروع جو نہایت مہربان، رحمت والا ہے۔

# تحریرات لقمان

مؤلف : علامہ قاری لقمان شاہد حفظہ اللہ تعالی
مرتب : محمد صابر اسماعیلی قادری رضوی المعروف بہ عبد مصطفی
موضوع : متفرقات
زبان : اردو
ناشر : صابیا ورچوئل پبلی کیشن
ڈیزائننگ : پیور سنی گرافکس
سَنہ اشاعت : محرم الحرام 1444 ہجری (اگست 2022 عیسوی)
صفحات : 647
قیمت : ---

**All Rights Reserved.**
**Sabiya Virtual Publication**
Powered by Abde Mustafa Official

Contact : +919102520764 (WhatsApp)
Mail : abdemustafa78692@gmail.com

# Contents (Click on headings to direct jump)


| | |
|---|---|
| عرض مرتب | 40 |
| (1)**پہلا باب**: محبت رسول ﷺ | 43 |
| محبت رسول ﷺ اور غربت | 44 |
| محبوب کے ہاتھوں ذبح ہونا | 44 |
| ایک | 44 |
| (2)**دوسرا باب**: اصلاح معاشرہ | 46 |
| علما کا ادب | 47 |
| بیٹی، بہن کو حصہ دیں | 47 |
| بیٹی اور حق وراثت | 47 |
| علما کی مالی خدمت | 48 |
| مزار پر یہ کام حرام ہے | 49 |
| فیس بک استعمال کرنے والے علما کے لیے | 49 |
| پیر صاحب کی گاڑی | 51 |
| فیس بک پر بے جا تصاویر اپلوڈ کرنا | 52 |
| اخلاص | 52 |
| غم حسین اور ماتم | 53 |
| مقابلہ کریں | 53 |
| بڑوں کا ادب | 54 |
| مزدوروں کا حال | 54 |
| باہمی اختلافات | 55 |
| صحابہ کی تنقیص | 56 |

| | |
|---|---|
| صحابہ کا دفاع | 56 |
| راستے بند کرنا | 57 |
| جاہلوں سے کنارہ کشی | 57 |
| مومن کعبے سے افضل | 58 |
| میرا پیر تیرا پیر | 58 |
| پاکیزہ سوچ | 59 |
| مسلمان کو کافر ٹھہرانا | 59 |
| خربوزوں کی ریڑھی | 60 |
| استاد ایسا ہونا چاہیے!! | 60 |
| یہ بھی سکھائیں | 61 |
| جاہل پیر | 62 |
| رب کے سپرد | 63 |
| "معتدلین" کے لیے | 63 |
| اس وقت نہ لکھیں، نہ پڑھیں | 63 |
| فیس بک اور باپ بیٹی | 64 |
| ایمان افروز فتویٰ: | 65 |
| غیرت مند سُنی کی فکر! | 65 |
| کسی کی خُوبی، نہ سَراہنا بھی نااِنصافی ہے | 65 |
| کیا ہمارے عطاری بھائی ایسا کرنا پسند کریں گے ؟ | 66 |
| دعوت اسلامی اور مخالفین | 67 |
| یہ بھی گیا وہ بھی گیا!! | 67 |
| صاحب زادہ | 68 |
| کام یابی کا پہلا سبق | 69 |

| | |
|---|---|
| ایک جن | 70 |
| اخروٹ کی غیبت | 71 |
| انگریزی تعلیم | 71 |
| میرے دل کی آواز | 72 |
| نقّارچی | 73 |
| دوسرا نکاح | 75 |
| بہنوں کو شرعی میراث | 76 |
| ایک دکاندار نے مسئلہ پوچھا | 76 |
| دو شرطیں | 77 |
| منگیتر سے بات چیت | 78 |
| ظالمانہ ٹیکس | 78 |
| اپنے لیے جییں!! | 79 |
| آپ سے آپ کے گناہوں کی پرسش ہونی ہے | 80 |
| زیادہ عقل مند کون | 80 |
| سید ہونے کا یہ مطلب نہیں کہ جو چاہیں کریں | 81 |
| ایک حصے دار | 82 |
| معاف کر دینا چاہیے | 83 |
| ریاکاری | 83 |
| ادھار | 83 |
| میلاد منانے کا ایک طریقہ | 84 |
| غلطی کی اصلاح | 85 |
| مودب | 86 |
| تنقید | 86 |

| | |
|---|---|
| تسبیح/موبائل | 87 |
| غصہ نہ کریں | 87 |
| مسلمان کی بے حرمتی | 88 |
| نوجوانوں کے لیے | 88 |
| اندازِ گفتگو | 90 |
| ایمان کے دو شعبے | 90 |
| زبردستی کا نکاح | 90 |
| عمارت گر | 91 |
| حشر | 92 |
| رونا | 92 |
| طلبہ کی تربیت | 93 |
| ٹیچر ڈے | 95 |
| بچوں کو سب سے پہلے دین سکھائیں | 95 |
| ہیضہ | 96 |
| تنقید | 97 |
| سوشل میڈیا پر بعض جاہلِ مُطلق | 97 |
| اصلاح | 98 |
| جھکنا | 99 |
| مریدِ گوگل | 100 |
| زبردستی کی شادی | 100 |
| امام مسجد کی چُھٹی | 102 |
| دل آزاری | 103 |
| قابلِ تقلید حکمران | 104 |

| | |
|---|---|
| مدرسوں کے لیے فنڈ | 105 |
| امام مسجد | 106 |
| میرا تو لڑکا ہے | 107 |
| جعلی پیر سے نجات | 108 |
| یہ کیوں نہیں، وہ کیوں نہیں! | 109 |
| لڑکیوں کے لیے | 109 |
| بیوہ اور مطلقہ | 111 |
| عورت کی بے حرمتی | 111 |
| اعلیٰ ظرفی | 112 |
| زیادہ سویا نہ کرو | 113 |
| دوسروں کی توبہ | 113 |
| وَاثِلہ | 114 |
| علامہ | 114 |
| لاعلمی کا اقرار | 115 |
| شُدھی | 115 |
| رجوع | 116 |
| جھگڑا چھوڑ دے | 116 |
| علما جب چلے جاتے ہیں | 117 |
| قلندر | 117 |
| دعوت شیراز، تیری کیا بات ہے! | 118 |
| دعا | 119 |
| اے سبز گنبد والے! منظور دعا کرنا | 120 |
| مسکرایا کریں | 120 |

| | |
|---|---|
| روزے کی حالت میں موبائل | 121 |
| اتنا سونا ٹھیک نہیں ہے | 121 |
| طفیلی | 122 |
| بھول جائیں | 123 |
| میرا ایک تجربہ | 123 |
| اونٹ باندھنا | 124 |
| انھیں بھی یاد رکھیے! | 125 |
| اپنا یقین مضبوط کریں | 125 |
| کچھ نہیں ہوگا، انشاءاللہ | 126 |
| اللہ ہمارا مددگار ہے | 127 |
| غم بُھول جائیں! | 128 |
| پریشان ہونا چھوڑ دیں! | 129 |
| وائرس کا خوف | 130 |
| اذان | 131 |
| ضعیف الاعتقادی | 132 |
| مسجدیں بند | 132 |
| خوف | 133 |
| مودبانہ گزارش | 133 |
| بندۂ مومن تیری کیا شان ہے! | 134 |
| اپنا مکان نہیں تھا | 134 |
| نکاح کے متعلق رہنمائی | 135 |
| کال یا میسج کا جواب | 136 |
| بیٹی | 137 |

| | |
|---|---|
| عُربت | 137 |
| تم میری ماں | 138 |
| والدین کی اکلوتی بیٹی | 139 |
| عمر کتنی ہے؟ | 140 |
| صفائی | 141 |
| فیس بک اور باپ بیٹی | 141 |
| ایک بیٹی کو نصیحت | 143 |
| اظہارِ عقیدت | 143 |
| خالہ | 145 |
| خوش طبعی | 145 |
| زیادہ امیدیں | 146 |
| اچھا خواب | 147 |
| امام صاحب | 147 |
| ویلنٹائن ڈے | 148 |
| گرل اور بوائے فرینڈ | 149 |
| مظلوم کی دعا | 150 |
| منزل کی دہرائی | 150 |
| لڑکی کی مرضی | 152 |
| بیٹی کی رضا | 153 |
| جتنا جلدی ہو سکے | 154 |
| خوش طبعی | 154 |
| نائی سے صلح | 155 |
| شور شرابا | 155 |

| | |
|---|---|
| سپردخاک | 156 |
| رفع حاجت کے بعد اپنا ہاتھ | 157 |
| گناہ گار میں امید | 157 |
| باجماعت نماز | 157 |
| بے جاتنقید | 158 |
| دورانِ سفر باجماعت نماز | 159 |
| کال نہ سننا | 160 |
| امام مسجد کے لیے | 161 |
| نادم | 163 |
| بخار | 163 |
| صاحبِ ایمان | 163 |
| تشویش ناک صورت | 164 |
| نکاح مطلوب شریعت | 164 |
| مسلمان کو کافر ٹھہرانا | 165 |
| پریشانی | 166 |
| اشتہاروں پر تصویریں | 167 |
| تیسرا نکاح | 167 |
| اپنا حق ل | 168 |
| توبہ کی توفیق | 168 |
| پردہ دری | 169 |
| جب مدد مانگو تو اللہ سے مانگو | 169 |
| کیا گزر جانے والا سال | 169 |
| ایک ہزار قرآن | 170 |

| | |
|---|---|
| مسجد میں آنے والا | 170 |
| سیدِ عالم ﷺ کی خواب میں زیارت | 171 |
| حرم پاک کے خدمت گزار | 171 |
| اپنے حبیب کی محبت عطا فرما | 172 |
| توجہ کم نہیں کروانی | 173 |
| دور رہنا چاہیے | 173 |
| میت کے لیے دعا | 174 |
| موٹر سائیکل نے آٹکر ماری | 174 |
| جھگڑا چھوڑ دے | 175 |
| عیب جوئی | 176 |
| دوسری شادی | 177 |
| (3) **تیسرا باب**: عشق | 178 |
| کتاب ذم الھوی | 179 |
| دھرنے والے | 179 |
| ناموس رسالت پر پہرا | 180 |
| بیمارِ عشق کا علاج | 180 |
| دعاے محبت | 181 |
| متاعِ مسلم | 181 |
| اللہ کریم اُسے اس کے پیارے سے ملادے!! | 182 |
| مقدس جذبات | 182 |
| جدائی کا غم | 183 |
| ناکام محبت | 184 |
| علاج بالمحبت | 185 |

| | |
|---|---|
| اولاد کے جذبات | 186 |
| محبت | 188 |
| عشق سے اللہ کی پناہ | 188 |
| مرضِ عشق | 189 |
| عظیم نیکی | 190 |
| عورت کی محبت | 191 |
| عورتیں | 193 |
| نقشِ نعلِ پاک | 194 |
| پیاروں کی جدائی | 195 |
| ادب لازم ہے | 196 |
| دوسری جماعت | 197 |
| محبت کی شادی کروانا | 198 |
| ذکرِ محبت | 198 |
| اِنھیں جانا، اِنھیں مانا | 199 |
| جانے والوں | 200 |
| یک طرفہ محبت | 200 |
| سوچ لو | 201 |
| آزمائشیں | 202 |
| ظالموں کے مددگار | 202 |
| چیٹنگ کرنا حرام | 203 |
| اے میرے رب میری امت | 203 |
| جب محبت ہو جائے | 204 |
| باعث ہلاکت عشق | 204 |

| | |
|---|---|
| محبت نے میری یہ حالت کردی ہے | 205 |
| عاشق ہوگئی | 206 |
| درودیوار چومیں | 207 |
| حجرِاسود کا استلام | 208 |
| میری تمنا | 208 |
| معراج کی رات | 209 |
| اے محبت تیرے کیا کہنے!! | 209 |
| ہیبت و محبت رسول | 210 |
| "خاکِ راہِ حجاز" کسے کہتے ہیں؟ | 210 |
| (4)**چوتھا باب**: پیارا مدینہ | 211 |
| شان مدینہ | 212 |
| ڈاکٹر اقبال مدینہ طیبہ کی یاد میں | 212 |
| مہمان مدینہ | 213 |
| مکہ افضل یا مدینہ | 213 |
| مدینے شریف کی یاد میں رونا | 214 |
| مدینہ، مدینہ | 214 |
| یاد مدینہ | 215 |
| لفظِ مدینہ کتنا پیارا ہے | 215 |
| کتے بھی پیارے | 216 |
| شہر میں شور کی آوازیں | 216 |
| ایک خط | 217 |
| ایک پھیرا مدینے کا لگوادو | 218 |
| جنت البقیع شریف میں مدفن کی تمنا | 219 |

| | |
|---|---|
| نبی پاک ﷺ کی زیارت کی | 220 |
| سب شہروں سے افضل | 220 |
| مدینہ شریف نہیں چھوڑنا | 221 |
| روضہ رسول کی حاضری | 221 |
| میری قبر کے پاس مجھ پر درود | 222 |
| امام ابن ہمام | 222 |
| مجھے سلام کرنے نہیں آتا | 223 |
| صدمہ جانکاہ | 223 |
| آدھی رات کے وقت | 224 |
| شہرِ مدینہ کے بھی کیا کہنے | 224 |
| مدینہ شریف میں مہنگائی | 225 |
| لوگ حج پر جارہے ہیں | 225 |
| (5) **پانچواں باب**: تربیت اولاد | 227 |
| بچوں کو جھڑکنا | 228 |
| بچوں کو توجہ دیں | 228 |
| چائے کی چُسکی | 229 |
| بیٹی | 230 |
| محبت نامہ | 230 |
| بیٹے کا سوال | 231 |
| بچوں کی خوشیاں | 233 |
| ننگے سر تو نہیں پڑھتے ناں | 233 |
| بیٹیوں کی تربیت | 234 |
| بیٹیاں | 235 |

| | |
|---|---|
| بچوں کو جگانا | 236 |
| (6)**چھٹا باب**:والدین | 237 |
| بہترین باپ | 238 |
| والدین سے حساب | 239 |
| قبلہ والد گرامی | 240 |
| حاجی، مُعتَمِر، مُجاہِد | 241 |
| پتر نومی | 241 |
| باپ | 241 |
| (7)**ساتواں باب**:دوستی | 244 |
| دوستوں پر خرچ کرنا | 245 |
| سچا دوست | 245 |
| لنگوٹیا | 246 |
| پیارا دوست | 246 |
| دوست | 247 |
| احساس کے رشتے | 248 |
| گھٹیا قسم کے لوگ | 248 |
| دوستوں سے مدد | 249 |
| ہر دوست کہلانے والا شخص، دوست نہیں ہوا کرتا | 250 |
| ملاقات | 251 |
| پیارے دوست | 252 |
| (8)**آٹھواں باب**:حکمت بھری باتیں | 253 |
| ایک بچہ اور ریل گاڑی | 254 |
| حق بولیں | 254 |

| | |
|---|---|
| ڈاکو اور امام احمد بن حنبل | 254 |
| ٹانگ سے پکڑنا | 255 |
| مچھلی خریدنے سے پہلے | 255 |
| بکری اور بھیڑیا | 256 |
| وائی فائی کوڈ | 256 |
| بارہ ہزار تنخواہ | 257 |
| جہاد صرف شور وغل | 257 |
| نماز میں اللہ کی تعریف | 258 |
| حماقت لاعلاج مرض ہے | 258 |
| جاہل کا جواب خاموشی | 259 |
| بے ادبوں سے ادب سیکھیے | 259 |
| عمدہ نصیحت | 259 |
| انقلاب فکر سے آتے ہیں | 260 |
| میرا فیصلہ | 260 |
| مری ہوئی مکھی | 261 |
| صبح نہار منہ پانی | 261 |
| ایک ادھنی کے بدلے پانچ لاکھ | 262 |
| نقارچی | 264 |
| بچے | 265 |
| بزدلی باعثِ شرم ہے | 265 |
| کان میں اپنا حصہ ہے | 266 |
| اذیت ناک یادیں | 266 |
| راز چھپانے والے | 267 |

| | |
|---|---|
| قیمتی نصیحت | 267 |
| زلزلہ | 267 |
| جھگڑوں کا خاتمہ | 268 |
| جدائی | 268 |
| اپنی مسجد | 269 |
| 101 لفظوں کی نصیحت | 270 |
| درخت کی نصیحت | 271 |
| ایک سو ایک الفاظ کی نصیحت | 272 |
| جہادِ اکبر | 272 |
| بچوں کا نشانہ | 273 |
| مردہ مچھلی | 274 |
| پیٹ سے اُدھار | 274 |
| شاگرد کو نصیحت | 275 |
| نہ اُن جیسا، نہ ہم جیسا | 275 |
| بھلانے کا وظیفہ | 276 |
| سلامتی والی موت | 276 |
| تو غریب نہیں! | 277 |
| اپنی اپنی سمجھ | 277 |
| دانائی کی باتیں | 278 |
| لدھا | 278 |
| دانا کہتے ہیں | 279 |
| کتاب کے سرِ وَرق پر | 279 |
| نصیحت | 280 |

| | |
|---|---|
| تجوید | 280 |
| اٹھارہ سال ادب سیکھا | 281 |
| لکڑی | 282 |
| غور طلب | 282 |
| رومی کشمیرم | 283 |
| کرونا ٹیسٹ | 284 |
| قبر روزانہ کہتی ہے | 284 |
| مذہبی لوگ | 285 |
| غم | 286 |
| حکومت کی ذمے داری | 286 |
| مرثیہ | 286 |
| دعوتِ ولیمہ | 287 |
| وجہ کیا ہے؟ | 288 |
| دودھ | 288 |
| دانا کا قول | 289 |
| علما کے پاس بیٹھ کر | 290 |
| حکمران | 290 |
| بے وقوف بننا پڑتا ہے | 291 |
| روزہ رکھ کر | 291 |
| اے محبت! | 292 |
| (9) **نواں باب**: شاعر، شعر اور تشریح | 293 |
| جون ایلیا | 294 |
| شاعر علامہ فضل حق خیر آبادی | 294 |

| | |
|---|---|
| باغ میں شکر وصل تھا | 295 |
| مرزا غالب اور اعلیٰ حضرت | 295 |
| کلام اعلیٰ حضرت اور عشق رسول | 296 |
| اشعار کفایت علی کافی | 297 |
| سابقے/لاحقے | 298 |
| گہرے اشعار | 299 |
| شعر پر حکم | 300 |
| قاری احمد حسین روہتکی | 300 |
| حضور غوث پاک کی منقبت | 301 |
| مرزا غالب | 301 |
| قصیدہ بہاریہ | 302 |
| ادیبِ بے مثال | 304 |
| کلام رضا و غالب | 304 |
| تاریخی شعر | 305 |
| سیدنا عثمان غنی کے حضور | 306 |
| علم بدیع میں ایک صنعت | 306 |
| عید مبارک | 308 |
| حسنِ کلام | 308 |
| نعت شریف | 309 |
| مولانا محمد علی جوہر کی غزل | 310 |
| استاد الشعرا شاہ نصیر دہلوی | 311 |
| حسنِ کلام | 311 |
| حسنِ کلام | 311 |

| | |
|---|---|
| حسنِ کلام | 312 |
| شبلی نعمانی | 313 |
| کلام رضا اور غالب | 314 |
| کیا آپ کو کچھ شعر یاد ہیں؟ | 314 |
| اعلیٰ حضرت کے احادیث پر عروضی کام | 315 |
| سیدۂ کائنات فاطمہ زہرا رضی اللہ عنھا کے حضور! | 315 |
| صبح ہوتے ہی ذکرِ رسول ﷺ کر لیجیے | 317 |
| صَنْعَتِ تَوْشِیح میں کہی گئی نعت شریف | 318 |
| سیدی اعلیٰ حضرت کے ایک شعر کی تشریح | 319 |
| میری پریشانی کا حل | 320 |
| بلغ العلیٰ بکمالہ | 321 |
| شاعری اور جنت | 322 |
| حضرت رضا و مرزا غالب | 322 |
| انشاء اللہ خاں نے کمال کر دیا | 324 |
| ایک شعر کی مختصر تشریح | 325 |
| سہرا | 326 |
| منقبت سیدہ عائشہ صدیقہ | 327 |
| شاعر کا کمال | 329 |
| ایک شعر کی تشریح | 329 |
| انشاء اللہ خاں انشا کی صنعت التزام میں باکمال غزل | 330 |
| ایک شعر کی تشریح | 331 |
| ہے لبِ عیسی سے جاں بخشی نرالی ہاتھ میں | 331 |
| ایک نعتیہ غزل | 333 |

| | |
|---|---|
| پیر نصیر الدین نصیر کا امتحان | 334 |
| ابنِ سعود نجدی کے مظالم پر ایک نظم | 335 |
| شیرِ پنجاب | 336 |
| متروکات | 336 |
| ایک انتہائی نازُک غزل | 337 |
| بحر طویل | 340 |
| فراق گورکھپوری اور محسن نقوی کی دو خوب صورت غزلیں | 341 |
| شوکت علی خاں فانی بدایونی کی ایک غزل | 343 |
| الفاظ کا برمحل استعمال | 343 |
| سمجھ کر پڑھ لیجیے | 345 |
| کلام محترم مقصود علی شاہ | 345 |
| یہ بھی نہیں، وہ بھی نہیں | 346 |
| اقبال کی بعض شاعری | 347 |
| اشعار کے معنی | 348 |
| خَطِّ تَوَام | 348 |
| اقبال مرحوم کا ایک دعائیہ کلام | 349 |
| شاعر ڈرپوک ہوتے ہیں | 350 |
| شعرائے فیس بک کے حضور! | 350 |
| حیدر علی آتش | 351 |
| امیر خسرؔو | 352 |
| (10) **دسواں باب**: واقعات و حکایات | 354 |
| حضرت ابوہریرہ کی دعا | 355 |
| ظالم کا احتساب | 355 |

| | |
|---|---|
| حلوہ | 357 |
| چینی کی جگہ نمک | 358 |
| سورت لہب کی تلاوت | 359 |
| مشیر | 360 |
| شیر کا بچہ | 361 |
| امریکہ بہادر | 361 |
| بائبل کی چُوڑیاں | 363 |
| لال رومال والا وہابی | 364 |
| شیخ سعدی اور ایک سائل | 364 |
| دو باتیں | 365 |
| حماقت کی تعریف | 366 |
| سرخ موزے والا | 366 |
| بری موت | 367 |
| یا اللہ مجھے ایسا بنا دے! | 368 |
| مفکر | 368 |
| فہمِ رسا کی پہنچ | 369 |
| بے عقل رِپورٹر | 371 |
| مصیبت | 372 |
| سچی طلب | 372 |
| بہترین فیصلہ | 373 |
| ذکرِ حسین رضی اللہ عنہ کی برکت | 375 |
| الیکشن | 375 |
| عامر تیری عظمت کو سلام | 376 |

| | |
|---|---|
| الو کی کہانی | 376 |
| وزیر | 377 |
| ایک قطرہ | 378 |
| لومڑی کو دعوت | 378 |
| نقارچی | 379 |
| سفید لباس میں ملبوس ایک شخصیت | 381 |
| بدعقیدہ شخص | 381 |
| لاعلاج مریض | 382 |
| خونِ حُسین | 383 |
| پہرہ | 384 |
| مجاہد کا گھوڑا | 384 |
| فرنگی طبیب | 385 |
| پاؤں والا | 387 |
| مالک کے حضور | 387 |
| بیوی اغوا ہوگئی | 389 |
| سونے کا گھڑا | 390 |
| اللہ نے شفا دی | 391 |
| کالے چنے | 392 |
| داڑھی | 392 |
| ڈرامے پر پوسٹ کا نتیجہ | 393 |
| لال رومال والا | 394 |
| بہادر | 395 |
| استاد، مرشد، اور۔۔۔۔۔روغن | 396 |

| | |
|---|---|
| میں بوڑھا ہوں | 397 |
| میری گھریلو ڈائری کا ایک پرانا ورق | 398 |
| مفلس | 399 |
| ایک خوب صورت واقعہ | 400 |
| واللہ، وہ سن لیں گے! | 402 |
| شرف قبولیت | 403 |
| ایک واقعہ | 404 |
| قحط پڑھ گیا | 405 |
| ایک عبادت گزار | 405 |
| تھپڑ دے مارا | 406 |
| میرا ایک بہت ہی پیارا دوست | 407 |
| **(11)گیارہواں باب:** تحریروں کی چوری | 408 |
| تحریر چرانا | 409 |
| داتا علی ہجویری کی کتاب | 409 |
| ہر لکھاری کے لیے! | 410 |
| پروفیشنل چور | 411 |
| مصنف و محرر کا نام کاٹ کر | 412 |
| **(12)بارہواں باب:** ادب | 413 |
| ان شاء اللہ یا انشاء اللہ | 414 |
| کھڑوچ | 414 |
| دو علامتیں | 415 |
| اردو ترجمے | 415 |
| (1)حسنِ تحریر | 416 |

| | |
|---|---|
| لسانی لطیفہ | 418 |
| (2)حسنِ تحریر | 418 |
| (3)حسنِ تحریر | 419 |
| متوفّی | 419 |
| درُست اُردو | 420 |
| ہمشیر/ہمشیرہ | 420 |
| درُست لکھیے! | 422 |
| (1)ضروری اِصطلاحیں | 422 |
| 1:الخ(اَلَ خْ) | 423 |
| 2:۱۲ | 423 |
| 3:منہ(مِ نْ ہُ) | 423 |
| 4:۱۲منہ | 423 |
| (2)ضروری اصطلاحیں | 423 |
| 5:ایضًا(اَیْ ضَ نْ) | 423 |
| 6:ع | 424 |
| 7:ے | 424 |
| (3)ضروری اصطلاحیں | 424 |
| 8:کذا(کَ ذَا) | 424 |
| 9:مُلَخّصًا/ملخص(مُ لَ خَّ صَ نْ/مُ لَ خَّ صْ) | 425 |
| 10:ملتقطاً(مُ لْ تَ قَ طَ نْ) | 425 |
| اردو دانی | 426 |
| درُست اُردو | 427 |
| (1)گوشۂ ادب | 427 |

| | |
|---|---|
| (2)گوشۂ ادب | 428 |
| (3)گوشۂ ادب | 429 |
| (4)گوشۂ ادب | 430 |
| (5)گوشۂ ادب | 431 |
| (6)گوشۂ ادب | 431 |
| مثلث | 432 |
| (7)گوشۂ اَدب | 433 |
| اُردو کا تصرف: پہلی قسط | 434 |
| اُردو کا تصرف: دوسری قسط | 434 |
| اُردو کا تصرف: تیسری قسط | 434 |
| آخری قسط | 435 |
| انشاءاللہ اور ان شاءاللہ | 435 |
| اہل زَبان، توجہ فرمائیں! | 436 |
| ایکسر سائز کے بجائے اگر ورزش | 437 |
| اردو کا جنازہ ہے ذرا دھوم سے نکلے | 437 |
| اُردو میں انگریزی | 438 |
| گُزیدن | 438 |
| گوشۂ ادب | 439 |
| اردو دُرُست بولیے! | 441 |
| اردو دُرُست لکھیے! | 441 |
| حَرج اور ہَرج | 442 |
| اُردو زبان کے حروفِ تہجی | 442 |
| درُست اردو لکھیے! | 442 |

| | |
|---|---|
| ختمہ | 443 |
| وقفہ | 443 |
| درُست اُردو لکھیے! | 444 |
| تَعْرِیب، تَفْرِیس، تارِید، تَہْنِید | 446 |
| اُردو زبان کی اہمیت | 447 |
| روزمرہ بولے جانے والے دو الفاظ کا مطلب | 448 |
| بعض | 448 |
| اکثر | 448 |
| درُست لکھیے! | 448 |
| درُست لکھیے! | 449 |
| درُست لکھیں! | 449 |
| لفظِ "مشکور" کے استعمال کے بارے میں | 450 |
| علامت (؛) | 452 |
| حسنِ تکلُّم | 453 |
| لکھیں | 454 |
| حُروف تہجی تین طرح کے ہیں | 455 |
| نکات/نُکات | 455 |
| درست لہجہ | 456 |
| یہ تینوں مصدر | 456 |
| تحریر(1) | 457 |
| تحریر(2) | 457 |
| قَوسَین | 458 |
| وَاوعاطِفَہ | 459 |

| | |
|---|---|
| لکھنے کے لیے | 461 |
| شدید اتفاق | 461 |
| لکھنے والوں کے حضور! | 462 |
| مختصر اور جامع | 462 |
| "صحابی نبی" | 462 |
| اردو زبان بہت پیاری ہے | 463 |
| قصیدہ معراجیہ | 463 |
| سید انشاء اللہ خان | 464 |
| مرکبات | 465 |
| اشعار زبانی یاد کرلیں | 466 |
| (13) **تیرہواں باب:** اوراد و وظائف | 468 |
| اے اللہ! امت محمد ﷺ پر رحم فرما | 469 |
| کتے اگر حملہ کردے تو | 469 |
| سَحر کے تیر | 470 |
| چاند گرہن | 470 |
| پھوڑے، پھنسیوں یا خارش | 470 |
| استخارہ | 471 |
| روزانہ یہ پڑھا کریں | 471 |
| ایک دعا یہ بھی | 472 |
| (14) **چودھواں باب:** سحر اور عملیات | 474 |
| جنات والا چشمہ | 475 |
| بندش | 475 |
| بندش | 476 |

| | |
|---|---|
| جادو | 476 |
| جادوئی تعویذات | 477 |
| مصری پُتلے | 477 |
| جادو کے ذریعے اولاد کی بندش | 478 |
| دم | 479 |
| بہو کرواتی ہے | 480 |
| جادو کی بے شمار قسمیں | 480 |
| جنات انسان سے ڈرتے ہیں | 481 |
| ایک جِن سے کی ملاقات | 482 |
| عملیات و وظائف کی دنیا | 482 |
| عاملین کے لیے | 483 |
| جادو | 484 |
| جادو کا اثر | 485 |
| (15)**پندرہواں باب**: حقانیت اسلام | 488 |
| دہشت گرد کون؟ | 489 |
| قربانیاں رنگ لائیں گی | 489 |
| مذہبی زندگی | 490 |
| خدا کی قدرت | 491 |
| (16)**سولہواں باب**: تقریر، مقررین اور روایات | 492 |
| بے عمل مقررین | 493 |
| قصاص | 493 |
| نذرانہ | 493 |
| کلمہ نصیب نہیں ہوتا | 494 |

| | |
|---|---|
| ایک مولانا صاحب کی تقریریں | 494 |
| الشاہ | 495 |
| غنیۃ الطالبین کے حوالے سے | 495 |
| خطاب | 496 |
| (17)**سترہواں باب**: تحقیقات | 498 |
| تاریخ ولادت حضرت عیسی علیہ السلام | 499 |
| گرونانک کا مذہب | 499 |
| تاریخ ولادت صحیح سند سے | 500 |
| امام بوصیری اور چار یار | 501 |
| امام حسین پاک کہنا | 501 |
| 80 جلدوں پر مشتمل تاریخ دمشق | 502 |
| مشاجرات صحابہ | 503 |
| امام عادل یا سلطان جائر؟ | 503 |
| خارجی | 505 |
| ایک فیصلہ | 505 |
| حدیث کی 380 کتب | 506 |
| حدیث: میں علم کا شہر | 506 |
| علما و صوفیہ کا اختلاف | 507 |
| عاجزانہ عرض! | 507 |
| حُسام الحرمین علیٰ منحر الکفر والمین | 509 |
| اس طرف بھی توجہ! | 510 |
| سرخ عمامہ | 510 |
| پانچویں دعوت | 510 |

| | |
|---|---|
| فراڈ | 511 |
| جہالت و نادانی | 512 |
| تحقیق و تدقیق | 512 |
| اصُولی بات | 513 |
| ایسا | 513 |
| حاصلِ مطالعہ حسام الحرمین | 514 |
| ضعیف احادیث فضائل میں | 515 |
| ایک بات | 515 |
| تاریخ ولادت | 515 |
| مطلب کی آواز | 516 |
| دعوتِ اِنصاف | 516 |
| اعلیٰ حضرت کی عروضی غلطی | 517 |
| علمِ عروض اور مدارس | 520 |
| کیا اصحاب کہف کا کتا جنتی ہے؟ | 520 |
| اہل علم کے لیے نکتہ | 521 |
| جدید و قدیم | 521 |
| جنگ بدر میں تعداد تین سو پانچ | 522 |
| خواجہ عثمان ہارونی یا ہرونی؟ | 522 |
| معین الدین حسن سَنجری یا سِجزی؟ | 523 |
| مودودی کی کتاب | 523 |
| صوفیہ پر تین ایسی کتابیں | 524 |
| بهجة الاسرار | 525 |
| پھکی شاہ | 525 |

| | |
|---|---|
| غزوہ ہند | 526 |
| بددعا | 527 |
| ترکش ڈرامے | 527 |
| ترکی ڈرامے | 528 |
| ویڈیو اور تصویر | 529 |
| دم وغیرہ کا معاوضہ | 530 |
| پی ڈی ایف | 532 |
| جو مہارت سے قرآن پاک پڑھتے ہیں | 533 |
| مصارف زکوٰۃ | 533 |
| جھوٹی حدیثیں | 534 |
| (18)**اٹھارہواں باب**:شوہر اور بیوی | 535 |
| نصیحتیں | 536 |
| خوش حال میاں بیوی | 536 |
| جوڑے بن گئے!! | 537 |
| پسند کی شادی | 537 |
| صوفی کانفرنس | 539 |
| شادی شدہ اولیا سے کم درجہ ملا | 541 |
| بیوی سے جھگڑا | 541 |
| شوہر کا مسئلہ | 542 |
| اللہ تجھے فرشتہ دے | 543 |
| بیوی کا شکوہ | 544 |
| مِسکین | 545 |
| احمقانہ حرکت | 545 |

| | |
|---|---|
| اہلیہ کے ساتھ حسن سلوک | 546 |
| میاں بیوی کا رشتہ | 546 |
| مرحوم اکبر کی.....مجبور شہناز | 547 |
| بیویوں کی قدر | 550 |
| (19)**انیسواں باب**:مناقب شخصیات | 551 |
| حکیم الامت | 552 |
| شان علی اور امام بوصیری | 552 |
| جنت میں محل معاویہ | 552 |
| تاج الشریعہ کے حضور! | 553 |
| علامہ عنایت اللہ سانگلہ ہل | 554 |
| ایسے لکھنے والے بھی! | 555 |
| شان علی بہ زبان معاویہ | 556 |
| شان علی | 556 |
| امیر معاویہ کے لیے رحمت کی دعا | 557 |
| ڈاکٹر طاہر القادری اور امیر معاویہ | 557 |
| بارگاہ علی میں نذرانہ عقیدت | 557 |
| سرکار مدینہ ﷺ کی چار شہزادیاں | 558 |
| مفتی حنیف قریشی | 559 |
| فضائل علی | 560 |
| علی سے نبی کی محبت | 561 |
| حافظ احمد دین | 561 |
| حضرت معاویہ ہیں پیارے حضور کے | 563 |
| بابے کی گالیاں | 564 |

| | |
|---|---|
| محدث بریلی | 564 |
| غازی علم دین شہید | 567 |
| دعوت اسلامی | 567 |
| ذکرِ عمر | 568 |
| گجر قوم | 568 |
| سیدنا ابوسفیان | 568 |
| حضور غوث پاک کی بارگاہ میں | 569 |
| علامہ سعید احمد اسعد | 569 |
| حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی | 570 |
| علم پروری | 570 |
| گجر | 571 |
| حضرت امیر معاویہ | 572 |
| جمشید پور | 572 |
| اہل بیتِ رسول | 573 |
| علومِ اعلیٰ حضرت | 573 |
| یوم آزادی | 573 |
| مولانا محمد الیاس عطار قادری | 574 |
| علی پاک میرے امام ہیں | 574 |
| سلطان عبدالحمید | 575 |
| مصطفی کمال | 576 |
| حسن حسین سے محبت | 577 |
| سیدہ فاطمہ | 578 |
| لیکن علی مجھے زیادہ پیارا ہے | 578 |

| | |
|---|---|
| رسول پاک ﷺ کی اولاد اطہار | 579 |
| اصحاب صفہ | 579 |
| اصحاب صفہ کے مبارک نام | 580 |
| پیر محمد الیاس عطار قادری | 581 |
| قاری احمد حسین روہنگی | 582 |
| لبیک والے سچے ہیں! | 582 |
| پہلے صحابی | 583 |
| علامہ عنایت اللہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ | 584 |
| سَیِّدُ الشُّھَدَا | 585 |
| مولا علی پاک | 586 |
| مدح مرتضی | 586 |
| حضرت موسیٰ کاظم | 587 |
| فضیلت والا | 588 |
| دعوت اسلامی کا ایک قافلہ | 589 |
| دعوت اسلامی پر تنقید | 590 |
| مولانا الیاس قادری صاحب | 591 |
| سید ابوالحسین احمد نوری | 592 |
| قبا | 592 |
| مسجد فتح | 593 |
| ایک ہی مٹی سے پیدا کیا | 593 |
| مکہ معظمہ | 594 |
| تم جنت میں چلے جاؤ! | 594 |
| عرش و کرسی سے بھی افضل | 595 |

| | |
|---|---|
| مولانا محمد الیاس عطار قادری | 595 |
| رمضان شریف میں عمرہ | 596 |
| ماہِ رمضان کے عمرے | 596 |
| طواف | 597 |
| حضرت معاویہ بادشاہ ہیں | 599 |
| ماہِ ذِی القَعدَہ میں | 600 |
| حضرت جنید بغدادی | 601 |
| یومِ عَرَفہ کا روزہ | 601 |
| سلطان باہو | 602 |
| (20)**بیسواں باب**: شان و عظمت مصطفی ﷺ | 603 |
| وہ نظر، اللہ اللہ! | 604 |
| ساری گل سرکار دی اے! | 604 |
| بارگاہِ ناز | 604 |
| پیاری طبیعت | 605 |
| میں تو محمد ہوں | 606 |
| چشمے جاری ہو گئے | 606 |
| کائنات کا دولھا | 607 |
| دولھا ایک ہوتا ہے | 607 |
| لطیف | 608 |
| (21)**اکیسواں باب**: عقائد و معمولات اہل سنت | 609 |
| امام ربانی اور عظمت صحابہ | 610 |
| امام احمد بن حنبل اور مقام صحابہ | 610 |
| محبت اہل بیت رفض نہیں | 610 |

| | |
|---|---|
| حدیث عمار | 611 |
| تکلیف دِہ خواب | 612 |
| سازوالی قوالی | 612 |
| قابلِ زیارت سُنی | 613 |
| اہل سنت | 613 |
| سبحان اللہ | 613 |
| میلاد شریف کا لنگر | 614 |
| سیدنا امام احمد بن حنبل کی نصیحت | 614 |
| بریلوی شدت پسند!! | 615 |
| گیارھویں شریف | 615 |
| شَطْحِیَّات | 616 |
| رئیس المتکلّمین | 616 |
| علیہ السلام | 617 |
| سَبّ | 618 |
| خاندانی لوگ | 618 |
| فسقِ یزید | 619 |
| یزید نے امام حسین کو شہید نہیں کیا | 620 |
| مزارات | 621 |
| شیعیت کے داغ | 621 |
| دشمنِ صحابہ سے نفرت | 622 |
| سنی بریلوی | 623 |
| بریلوی!! | 624 |
| میلاد شریف کی خوشی | 625 |

| | |
|---|---|
| کیسے تسلیم کرلیا جائے گا۔۔۔۔۔!! | 626 |
| مقامِ ابراہیم کو بوسہ | 626 |
| تفضیلی | 627 |
| صرف اور صرف اللہ و رسول | 627 |
| ہمارا مزاج | 628 |
| صحابہ کرام سے بغض | 628 |
| رفض | 629 |
| اصحابِ رسول پر تنقید | 629 |
| یہ ناصبیت نہیں | 629 |
| صرف علی علی | 630 |
| عید کی نماز | 631 |
| وصیت | 631 |
| یارسول اللہ | 632 |
| مرزا جہلمی | 632 |
| **آخری باب**: سفرنامے | 634 |
| سفر میں گیم | 635 |
| دو مثالیں | 635 |
| بچی کو اغوا کرلیا | 635 |
| ملک کی فلائٹ | 636 |
| سلطان قطب الدین ایبک کے مزار پر | 636 |
| سفرنامہ لقمان سے | 637 |
| جبل احد شریف کی زیارت | 639 |
| خوب صورت سفر | 639 |

| | |
|---|---|
| سیر وسیاحت | 639 |
| کوہِ حرَا | 640 |
| صحرائے تھل | 641 |
| مدینہ طیبہ کی طرف روانگی | 642 |
| مسافر مدینہ محمد بشیر کی ڈائری | 642 |
| صحرائے طیبہ کی زیارت | 643 |
| ہماری اردو کتابیں: | 644 |

اس کتاب میں 22 ابواب ہیں جن کی فہرست درج ذیل ہے۔

(1) محبت رسول ﷺ
(2) اصلاح معاشرہ
(3) عشق
(4) پیارا مدینہ
(5) تربیت اولاد
(6) والدین
(7) دوستی
(8) حکمت بھری باتیں
(9) شاعر، شعر اور تشریح
(10) واقعات و حکایات
(11) تحریروں کی چوری
(12) اردو ادب
(13) اوراد و وظائف
(14) سحر اور عملیات
(15) حقانیت اسلام
(16) تقریر، مقررین اور روایات
(17) تحقیقات
(18) شوہر اور بیوی
(19) مناقب شخصیات
(20) شان و عظمت مصطفی ﷺ
(21) عقائد و معمولات اہل سنت

آخری باب: سفرنامے

# عرض مرتب

اس کتاب کو ترتیب دینا آسان کام نہیں تھا۔ اس میں مجھے جن چنوتیوں کا مقابلہ کرنا پڑا وہ یہاں بیان کرتا ہوں۔ بیان کرنے کا مقصد یہ ہے کہ پڑھنے والوں میں اگر کوئی پیش آنے والے ان مسائل کو حل کرنے کا آسان طریقہ جانتا ہو تو ہمیں بتادے تاکہ آئندہ اس پر عمل کیا جائے۔

یہ تمام تحریریں حضرت علامہ لقمان شاہد صاحب حفظہ اللہ تعالی نے فیس بک پر پوسٹ کی تھی۔ یہ کتاب دراصل ان سب کا مجموعہ ہے۔ فیس بک پر تحریروں کا سلسلہ حضرت نے تقریباً 8 سال پہلے شروع کیا تھا۔ اب اس کو ترتیب دینے کے لیے پہلا کام یہ تھا کہ آٹھ سال تک کی "فیس بک ٹائم لائن" کو کھولا جائے اور ساری تحریریں کاپی کی جائیں۔ ایسا کوئی طریقہ نظر نہیں آیا کہ جس سے ایک بار میں سب کاپی ہو جائیں لہذا ہمیں ایک ایک کر کے سب کو کاپی کرنا پڑا۔ اب اس میں بھی جو دشواریاں آئیں وہ بھی بیان کرتے ہیں؛ چوں کہ اتنی ساری تحریریں کاپی کرنا ایک دن کا تو کام نہیں تھا، ایک دن میں کچھ مہینوں کی تحریریں کاپی ہو پاتی تھی پھر اگلے دن کاپی کرنے کے لیے ایک کام یہ ہوتا تھا کہ جہاں تک کاپی کر چکے تھے وہاں تک دوبارہ جانا پڑتا تھا۔ مثلاً آج چھے مہینے کی تحریریں کاپی کر لی، پھر کل چھے مہینے پیچھے جانا ہوتا تھا جس میں اچھا خاصا وقت لگ جاتا تھا۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ کوئی بھی براؤزر ہو یا فیس بک ایپلی کیشن، زیادہ لمبے عرصے تک پیج کو ایک جگہ روک کر نہیں رکھ سکتا۔ اگر موبائل فون میں زیادہ طاقت نہ ہو تو یہ بہت جلدی ہٹ جاتا ہے اور دوبارہ لوڈ (ری فریش) ہو جاتا ہے۔ میرے پاس جو موبائل فون ہے وہ اتنا طاقتور تو ہے کہ پورے دن پیج کو روک کر رکھ لیتا تھا لیکن پھر مسئلہ یہ ہوا کہ دو یا تین سال تک کی تحریریں ہی اس طرح کاپی کر پایا، اس کے بعد فیس بک ٹائم لائن نے لوڈ لینا ہی بند کر دیا یعنی تین سال سے پہلے کی ٹائم لائن کھل ہی نہیں رہی تھی!

اب یہ میرے لیے پریشانی کا سبب بن چکا تھا۔ میں نے موبائل فون پر کوششیں کیں اور اس کے بعد کمپیوٹر اور پھر اس میں مختلف براؤزرز استعمال کیے لیکن کوئی حل نہ نکلا؛ بار بار یہی دیکھنے کو ملتا کہ "لوڈ نہیں ہو پا رہا ہے"۔ میں نے بار بار کوشش کر کے اس مسئلے کو تو حل کر لیا لیکن جب اس سے آگے پہنچا تو ایک مسئلہ اور پیش آیا جو کہ کافی بڑا تھا۔ جیسا کہ میں نے بتایا، فیس بک ٹائم لائن سے تحریریں کاپی کرنی تھیں یعنی ایسا نہیں تھا کہ صرف اوپر نیچے کر کے (scroll) کر کے نکل جانا تھا۔ کاپی کرنے کا طریقہ جو فیس بک ایپ میں ہے وہ تو بہت آسان ہے کہ تھوڑی دیر تک تحریر کو دبا کر رکھو اور کاپی کر لو، پھر جہاں چاہے چپکا (پیسٹ کر) دو، اس میں کئی لوگ ایسا کرتے ہیں کہ ایک بار جو کاپی کیا اسے کہیں پیسٹ کر لیتے ہیں اس کے بعد ہی دوسرا کچھ کاپی کرتے ہیں لیکن میں نے اپنے موبائل فون پر کچھ ایسے سافٹویئرز رکھے ہیں کہ ایک بار میں سیکڑوں چیزیں کاپی کر سکتے ہیں پھر بعد میں ایک ایک کر کے اسے پیسٹ کیا جا سکتا ہے۔ میرے لیے یہ مسئلہ تو نہیں تھا کہ ایک ایک کو کاپی کر کے پہلے پیسٹ کیا جائے لیکن جس بڑے مسئلے کا مجھے سامنا کرنا پڑا وہ یہ ہے کہ جب کافی وقت لگا کر میں تین چار سال

پہلے کی ٹائم لائن پر پہنچتا تو وہاں فیس بک ایپ جواب دینا شروع کر دیتا، صرف دیکھنے میں ایسا نہیں ہوتا تھا بلکہ جب کاپی کرنا شروع کیا جاتا تو دھیرے دھیرے وہ پھنسنا شروع ہو جاتا اور تھوڑی دیر میں پھر پیچھے پھینک دیتا یعنی تین چار سال پیچھے! جہاں میں کافی دیر سفر کرنے کے بعد پہنچتا، وہاں سے مجھے فوراً "صفر" پر بھیج دیا جاتا تھا۔

اس بڑے مسئلے کا حل تلاش کرنے کے لیے میں نے کئی حیلے اپنائے پر یہ مسئلہ اپنی جگہ اڑا رہا۔ اگر کوئی ایک نیا طریقہ استعمال کرنا ہوتا تو اس کے لیے پہلا کام یہ ہوتا تھا کہ چار سال تک پیچھے جانے کے لیے سفر کیا جائے یعنی ٹائم لائن کھول کر دونوں انگوٹھوں کو سکرین پر اوپر نیچے کیا جائے اور اگر کمپیوٹر پر کر رہے ہیں تو ماؤس کے چکے کو گھماتے رہیں۔ ایسا چند مرتبہ کیا لیکن کوئی حل نہ ملا؛ ایسا کرتے ہوئے دو باتیں ذہن میں آ رہی تھیں لیکن اسے آخر کے لیے رکھا ہوا تھا کہ جب کوئی طریقہ کام نہیں آئے گا تو ان دونوں میں سے کسی ایک کو اپنایا جائے گا۔ پہلا تو یہ کہ فیس بک ایپ سے ٹائم لائن کو بس دیکھا جائے کیوں کہ دیکھنے میں تو کوئی مسئلہ نہیں تھا، جب کاپی کرنا شروع کیا جاتا تو وہ دھیما ہوتا اور پھر سے شروع ہو جاتا لہذا یہ کیا جا سکتا تھا کہ صرف دیکھا جائے اور کاپی کرنے کے بجائے تحریروں کے عنوانات کہیں کاپی میں لکھ لیے جائیں پھر بعد میں ایک ایک کر کے (ٹائم لائن سرچ کے آپشن سے) تلاش کیا جائے اور پھر کاپی کیا جائے۔ یہ طریقہ ایسا تھا کہ کام تو ہو جاتا لیکن بہت زیادہ وقت صرف ہوتا اور وہ یوں کہ اولاً تو ساری تحریروں کے عنوانات کو لکھنا اور ایسی تحریریں جو بلا عنوان ہیں (جن کی تعداد پچاس فی صد سے زیادہ ہے) ان میں سے کسی ایسے لفظ کا انتخاب کرنا کہ بعد میں تلاش کیا جا سکے اور پھر اتنا کرنے کے بعد ایک ایک کر کے تلاش (search) کرنا، پھر کاپی اور پیسٹ کرنا... یہ سوچ کر ہی میں نے اس طریقے کو کنارے رکھ دیا کیوں کہ ذہن میں ایک اور طریقہ گھوم رہا تھا۔ اب آئیے بالآخر وہ دوسرا طریقہ بیان کرتا ہوں جسے اپنا کر کام کو تکمیل تک پہنچایا گیا۔

فیس بک استعمال کرنے والے جانتے ہوں گے کہ اس میں ایک جگہ آپ کی تمام حرکات کو ریکارڈ کیا جاتا ہے جسے ایکٹیویٹی لاگ (activity log) کہتے ہیں۔ اگر آپ نے کسی پوسٹ کو پسند (لائک) کیا، کہیں تبصرہ (کمینٹ) کیا یا اور کوئی کام کیا تو وہ یہاں درج ہو جاتا ہے۔ اب میں نے کیا یہ کہ فیس بک ایپ پر ٹائم لائن کو کھول کر صرف لائک کرنا شروع کیا اور ایک سرے سے ساری تحریریں لائک کرتا چلا گیا۔ میں بتا چکا کہ صرف دیکھنے میں تو مسئلہ ہی کوئی نہیں تھا۔ اب جب ساری تحریریں لائک کر چکا تو اگلا کام تھا انھیں کاپی کرنا۔ اس کے لیے اب کمپیوٹر میں جانا پڑا کیوں کہ یہ کام موبائل فون سے جلدی نہیں ہوتا۔ ایک آسانی تو میرے لیے یہ ہو گئی کہ اب میں جب چاہے اور جتنی چاہے تحریریں کاپی کر سکتا تھا اور اس کا حساب رکھنے کے لیے یہ طریقہ اپنایا کہ کاپی کرنے کے بعد اس ریکارڈ کو ہی مٹا دیا جائے جس سے کوئی تحریر دوبارہ کاپی نہ ہو جائے۔ اب کمپیوٹر پر ریکارڈ کی فہرست میں سے ایک ایک کو کاپی کرتا گیا اور ساتھ ہی ریکارڈ کو مٹاتا بھی گیا۔ اس طرح بہت کم وقت میں ساری تحریریں کاپی کر لی گئیں۔ یہ تو تھا کاپی کرنے تک کا، پھر موضوع کے مطابق ابواب اور ان میں تحریروں کی تقسیم کا مرحلہ اس سے الگ ہے۔

ٹیکنالوجی کی معلومات رکھنے والے اشخاص سے گزارش ہے کہ اگر اس سے بہتر طریقہ آپ کے علم میں ہو تو ہمیں مطلع فرمائیں۔

الحمدللہ اب یہ علمی خزانہ بنام "تحریرات لقمان" آپ کے سامنے ہے۔ اللہ تعالی اس کتاب کو اپنی بارگاہ میں درجۂ مقبولیت عطا فرمائے اور اپنے پیارے محبوب، نبی کریم ﷺ کے صدقے مصنف کو دنیا و آخرت میں کامیابی عطا فرمائے۔ آمین۔

عبد مصطفی
محمد صابر اسماعیلی قادری رضوی

# (1) پہلا باب: محبت رسول ﷺ

اس باب میں محبت رسول ﷺ سے لبریز چند تحریریں ہیں جن سے اس کتاب کا آغاز کیا گیا ہے۔

## محبت رسول ﷺ اور غربت

ایک شخص نے بارگاہِ اقدس میں عرض کی تھی: اے اللہ کے رسول، اللہ کی قسم میں آپ سے پیار کرتا ہوں۔

فرمایا: دیکھ لو کیا کہہ رہے ہو!

عرض کی: قسم بخدا مجھے آپ سے محبت ہے۔

فرمایا: سوچ لو کیا کہہ رہے ہو!

اس نے جب تیسری مرتبہ بھی یہی کہا تو آپ ﷺ نے فرمایا:

اگر تم واقعی مجھ سے محبت کرتے ہو تو پھر فَقر (غریبی) کے لیے تیار ہو جاؤ۔۔۔۔۔۔۔۔ مجھ سے محبت کرنے والے کی طرف فَقر اس سے بھی زیادہ تیز بڑھتا ہے، جتنا تیز سیلاب اپنے بہاؤ کی طرف جاتا ہے۔ (انظر: سنن الترمذی، ر2350)

## محبوب کے ہاتھوں ذبح ہونا

آج صبح یہ حدیث پاک پڑھی تو وجد آ گیا۔

حضرت عبداللہ بن قُرط رضی اللہ عنہ کہتے ہیں:

رسول پاک ﷺ کی خدمت میں پانچ چھے اونٹ قربانی کے لیے پیش کیے گئے، تو وہ خود کو حضور کے آگے کرتے تھے (ہر کوئی یہ چاہتا تھا) کہ سرکار پہلے مجھے نحر کریں۔ (المستدرک علی الصحیحین، کتاب الاضاحی)

سبحان اللہ! محبت کیا نرالی چیز ہے؛ محب محبوب کے ہاتھوں ذبح ہو جانے کو بھی شرف سمجھتا ہے۔

انوکھی وضع ہے ، سارے زمانے سے نرالے ہیں
یہ عاشق کون سی بستی کے یا رب رہنے والے ہیں!

## ایک

کہتے ہیں دہلی کے راستے میں ایک کنواں پڑتا تھا جس سے نور حیات نامی شخص آتے جاتے مسافروں کو پانی پلاتا ۔ایک دفعہ وہاں سے کسی ولی اللہ کا گزر ہوا، نور حیات نے انھیں بڑی تکریم سے پانی کا پیالہ پیش کیا، پانی پی کر جب ان کا دل ٹھنڈا ہوا تو کہنے لگے: مانگ کیا مانگتا ہے؟

اُس نے ہاتھ پھیلاتے ہوئے کہا: جو چاہیں عطا کر دیں!

انھوں نے نور حیات کی ہتھیلی پر ایک کا ہندسہ ڈال دیا۔

اب کیا تھا.....، روزانہ نور حیات کو ایک روپیہ منافع ہوتا۔

کچھ عرصے بعد وہاں سے ایک اور ولی گزرے، نور حیات نے انھیں بھی پانی پیش کیا، انھوں نے بھی خوش ہو کر کہا:

مانگ کیا مانگتا ہے ؟ نور حیات نے ان کے آگے ہاتھ پھیلایا، تو انھوں نے سوچا کہ کوئی مرد خدا ایک پہلے ہی ڈال گیا ہے، کیوں نہ میں اس کے ساتھ صفر لگادوں ؛ تو انھوں نے صفر لگادی ۔اب نور حیات کو روزانہ دس روپے منافع ملنا شروع ہوگیا۔کچھ عرصے بعد ایک اور ولی وہاں سے گزرے، انھوں نے بھی پانی پی کر نور حیات کی ہتھیلی پہ ایک صفر ڈال دی، اور نور حیات کو روزانہ سو روپیہ نفع ملنا شروع ہوگیا۔ تھوڑے عرصے بعد وہاں سے کسی قطب کا گزر ہوا، انھوں نے بھی پانی پی کر خوشی سے کہا: مانگو کیا مانگتے ہو؟

نور حیات نے ان کے آگے ہاتھ پھیلایا تو انھوں نے ایک صفر کا مزید اضافہ کر دیا۔

اب اسے روز نہ ہزار روپیہ منافع ہوتا.....، دن بہ دن اس کے حالات بدلتے گئے، اور وہ بہت مالدار ہوگیا، اس نے کنویں کو خیر باد کہ دیا۔

کچھ ہی ماہ گزرے تھے کہ پہلے والے درویش واپس لوٹے، انھوں نے جب کنواں بے آباد دیکھا تو پوچھا وہ شخص کہاں ہے جو مسافروں کو پانی پلاتا تھا؟ لوگوں نے کہا:

حضرت! وہ یہ کار خیر چھوڑ کر اپنے کاروبار میں مشغول ہوگیا ہے۔ فرمانے لگے مجھے اس کے پاس لے چلو۔

جب اس کے ہاں پہنچے تو دیکھا کہ اسے مال و منال نے بہت بدل دیا ہے، انھوں نے فرمایا: ہاتھ مجھے دکھاؤ!

جب اس نے ہاتھ آگے کیا تو انھوں نے اپنا ایک مٹا دیا؛ ایک مٹنے کے بعد صفروں کی کوئی وقعت نہ رہی، اسے جو روزانہ ہزار روپیہ ملتا تھا وہ بند ہوگیا؛ کیوں کہ اصل تو وہ ایک تھا جس نے صفروں کو وجود عطا کیا!!

بلا تمثیل و تشبیہ، رسول اللہ ﷺ کی محبت ایک.....، نماز روزہ، حج، زکوۃ، اور دیگر عبادات صفریں ؛ یہ جب تک ایک کے ساتھ ہیں ان کی قیمت سو، ہزار، لاکھ، کروڑ ہے ؛ اگر ان سے محبت رسول کا ایک ہٹا دیا جائے تو بے قیمت ہوجائیں گی، چاہیں جتنی بھی ہوں۔ خدا ہمارا "ایک" سلامت رکھے !! میرے امام فرماتے ہیں:

بے اُن کے واسطے کے خُدا کچھ عطا کرے
حاشا غلط غلط ، یہ ہوس بے بصر کی ہے
نُورِ اِلٰہ کیا ہے ؟ محبت حبیب کی !
جس دل میں یہ نہ ہو ، وہ جگہ خوک وخر کی ہے

# (2)دوسرا باب:اصلاح معاشرہ

یہ باب اصلاح معاشرہ کے بیان میں ہے۔اس میں وہ تحریریں ہیں جو معاشرے کی اصلاح کے لیے لکھی گئی ہیں۔

## علما کا ادب

خراسان کے بادشاہ اسمٰعیل بن احمد سامانی کے دربار میں بخارا کے ایک عالم آئے۔ بادشاہ نے ان کے احترام میں سات قدم بڑھ کر استقبال کیا۔

بادشاہ کے بھائی امیر اسحاق کو یہ ناگوار گزرا، وہ کہنے لگا: اس قسم کی تعظیم بادشاہوں کے شایان شان نہیں!

بادشاہ نے کہا: میں نے علم کی وجہ سے ان کی تعظیم کی ہے، علم سب سے بڑا شرف ہے۔

اُسی رات بادشاہ کو خواب میں نبی پاک ﷺ کی زیارت ہوئی، آپ فرما رہے تھے:

"میری امت کے ایک عالم کی تو نے عزت کی اور اسے لینے کے لیے سات قدم آگے بڑھا، میں خداتعالیٰ سے عرض کرتا ہوں کہ تیرا نام اور تیری نسل زندہ رہے۔"

(ملخصًا: جوامع الحکایات ولوامع الروایات، ج2، باب دوم، در فضیلت تواضع، ص18، ط انجمن ترقیٔ اردو پاکستان کراچی، س2012ء)

اللہ پاک ہمیں بھی علمائے کرام کا ادب واحترام نصیب فرمائے!

## بیٹی، بہن کو حصہ دیں

ایک گھر میں تقسیمِ جائیداد کا مسئلہ بنا ہوا تھا، اُنھوں نے میری طرف رجوع کیا تو میں نے فیصلہ سنانے کے بعد کہا: "جس طرح آپ سب بھائیوں کو ایک ایک کروڑ دس دس لاکھ آتے ہیں، اسی طرح آپ کی بہن کا بھی شرعی حصہ ہے؛ اسے محروم نہ کرنا۔ بہنوں کو لازمی حصہ دیتے ہیں، ان سے معاف بھی نہیں کرواتے۔ ظالم لوگ بہنوں کا حصہ غصب کرتے ہیں اور معاف وہ کرواتے ہیں جو مستحقِ صدقہ وزکوٰۃ ہوتے ہیں۔"

الحمدللہ ان کے ذہن میں بات بیٹھ گئی، اور انھوں نے نیت کرلی کہ ہم اپنی بہن کو قرآن وسنت کے مطابق لازمی حصہ دیں گے! قریب ایک صاحب بیٹھے تھے، ہماری گفتگو سن کر وہ بھی کہنے لگا:

میں گاڑی بیچ کر اپنی ہمشیرہ کا حصہ نکالتا ہوں، کیوں کہ یہ گاڑی میرے والد صاحب کی تھی میں اکیلا اس کا مستحق نہیں۔ اللہ کریم انھیں بہترین جزا دے اور ثابت قدم رکھے! اگر ہم اپنی بہنوں، بیٹیوں کو محروم نہیں کریں گے تو رب تعالیٰ ہمیں اپنی رحمت سے محروم نہیں کرے گا۔ اپنے قبضے میں کیا ہوا مال تو سانس بند ہونے کے بعد اپنا نہیں رہے گا، لیکن اللہ کے لیے دیا ہوا مال مرنے کے بعد بھی کام آئے گا۔

## بیٹی اور حق وراثت

ایک شیخ صاحب کہنے لگے:

بچوں کو سکول سے چھٹیاں نہیں ہونی چاہییں، مینیو بڑھ جاتا ہے؛ کیوں کہ بیٹیاں بچوں کو لے کر میکے آدھمکتی ہیں۔

مجھے اس بات پر بہت افسوس ہوا، میں سوچنے لگا یہ کیسا انسان ہے جس کی ماہانہ لاکھوں میں آمدن ہے اور دل اس قدر غریب!!

لوگ بیٹیوں کے ساتھ آج بھی زمانہ جاہلیت والا برتاؤ کرتے ہیں، میں نے کئی ایسے پڑھے لکھے، اور بہ ظاہر نیک صورت بھی دیکھے ہیں جو بیٹیوں کو حقِ وراثت سے محروم رکھتے ہیں۔ یہ غاصب اور ظالم سمجھتے ہیں اگر جائیداد سے بیٹیوں کو حصہ دے دیا تو ہمارے پاس کچھ نہیں رہے گا۔

اللہ انھیں ہدایت دے یہ بیٹیوں کو اس حق سے محروم کرتے ہیں جو رب نے قرآن میں ان کے لیے مقرر فرمادیا۔

بیٹیوں کو ذہنی طور پر ایسا کر دینا کہ وہ اپنے حصے کا مطالبہ ہی نا کریں اور اس ڈر سے بھائیوں کے حق میں بیان دے دیں کہ کہیں ہمارے میکے گھر آنے پر پابندی نہ لگ جائے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، بہت بڑا ظلم ہے۔

اللہ سے ڈرنے والے ہر والد کو چاہیے کہ وہ بیٹی کو اس حق سے ہرگز محروم نہ کرے جو رب تعالی نے اس کے

## علما کی مالی خدمت

صبح سویرے مختلف ائمہ مساجد کی قرات سننا، مصر کے فرماں رَوا ابن طولون کی عادت میں شامل تھا۔

ایک دن (قرآت سن کر گھر لوٹے تو) اپنے مصاحب سے کہنے لگے: یہ دینار لے جاؤ اور فلاں مسجد کے امام صاحب کو دے آؤ!

مصاحب کہتا ہے: میں دینار لے کر امام صاحب کے ہاں پہنچا، تو ان کے پاس بیٹھ کر باتیں کرنے لگا۔

امام صاحب میرے ساتھ گھل مِل گئے اور اپنے دُکھ کا اظہار کرتے ہوئے کہنے لگے:

"میری بیوی کے ہاں ولادت ہونے والی ہے، لیکن میرے پاس اتنی رقم بھی نہیں کہ اُس کے لیے ضروری سامان لا سکوں، اسی پریشانی میں آج نماز پڑھاتے وقت بھی کئی غلطیاں ہوگئیں۔"

مصاحب کہتا ہے میں نے آکر ابن طولون کو ساری بات بتائی تو کہنے لگے: امام صاحب نے سچ کہا؛ میں آج ان کی قرات سننے کے لیے ٹھہرا تو وہ بہت غلطیاں کر رہے تھے، میں نے سمجھ لیا ان کا دل کسی اور طرف مشغول ہے۔ (اسی لیے رقم بھجوائی)

(انظر: الاذکیا لابن جوزی، الباب الحادی عشر فی سیاق المنقول من ذلک عن السلاطین۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ص 57، ط دار الفکر بیروت، س 1425)

اللہ پاک ہماری مساجد انتظامیہ کو بھی ابن طولون جیسی فہم و فراست عطا فرمائے۔

امام صاحبان کے بھول جانے پر، چڑھائی کرنے کے بجائے بھولنے کی وجہ تلاش کیا کریں، ہو سکتا ہے وہ بھی مصری امام کی طرح کسی پریشانی میں مبتلا ہوں! میرے مسلمان بھائیو! جس طرح دینِ اسلام میں مسجد کا مقام بہت بلند ہے، اسی طرح امام مسجد کی بھی بڑی شان ہے۔

اگر غور کیا جائے تو امام ہی وہ ہستی ہے جس کے طفیل اللہ تعالی مقتدیوں کو ایک نماز کے بدلے کئی کئی نمازوں کا ثواب

عطا فرماتا ہے۔ اس لیے ہم سب پر فرض ہے کہ اپنے امام مسجد کی دنیوی ضرورتوں کا ہر طرح سے خیال رکھا کریں، تاکہ وہ فارغُ البال ہو کر ہمیں دین سکھائیں۔

## مزار پر یہ کام حرام ہے

آج صبح اپنے چچا جی کے ساتھ حضرت شاہ دولہ رحمہ اللہ کے مزار شریف پر حاضر ہوا۔ جب ہم دروازے سے داخل ہونے لگے تو چچا جان نے قریبی دُکان سے کچھ چڑھاوا خریدنا چاہا، جس پر میں نے انھیں منع کیا اور عرض کی:

یہ جو چاندی کے مجسمے، ہاتھ، گھٹنے کان وغیرہ پڑے ہیں ان کا دربار شریف پر چڑھاوا چڑھانا سخت گناہ ہے۔ کیا ہم کسی ولی اللہ کے مزار پر ہندووں کی طرح رسومات ادا کر کے اللہ کا قرب حاصل کریں گے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔توبہ توبہ، ہرگز نہیں!!

چچا جی میری بات سمجھ گئے اور اپنے ارادے سے باز آ گئے، اللہ انھیں جزائے خیر دے۔ پھر میں نے انھیں مسئلہ بتایا کہ ہماری فقہ حنفی کی مشہور کتاب در مختار میں لکھا ہے:

جو نذر اولیائے کرام کا قرب حاصل کرنے کے لیے ان کی قبروں پر لے جاتے ہیں

"فَهُوَ بِالْإِجْمَاعِ بَاطِلٌ وَّحَرَامٌ"

وہ بالاجماع باطل اور حرام ہے۔

ہونا یہ چاہیے کہ جب مزارات اولیا پر لنگر وغیرہ لے کر جائیں تو اسے صاحب مزار کا قرب حاصل کرنے کے لیے نہیں، بلکہ اللہ کا قرب حاصل کرنے کے لیے، فقرا و مساکین پر صدقہ کرنے کی نیت سے لے کر جائیں!

مزارات اولیا پر ضرور جانا چاہیے لیکن شریعت کے دائرے میں رہتے ہوئے۔ مزارات کا طواف کرنا، انھیں سجدے کرنا، وہاں گھڑولیاں بھرنا، عورتوں مردوں کا جمع ہونا، غلط قسم کے چڑھاوے چڑھانا سب ناجائز کام ہیں۔

بلکہ سیدی اعلی حضرت رحمہ اللہ کے نزدیک تو مزار کو بوسہ دینا اور چھونا بھی مناسب نہیں۔

جائز یہ ہے کہ: مزار شریف کے پاس تلاوت قرآن پاک کی جائے، درود و سلام پڑھا جائے اور اللہ کے حضور دعا کی جائے۔

## فیس بک استعمال کرنے والے علما کے لیے

۱: فیس بک بھری محفل کی طرح ہے جس میں آپ بہ صورتِ پوسٹ خطاب کرتے ہیں۔

آپ کا یہ خطاب مختصر اور جامع ہونا چاہیے، کیوں کہ آپ کے سامعین صرف آپ کو سننے کے لیے یہاں جمع نہیں ہوئے، آپ سے بہتر خطیب و ادیب بھی رونق محفل ہیں۔

۲: اس محفل میں ہر طبقے کے نہ صرف پڑھے لکھے لوگ موجود ہیں بلکہ کافی تعداد میں اَن پڑھ افراد بھی ہیں، ان سب کی

رعایت ملحوظ رکھیں۔

۲: الفاظ کا چناؤ جہاں آپ کو منفرد بنائے گا وہیں آپ کی بات سمجھنے اور اثرانداز ہونے میں سہولت فراہم کرے گا، اس لیے کوشش کرکے خوب صورت، آسان اور میٹھے الفاظ کا استعمال کریں۔

۳: جو دوست آپ کی پوسٹیں شیئر اور لائک کرتے ہیں، ان پر اچھے کمنٹ یا صالح تنقید کرتے ہیں، آپ بھی انھیں اہمیت دیا کریں اور ان کے لیے دعاے رحمت کرتے رہا کریں۔

۴: صالح تنقید برداشت کرنے کا حوصلہ اور ناقِدین کی حوصلہ اَفزائی بہت ضروری ہے۔

ناقِدین کے متعلق دل میں ہرگز کسی قسم کا بغض نہیں رکھنا چاہیے، یہ سچ ہے کہ:

"جس کا کوئی ناقِد نہیں ہوتا، وہ بہت جلد شُتر بے مَہار ہو جاتا ہے"۔

۵: مسلمان بہنوں، بیٹیوں کی ایک تعداد فیس بک سے منسلک ہے، ان کا احترام ملحوظ رکھیں؛ مزاح مزاح میں بھی کوئی ایسا لفظ استعمال نہ کریں جو تقدیس و حیا کے مانع ہو۔

۶: کسی غیر محرم خاتون سے مسنجر وغیرہ پر رابطہ نہ بڑھائیں، اگر کوئی شرعی مسئلہ پوچھے تو ضروری جواب دے کر بات ختم کردیں، اس معاملے میں اللہ سے ڈریں!

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ۔

اللہ جانتا ہے آنکھوں کی خیانت اور جو کچھ سینے میں چھپا ہے۔

یہ بھی یاد رکھیں کہ عورت کے نام سے بنائی گئی ہر آئی ڈی واقعی عورت کی ہو یہ ضروری نہیں؛ ہوسکتا ہے وہ کسی ایسے مرد کی ہو جو آپ کو رسوا کرنا چاہتا ہے، اس لیے بہ ہر صورت پرسنل گفتگو سے پرہیز کریں۔

۸: دینی پوسٹیں صرف لائکس، کمنٹس اور شہرت کے لیے نہ کریں، بلکہ رضاے الٰہی کی خاطر کریں۔

ایک شخص نے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی بارگاہ میں عرض کی تھی:

حضور! ایک شخص جہاد کے لیے نکلتا ہے اور اجر کے ساتھ شہرت کا بھی طالب ہوتا ہے، اُسے کیا ملے گا؟

آپ نے فرمایا: کچھ بھی نہیں!

اس نے اپنی بات تین مرتبہ دہرائی تو اُسے یہی جواب ملا۔

پھر آپ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم نے فرمایا:

اللہ تعالیٰ صرف وہی عمل قبول کرتا ہے جو خالص اسی کے لیے ہو، اور اُس سے، اُسی کی رضا مقصود ہو۔

(انظر: الترغیب والترھیب من الحدیث الشریف، کتاب الایمان، باب الترغیب فی الاخلاص والصدق والنیۃ الصالحۃ، ص 14، ر 9، ط دار الکتاب العربی بیروت، س 2014ء)

۹: علما کا ہر وقت فیس بک سے چِمٹے رہنا مناسب نہیں۔

پوسٹ کریں اور دیگر علمی کاموں میں مشغول ہوجائیں، جیسے جیسے فرصت ملے کمنٹس وغیرہ چیک کرلیں۔

۱۰: آپ غور فرمائیں کہ ہزاروں، لاکھوں اخراجات کے بعد ایک محفل کا انعقاد ہوتا ہے، جس میں کسی عالم دین کو مدعو کیا جاتا ہے اور وہ گھنٹہ ڈیڑھ خطاب کرتے ہیں۔ اگر مجمع چار پانچ ہزار افراد پر مشتمل ہو تو محفل کامیاب تصور کی جاتی ہے۔

لیکن فیس بک تو ہزاروں کی محفل ہے جس میں بچے، جوان، بوڑھے، عورتیں، مرد سب جمع ہیں؛ جو آپ کی بات سننا اور عمل کرنا چاہتے ہیں۔

اس لیے یہاں جو بات کہیں پوری دل جمعی سے، اچھی نیت کے ساتھ کہیں، ان شاءاللہ جَلَّ جَلَالُہٗ آپ کے لیے عظیم صدقہ جاریہ ہوگا۔

## پیر صاحب کی گاڑی

میں ایک پیر صاحب سے ملاقات کے لیے گیا، اُن کے پاس بیٹھے تھوڑی ہی دیر گزری تھی کہ ایک طالب علم کے چھت سے گرنے کی خبر آئی۔ خادم نے آکر کہا: حضور!

میں نے اس کے گھر والوں سے کہا ہے ہم اسے پیر صاحب کی گاڑی پر گھر چھوڑ جاتے ہیں آپ لوگ پریشان نہ ہوں۔

پیر صاحب بپھرتے ہوئے کہنے لگے:

میری گاڑی لے جانے کا تجھے کس نے کہا، خواہ مخواہ ہمدردیاں نہ جتایا کرو، انھیں خود لے جانے دو اسے۔

خادم بے چارہ منھ بسور کر رہ گیا۔

کچھ دیر بعد پیر صاحب نے جُبہ زیب تن کیا، اونچی ٹوپی سر پر رکھی اور "لوگوں کی طرف سے "غریبوں کو دی جانے والی امداد کے ساتھ تصویریں بنوانے لگے، تاکہ مریدین "بفیضانِ نظر" سے تشہیری مہم چلا سکیں۔

افسوس کہ قوم کا تزکیہ کرنے والے بھی نفاق و ریا میں مبتلا ہوگئے۔ اب ان کے ہاں تقوی و طہات معیار نہ رہا، مال و منال ہی سب کچھ سمجھا جانے لگا۔ اسی کا اثر ہے کہ امیر مُرید کو کانٹا چُبھ جائے سارا آستانہ دعاؤں سے گونج اٹھتا ہے، غریب مرید بلکتا مر جائے تسلی تک نہیں دی جاتی!

جنازے سے زیادہ ختمِ قُل کی محفلوں کو ترجیح دی جاتی ہے، کیوں کہ عموماً جنازے مُرغ مُتنجن اور نذر و فتوح سے خالی ہوتے ہیں؛ جب کہ ختم اور محفلیں مریدین کی جمع پونجی ختم کرنے کی بہترین فرنچائزیں ہیں، انھی کی برکت سے مریدین کی جیبیں آلائشِ زر سے پاک ہوتی ہیں۔

افسوس صد افسوس:

اِن کو قسمت سے ملی مَسندِ مَردانِ خُدا
یعنی رُوباہوں کے قبضہ میں ہے شیروں کی کچھار

جُبہ و سُبحَہ و سَجّادہ و رِیشِ یَک مُشت
بچنے پاتا نہیں اِس دام سے مُرغِ ہُشیار
اب بھی پیشانیِ اسلام پہ ہے قَشقَہ کفر
اب بھی جاری ہے رگِ سُبحَہ میں خُونِ زُنّار

## فیس بک پر بے جا تصاویر اپلوڈ کرنا

ایک دوست نے دوپہر کے کھانے پر مدعو کیا، جب میں دسترخوان پر بیٹھا تو وہ بیٹے سے کہنے لگے:
میری اور حضرت صاحب کی تصویر بناؤ، اسے فیس بک پر لگائیں۔

میں نے انھیں بڑے پیار سے کہا:
پہلی بات تو یہ ہے کہ میں شوقیہ تصویریں بنوانا اچھا نہیں سمجھتا، اور دوسری بات یہ کہ ہمسائیوں کو ہانڈی کی خوش بو سے تکلیف دینا منع ہے (یعنی اچھا کھانا پکا کر خود کھا لینا اور ہمسائیوں کو پوچھنا تک نہ، وہ صرف خوش بو ہی سونگھتے رہ جائیں!)
تو جب ہمسائیوں کی اذیت کا سبب بننے والی ہانڈی کی خوش بو بھی اچھی نہیں، تو اس طرح انواع و اقسام کے کھانوں کی تصویریں اپلوڈ کرنا کیسے درست ہو گا!! آپ فیس بک پر صرف ایسی چیزیں شیئر کیا کریں جن سے آپ کے دوستوں کو دین و دنیا کا نفع حاصل ہو تاکہ وہ آپ کے لیے دعاے خیر کریں!

## اخلاص

ایک صوفی رحمہ اللہ نے فرمایا تھا:
"جسے خوب صورت مسجد میں نماز پڑھتے لطف آئے اور عام مسجد میں دل نہ لگے، اُسے اپنے اخلاص کا علاج کرنا چاہیے؛ اس کی نماز رب کے لیے نہیں، تزئین و آرائش کے لیے ہے۔"
ہمارے زمانے کے وہ علما و واعظین جو گدی نشین سادات کی دن رات تعریف و تعظیم کرتے نہیں تھکتے لیکن غریب اور گم نام سید زادوں کا حال تک نہیں پوچھتے، انھیں بھی اپنے اخلاص کا علاج کرنا چاہیے!!

سیدہ کائنات زہرا پاک رضی اللہ تعالیٰ عنھا کی ساری اولاد لائق صد تکریم ہے، چاہے وہ مشہور و معروف نہ بھی ہو۔ اعلیٰ حضرت امام احمد رضا رحمت اللہ تعالیٰ علیہ ہر سُنی سید زادے کی تعظیم کرتے تھے، اگر محفل میں کوئی سید صاحب بیٹھے ہوتے تو ان کی طرف پاؤں نہ پھیلاتے، جب کچھ تقسیم کرنے لگتے تو سیدوں زادوں کو دوسروں کی بہ نسبت دُگنا پیش کرتے۔ رب تعالیٰ ہمیں عترت رسول کی اخلاص کے ساتھ تعظیم کرنے کی توفیق عطا فرمائے!

## غم حسین اور ماتم

سیدنا امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شہادت پر تمام مسلمانوں کو غمگین ہونا چاہیے، بے شک آپ مسلمانوں کے سردار اور علما و صحابہ میں سے تھے، اور رسول پاک ﷺ کی افضل بیٹی (سیدہ فاطمہ زہرا) کے فرزندِ ارجمند تھے۔

آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عابد، بہادُر اور سخی تھے، جس طرح شیعہ آپ کی شہادت پر جَزع وفَزع کا اظہار کرتے ہیں یہ اچھا نہیں؛ بلکہ ہو سکتا ہے اکثر تَصَنُّع اور رِیا ہو۔

آپ رضی اللہ عنہ کے والد گرامی رضی اللہ تعالیٰ عنہ جو آپ سے افضل تھے، شہید ہوئے؛ لیکن شیعہ ان کی شہادت پر ماتم نہیں کرتے، سیدنا عثمان پاک شہید ہوئے، جو اہل سنت کے نزدیک سیدنا علی پاک سے بھی افضل ہیں، حضرت عمر پاک شہید ہوئے جو سیدینا عثمان و علی رضی اللہ عنہما سے بھی افضل تھے، مگر لوگوں نے ان کے ایام شہادت کو ماتم کا دن نہیں بنایا۔

اسی طرح سیدنا صدیق اکبر جو ان تمام صحابہ علیہم الرضوان سے افضل تھے، ان کے یوم وصال پر بھی ماتم نہیں کیا گیا، بلکہ دنیا و آخرت میں اولاد آدم کے سردار ﷺ کو بھی اللہ کریم نے دیگر انبیا کی طرح اپنے پاس بلا لیا، لیکن کسی نے آپ ﷺ کے یوم وصال کو ماتم کا دن نہیں بنایا، اور نہ وہ کام کیے جو جاہل رافضی شہادت امام حسین پر کرتے ہیں!

(ملخصًا: البداية والنهاية، من سنة احدى وستين الى سنة خمس وستين------، ج2، ص237، ط المكتبة العصرية صيدا بيروت، س1430ھ)

## مقابلہ کریں

استاد گرامی اپنے بچپن کا واقعہ سناتے ہیں کہ:

گاؤں رَتی ٹبی (شیخوپورہ) میں محمد علی اور رمضان نامی دو بھائی رہتے تھے، اُن کا گاؤں میں بَیر تھا۔

ایک دن یہ اکھاڑے میں زور کر رہے تھے کہ دشمن تلواریں اور برچھیاں لے کر انھیں مارنے پہنچ گئے۔

ایک بھائی نے مشورہ دیا بھاگ کر جان بچا لیتے ہیں، لیکن دوسرا کہنے لگا: اگر بھاگیں گے تو بھی ماریں جائیں گے، اس لیے بزدلی کی موت سے بہتر ہے لڑتے لڑتے مر جائیں!

وہ دونوں اپنی برچھیاں تھام کر مقابلے کے لیے تیار ہو گئے۔

جب دشمنوں نے ہلا بولا تو انھوں نے جلال نامی شخص کو تاک کر برچھی ماری اور وہ گر پڑا؛ اس کا گرنا تھا کہ شور مچ گیا:

جَلا قتل ہو گیا، جَلا قتل ہو گیا؛ اور سب بھاگ کھڑے ہوئے۔

ان دونوں نے تعاقب کر کے کچھ مزید کو زخمی کیا اور بقیہ تتر بتر ہو گئے۔

اگر مسلم ممالک آج بھی ان دو بھائیوں کی طرح برچھیاں سنبھال لیں تو ہالینڈ جیسا کوئی گستاخ رسول باقی نہ رہے! لیکن کیا کیا

جائے یہ ابھی تک احتجاج ریکارڈ کروانے کے چکروں میں ہیں، جو کبھی ریکارڈ نہیں ہوگا!
کاش یہ سمجھ جائیں کہ مرتو ہم نے ایک دن جانا ہے، کیوں نہ حرمت رسول پر قربان ہو جائیں۔

## بڑوں کا ادب

میں نے معتبر علما سے سنا ہے کہ شیخ الاسلام خواجہ قمرالدین سیالوی رحمہ اللہ کے چچا جی آپ کو بعض اوقات بھری محفل میں ڈانٹ دیتے اور کہتے:
او قمر اٹھ، بھینسوں کو چارہ ڈال؛ ہر وقت مریدوں کے جھمگٹے میں بیٹھا رہتا ہے، یہ تجھے اپاہج کر دیں گے!
مریدین سن کر غصے میں آتے مگر خواجہ صاحب یہ کہتے ہوئے اٹھ کھڑے ہوتے کہ:
یہ میرے والد کی طرح ہیں، مجھے جھڑکنا ان کا حق ہے؛ یہ جو بھی کہتے ہیں میری بھلائی کے لیے کہتے ہیں، مجھے ان کے حکم کی تعمیل کرنی چاہیے۔
اللہ کریم ہمیں بھی اپنے بڑوں کا مودب بنائے! دو چار لفظ پڑھ جانے، یا منصب مل جانے سے بندہ اپنے بڑوں کا بڑا نہیں بن جاتا، بڑے ہمیشہ بڑے ہی رہتے ہیں؛ ان کی روک ٹوک اور جھڑکیاں خندہ پیشانی سے قبول کرنا سعادت مندی ہے۔

## مزدوروں کا حال

کسی شخص نے ایک لڑکے سے کام کاج کے لیے بات کی، تو اُس سے پوچھا: تمھاری تنخواہ کیا ہوگی؟
اُس نے کہا: پیٹ بھر کر کھانا کھلا دینا۔ کہنے لگا: کچھ رعایت کرو!
لڑکا بولا: اصوم الاثنین والخمیس۔ میں پیر اور جمعرات کا روزہ رکھ لیا کروں گا۔
(انظر: الاذکیا لابن جوزی، ص 127، الباب العشرون، دار الفکر بیروت، 1425ھ)

آج بھی مزدور کا یہی حال ہے، اللہ کریم رحمت عالم ﷺ کے طفیل رحم فرمائے!

بندۂ مزدور کو جا کر مرا پیغام دے
خضر کا پیغام کیا، ہے یہ پیامِ کائنات
اے کہ تجھ کو کھا گیا سرمایہ دار حیلہ گر
شاخِ آہو پر رہی صدیوں تلک تیری برات
دستِ دولت آفریں کو مُزد یوں ملتی رہی
اہلِ ثروت جیسے دیتے ہیں غریبوں کو زکات
ساحرِ الموط نے تجھ کو دیا برگِ حشیش

اور تُو اے بے خبر ، سمجھا اسے شاخ نبات !
نسل ، قومیت ، کلیسا ، سلطنت ، تہذیب ، رنگ
خواجگی نے خوب چن چن کے بنائے مسکرات
کٹ مرا ناداں خیالی دیوتاؤں کے لیے
سکرکی لذت میں تو لٹوا گیا نقدِ حیات
مکر کی چالوں سے بازی لے گیا سرمایہ دار
انتہائے سادگی سے کھا گیا مزدور مات
" اُٹھ کہ اب بزمِ جہاں کا اور ہی انداز ہے
مشرق و مغرب میں تیرے دور کا آغاز ہے ! "

## باہمی اختلافات

آج فجر کے وقت میں نے یہ خواب دیکھا ہے:

اسرائیل نے وسیع پیمانے پر آگ لگادی ہے جو ہمارے گھربار اور ہماری فوجی چھاؤنیوں تک پہنچ گئی ہے ؛ہم دفاع کے لیے بھاگ دوڑ کر رہے ہیں ، لیکن جب اس طرف دوڑتے ہیں جدھر آگ نہیں لگی تو کیا دیکھتے ہیں کہ ہم سے فروعی اختلاف کرنے والے مسلمان ادھر آگ لگانے میں مشغول ہیں، وہ اسرائیل کا مقابلہ کرنے کے بجائے ہماری جان و املاک کے درپے ہیں۔

مجھے رہ رہ کر افسوس ہوتا ہے کہ ان کو کیا ہو گیا یہ ایسے اذیت ناک مرحلے میں دشمن کے ہاتھ مضبوط کر رہے ہیں!!

میں ایک شخص کو سمجھاتا ہوں کہ یہ باہمی لڑنے کا وقت نہیں، کافروں کے خلاف متحد ہونے کا وقت ہے؛ تو وہ میری بات سمجھ جاتا ہے۔ لیکن..... مسلمانوں کی کثیر تعداد اپنوں کا خون کرنے میں بڑھ چڑھ کر حصہ لے رہی ہے۔

میں دل ہی میں دل روتا ہوں کہ کاش ہم نے بہت پہلے باہمی اختلافات چھوڑ دیے ہوتے تو آج یہ دن نہ دیکھنا پڑتا !میں نے اس خواب کی یہ تعبیر لی: ہم باہمی اختلافات میں اس حد تک چلے گئے کہ ایک دوسرے کی جان اور مال کے بھی دشمن بن گئے ؛اسے اذیت دینے کا کوئی موقع ہاتھ سے نہیں جانے دیتے—

بس اب ہمیں سارے اختلافات چھوڑ کر اس دشمن کے خلاف ایک ہو جانا چاہیے جو ہم سب کا متفقہ دشمن ہے، یعنی یہودی و عیسائی وغیرہ!!

میں بلبلِ نالاں ہوں اِک اُجڑے گلستاں کا
تاثیر کا سائل ہوں ، محتاج کو داتا دے !

## صحابہ کی تنقیص

امامِ اہل سنت، حضرت احمد بن حنبل سے کسی نے پوچھا کہ ایک شخص حضرت معاویہ اور حضرت عمرو بن عاص کی تنقیص کرتا ہے: ایقال لہ رافضی؟

کیا اسے رافضی کہیں گے؟

آپ نے فرمایا: بے شک اس (خبیث) نے ان دونوں ہستیوں کے خلاف اسی لیے جرأت کی کہ وہ اپنے اندر برائی چھپائے ہوئے ہے؛ اور جو شخص کسی بھی صحابی کی تنقیص کرتا ہے اس کا باطن (لازماً) خراب ہوتا ہے۔

(السنة للخلال، ج1، ص350، 351، ر690، الفاروق الحديثية.....القاهرة1428)

جھوٹے سچے اقوال و روایات کو بنیاد بنا کر سیدنا عثمان غنی، سیدنا علی مرتضی، امام حسین پاک، حضرت امیر معاویہ، حضرت مغیرہ بن شعبہ، حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ عنھم کی تنقیص کرنے والے بھی باطنی طور پر نجس و ناپاک ہیں، ایسی پلیدوں سے کوسوں دور رہنا چاہیے!!

## صحابہ کا دفاع

نبی مکرم ﷺ نے فرمایا:

جب میری امت میں بدعتیں ظاہر ہوں اور لوگ میرے صحابہ کو برا کہنے لگیں، تو اُس وقت عالم کو اپنا علم ظاہر کرنا چاہیے؛ جو عالم ایسا نہیں کرے گا اُس پر اللہ، اُس کے فرشتوں اور سارے انسانوں کی لعنت ہوگی۔

(مفتاح الجنة فی الاحتجاج بالسنة، للسیوطی، ص66، الجامعة الاسلامیہ المدینہ المنورة، 1409ھ)

یہ حدیث کئی محدثین نے نقل کی ہے، اگرچہ سنداً ضعیف ہے لیکن اس میں بیان کی گئی وعید بہت قوی ہے!

ہم ایسے زمانے میں ہیں جب بدعتیں عام ہوگئیں، اور لوگ صحابہ کرام علیہم الرضوان کو علانیہ برا کہنے لگے، معاذ اللہ ثم معاذ اللہ۔

اب علما کے لیے علم چھپانا جائز نہیں رہا، ان پر صحابہ کرام کا دفاع لازم ہے—

خطیب بغدادی اس حدیث پاک کے آگے یہ الفاظ بھی لائے ہیں کہ ایسے حالات میں علم چھپانے والے عالم کا اللہ پاک فرض و نفل بھی قبول نہیں فرمائے گا۔ (العیاذ باللہ)

(انظر: الجامع الاخلاق الراوی وآداب السامع، ج2، ص118، ر1354، مکتبة المعارف الریاض)

جو علماے اہل سنت سوشل میڈیا سے منسلک ہیں، وہ بھی مقدور بھر صحابہ کرام علیہم الرضوان کا علمی دفاع کریں، پروردگار عالم اپنی رحمت سے محروم نہیں رکھے گا...

## انتقام

سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے دورِ حکومت میں، ملکِ شام کے ساحل پر واقع: "جَبَل جَلِیل" پہ ایک قید خانہ بنوایا تھا؛ جس میں وہ لوگ لائے جاتے جن پر امامِ مظلوم سیدنا عثمان پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قتل کا الزام ہوتا، اور بعد از تفتیش و تصدیق ان سے قِصاص لیا جاتا۔

(دیکھیے: ثقہ مورخ علامہ یاقوت حموی متوفی 626ھ کی المُعجم البلدان، باب الجیم، ج2، ص158، دار صادر بیروت، 1995ء وغیرہ)

ہمارے سیاسی پناہ گزین قاتلوں، رہزنوں کے لیے بھی ساحلِ سمندر پر ایسا قید خانہ ہونا چاہیے، تاکہ تفتیش و تصدیق کے بعد مچھلیوں کی شکم پروری کا سامان ہو سکے.....؛ محض عدالتی فیصلے غیر موثر ہو چکے ہیں!!

## راستے بند کرنا

ایک سفرِ جہاد میں لوگوں نے منزلیں تنگ کر دیں اور راستے بند کر دیے تو نبی اکرم ﷺ نے منادی کو بھیجا، جو لوگوں میں اعلان کرتا تھا:

"جس نے منزل تنگ کی یا راستہ قطع کیا، اُس کا کوئی جہاد نہیں!"

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الجہاد، ج2، ص346، رقم 3918، المکتبۃ التوقیفیہ القاھرہ، مصر)

اللہ کریم ہمیں اس واضح حدیث پاک کو بھی سمجھنے کی توفیق عطا فرمائے!

## جاہلوں سے کنارہ کشی

مولانا بلال رضوی صاحب سے ملاقات ہوئی تو کہنے لگے:

"کتنے افسوس کی بات ہے، کچھ سُنی کہلانے والے بھی امام اہل سنت کے خلاف ہرزہ سرا ہیں"

میں نے کہا: بعض "سُنی" کہلانے والوں نے تو حضور غوث پاک کو نہیں بخشا، انھیں متکبر تک کہہ دیا، معاذاللہ ثم معاذاللہ!

ایسے لوگوں کی کوئی وقعت نہیں؛ یہ ہرزہ سرائیاں کرتے بے نام و نشان ہو جائیں گے لیکن..... اللہ والوں کا نام قیامت تک رہے گا!

ہمیں ایسے لوگوں کے پیچھے اپنی علمی و قلمی صلاحیتیں ضائع کرنے کی ضرورت نہیں —

سیدنا امام شافعی رضی اللہ عنہ نے کہا تھا:

اَعْرِضْ عَنِ الجَاهِلِ السَّفِيه - فكلُّ ما قالَ فَهُوَ فيه

ماضرَّ بحرَ الفُراتِ يوماً - ان خاضَ بَعْضُ الكِلاب فيه

جاہل بے وقوف سے منہ پھیر لو (اس کی ہرزہ سرائی کا جواب نہ دو)، وہ جو کچھ بکے گا از خود اس میں مبتلا ہو گا۔

بعض کتوں کا دریائے فرات میں ڈبکی لگالینا اُسے نقصان نہیں پہنچاتا (اس کا پانی پاک ہی رہتا ہے)

ہمیں چاہیے، علمی کام کریں!!

امام اہل سنت نوراللہ مرقدہ نے جن علوم وفنون پر کام کیا اسے آگے بڑھائیں۔

کئی ایسے علوم ہیں جن میں امام صاحب کو مہارت تامہ تھی لیکن ہم انھیں متروک سمجھ بیٹھے ہیں۔ مثلاً:

علم جفر، علم الوفق، ارثماطیقی وغیرہ۔

علم جفر میں آپ نے جو کتابیں یادگار چھوڑیں، اپنی مثال آپ ہیں۔ جیسے:

الثواقب الرضویہ　　الجداول الرضویہ　　الاجوبۃ الرضویہ　　مجتلی العروس

(الحمدللہ میں کافی عرصے سے اس علم کی کھوج میں ہوں، اور امید رکھتا ہوں کہ ایک دن کامیابی مل ہی جائے گی؛ مجتلی العروس سے استفادہ کرتا ہوں لیکن بہت کم ہوپاتا ہے.....؛ بہ ہر حال امید کم نہیں!!)

بلال صاحب نے میری بات سے اتفاق کیا اور کہنے لگے: میں امام اہل سنت پر کیا کام کروں؟

میں نے عرض کی: آپ کو چوں کہ فقہ سے شغف ہے آپ امام صاحب پر فقہی حوالے سے ایسا کام کریں جو پہلے نہیں ہوا۔

## مومن کعبے سے افضل

بندۂ مومن کعبہ شریف سے افضل ہے، اور اللہ تعالی کی بارگاہ میں فرشتوں سے زیادہ مکرم۔

(انظر: احیاء علوم الدین، کتاب الخوف والرجاء، بیان دواء الرجاء.....ص1572، 1573، دارالکتاب العربی بیروت 1429ھ)

ہم لوگ کعبہ شریف کے احترام میں، اُس کی طرف پاؤں تک نہیں پھیلاتے؛ لیکن..... اہل ایمان کو ٹھوکریں مارتے ہیں۔ فرشتوں کا نام بھی عزت سے لیتے ہیں، لیکن..... اہل ایمان کی عزت نہیں کرتے۔

اللہ پاک ہمارے حال پر رحم فرمائے!!

## میرا پیر تیرا پیر

شیخ ابن عربی کے مرشد، عابد وزاہد حضرت ابومدین شعیب بن حسین مالکی (متوفی 594ھ) پر ایک عالم طعن وتشنیع کرتے تھے، جس کی وجہ سے شیخ ابن عربی اُس عالم سے بغض رکھتے تھے۔

شیخ ابن عربی فرماتے ہیں:

روزی حضرت پیغامبر را صلی اللہ علیہ وسلم بخواب دیدم۔

ایک روز میں نے خواب میں رسول پاک ﷺ کی زیارت کی، آپ فرمارہے تھے: (ابن عربی!) تجھے فلاں سے کیوں بغض ہے؟

میں نے عرض کی: حضور! وہ شیخ ابومدین سے بغض رکھتا ہے جب کہ وہ میرے بزرگ ہیں۔

آپ نے فرمایا:

الیس یحب اللہ ورسولہ ؟ کیا وہ اللہ و رسول سے محبت نہیں رکھتا ؟
میں نے عرض کی: رکھتا ہے۔

آپ نے فرمایا:

فلم ابغضتہ لبغضہ ابامدین ولم تحبہ بحبہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم -
تجھے اُس سے ابومدین کے بغض کی وجہ سے بغض تو ہے لیکن اللہ کے رسول کی محبت کی وجہ سے محبت نہیں!!
شیخ کہتے ہیں میں نے اُس عالم کے بغض سے توبہ کی، اُن کی خدمت میں حاضر ہوکر معذرت کی، "واھدیت الیہ ثوبا عالیا" اور انھیں قیمتی سوٹ نذرانے میں پیش کیا۔ پھر اُن سے جو بغض کی وجہ پوچھی تو وہ غلط فہمی تھی جسے میں نے دور کردیا، اِس طرح اُن کا دل بھی (میرے شیخ کے متعلق) صاف ہوگیا۔

(ملخصًا: انفاس العارفین، شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، ص199، 200، در مطبع مجتبائی واقع دہلی)

## پاکیزہ سوچ

رات کو ایک نوجوان دم کروانے آیا، جو سبزی منڈی میں کام کرتا ہے۔
اُس سے کاروبار کے متعلق بات چیت ہوئی تو کہنے لگا: لوگوں نے ہمارا دس کروڑ دینا ہے۔
میں نے پوچھا: اِتنی بڑی رقم، آپ ان سے کیسے وصول کریں گے ؟
کہنے لگا: ہم سے مال خریدنے والے اکثر غریب لوگ ہوتے ہیں، ہمارے والد صاحب نے ہمیں وصیت کی تھی کہ کسی غریب کو تنگ نہ کرنا، اللہ پاک تمھارا رزق تنگ نہیں کرے گا۔
اس لیے ہم ان سے اچھے طریقے سے قرض وصول کرتے ہیں، کسی کو تکلیف نہیں دیتے۔
ان میں سے جو انتقال کر گئے ہیں انھیں معاف کردیا ہے، تاکہ وہ اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں بھی سرخرو ہوجائیں۔
میں نے کہا: آپ ایسے کیوں کرتے ہیں ؟
کہنے لگا: حضرت صاحب! ساری زندگی دنیا میں تھوڑا بیٹھے رہنا ہے، مرنا بھی تو ہے ناں.....!!
مجھے اُس جوان پر بہت رشک آیا، قسم بہ خدا میرے پاس اُس کی تعریف کے لیے الفاظ نہیں!

## مسلمان کو کافر ٹھہرانا

شیخ الاسلام امام احمد رضا حنفی نوراللہ مرقدہ فرماتے ہیں:
"مسلمان کو کافر ٹھہرانا کفر ہے" (فتاوی رضویہ شریف، ج14، ص649)
جو شخص کلمہ شریف پڑھتا ہے اُس کے کسی قول و فعل پر حکمِ کفر لگانا عوام کا کام نہیں؛ یہ منصب (ملک العلما،

صدرالشریعہ وصدرالافاضل رحمھم اللہ جیسے ) متکلّم وفقیہ علما کا ہے-
عوام اپنے ایمان کی حفاظت کریں! کہیں ایسا نہ ہو کہ دوسرے کو کافر کہتے، خود کفر میں جا پڑیں-

لا الہ الا اللہ محمدرسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم

## خربوزوں کی ریڑھی

ایک شخص نے اپنے بیٹے کو دس پندرہ سال تک پڑھایا، جب اُس نے تعلیم مکمل کرلی تو اُسے ساتھ لے کر اپنے پیر صاحب کے پاس گیا اور عرض کی:
حضور! اِسے کسی دینی خدمت (امامت، خطابت، تدریس وغیرہ) پر مامور فرمادیں-
پیر صاحب جہاں دیدہ تھے، فرمانے لگے:
برخوردار! تین چار ماہ تک بازار میں خربوزے کی ریڑھی لگاؤ، پھر میرے پاس آنا کوئی ذمے داری دے دوں گا-
وہ شخص چونک گیا.....، کہنے لگا:
حضرت! اگر اِس نے خربوزے ہی بیچنے تھے تو پڑھائی میں اِتنے سال کیوں کھپائے؟؟
فرمانے لگے: "بیٹا! جب تک یہ اچھی طرح دنیاداری نہیں سیکھ لیتا، صحیح طور پر دینی مسند سنبھالنے کے قابل نہیں ہوگا"
میں جب اپنے زمانے کے بعض مسند نشینوں کو دیکھتا ہوں تو مجھے رہ رہ کر پیر صاحب کی بات یاد آتی ہے—
کاش! اِنھیں بھی کوئی ایسا رہبر مل گیا ہوتا، جو دینی عہدہ سنبھالنے سے پہلے دنیاداری سکھاتا!!

## استاد ایسا ہونا چاہیے!!

میرے ایک دوست بڑے قابل مدرس ہیں، عرصہ دراز سے مختلف علوم کی تدریس میں مشغول ہیں؛ لیکن اُن میں یہ کمی پائی جاتی ہے کہ طلبہ کے سوالات پر بہت جلد اُکتاہٹ کا شکار ہوجاتے ہیں-
اُن کی نذر "بلاتبصرہ" دو قابلِ عمل واقعات:
1: امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عشا کی نماز پڑھ کر نکلے، نعلین مبارک ابھی ہاتھ میں تھے کہ آپ کے شاگرد حضرت زفر رحمہ اللہ نے مسئلہ پوچھ لیا-
امام صاحب نے جواب دیا لیکن وہ مطمئن نہ ہوئے اور بحث کرنے لگے، حتیٰ کہ (ساری رات گزر گئی اور) فجر کی اذان ہوگئی (استاد، شاگرد واپس مسجد میں آئے) نماز فجر پڑھی، اس کے بعد پھر بحث شروع ہوگئی؛ آخرکار امام صاحب کے قول پر حضرت زفر مطمئن ہوگئے-

(مناقب ابی حنیفۃ، مصنف: امام الموفق بن احمد المکی متوفی 568ھ، الباب السابع فی ذکر المسائل المستحسنۃ التی

اجاب فیہا علی البدیہہ.....، ص118، دارالکتاب العربی بیروت، 1401ھ)

2: ابومطیع نے امام صاحب پر چار ہزار سوالات کیے، آپ نے ہر سوال کا جواب دیا اور ناراض ہونے کے بجائے اُن کی خوب حوصلہ افزائی کی اور فرمایا: ایسے مسائل کو جمع کرنا زبردست عقل منداور بڑے مضبوط معدے والے کا کام ہے۔

(ایضًا، ص122)

اپنا حق لینا

ایک شخص نے رسول اللہ ﷺ کی خدمت اقدس میں عرض کی:

اے اللہ کے رسول! اگر کوئی شخص آکر میرا مال چھیننا چاہے تو میں کیا کروں؟

آپ نے فرمایا: اُسے اپنا مال نہ دے!

اُس نے عرض کی: اگر وہ میرے ساتھ لڑائی کرے تو؟

فرمایا: تُو بھی لڑ۔

اس نے کہا: اگر وہ مجھے مار دے تو؟

فرمایا: تُو شہید ہوگا۔

اُس نے کہا حضور اگر میں اُسے قتل کردوں تو؟

آپ نے فرمایا: وہ جہنم میں جائے گا۔

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علیٰ ان من قصد اخذ مال غیرہ.....)

ہر وقت اَمن اَمن کا ڈھنڈورا پیٹ کر، قوم کو بُزدل کردینے والے رہنماؤں کو آخر یہ صحیح حدیث کیوں نظر نہیں آتی؟؟

## یہ بھی سکھائیں

ایک نحوی نے دورانِ سفر ملّاح سے پوچھا:

میاں تم نے علم نحو پڑھا ہے؟ ملاح نے جواب دیا: نہیں۔

نحوی کہنے لگا: تم نے تو آدھی زندگی ضائع کردی۔

تھوڑا سفر گزرنے کے بعد کشتی بَھنور میں پھنس گئی، تو ملاح نے سوال کیا: صاحب! آپ نے تیرنا سیکھا ہے؟ نحوی بولا: نہیں۔

ملاح کہنے لگا: علم نحو نہ پڑھنے سے میری تو آدھی زندگی گئی لیکن تیراکی نہ سیکھنے سے آپ کی ساری گئی۔

آپ اپنے بچوں کو لکھائیں، پڑھائیں، بڑا آدمی بنائیں لیکن ساتھ ساتھ انھیں دشمن سے لڑنا اور بچنا بھی سکھائیں، بغیر ہتھیار حملہ کرنے اور دشمن کو زیر کرنے کا فن سکھائیں، تیراکی سکھائیں، نشانہ درست کروائیں، انھیں سخت کوش بنائیں، زمین پر سونے اور بھوک پیاس برداشت کرنے والا بنائیں۔

سیدنا عمر فاروق رضی اللہ عنہ نے اہل شام کو لکھا تھا:

اپنے بچوں کو کتابت، تیراکی، تیراندازی، اور شہ سواری سکھاؤ، انھیں حکم دو کہ وہ گھوڑوں پر کود کر چڑھا کریں، نیز انھیں مشہور اَمثال اور اچھے اَشعار یاد کراؤ۔

(شاہکار رسالت، ص310، طلوع اسلام ٹرسٹ گلبرگ لاہور، 1999)

اگر آپ ایسا کریں گے تو برما جیسے حالات کبھی پیش نہیں آئیں گے !!

میں نے اپنے بچوں کو یہ سب کچھ سکھانے اور مارشل آرٹ کی مکمل تعلیم دلوانے کی نیت کی ہے۔

مقامی بن کے آیا ہوں نہ راہی بن کے آیا ہوں
یہ دنیا رَزْم گہ ہے میں سپاہی بن کے آیا ہوں

## جاہل پیر

امام اصمعی کہتے ہیں:

میں نے شہر بصرہ میں لباسِ فاخرہ پہنے ایک شیخ کو دیکھا جسے عقیدت مندوں نے گھیر رکھا تھا اور لوگ (اُس کی زیارت وملاقات کے لیے) آ، جا رہے تھے۔ میں نے ارادہ کیا کہ دیکھوں تو سہی اِس میں عقل کتنی ساری ہے۔

(میں اُس کے قریب ہوا اور) سلام کر کے پوچھا:

ہمارے سردار کی کنیت کیا ہے؟ کہنے لگا: ابو عبدالرحمٰن الرحیم مالک یوم الدین۔

اُس کا جواب سن کر میری ہنسی نکل گئی، اور مجھے اُس کی عقل کی کمی اور جہالت کی زیادتی کا اندازہ ہو گیا۔

(افسوس کہ کثیر) لوگوں کی آمد و رفت اس کی جہالت دور نہ کر سکی ــــ

(انظر: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثانی، فی العقل والذکاء.....، ص26، دار مکتبۃ الحیاۃ بیروت، 1412ھ)

آج کل کے کئی "پیر" اِسی شیخ کی طرح ہیں، جبہ و دستار اور مریدین کا جمگھٹا دیکھو تو یوں لگے کہ بحر العلوم آپ ہی ہیں، اور پڑھنی درست طریقے سے سورتِ فاتحہ بھی نہیں آتی ــــ یاد رکھیے! پیروں کی پَرکھ کا معیار عُرسوں کی بھیڑ، مریدوں کی کثرت، لفظوں کی ہماہمی، خلافتوں کی ہماتُمی، لنگر کی فراوانی اور کوٹھیوں کاروں کی ریل پیل، نہیں ..... "علم و عمل" کی پختگی ہے ــــ

رمز و اِیما اِس زمانے کے لیے موزوں نہیں
اور آتا بھی نہیں مجھ کو سخن سازی کا فن
'قُم باذنِ اللہ' کہہ سکتے تھے جو، رُخصت ہوئے
خانقاہوں میں مجاور رہ گئے یا گورکن!

## رب کے سپرد

امام شعرانی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

میرا بیٹا عبدالرحمان علم حاصل کرنے کی طرف دھیان نہیں دیتا تھا، میں اس وجہ سے بڑا پریشان تھا- اللہ کریم نے میرے دل میں یہ بات ڈالی کہ میں اُس کا معاملہ خدا تعالیٰ کے سپرد کردوں؛ تو میں نے ایسا ہی کیا—(پھر میں نے دیکھا کہ) وہ اُسی رات میرے حکم کے بغیر خود بہ خود مطالعہ میں جُت گیا اور اُسے اُسی رات علم کی مٹھاس نصیب ہوگئی؛ اُس کا فہم اُن لوگوں سے بڑھ گیا جو کئی سال سے علم میں مشغول تھے-

"فاراحنی اللہ تعالیٰ بتفویضی الیہ من التعب الذی کنت فیہ"

تو اپنا معاملہ رب تعالیٰ کے سپرد کرنے سے اُس نے مجھے اس مشقت سے راحت بخشی جس میں مَیں مبتلا تھا-

(تنبیہ المغترین اواخر القرن العاشر علی ماخالفوا فیہ سلفھم الطاھر، امام شعرانی (م 973ھ)، ص 23، مرکز اہل سنت برکات رضا ہند، 1427ھ)

ہم اپنے ذاتی اور گھریلو معاملات بھی جب سچے دل سے اپنے رب کے سپرد کریں گے تو وہ کریم ہمیں کبھی مایوس نہیں کرے گا-

## "معتدلین" کے لیے

ہر کسی کو اپنے شیخ سے محبت ہوتی ہے، بعض اکابر صوفیہ کا تو اپنے شیوخ سے شدید عشق بھی مشہور ہے-

لیکن.....اِس پر "معتدلین" کو کوئی اعتراض نہیں؛ اِس کے لیے فنافی الشیخ سے نچلا درجہ ہی مردود ہے! بس اعتراض ہے تو ہم پر ہے، کہ اپنے شیخ امام احمد رضا سے کیوں محبت کا اظہار کرتے ہیں—بھئی جاؤ جاکر اپنا اعتدال بھاڑ میں ڈالو، ہمارے معاملے میں دخل اندازی کا تمھیں کوئی حق نہیں!!

چُوں مہِ تاباں غنی ، از فکرِ غوغائے سگاں
بے خطر چُوں یُوسُف اَز طعنِ لِئام ، احمد رضا
ضو فشاند دَر ہُجُوم تیرگی مانندِ خور
می درخشد چوں سُھیل ، اندر ظِلام ، احمد رضا

## اس وقت نہ لکھیں، نہ پڑھیں

اعلیٰ حضرت امام احمد رضا محدث بریلی نوراللہ مرقدہ بسا اوقات فرماتے تھے:

(عصر و مغرب کے درمیان) لکھنے پڑھنے کا کام نہیں کرنا چاہیے، بینائی کم ہوتی ہے-

(حیات اعلیٰ حضرت، مصنفہ ملک العلما، جبل پور کا سفر، ج 1، ص 420، مکتبۃ المدینہ کراچی)

سیدی اعلیٰ حضرت کا اپنا بھی ہمیشہ یہی معمول رہا کہ اِس وقت نہ لکھتے تھے، نہ پڑھتے تھے۔ (ایضًا)

## فیس بک اور باپ بیٹی

باپ: بیٹی مجھے معلوم ہوا ہے کہ تم فیس بک استعمال کر رہی ہو؟

بیٹی: جی بابا۔ لیکن میں صرف اور صرف دینی معلومات اور جنرل نالج کے لیے استعمال کرتی ہوں۔

باپ: میری لختِ جگر میں نے تجھے پالا پوسا، دنیا میں رہنے سہنے کا گُر سکھایا؛ پہلے دن سے لے کر آج تک تیری حفاظت کی اور تادمِ زیست کرتا رہوں گا۔ تجھے یقین ہونا چاہیے کہ اِس پُر فریب دنیا میں تیرے لیے سب سے زیادہ مخلص اگر کوئی ہے تو وہ تیرا باپ ہے! میری نورِ نظر! اگر میرے دل کی پوچھو تو تمھیں فیس بک استعمال کرنے کی کبھی اجازت نہ دوں، کیوں کہ یہ ایسا جنگل ہے جس میں کھو جانے کے بعد واپسی کے راستے مسدود ہو جاتے ہیں؛ لیکن بادل نخواستہ اِن احتیاطوں کو ملحوظ رکھتے ہوئے اجازت دیتا ہوں۔

1: آپ نے اپنی آئی ڈی پر اپنا اصلی نام اور پتا ظاہر نہیں کرنا، اور نہ ہی اپنا ذاتی موبائل نمبر لکھنا ہے

2: اپنی، اپنے گھر کی، بہن بھائیوں اور رشتے داروں کی کوئی بھی تصویر اپلوڈ نہیں کرنی اور نہ ہی کوئی نجی معاملہ شیئر کرنا ہے

3: صرف اسلامی اور معلوماتی پیجز لائک کرنے ہیں؛ ہر قسم کے عشقیہ، فسقیہ اور الحادی پیجز سے دُور رہنا ہے

4: دوستی کی درخواست بھیجنے یا قبول کرنے سے پہلے پروفائل ضرور چیک کرنا، اگر اُس میں گناہ و آوارگی کی بُو ہوئی تو دامن بچا لینا

5: کوشش کر کے صرف خواتین کو لسٹ میں شامل کرنا اور وہ بھی مذہبی ذہن رکھنے والی؛ ہاں اگر خوفِ خدا رکھنے والے علما بھی ہو جائیں تو ہرج نہیں

6: چیٹنگ سے ہر صورت بچنا، اور اس بات کا دھیان رکھنا کہ خواتین کے نام پر بنی آئی ڈیز خواتین ہی کی ہوں یہ ضروری نہیں؛ ہزاروں، لاکھوں اکاؤنٹ ایسے بھی ہیں جو "روگی" مردوں نے عورتوں کے نام سے بنا رکھے ہیں

7: اگر آپ کو کسی قسم کی دینی معلومات چاہییں تو بھی چیٹنگ کے بجائے وال ہی استعمال کرنا

8: اگر آپ کو کوئی میسج کر کے سلام کرے، عید مبارک دے یا سال گرہ وغیرہ کی مبارک کہے تو اُس کا کوئی جواب نہ دینا؛ اگر آپ نے ایک دفعہ جواب دے دیا تو گفتگو کا نہ ختم ہونے والا سلسلہ شروع ہو جائے گا

9: اگر کوئی عورت یا مرد غیر اخلاقی میسج یا تصویر بھیجے تو جواب دیے بغیر اُسے فوراً سے پیش تر انفرینڈ کر دینا

10: فیس بک کو صرف فارغ وقت میں استعمال کرنا، اِس کے لیے اپنا قیمتی وقت کبھی ضائع نہ کرنا

11: کسی کی پوسٹ لائک کرنے سے پہلے اچھی طرح دیکھ لینا کہ وہ کیسی ہے؛ غیر سنجیدہ، غیر علمی اور غیر اخلاقی و بازاری قسم کی

پوسٹوں کو کبھی لائک نہ کرنا، میری پیاری بیٹی! میں نے تجھے سمجھانے میں اپنی معلومات کے مطابق کوئی کسر نہیں چھوڑی، پھر بھی ہر ایسی حرکت سے بچنا جو آپ کی، آپ کے دین وایمان، آپ کے والدین، اَعِزہ واَقرِبا کی عزت پر حرف کا سبب بنے-

بیٹی: میرے پیارے بابا جان اللہ کریم مجھے آپ کے سایۂ عاطِفَت سے کبھی محروم نہ کرے! میں آپ کی ہر نصیحت کو بہ دل وجان قبول کرتی ہوں—

## ایمان افروز فتویٰ:

ملحد ڈاکٹروں کے کہنے پر بھروسہ مت کیجیے؛ خود تجربہ کرکے دیکھیے اگر روزہ رکھنے سے مرض میں شدت پیدا ہوتی ہو تو یہ روزہ رکھنے کے اعذار میں سے ہے.....اگر روزہ رکھنے سے مرض میں اضافہ نہیں ہو رہا ہے تو ضرور روزہ رکھیے کہ روزہ صحتِ جسمانی کا بھی ضامن ہے-

(فتاویٰ یورپ، مفتی عبدالواجد قادری، کتاب الصوم، ص302، شبیر برادرز، فروری2006ء)

## غیرت مند سُنی کی فکر!

میرا مسلک میرا گھر ہے، میرے ہم مسلک اُس گھر کے افراد ہیں-

اگر ہمارا آپس میں اختلاف ہو جاتا ہے تو اُسے سوشل میڈیا پر لانے کے بجائے ہم گھر میں ہی حل کریں گے، چاہے جیسے بھی ہو-کیوں کہ سوشل میڈیا پر میرے، میرے گھر اور گھر والوں کے دشمن (وہابی، شیعہ، مرزائی، ملحد، نیچری، چکڑالوی وغیرہ) بہ کثرت ہیں-

"میں اُن کے سامنے اپنے گھر کی منفی بات کرنے کو ایک قسم کی غداری سمجھتا ہوں"—

اگرچہ کوثر وسلسبیل سے دھلے ہوئے میرے دشمن بھی نہیں؛ اُن کے گھریلو اختلافات کے مقابل میرے گھریلو اختلافات عشرِ عشیر بھی نہیں؛ اِس کے باوجود میری غیرتِ اِس کی ہرگز اجازت نہیں دیتی کہ میرے گھر کے مسائل کی اُنھیں بِھنک لگے!

## کسی کی خُوبی، نہ سَراہنا بھی نااِنصافی ہے

دعوتِ اسلامی نے تھوڑے عرصے میں اہلِ سنت کو علما کی ایک بڑی کھیپ دی ہے؛ جس نے کافی حد تک علمی خلا پُر کیا ہے-

درسی کُتب کی تصنیف و حواشی سے لے کر چھوٹی بڑی، کئی جان دار کتابیں اور تراجم اُمت کو دے چکے ہیں اور ہنوز سلسلہ جاری ہے-

میں نے 1429ھ میں حافظ ابن جوزی رحمہ اللہ کی عربی کتاب "ذم الھوی" پڑھی تو دل چاہا کہ اِس کا اُردو ترجمہ ہو جائے-

میں نے دعوتِ اسلامی کی مجلس علمیہ کے ایک رکن سے اظہار کیا تو اُنھوں نے (غالباً یہ) کہا کہ ہمیں پندرہ سالوں کے کام کا ہدف مل چکا ہے، کہ ہم نے کس کس کتاب کا ترجمہ کرنا ہے، کسے تصنیف کرنا ہے، کس کا حاشیہ لکھنا ہے، اور کسے شایع کرنا ہے؛ اگر تو یہ کتاب اُس میں شامل ہوئی تو ترجمہ ہو جائے گا ورنہ آیندہ کے ہدف میں دیکھا جائے گا- اللھم زد فزد!!

## کیا ہمارے عطاری بھائی ایسا کرنا پسند کریں گے؟

شیخ ابن عربی کے مرشد، عابد و زاہد حضرت ابو مدین شعیب بن حسین مالکی (متوفیٰ 594ھ) پر ایک عالم طعن و تشنیع کرتے تھے، حضرت شیخ ابن عربی اِسی لیے اپنے دل میں اُس عالم سے نفرت رکھتے-

شیخ ابن عربی فرماتے ہیں:

روزی حضرت پیغامبر را صلی اللہ علیہ وسلم بخواب دیدم -

ایک روز میں نے رسول پاک ﷺ کو خواب میں دیکھا-

آپ فرما رہے تھے: (ابن عربی!) تجھے فلاں سے کیوں بغض ہے؟

میں نے عرض کی: حضور وہ شیخ ابو مدین سے بغض رکھتا ہے جب کہ وہ میرے بزرگ ہیں-

آپ نے فرمایا:

الیس یحب اللہ ورسولہ؟ کیا وہ اللہ و رسول سے محبت نہیں رکھتا؟

میں نے عرض کی: رکھتا ہے-

آپ نے فرمایا: فلم ابغضتہ لبغضہ ابامدین ولم تحبہ بحبہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم -

تجھے اُس سے ابو مدین کے بغض کی وجہ سے بغض تو ہے لیکن اللہ کے رسول کی محبت کی وجہ سے محبت نہیں!!

شیخ کہتے ہیں میں نے اُس عالم کے بغض سے توبہ کی، اُن کی خدمت میں حاضر ہو کر معذرت کی، "واھدیت الیہ ثوبا عالیا" اور اُنھیں قیمتی سوٹ نذرانے میں پیش کیا-

پھر اُن سے جو بغض کی وجہ پوچھی تو وہ غلط فہمی تھی جسے میں نے دور کر دیا، اِس طرح اُن کا دل بھی صاف ہو گیا-

(ملخصًا: انفاس العارفین، شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، ص 199، 200، در مطبع مجتبائی واقع دہلی)

کیا ہمارے عطاری بھائی بھی ایسا کرنا پسند کریں گے؟

مجھے امید ہے کہ ضرور کریں گے! کیوں کہ یہ پیر افضل قادری صاحب کی محبتِ رسول ﷺ کا انکار نہیں کرتے، اِنھیں صرف اُن سے اِس لیے بغض ہے کہ وہ اِن کے پیر صاحب سے بغض رکھتے ہیں- اور یہ محبت رسول ﷺ کو محبت پیر پر ترجیح دیتے ہوئے اُن سے شیخ ابن عربی رحمہ اللہ جیسا سلوک کریں گے، ان شاء اللہ-

خیر اندیش

## دعوت اسلامی اور مخالفین

قبلہ پیر محمد افضل قادری صاحب دام ظلہ اگر دعوتِ اسلامی کے بارے میں سخت الفاظ کہہ رہے ہیں تو اس کی دو ہی وجہیں ہیں-

1: یا تو واقعی دعوت اسلامی میں غلطیاں ہیں-یا

2: پیر صاحب کو غلط فہمی ہے-(ہم حُسن ظن رکھتے ہیں کہ وہ عناداً ایسا نہیں کرتے ہوں گے، کہ یہ عالمِ ربانی کے شایاں نہیں )

اب اس کے دو حل ہیں-

1: اگر دعوت اسلامی میں غلطیاں ہیں تو اُس کے ذمے داران کو بتایا جائے تاکہ وہ اصلاح کرلیں-اور

2: اگر پیر صاحب کو غلط فہمی ہے تو دعوتِ اسلامی کی مجلس رابطہ بالعلما و المشائخ اُن سے مل کر غلط فہمیاں دور کرے - پیر صاحب کے خلاف سوشل میڈیا پر بازاری و نازیبا الفاظ استعمال کرنا، دعوت اسلامی کے کسی بھی "مدنی کام" کا حصہ نہیں -یاد رکھیے! حضرت مولانا محمد الیاس قادری صاحب دام ظلہ کسی سنی عالم کی توہین نہ برداشت کرتے ہیں نہ ہی اپنے مریدوں کو اس کا درس دیتے ہیں؛ اُنھوں نے تو اپنے ایک رسالے میں استخفاف علما کو کفر لکھا ہے-

اِس لیے دعوت اسلامی کے "نادان "محبین، امیر دعوت اسلامی کی "غلط" محبت میں اُن کی تحریک کے لیے ایسے کانٹے نہ بوئیں جو آگے جاکر خاردار جھاڑیوں کا روپ دھار لیں! ہم کو اے عطار سنی عالموں سے پیار ہے!!

## یہ بھی گیا وہ بھی گیا!!

سیدنا معاویہ کہتے ہیں رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

اگر تم لوگوں کے عیب تلاش کروگے تو انھیں خراب کردوگے-

(مکارم الاخلاق، حافظ ابوبکر خرائطی، م327ھ، ص146، ر426، دارالآفاق قاہرہ1419ھ-یہ حدیث صحیح ہے)

یہ حدیث پاک تین دفعہ پڑھیں!!

دنیا کا بڑے سے بڑا ماہر نفسیات بھی معاشرتی اصلاح کا ایسا علاج تجویز نہیں کرسکتا جو آقا کریم ﷺ نے کردیا!

لوگوں کے عیوب ہی ڈھونڈتے رہنا واقعی انھیں عیبی بنادیتا ہے—

کیا ہم آئے روز نہیں دیکھتے کہ معمولی جرم کی پاداش میں طویل عرصہ جیل کاٹنے والا، جب باہر آتا ہے تو خطرناک مجرم بن چکا ہوتا ہے-

کیوں؟ اس لیے کہ: "غاصب کو برا کہتے ہیں، اچھا نہیں کرتے"

وہاں اُسے قصور سے زیادہ سزا ملی، اُس کے معمولی سے عیب کو سامنے رکھ کر اُس کے کھاتے میں وہ عیب بھی ڈال دیے گئے جو اس میں نہیں تھے!

بالکل یہی ہماری نظریاتی صورت حال ہے۔

چھوٹی چھوٹی باتوں پر سنیوں کو صلح کلیت و منافقت اور شیعیت و خارجیت کی ڈگریاں دے کر سنیت سے خارج کرنا معمول بن چکا ہے —اور.....

کچھ ہی عرصے بعد یہ جعلی ڈگریاں پھر اصلی بن جاتی ہیں۔

کاش کے! ہم اپنے نبی ﷺ کا فرمان حرزِ جاں بنالیں۔

## صاحب زادہ

ایک دُکان پر لکھا تھا: ضرورت برائے سیلز مین

تنخواہ آٹھ ہزار، ڈیوٹی آٹھ گھنٹے، دوپہر کا کھانا، جمعہ ہاف ڈے، اتوار چھٹی۔ یہ پرکشش مراعات دیکھ کر میں دُکان میں داخل ہوا۔

سر! مجھے نوکری چاہیے۔

مینجر: آپ کی تعلیم کتنی ہے؟

پرائمری پاس ہوں۔

مینجر: معذرت ہم آپ کو نہیں رکھ سکتے!

کیوں سر؟

مینجر: ہمیں میٹرک پاس لڑکا چاہیے۔

سر! سیلز مینی باپ دادے سے میرا پیشہ ہے، اچھی طرح کرلوں گا۔

مینجر: چاہے سات پشتوں سے ہو، آپ ہمارے معیار کے نہیں!

میں مایوس لوٹ آیا—

ایسا پہلی بار نہیں ہوا تھا، جہاں بھی نوکری لینے گیا اُن کے "معیار" پر پورا نہ اترا۔

میں سوچنے لگا کہ اگر میں کسی پیر کے گھر پیدا ہوتا تو میرا معیار کیسا ہوتا!!

میں جاہل ہونے کے باوجود عالم ہوتا۔

ان پڑھ ہونے کے باوجود پڑھا لکھا کہلاتا۔

میرے ہاتھ کے لکھے اُلٹے سیدھے حروف مجرب تعویذ کا کام کرتے۔

میری تن درستی نور اور کم زوری فقر کہلاتی۔
اگر صحیح العقل پیدا ہوتا تو قُطبِ وقت، پاگل جنم لیتا تو مجذوبِ وقت۔
میرے بند لب مراقبہ تو ہلتے ہونٹ راز و نیاز کا درجہ رکھتے۔
صحیح بات کرتا تو علم و فضل کا دریا، غلط بولتا تو معرفت کا سمندر ہوتا۔
میرے جرموں پر عقیدت کا پردہ ہوتا؛ میرے مرید مجھے غلط کام کرتا دیکھتے تو ٹوکنے کے بجائے اس کی تاویل کرتے۔
مجھے نذرانے دے کر مرید اپنا مال پاک کرتے۔
پاک کر دیتا میں آلائشِ زر سے جیبیں
کہ مریدین کا اربابِ صفا میں ہو شمار
کوئی بھی مجھ سے "معیار" پوچھنے کی جرات نہ کرتا، چاہے مجھے پہلا کلمہ بھی درست پڑھنا نہ آتا۔
میں اسی طرح کے خیالوں میں گم تھا کہ میاں شیر محمد شرقپوری رحمۃ اللہ علیہ کے ایک جملے نے جھنجوڑ کر رکھ دیا اور میں توبہ توبہ کرنے لگا۔
آپ ایک پیر خانے گئے، جب وہاں کے صاحب زادے کے کرتوت دیکھے تو بڑے درد سے فرمایا: اللہ مسلمان بنائے صاحبزادہ نہ بنائے!

## کام یابی کا پہلا سبق

آپ کی کتابِ زندگی میں غمی خوشی، دُکھ سُکھ، بیماری و تن دُرُستی، کُلفت و راحت سب کچھ ہیں، اور ہونے بھی چاہییں؛ اِن کے بغیر تو کتابِ زیست مکمل نہیں ہوتی ــــ

لیکن.....

یہ چیزیں کام یابی میں بالکل رکاوٹ نہیں!
کام یابی میں رکاوٹ صرف ایک صفحہ ہے جسے ہم نے زندگی کی کتاب سے ابھی اور اِسی وقت پھاڑنا ہے، اور وہ ہے:
مایوسی
میں پورے یقین سے کہتا ہوں کہ اگر آپ نے اپنی زندگی کی کتاب سے مایوسی کو نکال دیا تو یہ کتاب رہتی دنیا تک پڑھی جائے گی!
جن لوگوں نے ایسا کیا ہے وہ جس شعبے سے بھی منسلک ہیں کام یاب ہیں؛ مذہبی اعتبار سے آپ دیکھیں کہ اِس وقت مذہبی جماعتوں میں تنظیم و تحریک کے اعتبار سے ترقی پذیر "دعوت اسلامی" ہے، جو ہزار مخالفتوں کے باوجود عرب و عجم میں پھیل چکی ہے۔

اِس کی کام یابی کی وجہ اِس کے امیر خود بیان کرتے ہیں کہ:
"میری زندگی کی ڈکشنری میں مایوسی نام کا کوئی لفظ نہیں"
بس یہی کام یابی حاصل کرنے کا پہلا سبق ہے جسے ہمیں عملی طور پر یاد کر لینا چاہیے!!

## ایک جن

قاری صاحب! ہمارے بیٹے کو جن چمٹا ہوا ہے، یہ نہ کسی کی بات سنتا ہے، نہ کسی سے بات کرتا ہے؛ نہ وقت پر کھاتا ہے، نہ پیتا ہے، نہ سوتا ہے، نہ جاگتا ہے؛ بھری محفل میں کسی کی طرف توجہ نہیں دیتا، بچے چلاتے رہیں، ہم پکارتے رہیں، بہن بھائی آوازیں دیتے رہیں یہ ٹس سے مس نہیں ہوتا؛ بس نظر ایک جگہ گاڑ کر انگلیوں کو دن رات حرکت دیتا رہتا ہے۔
اور.....ہاں!
اِس کے بار بار جیب میں ہاتھ ڈالنے، نکالنے سے معلوم ہوتا ہے جیسے جن کا ڈیرہ اِس کی جیب میں ہے۔
میں نے اُس لڑکے کو سامنے بٹھا کر جن حاضر کرنے والا عمل شروع کیا۔۔۔
ابھی دو لفظ ہی پڑھے تھے کہ میں چونک گیا!
جن واقعی اُس کی جیب میں تھا۔
اور یہ میری زندگی کا پہلا واقعہ تھا کہ اتنی جلدی جن حاضر ہو گیا۔
میں نے اپنی تمام روحانی و ظاہری طاقت کو جمع کر کے اُس کی جیب میں ہاتھ ڈالا تو گولڈن کلر کا جن میرے ہاتھ میں تھا۔

میں نے پوچھا: تیرا کیا نام ہے؟
بولا: گلیکسی ایس سیون!
سوال: تو کہاں سے آیا ہے؟
جن: موبائل شاپ سے
سوال: تُو اکیلا ہے یا تیرے ساتھی بھی ہیں؟
جن: میری پوری برادری ہے، جو دنیا کے مختلف افراد کو چمٹی ہوئی ہے؛ آئی فون، نوکیا وغیرہ میری ہی برداری کے افراد ہیں۔
سوال: تم کھاتے کیا ہو؟
جن: پیسے
سوال: کس طرح؟
جن: تھری جی، فور جی وغیرہ کی صورت میں۔
سوال: تم سے چھٹکارا؟

جن: ممکن نہیں۔

سوال: کیوں؟

یہ سوال مجھ سے نہ پوچھو، میں جسے چمٹا ہوں اُس سے پوچھو!

میں نے اُس لڑکے سے کہا:

بیٹا اگر اجازت دو تو اِس جن کو قید کر کے تمھارے والدین کے حوالے کر دوں؟

اُس کا رنگ اُتر گیا، قریب تھا کہ حواس باختہ ہو جاتا؛ اُس کے والدین نے منت کرتے ہوئے کہا:

قاری صاحب! اسے بالکل قید نہ کریں ورنہ ہمارا بیٹا پاگل ہو جائے گا۔

کاش کے! ہم وہ پرانا دور واپس لا سکتے جس میں اِن جنوں، بھوتوں کا نام و نشان نہ تھا، بس محبت و اپنائیت کی رُتیں تھیں!!

## اخروٹ کی غیبت

ایک آدمی اخروٹ خریدنے گیا تو ایک اخروٹ ہاتھ میں پکڑ کر کہنے لگا:

میرے خیال میں یہ کھوکھلا ہے۔ پھر نہ جانے کیا خیال آیا تو کہنے لگا:

استغفر اللہ! میں نے اخروٹ کی غیبت کر دی۔

(ملخصا: اخبار الحمقی والمغفلین، باب الرابع والعشرون، ص 151، دار الکتاب العربی بیروت)

یہی حال آج کل ہمارے بعض "اسلامی بھائیوں" کا ہے، جنھیں غیبت کی تعریف سمجھے بغیر، ہر بات سے غیبت کی بو آنی شروع ہو جاتی ہے۔

(اسلامی بھائیوں پر طنز کی گستاخی نہیں کی، اصلاح کے لیے عرض کیا ہے)

## انگریزی تعلیم

آپ مانیں یا نہ مانیں اِس وقت مسلمانوں کے بِگاڑ میں سب سے زیادہ ہاتھ "انگریزی تعلیم" کا ہے.....

یہ تعلیم ایسی ہے جس نے مسلمان کے اندر کا مسلمان مار دیا ہے اور جذباتِ ایمانی برف کی طرح ٹھنڈے کر دِیے ہیں۔

یہی وہ تعلیم ہے جس کی کوکھ سے اسلام دشمن لبرل و سیکولر بہ کثرت جنم لے رہے ہیں۔

مسلمانوں کو یہ تعلیم دینے کی ابتدا انگریزوں نے اپنے سکولوں سے کی تھی، پھر آہستہ آہستہ کچھ نام نہاد مسلمانوں کو اپنا ہم خیال بنا کر یہ کام اُن کے سپرد کر دیا، جن ظالموں نے مسلمان بچوں، بچیوں کی اکثریت کو سکول و کالج کی بھینٹ چڑھا دیا ہے۔

امام یوسف بن اسماعیل نبھانی نور اللہ مرقدہ نے اپنے زمانے میں اِس فتنے کو بھانپتے ہوئے اِس کے رد میں ایک بہت ہی

شان دار رسالہ: "ارشادالحیاری "لکھا؛ اگرچہ یہ اُس زمانے والوں کے لیے لکھا گیا تھا لیکن آج اِس کی ضرورت اُس وقت سے کئی گنا زیادہ ہے-

یہ رسالہ عربی زُبان میں ہے جس کا اُردو ترجمہ مولانا فیض اللہ مصباحی نے کیا ہے-

یہ رسالہ کیا ہے، سفینہء نجات ہے جو سرکارِ مدینہ کے نام لیواؤں کو گِردابِ اِلحاد سے نِکالنے کے لیے لنگر اُٹھائے ہوئے ہے!!

یارب! دلِ مسلم کو وہ زندہ تمنّا دے
جو قلب کو گرما دے ، جو روح کو تڑپا دے
محرومِ تماشا کو پھر دیدہ بینا دے
دیکھا ہے جو کچھ میں نے اوروں کو بھی دِکھلا دے
بھٹکے ہوئے آہو کو پھر سوئے حرم لے چل
اس شہر کے خوگر کو پھر وسعتِ صحرا دے
پیدا دلِ ویراں میں پھر شورشِ محشر کر
اس محملِ خالی کو پھر شاہد لیلا دے
رفعت میں مقاصد کو ہمدوشِ ثریا کر
خودداریِ ساحل دے ، آزادیِ دریا دے
میں بلبلِ نالاں ہوں اک اجڑے گلستاں کا
تاثیر کا سائل ہوں ، محتاج کو داتا دے!

## میرے دل کی آواز

آج جب کہ ہم اہل سنت کو اتفاق واتحاد کی سخت ضرورت ہے، ہمارے بعض علمائے کرام بدمذہبوں، سیکولروں، لبرلوں، نیچریوں اور یہود ونصاری وغیرہ کی تردید کی بجائے، ہاتھ دھو کر دعوت اسلامی کے پیچھے پڑے ہیں-

جہاں تک میں دعوت اسلامی کو سمجھ سکا ہوں یہ اِس وقت اہل سنت کی سب سے بڑی تنظیم وتحریک ہے جو اُس مخصوص ہدف پر کام کر رہی ہے، جو اِسے اکابرین نے دیا تھا، اور اپنی حد تک خوب ہی نہیں، بہت خوب ذمے داری نبھا رہی ہے- معدودے چند اختلافات یا منفرد طریقہ کار کی بِنا پر اس کی مخالفت نہ صرف مسلک کے لیے نقصان دہ ہے بلکہ مقتضائے حال کا بھی سرِعام خون ہے-

اگر ہم اس کی حمایت نہیں کر سکتے تو کم از کم مخالفت بھی تو نہ کریں!!

میری معلومات کے مطابق دعوت اسلامی کا کوئی مبلغ بدعقیدہ (تفضیلی، خارجی، ناصبی، رافضی وغیرہ) نہیں؛ یہ اعتقادیات میں سیدی اعلیٰ حضرت و دیگر علماے اہل سنت کے سو فیصد موافق ہیں اور زُہد و تقوی میں ہم سے فزوں تر ہیں۔

باقی رہیں ان کی پالیسیاں.....

تو اُن پر سرعام تنقید کے بجاے ذمے داران سے رابطہ کر کے اصلاح طلب امور کی طرف بہ دلائل راغب کرنا تنقید سے بہ درجہا بہتر ہے۔

ویسے مخالفت کے بجاے دعوت اسلامی کی طرح ہم بھی اگر ایک ایک شعبہ سنبھال لیں تو بہت بہتر طریقے سے دین و مسلک کا کام ہو سکتا ہے۔

## نقّارچی

وہ حسبِ معمول اُٹھی، سارے گھر والوں کے لیے ناشتہ بنایا، باری باری سب کو جگایا، ناز نخرے سے سارے اٹھے، ہاتھ منہ دھو کر دستر خوان سے دو ہاتھ کیے اور اپنی اپنی مصروفیت میں جُت گئے؛ کوئی باہر چلا گیا، کوئی ٹی وی کے آگے بیٹھ گیا تو کسی نے دوبارہ چارپائی کو گلے لگا لیا..... اُس نے سارے برتن سمیٹے، بچا کُھچا کھانا کھایا اور کام کاج میں مصروف ہو گئی۔

ابھی گھریلو کام ختم ہوا ہی چاہتے تھے کہ شوہرِ نام دار ہڑبڑا کر اٹھ بیٹھے.....

سعدیہ..... اے سعدیہ..... کہاں چلی گئی ہو.....

سعدیہ کچن میں برتن چھوڑ کر تیز تیز قدموں سے شوہر کے قریب پہنچی۔

فرماں بردار و سعادت مند بیوی کے سے لہجے میں: جی ناصر!

بھئی آوازیں دے دے کے تھک گیا ہوں کہاں مر کھپ گئی تھی! سکول سے لیٹ ہو رہا ہوں.....

کھڑی منہ کیا تک رہی ہو جاؤ جلدی جلدی ناشتہ بنا کر لاؤ۔

سعدیہ جلدی سے کچن کی طرف لپکی، چولہا جلایا، روٹی پکنے کے لیے توے پر ڈال دی.....

اے سعدیہ..... سعدیہ..... سعدیہ.....

یہ کس قُماش کی عورت ہے کہ ساس چلائے جا رہی ہے اور یہ ہے کہ جان بوجھ کر کانوں میں مار دیتی ہے.....

یہ "محبت بھری" آواز محترمہ ساس اماں کی تھی جو دوسری منزل پر بستر پر دراز، بچے کی آواز: دادو شی، دادو سخت شی آئی ہے، جن کے نیند میں خلل ڈال رہی تھی.....

سعدیہ نے جوں ہی سُنا روٹی کو چھوڑا اور ساس اماں کی طرف دوڑ پڑی.....

جی امی؟ میں نے تجھے پچاس آوازیں دی ہیں تو کہاں مر گئی تھی..... امی وہ.....

ابھی یہ لفظ سعدیہ کے منہ میں ہی تھے کہ ساتھ والی چارپائی پر دراز نند صاحبہ پھول بکھیرنے لگی:
اس ہٹ دھرم، سست اور کاہل کو ناصر نے سر پر چڑھا دیا ہے، امی بلڈ پریشر کی مریضہ ہیں، گھنٹہ ہوا آوازیں دیتے، لیکن اس پر حرام ہے کہ پہلی آواز پر ہی جواب دے دے! بچے کو سخت پیشاب آیا تھا جو کہ بستر پر ہی نکل گیا..... پھر کیا تھا؟
ساس، نند، سُسر سب نے وہ کچھ کہہ دیا جو نہیں کہنا چاہیے تھا-
سعدیہ روتی روتی آگے بڑھی کہ بستر اور بچہ سنبھالے کہ یاد آیا میں تو روٹی توے پر چھوڑ آئی ہوں.....
نیچے پہنچی تو کچن میں ایک اور "محبت بھرا چہرہ" استقبال کے لیے موجود تھا.....
کاش تیری ماں تجھے اتنا ہی سکھا دیتی کہ روٹی کس طرح پکائی جاتی ہے..... ناصر.....
ابھی یہ لفظ منہ میں ہی تھے کہ ناصر ناراض ہو کر سکول کے لیے نکل گیا.....
سعدیہ نے بچے کو نہلایا، کپڑے بدلے، بستر دھو کر سوکھنے کے لیے ڈال دیا اور کپڑے دھونے والی مشین لگالی.....
اِدھر گھر کے افراد سر جوڑ کر ایک کمرے میں بیٹھے چہ مِیگوئیاں کرنے لگے، ساتھ ناصر کو بھی آن لائن کر لیا، نہ جانے کیا طے پایا.....
اُس نے کپڑے دھوئے، صفائیاں کیں اور حسب معمول کھانے، پکانے میں لگ گئی.....
مغرب سے کچھ پہلے ہی وہ سالن بنا کر فارغ ہوئی تھی کہ شوہر کی کال آئی.....
اُس نے، کانپتے ہاتھوں سے، دھڑکتے دل اور بہتی آنکھوں سے سنا کہ:
" سورج ڈوبنے سے پہلے اپنی ماں کے گھر چلی جاؤ، یہاں تمھارے لیے کوئی جگہ نہیں..... ورنہ ابھی تین لفظ سنا دوں گا"
اُس کا سر چکرایا، پاؤں لڑکھڑائے، دم گھٹنے لگا، دل پوچھنے لگا:
سعدیہ تیرا جُرم؟؟؟؟؟ کیا تیرے سسرال والے جاہل، اُجڈ ہیں؟
نہیں تو.....
وہ سب تعلیم یافتہ ہیں؛ سُسر پروفیسر رہے ہیں، ساس سکول ٹیچر تھیں، نند ایم فل کر رہی ہے اور شوہرِ نامدار کا تو اپنا سکول ہے.....
وہ بوجھل قدموں میکے جا رہی تھی اور سوچ رہی تھی کہ آج بھی لوگ تعلیم یافتہ ہونے کے باوجود زمانہ جاہلیت کے باسی ہیں، اُس تعلیم کا کیا فائدہ جو انسان کو ظاہری ٹیپ ٹاپ سکھاتی ہے لیکن انسانیت کا جنازہ نکال کر رکھ دیتی ہے!
اُس کے ذہن میں اپنے بچپن کے استاد حافظ روشن دین، ان کی اہلیہ آپی جی، اور ان کی والدہ ماسی جی گھومنے لگیں.....

کتنا پیارا ماحول تھا اس گھر کا، حافظ صاحب نے کبھی آپی جی کو جھڑکا تک نہیں تھا، حافظ صاحب کے بچے اگر پیشاب کر دیتے تو ماسی جی دھونے میں بالکل عار محسوس نہ کرتیں، رات کو جب حافظ صاحب کارخانے سے گھر آتے تو ماسی جی کہتیں روشن دین حلیمہ کے لیے کچھ لائے نہیں، بیچاری سارا دن محنت کرتی رہتی ہے!

حافظ صاحب جو جیب میں پاؤ بھر برفی تو کبھی ایک دو لڈو چھپائے ہوتے، پیار سے کہتے: اماں جی آپ اس کو تھوڑا کچھ کھلاتے ہیں؛ دودھ، دہی، لسی، مکھن اس کو سب سے زیادہ ملتا ہے، اور اِسے کیا لا کے دوں.....! ماسی جی: نہیں بیٹا سیانے کہتے ہیں بہو کو کھلایا کبھی ضائع نہیں جاتا..... حافظ صاحب جو کچھ سوغات لائے ہوتے، ماسی جی کو پیش کر دیتے، ماسی جی آواز دیتیں: حلیمہ بیٹی..... اور آپی جی شرماتی شرماتی کہتیں جی اماں جی..... ماسی جی خود بعد میں چکھتے اور آپی جی کو پہلے کھلاتے.....

## دوسرا نکاح

ایک دوست بتا رہے تھے:

فلاں مسجد کے امام صاحب کو انتظامیہ نے اِس لیے معزول کر دیا ہے کہ انھوں نے دوسرا نکاح کیوں کیا۔ (معاذاللہ)

اللہ کریم مسلمانوں کو ہدایت عطا فرمائے، یہ کس طرف جا رہے ہیں۔

کافروں کا گرل فرینڈ کلچر قبول کر لیتے ہیں، لیکن دوسرے نکاح جیسا پاکیزہ رشتہ قبول نہیں کرتے۔

کسی عورت سے ناجائز تعلق رکھنا، باعثِ شَر ہے۔ دوسری، تیسری، یا چوتھی شادی کرنا باعث شر نہیں، باعث خیر و برکت ہے۔

ایک دن حضرت سعید بن جبیر سے سیدنا عبداللہ بن عباس کہنے لگے: هَلْ تَزَوَّجْتَ؟

کیا تم نے نکاح کر لیا ہے؟

انھوں نے عرض کی: ابھی نہیں۔

آپ نے فرمایا: نکاح کر لو، فَإِنَّ خَيْرَ هَذِهِ الْأُمَّةِ أَكْثَرُهَا نِسَاءً۔

اِس امت کے بہترین وہ لوگ ہیں جن کی بیویاں زیادہ ہیں۔

(صحیح البخاری، باب کثرۃ النساء، ر5069)

میری معلومات کے مطابق، (معدودے چند صحابہ کے علاوہ) کوئی ایسے صحابی نہیں، جن کے ایک سے زیادہ نکاح نہ ہوئے ہوں۔

1: نکاح، گرل اور بوائے فرینڈ جیسی حرام کاریوں کو ختم کرتا ہے۔

2: نکاح سے خاندانوں میں خیر و برکت نازل ہوتی ہے۔

3: نکاح سے انسانی عقل کامل ہوتی ہے اور ذمے دارانہ صلاحیتیں بڑھتی ہیں۔
4: نکاح، پاکیزہ طریقے سے نسلِ انسانی کے بڑھنے کا سبب بنتا ہے۔
5: آج کے دور میں صاحبِ استطاعت کا: دوسری، تیسری، چوتھی شادی کرنا، نہ صرف باعثِ برکت ہے؛ بلکہ سیکولروں، ملحدوں اور نیچریوں کے خلاف جہاد بھی ہے۔

## بہنوں کو شرعی میراث

رات کو ایک صاحب سے ملاقات ہوئی جو اِس چکر میں تھے کہ کروڑوں کی جائیداد سے، بہنوں کو پندرہ پندرہ لاکھ دے کر فارغ کردوں۔ میں نے ان سے عرض کی: بہنوں کو پندرہ پندرہ لاکھ نہ دیں، انھیں وہ دیں جو اللہ پاک نے ان کے لیے مقرر کیا ہے۔

اگر آپ اللہ سے ڈر کر اُن کا پورا پورا حصہ نکالیں گے تو رب تعالیٰ آپ کے تھوڑے میں بھی زیادہ برکت ڈال دے گا۔

بیٹیوں، بہنوں کو شرعی میراث سے ہرگز محروم نہیں کرنا چاہیے، انھیں اُن کا پورا پورا حق دینا چاہیے؛ چاہے وہ بچیں، ضائع کریں، کسی کو دیں، یا اپنے پاس رکھیں؛ آپ اپنی قبر پر بوجھ نہ ڈالیں۔

اگر کسی کی دو بیویاں ہوں تو دونوں کو پورا پورا حصہ دینا چاہیے۔

بعض لوگ دوسری شادی کرتے ہیں تو ایک بیوی کو سب کچھ، اور دوسری کو "کچھ" دے کر خود کو بری الذمہ سمجھتے ہیں۔ یہ بھی غلط ہے!

عورت ماں ہو، بہن ہو، بیوی ہو یا بیٹی ہو؛ اللہ کریم نے اس کا جو حق مقرر فرمایا ہے، اسے ضرور ملنا چاہیے۔

## ایک دکاندار نے مسئلہ پوچھا

ساؤتھ افریقہ میں مقیم، ایک دکاندار نے مسئلہ پوچھا کہ:

"گاجر، چقندر، شملہ مرچ وغیرہ ہماری معمول کی چیزیں نہیں ہیں، نہ نارمل سیل ہوتی ہیں۔

لیکن تیئیں، چوبیس، پچیس دسمبر کو، کرسمس پروگراموں کے لیے لوگ یہ چیزیں طلب کرتے ہیں؛ تو کیا ہم مسلمان یہ چیزیں رکھ سکتے ہیں؟"

میں نے ان سے عرض کی:

کافروں کے مذہبی تہواروں میں شریک ہونا اور ان کی مذہبی اشیا (صلیب اور بت وغیرہ) بیچنا تو مسلمان کے لیے جائز نہیں، لیکن روزمرہ کی چیزیں: سبزیاں وغیرہ بیچنے میں ہرج نہیں۔

مجھے اُن کے اِس سوال پر بہت خوشی ہوئی، اور اللہ کا شکر ادا کیا کہ آج بھی ایسے غیرت مند مسلمان موجود ہیں جو کافروں

کے مذہبی تہواروں میں ہر قسم کی شرکت سے پرہیز کرتے ہیں۔ اللہ کریم ایسوں کی کثرت کرے!
سکھوں کی محفلوں میں جا کے ان جیسی پگڑیاں باندھ لینا، ہندوؤں کے میلوں میں ان جیسے پٹکے سجالینا، عیسائیوں کے ہاں جا کے ان جیسا بننے کی کوشش کرنا کسی غیرت مند مسلمان کو زیب نہیں دیتا۔
شریعت کے دائرے میں رہتے ہوئے، کافروں سے ضرور حُسنِ سلوک کرنا چاہیے؛ اور اس نیت سے کرنا چاہیے کہ وہ دینِ اسلام قبول کر کے، جہنم کے اَبدی عذاب سے بچ جائیں۔
اپنی واہ واہ کروانے اور معتدل بننے کے لیے کافروں کو تحفے اور مبارکیں دینا، ان کے پروگراموں میں شرکت کرنا، ان کے آگے بِچھ بِچھ جانا پرلے درجے کی حماقت ہے۔

## دو شرطیں

ایک اَدھیڑ عمر شخص نے، نوجوان لڑکی کو نِکاح کا پیغام بھیجا۔
لڑکی نے کہا: مجھے منظور ہے، لیکن دو شرطیں ہیں۔

1: دیوار پھلانگ کے گھر میں داخل ہوا کرو گے۔
2: اپنے ہم عُمروں کے ساتھ نہیں بیٹھا کرو گے۔

اُس شخص نے دونوں شرطیں قبول کر لیں، اور نکاح ہو گیا۔
وہ دونوں ہنسی خوشی رہ رہے تھے کہ مرد ایک دن بازار گیا، وہاں اُسے اپنے کچھ ہم عمر ملے جن کے پاس جا بیٹھا۔
باتوں باتوں میں ایک نے کہا: یار میرے گھٹنوں میں درد ہے۔
دوسرے نے کہا: میری کمر میں درد ہے۔
تیسرا بولا: میرا سانس رکتا ہے۔
چوتھا کہنے لگا: مجھے دل کی تکلیف ہے۔
اُس نے جب یہ "بیمار" باتیں سنیں، تو خود کو بھی بیمار محسوس کرنے لگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
جب ان کے پاس سے اٹھ گھر پہنچا تو وہ دیوار جسے بہ آسانی پھلانگ لیتا تھا، پہاڑ جیسی نظر آنے لگی۔
بیوی نے جب یہ منظر دیکھتے ہی کہا:
میاں! لگتا ہے آج ہم عمروں کے ساتھ بیٹھک ہو گئی۔
بہت ساری فکریں ایسی ہوتی ہیں جنھیں ہم اپنے اوپر مسلط کر کے، اپنے مزاج کا حصہ بنا لیتے ہیں۔
اب دیکھیں!
ہمارے پنجاب میں آج کل سرد موسم چل رہا ہے جسے بعض لوگ ریکارڈ توڑ سردی قرار دے رہے ہیں۔

اب اگر ہم بھی سردی، سردی کہیں اور سوچیں گے، تو ہمیں واقعی ریکارڈ سردی محسوس ہونی شروع ہوجائے گی؛ لیکن اگر سردی کی طرف توجہ دیے بغیر، روزمرہ کے معاملات انجام دیتے رہیں گے، تو سردی کی شدت محسوس نہیں ہوگی۔

عملیات وغیرہ کی وجہ سے مجھے مسلسل جاگنا پڑتا تو سر میں درد شروع ہوجاتی، پھر پانچ چھے گھنٹے سوتا، تو آرام آتا۔

میں نے بھی یہ ذہن بنالیا تھا کہ میرے سر درد کا علاج "نیند" ہے۔

ایک دن جاگنے کی وجہ سے دردِ سر شروع ہوا تو دل میں خیال آیا۔

"بعض اولیاے کرام رحمھم اللہ ساری ساری رات جاگ کر عبادت کرتے تھے، انھیں تو کبھی سر درد نہیں ہوا، آخر مجھے کیوں ؟؟" صرف اس لیے کہ میں نے اس کا خود ساختہ علاج "نیند" تجویز کر رکھا ہے!!

آج کے بعد چاہے جیسا بھی سر درد ہوا، سوؤں گا نہیں۔۔۔۔۔۔

یہ سوچنا تھا کہ میرا سر درد اُسی وقت ٹھیک ہوگیا۔ کیوں ٹھیک ہوا؟

میں نے خود کو ہمت بندھائی اور مثبت سوچا۔

آپ بھی ہمیشہ مثبت سوچا کریں، اور دُکھ کو راحت میں بدلنے کی کوشش کیا کریں۔

دُھند پڑ رہی ہے، تو اسے برا سمجھنے کے بجائے، انجوائے کریں اور اللہ کی حمد بیان کرتے ہوئے کہیں: ماشاءاللہ کتنا پیارا موسم ہے!! سخت دھوپ ہو تو اسے اپنے لیے مفید سمجھیں، بارش برسے تو باعث رحمت جانیں، ہوائیں چلیں تو ان سے لطف اندوز ہوں، بادل گرجیں تو خداے برتر کی پاکی بیان کریں۔

## منگیتر سے بات چیت

جس عورت سے نکاح کرنا ہو، اُسے ایک نظر دیکھ لینا تو جائز ہے؛ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اُس کے ساتھ گُھل مِل جانا، فون پہ گپیں لگاتے رہنا، چیٹنگ کرتے رہنا، کسی طرح درست نہیں۔

اگر منگیتر سے بات چیت کرنا چاہتے ہیں تو گھر والوں کو بتا کر فوراً نکاح کرلیں، رخصتی بھلے بعد میں ہوجائے۔

نکاح کے لیے پوری بارات لے کر جانا ضروری نہیں ہوتا، لڑکی اپنے گھر میں رہتے ہوئے بھی اگر لڑکے کو نکاح کرنے کی اجازت دے دے، تو لڑکا مہر ادا کرکے، دو گواہوں کی موجودگی میں نکاح کرسکتا ہے۔

نکاح کے بہت آسان طریقے بھی ہیں، جو آپ کسی قریبی عالم سے معلوم کرسکتے ہیں۔

اللہ کریم ہمارے معاشرے کو پاکیزگی وطہارت نصیب فرمائے!

## ظالمانہ ٹیکس

ہمارے علاقے میں ایک چوہدری صاحب تھے، ایک دن اُنھوں نے اپنے ملازم سے کہا:

کسی لے جاؤ اور باہر زمینوں میں جاکر کھال کھودو، فصل کو پانی لگانا ہے۔ وہ چلا گیا اور جاکر کسّی ایک طرف رکھ کے آرام سے

بیٹھ گیا۔

کافی دیر کے بعد چوہدری صاحب وہاں پہنچے اور یہ دیکھ کر کہ اُس نے کوئی کام نہیں کیا، پوچھنے لگے:

کھال کیوں نہیں کھودی؟ اس نے آؤ دیکھا نہ تاؤ، چوہدری صاحب کو بڑی بڑی گالیاں دینی شروع کر دیں۔

چوہدری صاحب نے اُسے پیار سے کہا: میرے ساتھ گھر آؤ، اور اسے گھر لا کر پانچ سو روپیہ، گندم کی دو بوریاں، دودھ اور مکھن دے کر کہا:

لے جاؤ، اور بال بچے کو کھلاؤ، پلاؤ۔ وہ چلا گیا اور سامان گھر رکھ کر واپس آیا، اور ہاتھ جوڑ کر کہنے لگا:

چوہدری صاحب! مجھے معاف کر دیں، تنگ دستی نے میری مت مار دی تھی۔

چوہدری صاحب نے کہا: کوئی بات نہیں، مجھے پتا چل گیا تھا کہ تجھے غربت نے ایسا کرنے پر مجبور کیا ہے، آئندہ تجھے کمی نہیں آنے دوں گا۔

وہ ملازم پھر ساری زندگی چوہدری صاحب کا وفادار رہا، حتیٰ کہ اس کی موت بھی اُنھی کے گھر ہوئی۔

آج میں نے ایک شخص کو دیکھا جو موجودہ حکومت کے لیے بددعائیں کر رہا تھا۔

میں نے پوچھا: ایسا کیوں کر رہے ہو؟ کہنے لگا: آٹے کا چھوٹا تھیلا اڑھائی سو کا لیتا تھا، لیکن آج ساڑھے تین سو کا مِلا ہے۔

جس بادشاہ کے دور میں آٹا تک ظالمانہ ٹیکس سے محفوظ نہ رہے، پیاز، ٹماٹر، سبزیاں اور دوائیاں تک غریب کی پہنچ سے دور ہو جائیں، اُس حکومت کا بیڑا ہی غرق ہو جانا چاہیے۔

## اپنے لیے جییں!!

اُس دن آپ کے بڑے سارے غم غلط ہو جائیں گے، جس دن آپ نے یہ سوچنا چھوڑ دیا کہ:

”میرے کپڑے ایسے ہونے چاہییں جو لوگوں کو پسند آئیں، میرا کھانا ایسا ہونا چاہیے جسے لوگ اچھا کہیں، میرا گھر ایسا ہونا چاہیے جس کی لوگ تعریفیں کریں، میرا رہن سہن ایسا ہونا چاہیے جسے لوگ اچھا سمجھیں۔“

لوگوں کے لیے جینا چھوڑ دیں، اپنے لیے جییں!!

کپڑے وہی اچھے، جو آپ نے زیبِ تن کر لیے، چاہے کم قیمت ہوں؛ مکان وہ اچھا جہاں آپ کے شب و روز عزت سے گزریں، چاہے وہ ایک کمرے پر مشتمل ہو؛ رہن سہن وہی پسندیدہ جس میں آپ کے لیے آسانی ہو، چاہے کوئی بھی تعریف نہ کرے۔

جب آپ اپنی ذات کو اہمیت دیں گے تو نہ صرف آپ کے غم ختم ہوں گے، بلکہ ----------------------

آپ میں خود اعتمادی پیدا ہوگی اور احساسِ کمتری بھی ختم ہو جائے گا۔

## آپ سے آپ کے گناہوں کی پرسش ہونی ہے

کسی سے گناہ ہوگیا، اُس نے تنہائی میں اپنے رب سے کہا:

میرے کریم مجھے معاف کردے!

اللہ پاک جَلَّ جَلَالُہٗ نے اُسے معاف کردیا۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ایک شخص، جو اُسے گناہ کرتے دیکھ رہا تھا، اُس نے اُس کا گناہ اپنے دل میں بٹھالیا؛ وہ اُسے جب بھی دیکھتا گناہ گار ہی سمجھتا۔

جب کہ حقیقت میں:

گناہ کرنے والے کا گناہ مٹ چکا تھا، لیکن اسے گناہ گار سمجھنے والا، گناہ کا مرتکب ہوتا رہا۔

لوگوں کے بارے میں اپنے دل صاف کرلیں، آپ سے آپ کے گناہوں کی پرسش ہونی ہے، دوسروں کے گناہوں کی نہیں!!

جو لوگ خُدا کی ہیں عِبادت کرتے
کیوں اہلِ خَطا کی ہیں حَقارت کرتے
بندے جو گنہ گار ہیں، وہ کس کے ہیں ؟؟
کچھ دیر اُسے ہوتی ہے رحمت کرتے!! ؟؟

## زیادہ عقل مند کون

ایک انصاری رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے رسول پاک صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم سے پوچھا تھا:

یارسول اللہ! ایمان والوں میں سب سے زیادہ عقل مند کون ہے؟

آپ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم نے فرمایا: جو موت کو بہت زیادہ یاد کرتا ہے، اور مرنے کے بعد کی اچھی طرح تیاری کرتا ہے۔ (سنن ابن ماجہ، رقم 4259)

اللہ پاک ہمیں بھی عقل مند بنائے!!

موت کو یاد رکھنے کے لیے قبروں کو دیکھنا چاہیے، اُن لوگوں کا تصور کرنا چاہیے جو کل ہم میں موجود تھے، مگر۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔آج نہیں۔

اُن علما کی باتیں سُننی چاہییں جو فکرِ آخرت دلاتے ہیں۔

کسی عربی شاعر نے کتنی سچی بات کہی تھی۔

نَصِيبُكَ مِمَّا تَجْمَعُ الدَّهْرَ كُلَّهُ
رِدَاءانِ تُلْوىٰ فِيْهِمَا وَحَنُوطُ

تونے ساری زندگی جو کچھ جمع کیا، اس میں تیرا حصہ صرف وہ دو چادریں ہیں جن میں تو لپیٹا جائے گا، اور وہ خوشبو ہے جو تیرے مردہ جسم پر ملی جائے گی۔

(اَلْمُحَرَّرُ الوَجِيز۔۔۔۔۔۔لابن عطیہ الاندلسی م546، تحت تفسیر سورت اللیل، ج5، ص491، ط دار الکتب العلمیہ بیروت)

اس شعر کو ایک بار پھر پڑھیں

نَصِيبُكَ مِمَّا تَجْمَعُ الدَّهْرَ كُلَّهُ
رِدَاءانِ تُلْوىٰ فِيْهِمَا وَحَنُوطُ

## سید ہونے کا یہ مطلب نہیں کہ جو چاہیں کریں

سیدنا امام زین العابدین رضی اللہ تعالیٰ عنہ، اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کی بارگاہ میں آہ وزاری کرتے ہوئے بے ہوش ہو گئے، تو حضرت اصمعی نے آپ کا سر مبارک اپنی گود میں رکھ کر رونا شروع کر دیا، اور کہا:

اے میرے سردار! آپ اہل بیت نبوت اور معدن رسالت میں سے ہیں، آپ یہ جزع فزع کیوں کر رہے ہیں؟

آپ نے فرمایا: اے اصمعی تجھ پر افسوس! (کیا تجھے نہیں معلوم کہ) اللہ تعالی نے جنت اطاعت گزاروں کے لیے بنائی ہے، چاہے اطاعت گزار حبشی غلام ہو۔

اور جہنم نافرمانوں کے لیے ہے، چاہے نافرمان آزاد اور قریشی ہو۔

(ملخصًا: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثامن والعشرون، فی الفخر والمفاخرۃ۔۔۔۔۔۔، ج1، ص141، ط دار الکتب العلمیۃ بیروت)

اللہ کرے دور حاضر کے سادات کرام سید سجاد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا یہ فرمان پلے باندھ لیں۔

یہ جو بعض سید تفضیلی و تفسیقی ہوئے جا رہے ہیں، رافضیوں سے میل ملاپ بڑھا رہے ہیں، بدعقیدگی و بدعملی پھیلا رہے ہیں، اور طرفہ یہ کہ ساتھ ساتھ بلیک میلنگ کا سلسلہ بھی چلا رہے ہیں؛ انھیں خدا کا خوف کرنا چاہیے۔

سید ہونے کا یہ مطلب نہیں کہ جو چاہیں کریں۔

سید ہونے کے ناطے آپ کو وہ کرنا چاہیے جو سیدنا و مولانا زین العابدین علی جدہ وعلیہ الصلاۃ والسلام کرتے تھے۔

حضرت اَصْمَعِی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

ایک رات مَیں خانے کعبے کا طواف کر رہا تھا، میں نے ایک شخص کو دیکھا جو غلافِ کعبہ پکڑ کر کہہ رہا تھا:

اے اندھیرے میں دکھی کی فریاد سننے والے، اے بیمار کے دکھ درد دور فرمانے والے!

اے میرے پروردگار! میں غم، دکھ اور تکلیف میں تجھ سے فریاد کرتا ہوں۔

اے میری امید گاہ ! تو ہی میری مشکل حل کرنے والا اور میرے گناہ معاف کرنے والا ہے ؛ میری حاجت پوری کردے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

(اصمعی کہتے ہیں:) میں نے جب قریب ہوکر دیکھا تو (اتنے درد سے فریاد کرنے والے، رسول اللہ ﷺ کے شہزادے) حضرت زین العابدین رضی اللہ تعالیٰ عنہ تھے۔

(انظر: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثامن والعشرون، فی الفخر والمفاخرۃ۔۔۔۔۔۔، ج1، ص141، ط دار الکتب العلمیۃ بیروت)

کس سے مانگیں، کہاں جائیں، کس سے کہیں ؛ اور دُنیا میں حاجت روا کون ہے
سب کا داتا ہے تُو، سب کو دیتا ہے تُو، تیرے بندوں کا تیرے سِوا کون ہے
اولیا تیرے محتاج اے ربِّ کُل! تیرے بندے ہیں سب انبیا و رُسُل
اِن کی عزت کا باعث ہے نسبت تِری، اِن کی پہچان تیرے سوا کون ہے
انبیا ، اولیا ، اہلِ بیتِ نبی ، تابعین وصحابہ پہ جب آ بَنی
گِر کے سجدے میں سب نے یہی عرض کی، تُو نہیں ہے تو مشکل کُشا کون ہے

## ایک حصے دار

میرا ایک رشتے دار کسی کاروبار میں ایسا پڑا کہ حلال، حرام کی تمیز کھو بیٹھا۔

پیسہ، پیسہ، بس پیسہ ہی اس کا مقصدِ حیات بن کر رہ گیا۔

اُس نے لاکھوں روپے اور لاکھوں کا ساز و سامان جمع کرلیا ۔ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مسلمان تھا ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، اطمینانِ قلب سے محروم رہا!!

پھر اس کی زندگی میں ایک ایسا موڑ آیا کہ سارا مال تباہ ہوگیا، سب کچھ جاتا رہا۔

وہ ایک عالم کے پاس گیا اور اپنے حالات بتا کر نصیحت کا تقاضا کیا۔

عالم نے کہا: حلال کاروبار کرو اور اس میں ایک حصے دار بنالو، تمھاری مفلسی ختم ہوجائے گی اور تم دن بہ دن آگے بڑھو گے۔

اس نے پوچھا: کسے حصے دار بناؤں؟

عالم نے کہا: اپنے رب کو!

تم جو بھی کماؤ، اپنے پروردگار کا حصہ الگ کرتے جاؤ۔

وہ کہتا ہے: میں نے اپنے دل سے وعدہ کرلیا کہ ایسے ہی کروں گا، اور کیا بھی اِسی طرح۔

میں نے پابندی سے اپنی ساری کمائی کا دس فی صد اللہ کی راہ میں دینا شروع کردیا۔ اب میرے کاروبار میں اللہ کریم نے اتنی برکت ڈال دی ہے کہ میرا کاروبار کئی ضلعوں میں پھیل چکا ہے۔ آپ بھی اپنی کمائی میں سے اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کے لیے ایک حصہ

خاص کرلیں، جو ہر مہینے پابندی کے ساتھ:
مسجدوں، مدرسوں، غریبوں، مسافروں اور قرض داروں وغیرہ کو دیا کریں۔

## معاف کردینا چاہیے

جب کوئی معذرت کرے تو اُسے معاف کردینا چاہیے، بھلے وہ قصوروار ہو۔
نبی پاک ﷺ کا فرمان ہے:
جس کے پاس اُس کا بھائی معذرت کرنے آئے، اُسے معذرت قبول کرلینی چاہیے؛ چاہے معذرت کرنے والا حق پر ہو یا باطل پر۔
اگر ایسا نہیں کرے گا تو حوضِ کوثر پر مجھ سے مل نہیں پائے گا۔
(المستدرك على الصحيحين، كتاب البر الصلة، ج4، ص121، ر7349، ط دار الكتاب العربي بيروت، س1429ھ)

دل ہماری طرف سے صاف کرو
جو ہُوا سَو ہوا، معاف کرو
ہم سے کہتی ہے اُس کی شانِ کرم
تم گناہوں کا اِعتِراف کرو

## ریاکاری

میلادِ رسول ﷺ کو بہ طور عید منائیں، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اخلاص کے ساتھ!
آپ لائٹیں لگاتے ہیں، گلیاں، بازار سجاتے ہیں؛ لنگر شریف کا اہتمام کرتے ہیں، صدقہ، خیرات کرتے ہیں۔
یہ سارے عمل بہت پیارے ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔جب تک اِن میں ریاکاری نہ آئے۔
ریاکاری کی پہچان کا ایک طریقہ یہ بھی ہے کہ:
آپ کے نیک عمل کی لوگ تعریف کریں تو آپ اپنا عمل بڑھادیں، اور اگر لوگ تعریف نہ کریں تو آپ اپنا عمل گھٹادیں۔

## ادھار

آج میں نے ایک دُکان پر "محکمہ عقلمندی" کی طرف سے آویزاں یہ پوسٹر دیکھا، تو مالکِ دُکان سے کہا:
کیا آپ فلاں شیخ صاحب کو جانتے ہیں؟ کہنے لگا: ہاں!
میں نے کہا: وہ زمین خرید کر پلاٹنگ کرتے ہیں اور معقول سا منافع لے کر نقد و اُدھار بیچ دیتے ہیں۔

ان میں خوبی یہ ہے کہ جنھیں ادھار دیتے ہیں ان پر سختی نہیں کرتے۔
انھیں کہتے ہیں: قبضہ کرلو، اور مکان تعمیر کرنا چاہو تو وہ بھی کرلو؛ پیسے تھوڑے تھوڑے کرکے دیتے رہنا۔
اس طرح کرنے سے وہ غریب نہیں ہوئے، بلکہ آج بھی ان کا شمار شہر کے امیروں میں ہوتا ہے۔
اُدھار دینے سے کاروبار ٹھپ نہیں ہوتے، بَھلتے پُھولتے ہیں۔
اگر ادھار دینے والا اللہ کی رضا کے لیے دیتا ہے تو یہ صدقہ کرنے سے کئی گُنا بہتر ہے۔
حدیث پاک میں ہے:
ایک آدمی جنت میں داخل ہوا، تو اس نے دیکھا کہ جنت کے دروازے پر لکھا ہے:
صدقہ کرنے کا ثواب دس گنا ہے اور قرضہ دینے کا ثواب اٹھارہ گُنا۔

## میلاد منانے کا ایک طریقہ

رسول پاک ﷺ فرماتے تھے:
پہلے زمانے میں ایک شخص تھا، فرشتہ اُس کی روح قبض کرنے آیا تو اُس سے پوچھا گیا:
کیا تمھیں اپنی کوئی نیکی یاد ہے؟
اس نے کہا: نہیں۔
اس سے کہا گیا: غور کرو! (شاید تمھیں اپنا کوئی نیک عمل یاد آجائے)
کہنے لگا:
اس کے علاوہ کچھ نہیں جانتا کہ مَیں دنیا میں لوگوں کو سامان بیچا کرتا تھا (اور جب پیسے لینے کی باری آتی) تو اُن سے اِس طرح تقاضا کرتا کہ مال دار کو مہلت دیتا (کہ جب تیرے پاس ہوئے دے دینا) اور تنگ دست کو معاف کردیتا۔
(اس بندے کی اسی عادت کی وجہ سے) اللہ کریم نے اسے داخل جنت فرمادیا۔
(صحیح البخاری، رقم 3451)

رحمت عالم ﷺ کا میلاد اس طرح بھی منایا جاسکتا ہے کہ آپ کے امتیوں سے لین دین کے معاملے میں نرمی برتی جائے۔
جو قرض ادا کرسکتے ہیں اُن کے لیے آسانی پیدا کی جائے، اور جو نہیں ادا کرسکتے انھیں رسولِ پاک کی خاطر معاف کردیا جائے۔
اللہ پاک مجھے ثابت قدم رکھے، میں نے اِسی طرح میلاد منانے کی نیت کی ہے۔
ہوسکے تو آپ بھی کرلیجیے، اللہ و رسول کی رضا حاصل ہوگی۔

# غلطی کی اصلاح

دورِ حاضر میں شاعروں کی اس قدر ریل پیل ہے کہ قُربِ قیامت کا سماں لگتا ہے۔
زمین جیسے دیگر دفینے اُگل رہی ہے، اسی طرح شعرا بھی اُگلے جا رہے ہیں۔
ایک شاعر صاحب نے کلام لکھ کر عام کیا تو میں نے بڑے ادب سے عرض کی:
"حضور! اس کے فلاں مصرعے سے پہلوے ذم نکلتا ہے۔"
یہ الفاظ انھیں کَسرِ شان لگے اور مجھ سے ناراض ہو گئے۔
صرف ناراض ہی نہ ہوئے، ذَم پر بھی اتر آئے۔
مجھے یاد پڑتا ہے، لکھنؤ کا قادر الکلام شاعر میر انیس کسی محفل میں اپنا کلام پیش کر رہا تھا۔
جب اس نے یہ مصرع گُنگنایا

ع بَحرِ نبی کے گوہر یکتا حُسین ہیں

تو کسی نے ٹوک دیا، اور کہا:
اِس سے پہلوے ذم نکلتا ہے۔
(اگرچہ بحر دریا کو کہتے ہیں اور شاعر کی مراد بھی یہی ہے، لیکن جب اِسے اردو لہجے میں پڑھا جائے گا تو "بَے حِرے" ہو گا۔
چوں کہ اردو بول چال میں حروف کے مخارج کا اعتبار نہیں ہوتا: ھ، خ، ح کو ایک ہی آواز میں پڑھا جاتا ہے؛ اس لیے بے حرے، کو "بہرے" بھی سمجھا جا سکتا ہے جو کہ وجہ ذَم ہے)
انیس معترض کی مراد سمجھ گیا اور
مصرع یوں کر دیا

ع کانِ نبی کے گوہر یکتا حُسین ہیں

معترض نے کہا:
اب بھی اس میں ذم کا پہلو ہے، کیوں کہ کان کے نون پر جب زیر آئے گا تو یہ "کانے" پڑھا جائے گا۔
انیس نے مصرع پھر بدلا، اور کہا

ع گنجِ نبی کے گوہر یکتا حُسین ہیں

معترض پھر چلایا اور کہنے لگا: "گنجے" بھی پہلوے ذم رکھتا ہے۔
انیس نے پھر مصرع بدلا اور کہا

ع گنزِ نبی کے گوہر یکتا حُسین ہیں

اب معترض خاموش ہو گیا۔

یہ ہوتا ہے بڑاپن!!
جب آپ سے غلطی ہوجائے تو فوراً تسلیم کرلیں، اسے اپنی بے عزتی نہ سمجھیں۔
وہ بندہ کبھی ادیب نہیں بن سکتا جو اپنی غلطی تسلیم کرکے اُسے دُرُستی میں بدلنے کی صلاحیت نہیں رکھتا۔

## مودب

ایک محفل میں دو پیر صاحبان کو مدعو کیا گیا، جو رشتے میں چچا بھتیجا بھی تھے۔
بھتیجا صاحب چچا محترم سے پہلے تشریف لے آئے۔ جس وقت چچا صاحب پہنچے، اُس وقت بھتیجا صاحب مریدین و متوسلین کے جمگھٹے میں بیٹھے ہوئے تھے۔
مریدین نے جوں ہی چچا کو آتے دیکھا، استقبال کے لیے کھڑے ہوگئے؛ اور بڑے احترام سے مصافحہ و معانقہ کیا۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بھتیجا صاحب اپنی مسند پر اسی طرح براجمان رہے، چچا کے لیے کھڑے ہونا تو دور کی بات، اُن سے مصافحہ کرنا بھی گوارا نہ کیا۔
حالاں کہ چچا صرف پیر ہی نہیں تھے، حافظ قرآن، عالم دین، مبلغ اسلام، اور لاکھوں لوگوں کے مرکز عقیدت تھے۔
آپ چاہے حافظ، قاری، عالم، مفتی اور پیر ہوں؛ لیکن آپ کو یہ کبھی فراموش نہیں کرنا چاہیے کہ آپ کے تایا، چچا، اور ماموں وغیرہ آپ سے بڑے ہیں!!
جن رشتوں کو اللہ کریم نے بڑا بنایا ہے، انھیں بڑا سمجھ کر اُن کی تعظیم بجالائیں، بالکل تکبر نہ کریں۔
میں قربان! مولا علی پاک سے بڑھ کر عالم، مفتی اور پیر کون ہوگا۔
آپ اپنے چچا کا اتنا ادب کرتے تھے کہ سیدنا عباس بن عبدالمطلب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے غلام صُہَیب رحمہ اللہ کہتے ہیں:
"میں نے دیکھا کہ حضرت علی، حضرت عباس کے ہاتھ پاؤں چوم کر گہ رہے تھے:

یاعم ارض عنی۔

اے میرے چچا! مجھ سے راضی ہوجائیں۔"

(تاریخ مدینۃ دمشق لابن عساکر، ج26، ص372، دارالفکر بیروت)

رب تعالیٰ ہمیں اپنے بڑوں کا مودب بنائے، اور ان کے سامنے عاجزی کے بازو بچھائے رکھنے کی توفیق بخشے۔

## تنقید

ایک عالم کی تقریر سننے کا اتفاق ہوا، وہ کسی بدمذہب پر تنقید کررہے تھے؛ لیکن۔۔۔۔۔۔۔ اُس طرح نہیں، جیسے کرنی چاہیے!

تنقید کرتے وقت، کہاں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔کیا بولنا ہے، کتنا بولنا ہے، اور کیسے بولنا ہے؛ یہ ناقد کو ضرور معلوم ہونا چاہیے ورنہ تنقید اُلٹی گلے پڑ جاتی ہے۔ جب پرندہ پکڑیں تو اس کے پَر باندھ دیں تا کہ وہ پَھڑپَھڑا بھی نہ سکے۔
ایسے نہ ہو کہ دیکھنے والا کہے۔

پَر کے بدلے ، پاؤں باندھا بُلبل ناشاد کا
کھیل کے دِن ہیں ، لَڑکپَن ہے ابَھی صیّاد کا

اگر آپ تنقید کر سکتے ہیں تو کریں، ورنہ خاموش رہیں اور یہ ذمے داری کسی ماہر ناقد کے سپرد کر دیں۔

## تسبیح/موبائل

عالِم کے ہاتھ میں تسبیح دیکھ کر تو لوگ بہت متاثر ہوتے ہیں۔
لیکن عالِم کے ہاتھ میں موبائل دیکھ کر اچھا تاثر نہیں لیتے، چِہ میگوئیاں کرتے ہیں۔
جب کہ حقیقت یہ ہے کہ:
تسبیح کے ذریعے وہ ذکر ہوتا ہے جس سے عالِم کی اپنی ذات کو نفع پہنچتا ہے۔
جب کہ موبائل کے ذریعے عالِم ایسا ذکر کرتا ہے جس سے ایک عالَم مستفید ہوتا ہے۔
اللہ آپ کا بھلا کرے! حالات بدل گئے ہیں، زاویۂ فکر بھی بدلیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
خدا توفیق دے تو علما کو تسبیح کے ساتھ، زیادہ میموری والے موبائل بھی ہدیہ کیا کریں؛ تا کہ وہ کتابیں ڈاؤن لوڈ کر کے پڑھ سکیں اور لوگوں کو پڑھا سکیں۔ نیز سوشل میڈیا وغیرہ پر دینِ متین کی خدمت کر کے آپ کے لیے صدقہ جاریہ کا سبب بنیں۔

اگر عالِم کو کاغذ اور قلم خرید کر دینے والا ثواب سے محروم نہیں رہتا، تو اچھی نیت سے موبائل پیش کرنے والا کیوں محروم رہے گا!

## غصہ نہ کریں

بیٹا لسی لے کر آیا، جوں ہی میری طرف بڑھائی تو وہ کتابوں اور دیگر قیمتی چیزوں پر گر گئی۔
الحمدللہ مجھے اس پر ذرہ برابر بھی غصہ نہیں آیا، میں نے مسکرا کر کہا: کوئی بات نہیں، جاؤ کپڑا لے کر آؤ اِسے صاف کر دیتے ہیں۔

یہ سبق میں نے اپنے استادِ گرامی رحمہ اللہ سے سیکھا تھا۔
اُس وقت میری عمر تقریبا بارہ سال تھی، میں استاد صاحب کے لیے کھانا لے کر جا رہا تھا تو مجھ سے ٹفن کا ڈھکن ٹوٹ گیا۔

میں دل میں بہت ڈر رہا تھا کہ استاد صاحب ناراض ہوں گے۔
لیکن انھوں نے محسوس تک نہ کروایا، جس پر مجھے بہت خوشی ہوئی۔
اس سے میں نے یہ سیکھا کہ اگر کوئی انجانے میں نقصان کر دے اور آپ جان بوجھ کر اسے محسوس نہ کروائیں تو اِس سے نہ صرف اُس کا دل خوش ہو جاتا ہے بلکہ وہ غلطی نہ دھرانے کی کوشش بھی کرتا ہے۔
ہمیں اپنی ذات کی خاطر غصے کو ترک کر دینا چاہیے، اللہ کے ہاں اس کا بڑا اجر ہے۔
بعض لوگ چھوٹے سے نقصان پر بھی بچوں کو بہت زیادہ ڈانٹ دیتے ہیں، ایسا نہیں ہونا چاہیے۔
ضرورت کے وقت مناسب سی ڈانٹ ڈپٹ کر لیں، لیکن وہاں جہاں ضرورت ہو!
ضرورت سے زیادہ ڈانٹ بچے کو ڈھیٹ بنا دیتی ہے۔

## مسلمان کی بے حرمتی

خواجہ معین الدین حَسن سِجزی، چشتی رحمہ اللہ فرماتے تھے:
تمھارا کوئی گناہ تمھیں اتنا نقصان نہیں پہنچائے گا، جتنا مسلمان کی بے حرمتی اور اُسے رُسوا کرنا تمھارے لیے نقصان دہ ہو گا۔

(اخبار الاخیار، طبق ۵ اول، ص 23، ط مکتبہ نوریہ رضویہ لاہور)

اللہ کریم ہمیں معاف فرمائے، اور آئندہ مسلمانوں کی دل آزاری سے محفوظ رکھے۔
فیس بک پر اگر میری وجہ سے کسی مسلمان کی بے جا دل آزاری ہو گئی ہو تو دست بستہ معافی کی درخواست ہے۔
معاف کرنے والوں کو کل بہ روز قیامت ان کا رب اس وقت معاف کر دے گا جب معافی کی سخت ضرورت ہو گی۔

## نوجوانوں کے لیے

لڑکیاں عموماً ناتجربہ کار اور جذباتی ہوتی ہیں، جس کی آواز پیاری لگی، جس کی گفتگو پسند آئی، جس کا انداز بھلا لگا اسی پر مرمٹنے کے لیے تیار ہو جاتی ہیں۔ پھر اپنی محبت اور خلوص کا یقین دلانے کے لیے:
قسمیں، وعدے، آنسو، بیماری، بھوک اور زخموں وغیرہ کا بھی استعمال کرتی ہیں۔
لڑکے ان باتوں سے اموشنل (Emotional) ہو جاتے ہیں، بالخصوص ذہین اور مخلص زیادہ جذباتی ہو جاتے ہیں، اور یہ گمان کر بیٹھتے ہیں کہ اب اسے کوئی طاقت بھی مجھ سے جدا نہیں کر سکتی۔
پھر حالات کا دھارا بدلتا ہے جو اس دَہانے پر لے آتا ہے کہ لڑکی بول کر کہتی ہے:
میری مجبوری سمجھو۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

یہاں پہنچ کر لڑکے کے لیے ایک ایسا موڑ شروع ہوجاتا ہے جو اسے اندھیر نگری میں پھینک دیتا ہے۔
کھانا پینا چھوٹ جاتا ہے، عقل ماؤف ہوجاتی ہے۔

طرح طرح کے راستے سوجھتے ہیں، جن میں بعض دنیا، آخرت کے لیے خطرناک ہوتے ہیں۔
آخر کار کچھ عرصہ اذیت سے گزر کر یا تو دوبارہ زندگی کی طرف لوٹ آتا ہے ، یا موت کی وادی میں چلا جاتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

یوں وہ قیمتی زندگی، جو رب تعالیٰ نے دین و دنیا بہتر بنانے کے لیے دی تھی، مکمل طور پر ضائع ہوجاتی ہے۔
سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانے میں ایک بندے کا کسی کے عشق میں انتقال ہوگیا۔
آپ سے اس کے متعلق پوچھا گیا تو آپ نے فرمایا: مقتولِ عشق کی نہ دیت ہے، نہ قصاص۔
(مطلب: اس کی جان ناحق چلی گئی، جس کے جانے کا الزام کسی پر نہیں آتا۔)
(انظر: الداء والدواء، فصل واما حدیث: من عشق فعف، ص572، ط دار عالم الفوائد مکۃ المکرمۃ، س1429ھ)

اے میرے دوست! میرے پیارے دوست! میرے پیارے بھائی!
اللہ تمھاری حفاظت فرمائے، مجھے اپنا خیر خواہ سمجھو اور میری بات دھیان سے سنو۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!
کسی بھی لڑکی سے راہ و رسم بڑھانے سے پہلے ٹھنڈے دل سے غور کرلو کہ کیا آپ کا اس سے نکاح ہوسکتا ہے یا نہیں۔
اگر ہوسکتا ہے تو محبت کے پروان چڑھنے سے پہلے اس کے گھر نکاح کا پیغام بھجواؤ اور کوشش کرو کہ وہ مان جائیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

وہ قبول کرلیں تو ٹھیک، نہ کریں تو بغیر روئے دھوئے فی الفور علاحدہ ہوجاؤ۔
دن رات چیٹنگ، چھپ چھپ کر ملاقاتیں، فون پر گپ شپ وغیرہ، سب وقت کا ضیاع اور اللہ جل جلالہ کی نافرمانیاں ہیں؛ انھیں چھوڑ دو۔
اللہ پاک نے تمھارے لیے جو اس سے کئی گنا بہتر رکھا ہے، صبر سے اس کا انتظار کرو!!
کسی عربی شاعر نے کہا تھا، اور کیا خوب کہا تھا:
"محبت شروع شروع میں ایک لہر ہوتی ہے، پھر تقدیر اسے آگے بڑھاتی ہے۔
یہاں تک کہ جب کوئی جوان محبت کی لہروں میں گُھس جاتا ہے تو پھر ایسے حالات پیدا ہوجاتے ہیں جو بڑے بڑوں کی طاقت سے باہر ہوتے ہیں۔"
اس لیے اپنے آپ کو اذیت میں مبتلا نہ کرو، خوشی خوشی زندگی گزارو اور خوش خوش دنیا سے جاؤ۔ ؎

اور بھی دُکھ ہیں زمانے میں محبت کے سوا
راحتیں اور بھی ہیں وَصل کی راحت کے سوا

## اندازِ گفتگو

اگر آپ اپنی بات کسی کے ذہن میں بِٹھانا چاہتے ہیں، تو محبت بھرے انداز سے کہیں۔ ہو سکے تو اُس کی فہم کے مطابق، مثال دے کر بات واضح کریں۔ مثلاً اگر آپ کا مخاطب واپڈا ملازم ہے تو اسے کہیں:

"آپ جانتے ہیں کہ شام تقریباً چار بجے سے لے کر، رات دس بجے تک پیک ٹائم (peak time) ہوتا ہے، اِس دوران بجلی کے بل میں خاصہ اضافہ ہو جاتا ہے۔

عقل منداِس وقت کا لحاظ کرتے ہوئے، زیادہ یونٹیں کھانے والی مشینری کم استعمال کرتے ہیں۔"

اسی طرح۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔سمجھ دار لوگ رات کے آخری پہر سوئے نہیں رہتے، جاگ کر عبادت کرتے ہیں؛ کیوں کہ وہ جانتے ہیں کہ یہ وہ وقت ہے جب مالک و مولا جَلَّ جَلَالُہٗ کی طرف سے ندا آتی ہے:

"کون ہے جو مجھ سے دعا کرے تو میں اُس کی دعا قبول کروں، کون ہے جو مجھ سے مانگے تو میں اُسے عطا کروں۔"

امید ہے اِس ایک مثال سے، اُس پر آپ کی بات واضح ہو جائے گی۔

## ایمان کے دو شعبے

رسول پاک صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا فرمان ہے:

حیا اور کم گوئی دو ایمان کے شعبے ہیں، فحش گوئی اور بیان، نفاق کے دو شعبے ہیں۔

امام مُنذِری رحمہ اللہ کہتے ہیں:

بیان سے مراد کثرت کلام ہے، جیسے: خُطبا تقریر کرتے ہوئے بات کو پھیلا دیتے ہیں، اور خوب بڑھا چڑھا کر لوگوں کی تعریف کرتے ہیں۔

(الترغیب والترھیب، کتاب الادب وغیرہ، ص 464، رقم 3893، ط دار الکتاب العربی بیروت)

## زبردستی کا نکاح

ایک عورت کو یہ کھٹکا محسوس ہوا کہ اُس کا وَلی (والد، بھائی، چچا وغیرہ) ایسی جگہ اس کا نکاح کر دے گا جہاں اُسے پسند نہیں۔

تو اُس خاتون نے دو انصاری بزرگوں کی طرف پیغام بھیجا (کہ میری مدد کرو، میں وہاں شادی نہیں کرنا چاہتی)۔

انھوں نے کہا:

تم ڈرو نہیں، (تمھاری مرضی کے خلاف تمھارا نکاح نہیں ہوگا، کیوں کہ) حضرت خَنْساء بنت خِذام رضی اللہ تعالیٰ عنھا کے

والد نے اُن کا نکاح، اُن کی مرضی کے خلاف کیا تھا جسے رسولِ پاک ﷺ نے مُسترد کر دیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
(تو انھوں نے اپنی پسند کے شخص حضرت ابولبابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے نکاح کر لیا)
(انظر: صحیح البخاری، رقم 6969)

اللہ کرے ایسے بزرگ آج کی بیٹیوں، بہنوں کو بھی میسر آجائیں!!

آج کل تو کوئی لڑکی بھول کر بھی اپنے چچا، تایا، ماموں، خالو وغیرہ سے کہہ دے کہ میں وہاں شادی نہیں کرنا چاہتی جہاں میرے گھر والے کر رہے ہیں؛ تو اس بے چاری کی شامت آجاتی ہے۔

اور تو اور، اگر کوئی لڑکی کسی مذہبی رہنما:

عالم، مفتی، پیر، امام وغیرہ کے سامنے اپنا عریضہ پیش کر دے تو وہ بھی اس کی مدد کرنے کے بجائے، اُسے قائل کرنے میں دلائل کے انبار لگا دیتے ہیں۔ اللہ کرے ہم اُسوۂ رسول اور عمل صحابہ سے یہ سبق بھی سیکھ جائیں کہ مرضی سے شادی کرنا لڑکی کا حق ہے۔

اسے اس کا حق دلوانا چاہیے نہ کہ حق چھیننے میں مدد کرنی چاہیے۔

## عمارت گر

اُستاد ٹھیک ہو تو کوئی کتاب بھی شاگرد کے لیے مسئلہ نہیں بناتی۔ لیکن، اگر اُستاد ٹھیک نہ ہو تو بخاری شریف بھی گمراہ کر دیتی ہے۔

اقبال کہتا ہے ؎

شیخِ مکتب ہے اِک عِمارت گر
جس کی صَنعت ہے رُوحِ انسانی
نُکتۂ دل پَذیر تیرے لیے
کہہ گیا ہے حکیمِ قاآنی:
"پیشِ خورشید بَر مگش دیوار
خواہی ار صحن خانہ نورانی"

استاد ایک معمار (مستری) ہے۔ لیکن اِس کا میٹریل اینٹ اور سیمنٹ نہیں، یہ روح سے انسان کی عمارت تعمیر کرتا ہے۔

ایران کے مشہور شاعر مرزا حبیب اللہ قاآنی نے بڑی پیاری بات کہی تھی کہ ؎

پیشِ خورشید بَر مگش دِیوار
خَواہی ار صِحنِ خانہ نورانی

`اگر تو چاہتا ہے تیرے گھر کا صحن روشن رہے تو پھر ایسی دیوار نہ بنانا جو سورج کی روشنی کو روک دے۔
یعنی عقل مند کو چاہیے تعمیر پر ایسا مستری کبھی نہ لگائے جو گھر تو بنا دے لیکن روشنی کا خیال نہ رکھے۔
اسی طرح ایسا استاد بھی نہیں پکڑنا چاہیے جو علم تو سکھائے لیکن صحنِ دل کی روشنی کا خیال نہ رکھے۔ اچھا مستری وہ، جو روشن گھر بنائے؛ اور اچھا استاد وہ، جو روشن دل شاگرد تیار کرے!
تکبر، گھمنڈ، حسد، ریاکاری، بداخلاقی، چغلی، غیبت، منافقت، مداہنت، لالچ، ڈر خوف وغیرہ سب دیوراریں ہیں جو نورِ علم کو اندر نہیں آنے دیتیں!

## حشر

میرے دیرینہ دوست، حضرت مولانا سید علی حسن شاہ صاحب بتا رہے تھے کہ ایک شخص مجھے کہنے لگا:
شاہ جی! آپ مولا علی کی اولاد ہیں، آپ کیا چاہتے ہیں کہ آپ کا حشر مولا علی کے ساتھ ہو یا امیر معاویہ کے ساتھ؟
میں نے کہا: امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کے ساتھ!! کہنے لگا: ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!
میں نے کہا: ہاں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!
اچھا یہ بتا کہ اگر میں تجھ سے سوال کروں کہ:
تیرا حشر نبی پاک کے ساتھ ہونا چاہیے یا مولا علی کے ساتھ، تو تُو کیا جواب دے گا؟
سوچ سوچ کر کہنے لگا: یہ کیسا سوال ہوا؟؟
مولا علی، نبی پاک سے کوئی جدا ہوں گے!!
میں نے کہا: مولا علی نبی پاک سے جدا نہیں ہوں گے تو امیر معاویہ مولا علی سے کب جدا ہوں گے؛ جنت میں اکھٹے ہی تو ہوں گے سب۔

ہُشیار رہیے! آج کل Emotional Blackmailing (اموشنل بلیک میلنگ) بہت چل رہی ہے۔
باطنی رافضی مسلمانوں کو کبھی حضرت علی کے نام پر، تو کبھی دیگر اہلِ بیتِ رسول کے نام پر بلیک میل کر رہے ہیں!!

اے کہ نشناسی خفی را از جلی ہشیار باش
اے گرفتار ابوبکر و علی ہشیار باش!!

## رونا

کسی کی جدائی میں رونا بُرا نہیں، رونے سے غم کا بوجھ ہلکا ہوتا ہے اور دل کو سکون ملتا ہے۔
عارف کھڑی میاں محمد بخش رحمہ اللہ کہتے تھے:

"رونا دل کا میل ختم کرتا ہے، بچھڑے یار ملاتا ہے، اور رونے دھونے والا بندہ دوزخ میں نہیں جاتا"
لیکن، جب روئیں تو اپنے رب کے حضور فریاد ضرور کریں۔
بھیگی پلکیں جب آسمان کی طرف اٹھتی ہیں تو خالی نہیں لوٹائی جاتیں۔
رب تعالیٰ سے مانگتے ہوئے کبھی ناامید نہیں ہونا چاہیے وہ مالک ہر چیز پر قادر ہے؛ وہ جب چاہے، جیسے چاہے، جسے چاہے آپ سے ملادے۔۔۔۔۔۔۔۔۔

حضرت یوسف علیہ السلام جدا ہو گئے تو حضرت یعقوب علیہ السلام بہت روتے تھے۔
حتیٰ کہ آپ کی اولاد آپ سے کہنے لگی:

تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ۔

اللہ کی قسم! آپ ہمیشہ یوسف کو یاد کرتے رہیں گے، یہاں تک کہ آپ مرنے کے قریب ہو جائیں گے یا انتقال کر جائیں گے
۔

تو آپ نے انھیں کہا:

اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ اِلَى اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ۔

میں تو اپنی پریشانی اور غم کی فریاد اللہ ہی سے کرتا ہوں، اور میں اللہ کی طرف سے وہ بات جانتا ہوں جو تم نہیں جانتے۔

لَا تَايْـَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ لَا يَايْـَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ۔

اللہ کی رحمت سے مایوس نہ ہو، بے شک اللہ کی رحمت سے کافر ہی ناامید ہوتے ہیں۔
پھر ایسے ہوا کہ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بچھڑے ہوئے یوسف دنیا ہی میں مل گئے، اور آنکھوں کی بینائی بھی لوٹ آئی۔
پیاروں کی جدائی سے جو مرض لاحق ہوتے ہیں وہ دائمی نہیں ہوتے، پیاروں کے ملنے سے ختم ہو جاتے ہیں۔
کہتے ہیں: سیدنا یعقوب علیہ السلام کے پاس جیسے ہی یوسف علیہ السلام کی قمیص آئی، آپ کی بینائی لوٹ آئی اور آدھا غم ختم ہو گیا تھا۔
پھر جب یوسف علیہ السلام کو تخت پر بیٹھے دیکھا تو بقیہ سارا غم بھی جاتا رہا۔
اے بچھڑوں کو ملانے والے، بچھڑے ہوؤں کو ملادے اور ملے ہوؤں کو جدا نہ کر!
ہم تیرے محتاج ہیں، تجھ سے مانگتے ہیں؛ تُو داتا ہے، ہمیں محروم نہ کر!!

## طلبہ کی تربیت

پیر سید مہر علی شاہ صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے پاس ایک عالم صاحب آئے اور کہنے لگے:

حضور! کیا وجہ ہے، ہمارے پاس طالبِ علم چار دن پڑھ کے اپنے آپ کو بڑا کچھ سمجھنے لگ جاتا ہے، لیکن آپ کے پاس برسوں رہنے والا درویش بھی خود کو کچھ نہیں سمجھتا؟

آپ نے فرمایا: مولوی صاحب! تم بنانا جانتے ہو، ہم مٹانا جانتے ہیں۔

دورِ حاضر میں، مدارسِ اسلامیہ کے طلبہ کی منہج صوفیہ پر تربیت ہونا از حد ضروری ہے؛ تاکہ ان کا علم و عمل جیسے جیسے بڑھتا جائے ویسے ویسے عاجزی وانکساری میں بھی اضافہ ہوتا جائے۔

اس پر حضرت علامہ عبدالحکیم شرف قادری رحمہ اللہ نے ایک مقالہ بھی لکھا تھا اور مشورہ دیا تھا کہ مدارس اسلامیہ میں تصوف کی تعلیم کو لازم قرار دیا جائے۔

اساتذہ کرام کو اِس طرف خصوصی توجہ دینی چاہیے، اگر ایسا نہیں کریں گے تو ہو سکتا ہے طالب علم فراغت کے بعد:

1: ہر کسی سے بات بات پر اُلجھنا شروع کر دے، اور صرف اپنی منوانے کی کوشش کرے۔

2: اس کی نہ مانی جائے تو دشمنی پر اتر آئے،

اور اگر مان لی جائے تو کبر و رُعُونَت میں مبتلا ہو جائے۔

3: نہ کسی کی عزت کرے اور نہ عزت ہوتی دیکھ سکے، صرف اپنی عزت کا خواہاں رہے۔

4: علم یا عمر میں اپنے سے بڑوں کو کچھ نہ سمجھے، سب کچھ خود کو جانے؛ اور جگہ جگہ ڈینگیں مارتا پھرے۔

5: جملہ آدابِ اختلاف کو "اَنَا خَیْرٌ مِنْہُ" کی نذر کر دے، اور سامنے والا یہ کہنے پر مجبور ہو جائے کہ

لوگوں سے بَگاڑ پر ٹھنا پھرتا ہے
کس بات پہ اِس قدَر تنَا پھرتا ہے
کم بَخت نے چار لفظ کیا سیکھ لیے
عَلَّامہ فَہامہ بَنا پھرتا ہے

اگر استاد کسی طالب علم میں یہ باطنی و نفسیاتی مرض محسوس کرے تو از خود تادیبی کاروائی کرے، اسے کسی کے سپرد نہ کرے۔

ایسے مریض کو استاد یا شیخ ہی کچھ سمجھا سکتا ہے، وہ کسی دوسرے کی نصیحت قبول نہیں کرتا۔

امام شعرانی رحمہ اللہ کہتے تھے، میں نے ایک شیخ کو علاحدگی میں صرف اتنا کہا:

"ظالموں کے گھروں سے کھانا نہ کھایا کرو۔"

تو اُسے اتنا برا لگا کہ اُس نے سترہ سال تک مجھ سے بات نہ کی۔

استاد ایسے شاگرد کو اِس طرح بھی تادیب کر سکتا ہے:

ا: موقع کی مناسبت سے، اُس کی بات سُنی اَن سُنی کر دے۔

۲: گاہے گاہے اُس پر مشکِل سوالات کرے، اور اس کے سامنے اَدَقّ مسائل رکھے، تاکہ اس کے غرور کا بت ٹوٹ جائے۔

۳: اس کے منھ پر اس کی تعریف نہ کرے، بلکہ کبھی کبھار اس کی کمزوری بیان کر کے، اس پر اچھی طرح واضح کرے۔

۴: اسے حکم دے کہ امام شعرانی کی کتاب "تنبیہ المغترین" سبقًا سبقًا پڑھو، اور بار بار پڑھو۔

۵: اسے کسی عارف باللہ سے بیعت ہونے کا مشورہ دے۔

اللہ نے چاہا تو وہ اس مہلک مرض سے شفا پا جائے گا اور اس کی دنیا، آخرت بہتر ہو جائے گی۔

اور انشاء اللہ اس کا ثواب استاد کے نامہ اعمال میں بھی درج ہوتا رہے گا۔

## ٹیچر ڈے

پانچ اکتوبر "ٹیچر ڈے" کے نام سے موسوم ہے۔

اس مناسبت سے، اپنے پانچ اساتذہ کرام کے اسمائے گرامی لکھ رہا ہوں، دعا کریں اللہ پاک میرے تمام اساتذہ پر رحمتوں کا نزول فرمائے۔

جسے اُستاد نہ ملے تو وہ انسان، انسان نہیں بنتا۔ اور جو استاد کا بے ادب ہو وہ انسان، انسان نہیں رہتا۔

1: قبلہ دادا جی، حضرت حافظ محمد عالم چشتی رحمہ اللہ

2: حضرت مولانا بالفضل اولا نا حافظ کبیر احمد چشتی رحمہ اللہ

3: خلیفۂ اعلیٰ حضرت مفتی اعجاز ولی رحمہ اللہ کے شاگردِ خاص، حضرت علامہ مولانا محمد یوسف قادری رحمہ اللہ

4: شاگرد محدث اعظم پاکستان، حضرت علامہ مولانا ہدایت اللہ رحمہ اللہ

5: امام الصرف والنحو حضرت مولانا محمد ہاشم بصیر پوری

## بچوں کو سب سے پہلے دین سکھائیں

بعض لوگ جب تعلیم کی مثال دیتے ہیں تو یہ لازمی کہتے ہیں:

"جنگ بدر کے قیدیوں نے بھی مسلمان بچوں کو لکھایا، پڑھایا تھا۔"

ان کا مقصد دراصل یہ ہوتا ہے کہ مسلمان اپنے بچوں کو تعلیم کے نام پر کافروں کے سپرد کریں، اور وہ جیسے چاہیں ان کے ذہن بنا دیں۔ معاذ اللہ!

یاد رہنا چاہیے کہ بدر کے قیدیوں نے بطورِ فِدیہ بعض بچوں کو صرف "کتابت" سکھائی تھی۔

جیسا کہ مسند احمد بن حنبل میں حدیث ہے:
بعض بدری قیدیوں کے پاس فدیہ دینے کے لیے کچھ نہیں تھا، تو رسول اللہ ﷺ نے ان کا فدیہ، انصاری بچوں کو کتابت سکھانا قرار دیا۔
(مسند احمد، رقم 5094)

اسی روایت کا اگلا حصہ یہ ہے:
ایک دن ایک بچہ روتا ہوا اپنے والد کے پاس آیا۔
والد نے پوچھا: کیا ہوا؟ کہنے لگا: ٹیچر نے مارا ہے۔
اُس نے کہا: وہ خبیث جنگِ بدر کا بدلہ لینا چاہتا ہے، واللہ تُو نے اب اس کے پاس بالکل نہیں جانا۔
اس سے کہاں ثابت ہوتا ہے کہ اپنے بچوں کو تعلیم کی خاطر کافروں کے سپرد کر دو؟؟
بلکہ اس سے تو یہ معلوم ہوتا ہے کہ کافر محکوم و مجبور ہو کر بھی بدلہ لینے سے باز نہیں آتا، لہذا شریر کافر کے شر سے اپنے بچوں کو بچا کر رکھنا چاہیے۔
1: اپنے بچوں کو سب سے پہلے دین سکھائیں، پکا سچا مسلمان بنائیں، پھر کچھ اور سکھانے کا سوچیں۔
2: مسلمانوں کو ہر شعبے میں ترقی کرنی چاہیے، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مسلمان رہ کر۔
سیکولر، لبرل، ملحد اور منافق بن کر نہیں!!

## ہیضہ

جب کسی کو ہیضہ ہوتا ہے تو اُسے اُلٹیاں اور پیچس لگ جاتے ہیں، ٹانگوں میں درد شروع ہو جاتا ہے، اور کمزوری محسوس ہونے لگتی ہے۔
عام طور پر ہیضے کا سبب: کھانے، پینے کی ناقص اشیا بنتی ہیں۔

جس مریض کو ہیضہ ہو جائے ڈاکٹر اُسے پانی اور نمکول استعمال کرنے کا مشورہ دیتے ہیں۔
اچھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، بعض لوگوں کو "عِلمیت" کا ہیضہ بھی ہو جاتا ہے، جس کی وجہ سے قے شروع کر دیتے ہیں۔
یہ قے بعض اوقات اتنے زور کی ہوتی ہے کہ سامنے والے کا نہ صرف لباس، بلکہ دل بھی خراب کر دیتی ہے۔
یہ مرض جب لاحق ہوتا ہے تو چِہرہ مُہرہ، اور لَب و لَہجہ فرعونی ہو جاتا ہے۔
ہمارے علاقے میں اِس مرض کا عمومی سبب: کسی فن یا زبان (عربی، انگلش وغیرہ) کی شُدبُد بنتا ہے۔
حُکَما اِس مرض کا علاج صالحین کی صُحبت اور کُتبِ تصوف کا مطالعہ تجویز کرتے ہیں۔

## تنقید

حدیث پاک میں آتا ہے:

ربِ تبارک وتعالیٰ ہر رات آسمانِ دنیا کی طرف نزول فرماتا ہے، اور کہتا ہے:

کون ہے مجھے پکارنے والا، میں اُس کی سنوں۔

کون ہے مجھ سے مانگنے والا، میں اُسے عطا کروں۔

کون ہے مجھ سے بخشش طلب کرنے والا، میں اسے بخش دوں!!

(صحیح مسلم و دیگر کتب متون)

یہ حدیث جب عمل کرنے والوں نے پڑھی تورات کو بستر چھوڑ دیے، اللہ کے حضور گر گئے اور اپنی مغفرت کروالی۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔تنقید کرنے والوں نے پڑھی تو ساری زندگی یہی سوچتے رہے کہ:

پروردگار آسمان دنیا کی طرف کیسے نزول فرماتا ہے؟؟

جب خیر کی بات سُنیں تو خیر پانے اور عمل کرنے والے بن جائیں۔

گرچہ تُو زِندانیِ اَسباب ہے
قلب کو لیکن ذرا آزاد رکھ
عقل کو تنقید سے فُرصت نہیں
عِشق پر اَعمال کی بُنیاد رکھ !

## سوشل میڈیا پر بعض جاہلِ مُطلق

سوشل میڈیا پر بعض جاہلِ مُطلق اور کاپی پیسٹر، پتا نہیں کیا بنے بیٹھے ہیں۔

نہ ان ظالموں سے کسی عالم کی عزت محفوظ ہے اور نہ غیرِ عالم کی۔

یہ جب چاہتے ہیں، جسے چاہتے ہیں خارجی و ناصبی بنا دیتے ہیں۔

طُرفہ یہ کہ اِن کی پُشت پناہی بعض عالِم اور مُفتی کہلانے والے کر رہے ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔وہ انھیں شہ دیتے ہیں، ان کی پیٹھ تھپکتے ہیں؛ اور یہ اپنے آپ کو مجاہدِ اعظم اور معمارِ قوم سمجھنے لگتے ہیں۔

لاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم!!

محسن بھوپالی سچ کہتا تھا۔

جاہِل کو اگر جَہل کا اِنعام دیا جائے
اِس حادِثۂ وقت کو کیا نام دیا جائے ؟

مے خانے کی توہین ہے ، رِندوں کی ہَتک ہے
کَم ظَرف کے ہاتھوں میں اَگر جام دیا جائے
ہے خُوئے اَیازی ہی سزاوارِ ملامت
محمود کو کیوں طعنۂ اِکرام دیا جائے!
بہتر ہے کہ اِس بزم سے اٹھ آئیے محسنؔ
سَرقے کو جہاں رُتبۂ اِلہام دیا جائے

## اصلاح

محدث اعظم پاکستان مولانا سردار احمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ شہر ملکوال ایک جلسے پر گئے۔
نماز کا وقت ہوا، مسجد پہنچے، جماعت کھڑی تھی ساتھ شامل ہو گئے۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
امام صاحب کا تلفظ ٹھیک نہیں تھا، وہ تکبیرات میں اللہ اکبر کو کھینچ کر "اللہ اکبور" کہتے رہے۔ (معاذاللہ ثم معاذاللہ)
جب سلام پھیرا تو آپ نے فرمایا:
کسی کی بھی نماز نہیں ہوئی، سارے نماز دوبارہ پڑھو۔
چہ جائیکہ امام صاحب نماز دہراتے، انھوں نے حضرت صاحب سے مصافحہ بھی نہ کیا اور غصے میں اٹھ کر چل دیے۔
حافظ الحدیث سید جلال الدین شاہ صاحب رحمہ اللہ نے انھیں کہا:
آپ ہمارے میزبان ہیں اور صرف ایک شرعی مسئلہ بتانے پر اس طرح بے مروتی سے پیش آرہے ہیں۔
وہ کہنے لگے:
میری بے عزتی تھوڑی ہوئی ہے جو اس طرح نہ کروں۔ (جو لوگ میرے پیچھے اتنے سالوں سے نماز پڑھ رہے ہیں وہ کیا کہیں گے مجھے نماز پڑھانی نہیں آتی)
صحیح مسئلے کو اپنی توہین سمجھنا اور بتانے والے کو دشمن سمجھنا بہت بڑی حماقت ہے۔
آپ امام ہیں، عالم ہیں، مفتی ہیں، پیر ہیں، جو بھی ہیں؛ معصوم عن الخطا نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!
آپ سے غلطی ہو سکتی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، آپ کی عزت یہ نہیں کہ غلطی پر اَڑے رہیں، عزت اِس میں ہے کہ اپنی غلطی تسلیم کر کے اُس کی اصلاح کریں اور نشان دہی کرنے والے کا شکریہ ادا کریں۔
آج کل بھی ائمہ اور علما کی ایک تعداد نماز، وضو کے مسائل میں سُستی کا شکار ہے۔
انھیں بھی چاہیے کہ بغیر جھجکے فقیہ علما کو نماز پڑھ کر، اور وضو کر کے دکھائیں؛ تاکہ جو سستی غفلت ہو وہ دور ہو جائے۔

بہت دفعہ انسان اپنی غلطی سے بے خبر رہتا ہے، اس کی غلطی کی اصلاح دوسرا کرتا ہے۔
اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ نے ایک دفعہ منظر اسلام کے مدرسین اور طلبہ سے کہا تھا:
سارے مولانا امجد علی صاحب کے سامنے وضو کریں اور دو رکعت نماز جہر کے ساتھ پڑھیں، تاکہ غلطیوں کی اصلاح ہو جائے۔
الحمدللہ میں گاہے گاہے اپنی نماز اور وضو محتاط اور نقاد علما کو چیک کرواتا رہتا ہوں۔۔۔۔۔۔۔۔
میں سمجھتا ہوں کہ ایمان کے بعد نماز جیسی قیمتی متاع کوئی نہیں، اس کی جتنی حفاظت کی جائے کم ہے۔
کہتے ہیں ایک بزرگ نے اپنے بیٹے کو علم حاصل کرنے کے لیے بھیجا تو اس نے دس سال بعد خط لکھا:
"ابا حضور! الحمدللہ دس سال کی محنت سے میں نے نماز پڑھنا سیکھ لیا ہے"
دس سال تو دور کی بات، کیا ہم نے نماز درست کرنے کے لیے دس دن بھی محنت کی؟؟

## جھکنا

بعض لوگ مصافحہ کرتے جُھک جاتے ہیں، خصوصًا پیرانِ عُظام کے ہاں تو ایسا عام ہوتا ہے۔
اس طرح نہیں کرنا چاہیے یہ خلافِ سُنت ہے۔
نبی اکرم ﷺ نے ملاقات کے وقت جُھکنے کی اجازت نہیں دی۔ (دیکھیے: سنن ترمذی وابن ماجہ وغیرہ)
ہمارے فقہا کہتے ہیں: ملاقات کے وقت اتنا جھکنا کہ حدِ رکوع تک پہنچ جائیں، منع ہے۔
سلام کہہ کر بغیر جُھکے ہاتھ ملانا چاہیے، یہی مسنون طریقہ ہے۔
ہاں، اگر عالم و شیخ کی رضائے الٰہی کے لیے دست بوسی کرنا چاہتے ہیں تو اُس کے لیے جُھک سکتے ہیں۔
کیوں کہ یہ جُھکنا عِلت کے سبب ہے جو ممانعت کو مُستلزم نہیں۔
مجھے خواب میں پیر سید مہر علی شاہ صاحب قدس سرہ کی زیارت ہوئی تھی۔
میں نے جب آپ سے مصافحہ کر کے دست بوسی کرنے کا ارادہ کیا تو آپ نے ہاتھ کھینچتے ہوئے فرمایا:
ایسا کیوں کر رہے ہو؟ میں نے عرض کی: حضور! اکابرین امت کا طریقہ ہے۔ فرمانے لگے: اگر واقعی اِسی لیے کر رہے ہو، تو کر لو!
پھر فرمانے لگے: ہاتھ چومنا لوگوں نے رسم بنا لیا ہے۔
(مطلب: سنت کے مطابق سلام نہیں کہتے، نہ ہاتھ ملاتے ہیں، بس چومنے کو دوڑتے ہیں۔
ایک بندہ کسی کا ہاتھ چوم لے سہی، ساری صف نہ آؤ دیکھے گی نہ تاؤ چومنا شروع کر دے گی)
بزرگوں کی دست بوسی کی جا سکتی ہے اِس میں شرعًا کوئی ہرج نہیں، لیکن پہل سلام سے کرنی چاہیے۔

آج کل بعض مشائخ کو سلام کی کوئی فکر نہیں ہوتی، بس باقاعدگی سے ہاتھ چھوانے کی فکر رہتی ہے؛ جو مرید یا شاگرد ہاتھ نہ چومے زیرِ عتاب آجاتا ہے۔ (معاذاللہ ثم معاذاللہ) یہ بہت غلط رَوِش ہے!

عارفِ باللہ پیر سید ولایت شاہ صاحب گجراتی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ قصبہ شادیوال گئے تو کسی مرید نے مصافحہ کرتے وقت، جُھک کر آپ کے گُھٹنے چُھوئے۔

آپ نے اُسے تھپڑ مار کر کہا:

ہمیں فرعون بنانا چاہتے ہو! (یہ سکھوں والا طریقہ چھوڑو، سنت کے مطابق سلام کیا کرو)

اللہ پاک ہمیں بدعتوں سے بچائے اور سُنتوں پر عمل کی توفیق عطا فرمائے۔

## مریدِ گوگل

پہلے علما مطالعہ وسیع رکھتے تھے، وہ تمام علوم و فنون کی کتابیں کھنگالتے رہتے، کہ مَبادا کوئی مسئلہ ہی پوچھ بیٹھے اور اُسے مایوس ہونا پڑے۔

لیکن اب۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔بس گوگل (google) جانے اور سرچ انجن!!

مطالعہ بالکل صِفر، بلکہ صفر بٹا صفر۔

عمیق مطالعہ کرنے والا ایک کے ساتھ دس مسئلے یاد کر لیتا ہے، جب کہ پیرِ گوگل کا مُرید پوری طرح ایک مسئلہ بھی یاد نہیں کر پاتا۔

وہ اپنے حافظے پر نہیں، سرچ انجن پر بھروسہ کیے رکھتا ہے جو ذہن میں بات بیٹھنے ہی نہیں دیتا۔

اگر یوں بھی کہیں تو بے جا نہ ہو گا کہ:

گوگل کے مُریدوں کی یاد دہانی، آج کل کے مَریدوں کی عقیدت جیسی ہے۔

(لفظِ مرید کے میم پر پیش ہو تو معنی ہو گا فرماں بردار، اور میم پر زبر ہو تو معنیٰ ہو گا نافرمان)

جدید سہولیات (گوگل، شاملہ وغیرہ) سے ضرور استفادہ کریں، لیکن کتابی مطالعے کو اپنی زندگی میں خاص جگہ دیں۔

بالاستیعاب کتابیں پڑھنے کا ذوق پیدا کریں، مختلف علوم و فنون پر لکھی گئیں قابلِ قدر کتابیں پڑھیں، اور بار بار پڑھیں۔

"پڑھنے کے لیے زندہ رہیں، اور زندہ رہنے کے لیے پڑھیں!

## زبردستی کی شادی

کچھ دن پہلے ایک لڑکی کو اس کے والدین دم کروانے لائے جسے تین چار لوگوں نے پکڑا ہوا تھا اور وہ زور زور سے چیخیں مار رہی تھی۔

یوں محسوس ہوتا تھا جیسے کسی جِن نے اِس کا گلا دبا رکھا ہے۔
کہنے لگے: اس کی شادی کی ہے تو اِسے جنات کا مسئلہ بن گیا ہے، جس وجہ سے ہم بہت پریشان ہیں۔
میں نے اُس کی حاضری کی تو معلوم ہوا اِس پر جادو یا جنات کے کوئی اثرات نہیں۔
مجھے اُس کے مرض کی سمجھ آگئی اور میں نے حسبِ حال اس کا علاج کیا۔
1: عزت مآب والدین! اگر آپ دیگر معاملات کی طرح، شادی کے معاملے میں بھی اولاد کی خوشیوں کا خیال رکھیں تو کتنا اچھا ہو۔
آپ کا بھائی، آپ کی بہن، آپ کا دوست، آپ کا رشتے دار سب اپنی جگہ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
مگر جسے زبردستی بیاہ کے بھیج رہے ہیں کیا اُس کا آپ کے ساتھ کوئی رشتہ نہیں!!
آپ نے تو دنیاداری کے لیے اپنا قول قرار نبھا دیا، مگر وہ بے چاری زندگی بھر کیسے نبھا کرے گی!!
2: بیٹی کو یہ اختیار دیا گیا ہے کہ وہ اپنی خوشی کے بندھن میں بندھے۔
جو مرد اُسے پسند نہ ہو اُس کی منکوحہ نہ بنے، چاہے وہ خالہ زاد، ماموں زاد، چچازاد، پھوپھی زاد یا کوئی بھی ہو۔
پھر آپ یہ اختیار اس سے کیوں چھینتے ہیں؟؟
3: آپ نے اپنی اولاد کو پالا پوسا، اُس کے ناز نخرے اٹھائے، اسے دکھ درد میں سنبھالا دیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔
وہ بیمار ہوئی تو رات بھر جاگے، وہ روئی تو آپ کی آنکھیں بھی بھیگیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اس کا ہر سوال آپ نے پورا کیا، اس نے جو مانگا آپ نے لا کر دیا۔
تو آخر شادی کے معاملے میں اس کی رضا کیوں نہیں دیکھتے؟؟ تھوڑا سا پُرسکون ہو کر، ذہن کو خالی کر کے ضرور سوچیے!!
یہ ٹھیک ہے آپ نے جو سوچا اُس کے حق میں بہتر سوچا، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ یہ بھی تو سوچیں کہ جو اُس نے سوچا وہ ضروری نہیں ہماری سوچ سے بہتر نہ ہو۔
بہتر نہ سہی، پھر بھی ہماری خوشی تو اولاد کی خوشی میں ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اگر وہ خوش رہی تو ہمارے گہرے زخم بھی مندمل ہو جائیں گے، وہ ناخوش ہوئی تو ہم چاہتے ہوئے بھی خوش نہیں رہ سکیں گے۔
4: ایک اعرابی سے پوچھا گیا تھا محبت (عشق) کیا چیز ہے؟
اُس نے کہا:

ان لم یکن جنسا من الجنون، انہ لعصارۃ من السحر۔
اگر یہ پاگل پَن کی قِسم نہیں، تو جادو کا نچوڑ ضرور ہے۔

اعرابی نے سچ کہا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!

عشقِ مجازی کی ایسی جامع تعریف شاید کوئی نہ کر سکے۔

"واقعی یہ پاگل پن ہے، یا جادو کی کوئی قِسم۔"

لیکن جو بھی ہے، اِس کا علاج ممکن ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اگر آپ کسی کو اِس مرض میں مبتلا دیکھیں تو اُس پر ہنسنے یا سختی کرنے کے بجائے، رحم کھائیں اور اُسے کسی سمجھ دار معالج کے پاس لے کر جائیں؛ اللہ نے چاہا تو ٹھیک ہو جائے گا۔

5: ایسے مریضوں کے لیے اُس معالج کا انتخاب کریں جو راز دار اور سمجھ دار ہونے کے ساتھ اچھی طرح سے مریض کی تشخیص اور مرض کا علاج کر سکتا ہو۔

ہر ماہرِ نفسیات، ہر عامل اور ہر سیانا اِس مرض کا علاج نہیں کر سکتا۔

پیر وارث شاہ صاحب کہتے تھے ع

عاشق، کھور، فقیر، تے نانگ کالے؛ باہجھ منتروں مُول نہ کیلیئے

نی

عاشق، شہد کی مکھی، فقیر اور کالے سانپوں کو گُر جانے بغیر ہاتھ نہیں ڈالنا چاہیے؛ انھیں وہی ہاتھ ڈالے جسے اِنھیں کیلنے کا منتر آتا ہو۔

## امام مسجد کی چُھٹی

میرے ایک دوست امامت کرواتے تھے، اُنھوں نے بڑی تگ و دَو سے پلاٹ خرید کر مکان بنالیا اور مجھے کہنے لگے:

"لاہور کی ایک جامع مسجد کے امام صاحب بڑے برگُزیدہ عالم تھے۔

اُنھوں نے 22 سال اُس مسجد میں امامت و خطابت اور تبلیغ کا فریضہ انجام دیا۔

مسجد کو اللہ کا گھر سمجھ کر آباد رکھا، اُس کی صفائی سُتھرائی خود کی، اور جملہ ضروریات کا بھی دھیان رکھا۔

اِس عرصے میں نہ وہ اپنا گھر بنا سکے، نہ کوئی کاروبار؛ کیوں کہ ذرائع آمدن ہی اتنے محدود تھے، جس میں وہ کیا بنا سکتے تھے!!

مسجد انتظامیہ نے انھیں 22 سالہ اس خدمت کا یہ صلہ دیا کہ انھیں بلاوجہ امامت سے معزول کر دیا۔

نہ طویل خدمت دیکھی، نہ معاشی حالت اور نہ علم و بزرگی۔"

تو میں نے اِس واقعہ سے یہ سبق سیکھا کہ امامت ایسی ذمے داری ہے جس سے کسی وقت بھی بلاوجہ معزول کیا جا سکتا ہے، لہذا بہتر یہی ہے کہ معزول ہونے سے پہلے پہلے بندہ اپنی جگہ بنالے، تاکہ جب مسجد والے نکالیں تو دھکے نہ کھاتا پھرے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

میرے اس دوست کا خدشہ درست ثابت ہوا، وہ جس مسجد میں پندرہ سال سے امامت کر رہے تھے، بغیر کسی شرعی عذر

کے انھیں بھی معزول کر دیا گیا۔

امامت جتنا عظیم منصب ہے، ائمہ مساجد اتنی ہی آزمائشوں میں ہیں۔

مشاہرے اور سہولتیں قلیل سے قلیل دی جاتی ہیں، جب کہ باتیں طویل سے طویل سُنائی جاتی ہیں۔

پھر جب تک امام ہاں میں ہاں ملاتا رہے، واہ واہ؛ سرِ مُو انحراف کرے تو تُو تُو مَیں مَیں پہ بات آجاتی ہے۔

اللہ تعالیٰ ہمیں ائمہ مساجد کا احترام نصیب فرمائے، اور اُن کے ساتھ حسنِ سلوک سے پیش آنے کی توفیق دے۔

1: مسجد انتظامیہ بادشاہ نہیں ہوتی، کہ جس کی رعایا امام صاحب ہوں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

انتظامیہ اللہ کے گھر کی نوکر اور خاک رُوب ہوتی ہے۔

اس پر جس طرح مسجد کے در و دیوار کا احترام لازم ہے، اسی طرح اللہ اکبر کی صدائیں بلند کرنے والے امام کا حترام بھی لازم ہے۔

2: مشاہرہ پیش کرنے کی وجہ سے امام صاحب غلام نہیں بن جاتے، امام ہی رہتے ہیں۔

جس طرح دن رات والد کی خدمت کر کے بیٹا، بیٹا رہتا ہے، اور باپ، باپ۔ اسی طرح امام بھی امام رہتا ہے، اور مقتدی، مقتدی۔

3: ائمہ کرام ساتویں آسمان سے اتری مخلوق نہیں، اِسی دنیا کے فرد ہوتے ہیں۔

اِن سے بہ تقاضائے بشریت غلطی ہو جائے تو اچھے انداز سے اُس کا ازالہ کرنا چاہیے، یہ نہیں کہ اِنھیں امامت سے ہی معزول کر دیا جائے۔

شیخ الاسلام امام احمد رضا حنفی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

بلا وجہ امام کو معزول کرنا ممنوع ہے، حتیٰ کہ حاکمِ شرع کو (بھی) اس کا اختیار نہیں دیا گیا۔

ردالمختار میں ہے: بغیر کسی وجہ کے قاضی (بھی) مقرر امام کو معزول نہیں کر سکتا۔

اللہ پاک ہر مسجد کی انتظامیہ کو ہدایت پر قائم رکھے اور ائمہ کرام کو بے لوث خدمتِ دینِ متین کی توفیق عطا فرمائے!

## دل آزاری

پہلے علما حق بیانی کو ترجیح دیتے تھے، اَب حق بیانی پر لوگوں کو ترجیح دی جاتی ہے۔

یہ جو نئی پود آرہی ہے (الاماشاءاللہ)، اس نے تو مذہب و مسلک ہی یہ بنالیا ہے کہ:

کسی کی دل آزاری نہیں کرنی۔

یاد رکھیے! جو عالم "صِرف" یہ سوچ کر لکھتا اور بولتا ہے کہ:

"میں نے کسی کی دل آزاری نہیں کرنی۔"

وہ حق بیانی سے محروم ہوجاتا ہے، اور منافقت و مداہنت اس کے رَگ و پے میں سرایت کرجاتی ہے۔
دین دار عالم وہی ہے جو دینِ حق کو، بیان کرنے کے لیے حق گوئی سے کام لے، پھر چاہے لوگوں کی دل آزاری ہو یا دل جوئی
۔

فقیہِ اعظم مولانا محمد شریف کوٹلوی رحمہ اللہ ایک جگہ تقریر کرنے گئے تو انھیں کہا گیا:
حضرت! کسی کے خلاف تقریر نہیں کرنی، تاکہ کسی کی دل آزاری نہ ہو۔
آپ نے فرمایا: کس موضوع پر کرنی ہے؟
کہا گیا: نماز، روزے اور اصلاحِ معاشرہ پر۔ آپ نے فرمایا:
نماز پر تقریر کرتے ہوئے جب بے نمازی کی سزائیں بیان کروں گا، اور کہوں گا جو نماز نہیں پڑھتا وہ مجرم اور مستحق عذاب ہے، تو تقریر اختلافی ہوجائے گی؛ جس سے بے نمازیوں کی دل آزاری ہوگی۔ اسی طرح اصلاح معاشرہ کرتے ہوئے جب جھوٹوں، رشوت خوروں، خائنوں، بددیانتوں کی مذمت کروں گا تو اُن کی دل آزاری ہوجائے گی؛ اب بتائیں میں کیا کروں!!

## قابلِ تقلید حکمران

اِسی سرزمین پر سلطان علاؤالدین خلجی رحمہ اللہ کی حکومت رہی۔
اُس وقت قومی خزانے کو پیسوں کی سخت ضرورت تھی، اس کے باوجود سلطان نے کھانے پینے کی چیزیں سستی کردیں، لوگوں کے ٹیکس معاف کردیے، دلال (middle man) کا کردار ختم کردیا اور ذخیرہ اندوزی کی سزا مقرر کردی۔
پھر اس پر عمل درآمد کے لیے جاسوسی کا ایسا نظام مرتب کیا جو منڈی کی خبریں براہِ راست سلطان تک پہنچاتا۔
آپ کے زمانے میں لوگ بہت خوش حال ہوگئے، اور یہی خوش حالی کافی عرصہ بعد تک رہی۔
آپ نے سامانِ خُورد و نوش کے جو ریٹ مقرر کیے تھے ان میں سے کچھ یہ ہیں:
گندم: ڈیڑھ روپے میں دس من
جو: ایک روپے میں ساڑھے بارہ من
چنا: ایک روپے میں دس من
چاول: ایک روپے میں دس من
ماش: ایک روپے میں دس من
دالیں: ایک روپے میں دس من
گڑ: ایک روپے میں 166 سیر
گھی/مکھن ایک روپے میں 125 سیر

کاش! ہمارے حکمران یورپ کو نمونہ بنانے کے بجائے سلاطینِ اسلام کی پیروی کریں۔
یورپ تو اِنھیں سُود، مہنگائی، بُزدلی اور منافقت سکھائے گا۔
لیکن سلاطین اسلام سے اِنھیں غیرت وحمیت، خیر خواہی ملت اور مومنانہ فراست کا درس ملے گا۔

## مدرسوں کے لیے فنڈ

ہمارے دینی مدرسوں کے دنیوی معاملات: زکوٰۃ، صدقات اور عطیات سے چلتے ہیں۔
عطیات میں قربانی کی کھالیں کافی معاون ثابت ہوتی تھیں، لیکن اِس دفعہ اُن کی قیمت کافی گِرادی گئی ہے۔
1: اِس کا عارضی اور فوری حل یہ ہے کہ:
اس دفعہ کھالوں کی جتنی قیمت کم ملی، اُسے دیگر عطیات کے ذریعے پورا کیا جائے۔
اِس کے لیے منتظمین مدرسہ چند افراد پر مشتمل ایک ایک کمیٹی ترتیب دیں، جو مخیر حضرات سے فنڈ جمع کرے۔
فنڈ جمع کرنے والے افراد میں دو خوبیاں ہونی چاہییں۔
اوہ خوش اخلاق ہوں۔ غصیلے، جھگڑالو، جلد باز اور اُکتا جانے والے نہ ہوں۔
پیر وارث شاہ فرماتے ہیں ع

وارث شاہ بِن کارُوں ذَبح کَریئے ، بَول نال زبان رَسِیلئے نِی

واراث شاہ! لوگوں کو میٹھی زبان کے ساتھ ذبح کرنا چاہیے، چھری کے ساتھ نہیں۔
مطلب: میٹھے بول سے دل جیتنا چاہیے، بداخلاقی سے کبھی نہیں جیتا جاسکتا۔
۲ انھیں پکا یقین ہونا چاہیے کہ ہم اپنے ہدف کے مطابق فنڈ جمع کرلیں گے۔
آپ یقین کریں نہ کریں، یہ یقینی بات ہے کہ:
پورے یقین کے ساتھ کوشش کی جائے تو لاکھوں نہیں، کروڑوں روپے بھی جمع کیے جاسکتے ہیں۔
2: اور اِس کا مستقل حل یہ کہ مدرسے کا نظام چلانے کے لیے کبھی بھی ایک چیز، یا ایک فرد پر بھروسہ نہیں کرنا چاہیے؛ بہت سارے اسباب پیش نظر ہونے چاہییں۔
صرف کھالوں، یا صرف زکوٰۃ اور رمضان فنڈ پر تکیہ کرکے نہ بیٹھ جایا کریں؛ اور نہ ہی کسی ایک سیٹھ صاحب، حاجی صاحب، چوہدری صاحب کو مدرسے کا دائمی کفیل سمجھ لیا کریں۔
آپ کے سامنے بہت سارے ذرائع آمدن اور افراد ہونے چاہییں جن سے فائدہ حاصل کرکے آپ بہ خوبی مدرسہ چلا سکیں
۔
اگر آپ نے مدرسے کے لیے پانچ لاکھ جمع کرنا ہو تو بیس پچیس لاکھ کا ذہن میں رکھ کر، پچاس مخیر حضرات سے ملیں؛ اور

انھیں بتائیں کہ ہمیں مدرسے کے لیے اتنی رقم چاہیے، آپ بڑھ چڑھ کر تعاون فرمائیں!
انشاءاللہ اس طرح آپ اپنا ہدف بہ آسانی پورا کرلیں گے۔
ابھی تو کھالوں کی قیمت کم ہوئی ہے، کل کلاں کھالیں جمع کرنے پر پابندی لگ جائے، پھر بھی ہم نے مدرسے چلانے ہیں اور ضرور چلانے ہیں!!
ہم اس کے لیے اپنی ساری صلاحتیں بروئے کار لائیں گے، اور اللہ کی رضا کے لیے دینی مدرسے چلائیں گے۔

## امام مسجد

کچھ دن پہلے ایک گاؤں میں جانا ہوا۔
نماز کے لیے مسجد میں گیا تو دیکھا: ماشاءاللہ بہت خوب صورت مسجد تھی، عمدہ قالین، بہترین پنکھے، جاذب نظر نقش و نگار۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مسجد سے متّصل امام صاحب کی رہائش ایسی خستہ حالت میں تھی کہ بیان نہیں کیا جاسکتا۔
کتنے افسوس کی بات ہے:
لوگ مسجد کے نقش و نگار پر بغیر سوچے سمجھے لاکھوں روپے خرچ کردیں گے، لیکن امام کی واجبی ضرورت پر بھی بیس تیس ہزار خرچ کرتے ہوئے، دس بار سوچیں گے اور خرچ کرکے بیس دفعہ گنیں گے۔
میرے جاننے والے ایک امام صاحب کا بھائی ہسپتال میں داخل ہوا تو اُن کے پاس علاج کے لیے پیسے نہیں تھے۔
وہ منتظمِ مسجد کے پاس گئے اور کہا:
مجھے کچھ پیسے بہ طورِ قرض دے دیں یا ایک ماہ کی پیشگی تنخواہ دے دیں، تاکہ بھائی کا علاج کروالوں۔
منتظم صاحب کہنے لگے:
قاری صاحب! بڑے حاجی صاحب سے مشورہ کرلیں، پھر دیکھیں گے۔
وہ بے چارے خاموشی سے واپس آگئے اور منھ چھپا کر رونے لگے۔
پھر انھوں نے ایک دوست سے کچھ پیسے ادھار لے کر اپنے بھائی کا علاج کروایا اور بہ مشکل ایک سال بعد اُس دوست کا اُدھار چُکایا۔
یہ خیال آپ کے ذہن میں نہ آئے کہ:
منتظم صاحب بے شعور یا غریب تھے، جو امام صاحب سے تعاون نہیں کرسکے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ہرگز نہیں!
منتظم صاحب اچھے خاصے کھاتے پیتے ہیں، انھوں نے مسجد کے نقش و نگار پر چالیس لاکھ سے زیادہ رقم خرچ کی ہے۔
وہ دوستوں کے ساتھ ایک وقت میں ہزاروں کا کھانا کھالیتے ہیں، اپنے گھر کے لیے لاکھوں کی شاپنگ کرلیتے ہیں۔

انھیں زندگی بھر اگر نہیں معلوم ہوسکا تو صرف اتنا معلوم نہیں ہوسکا کہ:

"امام صاحب اسی دنیا کی مخلوق ہیں، ان کی بھی ضروریات ہیں۔"

کہتے ہیں:

ہلاکو خان نے جب بغداد کو تاراج کیا تو خلیفہ کو گرفتار کرکے، اُس کے سامنے موتیوں بھرے طشت رکھے اور کہا:

یہ کھاؤ! اگر تم نے انھیں فوج پر خرچ کیا ہوتا تو ذلت کا یہ دن نہ دیکھتے۔

کاش کے! مسجدوں اور مدرسوں کے نقش و نگار پر بے دریغ خرچ کرنے والوں کو بھی یہ سمجھ آجائے کہ:

دین کو تاراج کرنے والے ہلاکو (ملحد، بدمذہب وغیرہ) جب آتے ہیں، تو ان کے حملے سے نقش و نگار نہیں بچا پاتے، علما و ائمہ کی فوج بچاتی ہے؛ جس پر خزانوں کے منھ بند کیے رکھتے ہیں۔

1: اپنی مسجد کے لیے چُن کر امام لائیں، جو عالمِ باعمل ہوں۔

پھر انھیں اچھی رہائش دیں، جملہ سہولیات دیں اور دنیوی فکروں سے آزاد کرکے کہیں:

اللہ و رسول کے حکم کے مطابق دین کا کام کریں۔

2: امام صاحب اگر شرعی غلطی کریں تو انھیں روکیں، ٹوکیں، وضاحت طلب کریں؛ لیکن اپنی انا کے لیے ان پر کبھی انگلی نہ اٹھائیں، وہ آپ کے غلام نہیں، آپ کے امام ہیں۔

3: اگر آپ صاحبِ استطاعت ہیں تو اپنی کمائی کا ایک حصہ، اپنی مسجد کے امام صاحب کے لیے وقف کردیں؛ آپ کا یہ عمل مسجد کے نقش و نگار پر خرچ کرنے سے بہ درجہا بہتر ثابت ہوگا۔

4: امام صاحب کو بال بچوں سمیت اچھے علاج معالجے، عمدہ تعلیم اور بہترین رہائش کی فری سہولت دیں، اور اتنا مشاہرہ پیش کریں جس سے بہ آسانی گزر بسر ہوسکے۔

اللہ پاک ہمیں اپنے ائمہ، علما اور اساتذہ کا خیال رکھنے کی توفیق عطا فرمائے۔

یہ لوگ دینی سرحدوں کے محافظ ہیں، ہمیں اور ہماری آنے والی نسلوں کو بچانے والے ہیں، ہمیں دوزخ سے دور کرکے جنت کے راستے پر چلانے والے ہیں۔

## میرا تو لڑکا ہے

ہماری رہائش گاہ کے سامنے سے گزرتی ہوئی سکول وینیں روزانہ "خبیث لارڈ میکالے" کی یاد دلاتی ہیں۔

آج ایک والد کو دیکھا جو اپنے بیٹے کو سکول وین میں بٹھا رہا تھا جس میں کچھ لڑکیاں بھی بیٹھی تھیں۔

میں نے اسے کہا: آپ اپنے بیٹے کو لڑکیوں کے ساتھ سکول کیوں بھیجتے ہیں، اسے الگ بھیجا کریں۔

کہنے لگا: کوئی بات نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ میرا کیا جانا ہے، میرا تو لڑکا ہے؛ یہ فکر لڑکی والوں کو ہونی چاہیے۔

میں خاموش ہوگیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

سوچنے لگا، شاید صابر چوہدری سچ کہتا ہے کہ: احتیاط لڑکیوں کو کرنی چاہیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، نقصان لڑکیوں کا ہوتا ہے۔

"میرے گھر والے نہیں مان رہے"، کہنے کے بعد، لڑکا دوستوں کے ساتھ باہر نکل جاتا ہے؛ آتے جاتے چہرے دیکھ کر دل بہلا لیتا ہے۔

مسجد میں مولوی صاحب سے "والدین کے حقوق" پر درس سُن کر سکون میں آجاتا ہے۔

احتیاط لڑکیوں کو کرنی چاہیے، نقصان لڑکیوں کا ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

لڑکیاں جس سے بھی جُڑ جائیں، جُدا ہوتے روتی ہیں؛ کندھا تو دور کی بات، رونے کے لیے انھیں جگہ بھی نہیں ملتی!!

کوئی دم، کوئی درس، اُن پر جلدی اثر نہیں کرتا۔

احتیاط لڑکیوں کو کرنی چاہیے، نقصان لڑکیوں کا ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

(ماہر نفسیات کی ڈائری، ص 21، 22، ط علم و عرفان پبلی کیشنز لاہور)

مسلم معاشرے کی ہر بیٹی میری بیٹی ہے، ہر بہن میری بہن ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، یہ میں اور آپ تو سوچیں گے، ہر کوئی نہیں سوچے گا۔

اس لیے احتیاط کیجیے، بہت احتیاط کیجیے، بہت زیادہ احتیاط کیجیے!!

## جعلی پیر سے نجات

کچھ دن پہلے ایک دوست ملنے آئے، جو کافی عرصہ ایک گم راہ پیر کے مرید رہے، اور اب اُس سے کِنارہ کش ہو چکے تھے۔

میں نے پوچھا: آپ اُس کے چُنگل سے کیسے آزاد ہوئے؟

کہنے لگے: داتا صاحب رحمۃ اللہ علیہ کی کتاب "کشف المحجوب شریف" پڑھی، اور اس سے پیر کا موازنہ کیا، تو معلوم ہوا اس میں پیروں والی کوئی بات نہیں، یہ محض ڈھونگی ہے۔

بس اللہ پاک نے ہدایت دی اور میں اس سے دُور و نَفُور ہو گیا۔

بزرگ فرماتے ہیں:

جسے پیرِ کامل نہ ملتا ہو، وہ کشف المحجوب پڑھے، اُسے پیر مل جائے گا۔

ویسے آج کل ہر پیر کے مرید کو کشف المحجوب پڑھنی چاہیے، تاکہ اسے معلوم ہو سکے کہ میرا پیر واقعی پیر ہے، یا پیری فقیری کے نام پر دھبہ ہے۔

کشف المحجوب فارسی زبان میں ہے، اس کے اردو میں کئی ترجمے ہوئے ہیں۔
مفتی سید غلام معین الدین نعیمی رحمہ اللہ نے بھی اچھا ترجمہ کیا ہے۔

## یہ کیوں نہیں، وہ کیوں نہیں!

اگر کوئی تبلیغ کے میدان میں کام کرتا ہے تو کہتے ہیں:
سیاست میں کیوں نہیں آتا۔
اگر کوئی سیاست میں آتا ہے تو کہتے ہیں:
اصلاح معاشرہ کے لیے کچھ نہیں کرتا۔
اگر کوئی مسجد میں کام کرتا ہے تو کہتے ہیں:
مسجد سے باہر نہیں نکلتا۔
اگر مسجد سے باہر کام کرتا ہے تو کہتے ہیں:
مسجدیں آباد نہیں کرتا۔
اگر کوئی سوشل میڈیا پر کام کرتا ہے تو کہتے ہیں:
زمینی سطح پر کام نہیں کرتا۔
اگر کوئی زمینی سطح پر کام کرتا ہے تو کہتے ہیں:
یہ حالات زمانہ سے بے خبر ہے۔
آخر ہم چاہتے کیا ہیں؟؟ ہمارا یہ زنانہ مزاج کب بدلے گا!!
ہم کب ہر محاذ کی افادیت سمجھیں گے؟؟
کب احساس کمتری کا یہ عفریت ہماری جان چھوڑے گا!! ایسا سوچنے سے بہتر ہے صبح و شام یہ دعا کیا کریں:
یا اللہ! جو لوگ مختلف شعبوں میں دین و مسلک کا کام کر رہے ہیں، ہمیں ان کا معاون بننے کی توفیق عطا فرما؛ اور ہم سے بھی وہ کام لے لے جس سے تو راضی ہو جائے۔

## لڑکیوں کے لیے

ایک بیٹی اپنی خالہ کے ساتھ میرے پاس آئی، اس نے رو رو کے بُرا حال کیا ہوا تھا۔
میں نے سبب پوچھا تو کہنے لگی:
ایک لڑکے نے مجھے propose کیا تھا، میں نے اس کے لیے ہر طرح کی قربانی دی، لیکن اب اس نے مجھے چھوڑ دیا ہے

کہتا ہے: تم ٹھیک نہیں ہو، تمھارے کسی اور کے ساتھ بھی تعلقات ہیں۔
جب کہ میں قسم کھاتی ہوں، میرا کسی سے کوئی رابطہ نہیں!
آپ مجھے کوئی ایسا تعویذ دیں کہ وہ میرے ساتھ شادی کرلے، مجھے اس طرح راستے میں نہ چھوڑے۔
میں نے چاہا اس بیٹی کو تعویذ کے بجائے مشورہ دوں، لیکن اس کی غمگین حالت دیکھ کر خاموش ہوگیا۔

اگر میں اسے مشورہ دیتا تو وہ یہ ہوتا:

"آج کل لڑکے عموماً وقت گُزاری کے لیے دوستی کا ڈھونگ رچاتے ہیں، اور محبت کے نام پر لڑکیوں کو بلیک میل کرتے ہیں
۔
جب جی بھر جاتا ہے تو الزام لگا کے، بہانے بنا کے، جھگڑا کر کے چھوڑ جاتے ہیں۔
اس رویے سے ان کا نقصان ہو نہ ہو، لڑکیوں کے لیے وقتی آزمائش ضرور بن جاتی ہے۔
ایسے مطلبی لوگ جب ساتھ چھوڑ جائیں تو رونے دھونے کے بجائے شکرانے کے دو نفل ادا کرکے، خوشی منانی چاہیے؛ اور آئندہ ان کی طرف مڑ کر بھی نہیں دیکھنا چاہیے۔"

اس سلسلے میں مزید چند گزارشات ہیں:

1: کسی غیر محرم سے ہرگز دوستی نہ کریں، چاہے وہ کتنے ہی لالچ دے، کیسے ہی سٹائل بنائے، اور کتنے ہی ڈائیلاگ مارے۔
آپ کے رب نے، آپ کو جس چیز سے منع فرمادیا، اس میں کبھی خیر نہیں ہوسکتی۔
2: اپنی قدر پہچانیں! آپ کو دین اسلام نے شہزادیوں سے بڑھ کر مقام دیا ہے۔
کسی غیر محرم کو اتنی بھی اجازت نہیں کہ بے حجاب آپ کو دیکھ سکے، تو آپ اس سے باتیں کرکے اپنی قدر کیوں گھٹاتی ہیں۔
3: اگر آپ کے دل میں نہ چاہتے ہوئے بھی کسی کے متعلق جذبات پیدا ہوجائیں، تو اُن کے پروان چڑھنے سے پہلے بلا جھجک گھر والوں (ماں، باپ، بھائی یا بہن وغیرہ) سے بات کریں۔
یہ بالکل نہ سوچیں کہ وہ کیا کہیں گے؛ وہ اس وقت جو بھی کہیں گے، آپ کے لیے قابل برداشت اور قابلِ عمل ہوگا؛ لیکن حد سے گزر جانے کے بعد انھیں معلوم ہوا تو پھر ان کا کچھ کہنا، آپ کے لیے آزمائش بن جائے گا۔
4: محبت بہت پاکیزہ جذبہ ہے، یہ ہمیشہ پاکیزہ لوگوں کے لیے ہی پیدا ہونا چاہیے؛ گندے اور مطلبی لوگ اس کے حق دار نہیں۔
بیٹی کی سب سے پہلی محبت اس کا باپ ہوتا ہے، اپنی پہلی محبت کو کسی پر بھی قربان نہ ہونے دیں۔ جس باپ نے ہمیشہ آپ سے وفا کی، آپ کی خاطر تن من دھن، چین سکون، سب کچھ قربان کیا، اس سے آپ بھی وفا کریں؛ اس کی سفید چادر کو داغ دار نہ ہونے دیں۔
وہ ہمیشہ کی طرح آپ کے مستقبل کا فیصلہ بھی آپ سے بہتر کرے گا، اس پر پورا یقین رکھیں۔

اللہ پاک ہر بہن اور بیٹی کو برے لوگوں سے محفوظ رکھے، اور والدین کی اطاعت و فرماں برداری کی توفیق عطا فرمائے!!

## بیوہ اور مطلقہ

ہمارے معاشرے میں بیوہ اور مطلقہ عورت سے نکاح کرنا یا مرد کا دوسرا نکاح کرنا معیوب سمجھا جاتا ہے، جو کہ انتہائی غلط ہے۔

بیوہ اور مطلقہ عورتوں کو دوسری عورتوں کی طرح عزت دینی چاہیے۔

کیا ہمارے لیے یہ کافی نہیں کہ ہمارے پیارے نبی ﷺ کی ازواجِ پاک میں بیوہ اور مطلقہ بھی تھیں۔

اسی طرح دوسرے نکاح کو معیوب سمجھنا بھی مسلمانوں کا طریقہ نہیں۔

میری معلومات کے مطابق:

صحابہ واہل بیت علیہم الرضوان میں سے شاذ و نادر ہی ایسے ہوں گے جن کا صرف ایک نکاح ہوا۔

ان عظیم ہستیوں نے میدان جنگ میں نکاح کیے، حالت امن میں نکاح کیے، وطن میں نکاح کیے، پردیس میں نکاح کیے۔

بھلا ان سے بڑھ کر کون عاقل، عالم، عابد ہو گا!!

یاد رکھیے! جس معاشرے میں نکاح عام ہوتا ہے اس میں زنا شاذ ہو جاتا ہے۔

اور جس معاشرے میں نکاح مشکل ہو جائے اس میں زنا آسان ہو جاتا ہے۔

ہمارے زمانے کے سیکولر، ملحد، لبرل اور بے سمجھ مسلمان دوسری شادی کے خلاف آوازے کستے رہتے ہیں۔

حکومتی سطح پر اس کے خلاف قوانین بنتے ہیں۔

ناول، فلمیں، ڈرامے، ڈائیلاگ، لیکچر اور نہ جانے کیسے کیسے بیہودہ افسانے عام کیے جاتے ہیں۔

اسی لیے بے راہ روی، بے حیائی اور گرل/بوائے فرینڈ (زناکاری) جیسے گناہ عام ہوتے جا رہے ہیں۔

ہم اللہ تعالی سے دین و ایمان کی سلامتی کا سوال کرتے ہیں۔

## عورت کی بے حرمتی

آج فیس سے منسلک ایک خاتون نے میسج کیا ہے:

"ہمیں مسنجر پر فضول قسم کے میسجز آتے ہیں، جنھیں یہ سمجھ کر اگنور کر دیا جاتا ہے کہ یہ ناپاک ذہنیت والے لوگوں کا کام ہے۔

لیکن اس وقت بہت دکھ ہوتا ہے جب کوئی مذہبی وضع قطع والا شخص فضول میسجز کرتا ہے۔

آپ ایسے لوگوں کے لیے بھی کوئی پوسٹ کردیں"

ایسے لوگوں کے لیے میں کیا لکھوں!!

بس دعا ہے اللہ پاک انھیں ہدایت دے۔

مسلمان چاہے جیسا بھی ہو، عورت کا محافظ ہوتا ہے۔

بڑے بوڑھوں سے سنا کرتے تھے کہ:

ہمارے زمانے کے چور اور ڈاکو بھی عورت کی بے حرمتی نہیں کرتے تھے، چاہے وہ دشمن کی عورت ہی کیوں نہ ہو۔

دور نہ جائیے، اسی معاشرے میں رہنے والا امانت چَن، جو جگتوں میں مشہور ہے، وہ کہتا ہے:

"میں نے عورت کی بہت عزت کی ہے، ساری زندگی کسی ڈرامے میں عورت کو جَوک نہیں کی۔

اور عام لائف میں بھی عورت کو عزت دی ہے، اسے نیچا نہیں دکھایا"

اگر ایسے لوگ بھی خواتین کی عزت کا احساس کریں، تو مذہبی حال حُلیے والوں کو بہت زیادہ کرنا چاہیے۔

کیا آپ کو معلوم نہیں کہ آپ کے رب جَلَّ جَلَالُہٗ نے، آپ کے نبی صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم سے فرمایا تھا:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَ يَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ۔

(اے میرے حبیب!) آپ ایمان والے مردوں کو حکم دو کہ اپنی نگاہیں نیچی رکھیں اور اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کریں۔ یہ ان کے لیے زیادہ پاکیزہ ہے، بے شک اللہ ان کے کاموں سے باخبر ہے۔

## اعلیٰ ظرفی

امام اعظم ابو حنیفہ رحمہ اللہ عشا کی نماز پڑھ کر نکلے، نعلین مبارک ابھی ہاتھ میں تھے کہ آپ کے شاگرد حضرت زفر رحمہ اللہ نے مسئلہ پوچھ لیا- امام صاحب نے جواب دیا، لیکن وہ مطمئن نہ ہوئے اور بحث کرنے لگے؛ حتیٰ کہ (ساری رات گزر گئی اور) فجر کی اذان ہوگئی-

(استاد، شاگرد واپس مسجد میں آئے) نماز فجر پڑھی، اس کے بعد پھر بحث شروع ہوگئی؛ آخر کار امام صاحب کے قول پر حضرت زفر مطمئن ہوگئے-

(مناقب ابی حنیفۃ، مصنف: امام الموفق بن احمد المکی متوفی 568ھ، الباب السابع فی ذکر المسائل المستحسنۃ التی اجاب فیھا علی البدیہہ.....، ص118، دار الکتاب العربی بیروت، 1401ھ)

اسی طرح ابو مطیع نے امام صاحب پر چار ہزار سوالات کیے، آپ نے ہر سوال کا جواب دیا اور ناراض ہونے کے بجائے اُن کی خوب حوصلہ افزائی کی اور فرمایا:

"ایسے مسائل کو جمع کرنا زبردست عقل منداور بڑے مضبوط معدے والے کا کام ہے۔"

(ایضًا،ص122)

اللہ کریم ہمیں بھی ایسا ظرف عطافرمائے!

اگر لوگ ہماری بات پر واہ واہ کرتے ہیں تو ہم خوش رہتے ہیں، لیکن جوں ہی کوئی اعتراض کرتا ہے ہم ناراض ہوجاتے ہیں ۔یہ رویہ مناسب نہیں، ہمیں اپنے امام رحمہ اللہ کی سیرت کو پیش نظر رکھنا چاہیے۔

## زیادہ سویانہ کرو

حضرت سلیمان علیہ السلام کی والدہ ماجدہ آپ سے کہتی تھیں:

اے میرے بیٹے! رات کو بہت زیادہ سویانہ کرو، زیادہ سونا قیامت کے دن بندے کو محتاج کردے گا۔

(الترغیب والترھیب، کتاب النوافل، باب الترھیب من نوم الانسان الی الصباح۔۔۔۔۔۔ص119، ر945، ط دارالکتاب العربی بیروت۔ قال المنذری: وفی اسنادہ احتمال للتحسین)

سبحان اللہ! نبی تو خود ساری کائنات کو نصیحت کرنے آتے ہیں، لیکن یہاں نبی علیہ السلام کی ماں انھیں نصیحت کررہی ہیں۔ماں، رشتہ ہی ایسا ہے جو آخر دم تک نصیحت کرتا رہتا ہے۔

بیٹا چاہے جتنے بڑے مقام پر فائز ہوجائے ماں کے لیے تو وہ بچہ ہوتا ہے۔

ہماری مائیں ہمیں روکتی، ٹوکتی ہیں، جھڑکتی ہیں، سمجھاتی ہیں؛ یہ سب چیزیں ان کی فطرت میں شامل ہیں۔

ہمیں ان کی ہر بات توجہ سے سننی چاہیے اور دل وجان سے تسلیم کرنی چاہیے۔

## دوسروں کی توبہ

رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

المؤمن واہ راقع، فسعید من ھلك علی رقعه۔

مومن گناہ بھی کرتا ہے اور توبہ بھی، سعادت مند ہے وہ بندہ جو توبہ کرکے مرے۔

(الترغیب والترھیب للمنذری، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی التوبۃ، ص537، رقم4597، ط دارالکتاب العربی بیروت۔قال المنذری: واہ: مذنب۔ راقع: تائب، مستغفر)

آج کل ایسا ماحول بن گیا ہے کہ بعض لوگ اپنی توبہ سے زیادہ دوسروں کی توبہ کی فکر کرتے ہیں۔

دوسرا چاہے توبہ کرچکا ہو، اور اللہ کریم نے اسے معاف بھی کردیا ہو؛ لیکن ان کے کاغذوں میں وہ اتنی دیر تک مغفور نہیں ہوسکتا جب تک ان سے پروانہ مغفرت حاصل نہ کرلے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اللہ کرے ہم اپنی توبہ کی فکر کرنے والے بن جائیں، اور سانس بند ہونے سے پہلے پہلے گناہوں کا سلسلہ بند کردیں۔

## وَاثِلہ

ایک شخص اپنے بیٹے کو آواز دے رہا تھا:

وَاثِلہ ادھر آؤ!

مجھے یہ نام سن کر بہت لطف آیا۔

میں نے کہا: تیرے قربان، تُو نے اپنے بیٹے کے لیے کتنا پیارا نام تجویز کیا!!

واثلہ (بن اَسقع) تو ہمارے پیارے نبی ﷺ کے مجاہد صحابی تھے۔

جس طرح ہم اپنے بچوں کے نام:

ابوبکر، عمر، عثمان، علی، حسن، حسین رکھتے ہیں؛ اسی طرح:

واثلہ، خزیمہ، دحیہ، زاہر، ضرار وغیرہ نام بھی رکھنے چاہییں، تاکہ یہ بھی ہمارے دلوں میں زندہ رہیں۔

## علامہ

آج ایک 80 سالہ عالمِ دین تشریف لائے، اور فرمانے لگے:

مجھے کچھ عملیات سکھائیں، تاکہ اپنے مریدین کا تقاضہ پورا کر سکوں۔

میرا دل ان کے جذبۂ تحصیلِ علم پر دل بہت خوش ہوا۔

میں نے دست بوسی کی اور جو ہو سکتا تھا عرض کیا۔

فرمانے لگے:

میں ابوالحقائق علامہ عبدالغفور ہزاروی رحمہ اللہ سے پڑھتا رہا ہوں، آپ نے کبھی خود کو "علامہ" نہیں کہا تھا، جب کہ صحیح معنوں میں علامہ تھے۔

آج کل تو ہر کسی نے اپنے نام کے ساتھ علامہ اور مفتی لکھنا شروع کر دیا ہے۔

پہلے علما القاب کی فراوانی کے بجائے، علم کی زیادتی پر توجہ دیتے تھے؛ وہ آخری وقت تک علوم وفنون کی تحصیل میں لگے رہتے۔

یہ آیت ان کے پیش نظر رہتی تھی:

هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۗ

اللہ پاک ان کی مزارات پر کروڑوں رحمتوں کا نزول فرمائے، اور ہمیں ان کے نقش قدم پر چلنے کی توفیق عطا کرے!!

## لاعلمی کا اقرار

ایک عالم سے کسی نے مسئلہ پوچھا، تو انھوں نے فرمایا:
مجھے اس کا جواب نہیں آتا۔ اس نے کہا: اس طرح لاعلمی کا اظہار کرتے ہوئے، آپ شرم محسوس نہیں کرتے ؟؟
آپ نے فرمایا: اپنی لاعلمی کا اقرار کرتے ہوئے جب فرشتے نہیں شرمائے، تو میں کیوں شرماؤں!!
اللہ کریم نے فرشتوں سے کہا تھا:
مجھے ان (چیزوں) کے نام بتاؤ۔ تو انھوں نے عرض کی تھی:
لَا عِلْمَ لَنَا ۔ ہم نہیں جانتے۔

## شُدھی

ہندستان میں ایک تحریک چلی تھی جسے شُدھی (یعنی ہندو بنانے والی تحریک) کہا جاتا تھا۔
اُس تحریک نے جب لاکھوں مسلمانوں کو مرتد بنا دیا تو اس وقت دین کا درد رکھنے والے علما و عوام اٹھ کھڑے ہوئے اور نہایت عقل مندی سے، بھیس بدل کر اس تحریک کا نہ صرف زور توڑا، بلکہ ساڑھے چار لاکھ مرتدین کو دوبارہ مسلمان کیا، اور ڈیڑھ لاکھ ہندووں کو بھی کلمہ اسلام پڑھا دیا۔
(دیکھیے: بھیگی پلکوں کا بوجھ، دیوتا کی شکتی، ص 143، ط شبیر برادرز لاہور)
جب شُدھی تحریک عروج پر تھی اُس وقت مولانا سید غلام قطب الدین برہمچاری ہندووں کا روپ دھار کر بنارس کے سب سے بڑے مندر میں چلے گئے تھے اور کئی سال تک پنڈتوں سے پڑھتے رہے۔
آپ نے بڑی محنت سے نہ صرف ہندو مذہب کی جملہ کتابیں (وید اور شاستر وغیرہ) پڑھ لیں، بلکہ اس مذہب کے اسرار و رموز بھی بہ خوبی سیکھ لیے، اور انھیں استعمال میں لا کر لاتعداد ہندووں کو مسلمان کیا۔
ایک دن آپ کو معلوم ہوا کہ بدایون کے اطراف میں دو مسلمان مرتد ہو گئے ہیں اور دیگر لوگ بھی شُدھی کے فتنے کا شکار ہو رہے ہیں، تو آپ کو بہت دکھ ہوا اور اسی وقت اس طرف روانہ ہو گئے۔
وہاں پہنچ کر شام کے وقت آپ نے جسم پر بھبھوت ملا، ماتھے پر قشقہ لگایا، اور گلے میں چندن کی مالا ڈال کر پیپل کے درخت کے نیچے آنکھیں بند کر کے، ایک ٹانگ پر کھڑے ہو گئے، اور دو دن اسی حالت میں کھڑے رہے۔
آپ کی اس حالت سے کثیر تعداد میں ہندو اور پنڈت متاثر ہوئے اور آپ کو دیوتا سمجھنے لگے۔
آپ رحمہ اللہ نے اپنے عقیدت مند سیکڑوں، ہزاروں ہندووں کو دائرہ اسلام میں داخل کر دیا۔
باطل کو ختم کرنے کے لیے صرف تقریریں اور تحریریں ہی کافی نہیں ہوتیں، بعض دفعہ سید غلام قطب الدین جیسی قربانی بھی دینی پڑتی ہے۔

اور جو علما ایسی قربانی دیں انھیں برداشت بھی کرنا پڑتا ہے۔
سید صاحب جب مندر میں رہتے تھے تو حضرت شاہ عبدالعلیم میرٹھی رحمہ اللہ چوری چُھپے آپ کو پراٹھے اور کباب دے کر آتے تھے۔

## رجوع

کتنے افسوس کی بات ہے کہ:
اگر کسی سے غلطی ہو جائے اور توجہ دلانے پر وہ رجوع کر لے، تو اُسے پھر بھی سکھ کا سانس نہیں لینے دیتے۔
کوئی کہتا ہے: اس رجوع میں سارا عمل دخل میرا ہے، میں نے ہی آواز اٹھائی تو اُس نے رجوع کیا۔
کوئی کہے گا: میرے دلائل اتنے مضبوط تھے کہ وہ تاب نہ لا سکا۔
کوئی کہتا پھرے گا: دیکھا میرا کمال، میں نے آخر رجوع کروا ہی لیا، میں نے اسے چاروں شانے چت گرا دیا۔
الغرض طرح طرح کی لاف زنی کی جائے گی، جس کا مقصد اپنی واہ واہ بنانے اور سامنے والے کو ذلیل کرنے کے سوا کچھ نہ ہو گا۔
یہ چیز بہت نقصان دہ ہے، اس سے یا تو اپنے بھی بیگانے ہو جاتے ہیں، یا ہمیشہ کے لیے غلطی پر ڈٹ جاتے ہیں۔
اگر آپ یہ ایمان رکھتے ہیں کہ:
"اللہ دیکھ رہا ہے"، تو پھر آج سے ایسی ہر لاف زنی سے توبہ کر لیں!
کسی کو دے کر جتلانا، یا نصیحت کر کے جتلانا بہت نامناسب ہے۔
اگر آپ کے کہنے پر کسی نے رجوع کر ہی لیا ہے تو اللہ کا شکر ادا کریں، اور اِس نیکی کو لوگوں سے ایسے چھپائیں جیسے اپنے گناہ چھپاتے ہیں۔
اس کا اظہار کسی کے سامنے نہ کریں، بالخصوص اپنے محبین، مریدین اور شاگردوں کے سامنے تو بالکل نہ کریں؛ یہ طبقے کسی کی عزت نفس نہیں دیکھیں گے بس آپ کی تشہیر کے پیچھے لگ جائیں گے۔
جس انسان نے توبہ کر لی اللہ کریم تو اس کے فرشتوں اور اعضا کو بھی اس کے گناہ بھلا دے گا، تاکہ اس کے خلاف گواہی دینے والا کوئی نہ رہے؛ پھر آپ کیوں یاد رکھنا چاہتے ہیں؟؟؟
کیا آپ اپنے کرم والے رب کی سنت ادا نہیں کر سکتے!!

## جھگڑا چھوڑ دے

رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

جو شخص حق پر ہونے کے باوجود جھگڑا چھوڑ دے، میں اُس کے لیے جنت کے اندر ایک گھر کا ضامن ہوں۔

(سنن ابوداود، ر4800)

یہ فرمان مبارک انسانی نفسیات کا بہترین ترجمان ہے۔

اگر ہم لڑائی جھگڑا جلدی ختم کرنا چاہتے ہیں تو دُو بدُو جواب نہ دیں، "حق پر ہونے کے باوجود" خاموشی اختیار کرلیں.....

جھگڑا خاموش ہوجائے گا۔ چاہے وہ مذہبی جھگڑا ہو، یا خانگی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

## علما جب چلے جاتے ہیں

علما جب چلے جاتے ہیں تو شاعر اُن کی شان میں قصیدے لکھتے ہیں، فراق میں مرثیے پڑھتے ہیں۔

خطیب ان کے مقام و مرتبے پر تقریریں کرتے ہیں۔

محرر ان کی خدمات پر تحریریں لکھتے ہیں۔

یہ سب ٹھیک ہے، بے شک وہ نفوس خراج عقیدت کے لائق ہیں۔

لیکن.....کیا وجہ ہے:

جب وہ ہم میں موجود تھے تو ہم نے اپنی محفلوں میں ان کا نام تک نہ لیا!!

چلے جانے والوں کی لاکھ تعریفیں کرلیں، لوگ اُن سے اُس طرح استفادہ نہیں کرسکتے، جیسے زندگی میں کرتے ہیں۔

خدا ہمیں توفیق دے تو ہم زندوں کی قدر کریں، ان کے بھی قصیدے اور منقبتیں لکھیں، تاکہ لوگ ان کی طرف مائل ہوکر کچھ حاصل کرسکیں۔

کیا میں آپ سے سوال کرسکتا ہوں کہ:

آپ نے آج تک کتنے زندہ علما کی تعریف میں قصیدے لکھے، تقریریں کیں، اور تحریریں لکھیں؟؟

## قلندر

ہمارے زمانے کے بعض پیر خود کو قلندر کہلاتے ہیں اور جان بوجھ کر نماز نہیں پڑھتے، کہتے ہیں:

ہم ظاہر کے نہیں، باطن کے نمازی ہیں۔

نبی پاک ﷺ کو تو اللہ کریم نے ظاہری نمازیں ہی عطا فرمائی تھیں، جن کی آپ نے امت کو تعلیم دی۔

یہ لوگ باطنی نمازیں پتا نہیں کہاں سے لے آئے ہیں۔

پیر سید یعقوب شاہ صاحب رحمہ اللہ کہتے تھے:

میرا ایک دوست تھا (جسے کسی قلندر کی صحبت نے بے نمازی بنادیا) میں اسے جب بھی نماز کی دعوت دیتا، وہ کہتا:

"شاہ جی میں اندروں نمازی آں"
(یعنی میں ظاہر کا نہیں، باطن کا نمازی ہوں)
ایک دن مجھے کہنے لگا:
شاہ جی! بھینس خریدنی ہے، میرے ساتھ چلیں۔
میں اُس کے ساتھ چل دیا۔
ہم ایک ڈیرے پر پہنچے، جہاں بھینسیں بندھی ہوئی تھیں۔
کہنے لگا: شاہ جی! پسند کرو۔
میں نے پاس کھڑی گدھی کی طرف اشارہ کر کے کہا:
یہ بھینس بڑی عمدہ نسل کی ہے۔
ہنس کر کہنے لگا:
شاہ جی! ایہہ مج نئی، کھوتی جے (یہ بھینس نہیں، گدھی ہے)۔
میں نے کہا:
بیلیا! اندروں مَج اے (یعنی ظاہری طور پر بھلے گدھی نظر آ رہی ہے لیکن باطن میں بھینس ہی ہے)۔
کہنے لگا یہ کیسے ہو سکتا ہے!

دعوت شیراز، تیری کیا بات ہے!
میں نے کہا:
اگر یہ نہیں ہو سکتا، تو پھر وہ بھی نہیں ہو سکتا جو تُو کہتا ہے۔
بھینس وہ جو اندر باہر سے بھینس ہو، اور نمازی وہ جو ظاہر باطن سے نمازی ہو۔

## دعوت شیراز، تیری کیا بات ہے!

بزرگ سنایا کرتے تھے کہ:
شیخ سعدی رحمۃ اللہ تعالی علیہ اپنے ایک دوست کے گھر گئے، اُس نے آپ کی ضیافت کے لیے انواع و اقسام کے کھانے بنائے۔
آپ جب دستر خوان پر بیٹھے تو کھانے دیکھ کر کہنے لگے:
دعوت شیراز، تیری کیا بات ہے!
دوست نے سوچا شاید مجھ سے خدمت میں کوئی کمی رہ گئی ہے جو میرا دوست، شیراز کی دعوت کو یاد کر رہا ہے۔

اس نے کھانوں کی تعداد مزید بڑھادی، لیکن آپ جتنے دن وہاں رہے ہر کھانے پر دعوت شیراز کو ہی یاد کرتے رہے۔
کچھ عرصے بعد وہ دوست شیخ کے گھر آیا تو اس کے ذہن میں دعوت شیراز گھومنے لگی..... لیکن کافی دن رہنے کے باوجود بھی جب کوئی پر تکلف دعوت میسر نہ آئی، تو اس نے شیخ سے پوچھا:
بندہ نواز! دعوت شیراز کب ہوگی؟
سعدی مسکرائے اور کہنے لگے:
عزیزِ مَن! جو آپ میرے غریب خانے میں روزانہ کھاتے ہیں یہی دعوتِ شیراز ہے۔
میں آپ کے ہاں گیا تو آپ نے میرے لیے پر تکلف کھانے بنائے، اگر میں مزید کچھ دن ٹھہرتا تو آپ اکتا جاتے، مجھے بوجھ سمجھنے لگتے۔
لیکن آپ میرے گھر آئے ہیں تو میں نے کوئی تکلف نہیں کیا، جو میسر آیا پیش کر دیا۔
آپ میرے پاس بھلے سال بھر ٹھہرے رہیں میں بالکل نہیں اکتاؤں گا، کیوں کہ آپ کو میں نے خود پر بوجھ نہیں بننے دیا۔
اور جس دعوت میں تکلف نہ ہو وہی دعوت، دعوتِ شیراز ہوتی ہے۔
سبحان اللہ! شیخ نے کیسی پیاری تعلیم دی۔
کسی کے گھر جائیں تو نہ خود تکلف کریں نہ انھیں تکلف میں مبتلا ہونے دیں۔
ان سے مانوس ہو جائیں، پیار محبت سے پیش آئیں اور دعاے خیر سے نوازیں۔
میں نے بہت دفعہ تجربہ کیا کہ جو مہمان گھر آکر، گھر کے فرد بن جاتے ہیں، وہ بہت اچھے لگتے ہیں؛ جی چاہتا ہے وہ کچھ دن اور ٹھہر جائیں۔
حضرت فضیل بن عیاض رحمہ اللہ فرماتے تھے:
تکلف کی وجہ سے لوگ ایک دوسرے سے جدا ہو گئے..... اگر درمیان سے تکلف نکل جائے تو ایک دوسرے سے بے دھڑک ملا کریں۔
(کیمیاے سعادت، رکن دوم معاملات، آداب طعام خوردن با دیگران، ص 232، م خیابان ناصر خسرو تہران)

## دعا

اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ فرماتا ہے:
جو مجھ سے دعا نہ کرے گا، میں اُس پر غضب فرماؤں گا۔
(احسن الوعاء لآداب الدعاء، مع شرح ذیل المدعاء لاحسن الوعاء، ص 53، ط مکتبۃ المدینہ کراچی)
اللہ پاک کے حضور ہر وقت دعا کرتے رہنا چاہیے، اُس جَلَّ جَلَالُہٗ کے سوا کوئی ذات نہیں جس سے دعا کی جا سکے۔

## اے سبز گنبد والے ! منظور دعا کرنا

اس مصرعے میں "دعا" کا لفظ استعمال کیا گیا ہے، جب کہ یہاں لفظِ "صدا" ہونا چاہیے تھا۔
دعا سے مراد وہ خاص پکار لی جاتی ہے جو ایک بندہ اپنے معبود جَلَّ جَلَالُہٗ کے حضور کرتا ہے۔
شیخ الفقہ، شیخ الحدیث قبلہ مفتی محمد اشرف القادری حنفی دام ظلہ کہتے ہیں:
اس مصرعے میں لفظِ دعا کا استعمال موہمِ شرک ہے (یعنی سننے والے کو اس سے شرک کا وہم ہوتا ہے)، اور موہم شرک کلمہ بولنا شرعاً گناہ ہے، مکروہ تحریمی ہے۔
اللہ کریم ہمیں ہر موہم شرک و کفر سے محفوظ رکھے۔

## مسکرایا کریں

حضرت عبداللہ بن حارث رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے تھے:
میں نے رسول پاک صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم سے زیادہ کسی کو مسکراتے ہوئے نہیں دیکھا۔ (جامع الترمذی، ر 3641)

1: آپ بھی مسکرایا کریں، مسکرانا آپ کے پیارے نبی صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کی سنت ہے
2: مسکرانے سے دُکھ دور ہوتے ہیں، سُکھ نصیب ہوتے ہیں
3: مسکرانے سے سامنے والے کا ہی نہیں، اپنا دل بھی خوش ہوتا ہے
4: اگر آپ خوشی کی حالت میں مسکراتے ہیں تو آپ کا شمار شکر گزار بندوں میں ہوتا ہے، اگر غمی کی حالت میں مسکراتے ہیں تو آپ کا شمار صبر کرنے والوں میں ہوتا ہے۔
تندرستی کی حالت میں مسکراتے ہیں تو صحت بہتر ہوتی ہے، بیماری کی حالت میں مسکراتے ہیں تو تندرستی نصیب ہوتی ہے۔
یعنی ہر حالت میں مسکرانا آپ کے لیے فائدے مند ہے۔
اس لیے مسکرائیں اور مسکراتے رہیں۔۔۔۔۔۔!
لیکن ایک بات یاد رکھیں کہ:
کسی کے سامنے مسکرانے سے پہلے موقع محل بھی دیکھ لیں، یہ نہ ہو کہ جہاں افسوس کا اظہار کرنا ہو وہاں مسکرانا شروع کر دیں۔
مثلاً: کسی کے گھر فوتگی ہو گئی ہو
تو مسکرا کر ان سے تعزیت نہ کریں، بلکہ دکھ کا اظہار کرتے ہوئے انھیں پُرسہ دیں۔
اِسی طرح بلاوجہ رونا بھی نہیں شروع کر دینا چاہیے۔
بلاوجہ کا رونا دھونا بعض دفعہ دوسروں کی "طنزیہ مسکراہٹ" کا سبب بن جاتا ہے۔

آج کل بے محل مسکرانے کی طرح، فضول رونا بھی ایک فیشن بنتا جارہا ہے۔

حافظ ابن جوزی رحمہ اللہ نے یحیٰ بن جعفر کے حوالے سے لکھا ہے کہ وہ کہتے تھے:

میرا ایک پڑوسی تھا جس کی داڑھی اتنی لمبی تھی کہ میں نے ایسی داڑھی کبھی کسی کی نہیں دیکھی۔

وہ رات دیر تک آہ وبُکا کرتا رہتا تھا۔

ایک رات اُس کے رونے سے میری آنکھ کھل گئی تو میں نے دیکھا وہ آہیں بھرتے ہوئے اپنا سر پیٹتا، سینہ کوبی کرتا اور بار بار ایک ہی آیت پڑھتا جاتا۔

میں نے اُس کی یہ حالت دیکھ کر کہا: ضرور اِس سے وہ آیت سننی چاہیے جس نے اِسے قتل کر دیا اور میری نیند اڑا دی!

جب میں نے غور سے سنا تو وہ پڑھ رہا تھا:

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ قُلْ هُوَ اَذًى ۔

تم سے حیض کے بارے میں پوچھتے ہیں، تم فرماؤ: وہ ناپاکی ہے۔

## روزے کی حالت میں موبائل

روزے کی حالت میں موبائل کا درست استعمال کریں، تاکہ روزے کی برکت اور نورانیت حاصل ہو سکے۔

[1]فیس بک پر صرف وہی پوسٹیں کریں اور دیکھیں جن کا دین یا دنیا میں نفع ہو

[2]یوٹیوب وغیرہ سے کسی قسم کی فلم اور ڈرامہ نہ دیکھیں

[3]ٹک ٹاک سے بے حیائی والی اور فضول ویڈیوز دیکھ کر اپنی آخرت خراب نہ کریں

[4]کسی غیر محرم سے بے جا چیٹنگ نہ کریں، نہ کال پر گپیں لگائیں۔

بس.....

[1]روزہ رکھتے ہی قرآن پاک، درود پاک، کلمہ طیبہ اور استغفار وغیرہ پڑھتے رہیں۔

[2]کم سوئیں اور زیادہ سے زیادہ نیکیاں کمائیں۔

روزے کی حالت میں کی گئی نیکی کا درجہ بہت بلند ہوتا ہے۔

[3]پانچوں نمازیں باجماعت پڑھیں اور پورے شوق سے بیس رکعت تراویح بھی ادا کریں

[4]گھر اور باہر، سب سے محبت اور اپنائیت کے ساتھ پیش آئیں، چڑچڑے پن سے خود کو دور رکھیں۔

## اتنا سونا ٹھیک نہیں ہے

اِن دنوں اپنا وقت سو کر نہ گزار دیں، اِسے قیمتی بنانے کی کوشش کریں۔

اتنا سونا ٹھیک نہیں ہے
وقت کا کھونا ٹھیک نہیں ہے

فجر سے پہلے اٹھیں، نماز پڑھیں، تلاوت کریں؛ اِس کے بعد پورے ذوق شوق سے کوئی علمی کتاب پڑھیں، اور اس کے مشمولات یاد کرنے کی کوشش کریں۔

اگر ویسے کتاب پاس نہ ہو تو پی ڈی ایف سے استفادہ کرلیں، یا فیس بک سے علماے اہل سنت کی تحریریں پڑھ لیں۔

رات کے کھانے کی طرح صبح کی بیداری بھی صحت کے لیے بہت مفید ہیں۔

فجر پڑھ کر، سورج نکلنے سے پہلے بالکل نہ سویا کریں۔

حضرت علی رضی اللہ عنہ کہتے ہیں:

رسول اللہ ﷺ نے سورج نکلنے سے پہلے، سونے سے منع فرمایا۔

(الترغیب والترھیب، کتاب البیوع وغیرھا، ب 2)

علماے کرام اِن دنوں میں سوشل میڈیا صارفین کی بھرپور علمی رہنمائی کریں، تاکہ اُن کا وقت قیمتی بن سکے۔

اِس کا طریقہ یہ ہے کہ:

جسے تفسیر قرآن سے شغف ہو، وہ تفسیر پر پوسٹیں کرے۔

جس کا رجحان حدیث پاک کی طرف ہو، وہ حدیث پاک پر کرے۔

جو دفاعِ صحابہ کی طرف مائل ہے، وہ اس پر پوسٹیں کرے۔

جس کا موضوع سیلف ہیلپ ہے وہ اس پر گفتگو کرے۔ جس کا میلان شعر و ادب کی طرف ہے وہ اسے موضوعِ سخن بنائے۔

میں اردو زبان و ادب کا ایک طالب علم ہونے کی حیثیت سے نیت کرتا ہوں کہ:

انشاءاللہ اردو تحریر کے متعلق کچھ نہ کچھ عرض کرتا رہوں گا، جس سے اِملا و اِنشا کی غلطیوں کی درستی کے ساتھ ساتھ تحریر میں بھی نکھار آئے گا۔

## طفیلی

پہلے زمانے میں بِن بلائے دعوتیں اڑانے والوں کو "طفیلی" کہا جاتا تھا۔

پرانی عربی کتابوں میں طفیلیوں کے بڑے عجیب و غریب قصے پائے جاتے ہیں۔

لیکن.....

زمانے کی آنکھ نے اتنے طفیلی کبھی نہیں دیکھے ہوں گے، جتنے آج فیس بک پر نظر آرہے ہیں۔

جدھر دیکھو، طفیلی ہی طفیلی۔

کوئی کسی کے ہاں ناشتہ کر رہا ہے، کوئی دوپہر کا کھانا کھا رہا ہے، تو کوئی شام کی دعوت پر پہنچ رہا ہے۔
انھیں دیکھ کر تو لگتا ہے، یہ طفیلی کم اور شیخ چلی زیادہ ہیں۔
اوہ تہانوں خدا سمجھائے کیہڑے پاسے ٹُر پئے او۔

## بھول جائیں

کہتے ہیں امام حسین کے دروازے پر، آپ کا ایک جاننے والا آیا، اور کہنے لگا:
مجھے کچھ رقم کی ضرورت ہے۔
آپ نے اسے تقریباً 600 سونے کے سکے دیے، اور کہا:
ابھی میرے پاس یہی ہیں، اگر زیادہ ہوتے تو زیادہ دیتا۔
مجھے افسوس ہے کہ تجھے آکر مانگنا پڑا، میں خود چل کر تیری مدد نہ کر سکا۔
اب ایک کام کرنا: "یہ بھول جانا کہ تُو نے مجھ سے سوال کیا ہے، اور میں بھی بھول جاؤں گا کہ میں نے تجھے کچھ دیا ہے۔"
کاش کے! مشکل کی اِس گھڑی میں امام حسین کے غلام بھی ایسے ہی کریں۔
اپنے جاننے والے ضرورت مندوں کو دل کھول کر دیں، اور دے کر.....ہمیشہ کے لیے بھول جائیں کہ کچھ دیا ہے۔

## میرا ایک تجربہ

فیس بک کی دنیا بڑی پیاری ہے، اِس میں بڑے بڑے پیارے لوگ ہیں۔
لیکن.....اِسی دنیا میں بعض ایسے لوگ بھی پائے جاتے ہیں جن کا مقصدِ وحید مسلمانوں کو خواہ مخواہ تکلیف دینا ہوتا ہے۔
اِن سے کسی کی عزت و حرمت محفوظ نہیں ہوتی، چاہے وہ کتنا ہی پارسا اور مخلص کیوں نہ ہو۔
اِن کی پوسٹیں زہریلے نشتر ہوتی ہیں، جو کسی وقت بھی، کسی بندۂ مومن کی اذیت کا سبب بن سکتی ہیں۔
ایسے لوگوں میں اَن پڑھ گنوار ہی نہیں ہوتے، پڑھے لکھے بھی شامل ہوتے ہیں۔
ایسے لوگ عموماً کسی محرومی یا کمزوری کا شکار ہوتے ہیں۔
چاہے وہ ذاتی ہو، خانگی ہو، معاشی ہو یا معاشرتی۔
ایسوں کے دو علاج ہیں:
1: اِن کی محرومی اور کمزوری کا اِدراک کر کے، اُسے احسن طریقے سے ختم کیا جائے اور پھر ان سے ہمیشہ حُسنِ سلوک کیا جائے۔

اگر ایسا نہ ہو سکے، تو.....

2: اِن کی زبان درازی اور دل آزاری پر خاموشی اختیار نہ کی جائے، بلکہ اِنھیں جوابِ آں غزل کے طور پر، کھری کھری سنائی جائیں؛ کیوں کہ ایسے لوگوں کو معاف کرنا اِنھیں مزید جَری بنا دیتا ہے، اور یہ نیک لوگوں پر لعن طعن کرنے میں بے باک ہو جاتے ہیں۔

بنو بکر کے سردار فَنْد زِمانِی نے کہا تھا۔

و بعض العلم عند الجهل للذلة اذعان

و فی الشر نجاة حين لا ينجيك احسان

(مفہوم: بعض دفعہ کسی کی جہالت، خاموشی سے برداشت کر لینا ذِلت کا سبب بن جاتا ہے۔ جب سامنے والا احسان اور نرمی سے ناجائز فائدہ اٹھائے، تو پھر اینٹ کا جواب پتھر سے دینا چاہیے۔)

## اونٹ باندھنا

سیدنا انس بن مالک کہتے ہیں:

قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ! أَعْقِلُهَا وَأَتَوَكَّلُ، أَوْ أُطْلِقُهَا وَأَتَوَكَّلُ۔ قَالَ: اعْقِلْهَا وَتَوَكَّلْ۔

ایک شخص نے عرض کی:

یا رسول اللہ ﷺ! کیا میں اونٹ باندھ کر اللہ پر بھروسہ کروں، یا (کُھلا) چھوڑ کر؟

آپ نے فرمایا: باندھ کر اللہ پر بھروسہ کرو۔

(جامع الترمذی، ر2517)

اگرچہ اس حدیث کو علمِ رجال کے امامِ اول، حافظ یحیی بن سعید القطان رحمہ اللہ نے مُنکَر قرار دیا ہے (ایضًا)

پھر بھی اس سے یہ معنی اخذ نہیں ہوتا کہ:

اونٹ کو جس رسی اور جس طریقے سے باندھ رہے ہو اس رسی اور طریقے کو ہی سب کچھ سمجھ لو۔

بلکہ اس میں فرمایا جا رہا ہے:

اونٹ باندھو ضرور، لیکن بھروسہ بہ ہر صورت اللہ پر ہی کرو۔

ہمارے ہاں تو اس حدیث کو پڑھ کر لوگ پتا نہیں کیا کیا معنے اخذ کر رہے ہیں۔

جمعہ معطل کر دو، جماعت موقوف کر دو۔

کیوں جی؟؟

حدیث میں جو آیا ہے: پہلے اونٹ باندھو!!

لاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم

جناب! حدیث میں صرف اونٹ باندھنے کا آیا ہے، اونٹ باندھ کر جیب میں ڈالنے کا نہیں آیا۔

اور نہ یہ آیا ہے کہ تمھارا ایمان اتنا کمزور ہونا چاہیے کہ اونٹ باندھ کر بھی ڈرتے ہی رہو۔

اونٹ باندھ دیا، بات ختم!

اب..... اپنے دل کو کامل طور پر اپنے پیدا کرنے والے کی طرف کرلیں، اُسی سے خیر کی امید رکھیں، وہ آپ کی بھی حفاظت فرمائے گا اور اونٹ کی بھی۔

## انھیں بھی یاد رکھیے!

آزمائش کے اِن دنوں میں میلے کچیلے کپڑوں والے دیہاڑی داروں پر بھرپور توجہ دیں، لیکن ..... صاف ستھرے کپڑوں میں نماز پڑھانے والے ائمہ کرام کا بھی خیال رکھیں۔

یہ سفید پوش لوگ اپنا حال ظاہر نہیں کرتے، بس..... پانچ وقت مسجد میں ہمارے رب جَلَّ جَلَالُہٗ کا نام بلند کرتے ہیں، ہمارے نبی صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کی سنت زندہ رکھتے ہیں۔

کیا ہی اچھا ہو کہ ہم چُپکے سے کچھ رقم ایک لفافے میں ڈالیں اور اپنی اپنی مسجد کے امام صاحب سے عرض کریں:

حضرت! یہ تحفہ قبول فرمالیجیے۔

ہوسکتا ہے ہمارا یہ مخلصانہ عمل، ہماری پڑھی ہوئی نمازوں کی قبولیت کا سبب بن جائے۔

## اپنا یقین مضبوط کریں

بندہ بیمار ہوجائے تو دوائی ضرور لے، کیوں کہ یہ جسم اِس کے پاس اللہ کریم کی امانت ہے، اور اپنے معبود کی امانت کو اچھی طرح سنبھال کے رکھنا، بندے کی ذمے داری ہے۔

لیکن..... یقین، دوائی پر نہیں، اللہ پاک پر رکھے کہ وہ شفا دے گا۔

یہ حقیقت ہے کہ:

"دوائیاں شفا نہیں دے سکتیں، جب تک اللہ نہ چاہے۔"

اگر دوائیاں ہی شفا دینے والی ہوتیں تو دنیا کی اچھی اچھی دوائیاں کھانے والے کبھی بیمار نہ رہتے۔

اللہ کے پیارے خلیل، سیدنا ابراہیم علیہ السلام کہتے تھے:

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ

اور جب میں بیمار ہوتا ہوں تو وہی (اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ) مجھے شفا دیتا ہے۔

اللہ کے پیارے نبی حضرت موسیٰ علیہ السلام نے پوچھا تھا:

اے پروردگار! یہ بیماری اور دوائی کیا ہے؟

اللہ کریم نے فرمایا: یہ دونوں میری طرف سے ہیں۔

کہنے لگے: پھر طبیب (ڈاکٹر) کیا کرتے ہیں؟

فرمایا: وہ اپنا رزق کھاتے ہیں، اور میرے بندوں کا دل خوش کرتے ہیں؛ یہاں تک کہ میری شِفا یا قضا آپہنچتی ہے۔

(احیاء علوم الدین، ربع المنجیات، کتاب التوحید والتوکل، ص 1733، ط دار الکتاب العربی بیروت، س 1429ھ)

سبحان اللہ! کتنی پیاری بات ارشاد فرمائی کہ:

ڈاکٹر دوائی دے کر اپنا معاوضہ وصول کر لیتے ہیں، جو ان کا ذریعہ معاش ہے؛ اور ساتھ شفا کی امید دلا کر بندوں کا دل بھی خوش کر دیتے ہیں،

لیکن..... حقیقتاً شفا دوائی میں نہیں ہوتی۔

اللہ پاک چاہتا ہے تو شفا مل جاتی ہے، نہیں چاہتا تو نہیں ملتی۔

کرونا وائرس کے لیے احتیاطی تدبیریں کریں، لیکن اپنا ایمان ان تدبیروں کو نہ بنالیں؛ ایمان یہی رکھیں کہ اللہ پاک چاہے گا تو میری حفاظت ہوگی۔

جب آپ کا یہ کامل یقین ہو گیا، تو پھر آپ کے دل سے انجانا خوف نکل جائے گا، ساری وحشت دور ہو جائے گی۔

آپ اپنے سامنے مریض دیکھ کر، یا خبریں سن کر، خود مرنے والے نہیں ہو جائیں گے.....

## کچھ نہیں ہوگا، انشاء اللہ

ہمارے علاقے کے ایک شخص میں کرونا وائرس کی تشخیص ہوئی، اسے کہا گیا:

ان سب لوگوں کے نام بتاؤ جن سے تم نے ان دنوں ملاقات کی ہے۔

اس نے سب کے نام بتائے، ان سب کو ہاسپٹل بلایا گیا اور ٹیسٹ لیے گئے، لیکن..... ان کے ٹیسٹ کلیئر آئے، اور انھیں گھر بھیج دیا گیا۔

زیادہ نہیں، تھوڑا سا ہی سوچ لیں کہ:

اگر کرونا کے مریض کو ٹچ کرنے کی وجہ سے ہی بندہ مریض بن جاتا ہے، تو اسے ٹچ کرنے والے یہ لوگ مریض کیوں نہیں بنے؟؟

یہ الفاظ پھر پڑھیں:

اگر کرونا کے مریض کو ٹچ کرنے کی وجہ سے ہی بندہ مریض بن جاتا ہے، تو اسے ٹچ کرنے والے یہ لوگ مریض کیوں نہیں بنے؟؟

صرف یہی نہیں، ایسے کئی ہزار افراد ہوں گے جنھوں نے لاعلمی میں کرونا زدگان سے ملاقاتیں کیں، ان کے ساتھ کھایا پیا، اٹھے بیٹھے؛ لیکن انھیں کچھ نہیں ہوا۔

آخر کیوں؟؟ اس سوال پر ٹھنڈے دل سے غور کریں!!

سمجھ دار اس سوال پر غور کریں گے اور دل سے خوف و وحشت نکال کر پر سکون ہو جائیں گے۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بے سمجھ، خواہ مخواہ یہ مطلب نکالیں گے کہ میرے کہنے کا مقصد یہ ہے: "احتیاط نہ کریں۔"

آپ کو پیشگی بتادوں کہ میرے کہنے کا یہ مقصد ہرگز نہیں!

آپ ڈاکٹروں کی ہدایات کے مطابق پرہیز اور احتیاط ضرور کریں، بس..... "اپنا عقیدہ اور دماغ خراب نہ ہونے دیں۔"

کرونا سمیت کوئی بھی بیماری حکمِ الٰہی کے بغیر نہیں لگ سکتی۔

کرونا سے جو لوگ متاثر نہیں ہوئے، اللہ کے حکم سے نہیں ہوئے؛ اور جو متاثر ہوئے ہیں، اللہ کے امر سے ہوئے ہیں۔

اور متاثرین میں بھی فوت ہونے والوں سے کئی گنا زیادہ تعداد ان لوگوں کی ہے جو شفایاب ہو گئے ہیں۔ الحمدللہ

اللہ کریم مرنے والے مسلمانوں کی مغفرت فرمائے اور بیماروں کو شفا دے۔

جو اس مرض میں مبتلا نہیں ہوئے، انھیں محفوظ رکھے؛ اور جو ذہنی طور پر اس مرض میں مبتلا ہو چکے ہیں ان کا تقدیر پر ایمان مضبوط کرے۔ اللہ کے پیارے رسول ﷺ سچ فرما گئے:

جو چیز (تکلیف، مصیبت وغیرہ) تمھارے پاس آنے والی ہے وہ ٹل نہیں سکتی، اور جو نہیں آنے والی، وہ آ نہیں سکتی۔

(سنن ابن ماجہ، ر77)

پریشان ہونا چھوڑ دیں، خوش خوش رہیں اور دوسروں کو خوشیاں دیں۔

اللہ کریم آپ کو ہمیشہ ہنستا مسکراتا رکھے۔ مناسب سمجھیں تو ایک دفعہ مسکرا کے درود پاک پڑھ لیں!!

اچھا، مسکرانا اس طرح نہیں کہ آپ کی مسکراہٹ بھی مرجھائی مرجھائی لگے۔

یوں مسکرائیں جیسے صبح کے وقت پھول کھلتے ہیں۔

## اللہ ہمارا مددگار ہے

اپنے گھر پر رہیے، صفائی ستھرائی کا خیال رکھیے، ماسک استعمال کیجیے؛ ہاتھ دھوتے رہیے، مصافحہ کرنے کے بجائے

زبان سے سلام کر لیجیے ، سنتیں اور نوافل گھر پر پڑھیے ؛ مسجد میں صرف جماعت کی ادائیگی کے لیے جائیے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔جو بھی علمائے کرام اور ڈاکٹر حضرات کہتے ہیں کریئے !

لیکن.....

اپنے رب پر کامل یقین رکھیے، خود کو بالکل خوف میں مبتلا نہ ہونے دیجیے۔

اللہ کے حکم کے بغیر آپ کو کچھ بھی نہیں ہو گا۔

خوف اور وہم آپ کو مصیبت سے چھٹکارا تو نہیں دلا سکیں گے ، البتہ مرنے سے پہلے آدھا مار دیں گے۔

اگر آپ کو کوئی شخص احتیاط کے نام پر خوف زدہ کرنے کی کوشش کرے ، جھوٹی سچی خبریں سنائے ..... یا منسوخ و مؤول روایات پیش کر کے ، آپ کا توکل کمزور کرے ؛ تو صدقِ دل سے یہ آیت پڑھ لیں جو اللہ کریم نے اپنے حبیب ﷺ کو پڑھنے کے لیے کہا تھا:

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

(اے حبیب!) تم فرماؤ: ہمیں وہی (دکھ، سکھ) پہنچے گا جو اللہ نے ہمارے لیے لکھ دیا ہے۔ وہ ہمارا مولا ہے، اور ایمان والوں کو اللہ پر ہی بھروسہ کرنا چاہیے۔

## غم بُھول جائیں !

کل میں نے دیکھا اٹلی کے باشندے مختلف قسم کے اشعار گُنگا کر اپنا غم بھلانا چاہ رہے تھے، جو شاید.....بہت دیر تک نہ بھلا سکیں گے۔ لیکن ہم مسلمان اللہ و رسول کو یاد کر کے اپنا غم بھلائیں گے ، اور انشاء اللہ بہت جلد بھول جائیں گے۔

اُن کے نثار کوئی کیسے ہی رَنج میں ہو
جب یاد آگئے ہیں ، سب غم بُھلا دِیے ہیں

اپنے پیارے نبی ﷺ کا ایک فرمان پڑھیے اور اسے یاد کر لیجیے !

جان سے پیارے رسول ﷺ فرماتے ہیں:

اگر اللہ تعالیٰ آسمان و زمین والوں کو عذاب دینا چاہے تو دے سکتا ہے، یہ اس کی طرف سے زیادتی نہیں۔

اگر وہ اِن پر رحم کرنا چاہے تو اُس کی رحمت اِن کے اعمال سے بہتر ہے۔

اگر تم اُحد پہاڑ جتنا سونا یا مال اللہ پاک کی راہ میں خرچ کر دو تو وہ اُس وقت تک قبول نہیں ہو گا، جب تک تم تقدیر پہ مکمل طور پر ایمان نہ لے آؤ۔

تمھیں معلوم ہونا چاہیے کہ جو چیز (تکلیف، مصیبت وغیرہ) تمھارے پاس آنے والی ہے، وہ ٹل نہیں سکتی؛ اور جو نہیں آنے والی، وہ آنہیں سکتی۔

اگر تم اِس کے خلاف عقیدہ رکھتے ہوئے مرے تو جہنم میں جاؤ گے۔

(سنن ابن ماجہ، ر77، صحیح)

کروناوائرس نے آنا تھا، آگیا؛ جب تک اللہ چاہے گا یہ رہے گا، اور جب اللہ کا حکم ہوگا چلا جائے گا۔

اس بیماری میں جس جس کی موت لکھی جاچکی ہے، وہ ٹل نہیں سکتی؛ اور جس کی نہیں لکھی گئی، اسے آنہیں سکتی۔

سارے وہم اور خوف دل سے نکال دیں، اور تقدیرِ الٰہی پر اپنا ایمان مضبوط کریں۔ اگر پیارے پروردگار جَلَّ جَلَالُہٗ کی مرضی یہی ہے کہ ہم اِسی مرض سے شہید ہوں، تو صد مرحبا!! اور اگر وہ مالک ہمیں مزید سانسیں دینا چاہتا ہے تو بھی اُس کی رضا۔

بس ہم ایک دعا کرتے ہیں کہ: اے ہمارے پیارے پروردگار ہمیں اپنے سے جدا نہ کرنا!!

## پریشان ہونا چھوڑ دیں!

ہمارے بعض مسلمان بھائی کہہ رہے ہیں:

"ہم کافروں کی طرح تو کرونا سے نہیں ڈرتے، لیکن یہ بات ہمیں بھی پریشان کرتی ہے کہ:

کرونا کے بعض مریضوں کا نہ لوگوں کو جنازہ پڑھنے دیا جاتا ہے، نہ انھیں ورثا کے حوالے کیا جاتا ہے؛ پتا نہیں انھیں قبر بھی نصیب ہوتی ہے یا نہیں۔" ایسا سوچ سوچ کر پریشان ہونے والے پیاروں سے گزارش ہے کہ یہ بات اچھی طرح ذہن نشین کرلیں:

"وبا میں فوت ہوجانے والا ہر مسلمان شہید ہوتا ہے۔"

رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم فرماتے تھے:

طاعون کی بیماری ہر مسلمان کے لیے شہادت ہے۔ (صحیح البخاری، ر5732)

امام بدرالدین عینی رحمہ اللہ اس حدیث کی شرح میں کہتے ہیں:

طاعون سے مرنے والے شخص سے مراد وہ ہے جو کسی وبا کی وجہ سے فوت ہوا۔

(کیا کروناوائرس سے مرنے والا مسلمان شہید ہے؟، از: مفتی عبید المصطفی، ص2)

رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم مزید فرماتے ہیں:

طاعون میری امت کے لیے شہادت اور رحمت ہے، جب کہ کافروں کے لیے عذاب ہے۔ (مسند احمد، ر7792)

کروناوائرس کافروں کے لیے تو یقینی عذاب ہے، لیکن مومنوں کے لیے ایک طرح سے رحمت ہے۔

اس لیے اس سے گھبرانا اور ڈرنا مومن کو زیب نہیں دیتا۔

مومن اگر اس میں انتقال کرجائے گا تو اللہ پاک اسے شہادت کے رتبے سے نواز دے گا، اس کے سارے گناہ معاف

ہوجائیں گے.....اور داخل جنت کردیا جائے گا۔

اگر شہید کا جنازہ کوئی بھی نہ پڑھے تو کیا، فرشتے تو اس کے لیے رحمت کی دعا کرتے ہیں.....!!

اور سب سے بڑھ کر یہ کہ:

رب تعالی اسے اپنی آغوشِ رحمت میں لے لیتا ہے۔

بعض روایات میں یہ بھی آتا ہے کہ جو مسلمان پردیس میں، اپنے والدین اور بال بچوں سے دور فوت ہوتا ہے، اللہ کریم وقتِ نزع فرشتوں کو اس کے بال بچوں اور پیاروں کی صورت میں اس کے سامنے کردیتا ہے، جنھیں دیکھ کر وہ سکون حاصل کرتا ہے اور اس کی روح پرواز کرجاتی ہے۔

اللہ اللہ، میرے نبی کا امتی جہاں بھی ہو، جیسا بھی ہو، وہ اکیلا نہیں ہوتا؛ اس کے رب کی رحمت اور محبت اس کے ساتھ ہوتی ہے۔ ؎

نہ ہو مایوس ، آتی ہے صَدا گورِ غریباں سے
نبی اُمّت کا حامی ہے ، خُدا بندوں کا والی ہے

## وائرس کا خوف

تاتاریوں نے بغداد پر حملہ کرنے سے پہلے ایسا خوف طاری کیا تھا کہ لاکھوں لوگ بغیر اف کیے، گاجر مولی کی طرح کٹ گئے۔

کہا جاتا ہے کہ اگر ایک تاتاری سو آدمیوں کے سر، پتھر پر رکھ کر کہتا:

یہاں سے ہلنے کی کوشش نہ کرنا، میں اپنا کام نمٹا کے تمھیں قتل کرتا ہوں؛ تو وہ سارے اس کے آنے تک اپنے سر جھکائے رکھتے، اور وہ آکر ذبح کردیتا۔ (واللہ اعلم)

خوف اور وہم دو ایسی چیزیں ہیں جو اچھے بھلے انسان کو مفلوج کرکے رکھ دیتی ہیں، اس کی طاقت سَلب ہوجاتی ہے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ حواس تک کام کرنا چھوڑ جاتے ہیں۔

[1]کرونا وائرس وبا کی صورت میں ظاہر ہوا، یہی مشیت الٰہی تھی۔

جب تک اللہ چاہے گا یہ رہے گا، اور جب اللہ پاک کا حکم ہوگا یہ ختم ہوجائے گا۔

ہم اللہ کریم سے عافیت کا سوال کرتے ہیں!!

ہمیں اس کا ایسا خوف اپنے اوپر مسلط نہیں کرلینا چاہیے کہ اگر اس کا گزر بھی ہمارے قریب سے ہو تو ہم دہشت سے ہلاک ہوجائیں۔

اور نہ ہی اس کے آگے سر جھکا دینا چاہیے کہ جب چاہے ہلاک کردے۔

بیماری ہو یا دشمن، اس کے ساتھ آخری حد تک لڑتے رہیں؛ پھر..... نجات یا شہادت!!

[2]اٹلی وغیرہ ممالک، جہاں وائرس نے شدت سے حملہ کیا ہے، وہاں کی تصویریں اور مریضوں کی تعداد بار بار شئیر کرنا کوئی عقل مندی نہیں؛ یہ چیزیں خوف پھیلانے کا سبب بنتی ہیں۔ دیکھیے، ہمارے پیارے نبی ﷺ نے ہماری کس طرح نفسیاتی تربیت فرمائی ہے۔

آپ فرماتے تھے:

اگر کوئی مکروہ (ناپسندیدہ، ڈراؤنا) خواب دیکھو تو اسے کسی کے سامنے بیان نہ کرو، (ایسا کرو گے تو) وہ خواب تمھیں کوئی نقصان نہیں پہنچا سکے گا۔

(انظر: سنن الترمذی، ر2277، قال الترمذی: ھذا حدیث حسن صحیح۔)

جب ڈراؤنے خواب بھی کسی کے سامنے بیان کرنے کی اجازت نہیں، تو دہشت زدہ کرنے والی خبریں بیان کرنا کب درست ہو گا!!

لوگوں کو خوش خبریاں سنانی چاہییں تاکہ وہ سکون کی زندگی جی سکیں اور کچھ کر سکیں، انھیں ڈرا ڈرا کے ہلاکت کے دہانے نہیں پہنچا دینا چاہیے۔

ہمارا مہربان رب جل جلالہ، ہماری غلطیاں معاف فرمائے، رحمۃ للعالمین ﷺ کے صدقے ہم پر رحم فرمائے۔

## اذان

اٹلی کے مسلمانوں نے اپنے گھروں میں اذان دینا شروع کر دی ہے، جو کہ بہت اچھی بات ہے؛ انشاء اللہ تعالیٰ انھیں نفع ہو گا۔

نبی پاک ﷺ کا فرمان ہے:

اذان، غم اور پریشانیاں دور کر دیتی ہے۔

[1]مصیبت کے وقت اذان بہت مفید ہے۔

اذان، مصیبت آنے سے پہلے بھی اور بعد میں بھی نفع دیتی ہے۔

[2]گھر میں پڑی جانے والی اذان کا کوئی بھی وقت مخصوص نہیں، آپ چوبیس گھنٹوں میں جب چاہیں، جتنی بار چاہیں، پڑھ سکتے ہیں۔

[3]بچے، بوڑھے، گھر کے سب افراد، گھر میں اذان دے سکتے ہیں۔

اللہ پاک ہمیں عافیت عطا فرمائے، ہمارا توکل مضبوط کرے، ہماری دعاؤں اور تدبیروں میں اثر پیدا فرمائے۔

## ضعیف الاعتقادی

ایک انتہائی مکرم عالم صاحب نے لکھا:

" پرسوں ایک جاننے والے میرے پاس آئے بہت پریشان تھے کہنے لگے کل رات سے زکام بخار سر درد ہے پریشان ہوں کہ کہیں کرونا تو نہیں ہو گیا.... آپ دم کر دیں۔

میں نے اسے کہا آپ بیٹھیں میں گھر سے ہو کر آتا ہوں... چونکہ میں نے ان سے ہاتھ ملایا تھا اس لیے فوراً گھر واپس آکر صابن سے خوب ہاتھ دھوئے پھر ان بھائی کے پاس گیا اور سمجھایا۔۔۔۔۔۔۔۔۔"

توبہ توبہ، ضعیف الاعتقادی اور توہم پرستی کی انتہا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

ایک مسلمان جسے مرض نہیں، مرض کا وہم ہے؛ اسے بھی اچھوت سمجھ کر ہاتھ دھونے شروع کر دیے۔

ایسا کوئی مغرب زدہ کرے تو دکھ نہیں ہوتا، لیکن کسی عالم کا یوں کرنا انتہائی قابل افسوس ہے۔

اللہ پاک ایسے علما کو ہدایت دے اور انھیں یہ بات سمجھنے کی توفیق عطا فرمائے کہ مؤول و منسوخ روایات اور توہمات پر عقائد و اعمال کی بنیاد نہیں رکھی جاتی۔ الحمد للہ میرے پاس کرونا کا دم کروانے جتنے بھی مریض آئے ہیں میں انھیں پرتپاک طریقے سے ملا ہوں، مصافحہ و معانقہ بھی کیا ہے اور دم بھی۔ کیوں کہ میرا اپنے پیارے نبی کے اس فرمان پر ایمان ہے:

"بیماری ایک سے، دوسرے کو نہیں لگتی"

(صحیح البخاری و دیگر کتب متون)

اللہ کریم ہمارے حال پر رحم فرمائے، اور ہمارے یقین و ایمان کو دوام عطا کرے۔

## مسجدیں بند

اللہ کے پیارے حبیب ﷺ کا فرمان ہے:

جب اللہ تعالی کسی قوم کو مصیبت میں مبتلا کرنے کا ارادہ کرتا ہے، تو مساجد (آباد کرنے) والوں کو دیکھ کر اُن سے درگزر فرما دیتا ہے۔

(جامع الاحادیث، الجامع الصغیر وزوائدہ والجامع الکبیر، للسیوطی رحمہ اللہ، ج 1، ص 157، ر 963، ط دار الفکر بیروت)

کُرونا کی صورت میں آنے والی مصیبت کے وقت، مسجدیں آباد کرنی چاہیے تھیں، تاکہ مصیبت سے بچے رہتے؛ لیکن.....یہاں تو مسجد نبوی شریف سمیت، دنیا بھر کی کئی مسجدیں بند کر دی گئی ہیں۔

اور جو باقی بچی ہیں، غلط سلط فتوے دے کر انھیں بھی بند کرنے کی راہ ہموار کی جا رہی ہے۔

اس پر طُرفہ یہ کہ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اگر کوئی عالم ربانی مسجدیں بے آباد کرنے سے منع کر رہا ہے تو اس کے خلاف محاذ آرائی ہو رہی ہے۔ معاذ اللہ ثم معاذ اللہ

یااللہ ہمارے حال پر رحم فرما، ہم کس بزدل اور ڈرپوک قوم میں رہ رہے ہیں!!

## خوف

ایک مجرم کے دل میں یہ خوف بٹھادیا گیا کہ اگر کوبرا سانپ کاٹ لے تو بندہ زندہ نہیں رہ سکتا۔
پھر اسے کوبرا سانپ دکھاکر، آنکھوں پر پٹی باندھ دی، اور کہا: تھوڑی دیر بعد تجھے یہ سانپ ڈسے گا جس سے تُو مرجائے گا۔
اب مجرم نے یہ ذہن بنالیا کہ جیسے ہی سانپ نے مجھے ڈسنا ہے، میری موت واقع ہوجانی ہے۔
کچھ دیر بعد اس کے بدن پر سوئی چبھوئی گئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، وہ زور سے چِلّایا اور دم توڑ گیا۔
ہمارے ہمسائے کا اتنا سخت ایکسیڈنٹ ہوا تھا کہ آنتیں تک باہر نکل آئی تھیں۔[2]
وہ تقریباً سوا دو ماہ تک قومے کی حالت میں بھی رہا، لیکن آج میں نے اسے ٹھیک ٹھاک گاڑی چلاتے دیکھا ہے۔
تجربہ یہ کہتا ہے کہ سوئی چُبھنے سے موت واقع نہیں ہوتی، ایکسیڈنٹ سے ہوجاتی ہے۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ایسا نہیں ہوا۔
اس کا ظاہری سبب یہ ہے کہ جس شخص نے اپنے اوپر سانپ کا خوف مسلط کرلیا وہ ڈنک کے بغیر ہی ہلاک ہوگیا، اور جو خوف میں مبتلا نہیں ہوا وہ ایکسیڈنٹ کے باوجود بھی بچ گیا۔
کرونا وائرس ایک مرض ہی سہی، لیکن
اس کا خوف اپنے اوپر مسلط نہ کریں، یہ باعثِ ہلاکت ہے۔
ایسے کئی مرض آئے، اور چلے گئے؛ یہ بھی انشاءاللہ بہت جلد چلا جائے گا۔ اللہ کریم ہمیں عافیت عطا فرمائے!

## مودبانہ گزارش

ہمارے علمائے کرام جب مسلمانوں کے عقائد کی اصلاح کرتے ہیں تو بعض لوگ کہتے ہیں:
اس وقت امت مسلمہ جن مسائل کا شکار ہے ان کا حل کیوں نہیں نکالتے، آئے روز یہ پرانی باتیں چھیڑے رکھتے ہیں۔
ایسے "ارباب دانش" سے مودبانہ گزارش ہے:
آپ نے از خود آج تک امت مسلمہ کے کتنے مسائل کا حل نکالا ہے؟
کیا آپ کو نکموں کی طرح صرف تنقید کرنا ہی آتا ہے، یا کچھ کام بھی کرلیتے ہیں؟
عام طور پر ایسے لوگ پست سوچ کے مالک ہوتے ہیں، جو نہ خود کچھ کرتے ہیں نہ کسی کو کرنے دیتے ہیں۔
ان کے نزدیک صرف وہی درست ہوتا ہے جسے وہ خود درست سمجھتے ہیں۔
اگر کوئی بندہ حلوائی کے پاس جاکر کہے:

تُو برفی بنا رہا ہے، تجھے امت مسلمہ کے مسائل کی کوئی فکر نہیں۔
تو وہ کڑچھ اس کے سر پہ مار کر کہے گا:
او بے وقوف! میں تو برفی بنا رہا ہوں جس سے لوگ نفع حاصل کریں گے، لیکن تُو بتا، تُو کیا کر رہا ہے؟
تجھے اس وقت امت مسلمہ کے بارے میں فکر کرنی چاہیے تھی، تو میری دکان پہ آدھمکا ہے!!
پیارے!
ہر کام کی اپنی افادیت ہے، ایسا نہیں کہ جو کام ہماری پسند کا ہو یا جو ہماری سمجھ میں آئے وہی درست ہے، باقی سب غلط۔
تبلیغ کرنے والے بھی اہم کام کر رہے ہیں، عقائد کی اصلاح کرنے والے بھی ضروری کام میں مشغول ہیں، مسلمانوں کے ملکی اور مِلّی مسائل کے متعلق سوچنے والے بھی کارِ خیر انجام دے رہے ہیں۔
ہر عالمِ دین نے اپنی فہم کے مطابق کوئی نہ کوئی کام سنبھال رکھا ہے، جو دین کی ترقی اور رونق کا سبب ہے؛ براہِ کرم آپ بھی کچھ کریں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!
نہیں کر سکتے تو کرنے والوں کے مخالفت نہ کریں۔

## بندۂ مومن تیری کیا شان ہے!

رسول کریم صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

مَنْ غَسَّلَ مَيِّتًا فَكَتَمَ عَلَيْهِ، غُفِرَ لَهُ أَرْبَعِينَ كَبِيرَةً۔

جس نے میت کو غسل دیا اور اس کی پردہ پوشی کی، اللہ پاک اس کے چالیس کبیرہ گناہ معاف کر دے گا۔
(المعجم الکبیر، الترغیب والترھیب وغیرہ۔ حدیثِ حسن)
اللہ اللہ، بندۂ مومن تیری کیا شان ہے!
تیرے مردہ جسم کے عیب ظاہر کرنے کو بھی تیرا رب پسند نہیں فرماتا۔
صرف یہی نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، بلکہ:
نہلاتے وقت، تیرے عیب چھپانے والے سے بھی اتنا راضی ہوتا ہے، کہ اس کے "کبیرہ گناہ" معاف کر دیتا ہے!!

## اپنا مکان نہیں تھا

ایک حافظ صاحب میرے ساتھ پڑھتے رہے ہیں، انھیں رشتے دار اس لیے رشتہ نہیں دیتے تھے کہ ان کا اپنا مکان نہیں تھا۔
ایک اللہ کی بندی نے انھیں بیٹی کا رشتہ دے دیا تو اُسے اس کی ہمشیرہ کہنے لگی:
تو نے اس میں کیا دیکھا ہے؟

فلاں لڑکا خوب صورت بھی ہے، اس کا اپنا مکان بھی ہے، تُو نے اسے رشتہ دینا تھا، اسے کیوں دیا۔

انھوں نے جواب دیا:

مجھے پتا ہے اس کا مکان نہیں، لیکن میں نے یہ دیکھا ہے کہ:

بیٹا حافظ قرآن ہے، نمازی ہے، نیک ہے۔

اللہ نے چاہا تو مکان بھی بن جائے گا۔

اللہ اللہ کر کے ان کی شادی ہوئی، اور میاں بیوی مدینہ پاک چلے گئے۔

وہاں سے واپس آکر انھوں نے مکان بھی بنالیا اور فیکٹری بھی۔

اللہ کریم نے انھیں اولاد سے بھی نوازا ہے اور ان کی بیوی اپنی دوسری بہنوں کی بہ نسبت زیادہ سکون میں ہے۔

1: آج کل بعض لوگ لڑکیاں بیاہتے نہیں، بیچتے ہیں۔

لاکھوں کے زیوارات، نقدی، مکان، جائیداد اور خرچے وغیرہ کا مطالبہ رکھ کر رشتہ دیتے ہیں۔

ایسا کرنے والے بیٹی کے خیر خواہ نہیں ہوتے، اس کے لیے گڑھا کھود رہے ہوتے ہیں جس سے وہ زندگی بھر نہ نکل سکے۔

2: بیٹی کا نکاح کرنے سے پہلے مال و دولت کی فراوانی نہیں دیکھنی چاہیے، بلکہ یہ دیکھنا چاہیے کہ:

[1]لڑکا محبت کرنے والا ہے، اسے شادی کے لیے مجبور نہیں کیا گیا۔

[2]نیک نیت ہے، اور نیک عادات و اطوار کا مالک ہے؛ اس کا اٹھنا بیٹھنا اچھے لوگوں کے ساتھ ہے۔

[3]کماتا ہے، نکھٹو نہیں ہے۔

کما پُوت، غریب بھی ہو تو ایک دن امیر بن جاتا ہے، لیکن نکھٹو دولت سے بھرے ہوئے مکان بھی اُجاڑ دیتا ہے۔

3: لڑکی کو سسرال والوں سے کوئی لالچ نہیں ہونا چاہیے، نہ ان سے کوئی مطالبہ کرنا چاہیے۔

اعلیٰ قسم کے ملبوسات، عمدہ قسم کے میک اپ، اور زیوارات وغیرہ پر نظر رکھنے کے بجائے، محبت کرنے والے شوہر کو دیکھنا چاہیے؛ بھلا اس سے اچھا لباس اور زیور کیا ہو سکتا ہے!!

4: برکت والا وہ نکاح ہوتا ہے جس میں اخراجات کم ہوں۔

اور اخراجات کم اسی صورت میں ہو سکتے ہیں جب بیوی بھی تعاون کرے۔

سعادت مند بیوی کو ضرور تعاون کرنا چاہیے اور اپنی شادی کو باعث برکت بنانا چاہیے۔

## نکاح کے متعلق رہنمائی

ایک دوست نکاح کا ارادہ رکھتے تھے، مجھے کہنے لگے:

مختلف علما سے نکاح کے متعلق رہنمائی لے چکا ہوں، میری خواہش ہے آپ بھی دو چار قابلِ عمل نصیحتیں کر دیں۔

میں نے عرض کی:

1: نکاح پر جتنا خرچہ آئے، آپ نے خود کرنا ہے۔

2: بیوی کے ملبوسات، میک اپ کا سامان، زیور اور فرنیچر وغیرہ کا سارا انتظام آپ کے ذمے داری ہے، سسرال والوں پر اس سلسلے میں کوئی بوجھ نہیں ڈالنا۔

اگر وہ اپنی بیٹی کو کچھ دینے کے لیے اصرار کریں تو انھیں کہنا ہے:

" مجھے بتائے بغیر، اپنی بیٹی کو نقدی کی صورت میں جو چاہے دے دیں؛ اور وہ بینک میں جمع کروا دے، تاکہ بہ وقت ضرورت اس کے کام آسکے۔"

3: جو بارات لے کر جانی ہے اس میں صرف پندرہ بیس لوگ ہونے چاہییں۔

اگر زیادہ ہوں تو اُن کے کھانے کے اخراجات بھی سسرال والوں کو آپ نے ادا کرنے ہیں، اور اس کی کسی کو خبر نہیں ہونے دینی۔

4: بیوی کو زندگی بھر نہیں جتلانا کہ میں نے شادی کا سارا خرچہ خود کیا تھا۔

اگر خدانخواستہ آپ کے درمیان جدائی بھی ہو جائے پھر بھی یہ بات زبان پر کیا، دل میں بھی نہیں لانی۔

جو مرد بیوی پر کیے گئے اخراجات گِنتے اور جتلاتے رہتے ہیں، وہ کم ظرف ہوتے ہیں۔

ساجد لکھنوی نے کہا تھا۔

طلاق دے تو رہے ہو عِتاب و قہر کے ساتھ
مِرا شَباب بھی لوٹا دو میرے مَہر کے ساتھ
میں اِس لیے یہاں آئی ہوں ، تُم جو رہتے ہو
مجھے ہے اِتنا تَعَلُّق تمھارے شہر کے ساتھ

## کال یا میسج کا جواب

ایک دوست مجھے کال کرتے رہے جو کسی مجبوری کی وجہ سے رسیو نہ کر سکا۔

جب فارغ ہو کر انھیں بیک کال کی تو کہنے لگے:

" میں نے آج تہجد کے وقت دعا مانگی ہے کہ مجھے آپ سے زندگی میں کوئی کام نہ پڑے، آپ تو فون ہی نہیں سنتے، نہ میسج پڑھتے ہیں۔"

میں نے ان سے معافی مانگی، انھیں راضی کیا، دعا پر نظر ثانی کے لیے کہا اور پھر عرض کی:

اگر کال نہ سننی ہو تو موبائل رکھنے کا مقصد ہی نہیں، میں نے موبائل کال سننے کے لیے رکھا ہوا ہے۔

لیکن بعض دفعہ ایسے وقت میں کال آتی ہے جب اوراد و ظائف وغیرہ میں مشغول ہوتا ہوں، یا کسی دوسرے کام میں

مصروف؛اس لیے نہیں سن سکتا-اور بعض اوقات بعد میں ریپلائے کا بھی یاد نہیں رہتا۔
اس لیے ایسی "درد بھری دعا" کرنے سے بہتر تھا، آپ میرا عذر سمجھ لیتے۔
ابھی میں نے واٹس ایپ پر وہ میسج گنے ہیں، جو ریڈ نہیں ہو سکے؛ان کی تعداد سوا دو سو سے زیادہ ہے۔
اور یہ گروپس والے نہیں، بلکہ مختلف احباب کے انفرادی طور پر آنے والے میسجز ہیں۔
(ٹیلی گرام، ایمو، مسنجر وغیرہ پر آنے والے میسجز اس کے علاوہ ہیں۔)
اس لیے میں ہی نہیں، کوئی بھی کال یا میسج کا بروقت جواب نہ دے تو بالکل ناراض نہیں ہونا چاہیے، ہر کسی کی کوئی نہ کوئی مجبوری ہو سکتی ہے۔
عرض کرنے کا مقصد یہ ہے کہ: "اگر کال یا میسج کا جواب نہ دینے کی وجہ سے، آپ میں سے کوئی دوست مجھ سے ناراض ہیں تو معاف فرمادیں، اللہ کریم آپ کو جزائے خیر دے۔ میں کسی مسلمان کو بلاعُذرِ شرعی ناراض کرنے کا متحمل نہیں ہوں!!

## بیٹی

ابھی ایک میرج ہال کے پاس سے گزرا، جس کے دروازے پر کسی "عورت" کی تصویر آویزاں تھی۔
اور ایسی تصویریں صرف میرج ہالوں پر ہی نہیں، جابجا لگی ہوتی ہیں۔
میں سوچنے لگا: جس عورت کی یہ تصویر ہے، کیا وہ کسی کی بیٹی نہیں!!؟؟
بیٹی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
بیٹی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
بیٹی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تو لفظ ہی اتنا مقدس ہے، جو لبوں پر آتے ہی سارا وجود تقدیس مآب ہو جاتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!
آخر لوگ اس طرح بیٹیوں کی کیوں تشہیر کرتے ہیں؟؟
کیا ان میں غیرت نہیں رہی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔؟
کیا یہ مردہ ضمیر ہو چکے ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔؟ کیا ان میں انسانیت مر چکی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔؟
کیا یہ اتنے ہی گھٹیا اور ذلیل ہیں کہ کاروبار کے لیے، بیٹیوں تک کی حرمت پامال کرنے سے باز نہیں آتے۔
اے اللہ! رسول ہاشمی ﷺ کے صدقے انھیں ہدایت دے دے!!

## عُربت

میں نے ایک غریب والد کو اپنے بچوں کی "غریبانہ" تربیت کرتے دیکھا، تو کہا:

یہ ضروری نہیں کہ آپ کی غُربت، آپ کے بچوں کا مقدر بنے؛لیکن------------------جیسے آپ ان کی تربیت کر رہے ہیں، اس طرح تو یہ بڑے ہو کر آپ سے بھی بڑھ کر "غریب" بنیں گے۔

میرا مشورہ ہے: آپ "امیر باپ، غریب باپ"، نامی کتاب پڑھیں، اور اس کے مشمولات پر عمل کریں۔

1: آپ کے پاس کچھ بھی نہ ہو، پھر بھی آپ کے بچوں کا یہی ذہن ہونا چاہیے کہ:

میرے باپ کے پاس وہ کچھ ہے، جو کسی کے باپ کے پاس نہیں۔

اور جو کچھ میرے باپ کے پاس نہیں، وہ میں نے اسے لا کر دینا ہے۔

2: بچے کو ہمیشہ محنت کا ذہن دیں، اور اسے ناممکنات کی اندھیر نگری سے نکال کر، ممکنات کے باغ و بہار دکھائیں۔

3: بچوں سے کہیں: بیٹا! ہم جس دور سے گزر رہے ہیں، یہ قُربِ قیامت کا زمانہ ہے؛ اسی دور کے متعلق فرمایا گیا ہے کہ " زمین اپنے دفینے اگلے گی۔"

بیٹا! زمین اپنے دفینے اُگل رہی ہے، جنھیں لوگ ہاتھوں ہاتھ سمیٹ رہے ہیں: تم نے وہ دفینے کیسے حاصل کرنے ہیں؟ اس بارے میں سوچا کرو، اور مجھ سے مشورہ کیا کرو!

4: بیٹا! تم نے حلال کمائی سے مال دار بننا ہے، اور اپنے مال کے ذریعے دینِ اسلام کی خدمت کرنی ہے، اور غریبوں، فقیروں کی مدد کرنی ہے۔

5: پیارے بیٹے! تم نے رسول اللہ ﷺ کے سب سے مال دار صحابی سیدنا عبدالرحمان بن عوف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نقشِ قدم پر چلنا ہے۔

## تم میری ماں

ایک خوب صورت خاتون نے کسی امیر شخص کا راستہ روک کر کہا:

"میں چاہتی ہوں تم سے شادی کر لوں، اور ہمارے ہاں ایک بچہ پیدا ہو، جو بالکل تم جیسا ہو۔"

امیر نے جواب دیا:

اگر ہم شادی کر لیتے ہیں تو بچہ ہو گا یا نہیں، اگر ہوا بھی تو زندہ رہے گا یا نہیں-------------یہ اللہ کے سوا کوئی نہیں جانتا۔

اِس سے کہیں بہتر ہے کہ تم مجھے ہی اپنا بیٹا بنا لو--------------------

آج کے بعد تم میری ماں، میں تمھارا بیٹا!!

اس امیر نے یہ رشتہ وہیں کھڑے کھڑے پکا کر لیا اور پھر ساری زندگی نبھایا بھی۔

اس خاتون کو ماں جیسی عزت دی اور ماں سمجھ کر زندگی بھر اس کی خدمت کی۔

انسان کو مضبوط کردار کا مالک ہونا چاہیے، یہ نہیں کہ کسی خاتون کا نام پڑھ لیا، آواز سن لی، میسج دیکھ لیا، یا بات کرلی تو لٹو ہوجائے۔

فیس بک پر ایک بیٹی نے شکایت کی تھی کہ:

اسلامی حال حُلیے والے شخص بھی مجھے ایسے ایسے میسجز بھیجتے ہیں کہ الامان!!

میں نے اُس بیٹی کو تو سمجھا دیا، جو سمجھانا تھا؛ لیکن میسجز بھیجنے والے نادانوں کو کس طرح سمجھاؤں کہ:

مسلمان عورت کی تو شان ہی بہت بلند ہے، عورت کسی بھی مذہب کی ہو اسے تحفظ فراہم کرنا ہمارا فرض ہے۔

عورت کو ہم سے بے خوف ہونا چاہیے، وہ ہمیں تقدیس مآب سمجھے؛ اسے ہمارے روپ میں باپ، بھائی اور بیٹا نظر آئے۔

ہماری موجودگی اسے اطمینان دے، نہ کہ خوف زدہ کردے۔

## والدین کی اکلوتی بیٹی

میں والدین کی اکلوتی بیٹی ہوں۔

ایک دن میری فرینڈ نے مجھ سے کہا:

تمھاری ایک لڑکے سے بات کرواتی ہوں، وہ بہت اچھا ہے۔

میں نے کہا ٹھیک ہے، اگر آپ کہتی ہو تو وہ واقعی اچھا ہوگا۔

میری اس لڑکے سے فون پر بات ہوئی تو ہوتی چلی گئی۔۔۔۔۔۔ چھے سات ماہ میں ہم ایک دوسرے کے اتنے قریب ہوگئے جیسے سالوں سے شناسائی ہو۔

میں پاکستان تھی اور وہ یورپ۔

میں نے والدین سے کہا میرا اس سے نکاح کردیں، لیکن والدین نہ مانے اور انھوں نے کزن سے میرا نکاح کردیا۔

جب میرا نکاح ہوا تو میرا فرینڈ چھری گردن پر رکھ کر بیٹھ گیا، اور مجھے کہنے لگا:

میرے گھر چلی آؤ، ورنہ میں اپنے آپ کو ابھی ذبح کرلوں گا۔

مجھے اس سے بہت زیادہ محبت ہوچکی تھی، اس لیے مجھ سے رہا نہ گیا اور میں اپنا گھر چھوڑ کر اس کے گھر چلی آئی۔

میرے گھر والوں نے اس پر اغوا کا مقدمہ دائر کروادیا، لیکن جب میں نے عدالت میں بیان دیا کہ اپنی خوشی سے آئی ہوں تو مقدمہ خارج ہوگیا۔

پھر میں نے خلع کا دعوی کیا اور وہ بھی میرے حق میں ہوگیا۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔ جس کے لیے آئی تھی، وہ اب بدل گیا ہے؛ وہ کسی اور میں دل چسپی لینے لگ گیا ہے۔

میں اب نہ تو واپس جاسکتی ہوں، اور نہ وہ مجھے سمجھ پا رہا ہے، اس لیے میں نے فیصلہ کیا کہ خودکشی کرلوں۔

چھری سے میں اپنی رگیں بھی کاٹ چکی ہوں۔
میرے والد نے تین، چار مکان میرے نام لگوائے تھے، مجھے زیور پہنایا تھا، لیکن ان سب چیزوں کی میری نظر میں کوئی اہمیت نہیں۔

یہ سچی کہانی ہے، جو ایک لڑکی نے مجھے روتے ہوئے سنائی، اور حل طلب کیا۔
یہاں شیئر کرنے کا مقصد، بیٹیوں اور بہنوں کو "نصیحت" دلانا ہے۔
رب تعالی نصیحت قبول کرنے کی توفیق عطا فرمائے!
اگر آپ موبائل استعمال کرتی ہیں تو واٹس ایپ اور مسنجر وغیرہ پر کسی غیر محرم سے چیٹنگ نہ کیا کریں۔
ابتدا نارمل میسجز سے ہوتی ہے، جو دھیرے دھیرے ابنارمل ہوتے جاتے ہیں۔
پیر وارث شاہ صاحب نے کہا تھا۔

جیہڑیاں لین اُڈاریاں نال بازاں ، اوہ بُلبلاں تھک مریندیاں نی
اوہناں ہرنیاں دی عمر ہو چکی ، پانی شیر دی جُوہ ، جو پِیندیاں نی
اوہ کواریاں جان خراب ہویاں ، جہیڑیاں گھبرواں نال کھڈیندیاں نی

(جو بلبلیں عقابوں کے ساتھ اڑان بھرتی ہیں، وہ تھک ہار کر گر پڑتی ہیں۔ شیر کے علاقے میں پانی پینے والی ہرنیاں، اپنی جان گنوا دیتی ہیں۔ اور نوجوانوں کے ساتھ کھیلنے والی (گپ شپ کرنے والی) کنواریاں بھی اپنی عاقبت خراب کر بیٹھتی ہیں)
نکاح کے لیے والدین کے انتخاب کو ترجیح دیں، اور صبر شکر کے ساتھ اپنا گھر بسائیں۔
اگر پسند کی شادی کرنی ہے تو والدین کو راضی کر کے، کریں۔
یورپین لڑکیوں کی طرح من مانی، مسلمان لڑکیوں کو زیب نہیں دیتی۔

اپنی ملت پر قیاس اقوامِ مغرب سے نہ کر
خاص ہے ترکیب میں قومِ رسولِ ہاشمی

## عمر کتنی ہے؟

محدث یحیٰ بن اکثم رحمہ اللہ جب بصرے کے قاضی (چیف جسٹس) مقرر ہوئے، اُس وقت اُن کی عمر 21 سال تھی۔ بعض عمر رسیدہ بصریوں نے اس کم سنی پر انھیں بطور طنز کہا:
قاضی صاحب کی عمر کتنی ہے؟
انھوں نے فی البدیہ جواب دیا:
جتنی حضرت عتاب بن اسید کی تھی، جب رسول اللہ نے انھیں مکے کا گورنر بنایا تھا۔

اگر کوئی کم سِن، اتفاق رائے سے امیر مقرر ہو جائے تو بڑوں کو اس پر طنز نہیں کرنا چاہیے۔
بعض چھوٹے وہ کام کر دکھاتے ہیں جو بڑے پیچھے چھوڑ جاتے ہیں۔
کیا آپ نہیں جانتے کہ قسطنطنیہ بڑے بڑے جرنیلوں سے فتح نہ ہو سکا، لیکن اکیس سالہ سلطان محمد فاتح نے فتح کر لیا۔

## صفائی

چاہے گرمی ہو یا سردی، اپنی صفائی کا خاص خیال رکھنا چاہیے۔
يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ۔ اللہ پاک صاف ستھرے لوگوں کو پسند فرماتا ہے۔
روزانہ نہیں، تو کم از کم ہفتے میں ایک دفعہ ضرور نہائیں۔
طیب و طاہر نبی ﷺ کا فرمان ہے:

لِلّٰهِ تَعَالَى عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ حَقٌّ أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا۔

اللہ تعالی کی طرف سے ہر مسلمان پر لازم ہے کہ ہفتے میں ایک دن ضرور نہائے (صحیح البخاری، ر898)
اور نہانے سے مراد اچھی طرح نہانا ہے، "لاہوری نہانا" نہیں؛ کہ۔۔۔۔۔۔۔۔ سر نہ دھویا اور باقی جسم پر تھوڑا بہت پانی مَل لیا۔ سرکار ﷺ نے یہ بھی فرمایا:

يَغْسِلُ فِيهِ رَأْسَهُ وَجَسَدَهُ۔

نہاتے وقت اپنا سر بھی دھوئے اور جسم بھی (اچھی طرح) دھوئے۔ (ایضًا، ر897)
اپنا لباس: بنیان، کپڑے، ٹوپی، عمامہ، جرسی، سویٹر، پاجامہ، جرابیں۔
گھر کے بستر: چادریں، رضائیاں، کمبل، سرہانے وغیرہ سب صاف ستھرے رکھیں۔
اللہ کے پیارے حبیب ﷺ ایک دفعہ گھر تشریف لائے، تو آپ نے چادریں دیکھ کر سیدہ پاک رضی اللہ عنہا سے فرمایا:
عائشہ! ان دو چادروں کو دھو لو۔
سیدہ کہتی ہیں، میں نے عرض کی:
یا رسُولَ اللہ! ﷺ کل ہی تو میں نے دھوئی تھیں۔ فرمایا:
کیا تم نہیں جانتیں کہ کپڑا بھی تسبیح کرتا ہے، اور جب مَیلا ہو جاتا ہے تو اس کا تسبیح کرنا رُک جاتا ہے۔
(صفائی کی اہمیت، ص8، بحوالہ: تاریخِ بغداد ج9، ص245)

## فیس بک اور باپ بیٹی

باپ: بیٹی! مجھے معلوم ہوا ہے کہ تم فیس بک استعمال کر رہی ہو؟

بیٹی: جی بابا-
لیکن میں صرف اور صرف دینی معلومات اور جنرل نالج کے لیے استعمال کرتی ہوں-
باپ: میری لختِ جگر! میں نے تجھے پالا پوسا، دنیا میں رہنے سہنے کا گُر سکھایا؛ پہلے دن سے لے کر آج تک تیری حفاظت کی اور تادمِ زیست کرتا رہوں گا- تجھے یقین ہونا چاہیے کہ اِس پُر فریب دنیا میں تیرے لیے سب سے زیادہ مخلص اگر کوئی ہے تو وہ تیرا باپ ہے۔
میری نورِ نظر! اگر میرے دل کی پوچھو تو تمھیں فیس بک استعمال کرنے کی کبھی اجازت نہ دوں، کیوں کہ یہ ایسا جنگل ہے جس میں کھو جانے کے بعد واپسی کے راستے مسدود ہو جاتے ہیں؛ لیکن بادلِ نخواستہ اِن احتیاطوں کو ملحوظ رکھتے ہوئے اجازت دیتا ہوں-
1: تم نے اپنی آئی ڈی پر اپنا اصلی نام اور پتا ظاہر نہیں کرنا، اور نہ ہی اپنا ذاتی موبائل نمبر لکھنا ہے
2: اپنی، اپنے گھر کی، بہن بھائیوں اور رشتے داروں کی کوئی بھی تصویر اپلوڈ نہیں کرنی اور نہ ہی کوئی نجی معاملہ شیئر کرنا ہے۔
3: صرف اسلامی اور معلوماتی پیجز لائک کرنے ہیں؛ ہر قسم کے عشقیہ، فسقیہ اور الحادی پیجز سے دُور رہنا ہے۔
4: دوستی کی درخواست بھیجنے یا قبول کرنے سے پہلے پروفائل ضرور چیک کرنا، اگر اُس میں گناہ و آوارگی کی بُو ہوئی تو دامن بچا لینا۔
5: کوشش کر کے صرف خواتین کو فرینڈ لسٹ میں شامل کرنا، اور وہ بھی مذہبی ذہن رکھنے والی۔۔۔۔۔۔۔؛ ہاں اگر خوفِ خدا رکھنے والے علما بھی ہو جائیں تو ہرج نہیں۔
6: چیٹنگ سے ہر صورت بچنا، اور اس بات کا دھیان رکھنا کہ خواتین کے نام پر بنی آئی ڈیز خواتین ہی کی ہوں، یہ ضروری نہیں؛ ہزاروں، لاکھوں اکاؤنٹ ایسے بھی ہیں جو "روگی" مردوں نے عورتوں کے نام سے بنا رکھے ہیں۔
7: اگر تمھیں کسی قسم کی دینی معلومات چاہییں تو بھی چیٹنگ کے بجائے وال ہی استعمال کرنا۔
8: اگر تمھیں کوئی میسج کر کے سلام کرے، عید مبارک دے یا سالگرہ وغیرہ کی مبارک کہے تو اُس کا کوئی جواب نہ دینا؛ اگر آپ نے ایک دفعہ جواب دے دیا تو گفتگو کا نہ ختم ہونے والا سلسلہ شروع ہو جائے گا۔
9: اگر کوئی عورت یا مرد غیر اخلاقی میسج یا تصویر بھیجے تو جواب دیے بغیر اُسے فوراً سے پیش تر انفرینڈ کر دینا۔
10: فیس بک کو صرف فارغ وقت میں استعمال کرنا، اِس کے لیے اپنا قیمتی وقت کبھی ضائع نہ کرنا۔
11: کسی کی پوسٹ لائک کرنے سے پہلے اچھی طرح دیکھ لینا کہ وہ کیسی ہے۔ غیر سنجیدہ، غیر علمی، غیر اخلاقی اور بازاری قسم کی پوسٹوں کو کبھی لائک نہ کرنا۔
میری پیاری بیٹی! میں نے تجھے سمجھانے میں اپنی معلومات کے مطابق کوئی کسر نہیں چھوڑی، پھر بھی ہر ایسی حرکت سے بچنا جو تمھاری، تمھارے دین و ایمان، والدین، اَعزہ و اَقربا کی عزت پر حرف کا سبب بنے-

بیٹی: میرے پیارے بابا جان اللہ کریم مجھے آپ کے سایۂ عاطِفت سے کبھی محروم نہ کرے!
میں آپ کی ہر نصیحت کو بہ دل و جان قبول کرتی ہوں، اور عمل بھی کروں گی —

## ایک بیٹی کو نصیحت

باپ کی آنکھوں میں دھول جھونک کر۔۔۔۔۔۔ موبائل پر رشتے نبھانے والی ایک بیٹی کو نصیحت۔
پیاری بیٹی! تیرے باپ نے تجھے بڑی محنت سے پالا۔۔۔۔۔۔ اپنا پیٹ کاٹ کر تجھے پروان چڑھایا۔۔۔۔۔۔ خود جاگتا رہا لیکن تیری نیند خراب نہیں ہونے دی۔
گرمی سردی میں اپنے کپڑوں کی پروا نہیں کی، مگر تیرے لباس کا بہت خیال رکھا۔

تیرے پہلے سانس سے لے کر، چلتے ہوئے سانس تک۔۔۔۔۔ تیرے ساتھ اتنی وفائیں کیں، اتنی وفائیں کیں جنھیں گِنا نہیں جا سکتا۔
لیکن۔۔۔۔۔۔ جیسے ہی تیرے ہاتھ میں موبائل آیا، تُو سب کچھ فراموش کر بیٹھی۔۔۔۔۔ اور تجھے یہ احساس تک نہ رہا کہ:
میری پہلی محبت، بے لوث وفا، اور جان سے بڑھ کر عزیز ہستی۔۔۔۔۔ میرا باپ ہے۔
بیٹی! موبائل پر بننے والا رشتہ بھی کوئی رشتہ ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔!!
جوں ہی بیٹری ڈیڈ ہوئی، رشتہ سٹاپ۔۔۔۔۔۔۔ سگنل ڈراپ ہوئے تو رابطہ منقطع۔۔۔۔۔۔۔۔۔ موبائل سلو ہوا تو تعلق کی روانی جاتی رہی، اور اگر خراب ہو گیا تو پھر سب کچھ ہی ختم۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!
بیٹی! باپ کا رشتہ وہ دائمی رشتہ ہے جو روزِ محشر بھی قائم رہے گا۔۔۔۔۔۔ اور تمھیں اُسی کے نام کے ساتھ پکارا جائے گا۔
باپ کے احسانات اپنی جگہ، لیکن اس رشتے کی عظمت کے کیا کہنے جسے:
ایک نظر دیکھ لیں تو حج بیت اللہ کا ثواب ملتا ہے۔
وہ راضی رہے تو رب تعالیٰ راضی رہتا ہے۔ اس کی بات مان لی جائے تو جنت کا دروازہ کھل جاتا ہے۔
بیٹی! لوٹ آؤ، لوٹ آؤ، لوٹ آؤ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اپنے باپ کی طرف لوٹ آؤ۔
تمھارا باپ صرف باپ ہی نہیں، تمھارے لیے بابِ رحمت ہے؛ اس میں پناہ لے لو۔
وہ جیسے کہتا ہے، خاموشی سے مان جاؤ۔۔۔۔۔۔ اس کا دل دکھ گیا تو تم سکھی نہیں رہ سکو گی۔

## اظہارِ عقیدت

ایک بزرگ عالم دین سے ملاقات ہوئی جو جامع معقول و منقول ہونے کے ساتھ، بڑے ماہر مدرس اور اجلہ علما و

مفتیان کے استاد بھی ہیں۔

دورانِ گفتگو مفتی محمد ابراہیم قادری صاحب (سکھر والوں) کا ذکر آیا تو اُنھوں نے گردن جھکالی اور سراپا نیاز بن کر کہنے لگے:

"وہ میرے استاد ہیں، میں نے اُن سے کچھ اسباق پڑھے ہیں۔"

مجھے حضرت کا یہ اظہارِ عقیدت بہت پسند آیا۔

رب تعالیٰ ان پر اپنی خاص رحمت فرمائے اور ہمیں ان کے علم و عمل سے مستفید ہونے کی توفیق بخشے۔

ہمارے مدارس کے بعض "لائق طلبہ" اور "قابل فضلا" بھی کئی موقعوں پر اپنے بعض اساتذہ کا نام لینے اور ذکر کرنے سے شرما جاتے ہیں۔

شاید کہ:

وہ خود کو زیادہ قابل اور لائق فائق سمجھ رہے ہوتے ہیں، اس لیے انھیں خیال آتا ہے کہ اتنا "بڑا انسان" ہو کر، اب میں لوگوں کو یہ بتاتا پھروں کہ فلاں فلاں میرا استاد ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔!

حالاں کہ وہ نہیں جانتے کہ جو سطریں ہم نے "ناقابل تعارف" استاد سے پڑھی ہیں، یہ سطریں پڑھنے سے پہلے ہم نِرے جاہل تھے، رب تعالیٰ نے ہمیں اسی ہستی کے سبب نورِ علم عطا فرمایا۔

اپنے استاد کا تعارف کروانے سے عزت میں کمی نہیں آتی، عزتیں بڑھتی ہے۔

امام ذہبی کے استاد، علامہ شرف الدین دمیاطی رحمہ اللہ اپنے زمانے کے بہت بڑے عالم، فقیہ اور حافظ الحدیث تھے۔

لوگ آپ سے اس قدر محبت کرتے کہ آپ کو دیکھ کر مصافحے کے لیے ٹوٹ پڑتے اور ایک جم غفیر جمع ہو جاتا۔

جو مصافحہ کر سکتے، کرتے؛ اور جو نہ کر سکتے وہ آپ کے بدن مبارک سے چادر مس کر لیتے۔

امام دمیاطی ایک دفعہ سواری پر سوار جا رہے تھے، ساتھ عقیدت مندوں کا ایک ہجوم بھی تھا کہ آپ کی نظر دور سے آتے ایک نابینا شخص پر پڑی۔

آپ نے فوراً سواری روکی اور نیچے اتر کر ان کے پاس گئے، اور دست بوسی کی۔

لوگوں نے پوچھا: حضرت! یہ کون ہیں جن کی آپ نے اس قدر تعظیم کی؟

فرمانے لگے: میرے استاد ہیں۔۔۔۔۔!

وہ معروف عالم جن سے آپ نے آخری کتابیں پڑھیں۔۔۔۔۔۔ اگر وہ آپ کے استاد ہیں؛ تو جن سے آپ نے الف، با، تا، ثا پڑھا وہ غیر معروف حافظ صاحب، قاری صاحب، مولوی صاحب بھی آپ کے استاد ہیں۔ آپ پر دونوں کی تعظیم فرض ہے اور دل و جان سے فرض ہے۔

اپنے کسی بھی استاد کا تعارف کرواتے، کبھی نہ شرمائیں؛ انشاء اللہ آپ کے فیض علم میں اضافہ ہو گا، اور بہت زیادہ ہو گا۔

ایسا تو انگریزی کے چار لفظ پڑھنے والے "بابو اور مسٹر" کرتے ہیں کہ اپنے سیدھے سادھے باپ کا تعارف کرواتے ہوئے

بھی اس لیے جھجھکتے ہیں کہ: باپ پینٹ کوٹ اور ٹائی، پتلون کے بجائے شلوار قمیص میں ہے۔
آپ لوگوں کو یہ احسان فراموشی اور احساس برتری بالکل زیب نہیں دیتے، آپ دینی مدارس کے تربیت یافتہ ہیں۔

## خالہ

سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں:
ایک شخص نبی پاک ﷺ کے پاس آکر کہنے لگا:
میں بہت بڑا گناہ کر بیٹھا ہوں، کیا میری توبہ کی کوئی صورت ہے؟
آپ ﷺ نے فرمایا: کیا تیری ماں (زندہ) ہے؟
کہنے لگا: نہیں۔
فرمایا: خالہ؟
کہنے لگا: جی، وہ (زندہ) ہیں۔
ارشاد فرمایا:
اُس کے ساتھ نیک سلوک کرو۔ (رب تعالیٰ تمھاری توبہ قبول فرمالے گا)
(الترغیب والترھیب من الحدیث الشریف، کتاب البر والصلۃ وغیرھما، باب الترغیب فی بر الوالدین ۔۔۔۔۔۔۔۔ ص 439، ر 442، ط دارالکتاب العربی بیروت، س 2014ء)
اللہ اللہ، ماں کی خدمت کتنی عظیم نیکی ہے کہ بڑے بڑے گناہوں کا کفارہ بن جاتی ہے۔ جن کی مائیں زندہ ہیں واقعی وہ بڑے خوش قسمت ہیں۔

## خوش طبعی

خوش طبعی (مزاح)، بہت پیاری عادت ہے۔
اس کے پیارا ہونے کے لیے اتنا ہی کافی ہے کہ کائنات کی سب سے پیاری ہستی کے مزاج میں بھی خوش طبعی تھی۔
سیدنا عبداللہ بن حارث کہتے ہیں:
مارایت احدا اکثر مزاحا من رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ولا اکثر تبسما منہ۔
میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے زیادہ کسی کو خوش مزاج اور متبسم نہیں دیکھا۔
(الانوار فی شمائل النبی المختار، ت محی السنۃ بغوی رحمہ اللہ، باب فی سرورہ وضحکہ ومزاحہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم، ص 247، ر 301، ط دارالمکتبی سوریۃ دمشق، س 1416ھ)
مزاحیہ طبیعت رکھنے والا انسان منکسر المزاج ہوتا ہے، اور تکبر سے محفوظ رہتا ہے۔

مولاعلی پاک فرماتے تھے:
جس آدمی میں خوش طبعی کی خصلت ہووہ تکبر سے بچ جاتا ہے۔
(فلسفہ عقل وحماقت، بحوالہ: الظراف والمتماجنین لابن جوزی رحمہ اللہ، ص 53، ط کرماں والا بک شاپ لاہور، س 2007ء)

اس لیے کبھی کبھی مزاح بھی کرنا چاہیے، اور ایسا مزاح قبول بھی کرنا چاہیے جو خلافِ شرع نہ ہو۔
بعض لوگ خشکی کی حد تک سنجیدہ ہوجاتے ہیں ۔۔۔۔۔۔۔ جو کہ بالکل اچھی عادت نہیں ؛ اس عادت سے جتنا جلدی ہوسکے جان چھڑالینی چاہیے۔
المزاح فی الکلام کالملح فی الطعام۔
گفتگو میں مزاح ایسے مزہ دیتا ہے، جیسے کھانے میں نمک مزے دار ہوتا ہے۔
کھانے میں بیسیوں مصالحے ڈال لیں، ایک نمک نہ ہو تو کچھ مزہ نہیں آتا۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بندہ جتنا مرضی فصیح وبلیغ اور عالم فاضل ہو، اگر اس میں حسِ مزاح نہیں تو وہ رُوکھا ہے۔

## زیادہ امیدیں

ضرورت سے زیادہ امیدیں پریشان کیے رکھتی ہیں، اور وہ بھی ان لوگوں سے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ جو امیدوں پر پورا اترنے کی صلاحیت ہی نہیں رکھتے۔ ؎

اُن سے اُمّیدِ وفا ہائے تِری نادانی
کیا خبر ان کو ، یہ کِردارِ مُعَظَّم کیا ہے
وہ جو ہیں ہم سے گُریزاں تو بَلا سے اپنی
جب یہی طَورِ جہاں ہے تو بَھلا غم کیا ہے

اگر خوش رہنا چاہتے ہیں تو نہ کسی سے زیادہ توقع رکھیں، نہ فضول امیدیں باندھیں۔

آپ کا رب، آپ سے بہت محبت فرماتا ہے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ آپ کو جو چاہیے، اس سے مانگا کریں؛ اور اسی سے ساری امیدیں وابستہ رکھیں۔ ؎

جوّاد وغنی ، بَرتر وبالا وہ ہے
رزّاقِ جہاں رب تعالیٰ وہ ہے
کیوں مانگ رہاہے مانگنے والوں سے ؟
اللہ سے مانگ ۔۔۔۔۔۔۔ دینے والا وہ ہے !!

## اچھا خواب

صحابہ کرام علیہم الرضوان جب کوئی اچھا خواب دیکھتے تو رسول اللہ ﷺ کو سنایا کرتے تھے، بلکہ آقا کریم فجر کی نماز کے بعد خود صحابہ سے پوچھتے تھے کہ:

هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمُ اللَّيْلَةَ رُؤْيَا؟

کیا آج رات تم میں سے کسی نے کوئی خواب دیکھا ہے؟(سنن ابوداود شریف، ر5017)

اچھا خواب، اچھی نیت اور پوری سچائی کے ساتھ اپنے احباب کے سامنے ضرور بیان کرنا چاہیے، البتہ برا خواب صرف معبر کے سامنے ہی بیان کرنا چاہیے، تاکہ وہ حسبِ حال تعبیر بتا سکے۔ صحابہ کرام علیہم الرضوان کی پیروی میں اپنا خواب آپ سے بیان کرتا ہوں، اگر آپ میں سے کسی نے آج کی رات اچھا خواب دیکھا ہو تو وہ کمینٹ میں بیان کر سکتے ہیں۔

"آج رات خواب میں مجھے دو مرتبہ مدینہ پاک کی حاضری نصیب ہوئی۔"

دعا فرمائیں رب تعالی حقیقت میں بھی حاضری کی سعادت عطا فرمادے۔۔۔۔۔۔۔۔اور جلد وہاں پہنچنے کے اسباب پیدا ہو جائیں۔۔

مرے آقا مدینے میں مجھے بھی اب بلا لیجے
ترستی ہیں مِری آنکھیں مجھے روضہ دکھا دیجے
مہکتی ہیں وہ راہیں جن سے آقا آپ ہیں گزرے
مجھے بھی اُن گلی کُوچوں میں رہنے کی جگہ دیجے

## امام صاحب

اللہ جنت نصیب کرے، دادی امی رحمھا اللہ کہا کرتی تھیں:

جِدے پیچھے نماز پڑھیے، اوہدی جُتی نوں وی بُجھڑی نئی آکھی دا۔

یعنی جس امام کے پیچھے نماز پڑھیں اس کا بے حد احترام کرنا چاہیے، وہ تو وہ۔۔۔۔۔اس کے پاؤں سے مَس ہونے والے جوتوں کا بھی الٹا نام نہیں رکھنا چاہیے؛ کیوں کہ تم جس کے پیچھے نماز پڑھ رہے ہوتے ہو، سجدے میں اس کے پاؤں تمھارے سروں کی طرف ہوتے ہیں۔

اللہ اللہ، وہ سیدھے سادھے لوگ کس قدر مودب تھے۔۔۔۔۔۔۔رب تعالیٰ ہمیں بھی ادب والی چیزوں کا ادب کرنے کی توفیق بخشے!

امام مسجد کا اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کی بارگاہ میں بڑا درجہ ہے، یہ اُس عبادت کی ادائیگی پر مامور ہوتا ہے جو اللہ کریم کو سب سے زیادہ پسند ہے۔

صاحبزادہ ابوالکمال عروس فاروقی حفظہ اللہ کہتے ہیں۔

وارِثِ مِحراب و مِنبر ، اے امام !
کیا کہوں ، کتنا ہے تُو عالی مَقام
تجھ پہ ہے اسلام کا دَارومَدار
تجھ سے ہے دینِ مُحَمَّد کا نِظام
کام تیرا لائقِ صد آفریں
نام تیرا قابلِ صَد اِحترام
ہر اَیازِ وقت و محمودِ زَماں
اِقتِدا کرتا ہے تیری صبح و شام
ہے مُقَرَّب تَر حُضورِ کِبریا
مُقتدی کے سجدہ سے تیرا قیام
تُو ہے سَجّادہ نشینِ مصطفیٰ
تیرے مَنصب میں نہیں کوئی کلام
تیری درگاہِ مُعلّیٰ میں عروسؔ
پیش ہوتا ہے بہ آداب و سلام

## ویلنٹائن ڈے

خطیب صاحب خطبہ پڑھنے کے بعد منبر پر ہی براجمان ہوگئے، اور کہنے لگے:

میں اتنی دیر تک جماعت نہیں کراؤں گا جب تک آپ سے نماز کے ضروری مسائل نہ سن لوں۔

مقتدیوں پر عجیب سا سکوت طاری ہوگیا۔۔۔۔۔۔۔۔اب کون سنائے مسائل!!

کچھ دیر یہی کیفیت رہی کہ ایک آواز بلند ہوئی:

حضرت! کیا آپ نے انھیں نماز کے مسائل سکھائے ہیں جو ابھی سننا چاہ رہے ہیں؟

اگر سکھائے ہیں تو ضرور سنیں، نہیں سکھائے تو چپ کر کے نماز پڑھائیں۔

یہ ایک اجنبی شخص تھا جس نے کھڑے ہو کر خطیب صاحب سے سوال کیا۔

اُس کی بات سن کر خطیب صاحب خاموش ہو گئے، اور کیوں نہ ہوتے۔۔۔۔۔۔۔۔ سکھایا جو کچھ نہیں تھا۔

آج علما کو ویلنٹائن ڈے کی مذمت کرنی چاہیے، ضرور کرنی چاہیے؛ لیکن صرف اس ڈے کی مذمت ہی کافی نہیں ۔۔۔۔۔۔۔۔ لوگوں کو اس کے متبادل نکاح کی بھرپور ترغیب بھی دلانی چاہیے؛ نکاح کو آسان اور عام کرنے کا رجحان بھی پیدا کرنا چاہیے۔

یہ بتانا چاہیے کہ جس سے تمھیں محبت ہو، پہلے اس سے نکاح کرو پھر اسے جہاں چاہے ساتھ لے کر جاؤ، جو چاہے تحفہ دو، جیسے چاہو محبت کا اظہار کرو؛ ایک ہی پھول کیوں، پورا گلستان اس پر نچھاور کر دو۔

آپ اگر معاشرے میں سرایت کردہ کسی ناجائز چیز کو ختم کرنا چاہتے ہیں تو اس کا جائز متبادل پیش کریں، ناجائز خود بخود دم توڑ جائے گا۔

جب ہمارے معاشرے میں نکاح عام ہو گا تو زنا ختم ہونا شروع ہو جائے گا، اور ویلنٹائن ڈے جیسے گندے تہوار اپنی موت آپ مر جائیں گے۔

نکاح عام اس صورت میں ہو سکتا ہے جب:

[1] فریقین کی طرف سے اخراجات کم سے کم ہوں اور فضول خرچی سمیت خلافِ شرع ہر رسم ختم ہو جائے۔

[2] دوسرے نکاح کو معیوب نہ سمجھا جائے اور نہ ہی بیوہ و مطلقہ سے نکاح کرنے کو باعثِ عار سمجھا جائے۔

[3] اولاد پسند کی شادی کے لیے اظہار کر بیٹھے تو اس کی دل شکنی نہ کی جائے۔

[4] اظہار محبت سے پہلے، اظہار نکاح کیا جائے اور نکاح کے بعد ساری محبتیں نچھاور کی جائیں۔

## گرل اور بوائے فرینڈ

گرل اور بوائے فرینڈ مسلمانوں کا کلچر ہی نہیں، مسلمانوں کا کلچر صرف نکاح ہے، جس میں اللہ پاک جَلَّ جَلَالُہٗ نے عزت اور برکت رکھی ہے۔

نکاح کے بغیر فرینڈ شپ، محبت، خلوص اور وفا وغیرہ سب جھانسے ہیں۔

خلیل الرحمان قمر نے کہا تھا:

"لڑکے اور لڑکی میں دوستی نہیں ہوتی، (دوستی کے نام پر) یہ جھوٹ ہے؛ مرد گھات پر بیٹھا ہوا چور ہے، جو ویٹ کرے گا کہ کس دن مان جائے گی۔۔۔۔۔۔۔" میں کہتا ہوں لڑکا ہی نہیں، جو لڑکی بھی نکاح کے بغیر دوستی اور محبت کا دعوی کرتی ہے وہ جھوٹی ہے، دھوکے باز ہے؛ وہ بیوی کسی اور کی بنے گی، استعمال کسی اور کو کرے گی۔

ولی کامل، عالم ربانی میاں محمد بخش قادری رحمہ اللہ نے ایسی لڑکیوں کے لیے ہی کہا تھا۔

نارِیں سَو جو شہوت بھریاں تاڑن ڈَنڈ جَواناں

ہِک چِکّھن ، پھر دُوجا رَکّھن ، لِکھن بُرا پُراناں

(شہوت پرست عورتیں جَن کا کام نوجوانوں کو تاڑنا ہے۔ یہ ایک کو چکھیں گی، پھر اسے بُرا بھلا کہ کر دوسرے کی طرف مائل ہو جائیں گی۔

مطلب: فرینڈ شپ کسی اور کے ساتھ نبھاتی رہیں گی اور بیوی کسی اور کی بنیں گی۔)

ایسی عورتوں سے بچ کر رہو، اور یاد رکھو۔

کَد کسے دی سَکی ہوئی جس نے نار سَدایا

سَے بَرساں اَگ پُوجے کوئی ، پھر سَاڑے ہَتھ لایا

(ایسی عورتیں کسی کی وفادار نہیں ہوتیں، انھیں نار کہا جاتا ہے اور نار (آگ) کی چاہے کوئی سو برس پوجا کر لے، پھر بھی جب ہاتھ لگائے گا تو جلا کے رکھ دے گی)

مرد وہی قابل اعتبار ہیں جو پاکیزہ سیرت ہیں۔۔۔۔۔۔ جو نکاح کے علاوہ کسی قسم کا ناجائز رشتہ قبول نہیں کرتے۔ اور عورتیں بھی وہی سچی ہیں جو اللہ پاک سے ڈرتے ہوئے کسی غیر مرد سے کوئی دوستی نہیں کرتیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ باقی سب کُوڑ کہانی ہے۔

اللہ پاک پاکیزہ مردوں، اور پاک دامن عورتوں کے طفیل ہماری خطائیں معاف فرمائے!

## مظلوم کی دعا

رسول پاک ﷺ کا فرمان ہے:

مظلوم کی دعا قبول ہوتی ہے چاہے وہ گناہ گار ہو، کیوں کہ اس کا گناہ اس کی ذات تک رہتا ہے (اس کی دعا اور بددعا پر اثر انداز نہیں ہوتا)۔

(مسند احمد بن حنبل، ر 9775، قال المنذری رحمہ اللہ: حسن)

فیس بک پر مسلمانوں کی عزتیں اچھالنے والے، انھیں ذلیل و رسوا کرنے والے، الزام تراشیوں سے کام لینے والے، اور بے حکمِ شرعی صحیح العقیدہ مسلمانوں پر نصب و خروج کی تہمتیں لگانے والے ظالموں کو اللہ سے ڈرنا چاہیے۔۔۔۔۔۔۔ کہیں کسی مظلوم کی بددعا اِن کے برے خاتمے کا سبب نہ بن جائے۔

## منزل کی دہرائی

ماہِ شعبان شروع ہو چکا ہے، جو حافظِ قرآن ہیں انھیں آج ہی سے پوری دل جمعی کے ساتھ منزل کی دہرائی شروع کر دینی چاہیے، تاکہ رمضان شریف میں اچھی طرح قرآن پاک سنایا جا سکے۔

ویسے تو حافظ جس وقت چاہیں منزل پڑھ سکتے ہیں، لیکن اگر ظہر تا عصر قرآن پاک پڑھا جائے اور مغرب کے بعد سے لے کر رات گئے تک اسے پکایا جائے، اور صبح کے وقت دہرایا جائے تو زیادہ فائدہ ہوتا ہے۔

اچھی منزل یاد کرنے کے لیے آپ کے پاس دو چیزوں کا ہونا ضروری ہے:

[1] دل جمعی اور [2] محنت۔

محنت تو انسان جتنی کرنا چاہے، کر سکتا ہے؛ رہی دل جمعی ۔۔۔۔۔۔ تو اس کے لیے کچھ ظاہری اسباب بھی اختیار کرنے ہوتے ہیں۔ مثلاً:

گناہوں سے بچنا ہوتا ہے، تاکہ دل میں نور پیدا ہو اور دل قرآن پاک کی طرف مائل رہے۔

قرآن پاک پڑھنے کی فضیلتیں اور حفظ قرآن کی برکتیں ذہن میں رکھیں، اپنے آپ سے کہیں کہ:

میں وہ کلامِ پاک پڑھ رہا ہوں جس کے ایک ایک حرف کی دس دس نیکیاں ہیں، اور اگر یہ مجھے زبانی یاد ہو جاتا ہے تو میں فشار قبر اور عذاب قبر سے بچ جاؤں گا، بلکہ میرے جسم کو قبر کی مٹی بھی نہیں کھائے گی، اللہ پاک اسے قیامت تک سلامت رکھے گا۔۔۔۔۔۔۔۔ وغیرہ وغیرہ۔

اپنی غذا کا خیال رکھیں، بادی اور بازاری چیزیں کم سے کم استعمال کریں۔

چاٹی کا دیسی گھی میسر آئے تو ضرور استعمال کریں۔

میرے پردادا جی رحمہ اللہ حافظ قرآن تھے اور ایسے حافظ تھے کہ ایک جگہ بیٹھ کر سارا قرآن پاک زبانی پڑھ دیتے تھے، نہ کوئی متشابہ لگتا تھا، نہ غلطی ہوتی تھی۔

ان کی جتنے شاگرد ہوئے، سب کی منزلیں مضبوط تھیں، اور ایسی مضبوط کہ ایک رکعت میں بیس پارے بھی پڑھ دیا کرتے تھے۔

پردادا جی رحمہ اللہ اپنے شاگردوں کو ہفتے بعد دیسی گھی پلایا کرتے تھے، روزانہ مکھن کھلاتے تھے، اور دیسی گھی استعمال کرنے کا پابند بنایا کرتے تھے۔

حافظ کے لیے بہترین غذا دیسی گھی ہے جسے چاہے تو سالن میں ڈال کر کھالے، اور چاہے تو خشک روٹی پر لگا کر کھالے۔

(پراٹھا نہ کھائے، یہ معدے کے لیے اچھا نہیں ہوتا۔)

رات کو آدھا کلو دودھ میں آدھا چمچ سونف اور ایک چھوٹی الائچی ڈال کر اُبال لے، اور جب وہ نیم گرم رہ جائے تو تین چار کھجوریں کھا کر، پی لے۔

انشاء اللہ دماغ کو طاقت ملے گی، حافظہ مضبوط ہوگا، اور دل جمعی نصیب ہوگی۔

اگر کوئی حافظ صاحب دیسی گھی اور دودھ خریدنے کی سکت نہ رکھتے ہوں تو حفاظ سے محبت کرنے والے صاحبِ استطاعت احباب، رضائے الٰہی کے لیے انھیں ہدیہ کریں، اللہ کریم اجر عطا فرمائے گا۔

ویسے بھی رمضان شریف میں جو حافظ صاحب تراویح پڑھاتے ہیں، خوش عقیدہ مسلمان قرآن پاک کی محبت میں ان کی غذا وغیرہ کا بہت خیال رکھتے ہیں۔۔۔۔۔۔۔ تو کیا ہی اچھا ہو کہ یہ خیال رکھنا ابھی سے شروع کر دیں۔

## لڑکی کی مرضی

سیدنا عثمان بن مَظْعُون رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا انتقال ہو گیا، آپ کی ایک بیٹی تھی جسے آپ نے اپنے بھائی قُدَامہ بن مَظْعُون رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سپرد کیا تھا۔ وہ بیٹی جب نکاح کی عمر تک پہنچی تو سیدنا و مولانا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ نے نکاح کا پیغام بھیجا، جسے قبول کر کے سیدنا قدامہ رضی اللہ عنہ نے آپ کے ساتھ نکاح کر دیا۔

سیدنا مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ عنہ کو جب اس رشتے کا معلوم ہوا تو وہ لڑکی کی ماں کے پاس گئے اور انھیں مالی طور پر رغبت دلائی (کہ اپنی بیٹی کا رشتہ میرے ساتھ کریں، سکھی رہے گی۔ چوں کہ وہ ماں تھیں، انھوں نے بَھلا اِسی میں سمجھا اور) وہ راضی ہو گئیں، اور ان کی بیٹی کا رجحان بھی اپنی والدہ کی طرح سیدنا مغیرہ کی طرف ہو گیا، اور انھوں نے سیدنا ابنِ عمر کے رشتے سے انکار کر دیا۔

(حالاں کہ سیدنا ابن عمر حضرت عثمان بن مظعون کے بھانجے تھے)

یہ معاملہ جب رسولِ خدا ﷺ کی بارگاہِ اقدس میں پہنچا تو آپ سے حضرت قُدامہ کہنے لگے:

یارسول اللہ! یہ میری بھتیجی ہے، جس کے متعلق میرے بھائی نے مجھے وصیت کی تھی۔

حضور! میں نے اس کا رشتہ اس کے پھوپھی زاد عبداللہ بن عمر سے کیا ہے اور میں نے اس کی بھلائی اور کفو میں کوئی کمی نہیں چھوڑی؛ لیکن یہ لڑکی اور اس کی ماں دوسری طرف مائل ہو گئی ہے۔

رسول پاک ﷺ نے فرمایا:

"اس یتیم بچی کا نکاح اس کی اجازت کے بغیر نہیں کیا جا سکتا۔"

سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ کہتے تھے:

اللہ کی قسم! یہ لڑکی میری ملکیت میں آنے کے بعد بھی مجھ سے چھن گئی اور حضرت مغیرہ رضی اللہ عنہ کے نکاح میں چلی گئی۔

(ملخصًا: مسند احمد بن حنبل، ر 6893، قال المحقق: صحیح)

اسی طرح حضرت ام سائب رضی اللہ عنھا کے والد نے ان کا نکاح اپنی مرضی کے ایک شخص سے کیا، تو انھوں نے اس کے ہاں جانے سے انکار کر دیا، اور کہا: "میں نے حضرت ابولُبَابَہ سے شادی کرنی ہے۔"

ان کے والد بضد تھے کہ جہاں میں نے نکاح کر دیا ہے وہیں جاؤ، لیکن وہ نہیں مانتی تھیں۔

جب یہ معاملہ سید عالم ﷺ کے حضور پیش ہو گیا تو عادل و حکیم رسول ﷺ نے فیصلہ سنایا کہ:

"یہ عورت اپنے معاملے کی (باپ سے) زیادہ حق دار ہے، جہاں یہ چاہتی ہے وہیں اس کی شادی کی جائے۔"
اس فرمان عالی کے بعد ان کی شادی سیدنا ابولبابہ رضی اللہ عنہ سے کر دی گئی۔
(ملخصًا: ایضًا، ر6898)

[1] جب کسی معاملے میں اللہ و رسول کا حکم آجائے تو مسلمان کو فوراً سرِ تسلیم خم کر دینا چاہیے۔
[2] ہماری بیٹیوں کو اللہ کے رسول نے جو حق دے دیا ہے، وہ ہم ان سے کسی صورت نہیں چھین سکتے، چھینیں گے تو ظالم کہلائیں گے۔
نکاح کے معاملے میں وہ اپنی پسند، ناپسند کا اختیار رکھتی ہیں اور اس کا اظہار کرنے میں ہم سے زیادہ حق دار ہیں۔
اللہ کرے یہ بات ہمارے ذہن میں ہمیشہ کے لیے بیٹھ جائے، اور ہم جو جھوٹی پارسائیاں، رکھ رکھاؤ، اور رسم و رواج لیے بیٹھے ہیں ان سے ہماری جان چھوٹ جائے۔

## بیٹی کی رضا

ام المومنین صدیقہ بنتِ صدیق اکبر سیدہ عائشہ پاک فرماتی ہیں:
ایک نوجوان لڑکی رسالت مآب ﷺ کے پاس حاضر ہو کر عرض کرنے لگی:
اے اللہ کے رسول! میرے والد نے میرا نکاح اپنے بھتیجے سے کر دیا ہے، وہ میری وجہ سے اُس پست کو بلند کرنا چاہتا ہے۔
رحمتِ عالم ﷺ نے اُس لڑکی کو اختیار دے دیا (کہ چاہے تو نکاح قائم رکھو اور چاہے تو اس سے علاحدگی اختیار کر لو، تمھارے اوپر کوئی جبر نہیں)۔ اُس نے (رحیم و کریم آقا ﷺ کا فطرت کے عین مطابق حکم سن کر) عرض کی: حضور! جو فیصلہ میرے والد گرامی نے کر دیا ہے میں اسے ہی برقرار رکھتی ہوں۔ میں نے آپ سے یہ بات اس لیے پوچھی تاکہ عورتوں کو پتا چل جائے کہ:

ان لیس للآباء من الامر شیء۔
نکاح کے معاملے میں والدین کو کوئی حق نہیں (کہ بیٹیوں پر زبردستی کریں)۔
(مسند احمد بن حنبل، مسند عائشہ رضی اللہ عنہا، ر25557، قال المحقق: صحیح)

اگرچہ شریعت میں نکاح کے معاملے میں بیٹیوں پر کوئی جبر نہیں، لیکن اس کے باوجود جو بیٹیاں والدین کی رضا کو ترجیح دیتی ہیں وہ بڑی سعادت مند ہیں۔
والدین کو چاہیے کہ نکاح کے معاملے میں اپنی مرضی ٹھونسنے کے بجائے، پیار محبت اور باہمی رضامندی سے بیٹیوں کو اپنے گھر بھیجیں، تاکہ ان کی زندگی سکون و اطمینان سے گزرے اور عمر بھر دلی دعائیں دیتی رہیں۔
بے شک آپ نے بیٹی کو پالا پوسا ہوتا ہے اور اِس احسان کا بدلہ وہ زندگی بھر نہیں چکا سکتی۔۔۔۔۔۔

آپ اس کے مستقبل کے لیے بھی بہتر ہی سوچتے ہیں، جس کا وہ کبھی انکار نہیں کر سکتی؛ لیکن تھوڑا سا اس پر غور کر لیا کریں کہ:
جس گھر کی طرف اسے ہمیشہ کے لیے روانہ کر رہے ہیں، وہاں جانے پہ وہ کتنی رضامند ہے۔
اُس گھر میں اس نے رہنا ہے، آپ نے نہیں؛ اس گھر کا برا بھلا اس کے ساتھ پیش آنا ہے، آپ کے ساتھ نہیں؛ بلکہ کل کلاں اس گھر سے اُسی کی میت اٹھائی جانی ہے آپ کی نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تو پھر کیوں آپ اپنی مرضی اس کی خوشی پر قربان نہیں کر دیتے!!

## جتنا جلدی ہو سکے

جتنا جلدی ہو سکے اپنے رب کے ساتھ معاملات درست کر لینے چاہییں، کوئی پتا نہیں چلتا سانس کب رُک جائے۔
اللہ توفیق دے تو رمضان شریف میں:
[1] روزانہ ستر مرتبہ یا جتنی بار ہو سکے توبہ استغفار کریں۔ اَسْتَغْفِرُ اللہ کہنا بھی استغفار ہے، اور "یا اللہ میری توبہ" کہنا بھی استغفار ہے۔
[2] ہو سکے تو سوا لاکھ مرتبہ پہلا کلمہ شریف پڑھ لیں، شاید یہی نیکی مغفرت کا سبب بن جائے۔
[3] ترجمہ، تفسیر کے ساتھ تلاوت قرآنِ پاک کریں، اور کسی اسلامی کتاب کا بھی ضرور مطالعہ کریں۔
اس کے علاوہ بھی جتنی ہو سکے نیکیاں کریں، اور پورے خلوص سے کریں؛ ہماری ہر نیکی صرف اور صرف اپنے رب جَلَّ جَلَالُہٗ کے لیے ہونی چاہیے۔

## خوش طبعی

خوش طبعی اور مزاح ایسی عمدہ عادت ہے جس سے عقل بڑھتی ہے، اخلاق سنورتے ہیں، رشتے مضبوط ہوتے ہیں اور تکبر سے نجات ملتی ہے۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔ بندۂ مومن کا مزاح کبھی شریعت کی حدود سے تجاوز نہیں کرتا۔
کائنات کے بہترین لوگ صحابہ کرام علیہم الرضوان بھی آپس میں مزاح کیا کرتے تھے بلکہ بارگاہ اقدس صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم میں بھی خوش طبعی کر لیا کرتے، جس پر حضور مسکرا دیتے تھے۔
لیکن جیسے ہی یادِ الٰہی اور فکرِ آخرت والی بات آتی، اُن کی حالت تبدیل ہو جایا کرتی تھی۔
حضرت ابو سلمہ بن عبد الرحمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں:
اصحابِ رسول کی طبیعتوں میں اِنقباض (گھٹن) اور سڑیل پن نہیں تھا، بلکہ وہ اپنی مجالس میں اشعار پڑھتے اور دورِ جاہلیت کی چیزوں کا تذکرہ کرتے تھے۔

لیکن اگر ان میں سے کسی چیز سے اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کے کسی حکم کی طرف اشارہ ہوتا تو اُن کی آنکھیں دیوانوں کی طرح گھوم جایا کرتیں (اور وہ سب کچھ چھوڑ کر یادِ الٰہی میں مگن ہو جایا کرتے تھے)۔

(دیکھیے: علمی مقالات، از مفتی محمد خان قادری، رمزاح نبوی، ص 210,211، ط کاروان اسلام لاہور، س 2008ء)

## نائی سے صلح

ایک بچہ سر کے بال نہیں کٹوا رہا تھا، والدین، بھائی اور دوست احباب سب اسے گہ گہ کر تھک چکے تھے۔

ایک دن وہ میرے پاس آیا تو میں نے اس کے بے ڈھنگے بال دیکھ کر اس کی پیشانی پر بوسہ دیا اور کہا:

کیا آپ کی نائی سے صلح نہیں ہو سکتی؟

وہ ہنسنے لگا اور جا کر بال کٹوا دیے۔

[1] پیار محبت اور شفقت سے کی گئی دو لفظی نصیحت بھی انسان پر اثر انداز ہو جاتی ہے۔

جب کہ تنقیدی اور غصیلے لہجے میں دیے گئے لمبے لمبے لیکچر بھی سر کے اوپر سے گزر جاتے ہیں۔

[2] جب آپ کسی سے اپنی بات منوانا چاہتے ہوں تو اس سے محبت اور شفقت سے پیش آئیں، انشاء اللہ آپ کو مایوسی نہیں ہوگی۔

يُعْطِي عَلَى الرِّفْقِ مَا لَا يُعْطِي عَلَى الْعُنْفِ۔

اللہ کریم جَلَّ جَلَالُہٗ نرمی پر وہ کچھ عطا فرماتا ہے، جو سختی کرنے پر عطا نہیں کرتا۔ (رواہ مسلم)

## شور شرابا

ہم مغرب کی نماز پڑھ رہے تھے کہ بچوں نے وضو خانے پر شور شرابا شروع کر دیا۔

سلام پھیرتے ہی ایک نمازی اٹھے اور انھیں بری طرح ڈانٹا تو وہ بے چارے گھر چلے گئے۔

میں نے اس نمازی کو پیار سے سمجھایا کہ:

[1] بچے مسجد میں شور کریں تو انھیں ڈانٹنا نہیں چاہیے، اچھے طریقے سے سمجھانا چاہیے؛ کیوں کہ ڈانٹ ڈپٹ سے ان کی اصلاح نہیں ہوتی، نہ وہ شرارتیں چھوڑتے ہیں۔۔۔۔۔۔ بلکہ مسجد ہی چھوڑ جاتے ہیں۔

[2] کہتے ہیں: اگر تمھاری صفوں کے پیچھے بچوں کی آواز نہیں آتی تو سمجھ لو تمھاری کوئی نماز نہیں۔۔۔۔۔۔! (مطلب: تم اتنے غافل، کاہل اور خود غرض ہو کہ خود تو نماز پڑھتے ہو، بچوں کو مسجد میں نہیں لا سکتے۔)

یہی وجہ ہے کہ ترکوں نے بعض مساجد کے ساتھ پلے لینڈ بنا دیے ہیں تاکہ بچے بھلے کھیلنے کے لیے آئیں، لیکن مسجد کے قریب تو آئیں۔۔۔۔۔۔ نمازیوں کو نماز پڑھتے اور تلاوت کلام پاک کرتے دیکھیں تو ان کے دل میں بھی عبادت کا شوق

پیدا ہو۔

[3] بچے ابتداء مسجد میں عموماً کسی نہ کسی وجہ سے آتے ہیں، مثلاً:

محفل کے شوق میں، لنگر کے شوق میں، شاباش ملنے کے شوق میں، کسی دوسرے بچے کی وجہ سے۔۔۔۔۔وغیرہ وغیرہ؛ پھر آہستہ آہستہ پکے نمازی بنتے جاتے ہیں۔

خواجہ فریدالدین گنج شکر بھی تو شروع میں شکر ملنے کے شوق سے نماز پڑھا کرتے تھے، پھر ایسے نمازی بنے کہ مثال نہیں ملتی۔

اس لیے بچوں کو مسجد میں آنے دیں، ان کی چھوٹی موٹی غلطیوں سے درگزر کریں، ان کی حرکتوں پر صبر کریں، اور ان کے ساتھ ایسا سلوک نہ کریں کہ وہ مسجد سے دور ہو جائیں۔

[4] بچوں کو مسجد میں جھڑکنے کا بعض دفعہ یہ نقصان بھی ہوتا ہے کہ وہ مسجد سے دور ہو جاتے ہیں۔

مسجد بھرو تحریک کے بانی، عظیم مُصلح اور مُبلغ مولانا محمد الیاس عطار قادری حفظہ اللہ کہتے ہیں:

بچپن میں مجھے مسجد میں ایک بزرگ نے اتنا سخت جھڑکا کہ اگر توفیق خداوندی ساتھ نہ ہوتی تو شاید میں مسجد سے ہی دور ہو گیا ہوتا۔

میری بات اس نمازی کی سمجھ میں آگئی اور اس نے آئندہ مسجد میں بچوں کو نہ جھڑکنے کا تہیہ کر لیا۔

اللہ پاک ہمیں صبر و ضبط کی توفیق دے اور بے جا غصے سے محفوظ رکھے۔

## سپردِ خاک

جب میت کو دفنانے لگیں تو قبر کے اندر چٹائی وغیرہ نہ بچھایا کریں، سنت کے مطابق ویسے ہی مرحوم کو سپردِ خاک کیا کریں۔

قبر کو زمین سے بہت زیادہ اونچا نہ کریں، ایک بالشت کے لگ بھگ اونچا رکھیں؛ صحابہ کرام نے رسالت مآب ﷺ کی تربت اطہر کو ایک بالشت ہی اونچا رکھا تھا۔

میت کو دفنانے کے بعد ہو سکے تو قبر پر پانی چھڑک دیا کریں، رحمتِ عالم ﷺ نے بھی ایسا کیا تھا۔

قبر پر فاتحہ کے لیے جائیں تو اُسے چھونے، چُومنے اور ہاتھ پھیرنے سے پرہیز کریں؛ بس صاحبِ قبر کے چہرے کے سامنے کھڑے ہو کر حسبِ توفیق تلاوت کریں، درود سلام پڑھیں اور اللہ پاک جَلَّ جَلَالُہٗ سے دعا کر دیں۔

مالک و مولا جَلَّ جَلَالُہٗ ہماری قبریں بھی اپنے پیارے حبیب کے جلووں سے منور کر دے!

دَبا نہیں وہ فلک سے بلند و بالا ہے
تہِ زمیں جسے سرور دَبانے آئے ہیں

نصیب جاگ اُٹھا اس کا چین سے سویا
وہ جس کو قبر میں سَرورُسلانے آئے ہیں
نصیب تیرا چمک اُٹھا دیکھ تو نوریؔ
عرب کے چاند لحد کے سرہانے آئے ہیں

## رفع حاجت کے بعد اپنا ہاتھ...

سید عالم ﷺ کی ایک عادت کریمہ یہ بھی تھی کہ:

رفع حاجت کے بعد اپنا ہاتھ مبارک زمین پر مَلتے تھے، پھر اُسے پانی سے دھوتے تھے۔(مسند احمد ودیگر کتب احادیث)

خدا توفیق دے، صفائی ستھرائی کا خوب خیال رکھا کریں۔۔۔۔۔۔۔۔۔ واش روم سے فارغ ہو کر خالی ہاتھ دھونے کے بجائے، صابن یا لیکوڈ ہینڈ واش استعمال کر لیا کریں تاکہ اچھی طرح صفائی ہو جائے۔

رحمت عالم ﷺ کا پہلے مٹی پر ہاتھ ملنا، پھر انھیں دھونا، ہمیں اچھی طرح سے صفائی کی ہی ترغیب دلاتا ہے۔

## گناہ گار میں امید

جب یہ حدیث پاک یاد آتی ہے تو قلبِ گناہ گار میں امید کی ایک شمع روشن ہو جاتی ہے۔

رحمت عالم ﷺ نے فرمایا:

اُس ذات کی قسم جس کے ہاتھ میں میری جان ہے، اگر تم اتنے گناہ کرو کہ تمھارے گناہوں سے زمین و آسمان کا درمیانی حصہ بھر جائے، پھر اللہ سے معافی مانگو۔۔۔۔۔۔۔ تو وہ تمھیں معاف فرمادے گا۔

اگر تم گناہ نہ کرتے، تو اللہ تعالیٰ ایسے لوگ پیدا کرتا جو گناہ کر کے معافی مانگتے، تو اللہ تعالیٰ ان کی مغفرت فرماتا۔(مسند احمد بن حنبل وغیرہ)

جب کہا عِصیاں سے میں نے ، سخت لاچاروں میں ہوں
جن کے پَلّے کچھ نہیں ہے اُن خریداروں میں ہوں
تیری رَحمت کے لیے شامِل گنہ گاروں میں ہوں
بول اُٹھی رَحمت ، نہ گھبرا میں مَدد گاروں میں ہوں

## باجماعت نماز

آج بڑی دیر بعد ایک دوست ملنے آئے اور مصروفیت دیکھ کر پوچھنے لگے:

"امید ہے آپ مسجد میں باجماعت نماز ادا کرتے ہوں گے، گھر پر ہی نہیں پڑھ لیتے ہوں گے ؟"
(مجھے ان کا سوال سن کر خوشی ہوئی، اور دعا کی کہ: یااللہ! ایسے دوست سب کو نصیب کر جو آخرت کے معاملے میں فکر مند رہتے ہوں۔)
میں نے کہا:
اللہ پاک جماعت ترک کرنے سے پہلے مجھے ایمان پر موت دے دے۔۔۔۔۔۔۔ میں باجماعت نماز ادا کرتے ہوئے دنیا سے جانا چاہتا ہوں۔
میری مصروفیت اگر اس سے بھی کئی گنا بڑھ جائے پھر بھی انشاءاللہ جماعت نہیں چھوٹے گی۔
اللہ پاک جَلَّ جَلَالُہٗ سفر و حضر اور علالت و صحت، ہر حالت میں باجماعت نماز ادا کرنے کی اسی طرح توفیق بخشے، جیسے امام اعمش اور مفتی احمد یار خان رحمھما اللہ کو بخشی تھی۔
(امام اعمش رحمہ اللہ کی ستر سال تکبیر اولیٰ فوت نہیں ہوئی، اور مفتی احمد یار خان رحمہ اللہ کی بھی چالیس سال تک تکبیر اولیٰ فوت نہ ہوئی۔)
بغیر عذرِ شرعی، باجماعت نماز چھوڑنے والا فاسق ہوتا ہے۔
بلکہ ہمارے بعض فقہا نے تو اسے بھی مردود الشہادت قرار دیا ہے جو جماعت سے نماز تو پڑھتا ہے، لیکن غفلت کی وجہ سے اقامت کا گھر بیٹھے انتظار کرتا رہتا ہے۔ مسلمان جتنا بھی مصروف ہو اسے نماز باجماعت ہی پڑھنی چاہیے، اس میں دوسری کوئی رائے نہیں۔

## بے جا تنقید

کچھ دن پہلے ایک صاحب نے کسی مشہور عالم دین کے بارے میں کہا کہ:
"وہ اپنی خوبیاں ہی بیان کرتے رہتے ہیں، اپنے منہ میاں مٹھو بنتے ہیں جو کہ تعلی کی علامت ہے۔"
اُن صاحب کی اِس بے جا تنقید پر میں نے کہا:
بھئی! کیا آپ نے فیس بک پر کبھی اپنی تصویر اپلوڈ نہیں کی ؟
کہنے لگے بہت دفعہ کی ہے۔
تو میں نے عرض کی: اگر اپنی واقعی خوبیاں بیان کرنا ٹھیک نہیں، تو کیا اپنی تصویر کو وال پر لگانا درست ہے ؟
کیا یہ نمود و نمائش، تصنع بناوٹ اور ریا و سمعہ نہیں ہے ؟
آپ بھی کمال کے شخص ہیں۔۔۔۔۔۔۔ خود اپنی نمائش کرتے نہیں تھکتے، اور اعتراض دوسروں کی نیت پر کرتے ہیں!
میرے بھائی! اگر کوئی بندہ اپنے اندر موجود خوبی اچھی نیت سے بیان کرتا ہے تو یہ ناجائز نہیں، اللہ کے پیارے نبی سیدنا

یوسف علیہ السلام نے بھی کہا تھا:

اَجۡعَلۡنِیۡ عَلٰی خَزَآئِنِ الۡاَرۡضِ اِنِّیۡ حَفِیۡظٌ عَلِیۡمٌ ۔

اس لیے کسی کی نیت اور دل پر حکم لگانے سے پہلے، کم از کم اپنے ظاہری حال کو دیکھ لینا چاہیے، خود میاں فضیحت اور دوسروں کو نصیحت والا معاملہ ٹھیک نہیں۔

## دورانِ سفر باجماعت نماز

دورانِ سفر باجماعت نماز ادا کرنا بہت بڑی سعادت ہے، ہمارے اکابرین رحمھم اللہ سفر میں جماعت کا بڑا التزام کیا کرتے تھے۔

سیدی اعلیٰ حضرت امام احمد رضا حنفی رحمہ اللہ نے اگر کہیں سفر کرنا ہوتا تو سب سے پہلے یہ معلوم کرتے کہ آیا ٹرین اوقاتِ نماز میں کسی اسٹیشن پر رکتی ہے یا نہیں، اگر اس نے نہ رکنا ہوتا تو اس پر سفر ہی نہ کرتے۔ اور سفر میں گاڑی سے اتر کر باجماعت نماز ادا فرمایا کرتے تھے، اگر جماعت کے جانے کا اندیشہ ہوتا تو وہ گاڑی ہی چھوڑ دیا کرتے تھے اور باجماعت نماز ادا کرنے کے بعد دوسری گاڑی پر سفر کرتے تھے۔

(حیات اعلیٰ حضرت از ملک العلما، اسفار، ج 1)

ہم جس عملی تنزلی کے دور سے گزر رہے ہیں، اس میں باجماعت نماز کی ادائگی میں تو سستی پائی ہی جاتی ہے، لیکن جماعت کے لیے بھی اہل امام ڈھونڈنا پڑتا ہے۔ لوگوں کی جتنی توجہ مسجدوں کی زیبائش و آرائش پر ہے اس سے آدھی توجہ بھی امام پر نہیں۔

یہی وجہ ہے کہ بعض اونچے اونچے میناروں والی مسجدوں میں بھی ایسے نااہل امام متعیّن ہیں جن کی (معاذاللہ) اپنی نمازیں ہی درست نہیں۔

کل ہم سفر پر تھے۔ ویسے تو سفر میں ہمارا معمول یہ ہوتا ہے کہ سر راہ آنے والی کوئی بے آباد مسجد تلاش کرتے ہیں، اور وہاں اذان پڑھ کر باجماعت نماز ادا کرتے ہیں، تاکہ دو اجر ملیں:

ایک مسجد آباد کرنے کا۔

اور دوسرا جماعت اُولیٰ کا۔

کل جب سفر میں نماز کا وقت آیا تو ہمارے اردگرد پانچ "آباد" مسجدیں تھیں، ہم قریبی مسجد میں جانے لگے تو ہمیں وہاں کے مقامی دوست نے بتایا کہ اس مسجد کے پیش امام اہل نہیں، آپ فلاں مسجد کے امام صاحب کے پیچھے نماز ادا کرلیں وہ عالم بھی ہیں، اہل بھی ہیں، اور متقی پرہیزگار بھی؛ تو ہم نے وہاں نماز ادا کی۔

بعض ائمہ عالم ہونے کے باوجود بھی نماز اور وضو کے معاملے میں بڑے غافل ہوتے ہیں، نہ فرائض وضو کا لحاظ

رکھتے ہیں، نہ انھیں واجبی قرات کا پاس ہوتا ہے، نہ واجبات نماز ملحوظ ہوتے ہیں؛ اور طرفہ یہ کہ وہ اپنی اصلاح بھی نہیں کرتے۔

سیدی اعلی حضرت اپنے مدرسے میں تدریس کے لیے آنے والے ہر عالم سے کہتے تھے کہ پہلے وضو کرکے، اور جہر کے ساتھ نماز پڑھ کے۔۔۔۔۔۔ مولانا امجد علی اعظمی کو دکھاؤ، پھر تدریس کی ذمے داری دی جائے گی۔

آج بھی ہمارے ائمہ اور مدرسین کو کسی فقیہ عالم کو وضو کرکے، اور نماز پڑھ کے دکھانے کی سخت ضرورت ہے۔

شاید آپ محسوس کرتے ہوں گے کہ بعض ائمہ جب سورت فاتحہ ختم کرتے ہیں تو کچھ دیر خاموش رہنے کے بعد قرات شروع کرتے ہیں، جب کہ یہ درست نہیں؛ اگر کوئی امام ولا الضالین آمین کہنے کے بعد، بلاوجہ تین تسبیح کی مقدار خاموش رہتا ہے تو وہ ترک واجب کا مرتکب ہوتا ہے۔

اسی طرح قرات، سجدے اور قومے، جلسے وغیرہ میں بھی بڑی بے احتیاطیاں کرجاتے ہیں۔

رب تعالیٰ اصلاح فرمائے، اور ہمیں ایسے اہل امام نصیب فرمائے جن کی برکت سے ہماری نمازیں بھی شرف قبولیت حاصل کرلیں۔

## کال نہ سننا

ایک دوست مجھے بار بار کال کرتے رہے لیکن میں اُن کی کال نہ سن سکا، تو فرمانے لگے:

"آپ کا اس بندے کے بارے میں کیا خیال ہے جس کا دروازہ بار بار کھٹکھٹایا جائے اور وہ اندر ہوتے ہوئے بھی نہ کھولے؟"

میں نے عرض کی:

اس بندے کے بارے میں میرا یہ خیال ہے کہ وہ معذور ہے، اس کے بارے میں حُسن ظن رکھنا چاہیے، اور ناراض ہوئے بغیر واپس لوٹ جانا چاہیے۔

سیدنا ابو موسی اشعری رضی اللہ تعالی عنہ ایک دفعہ سیدنا فاروق اعظم رضی اللہ عنہ سے ملنے کے لیے گئے اور ان کے دروازے پر تین بار سلام کرکے اجازت طلب کی، لیکن دروازہ نہ کھلا تو واپس لوٹ آئے۔

سیدنا فاروق اعظم نے اپنے معمولات سے فارغ ہوکر آپ کو بلایا اور بغیر ملاقات کیے واپس چلے جانے کا سبب پوچھا تو کہنے لگے:

میں نے رسول اللہ ﷺ سے سنا ہے:

اذا سلم احدکم ثلاثا، فلم یجب فلیرجع۔

جب تم میں سے کوئی (کسی سے ملنے جائے، اور اس کے دروازے پر اجازت لینے کے لیے) تین بار سلام کرے، تو

اگر جواب نہ ملے تو (بغیر ناراض ہوئے) واپس لوٹ جائے۔

(ملخصًا: مصنف عبد الرزاق، کتاب الجامع، باب الاستئذان ثلاثا، ر 19423)

مجبوری اور مصروفیت ہر انسان کے ساتھ ہوتی ہے، کال اور میسج کرنے والے نے تو اپنے وقت کے مطابق رابطہ کرلیا۔۔۔۔۔۔اسے کیا معلوم جس سے رابطہ کیا ہے وہ اس وقت کس حال میں ہے!

اس لیے دینِ فطرت پر عمل کیجیے اور ایسی چھوٹی چھوٹی باتوں پر اپنی بے لوث محبتیں قربان نہ ہونے دیجیے۔

موبائل فون رکھا ہی کال سننے کے لیے ہوتا ہے، دوسرے کام تو ضمنی ہوتے ہیں؛ اب اگر کسی کی کال نہ سننی ہو تو یہ رکھنے کا مطلب ہی نہیں۔

## امام مسجد کے لیے

امام مسجد کو زندہ دل اور ہنس مکھ ہونا چاہیے، مقتدیوں کو دیکھ کر اس کا چہرہ کِھل اٹھے، مرجھاہٹ طاری نہ ہو جائے۔

یہ خواہش نہ کرے کہ مقتدی میرے ہاتھ چومیں، مجھ سے سلام میں پہل کریں، میرے ساتھ آکر مصافحہ کریں۔

بلکہ ہو سکے تو مقتدیوں کو خود سلام میں پہل کرے کہ اس کا اجر زیادہ ہے، اور آگے بڑھ کر پرتپاک طریقے سے اُن کے ساتھ مصافحہ و معانقہ کرے، حال احوال دریافت کرے۔

امام کی چال ڈھال اور حرکات و سکنات میں ٹھہراؤ ہونا چاہیے، اس کا دل پُرسکون اور چہرہ مطمئن ہونا چاہیے، تاکہ یہ نعمتیں مقتدیوں کو بھی نصیب ہوں۔

امام جیسے ہی کسی مسجد میں تعینات ہو، اپنے مقتدیوں کی نماز اور عقائد کی اصلاح شروع کردے، اور یہ سلسلہ جاری رکھے۔

اس سے ایک فائدہ تو یہ ہوگا کہ اِس کے نامہ اعمال میں ناختم ہونے والا اجر لکھا جاتا رہے گا، اور دوسرا فائدہ یہ ہوگا کہ مقتدیوں کے دلوں میں اِس کی جگہ بن جائے گی۔

امام مقتدیوں کو دینی مسائل، ان کی زبان میں سمجھائے (وہ پنجابی ہو، اردو ہو، فارسی ہو، انگریزی ہو، ہندی ہو یا سندھی۔) تاکہ انھیں مسائل اچھی طرح ذہن نشین ہو جائیں۔

مجھے یاد پڑتا ہے ایک دفعہ دعوت اسلامی کے مدنی قافلے کے ساتھ پٹھانوں کے علاقے بیگوخیل اور کاکاخیل میں گیا تھا۔

وہاں ہم نماز کے بعد اگر اردو میں اعلان کرتے تھے تو پٹھان کم بیٹھتے تھے، لیکن وہی اعلان جب پشتو میں کیا جاتا تو کافی سارے لوگ بیٹھ جاتے، اور بیان سنتے تھے۔

میں نے یہ صورت حال دیکھ کر وہاں کے ایک پٹھان اسلامی بھائی سے کہا:

مجھے بھی پشتو میں اعلان یاد کروادیں تاکہ میں بھی اردو کے بجائے پشتو میں اعلان کیا کروں۔

تو انھوں نے مجھے اعلان یاد کروایا:

مطلب: میٹھے میٹھے اسلامی بھائیو! ابھی نماز کے بعد سنتوں بھرا بیان ہوگا، آپ تشریف رکھیے اور ڈھیروں ثواب کمائیے۔
جب کوئی نمازی ایسا فقہی مسئلہ پوچھے جو لوگوں میں غلط مشہور ہو تو اسے دلیل کے ساتھ سمجھائیں اور مطمئن کریں، دو لفظی ہاں، ناں میں جواب نہ دے دیں۔ اسی طرح عقائد کے متعلقہ مسائل کو بھی دلیل صحیح سے واضح کریں۔

امام مسجد کو خود دار اور باوقار ہونا چاہیے، مقتدیوں کے سامنے اپنی معاشی حالت کا رونا روتے رہنا یا ان کے ساتھ لغو گفتگو کرنا، خودداری اور وقار کو بری طرح مجروح کرتا ہے۔

اپنا مشاہرہ بڑھانے کا کبھی تقاضا نہ کریں، معاشی حالات کی بہتری کے لیے الگ سے کوئی چھوٹا موٹا کاروبار شروع کرلیں۔

اس کا ایک فائدہ تو یہ ہوگا کہ آپ اپنے پاؤں پر کھڑے ہوجائیں گے، کسی کی محتاجی نہیں رہے گی؛ اور دوسرا فائدہ یہ ہوگا کہ مقتدیوں کی نظر میں آپ کی عزت مزید بڑھ جائے گی۔

جو پیش امام، مسجد کے چھوٹے موٹے کام اپنی جیب سے کروادیتے ہیں، یا کبھی کبھار مقتدیوں کی (بہ نیت ثواب) دعوت کردیتے ہیں، مقتدی ان کے خلاف پروپیگنڈے کم کرتے ہیں۔

میت والے گھر کا کھانا فقرا و مساکین اور مسافروں کے لیے ہوتا ہے، امام مسجد کو اس سے پرہیز کرنا چاہیے۔

مفسر قرآن مفتی احمد یار خان نعیمی رحمہ اللہ میت والے گھر کا کھانا کھانے سے اپنے شاگردوں کو سختی سے منع کیا کرتے تھے۔

سیدی اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ فرماتے تھے:

"یہ تجربہ کی بات ہے (کہ طعام المیّت یمیت القلب۔ طعامِ میّت دل کو مردہ کردیتا ہے) اور اس کے معنٰی یہ ہیں کہ:
جو طعامِ میّت کے متمنّی رہتے ہیں، ان کا دل مرجاتا ہے۔
ذکر و طاعت الٰہی کے لیے حیات و چُستی اس میں نہیں رہتی، کہ وہ اپنے پیٹ کے لقمہ کے لیے موتِ مسلمین کے منتظر رہتے ہیں؛ اور کھانا کھاتے وقت موت سے غافل، اور اس کی لذت میں شاغل۔"

آپ کہیں ختم شریف یا دعا کے لیے جائیں تو کسی قسم کا لالچ طمع نہ کیا کریں۔

آپ کا رازق اللہ ہے، وہ آپ کو ایسی ایسی جگہوں سے رزق حلال دے گا جہاں سے آپ کا گمان بھی نہیں ہوگا۔

تقریباً ہر مسجد میں کچھ مقتدی یا منتظم ایسے بھی ہوتے ہیں جو خواہ مخواہ امام سے الجھتے رہتے ہیں۔ امام کو چاہیے کہ ایسوں کے ساتھ شفقت سے پیش آئے اور گاہے گاہے انھیں کوئی نہ کوئی تحفہ دیتا رہے، انشاء اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ ایک دن آئے گا کہ اُن کے دلوں میں بھی محبت پیدا ہوجائے گی۔

امام کو قائدانہ صلاحیتوں کا مالک اور مقتدیوں کی نفسیات سمجھنے والا ہونا چاہیے، اور یہ چیزیں تقریباً ہر امام میں ہوتی ہیں بس انھیں استعمال کرنے کی ضرورت ہوتی ہے، جس کے لیے کسی تجربہ کار، معاملہ فہم اور جہاں دیدہ امام سے رہنمائی لینی

چاہیے۔
(اور یہ رہنمائی فون کے بجائے براہ راست ملاقات کر کے لینی چاہیے۔)
امامت بہت بڑا دینی منصب ہے، اسے اللہ کے لیے خالص کر دیں؛ اچھی نیت اور حسن تدبیر سے اسے نبھانے کی کوشش کریں، اللہ آپ کا حامی و ناصر ہو گا۔

## نادم

سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنھا فرماتی ہیں:
"اللہ تعالیٰ جب کسی بندے کا گناہ پر نادم ہونا جان لیتا ہے، تو اُس کے معافی مانگنے سے پہلے ہی اُسے بخش دیتا ہے۔"
(الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، ر 4610۔ قال الحاکم: صحیح الاسناد)

یہاں کے ڈوبتے ، دَم میں اُدھر جا کر اُبھرتے ہیں
کنارہ ایک ہے بحرِ ندامت ، بحرِ رحمت کا
نہ کر رُسوائے محشر واسطہ محبوب کا یارب !
یہ مجرم دُور سے آیا ہے ، سن کر نام رحمت کا

## بخار

سید عالم ﷺ حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ کے ساتھ ایک بیمار کی عیادت کرنے گئے، تو اسے فرمانے لگے: خوش ہو جاؤ، اللہ پاک فرماتا ہے: بخار میری آگ ہے، میں اسے اپنے مومن بندے پر دنیا میں اِس لیے مسلط کرتا ہوں تاکہ اُس کی آخرت کی آگ کا بدلہ بن جائے (اور میرا بندہ دوزخ کی آگ سے بچ جائے)۔
(سنن ابن ماجہ، ر3470۔ صحیح)

## صاحبِ ایمان

مسند احمد میں حدیث شریف ہے:
"جس شخص کے سامنے کسی صاحبِ ایمان کو ذلیل کیا گیا اور اُس نے طاقت ہونے کے باوجود اُس کی مدد نہ کی، تو اللہ عزوجل قیامت کے دن اسے ساری مخلوق کے سامنے رسوا کرے گا۔"
سوشل میڈیا پر جو لوگ خواہ مخواہ مسلمانوں کی تذلیل کرتے ہیں، حتی المقدور ان کے شر سے اپنے بھائیوں کو بچانا چاہیے۔
حال ہی میں ایک عاشق رسول نے اپنے بیٹے کا ولیمہ کیا، جس میں علما و صلحا کو مدعو کیا، اور شہدائے کربلا رضی اللہ عنھم کی یاد

میں محفل منعقد کی۔
اِس پر راولپنڈی کے ایک شخص نے ایسی گھٹیا گفتگو کی جو محرم الحرام میں شمر و یزید کے کسی لشکری سے تو متوقع ہو سکتی ہے، امام حسین پاک کے غلام سے ہرگز نہیں۔ اس پر جن مسلمانوں نے اس بدزبان شخص کا رد کیا وہ لائق تحسین ہیں۔
اور جنھوں نے اس کی ژاژ خائی پر خوشی کا اظہار کیا، وہ مذکورہ حدیث پاک سے سبق حاصل کریں۔
رب تعالیٰ انھیں بھی توبہ کی توفیق بخشے!
دین سرور عالم ﷺ کی بہ دل و جان اطاعت کا نام ہے، اور یہی حسینیت ہے؛ محض نفس اور طبیعت کی پیروی: یزیدیت، سبائیت، خارجیت اور رافضیت تو ہو سکتی ہے، دین نہیں۔

## تشویش ناک صورت

الحمدللہ ایک دین دار گھرانے میں آنکھ کھولی اور بچپن ہی سے علم اور علما کی محبت سیکھی۔
بچپن میں کتابیں پڑھنے کے شوق کے ساتھ ساتھ علما کی تقریریں سننے کا بھی بے حد شوق رہا، جیسے ہی معلوم ہوتا فلاں جگہ محفل پاک ہے اور فلانے عالم اور خطیب صاحب آرہے ہیں تو بصد شوق وہاں چلے جاتے، تقریر سنتے، اُسے یاد رکھتے اور احباب کو سنا سنا کے محظوظ ہوتے رہتے۔
اُس وقت ایک بات تھی کہ علما و خطبا، اہل سنت میں انتشار و افتراق کا سبب نہیں بنتے تھے، نہ تفضیلیوں، تفسیقیوں کی طرح چولیں مارتے تھے، بلکہ مسلک اعلیٰ حضرت سے وفا کرتے تھے۔
وہ اہل بیت پاک کا ذکر کرتے تو اتنے خلوص سے کرتے کہ دل چاہتا سنتے ہی رہیں، صحابہ کرام کو یاد کرتے تو اتنے ادب سے کرتے کہ بے ساختہ سر تعظیم سے جھک جاتے۔ لفظ مفتی آج کی طرح ہلکا نہیں ہو گیا تھا کہ جس کا جی چاہے مفتی کہلاتا پھرے، اجلہ علما بھی خود کو مفتی نہیں کہلاتے تھے، نہ فتوی دینے میں اس قدر جری تھے۔
ہمارے گاؤں میں ایک طلاق ہو گئی، قبلہ دادا جی پیش امام تھے وہ فتوی لینے علامہ ابوالنور محمد بشیر صاحب کے پاس پہنچے جو مستند عالم اور فقیہ اعظم کے بیٹے تھے، لیکن انھوں نے فرمایا: میں مفتی نہیں ہوں، اس لیے فتوی نہیں دے سکتا، آپ جامعہ حنفیہ دو دروازے چلے جائیں وہ فتوی دیں گے۔ اور جامعہ حنفیہ میں قبلہ شیخ الحدیث استاذ العلما حافظ محمد عالم رحمہ اللہ فتوی دیتے تھے لیکن اپنے مفتی ہونے کی (آج کی طرح) تشہیر نہیں کیا کرتے تھے۔ اب بڑی تشویش ناک صورت حال ہوتی جا رہی ہے، بس اللہ پاک ہی ہمارے حال پر رحم فرمانے والا ہے۔

## نکاح مطلوب شریعت

عکّاف نامی ایک شخص سیدِ عالم ﷺ کی خدمت میں حاضر ہوا۔

آپ نے اُسے فرمایا:
عکّاف! کیا تمھاری بیوی ہے؟ کہنے لگا: نہیں۔
فرمایا: اور لونڈی بھی نہیں؟ کہنے لگا: نہیں۔
ارشاد فرمایا: کیا تم مال دار نہیں ہو؟
کہا: حضور مال دار ہوں۔
فرمایا: (اگر صاحب استطاعت ہونے کے باوجود تم ایسے ہو) تو تم شیطان کے بھائیوں میں سے ہو۔
اگر تم عیسائیوں میں سے ہوتے تو راہب ہوتے، ہماری سنت تو نکاح کرنا ہے۔
تم میں سے کم تر وہ لوگ ہیں، جو نکاح نہیں کرتے، اور تمھارے مُردوں میں بھی ارذل (کم درجے والے) بے نکاحے ہیں
۔
کیا تم شیطان کے ساتھ کھیلتے ہو! شیطان کا نیک لوگوں کے لیے موثر ترین ہتھیار عورت ہے، (جس سے وہ کنواروں کو شکار کرتا ہے) البتہ شادی شدہ افراد اس سے محفوظ رہتے ہیں۔ (مسند احمد، ر6834)

نکاح مطلوب شریعت اور باعثِ شرف ہے، اب بندے کی استطاعت پر ہے کہ ایک کرے یا دو، تین، چار؛ البتہ ایک سے زیادہ نکاح مستحب ہیں۔ سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے تھے:
شادی کرو! جو ہم میں بہتر تھے (یعنی رسول اللہ ﷺ)، ان کی ازواج پاک بھی زیادہ تھیں۔ (مسند احمد، ر6832)

## مسلمان کو کافر ٹھہرانا

شیخ الاسلام امام احمد رضا حنفی نوراللہ مرقدہ فرماتے ہیں:
"مسلمان کو کافر ٹھہرانا کفر ہے"
(فتاوی رضویہ شریف، ج14، ص649)
جو شخص کلمہ شریف پڑھتا ہے اُس کے کسی قول و فعل پر حکمِ کفر لگانا عوام کا کام نہیں؛ یہ منصب (ملک العلما، صدر الشریعہ و صدر الافاضل رحمھم اللہ جیسے) متکلّم و فقیہ علما کا ہے۔
عوام اپنے ایمان کی حفاظت کریں، کہیں ایسا نہ ہو کہ دوسروں کو کافر کہتے کہتے خود کفر میں جا پڑیں۔
نیز سُنی مسلمانوں کو بلا دلیل شرعی:
رافضی، خارجی، ناصبی، وغیرہ ٹھہراتے ہوئے خود بد عقیدہ ہو جائیں۔

لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ

استغفر اللہ العظیم واتوب الیہ

# پریشانی

قبلہ استادِ محترم حفظہ اللہ فرماتے ہیں:

ایک شخص کی سیدنا خضر علیہ السلام سے ملاقات ہوا کرتی تھی، ایک دن آپ نے اس سے فرمایا:

جو چاہتے ہو بتاؤ تاکہ میں تمھارے لیے اللہ سے دعا کر دوں۔

وہ کہنے لگا: میرے لیے دعا کریں کہ زندگی بھر مجھے کوئی پریشانی لاحق نہ ہو۔

آپ نے فرمایا یہ تو ناممکن ہے (دکھ اور پریشانیاں زندگی کا حصہ ہوتی ہیں، اور یہ بندۂ مومن کے درجات بلند کرتی ہیں)۔

چلو تم ایسا کرو کہ جس سکھی بندے کی طرح ہونا چاہتے ہو بتا دو، میں دعا کر دوں گا، تمھارا حال بھی اسی جیسا ہو جائے گا

۔

وہ بندہ اس پر راضی ہو گیا اور اس نے دنیا کے سکھی انسان کی تلاش شروع کر دی۔

وہ جس خوش و خرم شخص سے بھی ملتا اور اس جیسا ہونے کی تمنا کرتا، تو اسے معلوم ہوتا کہ یہ تو فلاں فلاں پریشانی میں بھی ہبتلا ہے۔

آخر بڑی جستجو کے بعد اسے ایک ایسا شخص مل ہی گیا جو بڑا خوش و خرم نظر آتا تھا، اس کے باغات اور محلات تھے، نوکر چاکر، مال اولاد سب کچھ تھا۔

اس نے ارادہ کیا کہ میں اس جیسا ہونے کی دعا کرواتا ہوں، لیکن سوچا کہ کیوں نہ پہلے اسے تنہائی میں مل کے پوچھ لوں کہ تجھے کوئی ٹینشین تو نہیں۔

جب اس سے ملا اور اپنی خواہش کا اظہار کیا کہ میں تیرے جیسا خوش قسمت ہونے کی تمنا رکھتا ہوں، تو اس نے کہا:

شالا میرے جیسا بد قسمت کوئی نہ ہو!

اس نے کہا کیوں؟ تیرے پاس تو دنیا جہان کی نعمتیں ہیں۔

وہ کہنے لگا:

مجھے اپنی بیوی سے بے انتہا محبت تھی، وہ اچانک بیمار ہو گئی حتیٰ کہ میں اس کی زندگی سے مایوس ہو گیا۔

ایک دن میں اس کے سرہانے بیٹھا رو رہا تھا کہ اس نے کہا:

تجھے میرے ساتھ کوئی محبت نہیں تُو جھوٹے رونے روتا ہے، میرے مرتے ہی تُو نے کسی اور کو بیاہ کے گھر لے آنا ہے۔

جب بیوی کا یہ شکوہ سنا تو میں نے اپنی مردانہ صلاحیت ہی ختم کر دی اور اسے کہا کہ اب تو میری محبت پر یقین کر لو!

تم نے زندہ نہیں رہنا، تو میں بھی کسی اور کا نہیں ہوں گا۔

خدا کا کرنا ایسا ہوا کہ بیوی کچھ دنوں بعد صحت یاب ہو گئی۔

اب میں تو اُس کے قابل نہ رہا تھا، اس نے کچھ دن صبر کیا پھر اپنا رخ کسی اور طرف پھیر لیا اور منھ کالا کرنا شروع کر دیا۔(

معاذاللہ ثم معاذاللہ!)

میں سب کچھ دیکھ کر بھی خاموش رہا، اور روزانہ زہر کے گھونٹ پیتا رہا۔

یہ جو تُو جوان بچے دیکھ رہا ہے یہ لوگوں کی نظروں میں میرے ہیں، لیکن حقیقت میں میرے نہیں؛ تَو اب بتا کہ مجھ سے بڑھ کر بھی کوئی بدنصیب ہے؟؟!!

آپ کو اللہ کریم نے جس حال میں رکھا ہے اس پر دل و جان سے راضی رہیں۔

کسی کا مال و منال اور راحت و آرام دیکھ کر اس جیسا بننے کی کبھی تمنا نہ کریں۔

آپ جس کا ظاہری حال دیکھ کر رشک کر رہے ہوتے ہیں کیا معلوم وہ اندرونی طور پر کس اذیت سے گزر رہا ہوتا ہے، بس اپنے رب سے ہمیشہ خیر کا سوال کرتے رہا کریں۔ عورت کی عقل موسم کی طرح ہوتی ہے جس میں تبدیلی آتی رہتی ہے۔

اس لیے عورت کی محبت میں کبھی بھی حد سے نہ بڑھیں، اپنے آپ کو ہمیشہ قابو میں رکھیں۔

بعض لوگ میں نے دیکھے ہیں جنھوں نے جلد بازی میں اپنا سارا کچھ (مال، جائیداد، کاروبار) عورتوں پر قربان کر دیا اور عورتوں نے انھیں تگنی کا وہ ناچ نچایا کہ زمانہ دیکھتا رہ گیا۔

## اشتہاروں پر تصویریں

فلمی اشتہاروں کی دیکھا دیکھی دینی اشتہاروں پر تصویریں لگانا چند ہی سال پہلے شروع ہوا تھا اور اب یہ بدعت مساجد میں بھی در آئی ہے۔

نعت خوانوں اور خطیبوں کی تصویروں والے اشتہار لوگ مساجد میں آویزاں کر جاتے ہیں اور نمازیوں کی نماز خراب ہوتی ہے۔

فقہائے کرام رحمھم اللہ نے لکھا ہے:

جس کپڑے پر جاندار کی تصویر ہو، اسے پہن کر نماز پڑھنا مکروہ تحریمی ہے، اور نماز کے علاوہ بھی ایسا کپڑا پہننا ناجائز ہے۔

اسی طرح نمازی کے پاس جاندار کی تصویر لگی ہونا بھی نماز کو مکروہ تحریمی کر دیتا ہے؛ اب تصویر چاہے نمازی کے آگے ہو، دائیں ہو، یا بائیں ۔۔۔۔۔۔ ہر صورت میں مکروہ تحریمی ہے۔ اللہ پاک اس ماہِ میلاد کے طفیل تصویریں بنوانے والوں کو ہدایت دے اور اس بدعت سے بچنے کی توفیق عطا فرمائے!

## تیسرا نکاح

ہمارے شہر کے ایک عالم صاحب نے تیسرا نکاح کیا تو ایک صاحب انھیں برا بھلا کہنے لگے۔

میں نے عرض کی: جناب! نکاح کی وجہ سے کسی کو برا بھلا کہنا بہت برا کام ہے، جس چیز کو اللہ پاک نے حلال کیا ہے وہ بری نہیں ہوتی، اس میں خیر ہی خیر ہوتی ہے۔

برا کام زنا کرنا ہے (معاذاللہ) جسے رب تعالی نے برا قرار دیا ہے، نکاح کرنا نہیں!

فقہ حنفی کی معتبر کتاب در مختار میں ہے:

"ایک مرد کی چار بیویاں اور ایک ہزار لونڈیاں ہوں، اور وہ مزید ایک لونڈی خریدنے کا ارادہ کرے تو ایک آدمی (اس کے اِس فعل کو برا سمجھتے ہوئے) اُسے ملامت کرے، تو اُس ملامت کرنے والے پر کفر کا خوف ہے۔"

(در مختار، کتاب النکاح، فصل فی المحرمات)

کوئی صاحب استطاعت مسلمان اگر دوسرا، تیسرا نکاح کرتا ہے تو ہمیں اس کے لیے دعاے خیر کرنی چاہیے نہ کہ اس کے فعل کو برا سمجھ کر اپنی آخرت خراب کر بیٹھیں۔

## اپنا حق ل

ایک شخص نے رسول اللہ ﷺ کی خدمت اقدس میں عرض کی:

اے اللہ کے رسول! اگر کوئی شخص آکر میرا مال چھیننا چاہے تو میں کیا کروں؟

آپ نے فرمایا: اُسے اپنا مال نہ دے!

اُس نے عرض کی: اگر وہ میرے ساتھ لڑائی کرے تو؟ فرمایا: تُو بھی لڑ۔

اس نے کہا: اگر وہ مجھے مار دے تو؟

فرمایا: تُو شہید ہو گا۔

اُس نے کہا حضور اگر میں اُسے قتل کر دوں تو؟ آپ نے فرمایا: وہ جہنم میں جائے گا۔

(صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علیٰ ان من قصد اخذ مال غیرہ.....)

اپنا حق لینے کے لیے لڑنا بھی ایک جہاد ہے۔

## توبہ کی توفیق

امام الاولیا سیدنا بشر حافی نور اللہ مرقدہ کے مزار پاک کی زیارت نصیب ہوئی، اللہ اللہ کیا روحانیت ہے یہاں!

آپ فرمایا کرتے تھے: "سارے لوگوں کو توبہ کی توفیق مل جاتی ہے مگر اصحابِ رسول پر تنقید کرنے والوں کو نہیں ملتی، کیوں کہ اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ نے اُن سے توبہ کی توفیق سلب کر لی ہے۔"

(المجالسۃ وجواہر العلم، ج7، ص397، ر2816)

یہاں دعا کی کہ اللہ پاک عمر بھر صحابہ کرام کی ہر قسم کی تنقیص سے محفوظ رکھے، اور میرا خاتمہ ایمان پر فرمائے۔
یہ دعا آپ سب کے حق میں بھی قبول ہو!

## پردہ دری

امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا تھا:
جو دوسروں کی پردہ دری کرے گا، اس کے گھر کے راز بھی فاش ہو جائیں گے۔
(وفیات الاعیان وابناء ابناء الزمان لابن خلکان، ترجمۃ جعفر الصادق، ج1، ص435، ر34، ط دار صادر بیروت)
امام صادق کا فرمان بالکل مبنی بر صدق ہے، واقعی دوسروں کی عزتیں نیلام کرنے والوں کی اپنی عزتوں کے بھی جنازے نکل جاتے ہیں۔
اللہ کریم ہماری حفاظت فرمائے اور ہمیں دوسروں کی پردہ پوشی کرنے والا بنائے۔

## جب مدد مانگو تو اللہ سے مانگو

انبیاے کرام اور اولیاے عظام کو اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کا محتاج سمجھتے ہوئے، اُن سے ایک حد تک استمداد کے جواز پر قرآن، حدیث، آثار اور اقوالِ ائمہ سے دلائل موجود ہیں؛ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بہ ہر حال افضل و اعلا یہی ہے کہ مددگارِ حقیقی جَلَّ جَلَالُہٗ سے مانگا جائے، اور اپنی جملہ فریادیں اسی جَلَّ جَلَالُہٗ کے حضور پیش کی جائیں۔
سید عالم صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا ارشاد ہے:
جب سوال کرو تو اللہ سے کرو، اور جب مدد مانگو تو اللہ سے مانگو۔
(جامع ترمذی، ر2516۔ قال الترمذی رحمہ اللہ: ھذا حدیث حسن صحیح)

تُو ہی بندوں پہ کرتا ہے لطف و عطا، ہے تجھی پہ بھروسا تجھی سے

دعا

مجھے جلوہ پاک رسول دِکھا، تجھے اپنے ہی عِزو عَلا کی قسم!

## کیا گزر جانے والا سال

کیا گزر جانے والا سال ہمیں یہ پیغام دے کر نہیں گیا کہ:
میں چلا گیا ہوں۔۔۔۔۔۔ لیکن اکیلا نہیں گیا، بہت سارے نیک و بد ساتھ لے کر گیا ہوں۔۔۔۔۔۔۔۔ قبرستان جا کر دیکھ لو کتنے ہی کتبوں پر تمھیں 2021ء لکھا نظر آئے گا۔

اے میرے بعد آنے والے نئے سال کی خوشیاں منانے والو، تمھارے دل اللہ کی طرف جھک کیوں نہیں جاتے !!
یہ صبح و شام، یہ دن رات، اور ماہ و سال کا پیدا کرنے والا رب تمھیں کہتا ہے:

اَلَمۡ یَاۡنِ لِلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡ تَخۡشَعَ قُلُوۡبُهُمۡ لِذِكۡرِ اللّٰهِ وَ مَا نَزَلَ مِنَ الۡحَقِّ ۙ

کیا ایمان والوں کے لیے ابھی وہ وقت نہیں آیا کہ اُن کے دل اللہ کی یاد، اور اُس حق کے لیے جھک جائیں جو نازل ہوا۔
اے ایمان والو! اپنے رب کی بات سنو، اس پر دھیان دو اور کہو:
اے ہمارے رب! کیوں نہیں، وہ وقت آگیا ہے۔
ہمیں معاف فرمادے اور ہمارے دل اپنی طرف پھیر دے!

ألم يأن لى يا قلب أن أترك الجهلا
وأن يحدث الشيب المبين لنا عقلا

## ایک ہزار قرآن

قاری ابوالعباس احمد بن نفیس رحمہ اللہ کہتے ہیں:
میں حجاز مقدس سے مغرب کی طرف جارہا تھا تو مصر میں مجھے سید عالم ﷺ کی زیارت نصیب ہوئی اور آپ فرمانے لگے:
ابوالعباس! تو نے مجھے بے چین کر دیا ہے۔ (کہ میرا شہر چھوڑ کر چلا گیا ہے)
اور حضور کا یہ فرمانا اس لیے تھا کہ میں مدینہ پاک میں قبرِ انور کے پاس کثرت سے تلاوت کرتا تھا۔
آپ رحمہ اللہ کے شاگرد نے پوچھا:
استاد صاحب! آپ نے قبرِ انور کے پاس کتنے قرآن پاک ختم کیے؟
تو فرمانے لگے: ایک ہزار قرآن پڑھے۔

(مصباح الظلام فی المستغیثین بخیر الانام علیہ الصلاۃ والسلام فی الیقظۃ والمنام، ص104، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

اللہ اللہ ایک وہ لوگ تھے جو بارگاہِ اقدس میں حاضر ہو کر ہزار ہزار قرآن پاک پڑھ دیتے تھے اور ایک ہم غافل ہیں۔ اللہ و رسول کو قرآن پاک پڑھنے والے بہت پسند ہیں۔
قرآن پڑھنے والوں سے رسول اللہ ﷺ بہت محبت فرماتے ہیں اور اللہ پاک بھی انھیں بے مانگے عطا فرماتا ہے۔
رب تعالی ہمیشہ خلوص نیت، محبت اور شوق سے قرآن پڑھتے رہنے کی توفیق بخشے، اور اس کے طفیل ہمیں بھی رخ زیبا کی دید نصیب فرمائے!

## مسجد میں آنے والا

مسجد میں آنے والا ہر شخص امن میں ہوتا ہے چاہے وہ پرلے درجے کا گناہ گار ہی کیوں نہ ہو؛ یہاں کسی کو عار دلانا،

گالی دینا، یا کسی سے جھگڑا کرنا جائز نہیں۔

سیدعالم ﷺ کا فرمان ہے:

خُصُومَاتکُمْ ، ورَفعَ أَصوَاتکُمْ ، وَإِقَامَة حدُودکُمْ

مسجدوں کو جھگڑوں، اونچی آوازوں اور حدود قائم کرنے سے محفوظ رکھو۔(سنن ابن ماجہ، ر750)

یہ تو ہر اس مسجد کے متعلق ہے جو رسول اللہ ﷺ کے نام پر بنی۔

رہی وہ مسجد جو رسول اللہ ﷺ نے خود بنائی، اور قیامت تک جس کے پہلو میں تشریف فرما رہیں گے ۔۔۔۔۔۔۔۔

یہاں تو اونچا سانس لینے میں بھی احتیاط چاہیے!! اللہ کریم دانستہ و نادانستہ غلطیاں معاف فرمائے، اور سچی توبہ کی توفیق بخشے!

## سیدِ عالم ﷺ کی خواب میں زیارت

سیدِ عالم ﷺ کی خواب میں زیارت کرنا بہت بڑا شرف ہے ۔۔۔۔۔۔ زندگی بھر کی نیکیاں اس ایک نیکی کا مقابلہ نہیں کر سکتیں۔

اس سعادت کا فقط نیکوں کے حصے میں آنا ضروری نہیں، بعض گناہ گار بھی نواز دیے جاتے ہیں ۔۔۔۔۔۔ البتہ اتنا ضرور ہے کہ زیارت کا سبب اُن کے کرم کے ساتھ، نیکیاں بھی بنتی ہیں۔

اِس لیے طالبِ دیدار کو گناہوں سے بچنا چاہیے اور کثرت سے نیکیاں کرتے رہنا چاہیے۔

بالخصوص اپنا دل مسلمانوں کے بغض سے پاک رکھنا چاہیے، کسی مسلمان کی (چاہے وہ فاسق و فاجر ہی کیوں نہ ہو) غیبت نہیں کرنی چاہیے، چغلی نہیں کھانی چاہیے، کسی مسلمان کو نقصان نہیں پہنچانا چاہیے، نہ کسی کا برا سوچنا چاہیے۔

رسول اللہ ﷺ کو اپنی امت بہت پیاری ہے، اتنے بچے ماں کو پیارے نہیں ہوتے جتنے حضور کو اپنے امتی پیارے ہیں؛ آپ کی امت سے، آپ کی خاطر جتنی محبت کریں گے اتنا ہی آپ ﷺ کا قُرب نصیب ہو گا۔

جسے حق کے دِیدار کی آرزو ہو
وہ دیکھے مِری جان ! چہرہ تمھارا
خدا ہم کو بخشے وہ چشمِ خدا بیں
رہے کچھ نہ پردہ ہمارا تمھارا

## حرم پاک کے خدمت گزار

حرم پاک کے خدمت گزار شُرطوں (پولیس والوں) کی ویسے بڑی ہمت ہے ۔۔۔۔۔۔ لوگ تو انھیں تنگ کرنے میں کوئی کسر نہیں چھوڑتے۔

مطاف میں دو عورتیں بیٹھی تھیں، شرطہ ان کے پاس آیا اور بار بار کہا کہ نماز کا وقت ہونے والا ہے آپ عورتوں والی طرف چلی جائیں، لیکن کیا مجال وہ ٹس سے مس ہوں؛ پھر دوسرا، تیسرا، چوتھا شرطہ آیا اور انھیں اٹھنے کا کہتا رہا لیکن وہ وہیں ڈٹی رہیں؛ اب شرطے نہ تو عورتوں کو ہاتھ لگا سکتے ہیں، نہ دھکے مار سکتے ہیں۔۔۔۔۔۔ زیادہ سے زیادہ تالی بجائیں گے یا چیخیں چلائیں گے۔

یہ طریقہ بہت نامناسب ہے، حرم پاک کے خادموں کو ایسے تنگ کرنا بڑی جسارت ہے۔

ہونا تو ایسے چاہیے کہ یہ جب کہیں اٹھ جاؤ، تو اٹھ جانا چاہیے۔۔۔۔۔۔ راستہ چھوڑنے کا کہیں تو چھوڑ دینا چاہیے۔۔۔۔۔۔ چلنے کا کہیں تو چل پڑنا چاہیے اور رکنے کا اشارہ کریں تو رک جانا چاہیے؛ یہ سب تدبیریں یہ لوگ ہماری آسانی کے لیے کرتے ہیں، ہمیں ان کے ساتھ ہر طرح سے تعاون کرنا چاہیے۔

ہم گناہ گار یہاں اپنے گناہ بخشوانے آتے ہیں، یہاں کے دربانوں کو تنگ کرنے نہیں آتے؛ حرمین طیبین کے باسی ہمارے ساتھ اگر ناروا سلوک بھی کریں، تب بھی ہمارے لائق صبر ہی ہے۔۔۔۔۔۔۔ ان کا گلہ شکوہ بھی ہمیں زیب نہیں دیتا۔

یہاں کی خاک پاک بھی ہماری آنکھوں کا سرمہ۔

اپنی آنکھوں کو عقیدت سے لگا کے رکھ لی
تیری دہلیز کی مِٹی تھی ، اُٹھا کے رکھ لی !

## اپنے حبیب کی محبت عطا فرما

استاذ العلما، شیخ الحدیث علامہ محمد عبد الحکیم شرف قادری رحمہ اللہ فرماتے تھے:

بہت سے حضرات دعا مانگتے ہوئے کہتے ہیں:

یا اللہ، ہمیں اپنے حبیب کی محبت عطا فرما!

سوچنے کی بات یہ ہے کہ محبت دل کے میلان اور تعلقِ خاطر کا نام ہے، جو کسی ہستی سے متعلق ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔ جب کہ اللہ تعالیٰ اور اُس کے حبیب پاک صلی اللہ تعالی علیہ وسلم دو ہستیاں ہیں۔

ایک ہستی واجب الوجود، اور دوسری ہستی ممکن الوجود۔

تو دونوں کی محبت ایک کیسے ہوگئی؟

اس لیے دعا یوں مانگنی چاہیے جس طرح پہلے بزرگ دعا مانگتے تھے کہ:

اے اللہ! ہمیں اپنی محبت عطا فرما، اپنے حبیب اکرم صلی اللہ تعالی علیہ وسلم کی محبت عطا فرما، اپنے پیاروں کی محبت عطا فرما، اور اُن اعمال کی محبت عطا فرما جو ہمیں تیری بارگاہ کا قرب عطا کر دیں۔

اللهم ارزقنا حبك وحب حبيبك الكريم صلى الله تعالى عليه وسلم وحب من يحبك وحب عمل يقربنا إليك

(مقالات شرف قادری، خدا کو یاد کر پیارے، ص232، مکتبہ قادریہ لاہور)

حضرت کے مقالات کا حصہ "خدا کو یاد کر پیارے" ہمیں پہلی فرصت میں پڑھنا چاہیے، بلکہ آج ہی پڑھ لینا چاہیے ۔۔۔۔۔۔۔۔اس میں عوام و خواص میں مروج کچھ چیزوں کی اصلاح کی طرف توجہ دلائی گئی ہے۔

یہ مقالات میں بھی شائع ہوا ہے، اور الگ سے بھی۔

## توجہ کم نہیں کروانی

ایک نیکی کی طرف توجہ دلاتے ہوئے دوسری نیکی سے توجہ کم نہیں کروانی چاہیے۔

مثلا: ایک شخص ہر سال حج اور ہر ماہ عمرہ شریف کرتا ہے تو اسے نوافل اور صدقات کی ترغیب دلاتے ہوئے ایسی تقریر نہیں کرنی چاہیے کہ وہ حج و عمرے میں کمی کر دے۔

بلکہ اسے کہنا چاہیے آپ کا مبارک سفر ہمیشہ جاری و ساری رہے، آپ بار بار حرمین شریفین کی زیارت کرتے رہیں، ہو سکے تو آپ طالب علموں کی مدد بھی کیا کریں، اور مسجد و مدرسے کی خدمت بھی۔ وغیرہ وغیرہ!

ہر کسی کا اپنا ذوق ہوتا ہے جیسا کہ کائنات کی بہترین ہستیاں صحابہ کرام علیہم الرضوان کا بھی اپنا اپنا ذوق تھا۔

کوئی کثرت سے نوافل پڑھتا ہے ۔۔۔۔۔۔ کوئی صدقہ و خیرات کرتا ہے؛ کوئی جہاد میں مصروف رہتا ہے، کوئی تلاوت قرآن میں، تو کوئی بار بار حج و عمرے کی سعادت حاصل کرتا رہتا ہے۔

یہ سب اعمالِ صالحہ ہیں، اور مستقل ہیں؛ ان میں سے ہر ایک کی عنداللہ بہترین جزا ہے۔

ان میں سے ایک کی نفی کر کے، دوسرے کا اثبات کرنا درست نہیں۔

آپ کے ذوق کا تو مجھے علم نہیں، البتہ میرا ذوق یہ ہے کہ اللہ پاک مجھے بار بار، بار بار، بار بار راہِ مدینہ کا مسافر بنائے اور آخر مجھے وہی کی خاک پاک نصیب ہو جائے۔

اللہ ۔۔۔۔۔۔ میرا رب ہے!!

## دور رہنا چاہیے

فیس بک پر کچھ تحریریں ملحدوں اور دہریوں کی بھی ہوتی ہیں، جنھیں معاذاللہ بعض مسلمان بھی پڑھتے رہتے ہیں۔

کسی مریض کے پھوڑے سے بدبودار مواد نکل رہا ہو تو اسے ناک قریب لے جا کے نہیں سونگھتے ۔۔۔۔۔۔۔ ایسے مریض کو صرف ڈاکٹر چیک کرتا ہے اور وہ بھی بغرضِ علاج۔ ملحد، معاشرے کے بدن پر نکلنے والے پھوڑے کی طرح ہوتا ہے جس سے نکلنے والا مواد بڑا بدبودار ہوتا ہے؛ اور اس کی سرانڈ پاخانے سے بھی زیادہ گندی ہوتی ہے ۔۔۔۔۔۔ اس لیے ہر صاف

ستھرے مسلمان کو اس گند سے ہمیشہ دور رہنا چاہیے۔
اسے صرف وہ ڈاکٹر (علمائے کرام) جو کمالِ ایمان کے میڈیکل لباس میں ملبوس ہوں، چیک کر سکتے ہیں تاکہ علاج ہو سکے۔
جس طرح یہ بات یقینی ہے کہ ب سے پہلے الف ہوتا ہے، ت نہیں۔۔۔۔۔۔A کے بعد B آتا ہے C نہیں آتا، چاہے ساری دنیا کے پاگل کہتے رہیں A کے بعد C آتا ہے لیکن کوئی بھی ذی شعور نہیں مانے گا۔
بلا تمثیل اسی طرح، بلکہ اس سے بھی زیادہ یقینی بات یہ ہے کہ:
اللہ پاک، اللہ کریم، اللہ تعالی، اللہ جل جلالہ ہمارا رب ہے، اسی نے ہمیں پیدا کیا ہے اور اسی کی طرف ہم لوٹنے والے ہیں
۔

## میت کے لیے دعا

ثقہ تابعی حضرت عُمَیر بن سعید رحمہ اللہ کہتے ہیں:
میں نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ یزید بن مُکَفَّفْ کا جنازہ پڑھا تو آپ رضی اللہ عنہ نے چار تکبیر کہیں (یعنی چار تکبیر نماز جنازہ پڑھایا)، پھر چل کر میت کے پاس آئے اور کہا:
"اے اللہ! یہ تیرا بندہ ہے، تیرے بندے کا بیٹا ہے، آج اِس کا انتقال ہو گیا ہے، تُو اس کے گناہ بخش دے، اِس کی قبر کشادہ کر دے؛ ہمیں اِس کی بھلائی کا ہی علم ہے، باقی تو بہتر جانتا ہے۔"
(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الجنائز باب فی الدعاء للمیت۔۔۔۔۔۔۔ج ۴، ص ۴۸۳، ر ۱۱۸۲۳، ط الفاروق الحدیثة للطباعة والنشر، س ۱۴۲۹ھ۔ قال المحقق: اسنادہ صحیح)
میں قربان، وہ جانے والا کتنا خوش نصیب تھا جسے مولا علی پاک نے دعا سے نوازا، اور اُس کی نیکی کی گواہی دی۔
اللہ پاک اس کے طفیل ہمارے گناہ بھی بخش دے!
جب جنازہ پڑھ دیا جائے تو اُدھر کھڑے کھڑے میت کے لیے دعا نہیں کرنی چاہیے، بلکہ صفیں توڑ کر میت کے قریب آجانا چاہیے، اور پھر اُسے خوب دعاؤں سے نوازنا چاہیے، جیسے مولا علی پاک نے نوازا۔
اور صرف جنازے کے بعد والی دعا پر ہی اکتفا نہیں ہونا چاہیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔جانے والے کو ہمیشہ دعاؤں میں یاد رکھنا چاہیے، اُسے جانے کے بعد جس چیز کی سب سے زیادہ ضرورت پیش آتی ہے وہ دعا ہے۔

## موٹر سائیکل نے آٹکر ماری

کچھ دیر پہلے موڑ مڑنے لگا تھا کہ تیز رفتار موٹر سائیکل نے آٹکر ماری۔
اللہ پاک کا لاکھ لاکھ شکر کہ گرتے گرتے اپنے پاک پروردگار جَلَّ جَلَالُہٗ کا نامِ پاک ہی زبان پر آیا، جس کی برکت سے کسی بڑی آزمائش سے بال بال بچ گیا۔ ویسے جس طرح دو موٹر سائیکل اور دو سوار میرے اوپر آگرے تھے، بچنے کی امید کم ہی تھی۔

خیر موٹر سائیکل سوار کو لوگوں نے پکڑ لیا اور اس سے باز پُرس شروع کر دی تو میں نے کہا اسے چھوڑ دیں، اس نے کون سا جان بوجھ کے مارا ہے؛ یہ حادثہ مقدر میں تھا سو ہو گیا۔۔۔۔۔۔قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۔

تم فرماؤ: ہمیں وہی (دکھ درد) پہنچے گا جو اللہ نے ہمارے لیے لکھ دیا ہے۔

وہ ہمارا مددگار ہے اور مسلمانوں کو اللہ پر ہی بھروسہ کرنا چاہیے۔

درد کی شدت تھی، ہاسپٹل گیا کہ ایکسرے کرواؤں، کوئی ہڈی نہ ٹوٹ گئی ہو؛ الحمدللہ ایکسرے کلیئر آیا، لیکن درد کم نہیں ہو رہا تھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔نماز کا وقت آپہنچا تو جیسے ہی وضو کیا، تقریباً آدھا درد ٹھیک ہو گیا اور دل کو سکون مل گیا۔

پھر پاس بیٹھے ایک نعت خواں سے کہا کوئی نعت شریف ہی سنا دو تو اس نے جو کلام سنایا وہ ویسے ہی دنیاوی غم دور کر دینے والا تھا کہ ع

" میری عمر مدینے دے ٹبیاں دی تصویر بنا ندیاں گُزر گئی ۔ "

یہاں بتانے کا مقصد، ترغیب دلانا ہے کہ:

حادثے، تکلیفیں، پریشانیاں زندگی کا حصہ ہیں، اور بندۂ مومن کے لیے اجر و ثواب کا ذریعہ۔

پتا نہیں اللہ کی خفیہ تدبیر ہمارے متعلق کیا ہے۔۔۔۔۔۔۔ لیکن زندگی میں ہمیں ایسی عادت ضرور بنا لینی چاہیے کہ جب تکلیف پہنچے، یا کسی حادثے کا شکار ہوں تو سب سے پہلے ہماری زبان پر اپنے پیارے رب کا نام ہی آئے۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ہو سکتا ہے یہ عادت ہمیں حادثۂ موت کے وقت بھی کام آجائے؛ اگر اُس وقت کام آگئی تو زندگی بھر کی کمیاں، کوتاہیاں نذرِ رحمت ہو جائیں گی۔

ویسے بھی دکھ سکھ، اور غمی خوشی میں اپنے رب کو ہی یاد کرنا چاہیے۔۔۔۔۔۔اس کے سوا ہمارا کوئی نہیں!!

## جھگڑا چھوڑ دے

سید عالم، نورِ مجسم ﷺ کا فرمان مبارک ہے:

"جو حق پر ہونے کے باوجود جھگڑا چھوڑ دے، میں اُس کے لیے جنت کے اندر ایک گھر کا ضامن ہوں۔"

اللہ کریم ہمیں اپنے آقا و مولا ﷺ کے اس فرمان مبارک کی عملی تفسیر بنائے!

جس بندے کو گالی نکالنے والے کو جواب دینا آتا ہو۔۔۔۔۔۔ الزام لگانے والے کا منھ بند کرنا بھی جانتا ہو۔۔۔۔۔ آوازے کسنے والوں کی بولتی بھی بند کر سکتا ہو؛ اس کے باوجود وہ خاموش رہے تو یقیناً ماجور ہو گا۔

کچھ سال پہلے محسنِ اہل سنت، صوفی باصفا، امیر دعوتِ اسلامی حضرت مولانا محمد الیاس عطار قادری حفظہ اللہ نے ایک بات سے رجوع فرمایا تھا جب کہ اس میں شرعاً کوئی قباحت نہیں تھی، تو معترضین نے طرح طرح کی باتیں کیں:

کسی نے کہا سافٹ ویئر تبدیل ہو گیا ہے، کسی نے کہا اب آئی ہے سمجھ؛ کسی نے اسے اپنی بہادری سمجھا تو کسی نے گالیوں اور الزام تراشیوں کا ثمرہ جانا؛ کسی نے کچھ، تو کسی نے کچھ کہا۔۔۔۔۔۔۔ لیکن آپ حفظہ اللہ نے کمال تحمل سے کام لیا اور کسی کو کوئی جواب نہ دیا۔

یہی اللہ والوں کی شان ہوتی ہے، ان کی نظر کام پر ہوتی ہے وہ اعتراضات سے صَرف نظر کرتے ہوئے گزر جاتے ہیں۔

اسی طرح حضرت کے تربیت یافتہ اور مریدِ صادق نگران شوری محمد عمران عطاری اطال اللہ عمرہ کے متعلق سوشل میڈیا پر بعض ناعاقبت اندیشوں نے مالی خرد برد اور اقربا پروری جیسے الزامات لگائے جس کا انھوں نے سوشل میڈیا پر جواب دینے کے بجائے اپنا سفر جاری رکھا۔

اِسی طرح حال ہی میں امیر محترم حافظ س ع د دام ظلہ پر طرح طرح کی الزام تراشی کی گئی لیکن انھوں نے بھی جواب در جواب والے سلسلے کے بجائے اپنا دینی سفر جاری رکھنا ہی مناسب سمجھا۔۔۔۔۔ یہی رِیت کام کرنے والے لوگوں کی ہوا کرتی ہے، وہ اسی طریقے سے معترضین کو زیر کیا کرتے ہیں۔

بعض دفعہ فضول لوگوں کی یاوہ گوئی کا جواب امام شافعی کے یہ دو شعر ہوتے ہیں لیکن پھر بھی وہ انھیں یہ شعر نہیں سناتے، بلکہ خاموشی سے گزر جاتے ہیں۔

قل بما شئت فی مسبة عِرضی
فسکوتی عن اللئیم جوابُ
ما اناعادم الجواب ولکن
ما من الاسد ان تجیب الکلاب

مفہوم: کمینہ میرے متعلق جو چاہے کہے، میں اُس کے جواب میں خاموش رہوں گا۔

اِس لیے نہیں کہ میں جواب دینے سے قاصر ہوں..... بات صرف اتنی ہے کہ: "شیر کتوں کا جواب نہیں دیا کرتے۔"

## عیب جوئی

میں نے کئی "معزز" لوگوں کو دوسروں کی عیب جوئی اور تذلیل کرتے دیکھا، اور پھر وہ بھی وقت آیا کہ انھیں خود بری طرح ذلیل و رسوا ہوتے دیکھا۔

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِیَةَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ!

دوسروں کی عزت خراب کرنے والے معزز بھی ایک دن ذلیل ہو جاتے ہیں۔۔۔۔۔ کیوں کہ ڈاکو ہمیشہ مستحق سزا ہوتے ہیں چاہے وہ مال پر ڈاکہ ڈالنے والے ہوں، یا عزتوں پر۔

جب تک اللہ و رسول کی طرف سے واجب نہ ہو جائے کسی مسلمان کی غیبت نہ کیا کریں، نہ کسی کا عیب ظاہر ہونے دیا کریں، نہ کسی کے متعلق دل میں بدگمانی اور کدورت رکھا کریں۔

اگر آپ ایسا کریں گے تو بہت ساری برکتوں کے ساتھ ۔۔۔۔۔۔ سَتَّارُ الْعُیُوب آپ کے عیبوں پر بھی پردہ ڈالے رکھے گا، دنیا آخرت میں آپ کو رسوا نہیں کرے گا۔

## دوسری شادی

مستشرقین جائیں بھاڑ میں، اب تو ہمارے معزز علما بھی دوسرے نکاح سے ڈرانے لگ گئے۔

ایسے لگتا ہے اس معاملے میں انھیں اسوۂ صحابہ و اہل بیت بالکل یاد نہیں رہا۔

کاش یہ معزز ہستیاں اپنی توانائیاں گرل/بوائے فرینڈ جیسے ناپاک رشتوں کو ختم کرنے میں صَرف کرتیں، اور دوسرے نکاح کے اسلامی آداب و احکام سکھاتیں!!

دوسرے نکاح سے روکنے کے لیے، ان ہستیوں کے دلائل بالکل "خاندانی منصوبہ بندی" والوں جیسے ہیں۔

ان دونوں علما نے جس آیت کریمہ کے دوسرے پہلو پر زور دیا ہے، اس آیت کا ایک تیسرا پہلو: اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ بھی ہے ۔

ہماری گزارش ہے کہ نیچریوں اور لبرلوں سے متاثر ہوئے بغیر، اس پہلو کی توضیح کریں۔

اور موجودہ دور میں اس کا اطلاق و حل پیش کریں!

فطرت بنانے والے رب نے مرد و عورت کے معاملات کی جو تقسیم فرما دی ہے، دنیا بھر کا کوئی عقیل نہیں کر سکتا۔

وہ خالق فرماتا ہے:

اِنَّا كُلَّ شَیْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ ۔ بے شک ہم نے ہر چیز ایک اندازے سے پیدا فرمائی ہے۔

اگر مرد کو انصاف کرنے کی صورت میں چار شادیوں کی اجازت دی ہے تو یہ بھی اسی کا اندازہ ہے۔

اور اگر ایک بیوی اور متعدّد کنیزوں کی اجازت مرحمت فرمائی ہے تو یہ بھی اسی کی تقسیم ہے۔

آپ اس تقسیم کی حمایت میں لوگوں کی ذہن سازی کریں، نیچریت زدہ طبیعتوں کی خوشنودی کے لیے کدو کاوش نہ فرمائیں۔

ان دونوں نفوس قدسیہ کے متعلقین و محبین سے گزارش ہے کہ ہم پر طعن کرنے سے پہلے یہ ذہن نشین کر لیں کہ:

ہم ان ہستیوں کا بے حد احترام کرتے ہیں، ہماری کیا مجال "اِن کے خلاف" لب کشائی کریں؛ ہمیں صرف "ان کے اندازِ تفہیم" سے علمی اختلاف ہے، اور ہم اس کے غلط ہونے پر عقلی و نقلی دلائل پیش کرنے کا حق رکھتے ہیں۔

# (3) تیسرا باب: عشق

اس باب میں عشق حقیقی اور مجازی دونوں سے متعلق تحریریں ہیں۔

## کتاب ذم الھوی

ایک شخص کو عشق کی بیماری لگ گئی۔ اُس نے امام ابن جوزی رحمہ اللہ سے علاج دریافت کیا تو آپ نے بہت پیارا نسخہ تجویز کیا، جو کتاب کی صورت اختیار کر گیا۔ آپ رحمہ اللہ نے اس کتاب کو پچاس ابواب میں تقسیم کر کے "ذم الھوی" نام رکھ دیا۔

یہ کتاب اگر ایسے مردوں، عورتوں کے لیے مفید ہے جو مرضِ عشق میں مبتلا ہیں، تو ان کے لیے بھی بہت مفید ہے جو اِن چکروں میں نہیں پڑے۔

سچ کہوں تو یہ کتاب بندے کو رب تعالیٰ کے بہت قریب کر دیتی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

جب بندہ اپنے رب کے قریب ہو جاتا ہے تو پھر اس سے کچھ بھی دور نہیں رہتا۔ میرے علم کے مطابق ابھی تک اس کا مکمل اردو ترجمہ نہیں ہوا تھا۔ میں نے اپنے ایک پیارے سے ترجمے کی درخواست کی تو انھوں نے ہامی بھر لی اور آج ہی ترجمے کی ابتدا کر دی۔ دعا کریں اللہ تعالی مترجم کو پورے خلوص کے ساتھ ترجمہ مکمل کرنے کی توفیق عطا فرمائے، اور اِسے مسلمانوں کے لیے نافع بنائے۔ یہ کتاب اپنی مثال آپ ہے، جو اسے پڑھے گا انشاء اللہ نفع اٹھائے گا۔ (مترجم میری فیس بک فرینڈ لسٹ میں شامل ہیں، لیکن انھوں نے اپنا نام ظاہر کرنے سے منع کر دیا ہے۔ اہل علم کوئی مشورہ دینا چاہیں تو کمینٹ میں دے سکتے ہیں، وہ مفید مشوروں پر عمل کریں گے، انشاء اللہ!)

بعض کتابیں جو میں نے بڑے شوق سے خرید کر پڑھیں اور بار بار پڑھتا ہوں۔ ان میں ذم الھوی، کتاب الاذکیا اور اخبار الحمقیٰ بھی ہیں۔ یہ تینوں کتابیں امام ابن جوزی رحمہ اللہ کی ہیں۔ آپ رحمہ اللہ بہت بڑے عالم تھے، آپ نے تقریباً بیس ہزار کتابوں کا مطالعہ کیا اور اپنے ہاتھ سے دو ہزار جلدیں لکھیں۔ حتیٰ کہ امام ذہبی جیسے ماہرِ فنِ رجال کو بھی کہنا پڑا کہ: "میری معلومات کے مطابق ابن جوزی جتنی کتابیں کسی عالم نے نہیں لکھیں۔"

آپ رحمہ اللہ بہت نیک تھے، کوئی مشتبہ چیز نہیں کھاتے تھے۔ ہر ہفتے ایک قرآن پاک مکمل کرنا آپ کی عادت تھی۔ آپ رحمہ اللہ کے دستِ مبارک پر ایک لاکھ بندے نے توبہ کی اور بیس ہزار کافر مسلمان ہوئے۔

آپ رحمہ اللہ سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کی اولاد سے تھے، اور اُنھی کی افضلیت کے قائل تھے۔ ایک شیعہ وزیر نے آپ پر خارجی ہونے کا الزام لگایا، اور حکومت نے آپ کو پانچ سال تک نظر بند کیے رکھا۔ اللہ تعالی آپ کی تربت انور پر کروڑوں رحمتوں کا نزول فرمائے!

## دھرنے والے

مجھ سے ایک دوست کہنے لگے:

دھرنے والوں کو اتنے دن ہو گئے، یہ سردی، دھند، بارش اور حکومتی مخالفت کے باوجود ٹس سے مس نہیں ہو رہے، سمجھ

نہیں آتی یہ کیا ہیں!

میں نے انھیں کہا: ایک شخص کو اپنی جاریہ سے شدید محبت تھی، وہ سخت بیمار ہوگئی۔

یہ اُس کے لیے کچھ نرم چیز پکانے بیٹھا، تو اُس کے منہ سے (تکلیف کے سبب) آہ نکلی۔

اِس کے ہاتھ سے پکانے والا چمچہ گر گیا اور اُس کی جگہ اپنا ہاتھ ہانڈی میں پھیرتا رہا:

"حتی سقط لحم اصابعه وهو لا يشعر"

حتیٰ کہ انگلیوں کا گوشت جھڑ گیا اور اِسے خبر تک نہ ہوئی۔

جب جاریہ کی نظر پڑی تو پوچھنے لگی: یہ کیا؟ اُس نے جواب دیا:

"هذا موضع قولك اوه"

تیری آہ نے اس مقام تک پہنچا دیا!

(ذم الھوی، الباب التاسع والثلاثون، فی ذکر الآفات التی تجری علی العاشق، ص252، رقم902، دار الکتاب العربی بیروت 1424ھ)

اگر ایک عام عورت سے محبت کرنے والے کی یہ کیفیت ہو سکتی ہے تو جن کی محبت کا محور وہ ذاتِ پاک ہے جس کی مثال ساری کائنات میں نہیں ملتی، اُن پر زمانے کی یہ سختیاں بھلا کیسے اثر انداز ہو سکتی ہیں!!

انوکھی وضع ہے ، سارے زمانے سے نرالے ہیں
یہ عاشق کون سی بستی کے یا رب رہنے والے ہیں!

## ناموس رسالت پر پہرا

حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اسلام قبول کرنے کی پاداش میں ابوجہل منہ کے بَل دھوپ میں لٹا دیتا اور اوپر چکی کا پاٹ رکھ کر کہتا: اکفر برب محمد۔ کر محمد کے رب کا انکار! لیکن

آپ احد کہتے رہتے (یعنی اللہ ایک ہے)، ایک دن ورقہ بن نوفل پاس سے گزرے، اور آپ کو اس تکلیف میں دیکھ کر کہنے لگے: "اے بلال احد احد کہتے رہو، اللہ کی قسم اگر تم اسی حالت میں انتقال کر گئے تو ہم تمھاری قبر کو رحمت کا وسیلہ بنائیں گے" (اسد الغابة فی معرفة الصحابة، ج1، ص237، رقم493، دار المعرفة بیروت 1428ھ)

اے ناموس رسالت پہ پہرہ دینے والے علمائے کرام!

اگر تم اسی حالت میں شہید کر دیے گئے تو تمھاری قبریں بھی رحمت الٰہی کا وسیلہ ہوں گی!!

## بیمارِ عشق کا علاج

ایک آدمی کسی کے عشق میں مبتلا ہو گیا، اُس نے امام ابن جوزی رحمہ اللہ سے شکایت کرتے ہوئے اپنے مرض کی دوا طلب کی؛ امام صاحب نے اس کے علاج پر (چار سو سے زائد صفحات پر مشتمل) کتاب: "ذَمُّ الْهَوَى" لکھی؛ اِس کتاب میں

عاشقی معشوقی پر ہر جہت سے عمدہ کلام فرمایا اور آخر میں ناکام عاشقوں کے لیے کچھ دوائیاں بھی تجویز فرمائیں، جن میں سے یہ بھی تھیں:

"مریضِ عشق کو ترچیزیں کھلائی جائیں، بنفشہ اور نیلوفر سنگھائے جائیں، ہلکا پھلکا نہلایا جائے، زیادہ دیر سُلایا جائے، مرطوب غذائیں استعمال کرائی جائیں، خوب صورت باغ کا صاف پانی دکھایا جائے (پہاڑی علاقوں کے چشمے بھی دکھائے جاسکتے ہیں)، ہنسنے کھیلنے والی باتیں سنائی جائیں -عاشقِ ناشاد سفر کرے، روزگار کی تلاش اور کاروبار میں مشغول ہوجائے کیوں کہ:

لان العشق شغل الفارغ

عشق فارغ بندے کا کام ہے (مصروف کا نہیں)-

بیماروں کی عیادت کرے، جنازوں میں شرکت کرے، قبروں کی زیارت کرے، مردوں کو دیکھے، موت اور اُس کے بعد والے معاملات میں غور وفکر کرے، نیک لوگوں کے واقعات سنے.....ان دوائیوں کے استعمال سے، (اللہ نے چاہا تو) مرضِ عشق سے شفا مل جائے گی-"

(ذم الھوی، الباب التاسع والاربعون، فی ادویۃ العشق، فصول فی معالجۃ الظاھر، ص 415،418)

## دعاے محبت

سیدہ ام عطیہ رضی اللہ عنہا کہتی ہیں:

رسول خدا ﷺ نے ایک لشکر روانہ کیا، جس میں حضرت علی بھی تھے-

میں نے سُنا، رسول اللہ ہاتھ اٹھا کر دعا مانگ رہے تھے:

"اے اللہ! مجھے اُس وقت تک دنیا سے نہ اٹھانا جب تک علی کو نہ دیکھ لوں"

(سنن ترمذی، ج5، ص643، ر3737، طبع مصر-امام ترمذی کہتے ہیں: یہ حدیث حسن غریب ہے)

میں قربان اِس انداز محبت پر!!

اے اللہ! ہمیں بھی اُس وقت تک موت نہ دینا، جب تک مولا علی پاک کی محبت میں کامل نہ ہوجائیں!!

## متاعِ مسلم

ایک شخص نے مجھے کہا:

دنیا جہان کی برائیاں میرے اندر ہیں، میں نے شاید ہی کوئی نیکی کی ہو-

لیکن میرے دل میں نبی پاک کی بہت زیادہ محبت ہے؛ کیا میری بخشش ہوجائے گی؟؟؟

میں اُس کی بات سن کر بے ساختہ رونے لگا، اُس کے ہاتھ چوم کر کہا:
میرے سینے سے لگ، شاید تیرے سبب اللہ مجھے بخش دے!!

## اللہ کریم اُسے اس کے پیارے سے ملا دے!!

ایک بامُرَوَّت شخص سے ملاقات ہوئی، جو کسی کی محبت میں مبتلا ہے، اور ہَمہ وقت دعا میں مشغول رہتا ہے۔
اللہ کریم اُسے اس کے پیارے سے ملا دے!!

میں نے اسے کہا: مدینہ پاک کی طرف منھ کر کے، یہ اشعار بھی پڑھا کرو، تم پر ایک دن ضرور کرم ہو گا۔

دِل دَرد سے بِسْمِل کی طرح لَوٹ رہا ہو
سینے پہ تَسلّی کو تِرا ہاتھ دَھرا ہو
میں کیوں کہوں۔۔۔۔۔۔مُجھ کو یہ عطا ہو، یہ عطا ہو؟؟
وہ دو کہ ہمیشہ مِرے گھر بَھر کا بَھلا ہو!!
جس بات میں مشہورِ جہاں ہے لَبِ عیسیٰ
اے جانِ جہاں! وہ تِری ٹھوکر سے اَدا ہو
تُم کو تو غُلاموں سے ہے کچھ ایسی محبَّت
ہے تَرکِ اَدَب ورنہ کہیں ہم پہ فِدا ہو!
وِیراں ہوں جب آباد مَکاں صُبحِ قِیامت
اُجڑا ہوا دل آپ کے جَلووں سے بَسا ہو
مِٹّی نہ ہو برباد پَسِ مَرگ اِلٰہی!
جب خاک اُڑے میری، مدینے کی ہَوا ہو
دے ڈالیے، اپنے لَبِ جاں بَخش کا صدقہ
اے چارۂ دل! دَردِ حَسَن کی بھی دوا ہو

## مقدس جذبات

صحابیِ رسول حضرت حذیفہ بن یمان رضی اللہ عراق گئے، تو ایک تابعی رحمہ اللہ نے آپ سے کہا:
"اگر ہمیں رسول اللہ ﷺ کی خدمت کا موقع ملتا تو ہم حضور کو زمین پر نہ چلنے دیتے، ہمیشہ اپنی گردنوں پر اٹھائے رکھتے۔
میں قربان! کیسے مقدس جذبات تھے۔

ایسے جذبات کا اظہار، آج کوئی امتی کر بیٹھے تو بعض لوگ کہتے ہیں:

کیا تم صحابہ سے بڑھ کر عاشق رسول ہو؟؟

انھوں نے تو ایسا نہیں کیا!!

اس میں کوئی شک نہیں کہ ہم منزلِ عشق میں صحابہ کی گردِ راہ بھی نہیں پا سکتے۔ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

ہمارے اندر ایک دل ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، اُس دل میں ایک گھر ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، اُس گھر میں ایک نِہاں خانہ ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، اُس نِہاں خانے میں، حضور ﷺ رہتے ہیں۔ ہمیں حضور ﷺ کے حضور، دل کی کہنے سے کسی کو نہیں روکنا چاہیے۔

## جدائی کا غم

فجر کے بعد ایک بزرگ روٹی دم کروانے آئے اور مجھے دیکھتے ہی رونے لگ گئے۔

میں نے پوچھا: کیا ہوا؟

کہنے لگے: میری بھینس سخت بیمار ہے، ڈرتا ہوں کہ کہیں دم نہ توڑ جائے۔

آپ نے دیکھا ہو گا کہ قربانی کے دن بعض بچوں کے آنسو نکل آتے ہیں۔ کیوں؟

اس لیے کہ جس سے انھیں محبت ہوتی ہے، وہ ان سے جدا ہو رہا ہوتا ہے۔

پچھلے دنوں میں نے کافی لوگوں سے پوچھا کہ:

"آپ نے زندگی میں سب سے بڑی پریشانی کون سی دیکھی؟"

تو تقریباً اکثر کا جواب یہی تھا کہ:

"غمِ جُدائی۔"

والدین کی جدائی، اولاد کی جدائی، دوست احباب کی جدائی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

واقعی جب پیارے جدا ہوتے ہیں تو غم کے پہاڑ ٹوٹ پڑتے ہیں، آنسو بہنے لگتے ہیں، دل پریشان ہو جاتا ہے، کھانا پینا چُھوٹ جاتا ہے، چین سکون چِھن جاتا ہے، نیند اُچٹ جاتی ہے۔

غم جدائی اگرچہ بڑا مسئلہ ہے، لیکن ناقابل حل نہیں؛ اس کا حل موجود ہے۔

اگر آپ جدائی کے غم پر جلدی قابو پانا چاہتے ہیں، یا اپنے پیارے کو حاصل کرنا چاہتے ہیں تو ایک مجرب عمل بتاتا ہوں، جو تعویذوں اور وظیفوں سے بھی جلدی اثر کرنے والا ہے۔

اور وہ ہے: "سچے دل سے دعا کرنا۔"

میرا یقین ہے، جب کوئی صدقِ دل، اور یقینِ کامل سے، اپنے رب سے مانگتا ہے تو وہ کریم اسے عطا فرما دیتا ہے۔

میں جب قرآن پاک حفظ کرتا تھا تو میری ایک نیک سیرت طالب علم سے دوستی ہو گئی۔

اللہ اللہ کر کے دن گزرتے رہے۔

کسی وجہ سے اُسے مدرسہ چھوڑنا پڑا اور وہ گھر چلا گیا۔

مجھے اس وقت تو کچھ بھی محسوس نہ ہوا، لیکن جب وہ سامان وغیرہ سمیٹ کر مدرسے سے نکلا تو پھر جدائی کا احساس ہوا اور بڑی شدت سے ہوا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

کیوں کہ وہ ہمیشہ کے لیے گیا تھا، اور واپس نہ آنے کے لیے گیا تھا۔

میں بہت پریشان ہوا کہ اب کیا کیا جائے!

سارا دن اسی پریشانی میں گزر گیا۔

آخر مغرب کے بعد وضو کر کے دو نفل پڑھے اور رو رو کے اس کے واپس آنے کی دعا کی۔

اللہ جانتا ہے، میرے آنسو خشک بھی نہیں ہوئے تھے کہ وہ آدھمکا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

کہنے لگا: میرا دل اتنا بے چین ہوا کہ میں رہ نہیں سکا اور ساری مجبوریاں پسِ پشت ڈال کر واپس آگیا ہوں اور اب یہیں پڑھوں گا۔

محبت میں کوئی کیا دے سنبھالا
تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ تَعالیٰ

خیر اس کے واپس آجانے کے بعد، میں نے سوچا:

یہ بات تو ٹھیک نہیں کہ جس نے اچانک جدا ہو جانا ہو، اس سے اتنی زیادہ محبت کی جائے۔

بے حد و انتہا محبت صرف اس ذات سے کرنی چاہیے جس نے ہمیشہ رہنا ہے، اور کبھی ساتھ نہیں چھوڑنا جَلَّ جَلَالُہٗ۔

## ناکام محبت

ایک نوجوان مجھے کہنے لگا:

میں کسی سے بے حد محبت کرتا تھا، میں نے اسے پانے کے لیے بہت جَتَن کیے، کافی مَنّتیں مانیں، بڑے روزے رکھے؛ اُسے تہجد میں مانگا، سجدوں میں مانگا، مسجدوں اور درگاہوں میں مانگا، لیکن ناکام رہا۔

بتائیں میں کیا کروں؟

میں نے کہا:

دس سال پہلے کی بات ہے، ڈاکٹر جاوید کا چار سالہ بیٹا ریحان پان والی دکان کے سامنے زور زور سے چِلّا رہا تھا اور کہہ رہا تھا:

ابو مجھے پان لے کے دیں، میں نے پان ضرور کھانا ہے۔

باپ پیار سے سمجھا رہا تھا:

دیکھو بیٹا! یہ بچوں کے لیے سخت نقصان دہ ہوتا ہے، اس کے اجزاے ترکیبی بچوں کا منھ، گلا اور معدہ خراب کر دیتے ہیں۔
لیکن وہ بالکل نہیں مان رہا تھا، روئے جا رہا تھا اور کہہ رہا تھا:
اتنے سارے لوگ کھا رہے ہیں، کسی کا بھی منھ اور معدہ خراب نہیں ہو رہا، میرا کیوں ہو گا۔
باپ: بیٹا! تم چاہے ضد کرو، یا چیخو چلّاؤ، میں تمھیں پان نہیں لے کے دے سکتا؛ تم نہیں جانتے، میں جانتا ہوں کہ یہ ابھی تمھارے لیے بہتر نہیں۔ بیٹا وہاں کھڑا بہت دیر تک روتا رہا، منتیں کرتا رہا، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔
ڈاکٹر صاحب اسے پان دینے کے بجائے پیار کرتے رہے، اس کے آنسو پونچھتے رہے اور کہتے رہے:
کوئی بات نہیں، بچہ ہے؛ اسے ابھی بُرے بھلے کی پہچان نہیں، یہ رو رو کے آخر چپ کر جائے گا لیکن بڑے نقصان سے بچ جائے گا۔
میں اس کے بدلے اسے اچھے اچھے کھلونے اور کھانے پینے کی چیزیں لے دوں گا جن سے اس کا دل بہل جائے گا۔
پھر اسی طرح ہوا کہ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ریحان تھک کر خاموش ہو گیا۔
کچھ دن پہلے اسی ریحان کو، پان والی دکان کے پاس دیکھا کہ پان خرید رہا ہے، تو مجھے دس سال پرانا منظر یاد آ گیا۔
میں نے پوچھا: بیٹا! اکیلے آئے ہو؟
کہنے لگا: ابو جی بھی ساتھ ہیں، سامنے گاڑی میں بیٹھے ہیں۔
مجھے دیکھ کر ڈاکٹر صاحب گاڑی سے اتر آئے اور پرتپاک طریقے سے ملے۔
میرے پوچھنے پر مسکرا کے کہنے لگے:
”ریحان مناسب عمر تک پہنچ گیا ہے، اس لیے کبھی کبھی اسے پان لے دیتا ہوں۔
جب منع کرتا تھا تو محبت کی وجہ سے کرتا تھا، اور اب فرمائش پوری کرتا ہوں تو بھی محبت کی وجہ سے کرتا ہوں۔“

میرے پیارے!

اگر آپ نے اپنے محبوب کو اتنا مانگا ہے، پھر بھی نہیں ملا تو اس کا یہ مطلب نہیں کہ آپ کی دعائیں قبول نہیں ہوئیں، اور نہ یہ مطلب ہے کہ آپ کو آپ کی چاہت ملے گی ہی نہیں۔
اس کا مطلب ہے: ”آپ کا رب آپ سے بہت زیادہ محبت کرتا ہے۔“
آپ نہیں جانتے، وہ جانتا ہے کہ آپ کو کس وقت دینا ہے، کتنا دینا ہے، اور کیا دینا ہے۔
جب وقت آئے گا تو وہ کریم آپ کو بہت کچھ عطا فرما دے گا، آپ خاطر جمع رکھیں۔

## علاج بِالمحبت

کل ایک مریض کی عیادت کے لیے گیا۔

وہ چارپائی پر دراز تھا اور نیم بے ہوشی کی حالت میں تھا۔
میں نے سلام کر کے، حال چال پوچھا، مگر وہ صحیح طرح جواب نہ دے سکا۔
میں نے اس کی حالت سے اندازہ لگا لیا کہ اسے کوئی صدمہ لاحق ہے۔
میں نے اسے تعویذ دینے کے بجائے "علاج بالمحبت" کرنے کی ٹھانی۔
اور وہ ایسے کہ:
اُس کے سامنے، اس کے ایک دوست کا تذکرہ چھیڑ دیا۔
اُس نے جوں ہی اپنے پیارے کا نام سنا تو آنکھیں کھول کر مجھے دیکھنے لگا۔
پھر خود ہی اُس کی باتیں سنانی شروع کر دیں۔
میں پورے انہماک سے سنتا رہا، مسکراتا رہا اور ہاں میں ہاں ملاتا رہا۔
الحمدللہ وہ مریض جو بالکل بے سدھ پڑا تھا، "علاج بالمحبت" نے اسے بولنا سکھا دیا۔

آپ جب کسی صدمے والے مریض کے پاس جائیں تو اس کے سامنے، اس کے کسی پیارے کا تذکرہ چھیڑیں، اور پھر اسی کی زبانی مزید سننے کے لیے ہمہ تن گوش ہو جائیں، اور زیادہ باتیں اسی کی سنیں، اپنی کم سنائیں۔
ایسے مریض کے سامنے مایوسی والی کوئی بات نہ کریں، نہ اپنا دکھ درد بیان کریں۔
ہو سکے تو اس کی اتنی دیر تک باتیں سنتے رہیں، جب تک وہ خود خاموش نہ ہو جائے۔
اس طرح کرنے سے اس کے دل کا بوجھ کافی حد تک ہلکا ہو جائے گا۔
اسے حوصلہ دیں، ہمت بندھائیں اور ارحم الرحمین جَلَّ جَلَالُہٗ کی رحمت کا یقین دلاتے ہوئے کہیں:
انشاءاللہ آپ بہت جلد ٹھیک ہو جائیں گے، ابھی آپ نے بڑی بہاریں دیکھنی ہیں۔

## اولاد کے جذبات

میں نے ایک آدمی کو دیکھا جو اپنی بیٹی کو صرف اس لیے زدوکوب کر رہا تھا کہ اس نے یہ کیوں کہا:
"ابو جی میرا فلاں جگہ نکاح کر دو!"
مجھے بہت ترس آیا۔ میں نے اسے کہا:
میرے بھائی! اسے بالکل نہ مارو، جب بیٹا بیٹی بول کر کہہ دیں تو ان کا نکاح کر دینا چاہیے۔
ویسے بھی باپ کے لیے بہت ضروری ہے کہ بیٹی کا نکاح کرنے سے پہلے اُس کی رائے لے، اگر اس کا دل کسی اور طرف مائل ہو تو اس کا لحاظ کرے، تاکہ بعد میں فتنہ پیدا نہ ہو۔
عشق بہت بڑی بیماری ہے، اس سے بڑی بیماری کیا ہو سکتی ہے!!

(ملخصًا: المبسوط للسرخسی، کتاب النکاح، ج4، ص192، 193، داراحیاء التراث العربی بیروت)

بعض بچے جب جوانی کی دہلیز پر قدم رکھتے ہیں تو ان میں عشق و محبت والی حس بیدار ہو جاتی ہے۔

یہ ایک فطرتی ذوق ہے، جس کے ساتھ مقابلہ نہیں کیا جاسکتا۔

ہاں والدین کا یہ فرض ضرور ہے کہ اس کا درست راستہ متعیّن کریں۔

مشہور صوفی اور ولی اللہ، حضرت یحیی بن معاذ رازی رحمہ اللہ سے کسی نے کہا:

آپ کا بیٹا فلانی عورت پر عاشق ہو گیا ہے۔

آپ نے فرمایا: ساری تعریف اس اللہ کے لیے ہے جس نے میرے بیٹے کو انسانوں والی طبیعت عطا فرمائی۔

(انظر: الداء والدواء، ص508، ط دار عالم الفوائد مکة المکرمة، س1429ھ)

ایک عربی شاعر کہتا ہے:

اذا انت لم تعشق ولم تدر ما الهوى

فقم واعتلف تبنا فانت حمار

جب تم کسی پر عاشق نہیں ہوئے تو تم نے محبت کو سمجھا ہی نہیں، اس لیے اٹھ کر گھاس چرو، تم گدھے ہو۔

(اور محبت بھرے جذبات کو سمجھنا انسانوں کا کام ہے، گدھوں کا نہیں!)

اس سلسلے میں کچھ گزارشات ہیں:

1: شروع سے ہی اپنے بچوں کی نگرانی کریں اور انھیں غیر محرم عورتوں/مردوں میں گُھلنے ملنے سے باز رکھیں۔

2: انھیں رسول پاک ﷺ کی محبت سکھائیں تاکہ وہ عشق رسول میں پروان چڑھیں، اور یادِ حضور میں ہی آنسو بہائیں۔

3: اگر آپ شروع سے بچوں کی نگہداشت نہیں کر سکے اور وہ عشقیہ معاملات میں مبتلا ہو گئے ہیں تو اب فطرت کے خلاف جنگ نہ کریں، بلکہ ان کے نکاح کا بندوبست کریں۔

4: آپ کا بیٹا/بیٹی جس جگہ نکاح کے لیے مصر ہو اگر وہ لوگ آپ کی سمجھ سے باہر ہیں تو بچوں کو پیار اور دلیل سے سمجھائیں، اگر ان کے معاملات حد سے بڑھے نہ ہوئے تو مان جائیں گے۔

لیکن اگر معاملات حد سے تجاوز کر گئے ہوئے تو آپ مان جائیے گا۔

5: جس طرح آپ بچپن سے اپنے بچوں کی ہر خوشی کا لحاظ رکھتے آئے ہیں، اسی طرح نکاح کے معاملے میں بھی رکھیں۔

بہت دفعہ ایسے ہوا ہو گا کہ آپ کے بیٹے/بیٹی نے آپ کے خلافِ مزاج کام کیا، لیکن آپ ان کی خوشی کے لیے خاموش رہ گئے، اور انھیں دعائیں دے کر اپنا دل صاف کر لیا۔

اسی طرح نکاح کے معاملے میں بھی ان کی پسند کا لحاظ کریں، اور انھیں دعاے خیر سے نواز کر چپ ہو جائیں، اللہ پاک بہتر کرے گا۔

## محبت

قرآن پاک میں اللہ کریم نے محبت کا تذکرہ فرمایا تو کہا:

يُّحِبُّهُمْ وَ يُحِبُّوْنَهٗ۔ اللہ کو ان سے محبت، اور انھیں اللہ سے محبت۔

اور ذکر کے متعلق فرمایا:

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ۔ تم میرا ذکر کرو، میں تمھارا ذکر کروں گا۔

آخر اس کی کیا وجہ ہے کہ جب محبت کا تذکرہ ہوا تو پروردگار نے پہلے اپنی محبت کا اظہار فرمایا، اور جب ذکر کی باری آئی تو پہلے ہمیں یاد کرنے کا حکم فرمایا؟

حضور غوث پاک رحمہ اللہ کہتے ہیں:

ذکر مقامِ طلب ہے، اس لیے یہاں بندوں کو طلب کا حکم فرمایا۔ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

محبت تحفہ الٰہیہ ہے، جو بندے کے اختیار میں نہیں؛ اس لیے مالک جَلَّ جَلَالُہٗ نے اپنی محبت کو بندوں کی محبت پر مقدم رکھا۔

(نزهة المجالس ومنتخب النفائس، باب المحبة، ص 54، مكتبة مشكاة الاسلامية)

اللہ پاک ہمیں اپنی اور اپنے حبیب پاک کی کامل محبت نصیب کرے، اور اسی محبت پر موت عطا فرمائے!

جے لکھ زُہد عبادت کریئے ، بِن عِشقوں کِس کاری ؟
جاں جاں ، عِشق نہ ساڑے تینوں ، تاں تاں نِبھے نہ یاری
جِنہاں درد عشق دا ناہیں ، گد پھل پان دیداروں
جے رب روگ عشق دا لاوے ، لَوڑ نہیں کوئی داروں

## عشق سے اللہ کی پناہ

میدانِ عرفات میں، سیدنا عبداللہ بن عباس کے سامنے ایک نوجوان پیش کیا گیا جو اِس قدر کمزور ہو چکا تھا کہ اُس کی ہڈیوں پر ماس بھی باقی نہیں رہا تھا۔

آپ نے پوچھا: اس کے ساتھ ایسا کیوں ہوا؟

لوگوں نے کہا: عشق نے اس کا یہ حال کر دیا۔

اُس دن سے سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہ روزانہ عشق سے اللہ کی پناہ مانگتے تھے۔

(انظر: الداء والدواء، فصل: ودواء هذا الداء القتال، ص497، ط دار عالم الفوائد مكة المكرمة، س1429ھ)

جو خوش نصیب عشق میں مبتلا نہیں ہوئے، انھیں عافیت کی دعا کرنی چاہیے، کیوں کہ ؎

بچتا نہیں ہے کوئی بھی بیمار عشق کا

یارب! نہ ہو کسی کو یہ آزار عشق کا

اور جو مبتلا ہو چکے ہیں، اُنھیں ہمت ہارنے کے بجائے اپنے کرم والے رب کی طرف دیکھنا چاہیے۔
اس کے خزانوں میں کوئی کمی نہیں، وہ جو چاہے، جب چاہے، جیسے چاہے عطا کر سکتا ہے۔
مَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا۔ تیرے رب کی عطا پر کوئی پابندی نہیں۔

اُلجھے ہوئے ذہن کو سُکُوں دیتا ہے
انسان کو سوچ سے فُرُوں دیتا ہے
دیکھا ہو گا کبھی برستا بادل ؟؟
وہ دینے پہ آجائے تو یُوں دیتا ہے!!

## مرضِ عشق

آج ہمارے ایک دوست دنیا سے رخصت ہو گئے، اللہ پاک ان کی مغفرت فرمائے!
متنبی نے سچ کہا تھا:

إنّ القَتِيلَ مُضَرَّجاً بِدُمُوْعِهِ
مِثْلُ القَتيلِ مُضَرَّجاً بِدِمائِه

آنسوؤں میں ڈوبا ہوا، محبت کا مارا، اُسی مقتول کی طرح ہوتا ہے جو اپنے خون میں لتھڑا ہوا ہو۔
میں کچھ سالوں سے ان معاملات پر کافی غور وفکر کر رہا ہوں اور انھیں شرعی، اخلاقی اور موجودہ معاشرتی اعتبار سے دیکھ رہا ہوں۔
میں نے محبت کے مبتلاؤں کو خودکشیاں کرتے دیکھا، پاگل ہوتے دیکھا، گھر بار چھوڑتے دیکھا، خاندانوں کی عزتیں خاک میں ملتی دیکھیں، والدین کو نقل مکانی کرتے دیکھا، ناحق جانیں ضائع ہوتی دیکھیں۔
کچھ ہی دن پہلے کی خبر ہے، پسند کی شادی کرنے پر خاندان کے پانچ افراد قتل کر دیے گئے تھے۔ معاذاللہ ثم معاذاللہ!
کیا ایسی صورت حال میں یہ ضروری نہیں کہ اس مسئلے کا مفید حل نکالا جائے ؟؟
جس دور میں زمین دفینے اُگل رہی ہے، پرانے سے پرانے مرضوں کا علاج دریافت ہو رہا ہے، طرح طرح کے ناقابل یقین عجوبے نظر آرہے ہیں؛ ایسے زمانے میں عشق کو "لاعلاج مرض" کہہ کر دامن چھڑا لینا، بالکل عقل مندی نہیں!!
1: کیا ایسا علاج تجویز نہیں ہو سکتا جس میں یہ بتایا جائے کہ:
مرضِ عشق قابل علاج ہے، لاعلاج نہیں ؟؟
2: کیا دانا لوگ ایسی تجاویز پیش نہیں کر سکتے جس میں عشق کی ہولناکیوں کا بیان نہ ہو، بلکہ شریعت کے دائرے میں رہتے

ہوئے، مقصدِ عشق میں کامیابی کے حصول کا بیان ہو؟

3: کیا ایسے قابلِ عمل مشورے نہیں دیے جاسکتے جنھیں عمل میں لاکر باعزت طریقے سے نکاح کیا جاسکے؟

ایسا ہوسکتا ہے، اور یقیناً ہوسکتا ہے؛ اللہ کرے کوئی اس طرف قدم بڑھائے۔

## عظیم نیکی

زبیدہ خاتون رحمھا اللہ نے مکہ شریف کے راستے میں ایک دیوار پر لکھا دیکھا:

اما فی عباداللہ اوفی امائہ
کریم یجلی الھم عن ذاھب العقل
لہ مقلۃ اما المآقی قریحۃ
واما الحشافالنار منہ عن رجل

کیا اللہ کے بندوں یا باندیوں میں کوئی بھی ایسا سخی نہیں، جو اُس دیوانۂ عشق کا غم غلط کرسکے جس کے گوشہ ہائے چشم زخم خوردہ ہیں، اور مَن کی آگ قدموں تک پہنچ رہی ہے۔

زبیدہ نے منت مانی کہ اگر یہ شعر لکھنے والا مجھے مل گیا تو اسے اس کے محبوب تک پہنچادوں گی۔

یہ جب مقامِ مزدلفہ پہنچیں، تو دیکھا کہ ایک شخص یہی اشعار گنگنا رہا ہے۔

اِنھوں نے اسے بلاکر پوچھا، تو وہ کہنے لگا:

"یہ اشعار میں نے اپنی چچازاد کے لیے لکھے ہیں، جس کے گھر والوں نے قسم کھا رکھی ہے کہ وہ اس کا نکاح میرے ساتھ نہیں کریں گے"

زبیدہ خاتون نے لڑکی کے اہلِ خانہ سے رابطہ کیا اور انھیں بہت سارا مال پیش کرکے نکاح کے لیے راضی کرلیا۔

نکاح کے بعد معلوم ہوا کہ لڑکی، لڑکے سے بڑھ کر اس سے عشق کرتی تھی۔

زبیدہ رحمھا اللہ اپنے اس کام کو عظیم نیکیوں میں شمار کیا کرتی تھیں، اور کہتیں:

"مجھے اس کارِ خیر سے جتنی خوشی ملی، کسی کام سے نہیں ملی؛ میں نے دو محبت کرنے والوں کو جمع کردیا۔"

(انظر: الداء والدواء، ص563، ط دار عالم الفوائد، مکۃ المکرمۃ، س1429ھ)

اللہ کے رحم دل بندے ہمیشہ عشق کے مبتلاؤں پہ رحم کھاتے رہے ہیں؛ کیوں کہ رسول مکرم ﷺ کا فرمان ہے:

لم یر للمتحابین مثل التزوج

دو محبت کرنے والوں کا ہمیں نکاح سے بہتر کوئی حل نظر نہیں آتا۔

اسلام میں بوائے فرینڈ، گرل فرینڈ جیسے ناجائز رشتوں کا کوئی تصور نہیں؛ صرف پسند کے نکاح کی ترغیب ہے۔

اگر مانع شرعی نہ ہو تو محبت کرنے والوں کے نکاح میں ضرور معاونت کرنی چاہیے، جہاں یہ بڑے اجر وثواب کا کام ہے، وہیں عظیم فتنے کے سدباب کا ذریعہ بھی ہے۔

## عورت کی محبت

میرے پاس ایک افسردہ شخص تعویذات کے لیے آیا اور کہنے لگا:

میں نے پسند کی شادی کی تھی، لیکن میری اہلیہ نے زبردستی طلاق لے لی۔

حالاں کہ اس نے ہمیشہ ساتھ نبھانے کا پکا وعدہ کیا تھا اور قسمیں بھی کھائی تھیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اب میں اس کے بغیر رہ نہیں سکتا، میرا کوئی حل نکالیں۔

میں نے تسلی دیتے ہوئے کہا:

آپ کا حل نکالتا ہوں، لیکن اس سے پہلے میری بات سن لیں!

حضرت عاتِکہ بنت زید کا نکاح حضرت عبداللہ بن ابوبکر صدیق سے ہوا تھا۔

آپ ان سے بے حد محبت کرتے تھے، ان کی جدائی بالکل برداشت نہ کرتے۔

اسی وجہ سے جب بعض جنگوں میں شریک نہ ہو سکے تو سیدنا صدیق اکبر نے کہا:

اپنی بیوی کو طلاق دے دو!

آپ نے والد کی اطاعت کرتے ہوئے بادل نخواستہ طلاق (رجعی) تو دے دی، لیکن شدت محبت میں اشعار پڑھتے رہتے تھے۔

ایک دن سیدنا صدیق اکبر نے سنا، وہ کہہ رہے تھے:

اے عاتکہ! میں تجھے اس وقت تک نہیں بھولوں گا جب تک مشرق سے روشنی نکلتی رہے گی اور طوق دار قُمری کُوکُو کرتی رہے گی۔

اے عاتکہ! ہر دن رات میرا دل تجھے یاد کرتا رہے گا، ان جذبات کی وجہ سے جو میرے اندر چُھپے ہیں۔

یہ اشعار سن کر سیدنا صدیق اکبر پر رقت طاری ہوگئی، اور آپ نے فرمایا: رجوع کر لو!

کچھ عرصے بعد جب حضرت عبداللہ رضی اللہ عنہ شہید ہوگئے تو حضرت عاتکہ نے ان کا مرثیہ کہا، جس کا ایک شعر یہ تھا:

فآليت لاتنفك عيني حزينة
عليك ، ولا ينفك جلدي اغبرا

میں نے قسم کھائی ہے کہ میری آنکھیں آپ پر ہمیشہ روئیں گی، اور میرا بدن غبار آلود رہے گا۔

پھر سیدنا عمر فاروق نے حضرت عاتکہ کو پیغامِ نکاح بھیجا، جسے آپ نے قبول کر لیا۔
ولیمے پر حضرت علی بھی موجود تھے؛ آپ کہنے لگے:
امیر المومنین! اجازت دیں میں عاتکہ سے بات کرنا چاہتا ہوں۔
اجازت ملنے پر آپ نے دروازے کی اوٹ میں کھڑے ہو کر کہا:

یاعدية نفسها اين قولك ۔

اے اپنی جان کی دشمن، تیرا یہ قول کہاں گیا:

فآليت لاتنفك عيني حزينة
عليك ولا ينفك جلدي اغبرا

(کہ اے عبداللہ!) میں نے قسم کھائی ہے میری آنکھیں تم پر ہمیشہ روئیں گی، اور میری جلد غبار آلود رہے گی۔
یہ سن کر حضرت عاتکہ رو پڑیں۔
سیدنا عمر کہنے لگے: اے ابوالحسن! آپ کو یہ بات دہرانے کی کیا ضرورت پیش آگئی؟

كل النساء يفعلن هذا ۔

ساری عورتیں اسی طرح کرتی ہیں۔

(انظر: اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العين، ج5، ص337، ر 7088، دار المعرفة بيروت)

میں نے کہا: اس میں ہمارے لیے بہت کچھ سبق ہے!!
عورت کے بہتے آنسو اور محبت بھرے الفاظ پر بہت زیادہ اعتماد کرنے کے بجائے، عقل و سمجھ سے کام لیتے ہوئے، اپنے آپ کو قابو میں رکھنا چاہیے۔
دانا کہتے ہیں:
1: کھانا جب تک ہضم نہ ہو جائے اس کی تعریف نہیں کرنی چاہیے۔
2: دوست سے جب تک قرض نہ مانگ لیں اس پر بھروسہ نہیں کرنا چاہیے۔
3: اور عورت کی مرنے سے پہلے تعریف نہیں کرنی چاہیے۔

(انظر: المستطرف فی كل فن مستظرف ۔۔۔۔ الباب الثانی فی العقل والذكاء ۔۔۔ ص 20، ط دار الكتب العلمية بيروت، س1436ھ)

کیوں کہ کھانا، ہضم ہونے سے پہلے پیٹ اور معدہ بھی خراب کر سکتا ہے؛ اس لیے قابلِ تعریف اسی وقت ہو گا جب ہضم ہو جائے گا۔
اور باتوں باتوں میں دوستی کے بلند بانگ دعوے ہر کوئی کر سکتا ہے، لیکن جب قرض مانگا جائے تو معلوم ہوتا ہے وہ کتنا مخلص

ہے۔اور عورت زندگی میں کسی موڑ پر بھی وفا بدل سکتی ہے (جیسے آپ کے ساتھ ہوا)؛اس لیے مرنے سے پہلے تعریف وتوصیف سے پرہیز کرنا چاہیے۔

آج کل ہمارے نوجوانوں کی ایک تعداد عورتوں کی ڈَسی ہوئی ہے،اللہ پاک ان کے حال پر رحم فرمائے۔

بے انتہا محبت،صرف اور صرف رسول پاک ﷺ سے کریں؛باقی سب محبتیں جھوٹی ہیں۔

محمد بوٹیا جُھوٹا ای جگ سارا
کملی والے دِیاں سچیاں یاریاں نے

## عورتیں

کچھ دن پہلے ایک خستہ حال اور پُرملال شخص ملا،جو بڑی شدت سے رو رہا تھا۔

سبب پوچھا تو کہنے لگا:

میں ایک عورت سے محبت کرتا تھا اور وہ مجھ سے۔

ہماری محبت ایسی تھی کہ جب اُس کے گھر والوں کو پتا چلا تو انھوں نے اسے مارا پیٹا،اور ڈرا دھمکا کر کسی اور جگہ نکاح بھی کر دیا، لیکن اس نے مجھے نہیں چھوڑا،اور نہ میں نے اسے۔

میں افغانستان رہتا تھا اور وہ پاکستان۔۔۔۔۔۔۔اس نے رخصتی سے پہلے ہی طلاق لے کر مجھے میسج کیا کہ:

پاکستان آجاؤ،میں تم سے ہی نکاح کروں گی،تمھاری خاطر سب کو چھوڑ دوں گی۔

جس دن اس نے میسج کیا،اس دن میرے سگے بھائی کی بارات تھی،میں اس کی شادی چھوڑ کر،ماں باپ کو بتائے بغیر پاکستان چلا آیا۔

پھر ہم نے کچھ دنوں بعد کوٹ میرج کر لیا،اور میں اسی کا ہو کے رہ گیا۔

میرا بہنوئی فوت ہوا،بھتیجی فوت ہوئی،تایا جان فوت ہوئے،میرے والدین،بہن بھائی مجھے فون کرتے رہے مگر میں اسے تنہا چھوڑ کر واپس افغانستان نہیں گیا۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اب وہ مجھے چھوڑ کر کسی اور کے پاس چلی گئی ہے اور اس نے مجھے فون کر کے کہا ہے:

واپس افغانستان چلے جاؤ،اب دوبارہ میں تمھارے پاس نہیں آؤں گی۔

مجھے پتا چلا ہے کہ کسی لڑکے کے ساتھ ایک ماہ تک اس کی بات ہوئی ہے اور وہ اسی کی ہو کے رہ گئی ہے۔

مجھے اب نہ نیند آتی ہے،نہ آرام؛نہ بھوک لگتی ہے،نہ پیاس؛میں اُسے یاد کر کے بس روتا رہتا ہوں۔

بعض عورتیں بہت باوفا ہوتی ہیں،مرتے دم تک رشتے نبھاتی ہیں،لیکن بعض عورتیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔توبہ توبہ!!

غلام علی آزاد بلگرامی نے کہا تھا۔

زن بود در زبان ہندی نار
وقنا ربنا عذاب النار

(ہندی زبان میں عورت کو "نار" کہتے ہیں۔اے ہمارے رب! ہمیں عذابِ نار سے بچالے)
عورت کو سمجھتے سمجھتے زمانہ گزر جاتا ہے لیکن مرد اسے کما حقہ سمجھ نہیں پاتا۔
میاں محمد بخش رحمہ اللہ کہتے تھے۔

[1] راتیں اَوہ ، دِنے اِیہہ کارن ویکھو مکر زَناں دے
مایاں ، دایاں ، سَنگ سَیّاں نوں دین نہ بھیت مَناں دے

(عورتوں کے مکر تو دیکھو، یہ رات کو کچھ، اور دن کو کچھ ہوتی ہیں۔یہ اپنے دل کا راز نہ ماں کو بتاتی ہیں، نہ دائی کو، نہ کسی قریبی سہیلی کو)

[2] رَنّاں چَنچل ہار ، ہمیشہ چَنچل کَم کَریہن
دِینہں ڈَرن پچھاویں کَولوں ، راتیں نَدی تَریہن

(عورتیں بڑی چالاک ہوتی ہیں، ہمیشہ چالاکی والے کام کرتی ہیں۔ان کی چالاکی دیکھو کہ دن کے اجالے میں سائے سے ڈریں گی، اور رات کے اندھیرے میں دریا پار کر کے محبوب کو ملنے چلی جائیں گی)

[3] وِچ قرآن کہے رب سچا ، مکر زناں دے بھارے
گِن گِن کے لِکھ دَسے ناہیں ، میں بھی ڈردے مارے

(قران پاک میں اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ نے عورتوں کے مکروں کو "عظیم" کہا ہے۔(اِنَّ کَیۡدَکُنَّ عَظِیۡم)
اسی لیے میں نے ان کے مکر نہیں گنوائے۔
میں تو ڈر گیا کہ جنھیں رب تعالیٰ عظیم کہے وہ کیسے احاطۂ تحریر میں آسکیں گے)

عورت کو پیار محبت دیں، اس کے ساتھ خلوص سے پیش آئیں، اس کا ہر طرح سے خیال رکھیں؛ لیکن اپنی عقل کو ہمیشہ قابو میں رکھیں، لٹو نہ ہو جائیں۔جو عورت آج آپ کے لیے اپنے ماں باپ کو دھوکا دے رہی ہے، وہ کل کو کسی اور کے لیے آپ کو بھی دھوکا دے سکتی ہے۔
نکاح کے لیے ایسی عورت کا انتخاب کریں جو اپنے والدین کی فرماں بردار ہو اور ان کی اجازت کے بغیر باہر نہ نکلتی ہو، اللہ نے چاہا تو ایسی خاتون ہمیشہ آپ کی بھی فرماں بردار رہے گی، اور دکھ سکھ میں ساتھ نبھائے گی۔

## نقشِ نعلِ پاک

رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا نقشِ نعلِ پاک ہمارے سروں کا تاج، آنکھوں کی راحت اور دلوں کا سکون ہے۔

خدا تارِ رَگِ جاں کی اگر عزت بڑھا دیتا
شِراکِ نعلِ پاکِ سیّدِ لَولاک ہو جاتا
حَسنؔ اہلِ نظر عزت سے آنکھوں میں جگہ دیتے
اگر یہ مُشتِ خاک اُن کی گلی کی خاک ہو جاتا

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

نقش نعل پر اللہ و رسول کا نامِ پاک لکھنے سے پرہیز کرنا چاہیے۔

نقشِ نعل شریف سینے سے لگانے کے لیے ہے، چوم کر آنکھوں پر رکھنے کے لیے ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اللہ و رسول کا نام لکھنے کے لیے نہیں۔

ہر چند کہ یہ مسئلہ علمائے اہل سنت کے مابین مختلف فیہ ہے، فریقین کے پاس دلائل ہیں، اور فریقین اللہ سے ڈرنے والے ہیں۔

لیکن دل جن کے دلائل کی طرف مائل ہے، وہ مانعین ہیں۔

رب تعالیٰ افراط و تفریط سے بچائے اور ہمیشہ مودب رہنے کی توفیق عطا فرمائے۔

حَسنؔ سُنی ہے ، پھر اِفراط و تفریط اس سے کیوں کر ہو
اَدَب کے ساتھ رہتی ہے رَوِش اَربابِ سُنت کی

## پیاروں کی جدائی

محبوب سے جُدا ہوتے وقت ، مُحب کی چیخیں نکل گئیں ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ضبط کے سارے بند ٹوٹ گئے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ نالہ و فُغاں نے آسمان سر پر اٹھا لیا؛ وہ جو محبوب سے لمحے بھر کے لیے جدا نہیں ہونا چاہتا تھا، اسے طویل جدائی نے آلیا۔

پیاروں کی جدائی پر کچھ یاد رہے نہ رہے، آنسو بہانا اور آہ و زاریاں کرنا ضرور یاد رہتا ہے۔

امام احمد رضاؔ جب مدینہ پاک سے جدا ہو رہے تھے تو آپ کی بھی کچھ یہی کیفیت تھی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

فِراقِ محبوب میں نالہ و فُغاں یاد آئے، جی چاہا شدت سے آہ و زاری کروں، لیکن جب خیال آیا کہ:

یہ بارگاہ کون سی ہے۔۔۔۔۔۔ یہ کس محبوب کا کوچہ ہے۔۔۔۔۔۔۔۔!!

تو رک گئے، اور کہنے لگے۔

خوف ہے سَمع خَراشیِ سَگِ طیبہ کا
ورنہ ۔۔۔۔۔۔ کیا یاد نہیں ، نالہ و اَفغاں ہم کو !!

یہ نہیں کہ مجھے فِراقِ محبوب میں نالہ وفُغاں (گریہ وزاری کرنا) یاد نہیں۔۔۔۔۔۔۔بلکہ میں اِس ڈر سے خاموش ہوں کہ میری آہ وزاری سے طیبہ کی گلیوں میں سویا ہوا کوئی سگ نہ جاگ جائے۔

میرے نزدیک محبوب کی گلی کے کُتے کا بھی لحاظ ضروری ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔یہی وجہ ہے کہ سب یاد ہونے کے باوجود چپ ہوں۔

## ادب لازم ہے

جس طرح بیٹے کے لیے والدین کی تعظیم ضروری ہوتی ہے، چاہے والدین پر لے درجے کے گناہ گار ہوں۔

بیوی پر شوہر کا احترام لازم ہوتا ہے، چاہے شوہر کیسا ہی گناہ گار کیوں نہ ہو۔

اسی طرح۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

ہم سب پر سید زادوں اور علمائے اہل سنت کا ادب لازم ہے، چاہے وہ بے جا حال پر ہوں۔

ساداتِ کرام کی نسبتِ رسالت مآب گناہوں کی وجہ سے ختم نہیں ہوتی، اور علمائے عظام کی خطائیں انھیں صفت الٰہی (علم) سے محروم نہیں کرتیں؛ جیسے والدین وغیرہ کے گناہ ان کی نسبت ختم نہیں کرتے۔

اہلِ سنت ہمیشہ سے مودب رہے ہیں، آپ اہل سنت ہیں تو فکری آوارہ گردی کو اپنے قریب بھی نہ پھٹکنے دیں۔

علم ظاہر کرنا چاہیے

نبی مکرم ﷺ نے فرمایا:

جب میری امت میں بدعتیں ظاہر ہوں اور لوگ میرے صحابہ کو برا کہنے لگیں، تو اُس وقت عالم کو اپنا علم ظاہر کرنا چاہیے۔ جو عالم ایسا نہیں کرے گا اُس پر اللہ، اُس کے فرشتوں اور سارے انسانوں کی لعنت ہوگی۔

(مفتاح الجنۃ فی الاحتجاج بالسنۃ، للسیوطی، ص66، ط الجامعۃ الاسلامیہ المدینۃ المنورۃ، 1409ھ)

یہ حدیث کئی محدثین نے نقل کی ہے۔ اگرچہ سنداً ضعیف ہے، لیکن اس میں بیان کی گئی وعید بہت قوی ہے!

ہم ایسے زمانے میں ہیں جب بدعتیں عام ہو چکی ہیں، اور لوگ صحابہ کرام علیہم الرضوان کو علانیہ برا کہہ رہے ہیں، معاذ اللہ ثم معاذ اللہ۔

اب علما کے لیے علم چھپانا جائز نہیں رہا، ان پر صحابہ کرام کا دفاع لازم ہے—

خطیب بغدادی اس حدیث پاک کے آگے یہ الفاظ بھی لائے ہیں کہ:

ایسے حالات میں علم چھپانے والے عالم کا اللہ پاک فرض ونفل بھی قبول نہیں فرمائے گا۔ (العیاذ باللہ)

(انظر: الجامع الاخلاق الراوی وآداب السامع، ج2، ص118، ر1354، ط مکتبۃ المعارف الریاض)

جو علمائے اہل سنت سوشل میڈیا سے وابستہ ہیں، وہ بھی مقدور بھر صحابہ کرام علیہم الرضوان کا دفاع کریں، پروردگارِ عالم

اپنی رحمت سے محروم نہیں رکھے گا۔

## دوسری جماعت

رات کو درگاہِ محدث اعظم پاکستان سے متّصل، سُنی رضوی جامع مسجد فیصل آباد میں حاضری نصیب ہوئی۔
ہم چار لوگ تھے، ہم نے ارادہ کیا کہ باجماعت نماز پڑھیں۔
جوں ہی جماعت کروانے لگے تو ہمیں منع کر دیا گیا کہ آپ جماعت نہیں کرواسکتے، اکیلے اکیلے نماز پڑھیں۔
اِس مسجد میں باقاعدہ لکھ کر بھی لگایا ہوا ہے کہ: دوسری جماعت کروانا منع ہے۔
اور اگر کوئی مسافر یا معذورِ شرعی دوسری جماعت کروانا چاہے، تو اُسے پورے التزام سے منع کرتے ہیں۔
مسجد والوں کا یہ رویہ بالکل غلط ہے، جماعتِ ثانی کے متعلق اس شدت کی حمایت نہیں کی جاسکتی۔
جماعت ثانی کی جب خود رسول اللہ ﷺ نے عملاً ترغیب دلائی ہے تو پھر کسی کو اِس شدت سے منع کرنے کا کیسے حق پہنچتا ہے۔
جب علماے ربانیین کے مابین تفہیمِ مسئلہ مختلف فیہ ہو جائے تو شدت ویسے ہی ختم ہو جاتی ہے، نہ کہ وہ مسئلہ شدت پسندی کی بھینٹ چڑھا دیا جاتا ہے۔
جامع ترمذی وغیرہ میں صحیح حدیث ہے کہ:
ایک صحابی مسجد میں اس وقت پہنچے جب رسول اللہ ﷺ جماعت کروا چکے تھے۔
سرکار ﷺ نے جب دیکھا کہ ان کی جماعت رہ گئی ہے تو صحابہ سے فرمایا:
تم میں سے کون ہے جو اس کے ساتھ تجارت کرے گا؟
(یعنی ان کے ساتھ نفل کی نیت سے کھڑا ہو گا، تاکہ یہ جماعت کرالیں۔
اس طرح اِنھیں باجماعت فرض پڑھنے کا ثواب مل جائے، اور ساتھ کھڑے ہونے والے کو نفل کا اجر مل جائے، اور اجر و ثواب کی ایک طرح سے تجارت ہو جائے)
آپ ﷺ کا ارشاد سن کر ایک شخص کھڑے ہوئے اور اُن کے ساتھ باجماعت نماز پڑھی۔ رضی اللہ عنھما
اجلہ صحابہ، تابعین، ائمہ اور علمانے دوسری جماعت کی اجازت دی ہے۔
سیدی اعلیٰ حضرت نوراللہ مرقدہ کا فتویٰ بھی دوسری جماعت کے جواز پر ہے۔
منتظمین سنی رضوی جامع مسجد سے مودبانہ گزارش ہے کہ جہاں آپ نے اور بہت ساری چیزوں کی عملاً چھوٹ دے رکھی ہے، اِس کارِ خیر کی بھی دے دیں۔
اللہ آپ سے راضی ہو، اُس جَلَّ جَلَالُہٗ کے بندوں کو صفیں باندھ کر اسے یاد کرنے دیا کریں!

## محبت کی شادی کروانا

کل ایک ستر سالہ بزرگ تشریف لائے اور کہنے لگے:

ڈھونڈ ڈھونڈ کر، بڑی مشکل سے آپ کے پاس پہنچا ہوں۔

آپ میرے لیے کچھ ایسا عمل کر دیں کہ میں جہاں چاہتا ہوں، وہاں میرا نکاح ہو جائے۔

وہ بھی تقریباً میری ہم عمر ہے اور میں بڑی امید لگائے بیٹھا ہوں۔

"آپ شاید یہ پڑھ کر تعجب کر رہے ہوں، لیکن میں بالکل حیران نہیں ہوا۔"

میں نے انھیں بڑی محبت سے کہا:

انشاءاللہ آپ کے لیے ضرور عمل کروں گا، اور دعا بھی کرتا ہوں کہ اللہ کریم آپ کی مدد فرمائے!

محبت کی شادی کروانا باعثِ اجر و ثواب ہے، اجلہ صحابہ کرام (سیدنا صدیق اکبر، سیدنا عثمان غنی، سیدنا علی المرتضیٰ وغیرہ) نے محبت کرنے والوں کے نکاح کی نہ صرف سفارشیں کی ہیں، بلکہ نکاح بھی کروائے ہیں۔

سیدنا امیر معاویہ نے تو ایک لونڈی خریدی، جس سے آپ کو شدید محبت ہو گئی۔

ایک دن آپ نے دیکھا کہ وہ کسی کی یاد میں شعر پڑھ رہی ہے۔

آپ نے پوچھا وہ کون ہے جسے تم یاد کر رہی ہو؟

کہنے لگی: مجھے پہلے آقا سے محبت ہے (وہ مجھے بہت یاد آتا ہے)

آپ رضی اللہ عنہ نے اسے فوراً اس کے محبوب تک پہنچا دیا۔

اگرچہ آپ کا دل اس کی طرف راغب تھا۔

(انظر: الداء والدواء، شفاعة النبیﷺ، والخلفاء، والراحمین للعاشقین، ص562، ط دارعالم الفوائد مکة المکرمة، س1429ھ)

رسول پاک ﷺ کا فرمان:

"دو محبت کرنے والوں کا ہمیں نکاح سے بہتر کوئی حل نظر نہیں آتا۔" ایسی حقیقت ہے جسے قیامت تک جھٹلایا نہیں جا سکتا۔ اس لیے حکمت و دانائی کا تقاضا یہی ہے کہ اس پر عمل کیا جائے۔

## ذکرِ محبت

مشہور ولی اللہ حضرت سَمنون رحمۃ اللہ علیہ مسجد میں بیٹھ کر محبت پر گفتگو کر رہے تھے کہ ایک چھوٹا سا پرندہ آیا۔

وہ آپ کے قریب ہوا۔۔۔۔۔۔۔ پھر مزید قریب ہوا۔۔۔۔۔۔۔ اور اتنا قریب ہوا کہ ہاتھ پر بیٹھ گیا (اور ذکرِ محبت

سننے لگا)۔

پھر (جب ذکرِ محبت کی تاب نہ لاسکا تو) اس نے اپنی چونچ زمین پر مار کر لہولہان کرلی، اور مر گیا۔

(الرسالة القشيرية، باب المحبة، ص657، ط دار المنهاج بيروت، س1438ھ)

وہ عاشق بھی اُسی پرندے کی طرح تھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔جو توہینِ محبوب برداشت نہ کرسکا اور "مَنْ سَبَّ نَبِيًّا فَاقْتُلُوْهُ" کے نعرے لگاتا ہوا شہیدِ محبت ہوگیا۔ ہائے محبت!!

مَنْ مَّاتَ عِشْقاً فَلْيَمُتْ هٰكَذَا
لَاخَيْرَ فِي عِشْقٍ بِلَامَوْت

(جو عشق میں جان دینا چاہتا ہے وہ اِس طرح دے، عشق میں موت کے بغیر کوئی بھلائی نہیں)

## اِنھیں جانا، اِنھیں مانا

آپ کے سامنے بہت بڑا مجمع ہے، جس میں لاکھوں حسین و جمیل ہیں، اور "ایک" آپ کا محبوب بھی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔آپ کی نظریں کسی حسین پر نہیں جم رہیں، صرف اپنے محبوب کو تلاش کررہی ہیں۔

آپ تو جانتے ہی اُسے ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔آپ کا دل مانتا ہی اسے ہے؛ اس کے علاوہ نہ کسی پر نظر ٹھہرتی ہے، نہ دل قبول کرتا ہے۔

پھر کیا ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔؟

بھرے مجمعے سے آپ کا پیارا نمودار ہوتا ہے اور آپ کو سینے سے لگالیتا ہے!

اُس وقت آپ کے جذبات کیا ہوتے ہیں؟

یہ تو آپ کے علاوہ کوئی نہیں بتاسکتا!

بس آپ کی زبان پر بے ساختہ شکرِ الٰہی جاری ہوجاتا ہے اور آپ کہتے ہیں مجھے میرا محبوب مل گیا، مجھے سب کچھ مل گیا۔

اب دیکھیے امام احمد رضا کیا کہتے ہیں، کہتے ہیں ؎

اِنھیں جانا ، اِنھیں مانا ، نہ رکھا غیر سے کام
للہ الحمد میں دُنیا سے مسلمان گیا

ساری کائنات اور اس کا حسن و جمال میرے سامنے تھا، مگر میں نے اس میں سے صرف اپنے حبیب ﷺ کو ڈھونڈھا، میرے دل نے کسی اور کو قبول ہی نہیں کیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔بس جب مجھے حضور مل گئے تو میں نے لِلہ الحمد کہا (شکر کیا)، کہ میں مسلمان ہوکر مرنے میں کامیاب ہوگیا۔

اب پڑھیے ؎

اِنھیں جانا ، اِنھیں مانا ، نہ رکھا غیر سے کام
للہ الحمد ، میں دُنیا سے مسلمان گیا !!

## جانے والوں

آج ایک شخص کو دیکھا جو بڑے درد سے یہ اشعار پڑھ رہا تھا۔

جانے والے ! مجھے کچھ اپنی نِشانی دے جا
رُوح پیاسی نہ رہے ، آنکھ میں پانی دے جا
وقت کے ساتھ خَد و خال بدل جاتے ہیں
جو نہ بدلے ، وہی تصویر پُرانی دے جا
جس کی آغوش میں کٹ جائیں ہزاروں راتیں
میری تنہائی کو چھو کر ، وہ کہانی دے جا !
رکھ نہ محروم خود اپنی ہی رفاقت سے مجھے
آئنہ مجھ کو دکھا دے ، مِرا ثانی دے جا

میں نے اسے بڑی محبت سے کہا: میرے پیارے! بعض لوگ نہ چاہتے ہوئے بھی ہم سے جُدا ہو جاتے ہیں، حالاں کہ وہ ہمیں بہت پیارے ہوتے ہیں۔ وہ اس لیے جدا نہیں ہوتے کہ وہ اچھے نہیں ہوتے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بلکہ اس لیے جدا ہوتے ہیں کہ: انھیں آخر۔۔۔۔۔۔ جدا ہونا ہوتا ہے۔

کل شئی یرجع الی اصلہ۔

ہر چیز (ایک نہ ایک دن) اپنی اصل کی طرف لوٹ ہی جاتی ہے۔

اس لیے کوشش کر کے "جانے والوں" کا غم جلد از جلد ختم کر دینا چاہیے، تاکہ آپ کی زندگی میں نئے "آنے والے" جلدی آسکیں، اور محبت والی جگہ پا سکیں۔ جانے والوں کا طویل غم۔۔۔۔۔۔۔ آنے والوں کے راستے کا روڑا بنا رہتا ہے، جو نہ اپنے آپ کو سکون لینے دیتا ہے، نہ دوسروں کو۔

آج سے نہیں، ابھی سے ہی جانے والوں کا ماتم چھوڑ کر، آنے والوں کو خوش آمدید کہنے کے لیے تیار ہو جائیں، اللہ آپ کا حامی و ناصر ہو!

## یک طرفہ محبت

یک طرفہ محبت نِرا سر درد ہے، سر درد بھی پورا نہیں۔۔۔۔۔۔ شقیقے کا ہے۔

اِس درد سے افاقے کے لیے پانچ چھے دوائیاں ہیں، جن میں سے ایک یہ بھی ہے۔

" وہ تجھے بھول گئے ، تجھ پہ بھی لازم ہے امیر
خاک ڈال ، آگ لگا ، نام نہ لے ، یاد نہ کر "

اسے استعمال کرنے کا طریقہ یہ ہے کہ:

تنہائی میں جاکر، پُشت کے بَل سیدھے لیٹ جائیں، اور جسمانی اعضا ڈھیلے چھوڑ دیں۔

دو منٹ سکون کرنے کے بعد۔۔۔۔۔۔۔ سو سے لے کر ایک تک، اُلٹی گنتی گنیں۔

اس کے بعد اپنے آپ کو مخاطب کر کے کہیں:

تُو نے اُس سے محبت کی۔۔۔۔۔۔۔۔ سچے دل اور پورے خلوص سے کی۔

اس کی خاطر دن کا چین، رات کو سکون برباد کیا اور اپنا دل جلا ڈالا؛ لیکن تجھے معلوم تک نہ ہوا کہ وہ بے مروت تو ان پاکیزہ جذبات کے لائق ہی نہیں تھا۔ چلو کوئی بات نہیں، آج معلوم ہو گیا۔۔۔۔۔۔۔ اب اِسی وقت، اس کی محبت کو جلا کر راکھ کر دے۔۔۔۔۔۔۔۔ اور راکھ کو بھی مَنوں مٹی تلے دبا دے۔

خبر دار! اب جو اس کا نام لیا، یا اسے یاد کیا۔

وہ تجھے بھول گئے ، تجھ پہ بھی لازم ہے امیر
خاک ڈال ، آگ لگا ، نام نہ لے ، یاد نہ کر

اپنی محبت کا رخ آج سے گنبدِ خضرا کے مکین کی طرف پھیر دے، تجھے سکون قلب نصیب ہو جائے گا۔

اُن کے نثار کوئی ، " کیسے ہی " رنج میں ہو
جب یاد آگئے ہیں ، سب غم بُھلا دیے ہیں

## سوچ لو

ایک صاحب نے بارگاہِ اقدس میں عرض کی تھی:

اے اللہ کے رسول، اللہ کی قسم میں آپ سے پیار کرتا ہوں۔

فرمایا: دیکھ لو کیا کہہ رہے ہو!

عرض کرنے لگے:

قسم بخدا مجھے آپ سے محبت ہے۔

فرمایا: سوچ لو کیا کہہ رہے ہو!

انھوں نے جب تیسری مرتبہ بھی یہی کہا تو آپ ﷺ نے فرمایا:

اگر تم واقعی مجھ سے محبت کرتے ہو تو پھر فقر کے لیے تیار ہو جاؤ۔۔۔۔۔۔۔۔مجھ سے محبت کرنے والے کی طرف فَقر اس سے بھی زیادہ تیز بڑھتا ہے، جتنا تیز سیلاب اپنے بہاؤ کی طرف جاتا ہے۔

(انظر: سنن الترمذی، ر2350)

اپنے آقا ﷺ سے محبت کرنے والے کچھ شہید اور کچھ اسیر ہو گئے، بقیہ نے کفن سر پر باندھ لیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اور فَقر کا یہ عالم ہے کہ کوئی ایک بھی بااثر حکومتی نمائندہ ان کے حق میں آواز اٹھانے والا نہیں۔

انوکھی وضع ہے ، سارے زمانے سے نرالے ہیں
یہ عاشق کون سی بستی کے یا رب رہنے والے ہیں!

رب تعالیٰ ان کی حفاظت فرمائے، اور ہم گناہ گاروں کو ان کی برکتوں سے محروم نہ کرے۔

## آزمائشیں

جب دین کی خاطر صحابہ کرام علیہم الرضوان پر دشمنوں کی طرف سے سخت آزمائشیں آئیں تو بارگاہِ اقدس میں عرض کرنے لگے:

حضور! آپ ہمارے لیے مدد طلب کیوں نہیں کرتے، ہمارے لیے اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ سے دعا کیوں نہیں مانگتے؟

رسول پاک ﷺ نے فرمایا: تم سے پہلے لوگوں میں ایک شخص کے لیے گڑھا کھودا جاتا اور (دین پر چلنے کی پاداش میں) اُسے اُس میں ڈال دیا جاتا، پھر اُس کے سر پر آرا رکھ کر اس کے دو ٹکڑے کر دیے جاتے، لیکن یہ عمل بھی اسے اپنے دین سے نہیں پھیرتا تھا۔ پھر لوہے کی کنگھی اس کے گوشت میں دھنسا کر ہڈیوں اور پٹھوں کو نوچا جاتا لیکن یہ اذیت بھی اسے دین سے نہ ہٹا سکتی۔ (صحیح البخاری، ر3612)

اللہ اکبر! رسول اللہ ﷺ ہماری کس طرح تربیت فرما رہے ہیں۔

حضور چاہتے ہیں کہ ہم اللہ کی راہ میں آنے والی تکلیفوں سے گھبرا نہ جایا کریں، بلکہ صبر اور برداشت سے کام لیا کریں۔

ہم دین کے معاملے میں مضبوط اور بہادر بنیں، سہل پسند نہ بنیں۔

جب دین کا معاملہ آجائے تو حق پر ڈٹ جائیں پھر چاہے جیسی بھی تکلیف سے گزرنا پڑے، ثابت قدم رہیں۔

جے کر مِلے ساجن دے ناں دا مِہنا ، جَھولی پالَیّے تے تَھلے سَٹیے ناں
جے کر مِلے ساجن دے ناں دی سُولی ، تے جُھوٹا لَے لَیّے پِچھاں ہٹیے ناں

## ظالموں کے مددگار

سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہما فرماتے ہیں:

ظالموں کے مددگار اور پولیس والے (جو ظلم کرتے ہیں)، قیامت کے دن جہنم کے کُتے ہوں گے۔

(کتاب الکبائر للذھبی، الکبیرۃ السادسۃ والعشرون، الظلم، ص 112، دارالکتب العلمیۃ بیروت۔ کتاب الکبائر مترجم از علامہ صدیق ہزاروی، کبیرہ 26، ظلم کرنا، ص 181، فرید بک سٹال لاہور)

سیاست دانوں اور افسروں کے کہنے پر بے قصوروں کو گرفتار کرنے اور مارنے والے سپاہیوں کو رب تعالیٰ جَلَّ جَلَالُہٗ ہدایت دے، یہ مرنے سے پہلے پہلے توبہ کرلیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ کہیں ایسا نہ ہو کہ ان کے مظالم انھیں جہنم کا کُتا بنا دیں، اور جن کے کہنے پر یہ سب کچھ کر رہے ہیں وہ اِن کی کوئی مدد نہ کرسکیں۔

## چیٹنگ کرنا حرام

غیر محرم لڑکی/لڑکے سے عِشقیہ، فِسقیہ چیٹنگ کرنا حرام ہے، جو کہ ماہِ رمضان میں سخت حرام ہوجاتا ہے۔

غیر محرم سے ایسی گفتگو کرتے وقت اللہ کے نام، اُس جَلَّ جَلَالُہٗ کی قسمیں، قرآن پاک، انشاءاللہ، ماشاءاللہ، الحمدللہ، سبحان اللہ والے اسٹیکرز۔۔۔۔۔۔۔ اور اسلامی ڈی پیاں استعمال کرنا بھی بہت بڑی جسارت ہے؛ اِن سب چیزوں سے فوراً توبہ کرلینی چاہیے۔۔۔۔۔۔۔!

ہماری زندگی بُلبلے کی طرح ہے جسے ہوا کا معمولی سا جھونکا نیست و نابود کرکے رکھ دیتا ہے۔

کیا ہمیں معلوم نہیں کہ عنقریب موت کا ایک جھونکا آئے گا جو ہمارے خس و خاشاک اڑا لے جائے گا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اور زمانہ کہتا پھرے گا۔

نہ گورِ سکندر، نہ ہے قبرِ دارا
مِٹے ناموں کے نشاں کیسے کیسے
نہ مُڑ کر بھی بے درد قاتل نے دیکھا
تڑپتے رہے نیم جاں کیسے کیسے

## اے میرے رب میری امت

سید الانبیا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے جَسدِ اطہر کو جب قبرِ انور میں اتارا جارہا تھا، اُس وقت سیدنا قثم بن عباس رضی اللہ عنہ قبرِ مبارک میں موجود تھے۔ آپ فرماتے ہیں:

میں وہ ہوں جس نے رُخِ انور کی سب سے آخر میں زیارت کی (میرے بعد اُس جانِ عالم کو کوئی نہ دیکھ سکا)۔

میں نے آپ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے لب مبارک ہلتے دیکھے، جب کان قریب کیے تو آواز آرہی تھی: رب امتی، رب امتی۔

اے میرے رب میری امت، اے میرے رب میری امت!

(مدارج النبوۃ، ج دوم، ص 442، ط نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور)

دے خدا ہمّت کہ یہ جانِ حزیں
آپ پر واریں ، وہ صُورت کیجیے
جو نہ بُھولا ہم غریبوں کو رضاؔ
یاد اُس کی اپنی عادَت کیجیے

## جب محبت ہوجائے

سیدنا معاذ بن جبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کتنی پیاری بات ارشاد فرمائی کہ:

جب تجھے کسی سے محبت ہوجائے تو اس سے جھگڑا نہ کر، نہ اس کے ساتھ برائی سے پیش آ، نہ اس کے بارے میں (لوگوں سے) پوچھ گچھ کر؛ ہوسکتا ہے (جب تُو اس کے متعلق تفتیش کر رہا ہو تو) تجھے اس کا کوئی دشمن مل جائے اور ایسی بات کہ دے جو اُس میں نہ ہو۔۔۔۔۔۔ تو یوں تیرے اور اس کے درمیان جدائی ڈال دے۔

(الادب المفرد، از امام بخاری رحمہ اللہ، باب اذا احب رجلا فلا یمارہ ولا یسأل عنہ، ر 547)

آپ جن سے محبت کرتے ہیں، ان سے لڑنا جھگڑنا اور ان کی جاسوسیاں کرنا چھوڑ دیں۔

اپنے پیاروں پر اعتماد کرنا سیکھیں، اور ان کے ساتھ ہمیشہ محبت اور عزت کے ساتھ پیش آئیں۔

## باعث ہلاکت عشق

اگر کوئی صاحبِ استطاعت ہے، اور انصاف بھی کر سکتا ہے تو بے شک دوسرا نکاح کرے، شرعًا اور اخلاقًا اس میں کوئی ہرج نہیں۔

لیکن نکاح میں کوئی اور ہو، اور دل کہیں اور لگائے رکھنا (جیسے آج کل عام چل رہا ہے) یہ سراسر غلط، اور باعثِ ہلاکت ہے۔

اگر کسی کی طرف دل مائل ہوجائے تو معزز طریقے سے اس کے گھر نکاح کا پیغام بھیجنا چاہیے، وہ قبول کرلیں تو مسنون طریقے سے علانیہ نکاح کرلینا چاہیے، ورنہ اس کا خیال دل سے نکال دینا چاہیے۔

چُھپ چُھپ کے میسجز اور کالیں کرنا، ملاقاتوں کا سلسلہ رکھنا۔۔۔۔ بندے کو بہت ساری ذلتوں اور کبیرہ گناہوں میں مبتلا کر دیتا ہے، اور اس کی دنیا و آخرت خراب ہوجاتی ہے۔

ایسی محبت کے بارے میں کسی عربی شاعر نے بحرِ طویل میں ایک مختصر سی نصیحت کی تھی کہ۔

وعش خالیاً۔۔۔۔ فالحب اولہ غنی

و اوسطہ سقم، وآخرہ قتل!

(زندگی محبت کے بغیر گزارو۔۔۔۔ کیوں کہ محبت کی ابتدا اَمیری، درمیان بیماری اور انجام موت ہے۔)

ایسی محبت بیوی کی حق تلفی کا سبب بھی بنتی ہے، اور بعض دفعہ اِس کا بڑا بُرا انجام ہوتا ہے۔
کسی نے کہا تھا:

فإن المرأة إذا رأت بعلها عاشقاً لغيرها ، اتخذت معشوقاً هي لنفسها .
فيصير الرجل متردداً بين خراب بيته بالطلاق وبين القيادة ..... فمن
الناس من يؤثر هذا ، ومنهم من يؤثر هذا .

(جب ایک عورت دیکھتی ہے کہ اس کا شوہر میرے علاوہ کسی اور پر عاشق ہو گیا ہے، تو وہ بھی اپنے لیے کوئی معشوق ڈھونڈ لیتی ہے۔
اب شوہر کے لیے پریشانی بن جاتی ہے، وہ بیوی کو طلاق دے کر گھر برباد کر لے یا اُسے اس کی حالت پر چھوڑ دے، اور خود دیوث بنا رہے .....
تو بعض لوگ اس صورت میں طلاق دے دیتے ہیں، اور بعض یوں ہی دیوث بنے رہتے ہیں۔)
اس لیے اگر کوئی مرد ایسی حماقت میں مبتلا ہے تو فوراً اس سے نکلنے کی کوشش کرے (کوشش کرنے سے انشاءاللہ نکل جائے)
۔
اس سلسلے میں کسی عقل مند اور اِن معاملات کو سمجھنے والے کی طرف رجوع کرنا بڑا مفید ثابت ہوتا ہے، کیوں کہ ایسے عشق نے عاشق کی عقل کو نیم مردہ کر دیا ہوتا ہے اور وہ از خود سوچنے سمجھنے کی صلاحیت سے محروم ہو چکا ہوتا ہے؛ اس لیے جب وہ کسی کی طرف رجوع کرے گا تو اللہ کی رحمت سے اس کی مدد ہو گی، اور مردہ عقل میں جان پڑ جائے گی۔ رب تعالیٰ ہمارے گھروں کو امن اور سکون کا گہوارہ بنائے، اپنی بیویوں کے ساتھ ہمیشہ خلوص و محبت کا برتاؤ کرنے کی توفیق بخشے اور ان کی حق تلفی سے محفوظ رکھے!

## محبت نے میری یہ حالت کر دی ہے

شیخ محمد بن داود ظاہری نے ساری زندگی فقہاے کرام رحمھم اللہ کے فقہی قیاس کی مخالفت کی، لیکن جب عشق نے آگھیرا تو خود شعروں سے قیاس شروع کر دیا۔
موصوف کو اپنی ایک شاگردہ سے عشق ہو گیا تھا۔۔۔۔۔۔ اس کی یاد میں "کتاب الزھرۃ" بھی لکھ ڈالی۔
لیکن عشق جیسی بلا کتابیں لکھنے اور آہیں بھرنے سے کب ٹلتی ہے۔

بچتا نہیں ہے کوئی بھی بیمار عشق کا
یارب ! نہ ہو کسی کو یہ آزار عشق کا

آخر عشق نے موت کے دہانے پر پہنچا دیا۔

جب حضرت کی آخری سانسیں چل رہی تھیں تو چہیتے شاگرد نِفْطوَیہ نے آکر حال پوچھا، تو جواب ملا:
جس نے مجھ سے علم حاصل کیا، اس کی محبت نے میری یہ حالت کر دی ہے۔
نفطویہ نے کہا: کون سی چیز ہے جو آپ کو قدرت ہونے کے باوجود اس سے فائدہ نہیں اٹھانے دیتی؟
جواب دیا: اس سے فائدہ اٹھانے کی دو ہی صورتیں ہیں۔ ایک نظرِ مباح ہے، اور دوسری حرام لذت۔
مباح نظر (یعنی بلا قصد اٹھنے والی پہلی نظر) نے تو میرا یہ حال کر دیا ہے، اور رہ گئی حرام لذت۔۔۔۔۔۔۔۔ تو اس سے مجھے سیدنا ابن عباس رضی اللہ عنہ سے مروی یہ مرفوع حدیث روکتی ہے کہ:
جو کسی پر عاشق ہوا، پھر عشق کو چھپایا۔۔۔۔۔۔ پاک دامن رہا اور صبر کیا، تو اللہ اس کی مغفرت فرما کر اسے داخل جنت کرے گا۔
پھر اشعار پڑھنے شروع کر دیے تو نفطویہ نے کہا:
آپ فقہ میں قیاس کی نفی کرتے ہیں اور شعر میں خود قیاس کر رہے ہیں۔
جواب دیا: ایسا کرنے پر غلبۂ شوق نے مجبور کر دیا ہے۔
(ملخصاً وملتقطاً: الداء والدوا، فصل منافع العشق، ص316، ط المکتبۃ العصریۃ بیروت، س1442ھ)
محبت ہو جانا کوئی بڑی بات نہیں، نہ یہ برائی ہے۔

اذا انت لم تعشق ولم تدر ما الھوی
فقم فاعتلف تبناً فانت حمار

جب تو نے نہ عشق کیا، نہ اس کی حقیقت کو جانا تو اٹھ کر گھاس چر، کیوں کہ تُو گدھا ہے!
(یعنی محبت کے مبتلاؤں پر طعن نہ کرو، محبت میں مبتلا انسان ہی ہوتے ہیں گدھے تھوڑا کسی سے محبت کریں گے۔)
لیکن۔۔۔۔۔۔ محبت کو اتنا سریس لے لینا کہ بندہ جان دے دے، یہ آج کے دور میں باعثِ تشویش ہے۔
اولاً تو کوشش کریں کسی غیر محرم سے محبت ہی نہ ہو، لیکن اگر ہو جائے تو پاک دامن رہیں، صبر کریں، اللہ سے ڈریں، اسی سے مدد اور خیر طلب کریں۔۔۔۔۔۔۔ اور ساتھ ساتھ نکاح کے لیے بھی بھرپور کوشش کریں۔ رشتہ مانگنے میں جھجک، پست ہمتی، خدشات اور رسومات کو بالکل آڑے نہ آنے دیں۔ اب اگر مل رشتہ جائے تو صبر و شکر کے ساتھ ہنسی خوشی زندگی گزاریں، نہ ملے تو رونے دھونے اور ٹینشین لینے کے بجائے صبر سے یہ ذہن بنائیں کہ آپ کے حق میں بہتر ہی نہیں تھا، اس لیے نہیں ملا۔

## عاشق ہو گئی

سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک جاریہ کے پاس سے گزرے، جو یہ شعر پڑھ رہی تھی۔

وهويته من قبل قطع تمائی
متمايلاً مثل القضيب الناعم

ابھی میرے بچپن کے تعویذ بھی نہ کاٹے گئے تھے کہ میں اُس پر عاشق ہوگئی، اور اُس پر ایسے جُھکی جیسے نرم شاخ جُھکتی ہے ۔آپ نے اُس سے پوچھا: تُو حُرَّہ (آزاد) ہے یا کسی کی ملکیت؟

کہنے لگی: ملکیت ہوں۔

آپ نے کہا: تیرا محبوب کون ہے (جس کی یاد میں یہ شعر پڑھ رہی ہے)؟

وہ شرما گئی۔۔۔۔۔۔۔تو آپ نے اُسے قسم دی (کہ مجھے بتاؤ!)۔

وہ کہنے لگی۔

وانا التی لعب الهوی بفؤادها
قتلت بحب محمد بن القاسم

میں وہ ہوں، محبت نے جس کے دل سے کھیل کھیلا ہے۔ مجھے محمد بن قاسم کی محبت نے قتل کر کے رکھ دیا

آپ رضی اللہ عنہ نے اُسے، اُس کے آقا سے خرید کر محمد بن قاسم بن جعفر بن ابوطالب کے پاس بھیج دیا، اور فرمایا: یہ عورتیں مردوں کے لیے فتنہ ہیں۔ اللہ کی قسم! ان کی وجہ سے کتنے ہی معزز لوگ موت کے گھاٹ اتر گئے، اور صحیح سلامت بندے ہلاکت کا شکار ہوگئے۔

(الداء والدوا، فصل منافع العشق، ص314، ط المکتبۃ العصریۃ بیروت، س1442ھ)

اللهم انی اعوذبك من فتنة النساء وعذاب القبر!

## درودیوار چومیں

اللہ پاک مدینہ طیبہ لے جائے تو وہاں کے درودیوار چومیں۔۔۔۔۔۔وہاں کی خاک پاک کا سرمہ بنالیں۔

قَیس بِن مُلَوَّح (مجنون) نے کیا ہی خوب کہا۔

أَمُرُّ عَلی الدِّیَارِ دِیَارِ لَیْلیٰ
أُقَبِّلُ ذَا الجِدَارَ وَ ذَا الجِدَارَا
وَماحُبُّ الدِّیَارِ شَغَفْنَ قَلْبِی
وَلٰکِنْ حُبُّ مَنْ سَکَنَ الدِیَارَا

(مفہوم: میں لیلیٰ کے شہر سے گزرتے ہوئے کبھی اِس دیوار کو چُومتا ہوں، کبھی اُس دیوار کو۔۔۔۔۔۔۔مجھے ایسا کرنے پر اِس شہر کی محبّت آمادہ نہیں کرتی، بلکہ جو اِس شہر میں رہتا ہے اس کی محبّت کہتی ہے کہ میں اِس کے درودیوار چُوموں)

جَمِیلَتؔ دَر فراقَت ہَست بِسمِل
بَر اُو کُن لُطف آقائے مدینہ !

## حجرِ اسود کا استلام

ایک (یمنی) شخص نے سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنھما سے حجرِ اسود کے استلام کے متعلق پوچھا، تو آپ نے فرمایا: میں نے رسول اللہ ﷺ کو اس کا استلام کرتے اور بوسہ لیتے دیکھا ہے۔

وہ کہنے لگا:

اگر میں لوگوں کے ہجوم میں پھنس جاؤں اور استلام سے عاجز آجاؤں تو کیا کروں؟

آپ رضی اللہ عنہ نے فرمایا: اِس اگر مگر کو جاکر یمن میں رکھو، میں نے تو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو حجر اسود کا استلام کرتے اور اسے چومتے ہی دیکھا ہے۔

(صحیح البخاری، ر 1611)

اللہ اللہ، جب محبت کی بات آجائے تو کوئی اگر مگر نہیں چلتا۔۔۔۔۔۔۔۔۔بس وہی ہوتا ہے جو محبوب کی رضا ہو۔

مکتبِ عشق میں وامقؔ نے یہ پائی تعلیم
عینِ ایمان ہے فدائے رُخِ جاناں ہونا !

## میری تمنا

میری تمنا تھی کہ رسول اللہ ﷺ کے شہرِ مدینہ کا طالب علم بن جاؤں۔۔۔۔۔۔۔۔۔اللہ کریم نے کرم نوازی فرمائی اور مدینہ طیبہ میں مقیم قاہرہ (مصر) کے ایک استاد میسر آگئے؛ جو فن قرات کے بہترین عالم ہیں۔

الحمدللہ اُن سے کتاب اللہ شریف (بروایۃ حفص عن عاصم من طریق طیبۃ النشر، بروایۃ قالون عن نافع من طریق الشاطبیہ) پڑھنے کی ابتدا کی؛ آج سورت بقرہ شریف ختم ہوگئی ہے، اللہ تعالی سارا قرآن پاک اخلاص سے سنانے کی توفیق بخشے!

اللہ کرے اس کے بعد طیبۃ النشر اور حرز الامانی پڑھنے اور یاد کرنے کی بھی توفیق مل جائے۔

(علم قرات میں حرز الامانی کو وہی حیثیت حاصل ہے جو علم حدیث میں بخاری شریف کو ہے)

دعا فرمائیں رب تعالی مرتے دم تک شہرِ نبی کا طالبِ علم رکھے، اس مقدس شہر میں سکونت عطا فرمائے اور اسی شہر مبارک میں زندگی کی انتہا ہوجائے۔

رہیں اُن کے جلوے ، بسیں اُن کے جلوے
مِرا دل بنے یادگارِ مدینہ

مِری خاک یارب نہ برباد جائے
پسِ مرگ کردے غبارِ مدینہ

## معراج کی رات

معراج کی رات پچاس نمازیں لے کر جب حضور ہماری پاس آرہے تھے تو راستے میں حضرت موسی علیہ السلام سے ملاقات ہوگئی۔۔۔۔۔۔وہ کہنے لگے:

اپنے رب کی طرف جائیں اور نمازیں کم کرواکے آئیں۔

حضور ﷺ واپس گئے تو نمازیں کم ہوگئیں، لیکن واپسی پر موسی علیہ السلام پھر یہی کہنے لگے کہ واپس جائیں اور مزید کم کروا کے آئیں، اور بار بار یہی کہتے رہے۔۔۔۔۔۔

سیدنا موسی علیہ السلام نے ایسے کیوں کہا؟

اس بارے میں شارحین کے بہت سارے اقوال ہیں۔

ایک بات جو بعض اہلِ دل کہتے ہیں، وہ یہ بھی ہے کہ:

حضور اپنے رب کا دیدار کر کے آئے تھے، اس لیے جناب موسیٰ چاہتے تھے میں بار بار اُس ذات کو دیکھوں جو میرے رب کو دیکھ کے آئی ہے؛ اس لیے بار بار واپس جانے کا کہتے رہے۔

اللہ اللہ، جس ذات پاک کا بار بار جلوہ دیکھنے کے موسی علیہ السلام بھی متمنّی رہے۔۔۔۔۔صحابہ کرام نے اُسی ذات کے جی بھر کے جلوے دیکھے۔

اُن صحابہ کی خوش اطوار نگاہوں کو سلام !
جن کا مسلک تھا طوافِ رخِ زیبا کرنا

## اے محبت تیرے کیا کہنے !!

سیدنا عبداللہ بن عمر پاک کو رسولِ کریم ﷺ سے بے انتہا محبت تھی، آپ سید عالم ﷺ کی رحلت کے بعد ساٹھ سال تک اس دنیا میں حیات رہے، لیکن دل اپنے آقا و مولا ﷺ کے ساتھ ہی مُعلق رہا۔۔۔۔۔۔ زندگی بھر آپ ﷺ کو یاد کر کے روتے رہے اور آپ ہی کی اداؤں کو ادا کرتے رہے۔

حتی کہ امام ابن اثیر رحمہ اللہ لکھتے ہیں کہ:

سفر میں بھی اُسی منزل پر اترتے جہاں رسول اللہ ٹھہرا کرتے تھے، اور نماز بھی اُسی جگہ پڑھتے، جس جگہ سرورِ عالم ﷺ نے پڑھی ہوتی۔

ایک درخت کے نیچے سرکار ﷺ نے نماز ادا فرمائی تھی۔۔۔۔۔ حضرت ابن عمر اس درخت کو پانی دیتے رہتے تھے کہ (میرے محبوب کی یہ یادگار) کہیں خشک نہ ہو جائے۔

(اسد الغابۃ فی معرفۃ الصحابۃ، باب لعین، ج3، ص43، ر 3082، دار المعرفۃ بیروت)

## ہیبت و محبت رسول

سیدنا امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ بڑے ہنس مکھ تھے، مسکراتے رہتے تھے۔۔۔۔۔۔ لیکن جب ان کے سامنے رسول اللہ ﷺ کا ذکر پاک کیا جاتا تو (ہیبت و محبت رسول کی وجہ سے) آپ کا رنگ زرد ہو جاتا؛ اور (ادب کا یہ عالم تھا کہ) بغیر وضو حضور کا ذکر پاک نہیں کیا کرتے تھے۔

(انظر: مصباح الظلام فی المستغیثین بخیر الانام علیہ الصلاۃ والسلام فی الیقظۃ والمنام، ص 236، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

اللہ پاک ہمیں بھی ایسا کر دے!!

کسی نے پوچھا:

## "خاکِ راہِ حجاز" کسے کہتے ہیں؟

عرض کی:

وہ گرد و غبار جو مدینے شریف جانے والوں کے قدموں سے اُڑتا ہے۔۔۔۔۔۔۔ اُس کا کچھ حصہ ہوا کے جھونکے اِدھر سے اُدھر بکھیر دیتے ہیں، اور کچھ حصہ جوتوں سے چِپک جاتا ہے، اور جا کر خاک مدینہ کا حصہ بن جاتا ہے۔

کاشکے! یہ عاصی بھی جوتوں سے چِپکنے والا کوئی ذرہ ہوتا جو خاک مدینہ کا حصہ بن جاتا۔

# (4)چوتھا باب: پیارا مدینہ

اس باب میں مدینے کے فضائل اور مدینے سے محبت سے متعلق تحریریں ہیں۔

## شان مدینہ

جب ہم مدینہ پاک کی فضیلت والی احادیث پڑھتے ہیں تو مزاجِ نبوی کا پتا چلتا ہے کہ حضور کو اس شہر سے کتنی محبت تھی، اور آپ کس قدر چاہتے تھے کہ میرے امتی بھی اس شہر سے پیار کریں، یہاں بار بار آئیں۔۔۔۔۔ بلکہ میرے پاس ہی رہیں۔ بنظرِ محبت یہ حدیث پاک پڑھیے:

جو قصداً میری زیارت کرنے (مدینے شریف) آیا، وہ قیامت کے دن میرا پڑوسی ہوگا، اور جو مدینہ پاک میں رہائش اختیار کرے گا اور مدینے کی تکلیفوں پر صبر کرے گا۔۔۔۔۔ میں قیامت کے دن اُس کا گواہ ہوں گا اور اُس کی شفاعت کروں گا۔ اور جو حَرَمین (یعنی مکے، مدینے) میں کسی جگہ فوت ہوگیا، اللہ پاک اُسے قیامت کے دن امن والوں میں اٹھائے گا۔

(مجموعة من رسائل الملا علی القاری، الدرة المضية فی الزيارة المصطفوية الرضية، ص282، ط دار الکتب العلمیہ بیروت)

اس ارشادِ پاک کو ایک بار پھر پڑھیں، اور غور کریں کہ:

اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کے حبیب صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کو ہمارا مکینِ مدینہ ہوجانا کتنا پسند ہے۔

کون ہے جو اس جہانِ فانی میں دکھ تکلیف سے محفوظ ہو، کوئی بھی نہیں؛ دکھ درد انسانی زندگی کا حصہ ہیں۔

جب یہ دکھ درد، تکلیفیں مصیبتیں ہمیں یہاں پہنچتے ہیں اور ہم ان پر صبر کرتے ہیں تو اللہ راضی ہوتا ہے۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

یہی تکلیفیں مصیبتیں اور ٹینشنیں جب ہمیں مدینہ پاک میں رہتے ہوئے پہنچیں گی تو صرف رضائے الٰہی نہیں، حضور کی شفاعت بھی نصیب ہوجائے گی۔

اللہ اللہ شہرِ مدینہ تیری شان، خدا تیری خاک پاک میں ہمیں آسودہ خاک کردے۔

## ڈاکٹر اقبال مدینہ طیبہ کی یاد میں

ڈاکٹر اقبال مدینہ طیبہ کی یاد میں کہتے ہیں:

وہ زمیں ہے تُو مگر اے خواب گاہِ مصطفیٰ
دید ہے کعبے کو تیری حجِ اکبر سے سوا
خاتمِ ہستی میں تُو تاباں ہے مانندِ نگیں
اپنی عظمت کی ولادت گاہ تھی تیری زمیں
تجھ میں راحت اُس شہنشاہِ معظم کو ملی
جس کے دامن میں اَماں اقوامِ عالم کو ملی

ہے اگر قومیّتِ اسلام پابندِ مقام
ہند ہی بنیاد ہے اس کی نہ ، فارس ہے ، نہ شام
جب تلک باقی ہے تُو دنیا میں ، باقی ہم بھی ہیں
صبح ہے تو اِس چمن میں گوہرِ شبنم بھی ہیں !

## مہمان مدینہ

فجر کے بعد گنبد خضرا کے سامنے بیٹھا تھا کہ ایک بزرگ سے علیک سلیک ہوئی، جو کافی عرصے سے سرکار ﷺ کے مہمان ہیں۔ وہ مجھے مسجد نبوی شریف کے مختلف حصوں میں لے گئے اور بتانے لگے:

یہاں حضرت عباس کا مکان تھا، یہاں وہ پرنالہ تھا جسے دوبارہ لگایا گیا، یہاں ستر صحابہ کرام کے گھر تھے، وہاں امام حسین اور سیدنا معاویہ کا گھر تھا، یہاں سرکار کی اونٹنی بیٹھی تھی، وہاں حضرت بلال اذان پڑھتے تھے، یہاں سیدنا عثمان پاک نماز پڑھایا کرتے تھے، مسجد کا اتنا حصہ سیدنا عمر پاک نے بنایا اور اتنا عثمان پاک نے۔۔۔۔۔۔

میں نے پوچھا: یہ ساری معلومات آپ کو کس سے ملیں؟

کہنے لگے: محمد خاں نام کے ایک بزرگ یہاں رہتے تھے جو کچھ عرصہ پہلے 130 سال کی عمر میں فوت ہوئے ہیں، وہ کلر گھر پاکستان کے رہنے والے تھے اور جھنگ میں ایس ایچ او تھے؛ اُس وقت مدینہ پاک آئے جب پاسپورٹ بھی نہیں ہوتے تھے اور لوگ پیدل آیا کرتے تھے۔

یہ ایسے آئے کہ پھر واپس نہیں گئے، ساری زندگی سرکار دوعالم ﷺ کے قدموں میں گزار دی؛ عشق رسول کا یہ عالم تھا کہ یہاں رہ کر کبھی جوتے نہیں پہنے۔۔۔۔۔۔، مجھے یہ معلومات ان سے ملیں!!

## مکہ افضل یا مدینہ

حضرت عبداللہ بن عیاش رضی اللہ عنہ مکہ شریف کو مدینہ طیبہ پر فضیلت دیتے تھے۔

اِنھیں سیدنا عمر پاک رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بلایا اور فرمانے لگے:

تُو کہتا ہے کہ مکہ مدینے سے بہتر ہے! اِنھوں نے عرض کی: (امیر المومنین!) مکہ اللہ کا حرم ہے، امن کی جگہ ہے اور اس میں بیت اللہ شریف ہے۔

آپ نے فرمایا: میں اللہ کے گھر اور حرم میں کچھ نہیں کہتا۔ کیا تم کہتے ہو کہ مکہ مدینے سے بہتر ہے!

حضرت عبداللہ کہنے لگے: (امیر المومنین!) مکہ اللہ کا حرم ہے، امن کی جگہ ہے اور اس میں بیت اللہ شریف ہے۔

آپ نے فرمایا: میں اللہ کے گھر اور حرم میں کچھ نہیں کہتا!

(حضرت عمر بار بار یہی کہتے رہے، حتیٰ کہ) حضرت عبداللہ بن عیاش چلے گئے۔

(المؤطا، باب جامع ماجاء فی امر المدینۃ، ص684، رقم1710، مؤسسۃ الرسالۃ بیروت)

سیدنا عمر پاک کا منشا یہ تھا کہ اگرچہ مکہ معظمہ میں بیت اللہ شریف ہے، لیکن پھر بھی مدینہ پاک ہی افضل ہے — اور کیوں نہ ہو، یہ مسکن کس کا ہوا!!

## مدینے شریف کی یاد میں رونا

جس سے بے انتہا محبت ہو، اُس کی یاد میں آنسو نکل آتے ہیں۔

آج بیٹے محمد امیر معاویہ نے بتایا:

"بابا جی! کل سکول میں ہمارے سَر نے نعت پڑھی تو مجھے مدینے شریف کی یاد میں رونا آگیا، پھر میں نے جاکر منھ دھولیا۔ (تاکہ کسی کو پتا نہ چلے، رویا ہوں۔)"

اللہ پاک ہمیں اور ہماری اولادوں کو یادِ مدینہ میں بہنے والے آنسو عطا کرے۔

اقبال نے کہا تھا ؎

وہ زمیں ہے تُو مگر اے خواب گاہِ مُصطفیٰ
دِید ہے کعبے کو تیری حجِ اکبر سے سوا
جب تلک باقی ہے تُو دنیا میں ، باقی ہم بھی ہیں
صبح ہے تَو اِس چمن میں گوہرِ شبنم بھی ہیں !

## مدینہ، مدینہ

انسان جب بیمار ہوتا ہے تو اُسے اپنے پیارے بہت یاد آتے ہیں۔

حضرت بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بخار ہو گیا تو آپ کو مکے شریف کی یاد ستانے لگی۔ آپ نے رو رو کر مکہ معظمہ کی یاد میں شعر پڑھنے شروع کر دیے۔

نبی اکرم ﷺ کو پتا چلا تو آپ نے دعا فرمائی:

اے اللہ! ہمیں مدینے کی محبت نصیب فرما، جیسی مکے کی نصیب کی ہے؛ بلکہ مکے سے بھی زیادہ۔

(انظر: صحیح البخاری، رقم1889)

سُنانے والے مدینے کی داستانِ حیات
تُجھے قسم ہے کہ اِس کو دراز رہنے دے

مِرے مَرض کا مُداوا تو ذِکر ہے اُن کا
علاج اپنا تُو اے چارہ ساز ، رہنے دے
اِسی سے ہوتی ہے جانِ حَزیں کو کچھ تسکیں
الٰہی قلب میں دردِ حجاز رہنے دے
دلِ ریاض کو روزِ حساب تک یارب !
رسولِ پاک کے غم میں گُداز رہنے دے

## یادِ مدینہ

گاؤں میں ایک ماں جی تھے جن کا عمر بھر یہ وظیفہ رہا:

چَلیے مدینے سارے چھڈ گھر بار دَئیے
روضے والی جالی آتوں تَن مَن وَار دَئیے

آج بھی جب یہ الفاظ یاد آتے ہیں، آنکھیں بھیگ جاتی ہیں۔

گاؤں دیہاتوں کی وہ مائیں کتنی پیاری تھیں جنھوں نے ظاہری آنکھوں سے مدینہ پاک نہیں دیکھا لیکن اس کی یاد میں تڑپتے زندگی گزار دی۔

میری پردادی جان رحمہا اللہ کو کسی حاجی نے ایک کیمرا لا کر دیا تھا، جس کا بٹن دبانے سے مکے مدینے شریف کی تصویریں نظر آتی تھیں۔

ساری زندگی انھوں نے کیمرے کو حرزِ جاں بنائے رکھا کہ اس میں سوہنے محبوب کا روضہ پاک ہے۔

اللہ پاک ہمیں بھی اپنے پیارے حبیب ﷺ کی سچی محبت نصیب فرمائے!!

نُورِ اِلٰہ کیا ہے ؟ محبت حبیب کی !
جس دل میں یہ نہ ہو ، وہ جگہ خُوک و خَر کی ہے

## لفظِ مدینہ کتنا پیارا ہے

گجرات شہر کے قریب ایک گاؤں ہے جس کا نام "مدینہ" ہے۔

جب اِس گاؤں کا کوئی فرد آکر کہتا ہے:

"میں مدینے سے آیا ہوں"۔۔۔۔۔۔۔۔

تو دل، بے ساختہ "مدینہ طیبہ، مدینہ منورہ، مدینہ پاک، مدینہ شریف، مدینۃ النبی" کی طرف کھنچنے لگتا ہے۔

اللہ اللہ، لفظِ مدینہ کتنا پیارا ہے!!

اس لفظ میں جو لذت ہے وہ دنیا کے کسی شہر کے نام میں نہیں۔

## کتے بھی پیارے

اگر کسی پر محبت رسول کا اتنا غلبہ ہو جائے کہ اسے آپ ﷺ کے شہر مبارک کے کتے بھی پیارے لگیں، تو یہ قابل ملامت نہیں۔

سیدنا و مولانا حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے تھے:

لو انی اعلم ان کلبا یحب عمر لاحببته۔

اگر مجھے معلوم ہو جائے کہ کوئی کتا حضرت عمر سے محبت کرتا ہے، تو مجھے وہ بھی پیارا لگے گا۔

(تاریخ مدینۃ دمشق۔۔۔۔۔۔، الجزء الرابع والاربعون، ص376)

لیکن.....

سگانِ مدینہ کے سرِعام پاؤں چوم کر، اِس کی تصویریں سوشل میڈیا پر عام کرنا سمجھ سے باہر ہے۔

سگِ طیبہ کے پاؤں چومنے والا اگر تو واقعی اِس حد تک محبتِ رسول میں فنا ہو چکا ہے کہ اُسے محبوب ﷺ، اور نسبتِ محبوب کے سوا کچھ یاد ہی نہیں رہا، تو اس پر کوئی سخت حکم نہیں لگایا جا سکتا؛ لیکن اس حرکت کو عوام میں مشہور کرنا کئی مفاسد کے دروازے کھول سکتا ہے۔

رسول اللہ ﷺ کی پیروی کریں، آپ ﷺ کے لائے ہوئے دین کو حرزِ جاں بنائیں، دن رات توبہ استغفار کریں، تلاوت قرآن اور نعت شریف کو وردِ زباں رکھیں؛ یہ اعمال محبت رسول کی معراج ہیں۔

## شہر میں شور کی آوازیں

سلطان عبدالحمید خان رحمہ اللہ نے جب جرمنی کے ساتھ ریلوے لائن کا معاہدہ کیا تھا، تو ایک شرط یہ بھی رکھی تھی:

"جب کاریگر کام کرتے ہوئے مدینہ پاک سے بیس کلومیٹر دور رہ جائیں گے تو اپنے ہتھوڑوں پر کپڑا باندھ لیں گے"

(تاکہ رسول اللہ ﷺ کے مبارک شہر میں شور کی آوازیں نہ آئیں)

اللہ اللہ، کیسے مودب تھے وہ لوگ!!

بابِ حَرَم کے سامنے پہنچوں کچھ اس طرح
شرم و حیا کے بار سے گردن جُھکی رہے
جب تک جمالِ شہرِ نبی کا ہو تذکِرَہ
مَسرؔور میری آنکھ یوں ہی بند ہی رہے

## ایک خط

مدینہ شریف کے رہائشی ایک بڑے پیارے دوست جب مجھے میسج کرتے ہیں تو کہتے ہیں:

"میں مدینہ پاک سے۔۔۔۔۔۔۔بول رہا ہوں"

تو مجھے اس جملے سے اتنا لطف آتا ہے کہ بیان نہیں کر سکتا۔

بعض دفعہ تو یہ الفاظ سن کر آنکھیں بھیگ جاتی ہیں۔

آج اُنھوں نے ایک خط بھیجا ہے جو اُن کی بیٹیوں نے اپنے آقا ﷺ کی بارگاہ میں لکھا۔ بہ صد محبت آپ بھی خط ملاحظہ کر لیجیے:

پیارے کریم آقا و مولیٰ ﷺ کی بارگاہ میں میری سات اور آٹھ سالہ بیٹیوں مزینہ مدنیہ، اور امایا فاطمہ نے چاندرات کو خط لکھے:

1: ہمارے پیارے پیارے آقا ﷺ!

الصلاۃ والسلام علیک یاسیدی یارسول اللہ ﷺ

آپ کو عید مبارک! سرکار ﷺ آپ سب کچھ جلدی جلدی کھول دیں، اور سب لوگ مدینہ شریف آجائیں۔

سرکار ﷺ! رمضان چلی گئی ہے اور میں بہت اداس ہوں، مجھے حرم شریف کے صحن میں افطاری کرنی تھی۔

مجھے وہاں کی افطاری بہت اچھی لگتی ہے، مگر اس بار ہم نہیں آسکے؛ اب دوسرے رمضان آپ ہمیں ضرور بلائیے گا۔

مجھے حرم شریف یاد آتا تھا اور بہت رونا آتا تھا، میں بہت روتی تھی۔

مجھے آپ کو عید کے کپڑے دکھانے آنا ہے۔ آپ ہمیں جلدی بلالیں۔

آپ اللہ تعالی سے ہماری دعائیں قبول کروادیں۔

آپ کی پیاری:

مزینہ مدنیہ

2: الصلاۃ والسلام علیک یاسیدی یارسول اللہ ﷺ

سرکار ﷺ! مجھے رمضان شریف میں حرم شریف جانا تھا، میں نے بہت یاد کیا۔ آپ سب جلدی سے کھول دیں تاکہ سب آسکیں۔

سرکار ﷺ! میں نے رمضان شریف میں چھے پارے پڑھے، اور تیرہ روزے رکھے، اگلی رمضان میں ان شاء اللہ کوشش کروں گی کہ سارے روزے رکھوں، اور زیادہ زیادہ قرآن شریف پڑھوں۔

سرکار ﷺ! میں ہر نماز کے بعد تسبیح پڑھوں گی۔

سرکار ﷺ! رمضان چلی گئی ہے میں بہت اداس ہوں، مجھے افطاری اور سحری اور روزہ رکھنے میں بہت مزہ آتا تھا۔ مجھے

حرم شریف کی افطاری میں بھی بہت مزہ آتی تھی پر اس بار ہم نہیں آسکے؛ اس لیے میں بہت روئی۔
آپ اللہ تعالی سے ہماری ہر دعا قبول کروادیں۔ آپ کو عید مبارک، ہمیں عید منانے جلدی حرم شریف بلالیں۔
آپ کی پیاری:
امایا فاطمہ
اللہ پاک ان بیٹیوں کے صدقے میری مغفرت فرمادے اور میرے دل کو اپنے حبیب کی محبت سے ایک لمحے کے لیے بھی محروم نہ کرے۔

## ایک پھیرا مدینے کا لگوادو

امریکہ کا چھتیسواں صدر لینڈن جانسن 1961ء میں کراچی آیا تھا۔
یہ ایک دن کارساز سے گزر رہا تھا تو اس کی ملاقات بشیر احمد نامی ایک مزدور سے ہوئی۔
جانسن کو بشیر احمد بہت زیادہ پسند آیا اور وہ اسے امریکہ لے گیا۔
امریکہ میں بشیر احمد کو شاہی مہمان بنایا گیا، بڑی آؤ بھگت کی گئی، تحفے تحائف دیے گئے، بہترین کھانے پیش کیے گئے؛ بشیر احمد چمچ کے بجائے ہاتھ سے کھانا کھاتا تھا، اس لیے ایسے کھانے تیار کروائے گئے جنھیں ہاتھ سے کھاتے ہوئے بشیر احمد کو دقت نہ ہو۔
ایک دن جانسن نے بشیر احمد سے کہا: تُو جب سے آیا ہے، تُو نے کوئی مطالبہ نہیں کیا، اپنی کسی خواہش کا اظہار تو کر!
بشیر احمد کہنے لگا: میری کوئی خواہش نہیں۔
اس نے کہا: نہیں، کچھ نہ کچھ تو کہہ۔
بشیر احمد نے کمال سادگی سے کہا: اچھا پھر جو کہوں گا کردو گے؟ کہنے لگا: ہاں!
تو پھر ایک پھیرا مدینے کا لگوادو۔
(بس میری یہی تمنا ہے)
جانسن یہ سن کر ششدر رہ گیا، کہ یہ کیسا شخص ہے جسے سوائے مدینے کی زیارت کے کوئی حسرت ہی نہیں۔
اس نے بشیر احمد کو مدینہ پاک کے لیے روانہ کردیا اور ایک عریضہ سعودی حکومت کو پیش کیا کہ:
میں بھی وہ شہر دیکھنا چاہتا ہوں (جسے دیکھنے کے لیے بشیر احمد جیسے لوگ ترستے ہیں)۔
مولانا اجمل صاحب کہتے ہیں:
یہ جانسن نے خود لکھا ہے، اور یہ امریکہ کا واحد صدر ہے جس نے مدینۃ النبی دیکھنے کی درخواست دی تھی، جو اس کے غیر مسلم ہونے کی وجہ سے منظور تو نہ ہوئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ لیکن اس نے مدینہ پاک کی تصویریں کھنچوا کر اپنے کمرے میں

لگالیں اور مرتے دم تک انھیں دیکھتا رہا۔

## جنت البقیع شریف میں مدفن کی تمنا

پچھلے سال مدینہ طیبہ میں مجھے ایک مرض نے اِس شدت سے آلیا کہ جنت البقیع شریف میں مدفن کی تمنا پوری ہوتی نظر آنے لگی۔

کاشکے! پوری ہوجاتی۔۔۔۔۔۔۔۔۔اور خانہ کعبہ شریف میں مانگی ہوئی یہ مراد مل جاتی۔

نزع کے وقت جب مِری سانسوں میں انتشار ہو
میری نظر کے سامنے ، گنبد ہو وہ ہَرا فقط
اپنے کرم سے اے خدا ، عشقِ رسول کر عطا
آخری دم زباں پہ ہو صلِّ علیٰ صدا فقط

میں صحنِ مسجد میں گنبدِ خضرا کی طرف منھ کرکے لیٹ گیا اور خاتمہ بالخیر کی دعائیں کرنے لگا۔

اسی علالت کے دوران کتاب "شھادۃ لاالہ الااللہ محمد رسول اللہ" پڑھنے کا شرف حاصل ہوا۔

انسان موت وحیات کی کش مکش میں ہو اور اسے کلمہ طیبہ کی فضیلت یاد آجائے۔۔۔۔۔۔۔۔اللہ اللہ!

سفرِ مدینہ میں یہ کتاب مجھے حضرت مولانا ابوالحسن خضر حیات مدنی ملتانی حفظہ اللہ نے بھیجی تھی، اس وقت آپ اس کا اردو ترجمہ کررہے تھے۔

ماشاءاللہ اب ترجمہ مکمل ہوگیا ہے اور چھپ کر منظر عام پر آچکا ہے۔

اللہ پاک قبول فرمائے، بہت پیارا ترجمہ ہے۔

ہوسکے تو آپ اس کتاب کا ضرور مطالعہ کریں، اور مترجم کے لیے دعا کریں کہ اللہ پاک انھیں تادمِ زیست خدمت دین متین کی توفیق بخشے!

ماشاءاللہ نیک خو، منکسر المزاج، مخلص اور محنتی عالمِ دین ہیں۔

آپ اس سے پہلے بھی چند عربی کتب کے اردو ترجمے کرچکے ہیں، اور مزید کا ارادہ رکھتے ہیں۔

میری معلومات کے مطابق اردو زبان کو یہ شرف حاصل ہے کہ کثیر اسلامی متون اس زبان میں منتقل ہوچکے ہیں اور ہنوز سلسلہ جاری ہے۔۔۔۔۔۔۔اور یہ سلسلہ جاری وساری رہا تو انشاءاللہ ایک وقت آئے گا کہ تمام فنون کی امہات الکتب اردو زبان میں منتقل ہوجائیں گی اور انھیں پڑھ کر ہماری آنے والی نسلیں کہیں گی۔

بات کرنے کا حسیں طور طریقہ سیکھا
ہم نے اردو کے بہانے سے سلیقہ سیکھا

## نبی پاک ﷺ کی زیارت کی

مشہور تابعی بزرگ امام حسن بصری رحمہ اللہ نقل کرتے ہیں کہ رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

جو مجھے (ظاہری حیات میں) نہ پاسکا اور میری بیعت نہ کرسکا، تو وہ میری وفات کے بعد مدینہ آئے۔۔۔۔مجھ پر سلام بھیجے ،اور میری قبر کی زیارت کرے۔۔۔۔۔تو تحقیق اس نے میری بیعت کرلی۔

(فضائل مکۃ والسکن فیھا ،عربی ص37،اردو ترجمہ مولانا راشد مدنی، ص43)

اللہ کی رحمت سے ہم مدینہ منورہ میں سرکار ﷺ کی زیارت کے لیے حاضر ہوں گے۔

امام مدینہ امام مالک رحمہ اللہ اس بات کو مکروہ سمجھتے تھے کہ کوئی یوں کہے:

میں نے رسول اللہ کی قبر کی زیارت کی، بلکہ وہ کہتے تھے یوں کہنا چاہیے:

میں نے نبی پاک ﷺ کی زیارت کی۔

(مدارج النبوۃ، ج دوم، ص447، نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور)

## سب شہروں سے افضل

مکہ معظمہ وہ پیارا شہر ہے جسے اللہ کریم جل جلالہ نے کثیر انبیا کا جائے سکونت اور سید الانبیا کا جائے ولادت بنایا۔

اللہ کے حبیب اس شہر کی گلیوں میں چلتے پھرتے رہے، آپ ﷺ کی حیاتِ ظاہری کے اکثر ماہ و سال اِسی شہر میں گزرے ۔

اکثر ائمہ و علما (بشمول ائمہ ثلاثہ: امام اعظم، امام شافعی و امام احمد رضی اللہ عنہ جمیعھم) کے نزدیک مکہ معظمہ سب شہروں سے افضل ہے حتیٰ کہ مدینہ پاک سے بھی افضل ہے۔

امام احمد رضا حنفی نور اللہ مرقدہ فرماتے ہیں:

تُربت اطہر یعنی وہ زمین کہ (رسول اللہ ﷺ کے) جسمِ انور سے متّصل ہے، کعبہ معظمہ۔۔۔۔۔۔بلکہ عرش سے بھی افضل ہے۔

باقی مزار شریف کا بالائی حصہ (یعنی گنبد خضرا شریف فضیلت کے اعتبار سے) اس میں داخل نہیں۔

کعبہ معظمہ مدینہ طیبہ سے افضل ہے!

ہاں اس میں اختلاف ہے کہ:

مدینہ طیبہ سوائے موضع تُربتِ اَطہر، اور مکہ معظمہ سوائے کعبہ مکرمہ، ان دونوں میں کون افضل ہے؟

اکثر جانب ثانی ہیں (کہ مکہ پاک ہی افضل ہے) اور اپنا مسلک اول (کہ مدینہ طیبہ افضل ہے) اور یہی مذہب فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے، طبرانی کی حدیث میں تصریح ہے کہ:

المدینة افضل من مکة۔
مدینہ پاک، مکہ شریف سے افضل ہے۔

(فتاوی رضویہ شریف)

اللہ پاک ہمیں حرمین طیبین میں جہاں بھی رکھے، ایمان و محبت کی سلامتی کے ساتھ رکھے، اور ہمیشہ اِن کا احترام کرتے رہنے کی توفیق بخشے!

## مدینہ شریف نہیں چھوڑنا

عاشق مدینہ مولانا عابد حسین مدنی رحمہ اللہ بائیس سال مدینہ منورہ میں رہے، یہ حرمِ نبوی کے خادمین میں سے تھے، مسجدِ اقدس کی لائیٹیں آن کیا کرتے تھے۔

ان کا عشق رسول دائمی تھا، ادب مدینہ کو ہمیشہ ملحوظ رکھتے تھے۔

بعض علما جو انھیں ملتے رہے، وہ کہتے ہیں:

انھیں ہمیشہ بارگاہِ اقدس کا ویسا ہی مودب پایا، جیسے پہلے دن تھے۔

آپ مدینہ منورہ میں بائیس سال تک چارپائی پر نہیں سوئے، نیچے چٹائی پر سوتے تھے۔۔۔۔۔۔ کہتے تھے یہ سرکارِ مدینہ کا شہر ہے۔

بن لادن کمپنی نے بہت دفعہ آفر کی کہ ہم آپ کی تنخواہ بڑھا دیتے ہیں آپ مدینہ چھوڑ کر فلاں جگہ چلے جائیں، لیکن آپ کہتے میں نے مدینہ شریف نہیں چھوڑنا۔۔۔۔۔۔۔ حتی کہ ایک سال بغیر ڈیوٹی اور مشاہرے کے انتظار کرتے رہے لیکن مدینہ پاک نہیں چھوڑا۔

انوکھی وضع ہے ، سارے زمانے سے نرالے ہیں
یہ عاشق کون سی بستی کے یا رب رہنے والے ہیں !

## روضہ رسول کی حاضری

مجھے صحابہ کرام علیہم الرضوان میں سے سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنہ سے خاص محبت ہے (اللہ پاک یہ محبت سلامت رکھے)۔۔۔۔۔۔ جب آپ کا کوئی عمل مبارک نظر سے گزرتا ہے تو کوشش ہوتی ہے، پورے ذوق شوق سے اس کی پیروی کی جائے۔

آپ رضی اللہ عنہ بہت نیک سیرت اور متبع سنت تھے، آپ کی نیکی کی اس سے بڑی گواہی کیا ہوگی کہ رسول اللہ ﷺ نے آپ کو رجل صالح (نیک آدمی) فرمایا۔

سیدنا عبداللہ بن عمر نے روضہ رسول کی حاضری کا یہ طریقہ ارشاد فرمایا ہے کہ:
سنت (صحابہ) یہ ہے کہ رسول اللہ ﷺ کی قبرِ انور پر قبلہ کی طرف سے آیا جائے، پھر قبلہ کی طرف پیٹھ اور روضہ انور کی طرف منھ کر کے عرض کیا جائے:

السلام علیك ایها النبی ورحمة الله وبرکاته!

(مسند الامام الاعظم، کتاب الحج، هیئة زیارة قبر النبی ﷺ، ص 367، ر 255)

اللہ آپ کو مدینہ طیبہ کی حاضری نصیب کرے، آپ جب روضہ انور پہ آئیں تو اسی طریقے سے حاضری دیں، جو صحابہ کرام کی سنت ہے۔۔۔۔۔۔یہاں حضور کی طرف پیٹھ کر کے قبلہ شریف کی طرف منھ کرنے سے حتی الامکان پرہیز کریں
۔

امام مالک فرماتے تھے: (روضہ رسول پر دعا کے وقت قبلہ کی طرف منھ کر کے، حضور کی طرف پیٹھ نہ کرو) حضور تمھارا ہی نہیں، تمھارے باپ سیدنا آدم علیہ السلام کا بھی وسیلہ ہیں۔

## میری قبر کے پاس مجھ پر درود

تاجدار مدینہ ﷺ کا ارشاد مبارک ہے:
جو میری قبر کے پاس مجھ پر درود پڑھتا ہے میں اس کا درود خود سنتا ہوں۔

(مجموعة رسائل العلامة الملا علی القاری، الدرة المضیة فی الزیارة المصطفویة الرضیة، ص 28۔

ملا علی قاری رحمہ اللہ کہتے ہیں: اس حدیث کی سند جید ہے۔)

اللہ اللہ ہمارے نصیب۔۔۔۔۔۔۔۔۔کلام الٰہی سننے والے کان مبارک ہم گناہ گاروں کا سلام سنیں
اگر حضور ہمارا سلام خود سنتے ہیں تو ضرور ہماری التجائیں بھی سنیں گے اور اللہ کی عطا سے انھیں شرف قبولیت فرمائیں گے۔

واللہ وہ سُن لیں گے فریاد کو پہنچیں گے
اِتنا بھی تو ہو کوئی جو آہ کرے دل سے
دریا ہے چڑھا تیرا ، کتنی ہی اُڑائیں خاک
اُتریں گے کہاں مجرم ، اے عفو ترے دل سے !

## امام ابن ہمام

اللہ اللہ، امام ابن ہمام رحمہ اللہ نے کیسی ایمان افروز بات کہہ دی۔۔۔۔۔۔فرماتے ہیں:
عبد ضعیف (ابن ہمام) کے نزدیک (مسجد نبوی شریف میں جاتے ہوئے) صرف نبی پاک کے روضہ مبارک کی زیارت کی

نیت کرنا اولیٰ ہے۔۔۔۔۔۔۔کیوں کہ: اس میں آپ ﷺ کی زیادہ تعظیم و توقیر ہے۔

(مجموعۃ رسائل العلامۃ الملا علی القاری، الدرۃ المضیۃ۔۔۔۔۔، ص48)

## مجھے سلام کرنے نہیں آتا

ایک فقیر مسجد نبوی شریف میں جب حاضر ہوتا تو خاص مواجہ شریف کے پاس سلام عرض کرنے نہ جاتا۔

ایک دن اس کے خواب میں سرور کونین ﷺ تشریف لائے اور فرمایا:

تُو میرے پاس سے گزر جاتا ہے مجھے سلام کرنے نہیں آتا!!

خدا آپ کو مدینہ شریف، مدینہ پاک، مدینہ طیبہ، مدینۃ النبی لے جائے۔۔۔۔۔۔۔آپ جب حاضر بارگاہ ہوں تو جس قدر ہو سکے مواجہ شریف کے سامنے سلام پیش کیا کریں، سید عالم ﷺ کا فرمان مبارک بھی ہے کہ:

جو میری قبر کے پاس مجھ پر درود پڑھتا ہے میں اس کا درود خود سنتا ہوں، اور دور سے پڑھنے والے کا مجھ تک پہنچایا جاتا ہے۔

(انظر: مجموعۃ رسائل العلامۃ الملا علی القاری، الدرۃ المضیۃ فی الزیارۃ المصطفویۃ الرضیۃ، ص28۔

ملا علی قاری رحمہ اللہ کہتے ہیں: اس حدیث کی سند جید ہے۔)

جب آپ باب السلام سے سلام کے لیے حاضر ہو رہے ہوں گے تو آپ کی نظر ان الفاظ پر پڑے گی:

"ھنأ السلام علی رسول اللہ"

تو آپ خاص اس جگہ سلام ضرور پیش کریں، یہی وہ مقام ہے جس کی مثال کائنات ارض و سما میں کہیں نہیں۔

## صدمہ جانکاہ

جس شخص کا دل مدینۃ النبی کے ساتھ مُعلق ہو، اس کا مدینہ طیبہ سے جدا ہونا کسی صدمہ جانکاہ سے کم نہیں ہوتا۔

لوگ مدینہ شریف سے آنے پر جب گلے میں پھولوں کے ہار ڈالتے ہیں تو بظاہر ہم مسکرا کر ان کا شکریہ ادا کر دیتے ہیں، لیکن مدینہ چھوٹنے پر دل پہ کیا بیت رہی ہوتی ہے یہ کسی کو معلوم نہیں ہوتا۔

رات کو عاشقِ مدینہ حضرت مولانا ابو بلال محمد الیاس عطار قادری دام ظلہ سے ملاقات ہوئی تو آپ نے کہا:

"میں آپ سے تعزیت کرتا ہوں"، کہ آپ سے مدینہ چھوٹ گیا۔

اللہ حضرت کو جزا دے، یہ تعزیت صرف آپ نے ہی کی۔۔۔۔۔۔۔!

حضرت حاتم اصم رحمۃ اللہ علیہ فرماتے تھے:

میری جماعت چھوٹ گئی تو ایک ابو اسحاق بخاری تھے جنھوں نے مجھ سے تعزیت کی۔۔۔۔۔۔۔۔اگر میرا بیٹا فوت

ہو گیا ہوتا تو دس ہزار سے زیادہ لوگ تعزیت کرنے پہنچ جاتے؛ لوگوں کے نزدیک دُنیا کی آفت دین کی آفت سے آسان ہو گئی !

(مکاشفة القلوب، الباب الثانی والثمانون، فی فضل صلاة الجماعة، ص 354)

جمالِ نور کی محفل سے پروانہ نہ جائے گا
مدینہ چھوڑ کر اب ان کا دیوانہ نہ جائے گا
مِرے سرکار آ کر نقش کر دو اب کفِ پا کو
دلِ بیمار کا رہ رہ کے گھبرانا نہ جائے گا

## آدھی رات کے وقت

آدھی رات کے وقت ایک چھوٹی سی بچی کو گنبدِ خضرا کی تصویر سامنے رکھ کر روتے دیکھا، وہ بڑی شدت سے رو رہی تھی اور اپنے والد سے کہہ رہی تھی:

"بابا مجھے صبح ہی مدینہ پاک جانا ہے، میں ایک دفعہ چلی گئی تو کبھی واپس نہیں آؤں گی۔"

اسے بہت سمجھایا، دلاسہ دیا لیکن وہ چپ نہ ہوئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

دل کملا جھلا ضِد کردا، پانواں ترلے تے مَندا گل کوئی نئیں
میں کہناں جھلیا چُپ کر جا، کہندے باہج مدینے دے حَل کوئی نئیں

اللہ پاک اُس بیٹی کے پاک آنسوؤں کا صدقہ میری مغفرت فرمائے اور مجھے بھی مدینہ پاک لے جائے اور وہاں سے کبھی واپس نہ لوٹائے۔

یہ نہیں کہ خُلد نہ ہو نِکو ، وہ نِکوئی کی بھی ہے آبرو
مگر۔۔۔۔ اے مدینہ کی آرزو، جسے چاہے تُو، وہ سماں نہیں !

## شہرِ مدینہ کے بھی کیا کہنے

شہرِ مدینہ کے بھی کیا کہنے۔۔۔۔اِس مبارک شہر کی خاک ہی نہیں، خاک نشیں بھی پیارے لگتے ہیں۔

شاعرِ مشرق ڈاکٹر محمد اقبال نے بڑے شوق سے مدینہ طیبہ کا ایک کبوتر پالا تھا، جسے 20 نومبر 1917ء کو بلی اٹھا کر لے گئی، تو اُس کبوتر کی یاد میں یہ اشعار کہے گئے۔

رحمت ہو تیری جان پر اے مُرغِ نامہ بَر

آیا تھا اُڑ کے ذُروَۂ بامِ حَرَم سے تُو
زمزم میں تَر ہوئی تِری مِنقارِ نغمہ ریز
کرتا رہا عرب کو نمایاں عَجَم سے تُو
جاں کو بسا دیا تھا شَمیمِ حِجاز میں
لایا تھا تار توڑ کے زُلفِ صَنَم سے تُو
ہم کو دیا پیام الف لام میم کا
نا آشنا نہ تھا رہ و رسمِ اَلَم سے تُو

## مدینہ شریف میں مہنگائی

مدینہ شریف میں مہنگائی ہوگئی تو کسی نے سیدنا ابو سعید خُدری رضی اللہ عنہ سے مشورہ کیا کہ:
میں مدینہ پاک سے چلا نہ جاؤں، یہاں مہنگائی ہوگئی ہے، میرے بچے زیادہ ہیں (اور میرے پاس مال کم ہے)، میں مدینہ شریف کی محنت مشقت اور بھوک پر صبر نہیں کر سکتا!
سیدنا ابو سعید خدری رضی اللہ عنہ نے فرمایا:
تجھ پر افسوس ہے، میں تو تجھے یہ مشورہ نہیں دوں گا (کہ تو رسول اللہ کا شہر چھوڑ دے) میں نے تو رسول اللہ ﷺ سے سنا ہے:
جو بندہ مدینہ پاک کی تکلیفوں پر صبر کرتے ہوئے فوت ہو گیا۔۔۔۔۔۔ اگر وہ مسلمان ہوا تو میں بروز قیامت اس کی شفاعت کروں گا، یا اس کی گواہی دوں گا۔ (ملخصًا: صحیح مسلم، ر3339)
مہنگائی مختلف ممالک میں ہمیشہ ہوتی رہی ہے، ہمارا ملک بھی مہنگائی کی چکی میں پِس رہا ہے، بس اللہ پاک ہی ہم پر رحم فرمانے والا ہے۔ اب اگر ہم صبر کریں گے اور مہنگائی سے نکلنے کی تدبیر کریں گے تو اللہ تعالی اجر دے گا۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ کاش کے! ہم مدینے شریف رہتے ہوئے صبر کرتے!! اللہ پاک ہمارا مامن و مسکن مدینہ بنا دے!

## لوگ حج پر جا رہے ہیں

خوش نصیب، خوش قسمت، نیک بخت، سعادت مند لوگ حج پر جا رہے ہیں، خدا یہ دولت ہمیں بھی نصیب کرے۔

زمانہ حج کا ہے جلوہ دیا ہے شاہد گل کو

اِلٰہی طاقتِ پرواز دے پَرہائے بلبل کو

شیخ الحدیث پیر سید مراتب علی شاہ صاحب رحمہ اللہ اپنے والد گرامی کے ساتھ حج کرنے گئے تو حاضری مدینہ سے جب لوٹنے لگے تو والد صاحب نے فرمایا: مراتب علی تیرے پاس جتنے پیسے ہیں سب مدینے شریف کے لوگوں میں تقسیم کردے!

آپ نے ساری رقم وہاں کے خادموں میں تقسیم کردی۔ (فضائل مراتب، ص25)

خدا توفیق دے اس دفعہ حج پر جانے والے صاحبِ استطاعت حاجی بھی ایسے ہی کریں! مکے مدینے والوں نے کرونا کے دنوں میں بڑی آزمائش دیکھی ہے۔

# (5) پانچواں باب: تربیت اولاد

اس باب میں تربیت اولاد سے متعلق تحریریں ہیں۔

## بچوں کو جھڑکنا

ایک صاحب ملاقات کے لیے آئے ، ان کے ساتھ تین بچے بھی تھے جو کبھی اِدھر دوڑتے ، کبھی اُدھر۔۔۔۔۔۔۔۔وہ غصے میں آکر انھیں جھڑکنے لگے تو میں نے کہا: انھیں بالکل نہ جھڑکیں، انھیں دوڑنے دیں۔

بچوں کو تو رب تعالی بھی دوڑنے سے منع نہیں فرمائے گا۔ ایک حدیثِ حسن میں آتا ہے، رسول اللہ ﷺ فرماتے ہیں:

میں بہ روز قیامت اپنے امتیوں کو وضو کی چمک سے پہچان لوں گا، وہ دائیں ہاتھ میں اعمال نامہ لیے آرہے ہوں گے اور ان کے بچے ان کے آگے دوڑ رہے ہوں گے۔ (مسند احمد وغیرہ)

چھوٹی چھوٹی بات پر، بچوں کو بار بار ٹوکنا اور ڈانٹنا بالکل نامناسب ہے؛ کھیلنا کودنا، بھاگنا دوڑنا ان کا بنیادی حق ہے، انھیں اس حق سے محروم نہیں کرنا چاہیے۔ یہ جب تک صحت مند رہیں گے، بھاگ دوڑ کرتے رہیں گے۔

ہاں! اگر ضرورت محسوس ہو تو پیار سے سمجھانا چاہیے کہ بیٹا ایسے نہیں، ایسے کرتے ہیں۔

## بچوں کو توجہ دیں

ہادی نے سکول بیگ ایک طرف پھینکا، دوڑتا بابا کے کمرے میں گیا اور کہنے لگا: بابا جی آؤناں میرے ساتھ کھیلو! باپ لیپ ٹاپ پر انگلیاں پھیرتے:

بیٹا کام میں مصروف ہوں، آپ جاکر لان میں کھیلو یا دوسرے روم میں کھلونوں سے کھیل لو۔

نہیں بابا مجھے آپ کے ساتھ کھیلنا ہے!

بولا ناں جاکر کھیلو ایک دفعہ بات نہیں سنتے کیا۔

ہادی ٹُوٹے دل کے ساتھ کمرے سے نکلا، کچن میں ماں کے پاس گیا:

ماماں جی میرے ساتھ کھیلوناں!

بیٹا ابھی بازار سے آئی ہوں تھک ٹوٹ چکی ہوں، ویسے بھی مہمان آرہے ہیں ان کے لیے ابھی کھانا بنانا ہے، جھاڑو پَوچا کرنا ہے، اور بھی کئی کام ہیں؛ آپ جاکر اپنے کھلونوں سے کھیل لو یا کارٹون دیکھ لو۔

ہادی سیدھا لان میں جاتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔دو لکڑیاں کھڑی کرکے ایک کا نام ماں، دوسری کا باپ رکھ کر کہتا ہے:

آج سے تم میرے ماما بابا ہو، میرے اصلی والے ماما بابا کو بہت کام ہوتے ہیں وہ میرے ساتھ کھیل نہیں سکتے۔

پھر گیند پھینکتا ہے، جو جاکر باپ والی لکڑی پہ لگتا ہے تو وہ گر جاتی ہے، یہ بھاگا بھاگا اسے اٹھا کر چومتا ہے اور کہتا ہے سوری بابا! اب آرام سے ماروں گا اب آپ کو گرنے نہیں دوں گا۔

اسی طرح ماں والی لکڑی کے ساتھ کرتا ہے۔

یہی اس کا روزانہ کا معمول بن جاتا ہے۔
ایک دن اس کا والد دیکھتا ہے کہ ہادی اکیلا بیٹھ کر ماں والی لکڑی سے شکایت کر رہا ہے:
ماماں جی آج کام کرنے والی نے مجھے شیک نہیں بنا کے دیا اور مارا بھی ہے، ماماں آپ اسے پوچھیے ناں!
یہ منظر دیکھ کر باپ کے پاؤں تلے سے زمین نکل جاتی ہے وہ دوڑ کر اسے سینے سے لگا لیتا ہے، اور اپنی غلطیوں کی تلافی کا عہد کر لیتا ہے۔
آپ کے بچے آپ کی توجہ مانگتے ہیں، انھیں بھرپور توجہ دیجیے؛ انھیں ٹی وی، موبائل اور کھلونوں کے سپرد کر کے مطمئن نہ ہو جائیے یہ وقت فرصت ان کے ساتھ کھیلیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔؛ ان کی باتیں غور سے سنیے، ان پر ہر وقت مہمان مسلط نہ کیجیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، انھیں گھر میں کھیلنے کودنے، گند ڈالنے کی اجازت دیجیے!

وہ اگر دیواروں پر لکیریں ماردیں، فرش پر سیاہی گرادیں، بستر پہ پانی گرادیں، برتن توڑ دیں، کپڑے پھاڑ دیں، گھریلو نقصان کر دیں تو انھیں جھڑکیے مت، پیار سے سمجھائیے۔ ہو سکے تو کہیے:
میرے بیٹے نے جان بوجھ کر ایسے نہیں کیا، یہ غلطی سے ہو گیا، کوئی بات نہیں؛ مجھے امید ہے آئندہ ایسے نہیں ہو گا!
آپ کے بچے آپ کے لیے اللہ کی نعمت ہیں، اس کی قدر کیجیے۔
میں نے ایسے کروڑ پتی لوگ بھی دیکھے ہیں جو روتے ہیں، صرف اس لیے کہ:
ان کے پاس دنیا کی ہر نعمت موجود ہے، لیکن اولاد نہیں!

## چائے کی چُسکی

باباجی! اتنا مزہ چائے کا نہیں آتا، جتنا چائے پیتے وقت چُسکی لینے کا آتا ہے۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔ کیا کروں، امی جھڑک کر کہتی ہیں:
چائے پیتے وقت شڑ شڑ کی آواز نہیں آنی چاہیے!!
بچوں سے، اُن کا بَچپنا نہ چھینیں!!
وہ چائے کی چُسکیاں لگائیں، آنکھ بچا کے دیواروں پر لکھ دیں، کپڑے خراب کر لیں، مٹی سے ہاتھ پاؤں بھر لیں، نجانے میں برتن توڑ ڈالیں، کھلونے ضائع کر دیں، بستر گندا کر دیں، فرش پر کچرا بکھیر دیں، کھانا، پانی، سالن گرا دیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تو انھیں ڈانٹ ڈپٹ نہ کریں، پیار سے سمجھائیں! ابھی اُن سے بڑوں جیسی امیدیں وابستہ کر لینے سے، وہ بڑے تو نہیں بنیں گے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اُن کا بچپنا ضرور چھن جائے گا۔
"کسی کا بچپن نہ چھینیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، چھوٹی عمر کی خوشیاں، بڑے ہو کر بڑی کوششوں سے بھی نہیں ملتیں۔"

## بیٹی

1: بیٹی کی پیدائش پر کفار و مشرکین کی طرح منھ نہیں بسورنا چاہیے، بلکہ اللہ پاک کی رحمت سمجھ کر خوشی منانی چاہیے
۔
یہ حقیقت ہے کہ بیٹیاں، بیٹوں کی بہ نسبت زیادہ باوفا ہوتی ہیں؛ پرائے گھر جاکر بھی والدین کا ساتھ نہیں چھوڑتیں۔
2: بیٹی جب کچھ ہوش سنبھالنے لگے تو اسے دینی تعلیم دیں، پردے کے فوائد اور احکام بتائیں؛ تاکہ جوان ہوکر پردے کو عزت سمجھے اور دین پر چلے
3: بیٹیاں، بیٹوں کی بہ نسبت کمزور دل ہوتی ہیں، لال بیگ کیا چیونٹیوں سے بھی ڈر جاتی ہیں؛ انھیں مزید بلی چوہے سے ڈرانے کے بجائے، جرات و بہادری کا سبق دیں تاکہ مضبوط دل بنیں۔
رات کو انھیں حضرت خولہ، اسما، اُم عمارہ، اُم حکیم، ام سلیم رضی اللہ عنھن جیسی بہادر صحابیات کے واقعات سنائیں، تاکہ ان میں دشمن سے مقابلہ کرنے کی جرات پیدا ہوسکے اور اللہ کے علاوہ کسی سے نہ ڈریں۔
4: بیٹی کی شادی اس کی رضامندی کے بغیر ہرگز نہیں کرنی چاہیے۔
ضد میں آکر بیٹی کے ارمانوں کا خون کرنا، کوئی دانش مندی نہیں۔
5: جہیز دینا آپ کی معاشرتی مجبوری ہوگی، جس کے لیے آپ نے بہت جتن کیے ہوں گے؛ لیکن بیٹی کو وراثت سے حصہ دینا حکم خداوندی ہے، اس کے لیے بھی بھرپور کوشش کریں؛ تاکہ بیٹی خوشی خوشی اپنا حصہ لے سکے۔
معاف کروانے کا سوچتے رہنا بھکاری پن ہے جو خوددار کو زیب نہیں دیتا۔
6: عمر بھر بیٹی کے لیے اپنے دروازے کھلے رکھیں۔
وہ جب بھی سسرال سے میکے آئے، اسے خالی ہاتھ نہ لوٹائیں۔
آپ نہیں جانتے کہ لاکھوں میں کھیلنے والی آپ کی بیٹی، آپ کا ہزار روپیہ پاکر بھی پھولی نہیں سمائے گی۔
اعلیٰ ترین پوشاکیں پہننے والی بیٹی، آپ کے دیے ہوئے عام سے کپڑوں کو بھی بہت زیادہ اہمیت دے گی۔

گاؤں دیہاتوں کے پرانے بزرگ کہتے تھے:
میکے گھر آئی بیٹی کو خالی ہاتھ بھیجیں تو چھت کڑکڑ کرتی ہے۔
(مطلب وہ بیٹی کے خالی ہاتھ چلے جانے کو ایک حادثہ سمجھتے تھے۔)

## محبت نامہ

آج صبح بیدار ہوتے ہی میرے بیٹے نے مجھے ایک خط تھمایا، جو بڑے اچھے طریقے سے طے کیا ہوا تھا۔

میں نے اسے کھول کر پڑھا تو وہ "محبت نامہ" تھا، جسے اُس نے اپنے جذبات کے مطابق مرتب کیا تھا۔
میں نے خوشی کا اظہار کرتے ہوئے اسے پیار دیا اور حوصلہ افزائی کی۔
ماں باپ کو اپنے بچوں کے دل میں ایسے گھر کرنا چاہیے کہ وہ اپنی معصوم محبتوں کا اظہار انھی سے کریں، ناجائز اور ظالمانہ محبتوں سے محفوظ رہیں۔
بچے جو بات ڈانٹ ڈپٹ سے نہیں سمجھتے، وہ محبت سے بہ آسانی سمجھائی جا سکتی ہے، بس اندازِ تفہیم عاقلانہ ہونا چاہیے۔
اولاد کے ساتھ ہر وقت تحکمانہ لہجہ رکھنا سخت نقصان دِہ ہے، انھیں محبت بھری دوستی دیں، تاکہ وہ دل کی گہرائیوں میں ابھرنے والے جذبات کا آپ کے سامنے اظہار کر سکیں۔
بچوں پر نظر ضرور رکھیں، لیکن ہر وقت نظریں گاڑے نہ رہیں، کبھی چشم پوشی سے بھی کام لیں۔
بچہ اگر ایسی غلطی کر رہا ہو جسے وہ آپ کو بتانا نہیں چاہتا، تو اسے یہی محسوس کروائیں کہ آپ کو علم نہیں۔
پھر موقع کی مناسبت سے اصلاح کر دیں۔
اپنی اولاد پر بے جا پابندیاں نہ لگائیں، اور نہ ان سے چیزیں چھپا چھپا کر رکھیں۔
کہتے ہیں ایک باپ نے بیٹے کے سائیکل کو تالا لگا دیا، اور اسے کہا:
خبردار، جو تو نے امتحانوں کے دن سائیکل باہر نکالا!
بیٹے نے ہاں تو کر دی، لیکن باپ جب آفس چلا جاتا تو یہ خفیہ طریقے سے تالا کھول کر سائیکل باہر نکال لیتا۔
ایک دن باپ نے دیکھا کہ بیٹا روڈ پر سائیکل دوڑا رہا ہے، تو وہ ایک طرف چھپ گیا تاکہ بیٹے کو پتا نہ چلے۔
جب رات کو سب کھانا کھانے بیٹھے تو بیٹے سے کہنے لگا:
بیٹا! آپ امتحانوں کی بہت اچھی تیاری کر رہے ہیں اس لیے میں نے سوچا کہ سائیکل کی چابی آپ کو دے دوں۔
یہ لو چابی، اور روزانہ ایک گھنٹہ سائیکل چلا لیا کرو آپ فریش ہو جاؤ گے۔
بیٹے نے جب باپ کا پیار بھرا لہجہ دیکھا تو امتحانوں کی تیاری میں جُت گیا اور سائیکل کو اپنی خوشی سے چھوڑ دیا۔
سچ ہے:
محبت کے علاوہ کسی طریقے سے بھی آپ لوگوں کا دل نہیں جیت سکتے۔

## بیٹے کا سوال

کل میرے بیٹے محمد امیر معاویہ نے مجھ سے سوال کیا:
"بابا جی! سلطان محمد فاتح کون تھے؟"
مجھے اس کے سوال پر بے حد خوشی ہوئی۔

میں نے کہا:

"بیٹا! سلطان محمد فاتح رحمہ اللہ بڑے مجاہد تھے، انھوں نے صرف 21 سال کی عمر میں قسطنطنیہ (استنبول) فتح کر لیا تھا۔ یہ بہت بہادر اور ذہین تھے؛ جب قسطنطنیہ فتح کرنے کے لیے سمندر کی طرف سے بڑھ رہے تھے تو کافروں نے سمندر میں آگ پھینک دی۔

انھوں نے راتوں رات درخت کٹوا کر، ان پر جانوروں کی چربی لگوائی اور ان کے ذریعے بحری جہازوں کو پہاڑ پر چڑھا کر، سمندر کی دوسری طرف اتار لیا۔

اور دشمن کی آنکھ کھلنے سے پہلے، لشکر سمیت شہر میں داخل ہو گئے۔

انشاءاللہ میں آپ کو سلطان کے مزار پر لے کر جاؤں گا، اور وہاں دعا کروں گا کہ رب تعالیٰ آپ کو بھی سلطان کا فیضان عطا فرمائے!

حدیث پاک میں ہے:

قسطنطنیہ ضرور فتح ہو گا، اور اسے فتح کرنے والا امیر، بہترین امیر ہو گا؛ اور اس کا لشکر بہترین لشکر ہو گا۔ (مسند احمد)

میں نے جن کے نام پر آپ کا نام رکھا ہے وہ صحابیِ رسول سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ عنہ بہت خواہش رکھتے تھے کہ قسطنطنیہ فتح ہو جائے۔

آپ نے دو بحری لشکر بھی بھیجے، لیکن فتح نہ ہو سکا۔

آخر یہ سلطان محمد فاتح رحمہ اللہ کے دست مبارک پر فتح ہوا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اللہ کریم ان کی قبرِ انور پر کروڑوں رحمتوں کا نزول فرمائے؛ انھوں نے جب استنبول فتح کیا تو شہر میں چالیس عظیم الشان مسجدیں بنائیں اور سیدنا ابوایوب انصاری رضی اللہ عنہ کے مزار پاک کے پاس بھی عالی شان مسجد تعمیر کروائی۔

انشاءاللہ جب ہم ترکی جائیں گے تو ان کی زیارت سے بھی مشرف ہوں گے۔

کہتا ہے: بابا جانی میں بھی سلطان محمد فاتح اور قطب الدین ایبک جیسا بنوں گا، انشاءاللہ!!"

اگر آج ہم اپنے بچوں کو سلاطین و مجاہدین اسلام سے متعارف کروائیں گے تو وہ کل ان جیسا بننے کی کوشش کریں گے؛ اگر کسی ایک کی بھی کوشش بارآور ہو گئی تو انشاءاللہ نقشہ بدل جائے گا۔

بچہ شاہیں سے کہتا تھا عقاب سال خورد
اے تیرے شہپر پہ آساں رفعت چرخ بریں
ہے شباب اپنے لہو کی آگ میں جلنے کا نام
سخت کوشی سے ہے تلخ زندگانی انگبیں
جو کبوتر پر جھپٹنے میں مزا ہے اے پِسر!

وہ مزا شاید کبوتر کے لہو میں بھی نہیں

## بچوں کی خوشیاں

تقریباً ڈیڑھ گھنٹہ ہونے کو ہے میں مطالعہ میں مگن ہوں اور بچے میرے ساتھ کھیل رہے ہیں۔

کبھی اوپر چادر دیتے ہیں، کبھی پُشت پر گاڑی چلاتے ہے، کبھی کمر پر آٹا گوندھتے ہیں، کبھی پیٹ پر کپڑا باندھتے ہیں؛ کبھی سر دباتے ہیں، کبھی پاؤں دباتے ہیں، کبھی پُشت کھجاتے ہیں۔

کبھی کہتے ہیں: باباجی آپ ایک پہاڑ ہوتے، اور ہم اس پر مکان تعمیر کرتے..... پھر خیالی مکان تعمیر کرنا شروع کردیتے ہیں

۔

الغرض انھیں جو جو سوجھ رہا ہے، کررہے ہیں اور ہنستے جارہے ہیں۔

میں خاموشی سے اپنے کام میں مگن ہوں، انھیں بالکل منع نہیں کررہا...... مجھے وہ منظر یاد آرہا ہے جب سیدنا عمر پاک بچوں کے سامنے چار زانو بیٹھے تھے اور بچے آپ سے کھیلنے اور ہنسنے لگے تھے، جس پر آپ اللہ تعالی کا شکر بجالائے کہ جس نے آپ کو یہ مسکراہٹیں دکھائیں۔

بتانے کا مقصد یہ ہے کہ:

بچوں کی خوشیاں، بڑی سادی اور پیاری ہوتی ہیں انھیں اِن سے محروم نہیں کرنا چاہیے۔

اگر آپ مطالعہ کررہے ہیں، کھانا کھارہے ہیں، سورہے ہیں، یا کسی اہم کام میں مشغول ہیں اور بچے آکر آپ کے پاس کھیلنا شروع کردیتے ہیں تو انھیں جھڑکیں نہیں، ڈانٹیں نہیں؛ بلکہ پیار سے سمجھائیں، اور وہ بھی تب سمجھائیں جب سمجھانا ضروری ہو.....ورنہ کھیلنے دیں۔

اللہ پاک ہم سب کے بچوں کو ہنستا کھیلتا رکھے اور انھیں صحت و تن درستی عطا فرمائے۔

## ننگے سر تو نہیں پڑھتے ناں

بچے سکول جانے کی تیاری کررہے تھے، میں نے کہا:

بیٹا! ایک نعت شریف ہی سنادو۔

کہتے ہیں: باباجی! ننگے سر تو نہیں پڑھتے ناں۔-----------------ٹھہریں، سر ڈھانپ لیں۔

پھر فوراً سر ڈھانپا، ہاتھ باندھے اور آنکھیں بند کرکے بارگاہِ رسالت میں عرض کرنے لگے ۔

بَہرِ دیدار مُشتاق ہے ہر نَظر، دونوں عالَم کے سرکار آجائیے
چاندنی رات ہے اور بِچھلا پَہَر، دونوں عالَم کے سرکار آجائیے

سامنے جَلوہ گر پیکرِ نور ہو، مُنکِروں کا بھی سرکار شک دُور ہو
کرکے تبدیل اِک دن لِباسِ بَشَر، دونوں عالم کے سرکار آجائیے

میری آنکھیں نم ہوگئیں اور میں نے اگلے اشعار پڑھے۔

دل کا ٹوٹا ہوا آبگینہ لیے ، جَذبۂ اِشتِیاقِ مدینہ لیے
کتنے گھائل کھڑے ہیں سَرِ رہ گُزر، دونوں عالم کے سرکار آجائیے
آخِری وقت ہے ایک بیمار کا ، دل مچلنے لگا شوقِ دیدار کا
بُجھ نہ جائے کہیں یہ چراغِ سَحَر، دونوں عالَم کے سرکار آجائیے !!

## بیٹیوں کی تربیت

آج کل مائیں بیٹیوں سے گھر کے کام نہیں کرواتیں، صرف پڑھائی پر زور دیتی ہیں۔
بیٹیاں بیس بیس سال کی ہوجاتی ہیں، لیکن انھیں ہاتھ سے روٹی تک بنانی نہیں آتی؛ اس کے لیے بھی بیلن ڈھونڈتی رہتی ہیں۔
پہلے کی مائیں چھوٹی سی عمر میں ہی بچیوں کو کھانا پکانا، سینا پرونا، جھاڑنا پونچھنا سکھا دیتی تھیں۔
اللہ جنت نصیب کرے، میری دادی جان کے پاس سیکڑوں بچیوں نے قرآن پاک کی تعلیم حاصل کی اور امور خانہ داری سیکھے۔

دادای جان رحمہااللہ انھیں سکھاتی تھیں کہ:

1: صاف ستھرے کام کیا کرو، چاہے تھوڑے ہوں۔

2: بسم اللہ شریف پڑھ کر آٹا گوندھا کرو اور دبا کر مکی لگایا کرو، تاکہ آٹا نرم وملائم ہوجائے اور اس سے پکائی گئی روٹی بوڑھے بھی آسانی سے کھا سکیں۔

3: کپڑے دھوو تو صَرف صابن کم استعمال کرو، ہاتھوں سے زیادہ کام لو۔
اگر تم صابن رگڑتی رہوگی، کپڑے مَلوگی نہیں، تو اُن میں تَند میل پڑجائے گی۔
بالخصوص پائنچے، بازو، کَف، کالر، اور نیفے وغیرہ کو اچھی طرح صاف کیا کرو۔

4: جب کوئی گھر کا فرد گھر سے باہر جانے لگے تو اللہ کے سپرد کیا کرو، جب گھر آئے تو بسم اللہ کہا کرو اور پانی پوچھا کرو۔

5: اپنے کپڑے، جوتے سنبھال کر رکھا کرو، تاکہ زیادہ دیر استعمال میں آسکیں۔
گھر والوں کے جو جُوتے کبھی کبھی استعمال ہوتے ہیں، انھیں شاپر یا ڈبے میں ڈال کر رکھا کرو، تاکہ گرد وغبار سے بچے رہیں۔

6: دودھ اللہ کی عظیم نعمت ہے، اس کے لیے صاف ستھرے برتن استعمال کیا کرو، اور اس کا کوئی قطرہ زمین پر نہ گرنے دیا

کرو۔

7: باجرے، مکئی، اور چاول کی روٹی بھی گندم کی روٹی کی طرح گول بنایا کرو۔

نیز تندور میں روٹی ہاتھ سے لگایا کرو، گدی سے لگائی گئی روٹی جلدی سُوکھ جاتی ہے۔

8: فالتو کاغذ اور گتے ضائع کرنے کے بجائے، انھیں مٹی کے برتن میں بھگو دیا کرو، جب وہ بالکل نرم ہو جائیں تو ان میں میتھرے ڈال کر مختلف برتن بنالیا کرو۔

(کاغذ سے بنائے گئے برتن میں گُڑ سال بھی پڑا رہے، خراب نہیں ہوتا؛ اور کاغذ کی مٹی میں رکھے ہوئے آٹے کو کیڑا نہیں لگتا)

9: اپنے بچوں کو کبھی گالی اور بددعا نہ دینا، وہ تنگ بھی کریں پھر بھی دعا ہی دینا۔

10: گھر میں لکڑی کے جالے نہ رہنے دیا کرو، انھیں جتنا جلدی ہو سکے اُتار دیا کرو۔

## بیٹیاں

گھر میں کھڑا تھا کہ بیٹی دوڑتی دوڑتی آئی اور کپڑا لے کر میرے جوتے صاف کرنے لگی۔

میں نے کہا: بیٹی اوپر اٹھو! کیا کر رہی ہو۔

کہنے لگی: بابا آپ کے جوتوں پر مٹی پڑی تھی، میں نے صاف کر دی ہے، اب اچھے ہو گئے ہیں۔

مجھے اس پر بہت پیار آیا، میں سوچنے لگا: بیٹی کا باپ کے ساتھ کیسا پیارا رشتہ ہے۔

1: بیٹیاں، باپ سے بہت زیادہ محبت کرتی ہیں؛ باپ کے لیے ان کے جذبات ماں سے بڑھ کر ہوتے ہیں۔

باپ کو بھی بیٹیوں سے بہت زیادہ محبت کرنی چاہیے، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ سنجیدگی اور متانت کا دامن کبھی نہیں چھوڑنا چاہیے۔

2: بیٹیوں کو محبت دینے کے ساتھ، ان کی ایسی تربیت بھی کرنی چاہیے کہ زندگی کے کسی موڑ پر بھی اپنے دین و ایمان اور والدین کو فراموش نہ کریں۔

3: بیٹیاں طبعاً کمزور دل ہوتی ہیں، انھیں مزید بلی چوہے وغیرہ سے نہیں ڈرانا چاہیے، بلکہ بہادر بننے کی تلقین کرنی چاہیے۔

انھیں سیدہ خولہ اور دیگر صحابیات رضی اللہ عنھن کے واقعات سنانے چاہییں۔

مجھے اللہ پاک نے بیٹی عطا کی، تو میں نے اس کا نام عَاتِکہ رکھا۔

عاتکہ نام، رسول پاک ﷺ کی جدات کا تھا، اس کا معنی: پاکیزہ بھی ہے، اور لڑاکی بھی۔

سرکار ﷺ نے ایک جنگ کے دوران رجز میں کہا تھا:

انا ابن العواتك۔

میں ان (بہادر) ماؤں کا بیٹا ہوں، جن کا نام عاتکہ ہے۔

اللہ کی رحمت سے میں نے اپنی بیٹی کو تعلیم کے ساتھ ساتھ، ابھی سے ہی تائی کوانڈو (Taekwondo) کی تربیت دلانی شروع کردی ہے؛ اللہ نے چاہا تو وہ چھوٹی سی عمر میں ہی کراٹے وغیرہ، حفاظتی تدابیر سیکھ جائے گی، اور سیدہ خولہ رضی اللہ تعالی عنھا کی سچی کنیز بنے گی۔

بتانے کا مقصد یہ ہے کہ: آج کے دور میں، مسلمان بیٹیوں کو صرف صاحبِ علم وعمل ہی نہیں، عقل مند اور بہادر بننے کی بھی ضرورت ہے؛ تاکہ وقت آنے پر سیدہ خولہ کی طرح کافروں اور ظالموں کا مقابلہ کرسکیں۔

برما، فلسطین، کشمیر اور ہندستان کے حالات ہمیں کبھی نہیں بھولنے چاہییں؛ ہمیں ان سے نہ بھولنے والا سبق سیکھنا چاہیے۔

اللہ کریم ہر مسلمان بیٹی کو والدین کی آنکھوں کی ٹھنڈک بنائے، اور دین اسلام کی کامل پیروی کی توفیق عطا فرمائے!

## بچوں کو جگانا

1: بچوں کو جگانے کے لیے، اُن کے اوپر سے بستر ہرگز نہیں کھینچنا چاہیے، نہ انھیں بار بار کہنا چاہیے کہ: اٹھو اٹھو؛ اور نہ انھیں کوسنے دینے چاہییں۔

2: انھیں رات کو جلدی سُلانے کی کوشش کریں اور یہ ذہن دیں کہ: بیٹا! صبح آپ نے جلدی اٹھنا ہے۔

میں آپ کو جب صبح اٹھاؤں تو پہلی آواز پر ہی اٹھ جانا۔

بیٹا! آپ نے زندگی بھر کے لیے یہ عادت بنانی ہے کہ پہلی آواز اور الارم کی پہلی ٹون پر بیدار ہوجانا ہے۔

یہ عادت آپ کو کبھی سُست نہیں پڑنے دے گی، اور حادثے کی صورت میں آپ کی معاون ثابت ہوگی۔

3: بچہ جب آپ کی پہلی آواز پر بیدار ہوجائے تو اُسے شاباش دیں اور اس کی تعریف کریں؛ اگر بیدار نہ ہو تو اُسے جھڑکیں نہیں، بلکہ اچھے انداز سے اس کا جذبہ بیدار کریں۔

4: بچے کو جلدی اٹھنے کا عادی بنانے کے لیے، جلدی سونے کی عادت ڈالیں۔ وہ صبح جلدی اسی صورت میں بیدار ہوگا جب رات کو جلدی سوئے گا

5: بچوں کو جلدی سُلانے کے لیے ڈرائیں دھمکائیں نہیں، بلکہ خود جلدی سوجائیں، بچے بھی سوجائیں گے۔

اگر آپ موبائل سے لگے رہے تو بچے بروقت نہیں سوئیں گے۔

6: بچوں کو دیسی غذائیں (گھی، مکھن، چُوری، حلوہ، کھجور، گُڑ کے چاول وغیرہ) کھلایا کریں، تاکہ انھیں پرسکون نیند آئے اور طاقت ور بنیں۔

# (6) چھٹا باب: والدین

اس باب میں عظمت والدین اور اصلاح والدین سے متعلق تحریریں ہیں۔

## بہترین باپ

پیارے بیٹے سنو! میں یہ تمھیں اُس وقت کہہ رہا ہوں جب تم میٹھی نیند کا مزہ لے رہے ہو، تمھارا ایک ہاتھ تمھارے گال کے نیچے ہے اور تمھارے خوب صورت بال تمھارے ماتھے پر چپکے ہوئے ہیں۔

میں چوری چُھپے تمھارے کمرے میں آیا ہوں..... صرف چند منٹ پہلے جب میں لائبریری میں بیٹھا اپنے کاغذات دیکھ رہا تھا تو اچانک ندامت کی ایک لہر میرے وجود کے اندر دوڑ گئی اور میں خطاوارانہ انداز میں تمھارے بستر کے پاس آگیا—

میرے پیارے بیٹے!

میں سوچ رہا تھا کہ میرے اور تمھارے درمیان کچھ ایسی باتیں ہوگئی ہیں جو کہ نہیں ہونی چاہیے تھیں۔ جب تم نے سکول جاتے وقت نہانے کے بجائے صرف تولیہ گیلا کر کے اپنے چہرے کو صاف کیا، تو میں نے تمھیں ڈانٹا؛ پھر جوتوں کو پالش کیے بغیر سکول جانے لگے تو بھی میں نے تمھیں ڈانٹا، پھر جب تم نے سکول سے واپسی پر اپنا بیگ لاپرواہی سے کمرے کے فرش پر پھینک دیا تو میں تم سے ناراض ہوا.....

جب تم ناشتہ کرنے کے لیے میز پر بیٹھے تو بھی میں نے تمھاری غلطیاں نکالیں کہ تم چیزوں کو بے ترتیبی سے استعمال کر رہے ہو؛ تم کھانا چبا کر کھانے کے بجائے جلدی جلدی ہڑپ کر رہے ہو، ناشتے کے دوران تم نے اپنی کُہنیاں میز پر رکھی ہوئی ہیں، تم نے اپنی بریڈ پر بہت زیادہ مکھن لگا دیا ہے.....اور پھر جب تم نے کھیلنے کے لیے جاتے وقت مجھے "خدا حافظ بابا" کہا تو میں نے ماتھے پر تیوریاں چڑھاتے ہوئے کہا: "اپنے کندھوں کو پیچھے کرو!" پھر یہی کچھ دوپہر کو بھی دُہرایا کہ:

سڑک پر آیا اور تمھاری جاسوسی کرنے لگا..... میں نے دیکھا کہ تم زمین پر بیٹھے گولیاں کھیل رہے ہو، تمھارے کپڑے پھٹے ہوئے ہیں تو میں نے تمھارے دوستوں کے سامنے تمھیں سخت بُرا بھلا کہا اور اپنے آگے آگے مارچ کراتے ہوئے گھر لے آیا— تمھارے کپڑے بڑے مہنگے تھے، اگر انھیں تم نے اپنے جیب خرچ سے خریدا ہوتا تو تمھیں احساس ہوتا اور پھر تم استعمال کرنے میں احتیاط سے کام لیتے۔ پیارے بیٹے! ایک باپ کی حیثیت سے ذرا سوچو کہ اگر تم میری جگہ ہوتے تو کیا کرتے.....؟

تمھیں یاد ہے کہ جب میں لائبریری میں بیٹھا مطالعہ کر رہا تھا تو تم بہت ڈرے ڈرے وہاں آئے، تمھاری آنکھوں میں بڑی شرمندگی تھی.....جب میں نے تمھارے قدموں کی آہٹ سن کر تمھاری طرف غصیلے انداز میں دیکھا اور پوچھا کہ کیا کرنے آئے ہو؟ تو تم کمرے کی دہلیز پر ہی رک گئے..... تم نے فوراً کہا: "کچھ نہیں بابا"

اور فوراً ایک جست لگا کر میرے قریب آئے اور میرے پیچھے کھڑے ہو کر میری گردن میں اپنی بانہیں ڈال دیں اور مجھے پیار کرنے لگے..... تمھارے چھوٹے چھوٹے بازوؤں نے مجھے اس محبت کے ساتھ جکڑ لیا جو خدا تعالیٰ نے تمھارے ننھے سے دل میں پیدا کر رکھی تھی اور جو کبھی ختم نہیں ہو سکتی تھی..... جس کے راستے میں

میرا نظر انداز کرنا بھی حائل نہیں ہو سکتا تھا!

پھر اچانک تم تیزی سے واپس چلے گئے اور تمھاری سیڑھیاں پھلانگنے کی آواز مجھے سنائی دیتی رہی—

میرے لختِ جگر!

تمھارے جانے کے تھوڑی ہی دیر بعد میرے کاغذات، جن کا میں مطالعہ کر رہا تھا، میرے ہاتھ سے گر گئے اور ایک شدید قسم کا خوف مجھ پر طاری ہو گیا- یہ مجھے کیا ہوتا جا رہا ہے؟ میری عادتیں کیوں بدلتی جا رہی ہیں؟ یہ دوسروں میں عیب نکالنا، ڈانٹ ڈپٹ وغیرہ کرنا کیوں مجھ میں آگیا- میں اپنے آپ سے سوال کرنے لگا!!

بیٹے! ایسا نہیں کہ مجھے تم سے محبت نہیں ہے بلکہ اس لیے کہ میں تم سے بہت زیادہ توقعات رکھے ہوئے ہوں، میں ہمیشہ تمھیں اس زاویے سے دیکھتا ہوں کہ میں تمھاری عمر میں کیا تھا- تمھاری شخصیت اور کردار میں بہت ہی عمدہ باتیں ہیں، تمھارے جسم کے اندر دھڑکتا ہوا دل اتنا وسیع ہے جتنا کہ پہاڑوں پر پھیلتا ہوا صبح کا اجالا..... لیکن اس کا اندازہ مجھے اس وقت ہوا جب تم آئے اور مجھے پیار کر کے چلے گئے.....

میرے بیٹے! میں آج رات تمھارے کمرے میں آیا ہوں تو تمھارے بستر کے پاس گھٹنے ٹیک کر شرمندگی کے عالم میں بیٹھا ہوں، یہ ایک حقیر سا کفارہ ہے—

میرے بیٹے! مجھے معلوم ہے کہ اگر تم سوئے ہوئے نہ ہوتے اور میں تمھیں یہ ساری باتیں کہتا تو ان کا تم پر زیادہ اثر نہ ہوتا اور تم میری باتوں کو اچھی طرح سمجھ بھی نہ سکتے- لیکن اب میں ایک اچھا باپ بن کر دکھاؤں گا، صبح جب تم نیند سے بیدار ہو گے تو تم اپنے باپ کو ایک نئے روپ میں دیکھو گے، جو تمھارا دوست ہو گا؛ تمھاری ہر مشکل میں تمھارے ساتھ ہو گا اور تمھاری غلطی پر تم سے خفا نہیں ہو گا کیوں کہ تم میرے بیٹے ہو اور تم خواہ کتنے ہی بڑے کیوں نہ ہو جاؤ میرے لیے تو تم چھوٹے رہو گے- اتنے چھوٹے کہ جیسے میں تمھیں بچپن میں اپنی گود میں کھلایا کرتا تھا.....

مجھ سے بڑی غلطی ہوئی کہ میں اب تک تمھیں ایک بڑے شخص کی طرح سمجھتا رہا، لیکن بستر پر دراز تم مجھے ایک ننھے منے بچے کی طرح نظر آ رہے ہو..... میں نے تم پر ابھی سے حد سے زیادہ توقعات کا بوجھ ڈال دیا!!

## والدین سے حساب

آج ایک عمر رسیدہ خاتون کہنے لگیں:

میرے بچے چھوٹے چھوٹے تھے کہ ان کے سر سے والد کا سایہ اٹھ گیا۔

میں نے لوگوں کے برتن دھو کے، گھریلو کام کاج کر کے انھیں پالا پوسا جوان کیا، اور لوگوں کی منتیں کر کے یورپ بھجوایا۔

بڑا بیٹا تو شادی کے بعد بیوی میں ایسا محو ہے کہ مجھے پوچھنا بلانا ہی چھوڑ دیا۔

اور چھوٹے بیٹے کو میں نے کل فون کر کے کہا مجھے پندرہ ہزار کی ضرورت ہے کمیٹی دینی ہے، تو وہ کہنے لگا:

میرے پاس کوئی پیسہ نہیں، تمھیں کس نے کہا کمیٹی ڈالو؛ جو پیسے اب تک دے چکا ہوں پہلے ان کا حساب دو۔
قاری صاحب میں خرچ کیے ہوئے پیسوں کا اسے کیسے حساب دوں!
خاتون کی بپتا سن کر میرے بھی آنسو نکل آئے۔
میں سوچنے لگا بھلا والدین سے بھی کوئی حساب مانگ سکتا ہے۔
اولاد کا تو بال بال والدین کا مقروض ہوتا ہے، وہ اپنی زندگی اولاد کی خاطر جھونک دیتے ہیں، اپنی خوشیاں ان کے غموں پر نثار کر دیتے ہیں، بے لوث اور بے حساب ان پر خرچ کرتے ہیں۔
حق تو یہ تھا کہ اگر ماں نے پندرہ ہزار کا تقاضا کیا تو بیٹا بیس ہزار پیش کرتا، وہ اگر قبول کر لیتیں تو اللہ کا شکر ادا کرتا۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اس نے تو پچھلوں کا بھی حساب مانگنا شروع کر دیا۔
یا اللہ تو ہی رحم فرمانے والا ہے!

## قبلہ والد گرامی

ایک محفلِ مشاعرہ میں مصرع دیا گیا کہ شُعَرا اِس پر اپنی طرف سے مصرع لگا کر شعر مکمل کریں:

شب کو مری نماز میں قبلہ کو پیٹھ تھی

اِس پر کوئی شاعر مصرع نہ لگا سکا؛ شعرا کہتے تھے یہ مہمل مصرع ہے، نماز میں قبلہ کو پیٹھ نہیں ہوتی قبلہ کی طرف منہ ہوتا ہے۔

ایک طالبِ علم کھڑا ہوا اور کہنے لگا:
مصرع بالکل مہمل نہیں، میں دوسرا مصرع لگا کر شعر مکمل کرتا ہوں، سُنیے:

شب کو مری نماز میں قبلہ کو پیٹھ تھی
میں جو امام تھا مرے والد تھے مقتدی

آج جب میں نے نمازِ عشا پڑھائی تو میرے والدِ گرامی دام ظلہ میرے پیچھے کھڑے تھے، اب منظر یہی تھا کہ ایک قبلہ کی طرف میرا منہ تھا اور دوسرے "قبلہ" کی طرف میری پیٹھ تھی، گویا:

شب کو مری نماز میں قبلہ کو پیٹھ تھی
میں جو امام تھا مرے والد تھے مقتدی !

خدا تعالیٰ میرے قبلہ والدِ گرامی کو سلامت رکھے، وہ میرے لیے ایسی عظیم نعمت ہیں کہ ایک بار اُن کے چہرے کی زیارت کر کے حج مقبول کا ثواب حاصل کر لیتا ہوں۔۔۔

## حاجی، مُعتَمِر، مُجاہِد

حضرت انس رضی اللہ عنہ کہتے ہیں ایک شخص رسول اللہ ﷺ کے پاس آیا اور عرض کی:

میری خواہش ہے جہاد کروں، لیکن اس پر قدرت نہیں رکھتا۔

آپ ﷺ نے پوچھا: کیا تمھارے والدین میں سے کوئی زندہ ہے؟

کہنے لگا: میری ماں زندہ ہے۔

فرمایا: اس کے ساتھ اچھا سلوک کر کے اللہ کے حضور پیش ہونا۔

جب تم ایسا کرو گے تو حج، عمرہ اور جہاد کرنے والے بن جاؤ گے۔

(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ وغیرھما، باب الترغیب فی بر الوالدین۔۔۔۔۔۔ص439، ر3656، ط دار الکتاب العربی بیروت۔

قال المنذری: رواہ ابو یعلی والطبرانی فی الصغیر والاوسط، اسنادھما جید)

ہم بھی جہاد فی سبیل اللہ کرنا چاہتے ہیں، لیکن موجودہ حالات میں بے بس ہیں؛ تو کیوں نہ والدین کی بھرپور خدمت کر کے اس کا اجر حاصل کر لیں!!

## پتر نومی

نومی پُتر! دیکھ آج بازار سے موبائل لائی ہوں۔

واہ اماں! لیکن، اماں تجھے تو موبائل چلانا ہی نہیں آتا۔

پُتر مجھے طریقہ سکھا دے ناں!!

اور اس میں فیس بک، مسنجر، واٹس ایپ، ایمو، ٹیلی گرام اور انسٹاگرام بھی کر دے۔

کیوں ماں؟

پُتر تُو ان کے ذریعے ہر وقت اپنے دوستوں سے رابطے میں رہتا ہے، ان سے دکھ سُکھ شیئر کرتا ہے، انھیں دل کی باتیں بتاتا ہے۔ میں یہ سب کچھ سیکھ جاؤں گی ناں، تِو پھر تُو مجھ سے بھی باتیں کیا کرے گا!!

آپ کے ماں باپ آپ کی توجہ چاہتے ہیں۔

آپ ان کے پاس بیٹھ کر صرف ان سے باتیں کیا کریں اور انھی کی سنا کریں۔

اس وقت موبائل کو بھول جایا کریں، صرف انھیں یاد رکھا کریں!!

## باپ

کل ایک باپ کو دیکھا جو تھکا ماندہ گھر آیا، اور گھر والوں سے کہنے لگا:

سخت بھوک لگی ہے، کھانا بنادو۔
جب کھانا بننے لگا تو گیس چلی گئی۔
مدھم مدھم سی گیس پر کافی لیٹ سالن بنااور روٹی بھی بہ مشکل ایک ہی پک سکی۔
جب کھانا سامنے رکھا گیا تو اُس کا بیٹا آگیا، اور کہنے لگا: میں نے بھی کھانا کھانا ہے۔
وہ چوں کہ پہلے بھی کھا چکا تھا، بچوں کے حسبِ عادت کھانا دیکھ کر اس سے رہا نہ جارہا تھا، اِس لیے اُس نے تقاضا کر دیا
---
ماں اسے بہلا پھسلا کر چھت پر لے گئی اور باپ سے کہنے لگی: آپ آرام سے کھالیں۔
لیکن وہ "باپ" تھا ناں..... آرام سے کیسے کھا سکتا تھا۔
اس نے جب لقمہ توڑا تو بیٹا یاد آگیا۔۔۔۔۔۔
اس نے بھوک ہونے کے باوجود، تازہ روٹی بیٹے کے لیے رکھ دی اور خود ٹکڑوں میں پڑی، کل کی باسی روٹی اٹھا کر خوشی خوشی کھالی۔
ایثار کا یہ منظر دیکھ کر مجھے کسی کے یہ اشعار یاد آگئے۔

عزیز تَر مجھے رکھتا ہے وہ رگِ جاں سے
یہ بات سچ ہے ، مِرا باپ کم نہیں ماں سے
جُڑی ہے اُس کی ہر اک ہاں فقَط مِری ہاں سے
یہ بات سچ ہے ، مِرا باپ کم نہیں ماں سے
ہر ایک درد وہ چُپ چاپ خود پہ سَہتا ہے
تمام عمر وہ اپنوں سے کَٹ کے رہتا ہے
وہ کَوٹتا ہے کہیں رات دیر کو ، دن بھر
وجود اُس کا پسینے میں ڈھل کے بَہتا ہے
گِلے ہیں پھر بھی مجھے ایسے چاک داماں سے
یہ بات سچ ہے مرا باپ کم نہیں ماں سے
پرانا سوٹ پہنتا ہے ، کم وہ کھاتا ہے
مگر کھلونے مِرے سب خرید لاتا ہے
وہ مجھ کو سوئے ہوئے دیکھتا ہے جی بھر کے
نہ جانے سوچ کے کیا کیا وہ مُسکراتا ہے

مِرے بغیر ہیں سب خواب اُس کے ویراں سے
یہ بات سچ ہے ، مرا باپ کم نہیں ماں سے

# (7)ساتواں باب: دوستی

اس باب میں دوستی سے متعلق تحریریں ہیں۔

## دوستوں پر خرچ کرنا

مولا علی پاک رضی اللہ عنہ فرماتے تھے:

"اپنے دوست پر 20 درہم خرچ کرنا، فقیروں میں 100 درہم بانٹنے سے بہتر ہے۔"

حجۃ الاسلام امام غزالی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

دوستی کے دس حقوق ہیں؛ پہلا حق مال سے تعلق رکھتا ہے، جس کا درجہ سب سے بڑا ہے۔

دوست کو چاہیے اپنے دوست کا حق اپنے سے بڑھ کر سمجھے، اور اپنا حصہ بھی اسے دے دے۔

جو چیز اپنی ضرورت سے زیادہ ہو، بغیر مانگے دوست کو پیش کر دے۔

اگر دوست کو مانگ کر لینی پڑے تو یہ دوستی کے درجے سے باہر ہے، کیوں کہ اِس کا دل ہمدردی سے محروم ہے۔

(دیکھیے: کیمیائے سعادت فارسی، رکن دوم معاملات، پیدا کردن حقوق صحبت و دوستی، حق اول، ص 315، 316، مطبوعہ تہران)

## سچا دوست

آج صبح ایک حاجی صاحب سے ملاقات ہوئی، باتوں باتوں میں دوستوں کا ذکر چل نکلا تو کہنے لگے:

گوجرانوالہ کے میرے ایک دوست ہیں، جن کے احسانات کا بدلہ میں کبھی نہیں اُتار سکتا۔ کچھ سال پہلے جب میری معاشی حالت بگڑی تو انھوں نے مسلسل چار سال تک میرا خرچہ اٹھایا۔ ہر ماہ چالیس، پینتالیس ہزار دیتے اور بے لوث دیتے۔

پھر میں نے مکان خریدنے کا ارادہ کیا تو انھوں نے دس لاکھ روپے دیے۔ اگرچہ حالات بہتر ہونے کے بعد میں نے انھیں یہ رقم لوٹا دی، لیکن ان کی یہ نیکی مجھے زندگی بھر نہیں بھولے گی۔

واقعی سچا دوست وہی ہوتا ہے جو ہر مشکل وقت میں کام آتا ہے۔

امام غزالی رحمہ اللہ کیمیائے سعادت میں لکھتے ہیں:

حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس ایک شخص آکر کہنے لگا:

میں آپ سے دوستی کرنا چاہتا ہوں۔ آپ نے پوچھا: کیا تو جانتا ہے دوستی کسے کہتے ہیں؟

اس نے کہا: نہیں! آپ نے فرمایا:

تیرے سونے چاندی پر، تیرا حق مجھ سے زیادہ نہ رہے۔ (یعنی تیرا مال میرا ہو، اور میرا مال تیرا)

اس نے کہا: حضرت! میں ابھی اس درجے تک نہیں پہنچا۔

آپ نے فرمایا: پھر چلا جا، دوستی کرنا تیرے بس کی بات نہیں! دوستی انتہائی مقدس رشتہ ہے، جس کا احترام دونوں طرف سے ہونا چاہیے۔ دونوں کو بے غرض، بے لوث اور ایک دوسرے کا خیر خواہ ہونا چاہیے۔

جب ایک دوست پر تکلیف آجائے تو دوسرا اس کا سہارا بن جائے۔
جہاں ہر دوست کا یہ ذہن ہونا چاہیے کہ میں نے کَسر کھانی ہے، وہاں یہ بھی ذہن ہونا چاہیے کہ اپنے دوست کو کَسر نہیں آنے دینی!
اللہ پاک ہمیں مخلص دوست نصیب فرمائے اور دوستوں کے حق میں مخلص بننے کی بھی توفیق عطا کرے!

## لنگوٹیا

دو آدمی مجھے ملنے آئے، ایک نے دوسرے کا تعارف کرواتے ہوئے کہا:
حضرت صاحب! یہ میرا لنگوٹیا ہے۔ میں نے اسے پوچھا: آپ کو معلوم ہے لنگوٹیا کسے کہتے ہیں؟
کہنے لگا: بچپن کے گہرے دوست کو۔
میں نے کہا: لنگوٹیا لنگوٹ سے بنا ہے، اور لنگوٹ وہ کپڑا ہوتا تھا جو عورتیں بچوں کو پیمپر کی جگہ لگایا کرتی تھیں تاکہ بَول و بَراز وغیرہ گندگی چُھپی رہے، اسے کوئی نہ دیکھ سکے۔ جوں ہی بچہ پیشاب کرتا، لنگوٹ اتار کر دھو دیتیں۔
لنگوٹیا بھی اس دوست کو کہتے ہیں جو لنگوٹ کی طرح اپنے دوست کے عیب چھپائے، انھیں کسی پر ظاہر نہ ہونے دے، اگر دوست سے کوئی غلطی ہو جائے تو فوراً اسے دھو دے (اکیلے میں اصلاح کر دے)۔
امام ابن جوزی رحمہ اللہ کہتے ہیں:
کِسری (شاہِ فارس) بڑا ذہین تھا، اُسے ایک شخص نے خط لکھا جس میں اپنے دوست کی چغلی لگائی۔
کسری نے خط پڑھ کر جواب لکھا: "ہمیں تیری خیر خواہی سے خوشی ہوئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ہم تیرے دوست کی مذمت کرتے ہیں اُسے دوستوں کی پہچان نہیں!" (یعنی اگر اسے دوستوں کی پہچان ہوتی تو تیرے جیسے گھٹیا اور چغل خور انسان کو کبھی دوست نہ بناتا، کسی ایسے کو دوست بناتا جو لنگوٹیا ہوتا)
اللہ کریم ہمیں صحیح معنوں میں دوست بننے اور اچھے دوست بنانے کی توفیق عطا فرمائے!

## پیارا دوست

آج سنہ 2018 کی پہلی تاریخ تھی، میں نے سوچا کیوں نہ یہ دن اپنے کسی پیارے کے نام کر دوں!

میں ایک دُکان پر گیا ہوں، وہاں گھنٹہ دو گھنٹے گھوم پھر کر ایک دوست کے لیے اُس کی پسند کا گفٹ خریدا ہے۔
سچی بات بتاؤں:
میرا دنیا میں اِس سے پیارا کوئی دوست نہیں —
مجھے اِس سے ایسی محبت ہے جو لفظوں میں بیان نہیں کی جا سکتی!

میں تو ہر نماز میں اِس کے لیے دعا مانگتا ہوں۔

میرا یہ دوست ساری دنیا سے انوکھا ہے۔

اکثر مجھے کہتا ہے:

تم مجھے "سب کچھ" دو گے، تو میں تمھیں "کچھ" دوں گا!

میں اِسے کہتا ہوں:

میرے پیارے! میرا وقت، مال، توانائی، سب کچھ تیرے لیے ہے؛ بس تُو مجھ سے راضی رہے —

ویسے ---------- آپ سوچ رہے ہوں گے، وہ پیارا دوست ہے کون؟؟

جی، دنیا جسے "علم" کہتی ہے، میرا سب سے پیارا یہی دوست ہے؛ اور اِس کا پسندیدہ گفٹ "کتاب" ہے!

## دوست

اللہ جنت نصیب کرے، میرا ایک بچپن کا دوست تھا جو کہتا تھا:

دوست میں دو حروف ہوتے ہیں۔

۱: دو

۲: ست

دو کا مطلب سب پر واضح ہے، اور ست کسی چیز کے عرق اور نچوڑ کو کہتے ہیں۔

حقیقت میں "دوست" بھی دو محبتوں کا نچوڑ ہوتا ہے۔

دونوں طرف کی بے لوث محبت، دو وجودوں کو جس رشتے میں باندھتی ہے، اُسے دوستی کہتے ہیں!

دوست کو گنتی کے اعتبار سے دیکھا جائے تو دو (2) اور ست (7) نو (9) بنتے ہیں۔

اور نو کے پہاڑے کو یہ اعزاز حاصل ہے کہ نو تک اُس کے ہندسے دوست (یعنی نو) کے علاوہ کسی کو قبول نہیں کرتے۔

مثلاً: نو ایک بار نو۔

نو دو بار اٹھارہ۔

نو تین بار ستائیس۔

نو چار بار چھتیس۔

نو پانچ بار پینتالیس۔

9 کو دو بار پڑھنے سے 18 آیا، اور جب اٹھارہ کے دونوں ہندسے جمع کیے تو 9 بن گیا۔

اسی طرح 27 کے دونوں ہندسے جمع کریں گے تو 9۔

36 کو جمع کریں گے تب بھی 9۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ دوست (9) اس پیارے کو کہتے ہیں جو دوسروں سے گھل مل جانے کے بعد بھی دوست (9) ہی رہتا ہے، بدلتا نہیں۔

## احساس کے رشتے

ایک دوست کہہ رہے تھے:

فیس بک فرینڈز نام کے فرینڈ ہوتے ہیں، اِن میں دوستوں والی کوئی بات نہیں ہوتی، اس لیے میں اِن پر وقت ضائع نہیں کرتا۔

میں نے انھیں کہا:

رِشتے احساس کے ہوتے ہیں، اگر آپ خود احساس نہیں کریں گے تو آپ کو گلی محلے میں بھی کوئی اپنا نظر نہیں آئے گا۔

لیکن اگر "آپ میں" احساس ہے، تو آپ کو فیس بک کیا، سات سمندر پار ایسے لوگ مل جائیں گے جو احساس کرنے والے، محبت دینے والے اور مشکل وقت میں کام آنے والے ہوں گے۔

بس، خود کو ٹھیک کریں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مخلص لوگ ڈھونڈنے سے پہلے خود سو فی صد مخلص بننے کی کوشش کریں! رہا وقت ضائع کرنا، تو آپ کا وقت کسی پر بھی ضائع نہیں ہو سکتا۔ آپ کسی سے مسکرا کے مل لیتے ہیں، کسی کا حال پوچھ لیتے ہیں، کسی کی بات سُن لیتے ہیں، کسی کی رہنمائی کر دیتے ہیں، کسی کے کام آجاتے ہیں؛ تو یہ وقت ضائع نہیں ہوتا، بہت قیمتی بن جاتا ہے۔

جب انسان سے بڑھ کر دنیا کی کوئی چیز قیمتی نہیں، تو اسے دیا گیا وقت کیسے قیمتی نہیں ہوگا!!

## گھٹیا قسم کے لوگ

کسی نے کیا خوب کہا:

لا تنقل الی صدیقك ما یؤلم نفسه، ولا ینتفع بمعرفته؛ فهذا فعل الاراذل۔

اپنے دوست کو وہ باتیں نہ بتا جن کا جاننا اُس کے لیے نفع بخش نہیں، باعثِ تکلیف ہو؛ کیوں کہ اِس طرح کرنا گھٹیا قسم کے لوگوں کا کام ہے۔

(مداواۃ النفوس وتہذیب الاخلاق، ص50، ط المکتبۃ السلفیۃ مدینۃ المنورۃ)

اپنے دوستوں کو اپنی زبان سے بھی راحت پہنچانی چاہیے، اُن سے وہی بات کرنی چاہیے جو اُن کی قلبی اذیت کا سبب نہ بنے۔

بعض دوستوں کو کوئی رکھ رکھاؤ نہیں آتا، وہ جیسی کیسی آئے، منھ سے نکال دیتے ہیں۔

پھر ایسا کرتے ہوئے کوئی شرمندگی بھی محسوس نہیں کرتے، بلکہ اِسے بہادری اور حق گوئی سمجھتے ہیں؛ جب کہ یہ حق گوئی اور بہادری نہیں۔

عربی زبان کا مشہور مقولہ ہے:

لکل مقام مقال، ولکل مقال رجال، ولکل رجال مجال۔

ہر جگہ کے لیے ایک مناسب گفتگو ہوتی ہے، اور ہر گفتگو کے لیے کچھ خاص مرد ہوتے ہیں، اور ہر مرد کے لیے کچھ کہنے کی گنجائش ہوتی ہے۔

## دوستوں سے مدد

کل ایک نوجوان سے ملاقات ہوئی، بہت پریشان تھا۔

سبب پوچھا تو کہنے لگا:

"مجھے ایک ضرورت پیش آگئی، میں نے اپنے اُن دوستوں سے مدد مانگی جن سے مجھے ناں کی امید ہی نہیں تھی، لیکن کسی نے میری مدد نہیں کی۔

میں ایم فل کر کے دوبئ گیا تھا، وہاں ملازمت نہیں مل رہی تھی تو میں نے تین روزے رکھے، ہر افطاری کے بعد صدقہ دیا اور تین دن میں قرآن پاک مکمل کر کے دعا کی تو الاتحاد بینک میں آٹھ ہزار درہم پر جاب ملی گئی۔

اُس وقت میں نے اپنے اِن دوستوں کے ساتھ بہت تعاون کیا، لیکن آج یہ میرے کام نہیں آئے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

وہ اتنی اچھی نوکری بھی میں نے ایک دوست کی وجہ سے ہی چھوڑی تھی، جو کہ حقیقتاً میرا دوست نہیں نکلا۔"

جس طرح ہر چمکنے والی چیز سونا نہیں ہوتی، اِسی طرح ہر دوست کہلانے والا دوست نہیں ہوتا۔

اچھے تعلقات سب سے رکھیں، لیکن ہر کسی کو دوست نہ سمجھ لیا کریں۔

ساری دنیا آپ کی دوست ہو، یہ ضروری نہیں؛ آپ کا دوست ایسا ہونا چاہیے جو آپ کے حق میں دنیا جہان سے اچھا ہو۔

دوست مشکل وقت میں ساتھ نہیں چھوڑتے، ساتھ نبھاتے ہیں۔

مشکل میں ہی مخلص دوستوں کی پہچان ہوتی ہے، آسانی میں تو سارا جہان ہی دوستی کا دعویدار ہوتا ہے۔

میں قربان! جب بے سروسامانی کے عالم میں، رحمت عالم ﷺ کا مُسلّح دشمن سے سامنے ہو گیا تھا تو آپ کے اصحاب نے عرض کی تھی:

نُقَاتِلُ عَنْ يَمِينِكَ وَعَنْ شِمَالِكَ، وَبَيْنَ يَدَيْكَ وَخَلْفَكَ۔

حضور (اِس بے سروسامانی کے عالم میں بھی آپ کا ساتھ نہیں چھوڑیں گے) ہم آپ کے دائیں بائیں، اور آگے پیچھے سے دشمنوں کو مار بھگائیں گے۔

(صحیح بخاری، ر3952)

وفا کی یہ بہترین مثال ہمیں دیگر چیزیں سکھانے کے ساتھ، دوستی کے آداب بھی سکھاتی ہے۔
رب تعالیٰ ہمیں مخلص دوست بننے کی توفیق بخشے اور مخلص دوست ہی ہمیں نصیب کرے!

## ہر دوست کہلانے والا شخص، دوست نہیں ہوا کرتا

بزرگ سنایا کرتے تھے کہ ایک شخص سے بہت سارے لوگ دوستی کا دم بھرنے لگے تو اس کے والد نے کہا:
بیٹا! ہر دوست کہلانے والا شخص، دوست نہیں ہوا کرتا؛ بڑی جانچ پڑتال کے بعد کسی کو دوست سمجھنا چاہیے۔
پھر باپ نے ایک دُنبہ ذبح کر کے بوری میں بند کیا جس سے خون ٹپک رہا تھا، اور بیٹے سے کہا:
یہ اپنے دوستوں کے پاس لے جاؤ، اور انھیں کہو:
مجھ سے قتل ہو گیا ہے، میری مدد کرو!
پھر دیکھو وہ کیا جواب دیتے ہیں۔
بیٹے نے بوری اٹھائی اور رات کو ایک دوست کا دروازہ جا کھٹکھٹایا۔
دوست نے پوچھا خیریت ہے؟
کہنے لگا: یار مجھ سے قتل ہو گیا ہے، نہ لاش ٹھکانے لگانے کی جگہ مل رہی ہے، نہ سر چھپانے کی؛ میری کچھ مدد کرو!
دوست نے مدد کے بجائے ٹال دیا، کہ تُو جانے اور تیرا کام جانے، میں تیرے ساتھ کیوں پھنسوں۔
وہ دوسرے، تیسرے، چوتھے، الغرض سب دوستوں کے پاس گیا لیکن کسی نے بھی اُسے اپنے گھر میں پناہ نہ دی۔
وہ مایوس ہو کر والد کے پاس آیا اور کہا:
ابا حضور! آپ درست فرماتے تھے، واقعی وہ میرے دوست نہیں تھے، جو مصیبت کا سن کر ہی بھاگ گئے۔
والد نے کہا: بیٹے میرا ایک دوست ہے، اور زندگی میں مَیں نے اس ایک کو ہی دوست بنایا ہے؛ اب تُو یہ بوری لے کر اس کے گھر جا اور دیکھ وہ کیا کہتا ہے۔ بیٹا اس کے گھر پہنچا اور اسے وہی کہانی سنائی، جو اپنے دوستوں کو سنائی تھی۔
اس نے بوری لے کر مکان کے پچھواڑے میں گڑھا کھود کر دبا دی، اور اوپر پھول لگا دیے تاکہ کسی کو شک نہ ہو۔
بیٹے نے باپ سے آ کر سب کچھ بیان کیا اور کہا:
ابا جی آپ کا دوست تو واقعی سچا دوست ہے۔
باپ نے کہا: بیٹا! ابھی ٹھہر جاؤ، اتنی جلدی فیصلہ نہ کرو۔
کل اُس کے پاس دوبارہ جانا اور اس سے بدتمیزی کرنا، پھر جو ردِ عمل ہو وہ آ کر مجھے بتانا۔
بیٹے نے ایسے ہی کیا..... گیا، اور اس سے بدتمیزی اور لڑائی کی۔

اس نے جواب میں کہا:
اپنے والد سے کہنا فکر نہ کرے، تمھارا دوست "چمن" کبھی نہیں اُجاڑے گا۔
(مطلب جو پودے لاش کے اوپر لگائے ہیں وہ سدا لگے رہیں گے، انھیں کبھی نہیں اکھاڑوں گا۔
یعنی تیرے بیٹے کی بدتمیزی کو دیکھ کر اس کا راز کبھی فاش نہیں کروں گا، کیوں کہ میں تیرا دوست ہوں)
رب تعالیٰ ہمیں بھی مخلص دوست نصیب کرے!

دوست مشکل وقت میں کبھی ساتھ نہیں چھوڑتا، دوست، دوست کے دنیا و آخرت میں کام آتا ہے۔
وہ اس کے عیبوں کو دل، دماغ، اور آنکھوں کے سامنے نہیں رکھتا، بلکہ پشت کے پیچھے گہرا گڑھا کھود کر، اس میں ہمیشہ کے لیے دبا دیتا ہے؛ اور اس کے اوپر محبت بھری نصیحت کے پھول لگا دیتا ہے، جن کی خوشبو دوست کو آئندہ کے لیے عیبوں کی بدبو سے بچائے رکھتی ہے۔

## ملاقات

آج وہ حدیثیں پڑھ رہا تھا جن میں دوستوں سے ملاقات کرنے کا ثواب بیان کیا گیا ہے، تو نیت کی:
ان شاء اللہ تعالیٰ جتنا ہو سکا دوست احباب سے ملاقات کے لیے جایا کروں گا، اور اس ملاقات کا مقصد رسول اللہ ﷺ کو خوش کرنا ہوگا؛ کیوں کہ جس طرح ترغیب دلائی گئی ہے، لگتا ہے حضور کا دل بہت زیادہ چاہتا تھا کہ میرے امتی ایک دوسرے سے، اللہ کی رضا کے لیے ملا کریں۔
جن احباب سے فیس بک پر شناسائی ہوئی، اُن سے بھی ملاقات کا ارادہ ہے ..... ان میں بڑے بڑے پیارے لوگ شامل ہیں۔
اللہ کریم سب کو اپنی امان میں رکھے، سب پر دستِ رحمت دراز فرمائے۔

سیدنا اَنَس رضی اللہ عنہ کہتے ہیں، رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:
تمھارے جو لوگ جنتی ہیں، کیا میں تمھیں ان کے بارے میں نہ بتاؤں؟
ہم نے عرض کی:
یارسول اللہ کیوں نہیں، آپ ارشاد فرمائیں!
فرمایا: نبی جنتی ہیں، صدیق جنتی ہیں، اور وہ بندہ جنتی ہے جو شہر کے کسی کونے میں اپنے (مسلمان) بھائی سے، صرف اللہ کے لیے ملنے جاتا ہے۔
(الترغیب والترھیب، کتاب البر والصلۃ۔۔۔۔۔۔، باب الترغیب فی زیارت الاخوان۔۔۔۔۔۔، ص454، ر3794، ط دار الکتاب العربی بیروت)
نبوت کا دروازہ ویسے ہی بند ہو گیا، اور صدیق بننا بھی آسان نہیں ..... البتہ تیسرا کام آسان ہے۔

میں نیت کرتا ہوں، آپ بھی نیت کرلیں کہ: انشاءاللہ آج سے رضاے الٰہی کے لیے اپنے دوستوں سے ملنے جایا کریں گے۔
جس طرح دوسرے کاموں کے لیے وقت نکالتے ہیں، اس نیک کام کے لیے بھی نکالا کریں گے۔
(ہمیں فیس بُک کی دنیا سے جو پیارے دوست ملے ہیں، ان سے بھی ملاقات کے لیے جانا چاہیے، اور یہ سلسلہ برقرار رہنا چاہیے۔)

## پیارے دوست

کچھ سال پہلے مجھے کچھ رقم کی ضرورت پیش آئی۔
ظاہر ہے دنیوی زندگی میں ضرورتوں سے دامن نہیں چھڑایا جاسکتا۔
میں نے اپنے ایک "پیارے دوست" سے کہا کہ مجھے پندرہ دن کے لیے قرض حسنہ دے دیں۔
مجھے معلوم تھا کہ ان کے اکاؤنٹ میں کروڑ کے لگ بھگ رقم موجود ہے، جس میں سے چار پانچ لاکھ دینے سے کوئی فرق نہیں پڑے گا؛ لیکن انھوں نے ڈھیروں عذر پیش کردیے۔
پھر میں نے ایک اور دوست سے کہا۔ وہ پیارا دوست کہنے لگا:
میرے اپنے پاس تو نہیں، لیکن میں آپ کو کسی سے لے کر دے دیتا ہوں۔
اور اس نے کہیں سے انتظام کرکے مجھے دے دیے۔
اس نے دیے، میں نے لے کر مقررہ مدت کے اندر واپس بھی کردیے، اور یہ بات سالوں پرانی ہوگئی؛ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔دل میں آج بھی تر و تازہ ہے۔
بتانے کا مقصد یہ ہے کہ: ضرورت پڑنے پر ہمیشہ اپنے دوستوں کے کام آیا کریں، معذرت کرکے انھیں تنہا نہ چھوڑ دیا کریں۔
اس جہان میں آپ نے جو پیاری چیز چھوڑ کر جانی ہے، وہ "آپ کی پیاری یاد" ہے۔
جو کسی کے دل میں، تو کسی کے ذہن میں رہے گی؛ اور اپنے ساتھ ڈھیر ساری دعائیں اور محبتیں رکھے گی۔
مولا علی پاک رضی اللہ عنہ فرماتے تھے:
"اپنے دوست پر 20 درہم خرچ کرنا، فقیروں میں 100 درہم بانٹنے سے بہتر ہے۔"
امام غزالی کہتے ہیں: دوستی کے دس حقوق ہیں، اور پہلا حق مال سے تعلق رکھتا ہے، جس کا درجہ سب سے بڑا ہے۔
دوست کو چاہیے اپنے دوست کا حق اپنے سے بڑھ کر سمجھے، اور اپنا حصہ بھی اسے دے دے۔
جو چیز اپنی ضرورت سے زیادہ ہو، بغیر مانگے دوست کو پیش کردے۔
اگر دوست کو مانگ کر لینی پڑے تو یہ دوستی کے درجے سے باہر ہے، کیوں کہ اِس کا دل ہمدردی سے محروم ہے۔
(دیکھیے: کیمیائے سعادت فارسی، رکن دوم معاملات، پیدا کردن حقوق صحبت و دوستی، حق اول، ص 315، 316، مطبوعہ تہران)

# (8) آٹھواں باب: حکمت بھری باتیں

یہ باب حکمت اور نصیحت بھری تحریروں پر مشتمل ہے۔

## ایک بچہ اور ریل گاڑی

ریلوے اسٹیشن پر ایک چھوٹا سا بچہ ملا جو ٹرین کو دیکھ کر کہہ رہا تھا:

"اللہ تعالی نے بندے کو عقل دی تو اس نے ٹرین بنائی۔

اگر اللہ تعالی عقل ہی نہ دیتا تو بندہ اتنی بڑی ٹرین کیسے بناتا۔"

اس کی بات سے میرا دل بہت خوش ہوا، میں نے اسے پیار دیا اور کہا:

میرے بیٹے آپ بالکل سچ کہتے ہو!

یہ جو کچھ بھی انسان بناتا ہے اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کی دی ہوئی عقل سے بناتا ہے۔

ہر قسم کے شک و شُبہے سے پاک عقیدہ توحید، ماحول اور صُحبت سے بہ خوبی نصیب ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

ماں باپ، بہن بھائیوں اور بڑے بوڑھوں سے رب تعالیٰ کی ذات وصفات کے متعلق جو کچھ سیکھنے کو ملتا ہے وہ بیسیوں کتابیں بھی نہیں سکھا سکتیں۔

## حق بولیں

ایک دانا شخص کو معلوم ہوا کہ ہندستان میں کوئی بزرگ رہتے ہیں تو وہ ملاقات کے لیے چل پڑا۔

راستے میں ان کے متعلق جس سے پوچھتا وہ تعریفی کلمات ہی کہتا۔ اس نے دل میں کہا جس شخص کی ہر کوئی تعریف کرے وہ بندہ ٹھیک نہیں ہو سکتا۔ جب ہندستان پہنچا تو کچھ لوگوں کو اس بزرگ کا گِلہ شِکوہ کرتے دیکھا، تو کہنے لگا:

یا اللہ تیرا شکر ہے میں ٹھیک جگہ پہنچا۔

اگر آپ لگی لپٹی رکھیں گے، دوغلی پالیسی اختیار کریں گے تو ہر کوئی آپ کی تعریف کرے گا۔

لیکن اگر حق گوئی سے کام لیں گے، تو اہل باطل آپ کی کبھی تعریف نہیں کریں گے۔

آپ لوگوں کی پروا کیے بغیر صرف اور صرف حق کہتے رہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اللہ آپ کا حامی و ناصر ہو!

## ڈاکو اور امام احمد بن حنبل

قبلہ استادِ مکرم فرماتے ہیں:

امام احمد بن حنبل کو بادشاہ کے دربار میں لے جا رہے تھے تو دروازے پر آپ کی ملاقات ایک شخص سے ہوئی۔

وہ کہنے لگا: حضرت! میں اس علاقے کا نامی گرامی ڈاکو ہوں، مجھے زمانہ جانتا ہے؛ میں بہت دفعہ پکڑا گیا، سخت سے سخت سزا پائی، لیکن آج تک اپنا جرم قبول نہیں کیا۔

سرکار! میں باطل پر ہونے کے باوجود نہیں ڈرا، آپ تو حق پر ہیں۔

امام صاحب رحمہ اللہ فرمایا کرتے:
اللہ اس شخص پر رحم فرمائے، بروقت میرے کام آیا۔ (اس نے میرا حوصلہ بڑھادیا)
اگر کسی عزیز پر مصیبت آجائے تو تین کام کرنے چاہییں:
1: اس کے لیے دعا
2: اس کی مدد
اور
3: حوصلہ افزائی۔
مصیبت کے وقت بزدلوں والی باتیں کر کے حوصلہ پست کرنے سے مصیبت ختم نہیں ہوتی، نئی مصیبت بن جاتی ہے۔
اللہ کریم ہمارے اسیروں کے جذبے جوان رکھے، وہ جیل میں بھی ذکر خدا و مصطفی کرتے رہیں۔
جیلوں میں ہمیشہ مجرم ہی نہیں جاتے، بے گناہ بھی چلے جاتے ہیں!

## ٹانگ سے پکڑنا

سِیانے کہتے ہیں: اگر کسی ڈوبتے شخص کو بچانے کے لیے پانی میں کُودیں تو اسے ٹانگ سے پکڑیں، کیوں کہ ہاتھ یا سَر سے پکڑیں گے تو وہ فوراً آپ کا سہارا لینے کی کوشش کرے گا، جس کے نتیجے میں آپ خود اس کی گرفت میں آکر تیرنے سے قاصر ہو جائیں گے، اور اس کی جان بچاتے بچاتے اپنی جان گنوا بیٹھیں گے۔
لیکن اگر ٹانگ سے پکڑا تو دونوں کے بچ نکلنے کی قوی امید ہوگی، اگر دونوں زندہ نہ بھی نکل سکے تو کم از کم آپ خود تو بچ جائیں گے۔

میرے خیال میں "آج کل کے" مجاوروں کو بحرِ گم راہی سے نکالنے والے عالم کا خانقاہوں میں جاکر ان کی دست بوسی کرنا، نذرانے لینا اور لنگر کھانا، ہاتھ پکڑنے کے مترادف ہے۔
مجاوروں کو ٹانگ سے پکڑنا چاہیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔یعنی ان کے مریدین و متوسلین میں تبلیغِ دین شروع کر دینی چاہیے۔

## مچھلی خریدنے سے پہلے

جب کوئی سمجھ دار بازار سے مچھلی خریدنے جاتا ہے تو تین چیزیں دیکھتا ہے:
1: مچھلی کی جلد چمک دار ہے یا نہیں۔
2: اس کی آنکھیں اندر تک تو نہیں دھنسی ہوئیں۔

3:اس کے گُل پھڑے سرخ ہیں، کالے تو نہیں۔
اگر یہ تینوں علامتیں پائی جائیں تو وہ جان لیتا ہے کہ مچھلی تازہ ہے باسی نہیں، اسے خرید لینا چاہیے۔
جب کسی پیر سے بیعت کرنے جائیں تو اس میں بھی یہ علامات دیکھ لیا کریں۔
1:اس کی وَضع قَطع میں سنتِ رسول کی چمک ہے یا نہیں۔
2:دین و مسلک کے معاملے میں اس کی آنکھیں بند رہتی ہیں یا کھلی!
3:اللہ و رسول کی نافرمانی پر اس کے چہرے پہ سرخی آتی ہے یا نہیں۔

## بکری اور بھیڑیا

اُستادِ گرامی مَرتبت حضرت علامہ مولانا قاری ہدایت اللہ رحمہ اللہ بڑے ظریف الطبع تھے، لطائف سنا کر بھی بڑے بڑے سبق دے جایا کرتے۔ایک دفعہ فرمانے لگے: چرواہا بکریوں کا ریوڑ لے کر شام کو گھر لوٹا، جب گنتی کی تو ایک بکری کم تھی۔
اس نے ڈنڈا پکڑا اور بکری کی تلاش میں نکل کھڑا ہوا۔
بکری ریوڑ کے ساتھ آتی دَلدَل میں پھنس گئی، ایک بھیڑیا اسے پکڑنے کے لیے لپکا تو وہ بھی پھنس گیا۔

بھیڑیا بکری کو دیکھ کر ہنستا تو بکری اس کی طرف دیکھ کر مسکرا دیتی۔وہ کہتا:
میں تو اس لیے ہنس رہا ہوں کہ عنقریب دَلدل سے نکل کر تجھے مزے لے لے کر کھاؤں گا، لیکن سمجھ نہیں آتی تو کیوں مسکرا رہی ہے؟ وہ کہتی فکر نہ کر، بتاتی ہوں!
تھوڑی دیر بعد چرواہا پہنچ گیا، اس نے بکری کو دَلدَل سے نکال کر صاف کیا اور بھیڑیے کو پانچ سات ڈنڈے رسید کیے؛ جب اُس کی چیخیں بلند ہوئیں تو بکری کہنے لگی:
اب پتا چلا میں کیوں مسکراتی تھی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، اس لیے کہ مجھے معلوم تھا تیرا سائیں خصم کوئی نہیں جو تجھے دَلدَل سے نکالنے آئے گا، جب کہ میرا صاحب مجھے بہت جلد آکر نکال لے گا۔
پیرِ کامل مرید کے لیے راعی کی طرح ہوتا ہے، جو اُسے زیادہ دیر گناہوں کی دلدل میں نہیں رہنے دیتا، اس لیے کسی کامل کا دامن تھام لینے میں ہی عافیت ہے!

## وائی فائی کوڈ

میرے ایک دوست نے وائی فائی کوڈ لگا رکھا تھا:
"اللہ دیکھ رہا ہے"

مجھے کہنے لگے: ”یہ میں نے اس لیے لگایا ہے کہ جب کوئی موبائل کنیکٹ کرے تو اُسے احساس ہوجائے اپنے رب کی نافرمانی نہیں کرنی، وہ مجھے دیکھ رہا ہے۔“

سبحان اللہ کتنی پاکیزہ سوچ ہے!

حقیقتاً وہی انسان پاک کہلانے کا حق دار ہے جس کی تنہائی پاک ہو.....؛ لوگوں کے سامنے تو بڑے بڑے گناہ گار بھی نیک بن جاتے ہیں۔ موبائل ایسی چیز نہیں جس کے ذریعے بڑے بڑے گناہوں سے اپنے رب کا مقابلہ کیا جائے، یہ تو ایک سہولت ہے جس سے صرف شریعت کے دائرے میں رہ کر مسلمان نفع حاصل کر سکتا ہے۔

## بارہ ہزار تنخواہ

آج ایک حافظ صاحب سے ملاقات ہوئی جو کئی سالوں سے مُدَرِّس ہیں۔

میں نے پوچھا آپ کا مُشاہَرہ کتنا ہے؟

کہنے لگے: بارہ ہزار۔

میں نے کہا: آپ کے تین بچے ہیں، کیا بارہ ہزار میں بہ آسانی گزر بسر ہوجاتی ہے؟ کہنے لگے: الحمدللہ!

کئی لوگ ایسے ہیں جنھیں بارہ ہزار بھی نہیں ملتے، چھے سات ہزار پر گُزارا کرتے ہیں؛ میں ان کی طرف دیکھ لیتا ہوں۔

میرے استاد حضرت علامہ عبدالحکیم شرف قادری رحمہ اللہ کا ماہانہ مشاہرہ پندرہ سو بھی رہا، جب کہ آپ بہت بڑے عالم اور شیخ الحدیث تھے۔ الحمدللہ میرا بارہ ہزار میں گُزارا ہوجاتا ہے، میرے گھر میں کوئی بڑی بیماری نہیں۔

ایک دفعہ مجھے گردے کی تکلیف ہوئی تو ڈاکٹر نے آپریشن تجویز کیا اور کہا ستر ہزار خرچہ ہوگا، تو میں نے اسے بولا مجھے ڈسچارج کردیں۔ میں جب ہسپتال سے باہر نکلا تو ایک بزرگ ملے، انھوں نے میرا مرض دیکھ کر کہا:

بیٹا! دس روپے کا قلمی شورہ لو، اس میں سرخ مرچ کے بیج پیس کر گولیاں بنالو، اور انھیں پگھڑے کے شربت سے کھاؤ، گردے سے پتھری نکل جائے گی۔ میں نے گھر جاکر ایسے ہی کیا تو اللہ پاک نے مجھے شفا دے دی! میرا علاج صرف بیس روپے میں ہوگیا، اگر میری تنخواہ لاکھ روپیہ ہوتی تو علاج بھی لاکھوں سے ہونا تھا۔ اللہ کرے ہمارے جملہ مدرسین قناعت کرنے والے اور منتظمین احساس کرنے والے بن جائیں!!

## جہاد صرف شور وغل

قیامت کی نشانیاں بیان کرتے ہوئے رسول خدا ﷺ نے فرمایا تھا: ”جہاد صرف شور وغل تک محدود ہوجائے گا“

(انظر: الجھاد لابن ابی عاصم، ذکر صلاۃ المرابط، ر320، ص715، ط مکتبۃ العلوم والحکم المدینۃ المنورۃ، س1409ھ)

یہ ریلیاں، دھرنے، ہڑتالیں، مظاہرے کیا ہیں؟ برما و فلسطین کے مسلمان جانوروں کی طرح ذبح کردیے گئے،

رسول پاک کی ناموس پر حملہ ہو گیا لیکن ہمارا جہاد اس "شور و غل" سے آگے نہ بڑھ سکا۔ اے پاک پروردگار اپنی بے بسی کی تجھی سے فریاد ہے!!

## نماز میں اللہ کی تعریف

بے شک نماز میں پڑھا جانے والا ہر لفظ پیارا ہے، لیکن لُطفِ تسمیع و تحمید کا کیا کہنا!

بندہ اپنے مالک کی تعریف و توصیف کے بعد، پورے یقین سے کہتا ہے:

سمع اللہ لمن حمدہ

اللہ نے اس کی سن لی جس نے اُس کی تعریف کی۔

ربنا ولك الحمد

اے ہمارے پروردگار! تمام تعریفیں تیرے ہی لیے ہیں۔

ہر عبادت اِس لیے کی جاتی ہے کہ اللہ قبول فرمالے، اور ہر دعا اسی لیے مانگی جاتی ہے کہ رب تعالیٰ سن لے.....؛

نماز میں یہ الفاظ عطا فرما کر بندوں کو ڈھارس دینا مقصود تھا، کہ غم نہ کرو تمھارے رب نے تمھاری سن لی ہے!!

میں قربان! وہ منظر کتنا حسین ہو گا، جب امام اولین و آخرین ﷺ سمع اللہ لمن حمدہ کہتے ہوں گے، اور آپ کے مقتدی:

ربنا ولك الحمد.....!!

ثقہ محدث اور ولیِ باکرامت، امام عبداللہ بن مبارک رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سے جب کسی نے صحابیِ رسول سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کے متعلق سوال کیا تو آپ کی نظروں کے سامنے یہی منظر گھوم گیا.....، فرمانے لگے:

جب رسول اللہ ﷺ سمع اللہ لمن حمدہ کہتے تھے تو سیدنا معاویہ آپ کے پیچھے ربنا ولک الحمد کہا کرتے!

(میں ایسی عظیم المرتبت ہستی کے متعلق کیا رائے دے سکتا ہوں)

(انظر: تاریخ دمشق لابن عساکر، ج59، ص207، دار الفکر بیروت)

## حماقت لاعلاج مرض ہے

جاحظ کو ایک احمق یہ شعر سنانے لگا:

ان دا ء الحب سقم　　ليس يهنيه القرارُ

ونجا من كان لا يع　　شق من تلك المخازِ

اُس نے کہا: پہلا قافیہ "ر" اور دوسرا "ز".....یہ کیا؟

کہنے لگا: ایک نقطے سے کوئی فرق نہیں پڑتا۔

جاحظ بولا: صرف یہی نہیں، اس میں تو پہلی "ر" مرفوع ہے اور دوسری مکسور!

کہنے لگا: میں گہ رہا ہوں نقطہ بھی ہٹادو اور یہ اعراب کے پیچھے پڑا ہوا ہے —

(انظر: اخبار الحمقی والمغفلین لابن جوزی، الباب التاسع عشر فی ذکر من قال شعرا من المغفلین، ص 123، دار الکتاب العربی بیروت، 1427ھ)

کچھ سمجھے آپ!! سچ کہتے ہیں: لکل داء دواء یستطب به الا الحماقة اعیت من یداویها۔

ہر بیماری کے علاج کے لیے کوئی نہ کوئی دوا ہوتی ہے، سوائے مرض حماقت کے؛ یہ ایسی بیماری ہے جو علاج کرنے والے کو عاجز کر دیتی ہے۔

(اساس البلاغۃ، ج 1، ص 592، دار الکتب العلمیہ بیروت، 1419ھ)

## جاہل کا جواب خاموشی

آج بعد نماز فجر امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا دیوان کھولا تو دو شعر سامنے آئے، جن کا خلاصہ یہ ہے:

"کمینہ میرے متعلق جو چاہے کہے میں اُس کے جواب میں خاموش رہوں گا۔

اِس لیے نہیں کہ میں جواب دینے سے قاصر ہوں.....بات صرف اتنی ہے کہ:

"شیر کتوں کا جواب نہیں دیا کرتے"

(انظر: دیوان الامام شافعی (متوفی 204ھ)، قافیۃ البا، السکوت عن اللئیم، ص 43، دار الغد الجدید القاہرہ، 1429ھ)

یوں محسوس ہو رہا ہے جیسے امام صاحب مجھے نصیحت فرما رہے ہوں!!

اللہ پاک مجھے اپنے امام کے اس فرمان پر عمل کی توفیق عطا فرمائے۔

میں صرف اور صرف علمی کاموں میں مشغول رہوں — آمین ثم آمین!

## بے ادبوں سے ادب سیکھیے

حضرت لقمان سے پوچھا گیا: آپ نے ادب کس سے سیکھا؟

فرمانے لگے: بے ادبوں سے!

کیوں کہ اُن کی جو بات مجھے ناپسند لگی میں اُس سے دور رہا۔

(گلستان، شیخ سعدی شیرازی، م 691ھ، باب دوم در اخلاق درویشاں، حکایت 20، ص 92، اہل السنۃ پبلی کیشنز دینہ، جہلم 1429ھ)

## عمدہ نصیحت

آج حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ کا ایک مکتوب شریف پڑھا، دل باغ باغ ہو گیا!

خُلاصہ پیشِ خدمت ہے، ایک ایک لفظ پر غور کیجیے:

1: علماے اہل سنت کی آرا کے مطابق اپنے عقیدے درست کرنا بہت ضروری ہے۔

2: اُخروی نجات، علماے اہل سنت کی آراے صواب کی پیروی میں ہے۔

3: علماے اہل سنت اور اُن کے متبعین ہی نجات پانے والے ہیں۔

یہی لوگ آں سرور اور آپ کے صحابہ صَلوَاتُ اللہِ وتَسلیماتُہ علیہ و علیھم اجمعین کے طریقے پر ہیں۔

4: ہر بدعتی و گم راہ اپنے بُرے عقیدے، اپنے خیال کے مطابق، کتاب و سنت سے اخذ کرتا ہے؛ جن کے مفہوم و معانی میں سے ہر معنیٰ معتبر نہیں ہوتا۔ کتاب و سنت سے حاصل ہونے والے وہی علوم معتبر ہیں جو علماے اہل سنت نے اخذ کیے اور سمجھے۔

(ملخصاً وملتقطاً: مکتوبات امام ربانی، دفتر اول، حصہ سوم، مکتوب صد و نود و سیوم (193)، ص80)

## انقلاب فکر سے آتے ہیں

حضرت محمد بن قاسم رحمہ اللہ برصغیر میں ایک فکر لے کر آئے تھے جس نے جان دار انقلاب بپا کر دیا۔

اِسی طرح برصغیر میں انگریز بھی ایک فکر لے کر آیا، جس کے بل بوتے پر حکومت بھی قائم کی اور جاتی دفعہ غلام بھی بنا گیا۔

اب اگر پاکستان کی سیاست کا دھارا اسلام کی طرف موڑنا ہے تو سب سے پہلے انگریزی فکر کے سوتے خشک کرنا بہت ضروری ہے؛ اور یہ کام خاصا مشکل نہیں، محنت طلب ضرور ہے!!

ویسے حالیہ دھرنے نے اِس محنت کے لیے بھی راستہ قدرے ہموار کر ہی دیا ہے۔

## میرا فیصلہ

جنگل میں ایک گدھے نے دعوی کیا کہ آسمان کالا ہوتا ہے۔

گھوڑے نے کہا: بھئی آسمان نیلا ہوتا ہے، چاہے کسی سے پوچھ لو۔

دونوں میں کافی بحث ہوئی لیکن گدھا اپنی بات پر اڑا رہا۔

آخر گھوڑے نے کہا: چلو بادشاہ کے پاس، اُن سے فیصلہ کروا لیتے ہیں؛ جو حکم اُنھوں نے صادر فرمایا اس پر اتفاق کر لیں گے۔

دونوں بادشاہ کے حضور پہنچے اور اپنا مقدمہ پیش کیا۔

بادشاہ سلامت نے دونوں کی بات سن کر حکم دیا کہ گھوڑے کو گرفتار کر کے جیل میں ڈال دیا جائے۔

گھوڑے نے عرض کی:

بادشاہ سلامت! میں نے کوئی غلط بات تو نہیں کی، آسمان تو نیلا ہی ہوتا ہے، یہ ایک ایسی حقیقت ہے جسے جھٹلایا نہیں جا سکتا۔ بادشاہ نے کہا: بات یہ نہیں کہ آسمان نیلا ہوتا ہے یا کالا.....

تمھارا جُرم یہ ہے کہ تم نے ایک "گدھے" کو سمجھانے کی کوشش کی!

میرا دوست قاسم ایک آدمی کو قائل کر رہا تھا کہ حضرت امیر معاویہ سید عالم ﷺ کے صحابی ہیں، لیکن وہ ماننے کو تیار نہیں تھا؛ اُس نے مجھے کہا آپ فیصلہ کریں!

تو میں نے وہی فیصلہ کیا جو "بادشاہ" نے کیا تھا۔

## مری ہوئی مکھی

آج معاشی طور پر یہودیوں نے عالمی منڈیوں پر قبضہ جمایا ہوا ہے، اِس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ اُنھوں نے "وقت و ماحول" کی ضروریات کی بنیاد پر کاروبار کیے ہیں۔

میں نے ایک کتاب میں یہ لطیفہ پڑھا تھا کہ:

ایک ٹرین میں چھے آدمی سفر کر رہے تھے ایک ڈچ (ہالینڈ کا باشندہ)، دوسرا انگریز، تیسرا جرمنی، چوتھا امریکی، پانچواں پپوا (فجی کا جنگلی باشندہ) اور چھٹا یہودی۔ ٹرین کی کھڑکی کھلی اور ایک مکھی اندر آگئی۔

پپوا فوراً اٹھا، مکھی پکڑی، مار کر کھا گیا۔ سارے لوگ اُسے دیکھ کر تعجب کرنے لگے،

لیکن یہودی نے کاروباری منصوبہ بنالیا۔ کچھ سفر گزرنے کے بعد ایک اور مکھی اندر آگھسی، اب اِس سے پہلے کہ پپوا اٹھتا، یہودی نے جست لی اور مکھی کو جادبوچا.....اُسے مار کر ہتھیلی پہ رکھ کے کہنے لگا: خریدو گے ؟؟؟

اس لطیفے سے آپ کو ہنسی آئے یا گھن، لیکن اتنا ضرور معلوم ہوتا ہے کہ یہودی نے کاروباری ضرورت میں مری ہوئی مکھی کو بھی نظر انداز نہیں کیا۔

ہم مکھیوں کی تجارت سے تو رہے لیکن جو اَن گنت جائز و حلال کاروبار ہیں وہ تو اصولوں کے مطابق کر سکتے ہیں!!

## صبح نہار منہ پانی

قاضی ابوالحسن قفطی نے صبح نہار منہ پانی پینے کے متعلق حکما کا ایک دل چسپ مکالمہ نقل کیا ہے، کہتے ہیں:

ایک مقام پر دس طبیب جمع ہوئے اور یہ مسئلہ زیرِ بحث آیا:

"کیا نیند سے بیدار ہوتے ہی پانی پینا چاہیے یا نہیں"

حکیم ابن داؤد بولا: وہ دنیا کا احمق ترین انسان ہے جو نیند سے بیدار ہوتے ہی پانی پیتا ہے۔

حکیم جبرئیل (خلیفہ ہارون رشید کا طبیبِ خاص) بولا:

اُس سے بڑا احمق وہ ہے جس کے جگر میں پیاس کی آگ بھڑک رہی ہو اور وہ اُسے بجھانے کی تدبیر نہ کرے۔

ابن داؤد: اس کا مطلب ہے کہ تم بیدار ہوتے ہی پانی پینے کے قائل ہو؟

جبرئیل: صرف وہ لوگ اُس وقت پانی پی سکتے ہیں جن کا معدہ گرم ہو یا اُنھوں نے نمکین چیز کھائی ہو، مرطوب اور بلغمی مزاج والے نہیں۔

ابن داؤد: تمھاری گفت گو سے تو ثابت ہوتا ہے کہ ہر آدمی کو تمھارے جتنا طبیب ہونا چاہیے تاکہ وہ جان لے کہ پیاس کی وجہ بلغم ہے یا حرارتِ معدہ! جبرئیل، ابن داؤد کی بات سن کر ہنس پڑا اور کہنے لگا اتنا علمِ طب تو میں ابھی سمجھائے دیتا ہوں۔

"رات کو سوئے ہوئے اگر پیاس لگے تو کپڑے سے پاؤں باہر نکال لو، اگر پیاس بڑھ گئی تو سمجھنا معدے میں گرمی ہے یا نمکین کھانے کی وجہ سے ہے لہذا پانی پی لینا چاہیے۔ اور اگر پاؤں باہر نکالنے سے پیاس کم ہوگئی تو سمجھ لینا بلغمی مزاج ہے اس لیے پانی نہیں پینا چاہیے۔"

(انظر: اخبار العلما باخبار الحکما، ص114، دار الکتب العلمیہ بیروت، ملخصًا)

## ایک ادھنی کے بدلے پانچ لاکھ...

ایک بڑھیا نے ایک بَنْیے سے کہا: میں چاہتی ہوں اپنا کچھ روپیہ تجارت میں لگاؤں مگر اس کا مجھے ذرا بھی تجربہ نہیں؛ اگر تم مجھے اپنے تجربے سے فائدہ پہنچا سکو تو بڑی مہربانی ہوگی۔ بَنْیے نے کہا:

تجارت کا بنیادی اصول یہ ہے کہ اگر اصل رقم نہ لی جائے تو ہر چھ ماہ کے بعد دگنی ہو جاتی ہے۔

بڑھیا: واقعی تمہاری تجارت اس قسم کی ہے؟

بَنْیا: ہاں میرا کاروبار اسی قسم کا ہے، میں جو روپیہ لگاتا ہوں وہ ششماہی کے بعد دگنا ہو جاتا ہے۔

یہی وجہ ہے کہ میں نے تھوڑے عرصے میں تین مکان بنائے، دو لڑکیوں کا بیاہ کیا اور میرا باپ جو قرض چھوڑ کر مرا تھا وہ بھی سب بے باق کر دیا۔

یہ سن کر بڑھیا نے اپنے دوپٹے کے آنچل سے ایک ادھنی کھولی اور بنیے کے ہاتھ میں دے کر بولی:

تو تم یہ میری ادھنی اپنی تجارت میں لگا لینا، جب میں آؤں گی اپنا حساب کر کے جو کچھ نکلتا ہو گا لے لوں گی۔

بڑھیا کی یہ بات سن کر بنیا حیران ہوا، مگر رحم دل آدمی تھا اس لیے بڑھیا کا دل توڑنا مناسب نہ سمجھا اور اس کی ادھنی اپنے حساب میں جمع کر لی۔

بارہ سال گزر گئے.....

بنیا بڑھیا کی ادھنی کا واقعہ قریب قریب بھول گیا تھا کہ یکایک بڑھیا آپہنچی اور کہا حساب کر دو!

بنیا ہکا بکا رہ گیا؛ اس نے بہت یاد کیا مگر یاد نہ آیا کہ اس بڑھیا کو کیا دینا ہے۔

جب بڑھیا نے ساری کہانی سنائی تب بنیا مان گیا کہ میں نے اپنے کاروبار میں تیری ادھنی لگا رکھی ہے اور میں نے تجھ سے اقرار کیا تھا کہ تیری ادھنی ہر ششماہی کے بعد دوگنی ہوتی جائے گی۔

بڑھیا نے کہا: بھئی! میرا حساب کر دے، اتنی عمر ہو گئی ہے کون جانے کب دم نکل جائے۔
بنیے نے دو روپے نکال کر بڑھیا کے حوالے کیے اور کہا لے جا یہ تیری ادھنی ہے!
بڑھیا نے شور مچا دیا کہ ارے بنیے کچھ خدا کا خوف کر کیوں ظلم پر کمر باندھی ہے جو مجھ غریب عورت کا روپیہ دبانا چاہتا ہے۔
بڑھیا کا واویلا سن کر: کیا ہوا، کیا ہوا، کہتے سب دکاندار جمع ہو گئے۔
بڑھیا نے سارا واقعہ ان کے سامنے بیان کر دیا اور کہا کہ یہ میرا حساب نہیں کرتا اور مجھے صرف دو روپے دے کر ٹالتا ہے جب کہ میں چاہتی ہوں کہ میرا پائی پائی کا حساب ہو اور جو کچھ اس کے ذمے نکلے پورے کا پورا مجھے ملے۔
ایک دکان دار نے بنیے سے کہا:
بھئی! بڑھیا ٹھیک کہتی ہے تو حساب کیوں نہیں کرتا؟
بنیے نے کہا:
تو ہی قلم دوات لے کر بیٹھ جا اور حساب کر دے!
دُکان دار بولا: بارہ سال کی چوبیس ششماہیاں ہوتی ہیں لہذا اس بڑھیا کی ادھنی چوبیس دفعہ دگنی ہو جائے گی.....
بڑھیا نے کہا تیرا بیٹا زندہ رہے، یہی تو میں چاہتی ہوں؛ بس اب بیٹھ کر اسی طرح حساب کر دے۔
حساب ہونے لگا.....بڑھیا کی ادھنی بارہ سال کی ششماہیوں میں اس طرح بڑھتی گئی:

پہلی ششماہی: ایک آنہ
دوسری ششماہی: دو آنے
تیسری ششماہی: چار آنے
چوتھی ششماہی: آٹھ آنے
پانچویں ششماہی: ایک روپیہ
چھٹی ششماہی: دو روپے
ساتویں ششماہی: چار روپے
آٹھویں ششماہی: آٹھ روپے
نانویں ششماہی: سولہ روپے
دسویں ششماہی: 32 روپے
گیارہویں ششماہی: 64 روپے
بارہویں ششماہی: 128 روپے
تیرہویں ششماہی: 256

چودہویں ششماہی:512

پندرہویں ششماہی:1024

سولہویں ششماہی:2048

سترھویں ششماہی:4096

اٹھارہویں ششماہی:8192

انیسویں ششماہی:16384

بیسویں ششماہی:32768

اکتسویں ششماہی:65536

بائیسویں ششماہی:131072

تئیسویں ششماہی:262144

چوبیسویں ششماہی:524288

بس بڑھیا کی ایک ادھنی کے بدلے پانچ لاکھ چوبیس ہزار دو سو اٹھاسی روپے بنے.....

(عقل بہت بڑی نعمت ہے، اس کے سبب آناً فاناً بڑے بڑے عُقدے حل ہو جایا کرتے ہیں۔عقل ہم سب میں ہے، مگر ہم بہ مشکل پندرہ فیصد استعمال کرتے ہیں اور وہ بھی صحیح نہیں..... ہمارے اکثر مادی مسائل ہماری کم عقلی کے ہی رَہینِ مِنّت ہیں!!)

## نقارچی

آپ اگر جسمانی طور پر صحت مند رہنا چاہتے ہیں تو آپ کو ایسے لوگوں کی اشد ضرورت ہے جو حفظان صحت کے اصولوں سے آگاہ ہوں اور قدم بہ قدم خوراک، آب و ہوا اور ماحول کے متعلق آپ کی راہ نمائی کریں، اور آپ بہ غور ان کی باتیں سن کر بہ دل و جان تسلیم کریں!

اور اگر آپ اسلامی طور پر توانا رہنا چاہتے ہیں تو.....

آپ کو اسلام کے اصول جاننے والوں کی سخت احتیاج ہے، ورنہ آپ اَن جانے میں اپنے لیے ایسی روحانی غذائیں یا ماحول تجویز کر لیں گے جو مضرِ ایمان ہیں۔

یاد رکھیں!

آپ کی پیدائش سے لے کر آپ کی موت کے بعد تک کے سارے اسلامی معاملات کو بہ حسن و خوبی نبھانے والے "علما" ہی ہیں.....

یہ آپ کے خیر خواہ ہیں، آپ کے راہ نما ہیں اور آپ کی تَن درست اسلامی زندگی کے خواست گار بھی.....

آپ کسی ملحد (سیکولر و لبرل) کی باتوں پر کان نہ دھریں؛ ملحد آپ کی اسلامی صحت کے دشمن ہیں جو آپ کو آپ کے اپنے ڈاکٹر (عالم و مولوی) کے خلاف بھڑکاتے ہیں اور اِس کے خواہاں ہیں کہ آپ ایڑیاں رگڑ رگڑ کر الحاد کی موت مر جائیں!

## بچے

1: جب بچے کھانا کھالیں تو ان کا بَچا کُھچا ضائع نہ کیا کریں، بسم اللہ شریف پڑھ کر کھالیا کریں؛ بچوں کا پَس خُوردہ بابرکت ہوتا ہے۔

2: بچوں کو مَیلا کُچیلا دیکھ کر دل میں میل نہ لایا کریں، ان کی ظاہری مَیل ہمارے گناہوں کی میل سے بہت۔۔۔۔۔۔۔۔کم ہے۔

3: بچے مسجد میں آکر شور شرابا کریں، یا صحیح نماز نہ پڑھیں، تو انھیں جِھڑکا نہ کریں، پیار سے سمجھایا کریں؛ یہی بچے، بڑے ہو کر مسجدیں آباد کریں گے۔

4: بچے گھریلو نقصان کر دیں تو انھیں ڈانٹنے کے بجائے آرام سے اس طرح سمجھائیں:

بیٹا! مجھے پتا ہے آپ نے جان بوجھ کر یہ نقصان نہیں کیا، اور میں امید کرتا ہوں انشاءاللہ آئندہ ایسے نہیں ہو گا۔

میرے بیٹے! آرام سکون سے کام کرتے ہیں، تاکہ نقصان نہ ہو۔

## بزدلی باعثِ شرم ہے

فِي الْجُبْنِ عَارٌ ، فِي الْإِقْبَال مَكْرُمَةٌ

وَالْمَرْءُ بِالْجُبْنِ لاَ يَنْجُوْ مِنَ الْقَدرِ

بزدلی باعثِ شرم ہے، عزت آگے بڑھنے (اور دشمن پر حملہ کرنے) میں ہے۔

بندہ بزدلی کر کے تقدیر سے کبھی نہیں بچ سکتا۔

(موت ڈرپوک کو بھی آدبوچتی ہے، اور بہادر بھی چلا جاتا ہے؛ کیا ہی اچھا ہو کہ بہادروں کی طرح جان قربان کی جائے!)

(مدارج النبوۃ، ج دوم، ص116، نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور)

ابھی اپنے بیٹے کو مدارج النبوت سے یہ شعر پڑھایا ہے۔

یہ رسول اللہ ﷺ کی تلوار مبارک پر لکھا ہوا تھا۔

اُسے تلقین کی ہے کہ بیٹا! کبھی ڈرپوک نہیں بننا۔ عزت، بہادری میں ہے، بزدلی میں نہیں؛ مسلمان جرات مند ہوتا ہے، بزدل نہیں!!

اللہ پاک ہمیں اور ہماری نسلوں کو جرات عطا فرمائے، ہم اللہ کے سوا کسی سے نہ ڈریں۔

ہر شاخ سے یہ نکتۂ پیچیدہ ہے پیدا
پَودوں کو بھی اِحساس ہے پَہنائے فِضا کا
ظُلمت کَدۂ خاک پہ شاکِر نہیں رہتا
ہر لحظہ ہے دانے کو جُنوں نَشوونُما کا
فِطرت کے تقاضوں پہ نہ کر راہِ عمل بند
مقصود ہے کچھ اور ہی تسلیم و رضا کا
جُرات ہو نَمو کی ، تو فِضا تنگ نہیں ہے
اے مردِ خدا ، مُلک خدا تنگ نہیں ہے !

## کان میں اپنا حصہ ہے

حضرت شعبی کی مجلس میں ایک شخص بیٹھا کرتا تھا جو ہمیشہ خاموش رہ کر گفتگو سنتا۔

ایک بار آپ نے اس سے فرمایا:

میاں! تم ہمیشہ چپ رہتے ہو، کبھی بولا بھی کرو۔

اس نے کہا: میں چپ رہتا ہوں، سلامت رہتا ہوں؛ سُنتا ہوں تو جان لیتا ہوں۔

کان میں اپنا حصہ ہے اور زبان میں دوسرے کا۔

بے بَصَر ہیں وہ جو بحثوں میں یہاں خُورَسَند ہیں
جِن کی آنکھیں کھل گئیں ، اُن کی زبانیں بَند ہیں !

(ملخصًا: سچی حکایات، ج3، ص290، 291، ح587، ط فرید بک سٹال لاہور)

## اذیت ناک یادیں

آج میں نے ایک مریض کو سمجھاتے ہوئے کہا کہ ماہرِ نفسیات کہتے ہیں:

"حادثے بڑی بڑی یادوں کو بُھلا دیتے ہیں، اُن یادوں کو بھی جو کبھی نہیں بُھلائی جاسکتیں اور نہ انسان بھلانا چاہتا ہے۔"

وہ مریض کہنے لگا: پھر، کوئی ایسا تعویذ دے دیں کہ میرے ساتھ بھی حادثہ ہوجائے اور مجھے سب کچھ بھول جائے، کچھ بھی یاد نہ رہے؛ اپنا آپ بھی یاد نہ رہے!!

میں نے کہا تمھیں تعویذ کے بجائے دعا دیتا ہوں کہ:

اللہ کریم تجھے حبیبِ پاک صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کی محبت عطا کردے، تاکہ تیرے پاس اذیت دینے والی کوئی یاد باقی نہ بچے۔

اُن کے نثار کوئی کیسے ہی رنج میں ہو

جب یاد آگئے ہیں سب غم بُھلا دیے ہیں
جب آگئی ہیں جوشِ رحمت پہ اُن کی آنکھیں
جلتے بُجھا دیے ہیں ، روتے ہنسا دیے ہیں

## راز چھپانے والے

نوشیرواں کا قول ہے:

اپنا راز چھپانے والے کو دو فائدے حاصل ہوتے ہیں۔

1: کامیابی سے اپنی مراد پالیتا ہے۔

2: خطرے سے محفوظ رہتا ہے۔

(المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثامن والثلاثون، فی کتمان السر وتحصینہ وذم افشائہ، ص217، ط دار مکتبۃ الحیاۃ بیروت، 1412ھ)

## قیمتی نصیحت

حضرت بکر بن عبداللہ رحمہ اللہ نے ایک بڑی قیمتی نصیحت کی تھی، اللہ کرے ہم اس پر کماحَقُّہٗ عمل کرنے والے بن جائیں۔ فرماتے تھے:

"جب تم کسی بڑے کو دیکھو تو اُس کی تعظیم بجالاؤ، اور (خود سے) کہو:

یہ اسلام اور نیک اعمال میں مجھ پر سبقت رکھتا ہے۔

جب کسی چھوٹے کو دیکھو تو اس کی بھی عزت کرو، اور اپنے آپ سے کہو:

(اس کے گناہ میری بہ نسبت کم ہیں) میں اِس پر گناہوں سے سبقت لے گیا۔ اور

جب لوگ تمھاری عزت کریں تو کہو:

یہ اللہ کا فضل ہے، ورنہ میں اس کا حق دار نہیں ہوں۔"

(تنبیہ المغترین اواخر القرن العاشر علی ما خالفوا فیہ سلفھم الطاھر، امام شعرانی (م973ھ)، ص65، مرکز اہل سنت برکات رضا ہند، 1427ھ)

## زلزلہ

زمین پر بیٹھا اللہ کے پیاروں کا ذکر کر رہا تھا کہ زلزلے کے جھٹکے محسوس ہونے لگے۔

پھر کیا تھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، بغیر کسی خوف کے، زبان پر کلمہ شریف جاری ہوگیا۔ الحمدللہ ثم الحمدللہ

اللہ کرے جب وقت نزع آئے تو زبان پر بے ساختہ کلمہ طیبہ جاری ہو جائے اور اسی حالت میں جان نکل جائے!

1: زلزلے کو ٹینشین کے طور پر نہیں لینا چاہیے، اگر موت زلزلے سے لکھ دی گئی ہے تو لاکھ کوشش کے باوجود زلزلے سے ہی آئے گی۔

اور اگر زلزلے میں موت نہیں لکھی گئی تو شدید ترین زلزلہ بھی بال بیکا نہ کر سکے گا۔

2: جب زلزلہ آئے تو زلزلے سے ڈرنے کے بجائے، رب تعالیٰ سے ڈریں؛ توبہ استغفار کریں، عافیت طلب کریں اور کلمے شریف کا ورد کریں۔

3: جب زلزلے آتے ہیں تو بعض لوگ خود کو ایک خوف میں مبتلا کر لیتے ہیں، نہ انھیں صحیح طرح سے نیند آتی ہے، نہ اچھی طرح سے کھا پی سکتے ہیں؛ ایسا بالکل نہیں ہونا چاہیے۔ موت کا ایک وقت مقرر ہے اس سے ایک لمحہ نہ پہلے آسکتی ہے، نہ بعد میں۔

موت کا ایک دن مُعَیَّن ہے
نیند کیوں رات بھر نہیں آتی!

زلزلے ہمیں نفسیاتی مریض بنانے نہیں آتے، یہ سمجھانے آتے ہیں کہ دنیا کی کوئی چیز ہمیشہ رہنے والی نہیں۔

یہ مضبوط مکان، خوب صورت دُکانیں، پکی سڑکیں، چلتی گاڑیاں، اڑتے جہاز۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔سب فنا ہونے کے لیے صرف ایک حکمِ رَبی کی منتظر ہیں۔ اس لیے زلزلوں سے ڈرنے کے بجائے، مالک الملک جَلَّ جَلَالُہٗ سے ڈریں اور اُس کی نافرمانی چھوڑ دیں۔

## جھگڑوں کا خاتمہ

آج قبلہ استاد گرامی تشریف لائے اور فرمانے لگے:

”سب امن امن کا کہتے ہیں، لیکن یہ نہیں سمجھتے کہ جہاد کے بغیر امن قائم نہیں ہو سکتا۔

اگر آج جہاد فی سبیل اللہ شروع ہو جائے تو مسلمانوں کے باہمی تمام جھگڑے اور تفرقے ختم ہو جائیں۔

زمانہ رسالت مآب میں کچھ عرصے کے لیے جہاد موقوف ہوا تھا تو بعض صحابہ علیہم الرضوان بھی آپس میں جھگڑ پڑے تھے، پھر رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم نے مختلف سرایا روانہ کیے تو امن قائم ہوا۔“

جہاد فی سبیل اللہ مسلمانوں میں امن و آشتی کا سببِ عظیم ہے، رب تعالیٰ اس نعمت سے ہمیں محروم نہ رکھے!

## جدائی

آپ نے کسی سے اتنی محبت کی ہو کہ اُس کے بغیر رہ نہ سکتے ہوں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

دن رات اُسی کے تصور میں کھوئے رہتے ہوں، آپ کا چین سکون اسی کے ساتھ وابستہ ہو۔
پھر اچانک وہ آپ سے جدا ہو جائے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
حالات جدا کر دیں، موت جدا کر دے یا وہ خود چھوڑ کر چلا جائے۔
تو آپ پر کیا بیتے گی؟؟ یہ آپ کے علاوہ کوئی نہیں جان سکتا!!
لیکن ایک چیز ہے جو ایسے وقت میں آپ کو سنبھالا دے سکتی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اور وہ ہے: "حقیقت۔"
آپ جانتے ہیں کہ خواب میں چاہے جتنا بڑا محل بنا لیا جائے، بیدار ہونے پر وہی کمرہ اور چارپائی ہوتی ہے جہاں رات کو سوتے ہیں۔

حقیقت چُھپ نہیں سکتی بناوٹ کے اُصولوں سے
کہ خوشبو آ نہیں سکتی کبھی کاغذ کے پھولوں سے

"ہم نے ہمیشہ ساتھ رہنا ہے، کبھی جدا نہیں ہونا"، یہ ایک خواب ہے۔
جب کہ "حقیقت" یہ ہے جو جبریل علیہ السلام نبی پاک ﷺ کے سامنے بیان کر گئے:

"اَحْبِبْ مَنْ شِئْتَ فَاِنَّكَ مُفَارِقُهٗ۔
آپ جس سے چاہے محبت کر لیں، آخر اُس نے جدا ہونا ہے۔"

بس! یہ حقیقت جان لینے کے بعد، آنسو پونچھ لیجیے اور پُر سکون ہو جائیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
وہ آپ کو ہمیشہ کے لیے نہیں، جدا ہونے کے لیے ملا تھا؛ بس جدا ہو گیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اَحْبِبْ مَنْ شِئْتَ فَاِنَّكَ مُفَارِقُهٗ۔
آپ جس سے چاہے محبت کر لیں، آخر اُس نے جدا ہونا ہے۔

## اپنی مسجد

نبی پاک ﷺ نے مدینہ شریف میں مسجد بنانے کا ارادہ کیا تو زمین قیمتاً خریدی۔
حالاں کہ جن کی زمین تھی وہ کہتے تھے کہ حضور مفت میں قبول فرما لیں! لیکن سرکار نے ایسا نہیں کیا۔
حافظ الحدیث پیر سید جلال الدین شاہ صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ سرکار ﷺ کا یہ عمل بیان کرنے کے بعد فرمایا کرتے تھے:
"اس میں ہمارے لیے بھی نصیحت ہے کہ:
مسجد اپنی ہو، چاہے ڈیڑھ انچ کی ہو؛ تبھی کھل کر دین کا کام ہو سکتا ہے۔"

آپ رحمہ اللہ نے سچ فرمایا!!
واقعی جب تک مسجدیں اور مدرسے اپنے نہ ہوں، لوگ کُھل کر دین کا کام نہیں کرنے دیتے؛ سو سو رکاوٹیں کھڑی کرتے ہیں۔
آج کل ائمہ، مدرسین کی بہ نسبت پیر کیوں ترقی کر رہے ہیں؟
اس لیے کہ اُن کے آستانے اپنے ہوتے ہیں جہاں انھیں کوئی روک ٹوک نہیں ہوتی!!
بہ غور دیکھا جائے تو جن علما نے فرداً فرداً ترقی کی ہے (کثیر شاگرد وغیرہ بنائے ہیں) اُن کی مسجدیں اور مدرسے اپنے ہی تھے، انھیں بے جا روکنے ٹوکنے والا کوئی نہیں تھا۔
حافظ الحدیث رحمہ اللہ کے اس فرمان کا مجھے بھی تجربہ ہو گیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اللہ پاک سارے ائمہ کرام اور مدرسین پر کرم فرمائے!!
1: مسجدیں اور مدرسے کسی فرد یا افراد کی مِلک نہیں ہوتے، یہ اللہ کے لیے ہوتے ہیں۔
انھیں پرا پرٹی نہیں، دین کا مرکز سمجھنا چاہیے۔
2: ائمہ اور مدرسین کو حق بیانی کا پورا پورا حق دینا چاہیے اور انھیں یہ باور کروانا چاہیے کہ یہ مسجدیں اور مدرسے آپ کے ہیں، آپ کھل کر دین کی تبلیغ کریں ہم کسی قسم کی رکاوٹ کھڑی نہیں کریں گے۔
2: ائمہ اور مدرسین کو یہ بھی اختیار ہونا چاہیے کہ اگر انتظامیہ غلط کام کرے تو وہ بلا جھجک اسے روک ٹوک سکیں۔
3: بغیر شرعی عذر کے کسی مدرس اور امام کو معزول نہیں کرنا چاہیے۔
ایک امام اور مدرس بڑی مشکل سے زمین بناتا ہے، فصل تیار کرتا ہے، لیکن جب پکنے پہ آتی ہے تو اُسے نکال دیا جاتا ہے؛ یہ بہت غلط طریقہ ہے۔
مہتمم، ناظم، منتظم دینی مراکز کے خادم ہوتے ہیں، ائمہ مدرسین پر حاکم نہیں؛ انھیں دین اور دین داروں کا احترام ملحوظ رکھنا چاہیے۔

## 101 لفظوں کی نصیحت

دوسروں کی تحریروں سے اُن کا نام مٹا کر اپنا نام چسپاں نہ کیا کریں، یہ بہت غلط کام ہے۔
اِس سے نہ صرف آپ کی ثقاہت مجروح ہوتی ہے، بلکہ لوگ سمجھتے ہیں یہ چور ہے، جو دوسروں کی محنت پر ناحق قبضہ جمانا چاہتا ہے۔
آپ کا مقصد جب اچھی بات کو آگے پہنچانا ہے، تو وہ لکھنے والے کے نام سے بھی پہنچ سکتی ہے۔
جس نے اپنا وقت صَرف کر کے، محنت سے لکھا ہو، تحریر کا اُسی کے نام سے شائع ہونا اُس کا حق ہے؛ اور کسی کا حق مارنے

والے اچھے لوگ نہیں ہوتے۔

## درخت کی نصیحت

بزرگ سنایا کرتے تھے کہ:

ایک شخص گھر آیا تو اس کی بیوی نے کہا: ہمارے غسل خانے کے پاس جو درخت ہے اسے کٹوا دو، میری غیرت گوارا نہیں کرتی کہ جب غسل کر رہی ہوں تو پرندوں کی نظر مجھ پر پڑے۔ وہ بیوی کی اس بات سے بہت متاثر ہوا اور اس نے درخت کاٹ دیا۔

وقت گزرتا گیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

ایک دن وہ خلافِ معمول اچانک گھر آیا تو دیکھا بیوی ایک غیر مرد کے ساتھ مشغول تھی۔

اسے اتنا دُکھ ہوا کہ گھر بار چھوڑ کر بغداد چلا گیا۔

بغداد میں کاروبار شروع کر لیا، اور کسی طریقے بغداد کے والی تک رسائی بھی حاصل کر لی۔

کچھ دن گزرے تھے کہ اچانک والی کے گھر چوری ہو گئی۔

پولیس نے مجرم پکڑنے کی بہت کوشش کی لیکن ناکام رہی۔

اس نے دیکھا کہ ایک شیخ والی کے پاس آتے ہیں تو والی ان کی بے حد تعظیم کرتا ہے۔

لیکن ایک بات اس کی سمجھ میں نہیں آتی تھی کہ شیخ آدھے پاؤں پر چلتے ہیں، پورا پاؤں زمین پر کیوں نہیں رکھتے۔

اس نے کسی سے وجہ پوچھی تو بتایا گیا:

یہ پورا پاؤں زمین پر اس لیے نہیں رکھتے کہ کہیں کیڑے مکوڑے نہ کُچلے جائیں۔

اُس نے والی سے کہا:

جان کی امان ہو تو عرض ہے، آپ کی چوری اِسی شیخ نے کی ہے۔

جب تحقیق کی گئی تو مسروقہ مال اُسی شیخ سے برآمد ہوا۔

والی کہنے لگا:

ہم نے تو کبھی سوچا بھی نہیں تھا کہ یہ شیخ اس طرح کر سکتے ہیں۔ تجھے کیسے معلوم ہوا؟

اس نے کہا: میرے گھر میں ایک درخت تھا، جس نے مجھے نصیحت کی تھی:

"جو لوگ ضرورت سے زیادہ "نیک نظر آنے" کی کوشش کرتے ہیں، وہ عموماً نیک نہیں ہوتے۔"

نصیر الدین نصیر نے سچ کہا تھا۔

اے شیخ! یہ زُہدِ خود نُما کچھ بھی نہیں

یہ مکر، یہ شیوۂ رِیا کچھ بھی نہیں
دانوں کا گھماؤ زیادہ ، کم جُنبشِ لب
تسبیح میں چکر کے سوا کچھ بھی نہیں

زُہد و تقویٰ ضرور اختیار کریں، لیکن لوگوں کے لیے نہیں، اپنے رب کے لیے!!
پرہیز گاری وہی ہے جو رسولِ پاک ﷺ کی اتباع میں ہو، باقی سب خوامخواہ کا تکلُّف ہے۔

## ایک سو ایک الفاظ کی نصیحت

میں تیری ملاقات کے لیے تیار بیٹھی تھی، لیکن اجازت نہیں مل رہی تھی۔
اب آگئی ہوں، تجھے چھوڑ کر نہیں جاؤں گی۔----------
مجھے معلوم ہے تُو مجھے پسند نہیں کرتا ، مجھ سے ڈرتا ہے ؛ لیکن کیا کروں تم سے ملے بغیر نہیں رہ سکتی تھی۔----------
آجاؤ، آجاؤ، میرے قریب آؤ!!
اچھا! تم نہیں آرہے، دور بھاگ رہے ہو۔----------
لَو، میں خود قریب آگئی!!
اچانک رونے کی آوازیں آنے لگیں، اور ایک شور مچ گیا۔
ماں باپ، بہن بھائی، دوست احباب سب صدمے سے نڈھال، کہ رہے تھے:
"موت آئی، اُسے ساتھ لے کر چلی گئی"

## جہادِ اکبر

ایک حدیث میں:
نفس کے ساتھ جہاد کو، جہادِ اکبر فرمایا گیا ہے۔
آج اِس حدیث کی تشریح امیر المجاہدین حفظہ اللہ کی زبانی سنی تو دل باغ باغ ہو گیا۔
فرماتے ہیں:
"اس سے مراد یہ ہے کہ ہم اپنے آپ کو دوبارہ جہاد کے لیے تیار کریں گے"
سبحان اللہ، کیا ایمان افروز تشریح ہے!!
جب مجاہد فاتح بن کے آتا ہے تو اُس کا نفس آرام و آسائش کا تقاضا کرتا ہے، اب اگر وہ آسائشوں کے پیچھے نہیں پڑتا، نفس

سے مقابلہ کرکے دوبارہ جہاد کے لیے خود کو تیار کرتا ہے تو یہ جہادِ اکبر سے کم نہیں؛ کیوں کہ اُس نے اللہ کے لیے ہر قسم کے راحت و آرام کو ٹھکرادیا۔

ہمارے پیارے آقا و مولا ﷺ بار بار جہاد کے لیے نکلے، اور اپنے غلاموں کو بھی بار بار جہاد کے لیے روانہ فرمایا۔

آپ ﷺ نے بہ نفس نفیس 27 جنگوں میں شرکت فرمائی ہے، اور اِن کے علاوہ 56 لشکر بھی روانہ کیے ہیں۔

اللہ پاک اِن 83 جنگوں کے صدقے ہمارے لیے جہادِ فی سبیل اللہ کی راہ ہموار فرمادے!!

مقامی بن کے آیا ہے نہ راہی بن کے آیا ہے
یہ دنیا رَزْم گہ ہے تُو سپاہی بن کے آیا ہے

## بچوں کا نشانہ

میں ایک بہت بڑے دینی ادارے میں گیا، اُس کے ناظم اعلیٰ نے بچوں کے سرپرستوں اور ادارے کے اساتذہ کا تربیتی اجلاس بلا رکھا تھا۔

موصوف حضرت عمر بن عبدالعزیز کا خط پڑھ کر سنا رہے تھے جو آپ رحمہ اللہ نے اپنے بچوں کے استاد کو لکھا تھا کہ:

"میرے بچوں کو گانے باجے سے نفرت دلاؤ، کیوں کہ گانا دل میں نفاق پیدا کرتا ہے۔

انھیں سکھاؤ کہ وہ دھیان سے قرآن پاک کی تلاوت کریں، اُس کے بعد تیر کمان لے کر، ننگے پاؤں باہر نکل جائیں، اور اپنا نشانہ درست کرنے کے لیے سات تیر چلائیں؛ پھر واپس آکر قَیلُولہ کریں"

یہ مکتوب پڑھ کر ناظمِ اعلیٰ صاحب کہنے لگے:

"اب تیر اندازی کا دور ختم ہوگیا، اس کی جگہ کمپیوٹر نے لے لی ہے، اس پر ہی بچوں کا ہاتھ سیدھا کروائیں۔"

مجھے اُن کی تشریح سن کر بہت دکھ ہوا، اور لاحول شریف کا ورد کرنے لگا۔

خلیفہ راشد سیدنا عمر بن عبدالعزیز رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا فرمان بالکل واضح ہے، اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ بچوں کو کمپیوٹر چلانا سکھاؤ۔

بلکہ اس کا مطلب ہے بچوں کو قرآن پاک اور اخلاقیات کی تعلیم کے ساتھ، جہاد کی عملی تربیت بھی دو؛ اور انھیں سخت کوش بناؤ۔

مسلمانوں کے بچے جفاکش اور نڈر ہونے چاہییں، "فارمی چوزوں" کی طرح نہیں ہونے چاہییں۔

اب اگر تیر نہیں رہے تو کیا نشانہ درست کرنے کے دوسرے ذرائع بھی معدوم ہوگئے؟؟

ہمارے بچوں کو معلوم ہونا چاہیے کہ:

گھر میں کوئی چور اُچکا آگھسے تو کمپیوٹر آن کرکے نہیں بیٹھنا، اور نہ جوتے تلاش کرتے رہنا ہے، بلکہ ڈنڈا اٹھاکر اس کا سر پھوڑنا

ہے۔
اور اگر کسی قاتل سے سامنا ہو جائے تو اس کے نشانہ لینے سے پہلے، اسے نشانہ بنانا ہے۔
اگر آج ہمارے بچوں کی ایسی تربیت ہو گئی تو کل کو کشمیر اور برما جیسے حالات پیش نہیں آئیں گے۔

خود آگاہی نے سِکھلا دی ہے جس کو تَن فَراموشی
حرام آئی ہے اُس مردِ مجاہد پر زِرہ پَوشی

## مردہ مچھلی

آج ایک مچھلی فارم والے دوست سے ملاقات ہوئی، جو دس بارہ سال سے مچھلی کا کاروبار کر رہا ہے۔
اُس نے بتایا کہ:
اِس موسم میں عموماً مچھلیوں کو ٹیک ہوتا ہے اور وہ مر جاتی ہیں۔
اِن مردہ مچھلیوں کو فش کارنر، باربی کیو اور ڈھابوں والے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ساٹھ، ستر روپے کلو کے حساب سے خرید کر، خوب مرچ مصالحہ لگاتے ہیں اور لوگوں کو کھلا دیتے ہیں۔
میں نے اسے پوچھا:
ٹیک والی مچھلی کی نشانی کیا ہوتی ہے؟
کہنے لگا:
اُس کا رنگ تبدیل ہو کر سفیدی مائل ہو جاتا ہے، جیسے خون نچوڑ لیا گیا ہو؛ اور گوشت بھی نرم ہو جاتا ہے، جو انگلی رکھ کر دبانے سے واپس اپنی جگہ نہیں آتا۔
عید پر قربانی کا متبرک گوشت کھایا کریں، اتنا صاف ستھرا اور صحت مند گوشت پورا سال میسر نہیں آتا۔
اگر مچھلی، مرغی کھانی ہو تو ڈھابوں کے بجائے گھر پہ اہتمام کر لیا کریں، تاکہ صحت مند رہ سکیں۔

## پیٹ سے اُدھار

ایک اللہ کا بندہ بازار سے گزر رہا تھا، قصائی نے آواز دے کر کہا:
میاں جی گوشت لے جاؤ۔ کہنے لگے: میرے پاس پیسے نہیں۔
قصائی بولا: کوئی بات نہیں، ادھار کر لیں۔ انھوں نے فرمایا:
"تجھ سے ادھار کرنے سے بہتر ہے، میں اپنے پیٹ سے ادھار کر لوں۔"
ایک دانا کا قول ہے:

امیر وہ نہیں ہوتا جس کی آمدن زیادہ ہو، امیر وہ ہوتا ہے جس کے اخراجات آمدن سے کم ہوں۔
ہم لوگ نہ پیٹ سے ادھار کرتے ہیں اور نہ اخراجات کم کرنے کی کوشش کرتے ہیں، بس غُربت کا رونا روئے جاتے ہیں۔
1: آمدنی بڑھانے کی کوشش ضرور کریں، لیکن اخراجات بھی کم کریں۔
2: ضرورتیں پوری کرنے پر توجہ دیا کریں، خواہشیں پوری کرنے پر نہیں۔
3: ہر وقت کھاتے رہنے اور نِت نئے چسکے لگانے سے بندہ صحت مند نہیں ہوتا۔
وقت پر کھائیں، سادی اور مناسب غذا استعمال کریں۔
4: ملبوسات (ٹوپی، عمامہ، رومال، کپڑے، جوتے وغیرہ) قیمتی خریدنے کے بجائے، آرام دہ اور کم قیمت خریدیں۔
5: اللہ پاک کی رضا کے لیے کسی نہ کسی کو کھانا ضرور کھلایا کریں، اس کی برکت سے بہت ساری بیماریوں سے محفوظ رہیں گے اور رزق بھی بڑھے گا۔

## شاگرد کو نصیحت

آج ایک شاگرد نے تقاضا کیا کہ مجھے بہ طورِ نصیحت کچھ لکھ دیں۔
میں نے اس کے حسب حال یہ لکھ کر دیا:
ذہین اور پُختہ عالمِ دین ہمیشہ دلائل کو ملحوظ رکھتا ہے، شخصیات کو نہیں۔
اگر ایسا عالم فروعی مسائل میں دیگر علما سے اختلاف کرتا ہے تو یہ اُس کی خدا خوفی، بیدار مغزی اور انصاف پسندی ہوتی ہے۔
اِس اختلاف کی بِنا پر اُسے سب وشتم کرنا، یا لکیر کا فقیر بننے کی دعوت دینا، کج روی، کوتاہ فہمی اور کم عقلی ہے۔
باشعور لوگ، باشعور قوموں کے لیے سرمایہ افتخار ہوا کرتے ہیں؛ جب لوگ انھیں کھو دیتے ہیں تو ان کی جگہ "دولے شاہ کے چوہے" لے لیتے ہیں، جنھیں اپنے آپ کی بھی خبر نہیں ہوتی۔

## نہ اُن جیسا، نہ ہم جیسا

ایک شخص اپنے شیخ کے انتقال کے بعد دوسرے شیخ کے پاس گیا، لیکن اُسے اُن میں وہ چیز نظر نہ آئی جو پہلے شیخ میں تھی۔
شیخ اس کی کیفیت بھانپ گئے اور کہنے لگے:
"ہم تیرے شیخ جیسے تو نہیں، لیکن ہمارے بعد تجھے ہم جیسا بھی نہیں ملے گا؛ اس لیے جو مل گیا اسے ہی غنیمت سمجھو!"
آج کل لوگ پیرانِ عظام کو حضرتِ جنید و بایزید جیسا دیکھنا چاہتے ہیں، اور علما کو حضرت غزالی و رازی جیسا۔
لیکن کاش، یہ حقیقت بھی سمجھ جائیں کہ اب ایسے نفوس پیدا نہیں ہوں گے، جو موجود ہیں انھیں ہی غنیمت سمجھنا چاہیے۔

بات بات میں علما و مشائخ کی غلطیاں نکالنے کے بجائے، ان کی خوبیاں سمیٹنے کی کوشش کریں؛ جب یہ چلے جائیں گے تو ان جیسا دوبارہ نہیں آئے گا!!

## بھلانے کا وظیفہ

ایک دُکھی نوجوان میرے پاس آیا اور کہنے لگا:

میرا ایک دوست تھا جس سے مجھے بہت محبت تھی، اس نے مجھے چھوڑ دیا ہے؛ اب میں اسے بُھولنا چاہتا ہوں کوئی وظیفہ بتادیں۔

میں نے کہا یہ پڑھا کرو:

نَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْد

اس وظیفے سے دو فائدے حاصل کیے جاسکتے ہیں:

1: جب اپنے دل میں کسی کے متعلق جذبات محسوس کریں تو تین دن تک روزانہ 77 بار یہ وظیفہ پڑھیں، اور ساتھ حسبِ استطاعت صدقہ دیں۔

اگر وہ سچی محبت ہوئی تو دل میں ٹھہر جائے گی، محبت کے نام پر مصیبت ہوئی تو ٹَل جائے گی۔

2: کسی کو بھولنا چاہتے ہیں، مگر بُھلا نہیں پارہے؛ تو مسلسل 9 دن، روزانہ 40 بار یہ ورد کریں، انشاءاللہ اسے بھولنا اور خود کو یاد رکھنا آسان ہوجائے گا۔

عاشقِ نامُراد کی قبر پہ تھا لکھا ہوا
جس کو ہو زندگی عزیز ، وہ نہ کہیں لگائے دل
پوچھتے کیا ہو میرے غم ، ملتے ہیں بے وفا صَنَم
چھوڑو بُتوں کی دوستی ، دیتا یہی ہے رائے دل

یاد رکھیں! بے پناہ محبت صرف اور صرف سرورِ کونین ﷺ سے کریں، دنیا میں یہی وہ باوفا محبت ہے جو غم ناک آہیں اور کرب ناک آنسو نہیں دیتی۔

## سلامتی والی موت

ایک شخص خلیفہ مامون رشید کے پاس آکر کہنے لگا:

"امیر المومنین! کوفے میں موت پھیل گئی ہے، لیکن ہے سلامتی والی۔"

(اخبار الحمقی والمغفلین، الباب الثانی عشر۔۔۔۔۔۔، ص95، ط دار الکتاب العربی بیروت، س1427ھ)

ہمارے بادشاہ سلامت اور پی ٹی آئی کے معزز سپورٹر یہی فرمارہے ہیں:

"پاکستانیو! گھبرانا نہیں، مہنگائی تو ہو گئی ہے لیکن ہے سلامتی والی۔"
پاکستانی بے چارے سوچ سوچ کے ہلکان ہوئے جا رہے ہیں کہ:
یہ مہنگائی کہیں موت کی طرح "سلامتی والی" نہ ہو، جو سلامتی سے ہی زیرِ زمیں سلا دے۔

## تو غریب نہیں!

سیدنا امیر معاویہ نے ایک آدمی کو یہ کہتے سنا:
میں غریب ہوں۔
آپ نے فرمایا:
تو ہرگز غریب نہیں؛ غریب تو وہ ہے جو ادب سے محروم ہے۔
(المستطرف فی کل فن مستظرف۔۔۔۔۔الباب الرابع فی العلم والادب۔۔۔۔۔۔ص30، ط دار الکتب العلمیۃ بیروت، س1436ھ)
یہ بہت گہری بات ہے!!
واقعی ادب سے محروم شخص کو غربت گھیرے رکھتی ہے، وہ مال کمانے کا ادب نہیں جانتا تو ہاتھ پہ ہاتھ دھرے بیٹھا رہتا ہے۔
جب کہ ادب کا خوگر غریب نہیں ہوتا؛ اسے مال کمانے کے آداب آتے ہیں، جنھیں استعمال میں لا کر کچھ نہ ہونے کے باوجود بھی سب کچھ حاصل کر لیتا ہے۔
اللہ پاک ہمیں تمام دینی، دنیوی آداب سکھا دے!!

## اپنی اپنی سمجھ

1: میں ایک مسجد میں امام تھا، وہاں فجر کے بعد درس دیا کرتا۔
ایک دن صفاتِ الٰہی کا بیان کرتے ہوئے میں نے کہا:
اللہ تعالی کا نام لیتے ہوئے "اللہ میاں" نہیں کہنا چاہیے؛ کیوں کہ لفظِ میاں کے کچھ ایسے معانی بھی ہیں جو شانِ الٰہی کے لائق نہیں۔
اور میاں کے وہ معانی بیان کیے۔
میرے بالکل سامنے "میاں بشیر صاحب" بیٹھے ہوئے تھے، اس وقت تو وہ خاموش رہے، لیکن اگلی صبح انھوں نے لفظ میاں پر پوری تقریر کر ڈالی۔
میں نے انھیں بہت سمجھایا کہ جن معنوں میں آپ کو میاں کہا جاتا ہے، وہ غلط نہیں، اور نہ آپ میرے مخاطب تھے؛ لیکن ان کی سمجھ میں کوئی بات نہ آئی، اور وہ یہی کہتے رہے کہ آپ نے میری مذمت کی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

2: سیدنا امیر معاویہ کا قول ہے:

"میں حاسد کے علاوہ سب کو راضی کر سکتا ہوں، کیوں کہ حاسد تب راضی ہو گا جب میری نعمت چھن جائے گی۔"

ایک دفعہ میں نے یہ قول مبارک لکھا، اور موبائل میں جتنے نمبر تھے سب پہ میسج کر دیا۔

ایک صاحب میرا یہ میسج پڑھ کر بہت ناراض ہوئے، اور بھرے مجمع میں کہنے لگے:

آپ کے نزدیک ہم حاسد ہیں، ہم آپ سے حسد کرتے ہیں، اس لیے ہم آپ سے بات نہیں کریں گے۔

میں نے انھیں ہر طرح سے صفائی پیش کی، لیکن ان کا دل صاف نہ ہوا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اس سے میں نے یہ نتیجہ اخذ کیا کہ: یہ ضروری نہیں ہوتا کوئی آپ کی بات اسی طرح سمجھے جیسے آپ کہہ رہے ہیں؛ اس لیے آپ اچھی نیت سے، اچھی بات کہتے رہیں۔ آپ تو صرف اسی کے ذمے دار ہیں جو آپ نے کہا، اس کے ذمے دار نہیں جو کسی نے سمجھا!!

## دانائی کی باتیں

ہمارے علاقے میں ایک بزرگ ہیں جو حکمت و دانائی کی باتیں کرتے رہتے ہیں۔

آج صبح انھوں نے تین حکمت بھرے جملے کہے:

1: ساک، پاک　　　2: بھرا، سونا　　　3: پریت، ہیرا

ا: خونی رشتے کو پنجابی میں "ساک" کہتے ہیں۔

مطلب: ساک، پاک پانی کی طرح ہوتا ہے، جو اختلافات کی گندگی دھو دیتا ہے۔

۲: بھرا، بھائی کو کہتے ہیں۔

اس کی مثال سونے کی طرح ہے، جو بہت قیمتی ہوتا ہے مگر ٹوٹ جانے کے بعد جُڑ بھی جاتا ہے۔

۳: پَریت، یعنی پیار۔

یہ ہیرے کی طرح ہوتا ہے، جس کی قدر و قیمت اور چمک دمک تو بے مثال ہوتی ہے، لیکن ٹوٹ جانے کے بعد جڑتا نہیں!!

## لدھا

چوہدری فخر کا ایک ملازم تھا جس کا نام تھا: لدھا۔

ایک دن چوہدری نے کہا: لدھے! اگر تیرے نام کے پہلے حرف کی جگہ گاف لگا دیں تو کیا بنے گا؟

اس نے کہا: چوہدری صاحب! جو آپ کے نام کا پہلا حرف مٹانے سے بنتا ہے۔

(لدھا کے پہلے حرف کی جگہ گاف لگائیں تو گدھا بن جاتا ہے، اور فخر کا پہلا حرف ہٹا دیں تو "خر" رہ جاتا ہے، جس کا

مطلب بھی گدھا ہے۔
گویا لدھے نے بغیر لڑے بھِڑے، چوہدری صاحب کو ہی گدھا بنا دیا)
دانائی یہ ہوتی ہے کہ دشمن کا وار اسی پر لوٹا دیا جائے۔
بہت دفعہ تو ایسا کرنا ضروری ہو جاتا ہے!!
حالیہ پلوامہ الزام ہی دیکھ لیجیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اگر پاکستان نے دانش مندی سے لوٹا دیا تو کوئی جان ضائع بھی نہیں ہوگی اور ہندو بَنئیے کی ماں مر جائے گی—

## دانا کہتے ہیں

دانا کہتے ہیں:
"جب کوئی صاحبِ فن ملے تو اُس سے کچھ نہ کچھ سیکھ لینا چاہیے، کچھ نہ سیکھنا محرومی ہے۔"
آج ایک موسیقار سے ملاقات ہوئی، تو میں نے تقاضا کیا:
درباری راگ میں کوئی نعت شریف سنا دیں۔
کہنے لگا: ایمن راگ میں سناتا ہوں۔
پھر اس نے امیر خسرو کے راگ ایمن میں یہ نعت شریف سنائی، اور کمال کر دیا۔

جس کی دربارِ محمد میں رسائی ہوگی
اُس کی قسمت پہ فِدا ساری خُدائی ہوگی
سانس لیتا ہوں تو آتی ہے مہک طیبہ کی
یہ ہَوا ، کوچۂ سرکار سے آئی ہوگی
دل تڑپ جائے گا اے زائرِ بطحا تیرا
تیری جس وقت مدینے سے جُدائی ہوگی
تجھ سے پوچھا نہ نکیروں نے ظہوری کچھ بھی
قبر میں نعتِ نبی تُو نے سنائی ہوگی

## کتاب کے سرِوَرق پر

کتاب کے سرِوَرق پر، کتاب اور مصنف کا نام ہی جچتا ہے۔
اہتمام، تعاون، کاوش، تحریک، محرک، بفیضان نظر، حسبِ حکم اور حسبُ الارشاد وغیرہ کے لیے اندرونی صفحہ ہونا چاہیے

۔

بہت دفعہ پہلی نظر میں دھوکا ہو جاتا ہے کہ مصنف کون ہے۔

بعض دفعہ تو ایسا اتفاق بھی ہوا کہ:

(جیسے سیل کی دکانوں پر، بڑا سا 50٪ لکھ کر، نیچے چھوٹا سا up to لکھا ہوتا ہے اور نیا کاہگ دھوکا کھا جاتا ہے) حضرت مصنف کو UPTO کی جگہ پر دیکھا۔

آپ کی کاوش، تحریک، تدبیر، ترغیب سب کچھ بجا؛ لیکن براہِ کرم اس کا اظہار اندرونی صفحے کے لیے رکھ چھوڑیں، ٹائٹل کو معاف کر دیں۔

## نصیحت

ایک شاگرد نے دورہ حدیث شریف مکمل کیا ہے، وہ نصیحت کا طالب تھا، سو اُس کے حسبِ حال یہ نصیحت کی:

آپ مسلمان ہیں، اور سُنی ہیں؛ ہمیشہ کے لیے یہی آپ کا تشخص ہونا چاہیے۔

کبھی بھی نانک شاہی (صلح کلی) نہیں بننا، نہ نانک شاہیوں سے بلاوجہ تعلقات بنانے ہیں۔

جہاں بھی جاؤ، جس کے سامنے بھی جاؤ.....آپ کی پہچان سُنی کے طور پر ہونی چاہیے۔

جب کسی بدمذہب کے سامنے آپ اپنا تشخص چھپا رہے ہوتے ہیں تو وہ آپ کو بے وقوف نہ بھی سمجھے، احساس کمتری کا شکار اور ایک بے یقینا انسان ضرور سمجھے گا۔

بعض لوگ جب تھوڑے بہت مشہور ہوتے ہیں اور چار بندے ان کی عزت کرنے لگ جاتے ہیں تو وہ آلو کی طرح ہو جاتے ہیں۔ جیسے: آلو ہر ہانڈی کا حصہ بن جاتا ہے (چاہے اسے گوبھی میں ڈال لو، گوشت میں ڈال لو، دال میں ڈال لو)، اسی طرح وہ بھی سارے فرقوں میں گھل مل جاتے ہیں۔

آپ نے کبھی بھی ایسا نہیں بننا، ایسا ہونا کم ظرفی، کوتاہ فہمی اور بے عقلی کی علامت ہے۔

اہل سنت، صراط مستقیم پر گامزن عظیم "جماعت" ہے، اور بقیہ سب فرقے ہیں۔

جماعت پر سایۂ رحمت ہوتا ہے، جماعت سے کبھی بھی الگ نہیں ہونا چاہیے۔

اہلِ سنت کی سب سے پیاری علامت، رسول اللہ ﷺ سے بے پناہ اور بے حد محبت ہے۔ آپ کی شخصیت سے اس علامت کا ہمہ وقت اظہار ہونا چاہیے۔ جو آپ کے پاس بیٹھے، وہ حبیب پاک ﷺ کا ذکر سنے بغیر نہ اٹھے۔

## تجوید

قبلہ استاد گرامی رحمہ اللہ نے تجوید پڑھانی شروع کی تو ہمیں فرمایا:

"سارے قرآن میں صرف 29 حروف استعمال ہوئے ہیں، جو الف سے لے کری تک ہیں۔
تم روزانہ ایک حرف کا بھی تلفظ درست کرلو تو 29 دنوں میں تمھارا سارے قرآن کا تلفظ ٹھیک ہوجائے گا۔"
ہم دنیا جہان کی کسی بھی چیز کا نام لے لیں، اس میں وہی حروف آئیں گے جو الف سے لے کری تک ہیں۔
گویا سارے جہان کی چیزیں انھی حروف میں مَحصُور (گھری ہُوئی) ہیں۔
کسی شاعر نے اِسی نسبت کے پیشِ نظر ایک تخیل پیش کیا ہے کہ:
سیدنا ابوبکر صدیق کا نامِ پاک "الف" سے شروع ہوتا ہے، اور سیدنا علی کریم کا نامِ پاک "ی" پر ختم ہوتا ہے۔
جس طرح الف حروف تہجی میں پہلا حرف ہے، اسی طرح ابوبکر صدیق چاروں خلفا میں پہلے ہیں؛ اور جس طرح ی آخری حرف ہے، اسی طرح علی پاک آخری خلیفہ ہیں۔
اب ابوبکر کے الف، اور علی کی ی میں "جہانِ ایمان" گھرا ہوا ہے، مسلمان اس سے نکل سکتا ہی نہیں؛
جیسے کوئی بھی لفظ الف تای سے نہیں نکل سکتا۔
اب قطعہ ملاحظہ کریں ع

اَبوبکر یَک سُو ، علی ایک جانِب
کہ مَحصور ہے جن میں ساری خُدائی
یہ تَشبِیہ ہے واقعی تو جگہ بھی -------
" الف " اور " یے " نے یہ ترتیب پائی
وہ اَول خلیفہ کے " اول " میں آیا
یہ آخِر خلیفہ کے " آخِر" میں آئی

## اٹھارہ سال ادب سیکھا

جنھیں ماں باپ نے بچپن ہی سے یہ تربیت دی ہوتی ہے کہ:
"بیٹا! قرآنِ پاک اور اسلامی کتابوں کی طرف جان بوجھ کر پُشت نہیں کرتے، اِن کی طرف پاؤں نہیں پھیلاتے، اِنھیں زمین پر پاؤں کے برابر نہیں رکھتے۔
اِنھیں پاک صاف ہاتھوں سے چُھوتے ہیں، چُوم کر آنکھوں سے لگاتے ہیں، اور ادب والی جگہ پر رکھ کے پڑھتے ہیں۔"
وہ جب دیکھتے ہیں کہ لوگ فیشن کے طور پر کتابوں کو پُشت کرکے ویڈیوز اور تصویریں بنا رہے ہیں تو ان کی کیا کیفیت ہوتی ہوگی..... یہ وہی سمجھ سکتے ہیں۔
پُشت کرنے والے بے ادب نہ سہی، لیکن یہ ادب کی بھی تو کوئی قسم نہیں کہ جان بوجھ کر دینی کتابوں کی طرف پُشت کی جائے

---

یہ طریقہ ختم ہونا چاہیے، اسلامی کتابوں کا ہر حال میں ادب واحترام ہونا چاہیے۔ ع

از خُدا خَواہیم توفیقِ ادب

دیارِ مصر کے مفتی، ثقہ محدث، امام حافظ عبدالرحمان بن قاسم (متوفی 191ھ) کہتے تھے:

میں نے بیس سال امام مالک رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی خدمت میں گزارے۔

اٹھارہ سال ادب سیکھا، اور دو سال علم؛ کاش کے! میرا سارا وقت ادب سیکھتے گزرتا۔

(تنبیہ المغترین، ص33، مرکز اہل سنت برکات رضا ہند، 1427ھ)

## لکڑی

مولانا محمد بشیر رضوی رحمہ اللہ کہتے تھے:

میں نے ایک جوان کو دیکھا جو قرآنِ پاک رکھنے والی رِحل چُوم رہا تھا۔

میں نے اسے کہا:

تو دیوانہ تو نہیں..... لکڑی چومے جا رہا ہے۔

کہنے لگا:

مولانا، آپ نہیں جانتے یہ سواری کس کی بنی ہے!!

اگر یہ صرف لکڑی ہوتی تو میں کبھی نہ چومتا، مگر یہ قرآن کی سواری بنی ہے، اس لیے چُوم رہا ہوں۔

میں نے کہا:

واہ سُنیا، میں تیرے قربان! جس رِحل پہ قرآن سوار ہوا تُو اسے بھی چومتا ہے، اور جس صدیق اکبر کے کندھوں پر نبی پاک سوار ہوئے تو اُن کا نام بھی چومتا ہے۔

## غور طلب

امریکی تاریخ دان، مائیکل ایچ ہارٹ (Michael H Hart) نے لکھا تھا کہ:

حضرت موسیٰ علیہ السلام کی قوم بنی اسرائیل، یعقوب علیہ السلام کے بارہ بیٹوں کی اولاد تھی، جو بارہ قبیلوں پر مشتمل تھی۔

اُنھوں نے جب موسی علیہ السلام سے پانی مانگا تو آپ نے عصا زمین پر مار کر بارہ چشمے نکالے۔

جب فرعون نے اُن کا پیچھا کیا، تو تب بھی آپ نے اپنے عصا سے، پانی پر بارہ سڑکیں بنائیں۔

غور طلب یہ ہے کہ:

حضرت موسیٰ نے بارہ سڑکیں بنانے کے بجائے ایک ہی جی ٹی روڈ کیوں نہیں بنادیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اور بارہ چشمے نکالنے کے بجائے ایک ہی چشمے پر اکتفا کیوں نہیں کیا۔۔۔۔۔۔۔۔!

تاریخ بتاتی ہے کہ بنی اسرائیل اگرچہ بارہ سگے بھائیوں کی اولاد تھے، لیکن متفرق مزاج تھے آپس میں اختلاف رکھتے تھے۔

اگر آپ ایک چشمہ نکالتے تو صرف ایک ہی قبیلہ پانی پیتا، بقیہ پیاسا رہنا منظور کر لیتے لیکن جھوٹا نہ پیتے۔

اگر ایک جی ٹی روڈ بنتا تو سارے اکٹھے نہ گزرتے۔

حضرت موسیٰ علیہ السلام نے عصا سے جادوگروں کو زیر کر لیا، دریا میں سڑکیں بنادیں، چشمے نکال دیے..... لیکن بارہ قبیلے یکجا نہ ہوئے۔

اس کے برعکس:

محمد عربی ﷺ جس قوم کی طرف آئے وہ سگے بھائیوں کی اولاد نہیں تھی، بلکہ الگ الگ قبیلوں میں بٹی ہوئی تھی۔

ہر قبیلے کا مزاج اور طور اطوار اپنے تھے۔

ان کا آپس میں اس قدر اختلاف تھا کہ چھوٹی چھوٹی باتوں پر ایک دوسرے کے جانی دشمن بن جایا کرتے تھے۔

اس کے باوجود..... آپ ﷺ نے بغیر عصا کے انھیں ایک کر دیا۔ گورے کالے کا فرق مٹا دیا..... آقا غلام کو اکھٹا کر دیا..... ادنا اعلا کو جمع کر دیا۔ قوم موسیٰ تو ایک چشمے پر جمع نہ ہو سکی، لیکن آپ ﷺ نے پوری امت کو ایک زم زم کے چشمے پر جمع کر دیا۔

گورے کالے، بڑے چھوٹے، امیر غریب سب کو ایک دوسرے کا بھائی بنا دیا۔

## رومی کشمیرم

رومی کشمیر میاں محمد بخش رحمۃ اللہ علیہ نے کتنی نصیحت امیز بات کی ہے کہ۔

دنیا تے جو کَم نہ آوے اَوکھے سَوکھے ویلے
اُس بے فیضے سَنگی کَولوں بہتر یار اکیلے

(جو دوست دنیا کے اندر مشکل وقت میں کام نہ آئے، اس بے فیض سے انسان اکیلا ہی بہتر ہے)

1: کھوٹے کھرے دوست کی پہچان مشکل وقت اور غریبی کی حالت میں ہوتی ہے، عام حالات میں تو سارے ہی مخلص نظر آتے ہیں۔

2: دوستی کا تقاضا یہ ہے کہ دوست جیسا بھی ہو اس کا ساتھ نہ چھوڑا جائے، اس کے عیب نہیں.... صرف خوبیاں دیکھی جائیں۔

امام غزالی کہتے تھے:

باید کہ یک نیکویی دہ تقصیر بپوشاند ۔

چاہیے تو یہ کہ دوست کی ایک اچھائی کے بدلے، اُس کی دس برائیاں چھپائی جائیں۔

(کیمیائے سعادت، رکن دوم معاملات، پیدا کردن حقوق صحبت و دوستی، حق سیم، ص318، مطبوعہ تہران)

## کرونا ٹیسٹ

چار دن پہلے بینک میں جانا ہوا تو وہاں کرونا ٹیسٹ والے ڈاکٹر بیٹھے ہوئے تھے، جو بینک کے عملے اور کسٹمر کا ٹیسٹ لے رہے تھے۔

انھوں نے میرے سمیت اٹھارہ لوگوں کا ٹیسٹ لیا۔

ٹیسٹ کی وجہ سے بعض احباب بہت زیادہ پریشان ہوئے، ایک دوست تو بار بار فون کر کے کہتے تھے:

دعا کریں میرا ٹیسٹ کلیئر آئے، مجھے تو رات کو نیند بھی نہیں آرہی۔

میں نے انھیں سمجھایا کہ کوئی بھی مشکل امرِ الٰہی کے بغیر نہیں آسکتی، آپ خاطر جمع رکھیں۔

میں بھی آپ کے ساتھ ہی ہوں اور الحمدللہ بالکل پریشان نہیں۔

میرا ایمان اپنے نبی ﷺ کے اس فرمان پر ہے کہ:

جو کچھ تیرے ساتھ ہونے والا ہے، اُسے لکھ کر قلم خشک ہو چکا ہے۔

(صحیح البخاری، ر6596)

اگر رب تعالی کی طرف سے آزمائش لکھی جا چکی ہے تو اسے ٹال کوئی نہیں سکتا، اور اگر نہیں لکھی گئی تو آزمائش میں ڈال کوئی نہیں سکتا۔ آج ان کی کال آئی ہے، بتا رہے تھے: الحمدللہ ہم سب کا رزلٹ کلیئر آیا ہے۔

میں نے انھیں کہا: دن آپ کے بھی گزر گئے ہیں، اور میرے بھی؛ فرق اتنا ہے کہ:

میں نے پر امید اور خوش گزارے ہیں، لیکن آپ نے مایوسی اور خواہ مخواہ کی ٹینشین میں گزارے ہیں۔

"نتیجہ دونوں کا ایک ہی نکلا ہے۔"

کیا ہی اچھا ہوتا آپ بھی میری طرح پر امید رہتے ہوئے، وقت گزارتے! اب آئندہ کے لیے ذہن نشین کر لیں کہ: آزمائش کا سوچ سوچ کر خود کو ہلکان نہیں کرنا، اپنے کرم والے رب سے اچھے کی امید رکھنی ہے۔

## قبر روزانہ کہتی ہے

بہت ساری آوازیں کانوں سے نہیں، دل سے سُننے والی ہوتی ہیں۔

بلکہ دل سے بھی نہیں..... دل کی گہرائی سے سننے والی ہوتی ہیں۔

اُنھی آوازوں میں سے ایک آواز، قبر کی بھی ہے۔
رسول مُحتَشِم ﷺ فرماتے ہیں: قبر روزانہ کہتی ہے:

اَنَا بَیْتُ الْغُرْبَةِ، وَاَنَا بَیْتُ الْوَحْدَةِ، وَاَنَا بَیْتُ التُّرَابِ، وَاَنَا بَیْتُ الدُّودِ۔

میں پردیس کا گھر ہوں، میں تنہائی کا گھر ہوں، میں مٹی کا گھر ہوں، میں کیڑے مکوڑوں کا گھر ہوں۔ (ترمذی شریف، ر 2460)

آپ بھلے اور کوئی آواز سنیں، نہ سنیں؛ یہ آواز روزانہ کم از کم ایک بار ضرور سن لیا کریں۔

## مذہبی لوگ

ڈیل کارنیگی کہتا ہے:

"ماہر نفسیات اس امر سے بخوبی واقف ہیں کہ عبادات اور پختہ مذہبی اعتقاد:
غموں، فکروں، خوف وہراس اور اعصابی دباؤ کو زائل کرنے میں معاون ثابت ہوتا ہے۔
اور یہ ہماری نصف سے زائد بیماریوں اور تکالیف کا علاج بھی ہے.....وہ جانتے ہیں، کیوں کہ ان ماہرین میں سے ایک ماہرِ نفسیات ڈاکٹر اے اے لبرل نے یہ کہا تھا کہ:
وہ فرد جو حقیقی طور پر مذہبی واقع ہوا ہو، وہ کبھی بھی اعصابی، ذہنی اور نفسیاتی امراض کا شکار نہیں ہوتا۔"

(پریشان ہونا چھوڑیں، جینا شروع کریں، باب 19، ص 300، بابا پبلشرز اردو بازار لاہور)

کارنیگی کی یہ بات بالکل درست ہے۔
واقعی، حقیقی طور پر جو مذہبی لوگ ہیں وہ آج بھی خوف وہراس سے دور ہیں۔
کرونا وائرس نے پوری دنیا کا خون خشک کیا ہوا ہے، لیکن اللہ پر کامل یقین رکھنے والے مطمئن ہیں، وہ کسی قسم کے نفسیاتی خوف میں مبتلا نہیں۔
وہ جانتے ہیں کہ ہمارے رب کے چاہنے کے بغیر کچھ نہیں ہوگا۔
1: ان حالات میں، علمائے کرام عوام کی نفسیاتی بحالی کا فریضہ انجام دیں، انھیں خوف سے نکال کر امید کی طرف لائیں۔
2: توکل اور تقدیر پر اپنا ایمان بھی مضبوط کریں، اور لوگوں کا بھی۔
3: وحشت پھیلانے اور مایوس کرنے والی باتیں نہ کریں، یہ کام میڈیا بہ خوبی انجام دے رہا ہے۔
آپ رحمت عالم ﷺ کی تعلیمات کے مطابق لوگوں میں خوشیاں بانٹیں۔
نبی کریم ﷺ تو یہاں تک فرماتے تھے: جب بیمار کے پاس جاؤ تو اُسے زندگی کی اُمید دلاؤ، تمھارے ایسا کرنے سے تقدیر تو نہیں بدلے گی لیکن.....مریض کا دل خوش ہو جائے گا۔ (اوکما قال رسول اللہ ﷺ) جب بیمار کو بھی زندگی کی ہی امید دلانی چاہیے، تو جو تندرست ہیں ان پر بیماری کا خوف مسلط کر کے، انھیں مریض بنا دینا کب دانائی ہے۔

4: لوگوں کو پورے اخلاص کے ساتھ وعظ و نصیحت کریں، تاکہ وہ گناہوں اور بداعمالیوں سے سچی توبہ کرلیں۔
اور مشکل کی اِس گھڑی میں، اپنے رب سے فریاد کریں اور وہ مہربان جَلَّ جَلَالُہٗ رحم فرمادے۔

## غم

سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنھا کہتی ہیں، اللہ کے رسول صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم فرمایا کرتے تھے:
جب بندے کے گناہ زیادہ ہوجائیں اور کوئی ایسا عمل نہ ہو جو اُن کا کفارہ بن سکے، تو اللہ کریم بندے کو غم میں مبتلا کردیتا ہے، تاکہ اُس کے گناہوں کا کَفَّارہ ہوجائے۔ (الترغیب والترہیب للمنذری، کتاب الجنائز وما یتقدمھا)
رحمتِ عالم صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا امتی ہونے کے ناطے، اللہ کریم جَلَّ جَلَالُہٗ ہم پر کتنا مہربان ہے کہ ہماری پریشانیوں کو بھی ہمارے گناہوں کی معافی کا ذریعہ بنادیتا ہے۔
رب تعالیٰ ہمیں دنیا ہی میں گناہوں سے پاک صاف کردے!

## حکومت کی ذمے داری

رات کو گلی میں دو پِلّے سردی سے ٹھِٹھر رہے تھے، بیٹا محمد امیر معاویہ پہلے تو انھیں دودھ ڈال کر، گتّے سے ڈھانپ آیا؛ پھر یہ سوچ کر کہ:
انھیں سردی لگے گی، ڈبے میں رکھ کر گھر لے آیا۔
اور مجھ سے کہنے لگا: بابا جی! قیامت والے دن، اِن کے بارے میں ہم سے پوچھا جائے گا، یا وقت کے بادشاہ اور وزیروں سے؟ کیا یہ حکومت کی ذمے داری نہیں کہ بے سہارا جانوروں کے رہنے کا انتظام کرے!!
اس کا سوال بہت اہم تھا، یقیناً حکومت سے پوچھا جائے گا۔
ہر طرح کے جانوروں اور پرندوں، چرندوں کا خیال رکھنا حکومت کی ذمے داری ہے۔
لیکن غافل حکومتوں میں ہماری بھی ذمے داری بنتی ہے کہ جب بھی کوئی لاوارث مخلوق سردی میں ٹھٹھرتی دیکھیں تو اس کی مدد کریں، شاید اللہ کریم اسی ایک نیکی کے طفیل ہمارے بہت سارے گناہ معاف فرمادے۔
ہمارے علاقے میں ایک باکرامت ولی اللہ گزرے ہیں، وہ سردی کے موسم میں کُتوں کا بہت خیال رکھتے؛ انھیں حلوہ وغیرہ کھلاتے، تاکہ اللہ پاک کی یہ مخلوق سردی سے بچی رہے۔

## مرثیہ

عرب کے مشہور شاعر حضرت متمم بن نویرہ کے بھائی ایک لڑائی میں قتل ہوگئے۔

آپ اپنے بھائی سے بہت زیادہ محبت کرتے تھے، آپ کی یہ حالت ہوگئی کہ گھربار چھوڑ کر قبائلِ عرب میں پھرنا شروع کر دیا؛ جہاں جاتے عورتیں مرد آپ کے گرد جمع ہو جاتے اور آپ درد انگیز لہجے میں اپنے بھائی کا مرثیہ پڑھتے، جو ایسا پُر درد ہوتا کہ ہر طرف سے گریہ وزاری کی آوازیں بلند ہونا شروع ہو جاتیں۔

ایک دن مسجد نبوی شریف میں آئے اور مرثیے کے اشعار پڑھنا شروع کیے۔

حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ اگرچہ نہایت مضبوط دل کے آدمی تھے، لیکن آپ بھی ضبط نہ کر سکے اور رونا شروع کر دیا۔

جب مرثیہ ختم ہوا تو متمم سے فرمانے لگے:

تیرے غم کی حالت کہاں تک پہنچ گئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

متمم نے عرض کی:

امیر المومنین بچپن میں ایک بیماری کی وجہ سے میری بائیں آنکھ کی رطوبت چلی گئی تھی، میں جب کبھی روتا تو اُس آنکھ سے آنسو نہیں نکلتے تھے؛ بھائی کے مرنے کے بعد اُس آنکھ سے ایسے آنسو جاری ہوئے ہیں کہ اب تک نہیں تھمے۔

سیدنا عمر پاک نے فرمایا:

میرے بھائی زید کا بھی ایک مرثیہ لکھ دو!

متمم نے ہامی بھر لی۔

اگلے روز جب متمم نے حضرت عمر رضی اللہ عنہ کو جناب زید کا مرثیہ سنایا تو آپ نے کہا:

اس میں وہ درد نہیں جو کل والے مرثیے میں تھا۔

متمم کہنے لگے: امیر المومنین! زید آپ کے بھائی تھے میرے نہیں۔

(یعنی جس درد سے میں نے اپنے بھائی کا مرثیہ لکھا، آپ کے بھائی کا کیسے لکھ سکتا تھا۔

بڑی کوشش کے باوجود بھی وہ درد پیدا نہیں ہو سکتا تھا، جو میرے دل میں اپنے بھائی کے لیے ہے)

شہیدِ محبت رحمہ اللہ کی یاد میں جو لوگ ابھی تک آنسو بہا رہے ہیں، ہم اُن کی کیفیت کو نہیں سمجھ سکتے۔

ہم بس دعا کر سکتے ہیں کہ رب تعالی انھیں صبر جمیل دے!

## دعوتِ ولیمہ

ابھی ایک دعوتِ ولیمہ پر ہوں، سارا ہال کھانے کا منتظر ہے، عنقریب چمچوں کا کھڑاک ایک ماحول پیدا کر دے گا۔

سارے اپنے اپنے مزاج کے مطابق کھائیں گے، لیکن میں کیسے کھاؤں گا؟ یہ بتا دیتا ہوں۔

صبر و تحمل اور سمجھ داری سے اپنی پلیٹ میں حسبِ ضرورت سالن ڈالوں گا۔

کوشش کروں گا کہ سینے، گردن یا دستی کی بوٹیاں میسر آئیں۔۔۔۔۔۔ایک تو سنت ادا ہو جائے گی، دوسرا جانور کے اگلے حصے (سینے سے لے کر گردن تک) کا گوشت کھٹا نہیں ہوتا۔

پھر ہڈی والی بوٹی کو ترجیح دوں گا، کیوں کہ ہڈی والی بوٹیاں دانتوں میں کم پھنستی ہیں اور لذیذ زیادہ ہوتی ہیں۔

اور انھیں بھی دانتوں سے کھاؤں گا، ہاتھوں سے نہیں؛ کیوں کہ:

ہڈی والا گوشت کھانے کا صحیح مزہ تب آتا ہے جب ہاتھوں کے بجائے، دانتوں سے کھایا جائے۔

سیدنا صَفْوَان رضی اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں:

مجھے رسول اللہ ﷺ نے دیکھا کہ میں ہاتھ کے ساتھ گوشت کو ہڈی سے اتار رہا ہوں، تو فرمانے لگے:

اے صفوان! میں نے عرض کی لَبَّیک (حضور میں حاضر ہوں)۔

فرمایا: گوشت کو منھ کے قریب لے جاؤ (اور ہاتھ کے بجائے، دانتوں کے ساتھ ہڈی سے اتار کر کھاؤ) تمھیں زیادہ مزہ آئے گا، اور ہضم بھی جلدی ہو جائے گا۔

(انظر: الترغیب والترھیب للمنذری، کتاب الطعام، باب الترغیب فی اکل الخل والزیت و نھس اللحم۔۔۔۔۔۔الخ)

ویسے اِدھر دیگر کھانے بھی ہوں گے، لیکن اب چوں کہ کھانے لگ رہے ہیں اس لیے آج اتنا ہی کافی ہے۔۔۔۔۔۔بریانی، سلاد، رائتے اور حلوے وغیرہ کا طریقہ پھر سہی

## وجہ کیا ہے؟

باپ بیٹا بستر پر لیٹے ہیں تو بیٹا کہتا ہے:

بابا آپ کو ایک بات بتاؤں؟

میں نے کہا: بتاؤ!

کہتا ہے: بابا حضور غوث پاک کا اتنا بڑا مقام ہے، اتنا بڑا مقام ہے کہ جس تک کوئی ولی نہیں پہنچ سکتا۔

لیکن حضور غوث پاک بھی اگر ایک ہزار سال تک سجدے میں رہیں تو کسی صحابی کے مقام تک نہیں پہنچ سکتے۔

پتا ہے اس کی وجہ کیا ہے؟

اس کی وجہ یہ ہے کہ صحابی نے رسول اللہ ﷺ کو دیکھا ہوتا ہے، اور جس نے ہمارے پیارے نبی ﷺ کو ایک بار بھی ایمان کی نظر سے دیکھ لیا ہو قیامت تک کوئی بھی ولی اس کے مقام تک نہیں پہنچ سکتا۔

## دودھ

قبلہ دادا جی رحمۃ اللہ تعالی علیہ ہمیں بچپن میں گھی کھانے اور دودھ پینے کی بڑی تاکید کرتے تھے، کہتے تھے:

دودھ پیا کرو، دودھ پینے سے حُسن بڑھتا ہے اور دیسی گھی کھایا کرو، اس سے دماغ کو قوت ملتی ہے۔
نیز ہمارے سر کے بال بھی نہیں بڑھنے دیتے تھے، جیسے ہی کنگھی کرنے کے قابل ہوتے، کٹوا دیتے تھے؛ کہتے تھے:
بچوں کے سر پر بڑے بال نِرا بوجھ ہوتے ہیں۔
بچوں کے بال چھوٹے چھوٹے ہونے چاہییں اس سے ان کی گردنیں موٹی اور مضبوط ہوتی ہیں۔
دودھ گھی والی بات تو ہم برداشت کر لیتے، لیکن بال کٹوانا کسی قیامت سے کم نہیں ہوتا تھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
آج امام بخاری رحمہ اللہ کی الادب المفرد پڑھتے ہوئے یہ روایت نظر سے گزری تو احساس ہوا کہ دادا جی ٹھیک ہی کرتے تھے:
امام بخاری نقل کرتے ہیں کہ:
بچوں کو (اچھے اچھے) شعر یاد کروائیں تاکہ اِن کے عزت و وقار میں اضافہ ہو۔
اِنھیں گوشت کھلائیں تاکہ ان کے دل مضبوط ہوں۔
اِن کے بال کٹواتے رہیں تاکہ ان کی گردنیں مضبوط ہوں۔
اور
اِنھیں (عالی مرتبت اور) بڑے لوگوں میں بٹھایا کریں تاکہ یہ ان سے سوال جواب کریں (تو اِن کی خود اعتمادی اور تجربے میں اضافہ ہو)۔
(انظر: الادب المفرد، باب من قال ان من البیان سحرا، ص230، ر877، ط دار السلام مصر)

## دانا کا قول

الحمدللہ جب سے کسی دانا کا یہ قول پڑھا ہے، عمل کرنے کی کوشش کرتا ہوں:
"بزرگوں کے پاس بیٹھا کرو، عقل مندوں کی باتیں سنا کرو، اور علما سے مسئلے پوچھا کرو۔"
مجھے جب کوئی عمر رسیدہ بندہ ملتا ہے تو اس سے کچھ نہ کچھ سیکھنے کی کوشش کرتا ہوں، اور حقیقت میں وہ، وہ کچھ سکھاتا ہے جو بیسیوں کتابیں، اور بیسیوں سال بھی نہیں سکھا سکتے۔

آج ایک چوہتر سالہ بزرگ ملے جو جوانی میں ڈرائیوری اور کنڈیکٹری کرتے رہے تھے، تو ان سے عرض کی:
اپنی زندگی کا کوئی ناقابل فراموش واقعہ سنا دیجیے، تو انھوں نے یہ تین واقعات سنائے۔
میں راولپنڈی سے لاہور جانے کے لیے نکلنے لگا تو اڈے پر ایک شخص کو اپنے بیوی بچوں کے ساتھ بیٹھے دیکھا۔
اسے تقریباً چار گھنٹے ہو گئے تھے، کوئی ڈرائیور اسے گاڑی پر نہیں بٹھا رہا تھا کیوں کہ اس کے پاس لاہور جانے کا کرایہ نہیں تھا
۔

میں نے اسے گاڑی پر بٹھایا، راستے سے اچھا کھانا کھلایا، اور لاہور اترتے وقت کچھ پیسے بھی دیے تاکہ اپنے گھر آسانی سے چلا جائے۔ وہ دعائیں دیتا چلا گیا۔

ہم اپنی باری پر دوسرا پھیرا لے کر واپس پنڈی آرہے تھے کہ سوہاوے کے پاس ہماری گاڑی کا ٹائر کھائی میں گر گیا، اس سے پہلے کہ ہماری گاڑی کھائی میں گر کر تباہ ہو جاتی، اور تیس جانیں چلی جاتیں، اچانک پیچھے سے ایک چیز کھائی میں آگری اور ہماری گاڑی بال بال بچ گئی۔

گویا میری نیکی کا صلہ اللہ پاک نے مجھے دے دیا۔

ایک دفعہ رواۃ کے قریب ایک بھکاری میری گاڑی میں چڑھنے لگا تھا تو میں نے اسے پاؤں سے ٹھوکر مار کے نیچے گرا دیا۔

میں ابھی جہلم نہیں پہنچا تھا کہ میری وہی ٹانگ لُک والے ڈرم سے ٹکرا گئی اور آج تک اس سے درد نہیں گیا۔

یہ میرے کیے کی سزا تھی جو مجھے زندگی بھر کے لیے سمجھا گئی کہ کسی کے ساتھ ظلم نہیں کرنا۔

میں گاڑی لے کر گھر سے نکلا تو راستے میں یاد آیا کہ آج اپنی ماں کو نہیں مل کے آیا، میں نے گاڑی موڑی اور آکر اپنی ماں کے پاؤں چھوئے، اور ان سے دعا لے کر چلا گیا۔ مریدکے کے پاس میں تیز رفتاری سے جا رہا تھا کہ اچانک ایک عورت آگے آگئی، جب بڑی مشکل سے بریک مار کر دیکھا تو اس عورت کا صرف دوپٹا ہی سر سے اترا تھا، اسے خراش تک نہ آئی تھی۔ میں وہیں سجدے میں گر گیا اور اللہ کا شکر ادا کیا کہ اُس عورت کی جان بچ گئی۔

یہ میری ماں کی دعا تھی جس نے مجھے بچا لیا اور میری زندگی کا یہ تجربہ ہے کہ:

"بندہ ماں باپ کی خدمت کر کے دنیا، آخرت کی جو چیز چاہے حاصل کر سکتا ہے، چاہے بظاہر وہ ناممکن کیوں نہ ہو۔"

## علما کے پاس بیٹھا کر

حضرت لقمان حکیم نے اپنے بیٹے کو نصیحت فرمائی تھی:

اے میرے بیٹے! علما کے پاس بیٹھا کر اور اپنے گھٹنے ان سے ملا کے رکھ، (یعنی ان سے دوری اختیار نہ کر) بے شک اللہ تعالیٰ نورِ حکمت سے دلوں کو ایسے زندہ کرتا ہے جیسے مردہ زمین کو آسمانی بارش سے زندگی بخشتا ہے۔

(موطا امام مالک، کتاب العلم، باب ماجاء فی طلب العلم)

اللہ کریم ہمیں بھی اس نصیحت پر عمل کرنے کی توفیق بخشے!

## حکمران

سیدنا حسن بصری کہتے ہیں، رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

جب اللہ تعالیٰ کسی قوم کے ساتھ بھلائی کا ارادہ فرماتا ہے تو دانا لوگوں کو اُن کا حکمران بنا دیتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔اور جس قوم کے ساتھ خیر کا ارادہ نہیں فرماتا، ان کا حاکم بے وقوفوں کو بنا دیتا ہے۔

(ملتقطاً: الترغیب والترھیب للمنذری، کتاب البر والصلۃ، باب الترھیب من البخل والشح، ر3850)

ہم اللہ پاک سے معافی کا سوال کرتے ہیں، مالک جَلَّ جَلَالُہٗ ہماری کوتاہیاں معاف فرمائے!

جو کچھ ہیں وہ سب اپنے ہی ہاتوں کے ہیں کرتوت
شکوہ ہے زمانے کا ، نہ قسمت کا گِلا ہے
دیکھے ہیں یہ دن اپنی ہی غفلت کی بدولت
سچ ہے کہ " بُرے کام کا انجام بُرا ہے "

## بے وقوف بننا پڑتا ہے

ابو تمام حبیب بن اَوس نے کہا تھا۔

لَیسَ الغَبِیُّ بِسَیِّدٍ فِی قَومِہ
لکِنَّ سَیِّد قَومِہِ المُتَغابِی

بے وقوف بندہ اپنی قوم میں سردار نہیں ہوتا، لیکن قوم کے سردار کو (بعض اوقات جان بوجھ کر) بے وقوف بننا پڑتا ہے۔

مطلب: سردار چشم پوشی کرنے والا ہوتا ہے، دیکھتے ہوئے بھی انجان بنا رہتا ہے، سننے کے باوجود بہرہ۔۔۔۔۔۔ اور بولنے کے باوجود گونگا بنا رہتا ہے۔

یہ خوبی ہر کامیاب سردار، افسر، ذمے دار، سربراہ، اور نگران میں ہونی چاہیے کہ ہر چھوٹی بڑی بات پر ماتحتوں کا تعاقب نہ کرتا رہے۔۔۔۔۔۔۔ موقع محل دیکھ کر چلے۔

## روزہ رکھ کر

روزہ رکھ کر سوئے رہنا، سُستی میں مبتلا رہنا اور کام کاج سے جی چراتے پھرنا کوئی قابلِ تعریف عمل نہیں۔

روزہ رکھ کر معمول کے مطابق اپنا کام کاج کریں۔۔۔۔۔۔۔۔ روزہ اللہ کے لیے کی جانے والی ایک مشقت ہے، اِس مشقت کو خوش دلی سے برداشت کریں؛ روزے میں جتنی بھوک پیاس زیادہ لگے گی اتنا ہی اجر زیادہ ملے گا۔

سحری کے وقت کھانا پینا حسبِ ضرورت رکھیں، بہت زیادہ پیٹ بھر لینا دانش مندی نہیں۔

بعض لوگ سحری کے وقت کثرت سے پانی پیتے رہتے ہیں کہ دن کو پیاس نہ لگے، ایسے نہیں کرنا چاہیے۔۔۔۔۔۔ انسان جتنا بھی پانی پی لے پیشاب کے ذریعے نکل جاتا ہے، صرف اونٹ پیے ہوئے پانی کو محفوظ رکھنے کی صلاحیت رکھتا ہے،

انسان نہیں؛آپ حسب ضرورت ہی پانی استعمال کیا کریں۔

سحری کے وقت زیادہ نمک مرچ والی چیزیں استعمال نہ کی جائیں تو ویسے بھی دن کو پیاس کم لگتی ہے۔
حدیثِ پاک میں کھجور کو بندۂ مومن کی بہترین سحری کہا گیا ہے، سحری میں خشک روٹی کے ساتھ کھجور لے لی جائے تو غذائیت سے بھرپور سحری ہو جاتی ہے جو بھوک پیاس اور کمزوری میں معاون ثابت ہوتی ہے۔

## اے محبت!

سیدنا عبداللہ بن عمر کو اللہ و رسول سے بے انتہا محبت تھی۔
آپ کی عادت کریمہ تھی کہ اپنے جس غلام کو مسجد میں کثرت سے آتا جاتا دیکھتے، اسے آزاد کر دیا کرتے۔
آپ سے کسی نے کہا:
اے ابو عبدالرحمان! واللہ یہ غلام (آزاد ہونے کے لیے) آپ کو دھوکا دیتے ہیں۔
آپ نے فرمایا:
"جو ہمیں اللہ کے نام پہ دھوکا دے گا، ہم اس کے دھوکے میں آجائیں گے۔"
(اسد الغابة فی معرفة الصحابة، باب العین، ج 3، ص 44، ر 3082، دار المعرفة بیروت)
یہ بات ہر کوئی نہیں سمجھ سکتا، اہل محبت ہی سمجھ سکتے ہیں۔ خدا کرے یہ شدت محبت ہمیں بھی نصیب ہو جائے !_____

# (9)نواں باب: شاعر، شعر اور تشریح

اس باب میں اشعار، ان کی تشریح اور شعرا سے متعلق تحریریں ہیں۔

## جون ایلیا

شیخ امام بخش ناسخ کے پاس آکر جب کوئی شعر سننے کی خواہش ظاہر کرتا تو شیخ صاحب اُسے چند بے معنی اشعار سنا دیتے، اگر وہ سُن کر خاموش رہتا تو سمجھ جاتے کہ واقعی شعر اس کی سمجھ میں نہیں آیا، پھر اُسے صحیح اور اچھے شعر سناتے۔

اور اگر کہیں احتراماً بھی غلطی سے وہ داد دے بیٹھا، یعنی بے معنیٰ اور مہمل شعر پر واہ واہ کر دیتا تو خود خاموش ہو جایا کرتے اور سمجھ لیتے کہ یہ شعر سمجھنے کا اہل نہیں.....

مہمل شعروں میں ناسخ کا یہ شعر بہت مشہور ہے:

مَورچہ مخمل میں دیکھا ، آدمی بادام میں
ٹُوٹی دریا کی کلائی ، زُلف اُلجھی بام میں

میں نے آج جون ایلیا کا کلام پڑھا تو خیال آیا: اگر یہ شخص ناسخ کے زمانے میں ہوتا تو ناسخ مہمل اشعار کہنے پہ کبھی وقت ضائع نہ کرتا وہ لوگوں کو اسی کے اشعار سنا دیا کرتا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

## شاعر علامہ فضل حق خیر آبادی

حضرت علامہ فضلِ حق خیر آبادی رحمہ اللہ کُہنَہ مَشق شاعر بھی تھے۔

مرزا غالب نے فارسی زبان کے بہت بڑے شاعر عُرفی شیرازی کے جواب میں کچھ اشعار لکھ کر آپ رحمہ اللہ کی خدمت میں پیش کرنے چاہے تو کہا: ان اشعار کو ایسے شخص کے حضور پیش کر رہا ہوں:

"کہ چوں منے صد وعرفی صدہزار را بہ سخن پرورش
تواند کرد وپای ہر یک بہ ہر یک تواند نمود "

جو میرے جیسے سیکڑوں اور عرفی جیسے لاکھوں کی پرورشِ سخن کر سکتا ہے، اور ہر ایک کو اس کا مقام و مرتبہ بتا سکتا ہے

۔

(کلیات مکتوبات غالب فارسی، خط 2، بنامِ نامی مولوی حافظ محمد فضل حق صاحب، ص 474، نیشنل بک فاؤن۔ڈیشن اسلام آباد)

آج فجر کے بعد امام فضل حق خیر آبادی رحمہ اللہ کا دیوان پڑھنا شروع کیا تو ان دو اشعار پر رک گیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، سبحان اللہ! کیا ہی ذوق افزا ہیں:

حَبَاهُ اللهُ اَوْصَافاً اَبَتْ اَنْ
يَّكُوْنَ لَهَا اشْتِرَاكٌ وَّ اِنْقِسَامُ
فُدِيْتُ مُحَمَّداً خَيْرَ الْبَرَايَا
عَلَيْهِ صَلَاةُ رَبِّي وَالسَّلَامُ

اللہ پاک نے آپ کو ایسی خوبیوں سے نوازا، جن میں نہ کوئی شریک ہو سکتا ہے اور نہ وہ کسی میں تقسیم ہو سکتی ہیں ۔ساری مخلوق سے بہتر محمد پاک ﷺ پر میری جان قربان! آپ پر میرا رب درود و سلام بھیجے۔

(دیوان فضل الحق الخیر آبادی، ھجاء الرامبوری والد ھلوی، ش 78، 114، ص 435، 438، ط دار الاسلام لاہور، س 1437ھ)

(یاد رہے کہ اشعار کو ترجمے سے نہیں سمجھا جا سکتا، انھیں الفاظ و معانی سے سمجھنا چاہیے)

## باغ میں شکرِ وصل تھا...

امام اہل سنت سیدی احمد رضا نور اللہ مرقدہ کا یہ شعر جب بھی پڑھتا ہوں، بہت لطف آتا ہے:

باغ میں شُکرِ وَصل تھا ، ہِجر میں ہائے ہائے گُل
کام ہے اُن کے ذِکر سے خیر وہ یوں ہوا کہ یوں !

میں بلبل ہوں، مدینہ میرا باغ ہے؛ اس میں میرا پھول ہے۔

جب اپنے پھول کے پاس جاتا ہوں تو خوشی سے اللہ کا شکر بجالاتا ہوں، لیکن جب قسمت مجھے اس سے دور کر دیتی ہے تو فراق میں روتا ہوں، آہیں بھرتا ہوں۔ چلو کوئی بات نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

میرا کام تو اپنے محبوب کو یاد کرنا ہے، چاہے دور رہ کر رو کے یاد کروں یا قریب جا کر شکر ادا کر کے!

## مرزا غالب اور اعلیٰ حضرت

مرزا اسد اللہ خاں غالب کو اردو شعرا میں خاص مقام حاصل ہے۔ شبلی نعمانی وغیرہ تو غالب کو خاتم الشعرا کے درجے پر فائز سمجھتے رہے۔

بہ ہر حال اس میں کوئی شبہ نہیں کہ غالب کی شاعری بہت اچھی ہے۔

غالب نے بحر رجز میں ایک غزل لکھی تھی جسے مولانا حسن رضا نے اعلیٰ حضرت نور اللہ مرقدہ کے سامنے پڑھا تو آپ نے اسی بحر میں نعت شریف لکھ کر فرمایا: حسن میاں اُسے چھوڑو یہ پڑھو!

مرزا غالب اور اعلیٰ حضرت کا ایک ایک شعر ملاحظہ کیجیے، اور تخیل اعلیٰ حضرت کو داد دیجیے۔ غالب نے کہا تھا:

میں نے کہا کہ بزمِ ناز چاہیے غیر سے تَہی
سُن کے سِتَم ظَریف نے مجھ کو اُٹھادیا کہ یوں ؟

یعنی میں نے اپنے محبوب سے کہا غیروں کے سامنے ناز نخرے نہ دکھایا کر، تیری محفلِ ناز غیر سے خالی ہونی چاہیے۔ اُس ظالم نے میری بات سن کر مجھے ہی ناز دکھانے چھوڑ دیے؛ مجھے غیروں کی طرح محفل ناز سے اٹھا دیا اور پوچھنے لگا: ایسے خالی ہونی چاہیے؟

اب دیکھیے اعلی حضرت کا شعر:

میں نے کہا کہ جلوہ اصل میں کِس طرح گُمیں
صُبح نے نُورِ مہر میں مِٹ کے دِکھا دِیا کہ یوں !

آپ کو معلوم ہو گا رات ختم ہوتے ہی صبح نمودار ہو جاتی ہے۔

یہ صبح در حقیقت سورج کا اعلان کرنے آتی ہے اور یہ بتانے آتی ہے کہ:

لوگو! اصل میں نہیں ہوں، میری اصل سورج ہے؛ میری روشنی اسی کی مرہون منت ہے۔

جس طرح ہر چیز اپنی اصل کی طرف لوٹتی ہے اسی طرح جب سورج نکلے گا تو میں اسی میں ضم ہو جاؤں گی، میرا وجود باقی نہیں رہے گا۔

امام کہتے ہیں:

میرے آقا ساری کائنات کی اصل آپ ہیں، میرا دل مجھ سے پوچھتا ہے: آپ ﷺ کے جلوۂ محبت میں کس طرح گمیں؟ میں کہتا ہوں: ایسے گم ہو جا جیسے صبح کا نور سورج کی روشنی میں گم ہو جاتا ہے!

میں نے کہا کہ جلوہ اصل میں کِس طرح گُمیں
صُبح نے نُورِ مہر میں مِٹ کے دِکھا دِیا کہ یوں !

## کلام اعلی حضرت اور عشق رسول

اعلی حضرت رحمہ اللہ کے کلام میں ایسا عشق رسول پایا جاتا ہے جسے الفاظ بیان کرنے سے قاصر ہیں۔

ایک اہل حدیث کے سامنے آپ رحمہ اللہ کا یہ شعر پڑھا گیا تو وہ بھی زار و قطار رونے لگا:

لَحد میں عشقِ رُخِ شہ کا داغ لے کے چلے
اندھیری رات سُنی تھی ، چراغ لے کے چلے

آپ رحمہ اللہ کا ایک شعر ہے:

دِل کو دے نُور و داغِ عشق ، پھر میں فِدا دو نیم کر
مانا ہے سُن کے شقِّ ماہ ، آنکھوں سے اَب دِکھا کہ یوں!

جب ہم چاند کی طرف دیکھتے ہیں تو اس میں روشنی کے ساتھ داغ بھی نظر آتا ہے، یہ داغ عیب نہیں علامتِ حسن ہے؛ اگر داغ نہ ہوتا تو چاند کی طرف کوئی نہ دیکھ سکتا، جیسے سورج میں داغ نہیں تو اسے دیکھنا مشکل ہے۔

اب آئیے شعر کی طرف، امام کہتے ہیں: اے میرے محبوب ﷺ میرے دل کو چاند بنا دو، اسے روشنی عطا کرو، داغ بھی دو؛ اور داغ آسمان کے چاند والا نہیں ہونا چاہیے، تیرے عشق کا داغ ہو! میں آپ پر قربان پھر اس چاند کو اپنی مبارک انگلی کے

اشارے سے دو ٹکڑے کر دو۔

میں نے سنا ہے آپ نے آسمان کے چاند کو دو ٹکڑے کیا تھا ، میں مانتا ہوں آپ نے بالکل ایسا کیا ؛ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔جب میرے چاند (دل) کو دو ٹکرے کرو گے تو میں آنکھوں سے بھی دیکھ لوں گا!

دِل کو دے نُور و داغِ عشق ، پھر میں فِدا دو نیم کر
مانا ہے سُن کے شقِّ ماہ ، آنکھوں سے اَب دِکھا کہ یوں!

## اشعار کفایت علی کافی

مجاہد جنگ آزادی مولانا سید کفایت علی کافی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

دیکھتے جلوہ دیدار کو آتے جاتے
گل نظارہ کو آنکھوں سے اُٹھاتے جاتے
سرِ شوریدہ کو گیسو پہ تصدُّق کر کے
دلِ دیوانہ کو زَنجیر پہناتے جاتے
قدمِ پاک کی گر خاک ہی ہاتھ آجاتی
چشمِ مُشتاق میں بھر بھر کے لگاتے جاتے
دَشتِ طیبہ میں ترے ناقہ کے پیچھے پیچھے
دھجیاں جیب و گریباں کی اُڑاتے جاتے
ہر سَحر رُوے مبارک کی زیارت کرتے
داغِ حرماں ، دلِ محزوں سے مِٹاتے جاتے
پائے اقدس سے اٹھاتے نہ کبھی آنکھوں کو
روکنے والے اگر لاکھ ہٹاتے جاتے
خواب میں دولتِ بیدار ہی ملتی ، وہ اگر
بختِ خوابیدہ کو ٹھوکر سے جگاتے جاتے
دستِ صَیّاد سے چُھٹتی جو ہزاروں طرح
چمنِ کُوچۂ دلبَر ہی کو جاتے جاتے
کافی کُشتۂ دیدار کو زندہ کرتے
لب اعجاز اگر آپ ہلاتے جاتے !

(بہار خلد، باب ماجاء فی شعر رسول اللہ ﷺ، ر23، ص13، ط برقی پریس، س1354ھ)

## سابقے/لاحقے

ایران کے ایک شہزادے نے یہ مصرع کہا:

ع دُرِ ابلق کسے کم دیدہ موجود

یعنی ایسا موتی جو کچھ سیاہ ہو اور کچھ سفید، کسی نے کم دیکھا ہو گا۔

اس مصرع پر دوسرا مصرع موزوں نہ ہو سکا، اس نے کئی شعرا سے کہا مگر کسی سے مناسب مصرع نہ کہا جا سکا، آخر اس نے دہلی کے بادشاہ کو لکھا کہ اس مصرع پر دوسرا مصرع موزوں کرا کے بھیج دیجیے!

زیب النسا ایک دن سرمہ لگا رہی تھی، اتفاقاً آنسو ٹپک پڑے تو اس نے دوسرا مصرع آنسو دیکھ کر موزوں کر دیا، کہ:

ے دُرِ ابلق کسے کم دیدہ موجود
مگر اشکِ بتانِ سُرمہ آلود

یعنی کچھ سیاہ، کچھ سفید رنگ کا موتی کسی نے کم دیکھا ہو گا، مگر ہاں.....! محبوب کی سرگیں آنکھ سے ٹپکا ہوا آنسو ایک ایسا موتی ہے جس میں یہ دونوں رنگ نظر آتے ہیں۔

بادشاہ نے یہ شعر ایران بھیج دیا، وہاں سے خط آیا کہ اس شاعر کو یہاں بھیجو!

اس کے جواب میں زیب النسا نے یہ شعر لکھا:

ے در سخن مخفی منم چوں بوئے گل در برگِ گل
ہر کہ دیدن میل دارد در سخن بیند مرا

(مخفی زیب النسا کا تخلص ہے)

اس نے کہا:

جس طرح پھول کی خوشبو پھول کے پتے میں مخفی ہے، اسی طرح مَیں اپنے کلام میں مخفی ہوں؛ جسے میرے دیکھنے کی خواہش ہو وہ میرا کلام پڑھ لے۔

(عورتوں کی حکایات، از: سلطان الواعظین مولانا ابوالنور محمد بشیر رحمہ اللہ، ص 272، ط فرید بک سٹال لاہور)

یہ ضروری نہیں ہوتا کہ نام کے ساتھ ڈھیروں سابقے لاحقے ہوں اور بھاری بھرکم الفاظ میں تعارف کروایا جائے۔

صاحب علم جب بولتا ہے تو علم اس سے پہلے بولتا ہے!

حضرت سعدی شیرازی نے یوں ہی نہیں کہا:

ے تا مرد سخن نگفتہ باشد
عیب و ہنرش نہفتہ باشد

## گہرے اشعار

بعض اشعار دل پر گہرا اثر چھوڑ جاتے ہیں اور بندہ تادیر انھیں گنگناتا رہتا ہے؛ کل ہی میرزا امجد رازی نے ایک شعر کہا:

گلِ قُدُس کی نکہتِ شَرَف ترے وُجود میں
ہے بے خزاں ، تری بہار حضرتِ معاویہ !

گُل، پھول کو کہتے ہیں اور اس کے ساتھ قُدُس لگانے سے ایسا پاکیزہ پھول مراد ہوتا ہے جس میں سوائے تقدیس و طہارت کچھ نہ ہو—

رازی نے سرکار دوعالم ﷺ کی ذات اقدس کو تشبیہ دینے کے لیے جس پھول کا انتخاب کیا وہ "گل قدس" تھا۔

پھر اس سے نکلنے والی خوش بو (نکہت) کو صرف نکہت نہیں، "نکہت شرف" کہا.....؛ یعنی بہت ہی عمدہ خوش بو، شرف والی خوش بو، ساری خوش بوؤں کی سردار خوش بو۔

اب اس خوش بو کو یوں نبھایا کہ:

ایک وہ باغ ہوتا ہے جس میں پھول خوش بو دیتا ہے، لیکن اس وقت تک جب تک پھول پر بہار رہتی ہے، اور باغ بھی اس وقت تک مہکتا ہے جب تک پھول کی نکہت باقی رہتی ہے؛ پھر جب پھول خزاں رسیدہ ہوتا ہے تو باغ پر بھی اثر چھوڑ جاتا ہے—

لیکن.....یہاں جس پھول کی بات ہو رہی ہے وہ کبھی خزاں رسیدہ ہونے والا نہیں تھا، اس لیے اس کی نکہت جس باغ (صحابیِ رسول حضرت معاویہ) تک پہنچی، اس باغ کی بہار سے خزاں سدا کے لیے روٹھ گئی۔۔۔۔۔۔۔۔!

اب اس باغ میں بہار ہے، بہار ہے، اور صرف بہار—

میں قربان! جس باغ کو گل قدس کی کچھ نکہت نصیب ہوئی جب وہ ہمیشہ کے لیے بے خزاں ہو گیا، تو اس باغ کا کیا کہنا جسے یہ دائمی اعزاز ملا: حسین منی وانا من حسین!

یہ اس شعر کا ایک معنی ہے، اگر اس میں استعمال کیے گئے لفظ "وجود" کو 'حصول مقصد' کے معنی میں لیا جائے تو اس کا دوسرا نفیس معنی نکل آئے گا، اور اگر "نکہت شرف" کو 'نسبی قرابت' کا مفہوم دیا جائے تو تیسرا عمدہ معنی وجود میں آجاتا ہے، اور اگر "گل و نکہت" کو باغ سے نہ جوڑا جائے تو چوتھا معنی پیدا ہو جاتا ہے—اب پورے ذوق سے پڑھیے:

گلِ قُدُس کی نکہتِ شَرَف ترے وُجود میں
ہے بے خَزاں ، تری بہار حضرتِ معاویہ! رضی اللہ تعالیٰ عنہ

## شعر پر حکم

شعر، کلام مخیل ہوتا ہے، جس میں محاکات سمیت بہت سی چیزیں پائی جاتی ہیں؛ اسے نثر پر قیاس کر کے حکم لگانا بہت بڑی خطا ہے۔

شعر پر ہر عالم و مفتی حکم نہیں لگا سکتا، اس کا استحقاق صرف اس عالم کو ہونا چاہیے جو علوم شاعری سے نہ صرف آگاہ ہو بلکہ بیان و بدیع کے محل استعمال و اطلاقات بھی جانتا ہو، نیز مصطلحات شعرا اور دواوین شعرا اس کی نظر میں ہوں۔

## قاری احمد حسین روہتکی

قاری احمد حسین روہتکی رحمۃ اللہ علیہ یہ نعت شریف پڑھتے اور روتے تھے، کہتے تھے:

"میں نے خواب میں سرکارِ دوعالم صلی اللہ علیہ وسلم کے سامنے اس نعت کو پڑھتے ہوئے اپنے آپ کو دیکھا ہے"

میں نے یہ نعت شریف 2002/12/25ء میں، قاری صاحب کی کیسٹ "اصلاح نفس" سے سُن کر لکھی تھی۔

جب بھی یہ نعت شریف پڑھتا یا سنتا ہوں تو دل کی کیفیت بدل جاتی ہے، دل وہاں پہنچ جاتا ہے جہاں کے لیے بنا ہے!

آپ بھی اِس مقبولِ بارگاہ نعت شریف کے کچھ اشعار پڑھ لیجیے، ہو سکتا ہے آپ کو بھی دیدارِ حبیب ہو جائے:

### نعت شریف

اے احمدِ مرسل نُورِ خدا تیری ذاتِ صفا کا کیا کہنا
پڑھتے ہیں ملائک صلِّ علیٰ تیری شانِ عُلا کا کیا کہنا
بدخلق جو تھے وہ نیک ہوئے، لڑتے تھے ہمیشہ جو ایک ہوئے
جھگڑے تو نے آکر مِیٹ دِیے، تیری فہم وذکا کا کیا کہنا
سَوگند ہے چہرے کی شمسُ الضُّحیٰ، وَالَّیل ہے تیری زُلفِ دوتا
سینے کی صفت ہے اَلَم نَشْرَح، تیرے دل کی فضا کا کیا کہنا
وَالْعَصر ہے تیرے زماں کی قسم، والْعُمْرُک ہے تیری جاں کی قسم
والبَلد ہے تیرے مکاں کی قسم، تیرے رہنے کی جا کا کیا کہنا
چہرے پہ ہے قرباں شمس وقمر، زُلفوں پہ تَصدُّق شام وسحر
رُخساروں پہ ٹھہرے کس کی نظر، تیرے مُنھ کی جِلا کا کیا کہنا!
آدیکھے زلیخا تجھ کو اگر، یُوسُف پہ کرے پھر کر نہ نظر
گر دیکھ لے خور خِیرہ نظر، تیرے حُسنِ خُدا کا کیا کہنا

صابر سے کہاں ہو مدح تیری ، تیرے خُلق میں ہے قرآن سبھی
جب تیری ثنا اللہ نے کی ، پھر مجھ سے گدا کا کیا کہنا !

## حضور غوث پاک کی منقبت

اُستادالشعراداغ دہلوی نے بحرِ ہزج میں حضور غوث پاک کی منقبت لکھی ہے، کہتے ہیں:

یہ دل محبوبِ سُبحانی کے صدقے
مُحیُ الدین جیلانی کے صدقے
مرے دل پر چلے وہ خنجرِ عشق
ملک ہوں جس کی قربانی کے صدقے
تمھاری ذات سے ہے نظمِ عالم
جہاں بانی کے سلطانی کے صدقے
تمھارے لطفِ پنہانی کے قربان
تمھارے فیضِ روحانی کے صدقے
نثارِ قُبۂ انور مہ و مہر
فرشتے قبرِ نُورانی کے صدقے
یہ زیبا ہے جو ہوں لوح و قلم بھی
تمھارے اسمِ لاثانی کے صدقے
سبک روحی میں کب ہے لذتِ درد
دمِ بسمل گراں جانی کے صدقے
یہ دل ہو اور جوشِ قلزم عشق
یہ کشتی موج طوفانی کے صدقے
فدائے شمع ، پروانہ ہو اے داغ
ہم اپنے قطبِ ربانی کے صدقے

(مہتاب داغ، ص 274، مجلس ترقی ادب لاہور، سال اشاعت 2008ء)

## مرزاغالب

میں نے ایک مستند عالم سے سنا تھا:

"مرزاغالب، علامہ فضلِ حق خیرآبادی رضی اللہ عنہ کے حامی تھے؛ علامہ نے جب اسماعیل دہلوی کا رد کیا تو مرزا نے بہ صورت اشعار، اُس میں اپنا حصہ ملایا" مجھے مرزا کے وہ اشعار دیکھنے کا اشتیاق تھا۔

آج بعد نمازِ عشا کتابیں کھنگالنی شروع کیں اور آخرِ کار رات کے گیارہ بجے مُراد پالی! مرزا نے دو چار نہیں، ایک سو اٹھائیس اشعار کی مثنوی لکھی ہے، جسے پڑھ کر دل باغ باغ ہو جاتا ہے۔ یہ اشعار جب مرزا نے حضرت خیرآبادی رحمہ اللہ کو سنائے تھے تو اُنھوں نے فرمایا تھا:

"اگر میں فارسی شعر میں تمھارے برابر مَشّاق ہوتا، تو بھی ایسی خوبی سے اِن مطالب کو ادا نہ کر سکتا"

مرزا کے اِنھی اشعار کے متعلق الطاف حسین حالی نے لکھا ہے:

"مولانا فضل حق مرحوم، مرزا کے بڑے گاڑھے دوست تھے، اور اُن کو فارسی زبان کا نہایت مقتدر شاعر مانتے تھے۔ چوں کہ مولانا کو وہابیوں سے سخت مخالفت تھی؛ اُنھوں نے مرزا پر نہایت اصرار کے ساتھ یہ فرمائش کی کہ فارسی میں وہابیوں کے خلاف ایک مثنوی لکھ دو، جس میں اُن کے بڑے بڑے اور مشہور عقیدوں کی تردید، اور خاص کر امتناعِ نظیر خاتم النبیین کے مسئلے کو زیادہ شرح اور بسط کے ساتھ بیان کرو" (یادگار غالب، مرتبہ الطاف حسین حالی، ص 76، نامی پریس کانپور، 1897ء)

سبحان اللہ! یہ تھے ہمارے اکابر، جنھوں نے صلح کلیت کے بجائے، ہر سطح پر مسلکِ اہل سنت کی تبلیغ کی۔

اللہ کریم ہمیں اِنھی کے نقش قدم پر چلائے!

## قصیدہ بہاریہ

شاعری سے شغف رکھنے والوں نے بڑے عمدہ عمدہ قصیدے دیکھے ہوں گے، آج میرے امام سیدی احمد رضا خان فاضل بریلوی کا قصیدہ بہاریہ بھی ملاحظہ کریں؛ امام نے اسے ماہِ ربیع الاول کی آمد پر لکھا تھا۔

قصیدہ بہاریہ

اُودِی اُودِی بدلیاں گھرنے لگیں
ننھی ننھی بُوندیاں برسا چلیں
ندیاں پھر آنکھیں دکھلانے لگیں
چھوٹی چھوٹی جھیلیں پھر لہرا چلیں
جُھومتی آئیں نسیمیں، نرم نرم
پتلی پتلی ڈالیاں لچکا چلیں

دل کُھلے ، کانوں میں رَس پڑنے لگے
خوش نوا چڑیاں ترانے گاچلیں
تانوں کی بِینوں میں پھرلہرابجا
گیسوؤں کی ناگنیں لہرا چلیں
باغِ دل میں وجدکے جھولے پڑے
آرزوئیں پھر ملاریں گا چلیں
سُرخ ، سبز ، اُودی ، سنہری بدلیاں
دن ڈھلے ، کیا چُنریاں رنگوا چلیں !
پھرنظرمیں گُدگدی ہونے لگی
دھانی دھانی بوٹیاں پھڑکا چلیں
لہلہانا ، کِھلکھلانا ، واہ واہ !
پتیاں ، کلیاں ، قیامت ڈھا چلیں
اُمڈی ، گرجیں ، چمکیں ، کالی بدلیاں
بالوں نادانوں کادل دھڑکا چلیں
پھراُٹھا پودوں کے جوبن میں اُبھار
ننھی ننھی کونپلیں ہریا چلیں
مور کُو کے سینۂ پرداغ کے
یاد گیسو کی گھٹائیں آ چلیں
خُوب برسیں خُوب برسیں ، کُھل گئیں
کھل کے پھرکچھ دیر میں گرما چلیں
ڈیرے ، جھیلیں ، تال ، نہریں ، ندیاں
کچھ کمرتک ، کچھ گلے تک آچلیں
پھول مہکے ، غُنچے چٹکے ، گُل کِھلے
نوبہاریں جابجا اٹھلا چلیں
بجرے چھوٹے ، کشتیاں پڑنے لگیں
نہریں ، لہروں کے مزے دکھلا چلیں

(انتخاب حدائق بخشش، ڈاکٹر محمد مسعود احمد، ص 247 تا 249، سرہند پبلی کیشنز کراچی، 1415ھ)

## ادیبِ بے مثال

امام احمد رضا رحمہ اللہ لغت و ادب کے بڑے ماہر تھے، آپ کا لکھا ایک ایک لفظ سمندر کی تہ میں چھپے موتیوں کی طرح ہے؛ لیکن افسوس کہ بہت سارے نومولود، تیراک نہ ہونے کی وجہ سے گہرائی تک نہ پہنچ سکے!!

امام نے لغت و ادب میں یہ مستقل کتابیں اور رسالے یادگار چھوڑے ہیں۔

1: صنائع بدیعۃ

2: شرح مقامۂ مذاقیہ

3: مشرقستان اقدس

4: حدائق بخشش

5: الاستمداد علیٰ اجیال الارتداد (360 اشعار پر مشتمل)

6: عذاب ادنیٰ بر ردِ اَوَادنیٰ

7: آمال الابرار و آلام الاشرار

8: سکین و نورہ بر کاکل پریشان ندوہ

9: احسن الجلوہ فی تحقیق المیل والذراع والفرسخ والغلوہ

10: فتح المعطی بتحقیق معنی الخاطی والمخطی

لغتِ عرب کی دو مشہور کتابوں، اور ایک فارسی عروض کی کتاب پر بھی امام کی تعلیقات ہیں:

11: صراح

12: تاج العروس

13: میزان الافکار

## کلام رضا و غالب

مرزا غالب نے بحر رجز میں ایک غزل کہی تھی جسے سن کر حضرتِ رضا نے اُسی زمین میں نعت لکھی۔

اگر اِن دونوں کلاموں کا موازنہ کیا جائے تو اردو ادب کے اُن متعصب رہنماؤں پر رونا آتا ہے جنھوں نے حضرت رضا کی شاعری سے بے اعتنائی برتی۔

"وصل" پر لکھا ایک شعر آسان تشریح کے ساتھ پیش خدمت ہے، آپ پڑھیں، موازنہ کریں اور بغیر رُو رِعایَت بتائیں کہ اِن میں سے بہتر کون سا ہے-

مرزا غالب کہتے ہیں:

گر ترے دل میں ہو خیال ، وَصل میں شوق کا زوال
موج مُحیطِ آب میں مارے ہے دَست وپاکہ یوں

اگر تیرے دل میں یہ خیال آئے کہ "وصل" یعنی محبوب سے ملاقات کے بعد شوقِ محبت میں کمی آجاتی ہے تو تیرا یہ خیال درست نہیں؛ ذرا سمندر کی لہر کو تَو دیکھ.....وہ پانی میں رہتے ہوئے بھی ہاتھ پاؤں مارتی رہتی ہے.....
تڑپتی رہتی ہے-

جس طرح پانی سے ملنے کے باوجود بھی اس کی بے قراری میں فرق نہیں آتا، اِسی طرح جب تُو بھی محبوب سے مل جائے گا تو تیرا شوق محبت کسی طرح کم نہیں ہو گا- حضرت رضا کہتے ہیں:

باغ میں شُکرِ وَصل تھا ہِجر میں ہائے ہائے گُل
کام ہے اُن کے ذِکر سے ، خیر وہ یُوں ہوا کہ یُوں

امام نے خود کو بُلبل اور اپنے محبوب کو پھول سے تشبیہ دے کر کہا کہ جب میں اُس باغ میں جاتا ہوں جہاں میرا پھول ہے تو "وصل" یعنی پھول کو پا لینے کی خوشی میں شکر کرتا رہتا ہوں اور جب اُس باغ سے دور ہوتا ہوں تو جدائی کے صدمے سے ہائے ہائے کرتا رہتا ہوں-

مجھے تو صرف محبوب ہی کو یاد کرتے رہنا ہے چاہے ہجر میں ہو یا وصل میں!!

## تاریخی شعر

ڈاکٹر اقبال نے امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شان میں ایک تاریخی شعر کہا ہے:

دشمنانِ چون ریگِ صحرا لاتُحد
دوستانِ او بہ یزدان ہم عدد

(اُن کے دُشمن صحرا کی ریت کے ذروں کی طرح لاتعداد تھے-
اُن کے دوست یزداں (خدا تعالیٰ کے نام) کے ہم عدد تھے- یعنی یزداں کے 72 عدد ہیں-
ی زدان: 10+7+4+1+50=72
اور سیدنا امام حسین کے رفقا کی تعداد بھی بہتر تھی-

آقا حسین! ہمارے دل..... تادمِ زیست آپ ہی کے لیے دھڑکیں گے؛ ہمیں اپنے محبین میں قبول فرمالیں!!

## سیدنا عثمان غنی کے حضور

شاہد الوری نے مرزا غالب کے کلام سے دو متفرق مصرعوں کا انتخاب کرکے، ایک کو زیبِ مطلع اور دوسرے کو زیبِ مقطع بنایا ہے؛ قطعات میں یہ نئی چیز ہے جو دل چسپی سے خالی نہیں:

لب پہ آیا ہے ترا نام شہیدِ مظلوم
" آج کچھ درد مرے دل میں سوا ہوتا ہے "
سببِ بیعتِ رضواں پہ نظر ہے میری
دُھند تاریخ پہ چھا جانے سے کیا ہوتا ہے
ہر کڑے وقت میں اُٹھتا ہے ترا دستِ سخا
ایسا ہی دستِ مُحمد بخُدا ہوتا ہے
سندِ حسن حیا تجھ کو عطا کی حق نے
اس سے بڑھ کر کہاں معیارِ حیا ہوتاہے
جمع قرآن کے تلفظ پہ کیا ہے سب کو
ذکر ، قرآن کے ہی ساتھ ترا ہوتا ہے
کتنے احسان ترے ملتِ اسلام پہ ہیں
نام تیرا دلِ مومن پہ لکھا ہوتا ہے
لاکھ اکرام کریں ہم ترا عثمان غنی
" تیرے اکرام کا حق کس سے ادا ہوتا ہے "

(سخن در سخن، شاعر شاہد الوری، ص 49، مکتبۃ الانصار کورنگی ٹاؤن کراچی 1983ء) یہ کلام بحر رمل میں ہے، فاعلاتن فعلاتن فعلاتن فعلن/فعلان۔

## علم بدیع میں ایک صنعت

علم بدیع میں ایک صنعت ہے جسے "تقسیم" کہا جاتا ہے، اس میں شعر کہنا بڑا دل چسپ ہوتا ہے۔ اسی صنعت میں نظیر اکبر آبادی کا کلام ملاحظہ کریں، آپ کو لطف آئے گا:

تیرے بھی مُنھ کی رَوشنی ، رات گئی تھی مَہ سے مِل

تاب سے تاب ، رُخ سے رُخ ، نُور سے نُور ، ظِل سے ظِل
یُوسُفِ مِصر سے مگر ملتے ہیں سب تِرے نِشاں
زُلف سے زُلف ، لَب سے لَب ، چَشْم سے چَشْم ، تِل سے تِل
جتنے ہیں کُشتگانِ عِشق ، اُن کے اَزَل سے ہیں ملے
اَشک سے اَشک ، نَم سے نَم ، خُون سے خُون ، گِل سے گِل
جب سے مُواہے کوہ کَن ، کرتے ہیں اُس کا غم سَدا
کوہ سے کوہ ، جوٗ سے جوٗ ، سَنگ سے سَنگ ، سِل سے سِل
یار ملاجب اے نظیر میرے گلے تو مل گئے
جِسم سے جِسم ، جاں سے جاں ، رُوح سے رُوح ، دِل سے دِل
اس غزل پر نظیر نے خمسہ بھی کہا ہے جو دل چسپی سے خالی نہیں:
یارفقط نہ آئینہ دیکھ کے تُجھ کو ہے خَجِل
نکلے اگر تُو صُبْح دَم ، مِہر بھی ہووے مُنْفَعِل
شب کو تُو آ جو بزم میں بیٹھا ہمارے مُتَّصِل
تیرے بھی منھ کی روشنی ، رات گئی تھی مہ سے مِل
تاب سے تاب ، رُخ سے رُخ ، نُور سے نُور ، ظِل سے ظِل
دُھوم تِرے جمال کی سنتے ہی سب پری رُخاں
اپنے گھروں میں چُھپ گئے شرم کے مارے ناگہاں
وَصف اب ایسے حُسن کا اورکروں میں کیا بیاں
یُوسفِ مصری سے میاں ملتے ہیں تیرے سب نشاں
چشم سے چشم ، لب سے لب ، زلف سے زلف ، تِل سے تِل
چاک ہے گُل کا پیرہن مرنے سے عَندلیب کے
پُرزے کَتاں کے اُڑگئے ماہ کے دل میں داغ دے
شمع جَلی جورات کوساتھ پتنگ بھی جلے
جتنے ہیں کُشتگان عشق ، اُن کے ازل سے ہیں ملے
اشک سے اشک ، نم سے نم ، خون سے خون ، گِل سے گِل
قیس بھی اپنے عشق میں زور ہی نام کرگیا

مرنے کی جس کے تعزیت کرتے ہیں ، دَشت خاک اُڑا
جان گئی توکیا ہوا ، عشق میں شرط ہے وَفا
جب سے مُواہے کوہ کن ، کہتے ہیں اس کا غم سدا
کوہ سے کوہ ، جوسے جو ، سنگ سے سنگ ، سِل سے سل
ہجرمیں ایک عمر سے ہم بھی جوبے قرار تھے
کون سے درد و غم ہوئے آہ جووہ نہیں سَہے
شکرہے بارے یَک بَہ یَک بعد صَد اِنتِظار کے
یار ملاجب اے نظیرمیرے گلے ، تو مل گئے
جسم سے جسم ، جاں سے جاں ، رُوح سے روح ، دِل سے دل

(کلیات نظیر اکبر آبادی، ص248، غ309، ص386، ت594، الفیصل ناشران و تاجران کتب، غزنی سٹریٹ لاہور 2010ء)

یہ کلام بحر رجز میں ہے، مفتَعِلن مفاعلن مفتَعِلن مفاعلن/مفاعلان–

## عید مبارک

آج کے دن کی مناسبت سے میں نے بحرِ منسرح میں ایک شعر کہا ہے جس میں بچھڑوں کو ملانے سے تاریخ نکالی ہے؛ اگر آپ کو سمجھ آئی تو محظوظ ہوں گے:

ہونی ہے بچھڑے ہووں کی آج ملاقات
آج کی تاریخ کہتی ہے " دو نوں اک ساتھ "

یعنی تاریخ دو ہے، نانواں مہینہ ہے اور سال سترہ ہے–(17/9/2)

اب اگر اس کے ایک ایک ہندسے کو پڑھیں گے تو یوں پڑھیں گے:

دو/نو/ایک/سات

تو تھوڑی ترمیم سے یہ بن جائے گا:

"دونوں اک ساتھ "یعنی دو بچھڑے ہوئے آج ایک ہوں گے!

یوں تاریخ بھی نکل گئی اور بچھڑے ہوئے بھی مل گئے–

## حسنِ کلام

دِل عِبادَت سے چُرانا اور جَنّت کی طَلَب
کام چور اس کام پر کس مُنہ سے اُجرت کی طَلَب !

(کلیات ذوق، ص156، غ70، مجلس ترقی ادب لاہور)

خاقانی ہند، ابراہیم ذوق (متوفیٰ 1854ء) کا یہ شعر:

بحر رمل مثمن محذوف میں ہے، فاعلاتن فاعلاتن فاعلاتن فاعلن۔

## نعت شریف

حافظ امان دہلوی کے بیٹے یحییٰ خان (متوفیٰ 1225ھ)، جو کہ قلندر بخش "جرأت" نام سے معروف ہیں، ایک نعت شریف لکھتے ہیں:

مُحَمَّد ہے نَبی مَمْدُوح ذاتِ کِبریائی کا
کہے بندہ گر اُس کی مَدْحَ دعویٰ ہے خُدائی کا
سِپَہْر معرِفَت حَقّاً ہے وہ مہرِ اُلُوہِیَّت
کہ جس کا دینِ روشن آئِنہ ہے حق نُمائی کا
بُلند اُس کا وہ ایوانِ مراتب ہے کہ نئیں اُس جا
خیالِ ساکِنانِ عرش کو یارا رَسائی کا
مُنَوَّر کیوں نہ اُس کے نُور سے ہو خانۂ طاعَت
کہ روشن کرنے والا ہے وہ شمعِ پارسائی کا
گروہِ انبیا میں وہ ہی حق کا بَرگُزیدہ ہے
سِوا اُس کے لقب کس کو ملا ہے مُصْطَفائی کا
رکھے ہے منزِلت یہ آستانِ سرورِ عالَم!
کہ فخرِ سلطنت ہے مرتبہ واں کی گدائی کا
اُسی کے عشق میں پابندِ اُلفت رَہ دِلَا ہردَم
کہ ہووے گا یہی روزِ جزا مُوجِب رِہائی کا
سراپا نورِ حق نامِ خدا کہیے نہ کیوں اُس کو
کہ جس کا نقشِ پا ہو جَبْہَہ سَا ساری خُدائی کا
دلیل اُس کی ہے یکتائی کی یہ لَارَیب اے جُرْأَت

کہ تھا سایہ نہ اُس محبوبِ ذاتِ کبریائی کا

(کلیات جرأت، جلد1، ص2، 3، مجلس ترقی ادب لاہور، سال اشاعت 1968ء)

یہ نعت شریف بحرِ ہزج مثمن سالم میں ہے-مفاعیلن مفاعیلن مفاعیلن مفاعیلن

## مولانا محمد علی جوہر کی غزل

مولانا محمد علی جوہر کی غزل، جس کا ایک شعر زبان زد عام ہے، بلکہ ضرب المثل کی حیثیت رکھتا ہے:

دورِ حیات آئے گا قاتل ، قضا کے بعد
ہے ابتدا ہماری تری انتہا کے بعد
جینا وہ کیا کہ دل میں نہ ہو تیری آرزو
باقی ہے موت ہی دلِ بے مدعا کے بعد
تجھ سے مقابلے کی کسے تاب ہے ولے
میرا لہو بھی خوب ہے تیری حِنا کے بعد
اک شہرِ آرزو پہ بھی ہونا پڑا خجل
ھَل مِنْ مزِید کہتی ہے رحمت دعا کے بعد
لذت ہنوز مائدہ عشق میں نہیں
آتا ہے لطفِ جرمِ تمنّا ، سزا کے بعد
" قتلِ حُسین اصل میں مرگِ یزید ہے
اسلام زندہ ہوتا ہے ہر کربلا کے بعد "
غیروں پہ لطف ہم سے الگ حیف ہے اگر
یہ بے حجابیاں بھی ہوں عُذرِ حیا کے بعد
ممکن ہے نالہ جبر سے رُک بھی سکے مگر
ہم پر تو ہے وفا کاتقاضا جفا کے بعد
ہے کس کے بل پہ حضرتِ جوہر یہ روکشی
ڈھونڈیں گے آپ کس کا سہارا خدا کے بعد

(کلیات جوہر، ص66، 68، دارالاشاعت مصطفائی دھلی)

یہ کلام بحر مضارع (مفعول فاعلاتُ مفاعیل فاعلاتُ) میں ہے-

## استاد الشعرا شاہ نصیر دہلوی

استاد الشعرا شاہ نصیر دہلوی (متوفیٰ 1838ء) کا خلفاے اربعہ رضی اللہ عنھم کی شان میں خوب صورت قِطعہ:

چار یارِ باصفا حق کی کتابیں چار ہیں
آپ جن کو مُنشئ تقدیر نے اِنشا کیا
یعنی بُوبکر و عُمر ، عثمان و حیدر بالیقین
جن کو چار اَرکانِ دینِ پاک ہے ، مولیٰ کیا
صورتِ اَربع عناصر تھا بہم چاروں میں ربط
رُبعِ مسکوں میں انھوں نے دین کو احیا کیا

(کلیات شاہ نصیر، ج 1، ص 146، مجلس ترقی ادب لاہور، 1971ء)

یہ قطعہ بحر رمل (فاعلاتن فاعلاتن فاعلاتن فاعلن) میں ہے۔

## حسنِ کلام

مصروف ہیں حُضور کیسے بندو بست میں !
اَپریل کی بہار نہ ہوگی اَگست میں

اکبرالہ آبادی کا یہ شعر آپ اپنے کسی ایسے دوست کو بھی سنا سکتے ہیں جو عمر رسیدہ ہونے کے باوجود، فیشن کرنے اور کالی مہندی لگا کر جوان بننے کی کوشش کرتا ہو۔

یہ شعر بحر مضارع میں ہے (مفعول فاعلاتُ مفاعیل فاعلن)۔

## حسنِ کلام

قیس جنگل میں اکیلا ہے ، مجھے جانے دو
خوب گزرے گی جو مل بیٹھیں گے دیوانے دو

یہ شعر آپ اُس وقت بھی پڑھ سکتے ہیں، جب کسی ہم مزاج دوست کی ملاقات کو جانا چاہیں اور کوئی روک رہا ہو۔

بحر رَمل (فاعِلاتُن فَعِلاتُن فَعِلاتُن فِعْلُن) میں

یہ شعر میاں داد خاں سیاح (متوفیٰ 1907ء) کا ہے۔

اِسے ادا جعفری (متوفیٰ 2015ء) نے اپنی کتاب غزل نما میں نقل کیا ہے۔

دیکھیے: غزل نما، انتخابِ کلام (میاں داد خاں سیاح)، ص 474، انجمن ترقی اردو پاکستان، کراچی، 2016۔

## حسنِ کلام

اگر ہم اچھے اچھے شعر یاد کرلیں اور انھیں اپنی گفتگو میں 'موقع کی مناسبت سے 'استعمال کیا کریں، تو ہمارے کلام میں حُسن پیدا ہو جائے گا-

سیدنا عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے بیٹے عبدالرحمان سے کہا تھا:

بیٹا! اچھے اچھے شعر یاد کرو، تاکہ تمھارے ادب میں اضافہ ہو؛ (یاد رکھو!) جسے اچھے شعر نہ آتے ہوں وہ کبھی ادیب نہیں بن سکتا-

(ملخصًا: شاہکار رسالت، دسواں باب، ص 311)

سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ کے پاس ایک آدمی آیا تو آپ نے اُس سے تین سوال کیے، پہلا سوال تھا:

اقرأت القرآن؟ کیا تو نے قران پڑھا ہے؟

اس نے کہا: ہاں! تیسرا سوال یہ کیا:

ارویت الشعر؟ کیا تجھے شعر یاد ہیں؟ اس نے کہا: نہیں-

آپ نے اُس کے والد کو خط لکھ کر اُسے شعر یاد کروانے کی ترغیب دلائی!

سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنھا کو اِس کثرت سے شعر یاد تھے کہ آپ کو جب کوئی بات پیش آتی، آپ شعر سنا دیا کرتی تھیں -

(انظر: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب التاسع، فصل فی ذکر الشعر والشعراء وسرقاتھم، ص 95، 96، دار مکتبۃ الحیاۃ بیروت، 1412ھ)

اشعار خود رسول کریم ﷺ نے بھی پسند فرمائے ہیں:

حضرت عَمرو بن شَرِید اپنے والد گرامی کے حوالے سے بیان کرتے ہیں کہ:

ایک دن مَیں رسول اللہ ﷺ کے پیچھے سوار ہوا تو آپ نے ارشاد فرمایا:

کیا تمھیں اُمَیّہ بن اَبی صَلْت کے اشعار میں سے کچھ شعر یاد ہیں؟

میں نے عرض کی: جی ہاں- آپ نے فرمایا: سناؤ!

میں نے ایک شعر سنایا، تو آپ ﷺ نے فرمایا اور سناؤ! میں نے ایک اور سنایا-

آپ نے ارشاد فرمایا: مزید سناؤ!

حتیٰ کہ میں نے سو (100) اشعار سنائے-

(صحیح مسلم، کتاب الشعر، حدیث 1)

میں آج سے سلسلہ "حُسنِ کلام" شروع کرنے لگا ہوں جس میں عمدہ قسم کا صرف ایک ایک شعر بھیجا کروں گا، آپ کوشش فرما کر یاد کرتے جائیں، اور اپنی تحریر و تقریر میں استعمال کریں؛ ان شاء اللہ اِس سے کافی حد تک ادبی کمی پوری ہو گی-

# شبلی نعمانی

شبلی نعمانی نے، موازانہ انیس و دبیر میں مرزا غالب اور ابراہیم ذوق کو "خاتم الشعرا" کا لقب دیا ہے۔
آپ غالب کو تو اکثر سنتے ہی رہتے ہیں، آج خاقانی ہند استاد ابراہیم ذوق کا بحر مضارع میں ایک کلام ملاحظہ کریں —
کیا بات ہے اُس استادِ فن کی..... کہتا ہے:

رندِ خراب حال کو زاہد نہ چھیڑ تُو
تجھ کو پَرائی کیا پڑی ، اپنی نبیڑ تُو

ناخن نہ دے خدا تجھے اے پنجۂ جُنوں
دے گا تمام عقل کے بَخیے اُدھیڑ تُو

اس صیدِ مضطرب کو تحمل سے ذبح کر
دامان و آستیں نہ لہو میں لتھیڑ تُو

چھٹتا ہے کون مر کے گرفتارِ دامِ زلف
تربت پہ اس کی جال کا پائے گا پیڑ تُو

اے زاہدِ دو رنگ نہ پیر آپ کو بنا
مانندِ صبحِ کاذب ابھی ہے اَدھیڑ تُو

یہ تنگ نائے دہر نہیں منزلِ فراغ
غافل نہ پاؤں حرص کے پھیلا ، سکیڑ تُو

ہو قطعِ نخلِ اُلفت اگر ، پھر بھی سبز ہو
کیا ہو جو پھینکے جڑ ہی سے ، اس کو اکھیڑ تُو

جو سوتی بھیڑ باعثِ غوغا جگائے پھر
دروازہ گھر کا اُس سگِ دنیا پہ بھیڑ تُو

عمرِ رواں کا توسنِ چالاک اس لیے
تجھ کو دیا کہ جلد کرے یاں سے ایڑ تو

آوارگی سے کُوے محبت کی ہاتھ اُٹھا
اے ذوق یہ اٹھا نہ سکے گا ٹھکھیڑ تُو

(کلیات ذوق، ردیف و، ص194، مجلس ترقی ادب لاہور، 1430ھ)

## کلام رضا اور غالب

مجھ سے ایک مفتی صاحب کہنے لگے: مرزا غالب اعلیٰ حضرت سے بڑا شاعر تھا۔

میں نے پوچھا: آپ کو کیسے معلوم ہوا؟

کیا آپ بہت اچھے، اچھے، کم اچھے اور برے شعر کی پہچان رکھتے ہیں؟

اگر ایسا ہے تو میں آپ کے سامنے مرزا غالب و حضرت رضا کا ایک ہی زمین میں کہا گیا، ایک ایک شعر رکھتا ہوں، آپ تقابل کریں، پھر تفوق و وجہ تفوق بیان کریں۔

مرزا غالب ایک غزل میں کہتے ہیں:

میں نے کہا کہ بزمِ ناز چاہیے غیر سے تہی
سُن کے ستم ظریف نے مجھ کو اُٹھا دیا کہ یُوں؟

حضرت رضا نعت میں کہتے ہیں:

میں نے کہا کہ جلوہ اصل میں کس طرح گُمیں
صبح نے نورِ مہر میں مِٹ کے دکھا دیا کہ یوں

مفتی صاحب حیران رہ گئے کہ کیا کہوں اور کیا نہ کہوں۔۔۔

آپ احباب میں سے اگر کوئی جواب دینا چاہیں تو اجازت ہے، ضرور دیں!

## کیا آپ کو کچھ شعر یاد ہیں؟

ہمارے اسلاف اَشعار یاد کرنے کو بہت اہمیت دیتے تھے۔

سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ کے پاس ایک آدمی آیا تو آپ نے اُس سے تین سوال کیے، پہلا سوال تھا:

اقرأت القرآن؟ کیا تو نے قران پڑھا ہے؟

اس نے کہا: ہاں!

تیسرا سوال یہ کیا: ارویت الشعر؟ کیا تجھے شعر یاد ہیں؟

اس نے کہا: نہیں۔ آپ نے اُس کے والد کو خط لکھ کر اُسے شعر یاد کروانے کی ترغیب دلائی!

سیدنا عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی اخلاق کی بہتری کے لیے اشعار یاد کرنے کا فرماتے تھے۔

سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنھا کو اِس کثرت سے شعر یاد تھے کہ عروہ کہتے ہیں:

ماینزل بھا شیء الا انشدت فیہ شعرا۔ آپ کو جب کوئی بات پیش آئی آپ نے شعر سنا دیا!

(انظر: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب التاسع، فصل فی ذکر الشعر والشعراء وسرقاتھم، ص95،96، دار مکتبۃ الحیاۃ بیروت، 1412ھ)

یہ وجہ بھی تھی کہ سیدہ ایسا فصیح و بلیغ کلام فرماتیں کہ لوگ دنگ رہ جاتے؛ حضرت احنف بن قیس رحمہ اللہ کہتے ہیں:

میں نے سیدنا ابوبکر کا کلام سنا، سیدنا عمر کا کلام سنا سیدنا عثمان و علی کا کلام سنا، مگر اللہ کی قسم میں نے دیکھا کہ سیدہ عائشہ صدیقہ اِن سے زیادہ بلیغ ہیں۔

(ایضاً، ص68)

سیدنا معاویہ بھی فرماتے تھے:

ما رایت ابلغ من عائشۃ رضی اللہ عنہا۔ میں نے سیدہ عائشہ سے زیادہ بلیغ کوئی نہیں دیکھا (ایضًا)

اگر آپ چاہتے ہیں کہ آپ کا کلام بھی دل نشین ہو جائے، تو پھر اچھے اچھے اشعار لازمی یاد کریں!

## اعلیٰ حضرت کے احادیث پر عروضی کام

انباء الحَی سے سیدی اعلیٰ حضرت کے احادیث پر عروضی کام کی مختصر سی جھلک ملاحظہ کریں:

الطاھر النائم کالصائم القائم۔

یہ دونوں میم کے اشباع کے ساتھ بحرِ بسیط سالم مربع ہے، اسے متاخرین نے بیان کیا؛ اگرچہ متقدمین مثمن کو مربع نہیں کرتے۔ سکاکی نے یہی کہا ہے۔ دوسروں نے ان کی مخالفت کی اور جاہلیت کا شعر بحر مدید مشطور سے بیان کیا ہے، اور ہم نے جو بسیط مشطور کہا وہ محمد بن حسن کا قول ہے۔

قد لحت بالوثر

فی عین وفی اثر

اس کا وزن مستفعلن فاعلن دوبار۔ اور اگر اشباع نہ ہو تو مقطوع العروض اور مقطوع الضرب ہے، اور اس کا وزن مستفعلن فعلن دوبار، عین ساکن کے ساتھ۔ اس میں قطع جائز اور شائع ہے۔

قُربان تُجھ پر میرے دل و جاں
احمد رضا خاں ، احمد رضا خاں

## سیدۂ کائنات فاطمہ زہرا رضی اللہ عنہا کے حضور!

ہو نہیں سکتی رقم بنتِ شہِ بطحا کی شان
کیا بیاں ہو قطرۂ ناچیز سے دریا کی شان
ایک ذرّہ کیا احاطہ کر سکے خورشید کا

ایک ادنیٰ کب سمجھ سکتا ہے اک اعلیٰ کی شان
ہے میرے پیشِ نظر اُس ذات کا ذکرِ بُلند
پست ہو جاتی ہے جس کے سامنے دُنیا کی شان
بضعۃ منی کہیں جس کو رسولِ اِنس و جاں
اِس سے بڑھ کر اور کیا ہو اُس دُرِ یکتا کی شان
جس کی آمد پر کھڑے ہوں خود امام الانبیا
دیکھیے چشم نبّوت میں ذرا ، زھرا کی شان
چال میں حُسنِ خرامِ احمدی کا بانکپن
والضحیٰ سے ملتی جلتی چہرۂ زیبا کی شان
اہلِ محشر جس کی آمد پر رکھیں نیچی نظر
کس قدر اُونچی ہے اس شہزادیِ والا کی شان
عائشہ سے پُوچھ جا کر رُتبۂ اُمُّ الحسن
پُوچھ صدیق و عُمر سے لا فتیٰ اِلّا کی شان
یہ خواتینِ جہانِ نو بھلا سمجھیں گی کیا؟
مریم و حوّا سے پُوچھو زینبِ کُبریٰ کی شان
ذہن محوِ یادِ حق ، دل جورِ اعدا سے غنی
دیدنی تھی کربلا میں ثانیِ زہرا کی شان
تیری اس بیٹی کا وہ خُطبہ وہ دربارِ دمشق
عِلم نانا کا ، خطابت سے عیاں بابا کی شان
مرتبہ حیدر کا بتلائیں تو بتلائیں حسین
اک تقی پہچان سکتا ہے کسی اَتقیٰ کی شان
ہے جہاں میں بے عدیل و بے مثال و بے مثیل
ضرب حیدر کی ، محمد کی سَخا ، زھرا کی شان
جب بنیں بنتِ محمد والدہ سبطین کی
چشمِ انساں میں دوبالا ہو گئی ممتا کی شان
مرحبا زھرا ! تیرا زوجِ گرامی بُو تراب

خاک میں جس نے مِلا دی قیصر و کسریٰ کی شان
پڑ گئے تھے آبلے ہاتھوں میں چکی پیستے
بھوک کی شدّت سے پتھّر پیٹ پر ، مولا کی شان
اولیاء و اصفیا کے رُوپ میں ظاہر ہوئی
سیّدہ زھرا ! تیرے ایک ایک نقشِ پا کی شان
باقر و شبیّر و شبّر ، زینب و زین العِباد
مرحبا کیا اوج پر ہے عِترتِ زہرا کی شان
وہ تو تیرے مہ پاروں نے لگائے چار چاند
ورنہ کیا کربل کے اک تپتے ہوئے صحرا کی شان
سجدۂ حیرت میں ہے اب تک جہانِ ساجدین
دیکھ کر تیرے پسر کے سجدۂ اُولیٰ کی شان
جب سَوا نیزے پہ آجائے گا سُورج ، مُنکرو!
اس گھڑی تم پر کُھلے گی چادرِ زہرا کی شان
فاطمہ ، ماں ہے اُسی مردِ جَری کی اے نصیر
لشکرِ جرّار پر حاوی تھی جس تنہا کی شان

(کلیات نصیر گیلانی، ص277)

## صبح ہوتے ہی ذکرِ رسول ﷺ کر لیجیے

عکسِ روئے مصطفٰے سے ایسی زیبائی ملی
کِھل اُٹھا رنگِ چمن ، پُھولوں کو رعنائی ملی
سبز گنبد کے مناظر دیکھتا رہتا ہوں میں
عشق میں چشمِ تصور کو وہ گیرائی ملی
جس طرف اُٹھّیں نگاہیں محفلِ کونین میں
رحمۃُ لِلعٰلمین کی جلوہ فرمائی ملی
اَرضِ طیبہ میں میسر آگئی دو گز زمیں
یوں ہمارے منتشر اجزا کو یکجائی ملی !

اُن کے قدموں میں ہیں تاج و تخت ہفت اقلیم کے
آپ کے ادنٰی غلاموں کو وہ دارائی ملی
بحرِ عشقِ مصطفٰے کا ماجرا کیا ہو بیاں
لطف آیا ڈوبنے کا جتنی گہرائی ملی
چادرِ زہرا کا سایہ ہے مرے سر پر نصیر
فیضِ نسبت دیکھیے ، نسبت بھی زہرائی ملی

(دیں ہمہ اُوست، پیر نصیر الدین نصیر، ص 207، گولڑہ شریف، سال اشاعت 2007ء)

## صَنعَتِ تَوشِیح میں کہی گئی نعت شریف

صنعت توشیح کا مطلب ہے:

"ایسے اشعار کہنا جن کے ہر مصرع یا ہر شعر کے پہلے یا آخری حروف کو جمع کرنے سے کوئی نام یا عبارت بن جائے"

یہ نعت "صلی اللہ علیہ وسلم" کے پندرہ حروف (ص، ل، ی، ا، ل، ہ، ع، ل، ی، ہ، و، س، ل، م) پر کہی گئی، پندرہ اشعار پر مشتمل ہے۔

آپ توجہ سے پڑھیں، معانی پر غور کریں ان شاءاللہ بہت لطف آئے گا۔

### صلی اللہ علیہ وسلم

ص: صبح ازل تھا ، روئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
شامِ ابد گیسوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ل: لامِ رسالت زلف سے پیدا ، سرامامت سر سے ہویدا
نور سویدا موئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ی: یٰسین شرح عقیدہ دنداں ، صورت لب حمٓ میں پنہاں
کعبۂ جاں ابروئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ا: آئینہ صورت ، جانِ بصارت ، آہوئے سبزہ زار حقیقت
دیدہ وحدت جوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ل: لمعۂ ساکن خالِ مزین ، ذرہ روشن نقطۂ ممکن
یا حبشی ہندوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ل: لوث سے خالی ناز سے مملو ، اندازِ اعجاز سے مملو

نطقِ لبِ خوش گوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ہ: ہرڈالی ڈالی میں پایا پھول میں پھل میں چھال میں پایا
رنگِ رُخ نیکوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ع: عارض روشن نورِ تجلی ، سینۂ اطہر آئینہ سِیما
شمع وفا بازوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ل: لوحِ جبیں تھی عرف کا تارا اور پسینہ تھا چمن آرا
عنبر سارا بوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ی: یادِخدا سے خوب معرّا ، فکر سوا سے صاف مبرا
ظرفِ دلِ یکسوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ہ: ہادی و رہبرپائے مصطفی ، راہنمائے جادہ اولیٰ
رحلِ شرف زانوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
و: وقف سخاوت ، دست مکرم ، سقف عنایت آپ کا پرچم
خُلقِ مجسم خوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
س: سیدنا صدیق وعمر تھے ، سیدناعثمان وعلی تھے
ہمدم وہم پہلوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
ل: لطف کشِ فردوسِ بریں ہیں ، عرش مکاں ہیں ، قطبِ زمیں ہیں
گوشہ گزینِ کوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم
م :میں بھی ہوں اے سیماب نہایت منتظرِ الطاف وعنایت
دیدۂ حسرت سوئے محمد صلی اللہ علیہ وسلم

(سازِ حجاز، سیماب اکبرآبادی، ص 91،90،89، سیماب اکیڈمی پاکستان)

## سیدی اعلیٰ حضرت کے ایک شعر کی تشریح

وہ کیسے پیارے سے تھے جب لوگ دُلہے کے اوپر سے پیسے وارتے، جسے صدقہ اُتارنا کہا جاتا۔
بعض تو سر سے گھما کر خیراتیوں میں بانٹ دیتے اور بعض ماتھے پہ رکھتے جنھیں خیراتی بھاگ بھاگ کے لوٹتے۔
اِس باڑے (خیرات) کو لینے کے لیے خیراتی دُلہے کے چکر لگاتے اور دعائیں دیتے ہوئے کہتے:
شالا سہرے والا سلامت رہے، شالا خوشیاں راس آئیں، سہرے والے کے نام کا صدقہ دو!!
پھر جب دلہے کے اَعزہ واقربا انھیں دیتے تو وہ خوش خوش ہو جاتے۔

اگر آپ نے کبھی ایسا منظر دیکھا ہو تو آپ کے لیے یہ شعر سمجھنا آسان ہو گا۔

حضرت رضا فرماتے ہیں:

اتار کر اُن کے رخ کا صدقہ یہ نور کا بٹ رہا تھا باڑا
کہ چاند سورج مچل مچل کر جبیں کی خیرات مانگتے تھے

معراج کے دُلہا ﷺ جب عرش پر گئے تو اُن کے سر سے بھی صدقہ اتارا گیا، جو نور کا تھا۔

یقین مانیے وہ ایسے نور کا تھا کہ چاند، سورج، جیسے نورانی سیارے بھی خیرات لینے کے لیے دُلہا کے گرد گھومتے تھے، جھومتے تھے، مچلتے تھے۔

امام کی بلندی تخیل پر میں قربان کیا کمال کا نقشہ کھینچ گئے:

دنیا قیامت تک اگر نور کی مثال دینا چاہے گی تو چاند سے زیادہ کسی نورانی چیز کی نہیں دے سکے گی، اور اگر روشنی کی مثال دینا چاہے گی تو ساری کائنات کے قمقمے بھی سورج کے سامنے نہیں ٹھہر سکیں گے۔

لیکن میرے رسول کے حُسن کے آگے ان دونوں کو لانا:

چمن میں پھول نے جب دعویٰ جمال کیا
صبا نے مار طماچے منہ لال لال کیا

یہ تو صرف دو خیراتی ہیں جو مچل مچل کے ان کے سر سے اتارے گئے صدقے کی خیرات مانگ رہے تھے! اب پورے ذوق سے شعر پڑھیے:

اُتار کر اُن کے رخ کا صدقہ یہ نور کا بٹ رہا تھا باڑا
کہ چاند سورج مچل مچل کر جبیں کی خیرات مانگتے تھے

## میری پریشانی کا حل

جب کبھی میرا دل پریشان ہوتا ہے تو مجھے سیدی اعلیٰ حضرت کا یہ شعر یاد آجاتا ہے:

اُن کے نثار کوئی " کیسے ہی " رنج میں ہو
جب یاد آگئے ہیں ، سب غم بھلا دِیے ہیں

تو مجھے اپنے آقا و مولا صلی اللہ علیہ وسلم یاد آجاتے ہیں؛ پھر مجھے نہیں یاد رہتا کہ میری پریشانی کہاں گئی! یہ کلام میری تنہائی کی رونق ہے:

کس سے مانگیں، کہاں جائیں، کس سے کہیں، اور دُنیا میں حاجت روا کون ہے
سب کا داتا ہے تُو، سب کو دیتا ہے تُو، تیرے بندوں کا تیرے سِوا کون ہے

کون مقبول ہے ، کون مردود ہے ، بے خبر! کیا خبر تجھ کو ، کیا کون ہے
جب تُلیں گے عمل سب کے میزان پر ، تب کُھلے گا کہ کھوٹا کھرا کون ہے
کون سنتا ہے فریاد مظلوم کی ، کس کے ہاتھوں میں کنجی ہے مقسوم کی
رزق پر کس کے پلتے ہیں شاہ وگدا ، مسند آرائے بزمِ عطا کون ہے
اولیا تیرے محتاج اے ربِّ کل! تیرے بندے ہیں سب انبیا و رُسُل
اِن کی عزت کا باعث ہے نسبت تری ، اِن کی پہچان تیرے سوا کون ہے
میرا مالک مری سن رہا ہے فُغاں ، جانتا ہے وہ خاموشیوں کی زُباں
اب مری راہ میں کوئی حائل نہ ہو ، نامہ بر کیا بَلا ہے ، صبا کون ہے
ابتدا بھی وہی ، انتہا بھی وہی ، ناخدا بھی وہی ہے ، خدا بھی وہی
جو ہے سارے جہانوں میں جلوہ نُما ، اُس اَحد کے سوا دوسرا کون ہے
وہ حقائق ہوں اشیا کے یا خُشک وتَر ، فہم وادراک کی زد میں ہیں سب ، مگر
ماسِوا ایک اُس ذاتِ بے رنگ کے ، فہم ادراک سے ماوریٰ کون ہے
انبیا ، اولیا ، اہل بیتِ نبی ، تابعین وصحابہ پہ جب آ بنی
گر کے سجدے میں سب نے یہی عرض کی ، تُو نہیں ہے تو مشکل کشا کون ہے
اہل فکر ونظر جانتے ہیں تجھے کچھ نہ ہونے پہ بھی مانتے ہیں تجھے
اے نصیر! اس کو تُو فضلِ باری سمجھ ، ورنہ تیری طرف دیکھتا کون ہے

(فیض نسبت، نصیر الدین نصیر، ص2، 1 گولڑہ شریف)

## بلغ العلیٰ بکمالہ

بلغ العلی بکمالہ رباعی (یا قطعہ) کی بارگاہ نبوی میں قبولیت اپنی جگہ، لیکن اِس کی فنی حیثیت بھی دیکھیں:

شیخ سعدی رحمہ اللہ نے اِس رباعی کے لیے جس بحر کا انتخاب کیا وہ بحر کامل ہے؛ کیوں کہ انسانِ کامل صلی اللہ علیہ وسلم کی مدح جو تھی!

پھر اس کے جتنے ارکان ہیں، "جو آپ کی ذاتِ گرامی سے متعلق ہیں"، سالم آئے ہیں، زحاف سے پاک ہیں۔

صلوا علیہ والہ میں ہ ضمیر آپ کی طرف لوٹتی ہے، اور وہ: "ہ آلہ" میں جاتی ہے جو سالم متفاعلن ہے۔

"صلوا علی" کا ٹکڑا اُمتیوں سے خطاب ہے، آقا ﷺ کی ذاتِ پاک سے متعلق نہیں؛ بس یہیں زحافِ اضمار واقع ہوتا ہے اور وزن متفاعلن کی جگہ مستفعلن رہ جاتا ہے!!

عروض جاننے والے ہی سمجھ سکتے ہیں کہ رعایت کا یہ حُسن ہر کسی کے بس میں نہیں!

## شاعری اور جنت

شاعری مخیل کلام ہوتا ہے، جس کا بہت سارا تعلق شاعر کے علم سے ہے۔
شاعر کا علم جس قدر وسیع ہوگا اُسی قدر تخیل میں عمدگی و وسعت آئے گی۔
جس طرح عالم اور غیر عالم برابر نہیں، اِسی طرح عالم شاعر اور غیر عالم شاعر کا کلام بھی برابر نہیں۔
کوئی بات دین سے بے بہرہ شاعر کہتا ہے تو اُس کا الگ حکم ہے اور اگر انھی الفاظ میں کوئی بات عالم شعر میں کہے گا تو اس کا الگ حکم ہوگا؛ کیوں کہ شعر کی بنیاد الفاظ نہیں تخیل ہے، اور عالم کا تخیل بھی اُسی طرح پاک ہوتا ہے جیسے اُس کا علم پاک ہے۔
ہمارے بعض علمائے کرام نے جب اُن شعرا کا رد کیا جنھوں نے علم دین سے بے بہرہ ہونے کی وجہ سے جنت کی قدر نہ کی، تو ساتھ اُن علما کا بھی رد کر دیا جنھوں نے اپنے شعروں میں "علتِ خاص" کی بِنا پر، جنت کے مقابل مدینہ شریف سے محبت کا اظہار کیا۔
علمائے کرام کا یہ طریقہ بالکل غلط ہے، اگر اِن کی شہ پر یہی روش عوام نے اپنالی تو پھر کوئی بھی نہیں بچے گا، فسق و کفر کی تیغِ بے نیام سے دھڑا دھڑ سر کٹنے شروع ہو جائیں گے؛ اور اِس کی زد میں سب سے زیادہ صوفی شعرائے کرام علیہم الرضوان آئیں گے، نہ کوئی سعدی بچے گا نہ حافظ!
علمائے کرام کو چاہیے کہ شعروں پر حکم لگانے سے پہلے شعر کی ماہیت اور شاعر کو بھی پیش نظر رکھا کریں۔

## حضرت رضا و مرزا غالب

میں نے بعض اہل علم سے سنا کہ مولانا حسن رضا رحمہ اللہ نے اعلیٰ حضرت کے سامنے مرزا غالب کی غزل پڑھی جس کا مطلع یہ تھا:

غنچۂ ناشگفتہ کو دُور سے مت دکھا ، کہ یُوں
بوسے کو پُوچھتا ہوں مَیں ، مُنہ سے مجھے بتا کہ یُوں

اعلیٰ حضرت نے جب یہ غزل سنی تو اِسی زمین میں ایک نعتیہ غزل کہی جس کا مطلع یہ ہے:

پوچھتے کیا ہو عرش پر یوں گئے مصطفیٰ کہ یوں
کَیف کے پر جہاں جلیں کوئی بتائے کیا کہ یوں

اور کہا: حسن میاں اسے چھوڑو یہ پڑھو!
بحر رجز میں کہی گئیں یہ دونوں غزلیں بے مثال ہیں، لیکن جب تک آسان انداز میں ان کا معنی و مفہوم نہ سمجھایا جائے، لطف نہیں آئے گا؛ اس لیے میں ان کے ایک ایک شعر کی وضاحت کرتا ہوں۔

مرزا غالب کہتا ہے:

غنچۂ ناشگفتہ کو دور سے مت دکھا ، کہ یُوں
بوسے کو پُوچھتا ہوں مَیں ، منہ سے مجھے بتا کہ یُوں

یہ شعر سمجھنے سے پہلے اگر شیشہ سامنے رکھ کر (ہونٹ گول کر کے) بوسہ لینے جیسا منہ بنایا جائے تو معلوم ہو گا کہ غالب کیا کہنا چاہتا ہے—

اس شعر میں غالب اپنے محبوب سے پوچھتا ہے: بوسہ کیسے لیتے ہیں؟

وہ پھول کی کلی دکھاتے ہوئے کہتا ہے: یہ (پھول کھلنے سے پہلے) جس طرح گول ہے، جب بوسہ لیا جاتا ہے تو منہ اِس طرح گول ہو جاتا ہے-

غالب کہتا ہے: دُور سے مجھے کلی نہ دکھا بلکہ قریب آکر (منہ گول کر کے) بوسہ لے کر بتا کہ یوں لیتے ہیں!!

غنچۂ ناشگفتہ کو دور سے مت دکھا ، کہ یُوں
بوسے کو پُوچھتا ہوں مَیں ، منہ سے مجھے بتا کہ یُوں

اب دیکھیے، حضرت رضا نعت شریف میں کیا کہتے ہیں:

پوچھتے کیا ہو عرش پر یوں گئے مصطفی کہ یوں
کَیف کے پر جہاں جلیں کوئی بتائے کیا کہ یوں

ایک محبوب اپنے محب کو ملنے آیا، تو دیکھنے سننے والوں سے پوچھا گیا بتاؤ ان کی ملاقات کیسی رہی؟

انھوں نے نقشہ کشی کرتے ہوئے کہا ایسی ایسی تھی؛ یعنی اُس کی کیفیت بیان کر دی! لیکن کمال ہو گیا.....

حبیب مکرم عرش پر گئے، حضرت رضا سے پوچھا کیسے کیسے اور کہاں کہاں گئے، کیفیت بیان کریں؟ کہنے لگے:

میرے حبیب اتنی بلندی پر گئے کہ جہاں کیفیت کے بھی پر جلتے ہیں (پر جلنا محاورہ ہے، جس کا مطلب ہے پہنچ نہ ہونا) یعنی سرکار اتنے بلند گئے کہ وہاں کیفیت بیان پہنچ ہی نہیں سکتی؛ تو پھر کیسے بتایا جائے کہ یوں گئے تھے!!

اس شعر کا دوسرا مطلب یہ ہے کہ:

شاعر جب کسی واقعہ کی عکاسی کرتا ہے تو قوت تخیل کے زور پر کرتا ہے ، اور تخیل ہی کی بہ دولت شاعر کے جذبات واحساسات دوسروں سے بہت بلند ہو جاتے ہیں؛ وہ جب محبوب کی گلی میں جاتا ہے تو اس کے در و دیوار سے عجیب لذت وسرور حاصل کرتا ہے، جب محبوب کا نام سنتا ہے تو اس سے مزہ پاتا ہے، جب اس کا ذکر کرتا ہے تو اس پر فدا ہو ہو جاتا ہے ؛اسی کیفیت کو "کیف" کہتے ہیں، جس کے بغیر کامل شاعری ناممکن ہے—

جب امام الشعرا حضرت رضا سے پوچھا کہ حضور عرش پر کیسے گئے؟

تو فرمانے لگے: اگر ساری لذتیں (کیف) جمع کر لیں تو بھی اس کے بیان تک نہیں پہنچ سکتیں جو اس جانے میں لذت تھی یعنی

:

کَیف کے پر جہاں جلیں کوئی بتائے کیا کہ یوں

اس لیے مجھ سے نہ پوچھو، میری توقوت کیف لاکھ کوشش کے باوجود وہاں تک رسائی حاصل نہیں کر سکتی!!

تیسرا معنیٰ یہ ہے کہ:

حضور عرش پر کیسے گئے؟ یہ لفظوں میں کوئی نہیں بتا سکتا، کیوں کہ بتانے کے لیے الفاظ چاہییں، اور الفاظ میں ڈھالنے کے لیے کوئی منظر چاہیے؛ محبوب تو ایسی سرعت سے گئے کہ:

خرد سے کہہ دو کہ سر جھکا لے گماں سے گزرے گزرنے والے
پڑے ہیں یاں خود جہت کو لالے، کسے بتائے کدھر گئے تھے
سراغ اَین و متی کہاں تھا، نشان کیف و اِلیٰ کہاں تھا
نہ کوئی راہی نہ کوئی ساتھی، نہ سنگ منزل نہ مرحلے تھے

جب رفتار اتنی تیز تھی کہ خود کیف تک کو بھی خبر نہ ہوئی اور وہ جہاں پہنچنا تھا، پہنچ گئے—

تو اس کی منظر کشی کیسی! اب پڑھیے:

پوچھتے کیا ہو عرش پر یوں گئے مصطفی کہ یوں
کَیف کے پر جہاں جلیں کوئی بتائے کیا کہ یوں

## انشاءاللہ خاں نے کمال کر دیا

انشاءاللہ خاں نے کمال کر دیا؛ ہر شعر میں تیس (30) چیزوں کو کیسے خوب صورت انداز سے نبھایا:

تمھارے ہاتھوں کی انگلیوں کی یہ دیکھو پوریں غلام تیسوں
غرض کہ غش ہے، اگر نہ مانو تو جھٹ اٹھا لے کلام تیسوں
امام بارہ، بروج بارہ، عناصر و جسم و روح اے دل
یہی تو سرکار حق تعالیٰ کی ہیں مدار المہام تیسوں
نہیں عجائب کچھ آنکھ ہی میں رطوبتیں تین، سات پردے
عقول دس، مدرکات دس ہیں سو کرتے رہتے ہیں کام تیسوں
علوم چودہ، مقولہ دس اور جہات ستہ بنائے اس نے
امور دنیا کو تاکہ پہنچایں خوب سا انصرام تیسوں
بلائیں کالی ہیں اس پری بن یہ تیسوں راتیں کچھ ایسی انشاؔ

کہ ہر مہینے کے دن بھی جن کو کرے ہیں جھک کر سلام تیسوں

(کلیات انشا، ج 1، ص 263، 264، غ 254، مجلس ترقی اردو 1969ء)

## ایک شعر کی مختصر تشریح

سیدی اعلیٰ حضرت امام احمد رضا نور اللہ مرقدہ کے ایک شعر کی مختصر تشریح:

تاجِ روح القدس کے موتی جسے سجدہ کریں
رکھتی ہیں واللہ! وہ پاکیزہ گوہر ایڑیاں

تاج، اس ٹوپی کو کہتے ہیں جو بادشاہوں کے سر سجائی جاتی ہے - روح القدس، سیدنا جبریل امین علیہ السلام کا لقب ہے -
واللہ، کا مطلب ہے اللہ کی قسم - پاکیزہ، پاک صاف اور بے عیب کو کہتے ہیں - گوہر، مادہ، اصل -
ایڑیاں، ٹخنے کے نچلے حصے -
تاج، سر پہ رکھا جاتا ہے جو یقیناً پاک وصاف ہوتا ہے، اور اُس میں جڑے موتیوں کی پاکیزگی وطہارت میں بھی کوئی شک نہیں -

یہ عام تاج کی بات ہے!
لیکن.....
اگر تاج اُس ہستی کا ہو جو بہ ذاتِ خود ہر قسم کی آلائش سے پاک ہو؛ جس کی اصل میں سوائے پاکیزگی، کچھ نہ ہو -
جس کا لقب ہی "روح القدس" (پاک روح) ہو - اُس کا تاج کتنا مقدس و متبرک اور پاکیزہ وستھرا ہوگا.....!
موتی تو ویسے ہی پاکیزہ ہوتے ہیں اور روح القدس کے تاج کے موتیوں کی پاکیزگی؟؟
اللہ!! پھر.....
اگر کوئی کھڑا ہو چاہے بیٹھا ہو، "سر"، بہ ہر صورت جسم سے اوپر ہی رہتا ہے؛ اور اگر کوئی اُٹھے، بیٹھے یا چلے تو ایڑیاں نیچے ہوتی ہیں؛ اگر کوئی لیٹ کر بھی پاؤں سیدھے کرے تو اس کے پنجے اوپر اور ایڑیاں نیچے ہوں گی -
اب میرے امام کا تخیل دیکھیں:
قدسیوں کے بادشاہ جناب روح القدس علیہ السلام، جن کا اپنا مکان آسمان پر ہے؛ اُن کے وجود کے سب سے معزز و بلند حصے، "سر" کا تاج، نہیں نہیں.....اُس تاج کو زینت بخشنے والے موتی - (جن کا اپنا مسکن بھی جنت ہے)
وہ بھی میرے حبیب کی ایڑیوں کے گوہر (یعنی اصل، جس سے ایڑیاں ترتیب پائی ہیں) کی پاکیزگی کے آگے جھک جائیں -
اللہ اللہ!!

تاجِ روح القدس کے موتی جسے سجدہ کریں

رکھتی ہیں واللہ وہ پاکیزہ گوہر ایڑیاں

یادرہے کہ امام نے یہ بات رب تعالیٰ کے سب سے بلند نام: "اللہ" کی قسم کھاکر کہی ہے، تاکہ اسے کوئی محض شاعرانہ تخیل نہ سمجھے۔

اے امام! تیرے مرقد پر کروڑوں رحمتیں سایہ کریں، تیرے دل میں میرے رسول ﷺ کی کس قدر عزت و وَقعت تھی!!

## سہرا

شادی کے موقع پر دُلہا کے لیے گائے جانے والے گیت کو سہرا کہتے ہیں۔

پیر نصیر الدین نصیر گولڑوی نے طاہر القادری کے بیٹے کی شادی پر سہرا لکھا تھا، جو دیگر شعرا کے سہروں میں مجھے پسند ہے؛ آپ بھی ملاحظہ فرمائیں:

عطائے سرکارِ دو جہاں ہے تو فضلِ ربِ قدیر سہرا
عنایتِ خاص پنج تن کی، نوازشِ دستگیر سہرا
وہ آمدِ نو عروسِ بطحیٰ وہ عرش پر تہنیت کے نغمے
تمام دولہوں کا شاہ دولہا، تمام سہروں کا پیر سہرا
جو قلبِ طاہر میں ذاتِ ختم الرسل کی ہے شمعِ عشق روشن
اُسی سے ہے ضو پذیر محفل، اسی سے ہے جلوہ گیر سہرا
دعا ہے، اے سب کی سننے والے! ہمیشہ بن کر رہے جہاں میں
مسرتوں کی نقیب شادی، محبتوں کا سفیر سہرا
نگاہِ بد سے خدا بچائے، نظر زمانے کی لگ نہ جائے
چمک رہا ہے جبینِ نوشہ پہ مثلِ بدرِ منیر سہرا
جو شاہِ اجمیر مہرباں ہیں تو مُلتفت گنج بخش داتا
نتیجۂ لطفِ اولیاء ہے، دعائے پیرانِ پیر سہرا
ہے آج بھی سر پہ سایہ گستر تصرفِ دستِ شاہِ جیلاں
تجھے مبارک کہ ہوگا ثابت ترے لیے دستگیر سہرا
ملی ہے جس دن سے اس کی لڑیوں کو قادری سلسلے کی نسبت
ہے غوثِ اعظم کے خاک بوسوں کی آنکھ میں بے نظیر سہرا
ہے گرچہ مرکز ہر اک نظر کا چمک دمک اور بانکپن میں

نہیں ہے نوشہ کے رُوئے روشن کا پھر بھی عشرِ عشیر سہرا
ہزار کوئی لکھے مگر اس کا کوئی نعم البدل نہیں ہے
جو اپنے جدِّ کریم کے اک مرید کا لکھے، پیر سہرا
وکیلِ فائق جو طاہرالقادری تو شاعر نصیر خوش گو
بہ بیت نعم الوکیل شادی، بفضلِ نعم النصیر سہرا
مجھے تلمذ میں اپنے لیتے، ہر ایک مصرع پہ داد دیتے
بچشمِ استاد دیکھ لیتے اگر انیس و دبیر سہرا
جنابِ طاہر وصول کیجیے کہ آلِ زہرا کی بارگہ سے
حسین محی دیں کی شادی پہ گہ کے لایا نصیر سہرا

## منقبت سیدہ عائشہ صدیقہ

آج صبح سیدہ کائنات ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنھا کا ذکرِ خیر ہو رہا تھا تو مجھے پیر نصیر الدین نصیر کی منقبت یاد آگئی، نصیر نے کیسے باکمال انداز سے سیدہ کے حضور نذرانہ پیش کیا ہے، ملاحظہ کریں:

اللہ اللہ جلوہ زیبائے بامِ عائشہ
ہے ہلالِ آمنہ ، ماہِ تمامِ عائشہ
روز وشب پیشِ نظر وہ زلف ورُخسارِ رسول
رشکِ صد خُلدِ بریں وہ صبح وشامِ عائشہ
دخترِ صدیقِ اکبر ، زوجۂ شاہِ اُمم
ہے دو گونہ اوج کا حامل ، مقامِ عائشہ
ثُلث دیں ان کے توسُط سے ہوا حاصل ہمیں
تا ابدجاری رہے گا فیض عامِ عائشہ
نام لے کر عائشہ کا رب نے بھیجا تھا سلام
ضَو فشاں ہے عرش پر قندیلِ نامِ عائشہ
تجھ کو کیا معلوم ،تو چھوٹا ، تری محدودسوچ
پوچھ امت کے بزرگوں سے مقامِ عائشہ
مل نہیں سکتا خدا جز دولتِ حبِ نبی
مل نہیں سکتے نبی ، بے احترامِ عائشہ

دیکھنا کل خود پہ اس آقائے اُمت کا کرم
آج ہو کر دیکھ تو دل سے غلامِ عائشہ

آنہ جائے سن کے زھرا کی طبیعت پر ملال
لیجیو مت بے ادب لہجے میں نامِ عائشہ

ان کی عصمت کی ہیں آیاتِ برأت پہرہ دار
سورۃ النّور تیغِ بے نیامِ عائشہ

قبرِ اطہر پر نہ دیں کیوں حاضری جن وبشر
جب اترتے ہیں ملک بہر سلامِ عائشہ

وار کر سکتا نہیں مجھ پر کبھی طاغوتِ شرک
لوح دل پر ثبت ہے نقشِ دوامِ عائشہ

اپنا اندر صاف رکھنے کے لیے ہرمیل سے
سانس کی تسبیح پر لیتا ہوں نامِ عائشہ

جب نکیرین آئیں گے ، کہہ دوں گا ان سے قبر میں
مجھ سے کچھ مت پوچھیے ، میں ہوں غلامِ عائشہ

مجھ کو ہے خُلدِ سماعت ذکرِ خیر اُن کا نصیر
سرمہ میری آنکھ کا گردِ خرامِ عائشہ

مرحبا یہ جلوہ زیبائے بامِ عائشہ
ہے ہلالِ آمنہ ، ماہ تمامِ عائشہ

چھب وہی ہیبت وہی نُدرت وہی قُدرت وہی
پرتوِ نُطق نبوت ہے کلامِ عائشہ

کوئی اوچھا وارمت کرعائشہ کی ذات پر
ورنہ قدرت تجھ سے لے گی انتقامِ عائشہ

تو اگر ماں کا رہا گستاخ ،توبہ کر ابھی
ہے کھلا تیرے لیے دارُالسّلامِ عائشہ

عائشہ کے اس شرف کو بھی ذرا ملحوظ رکھ
اپنے منہ سے مصطفی لیتے تھے نامِ عائشہ

عائشہ کے ساتھ رُخصت ہو گیا اُن کا مقام
ہو سکا کوئی نہ پھر قائم مقامِ عائشہ
جن کے علم وفضل کے آگے سرِاُمت ہے خم
ہے وہ اک شخصیت ذی احترامِ عائشہ
یاد سے جن کی دلِ مضطر کوملتا ہے قرار
ایک نامِ فاطمہ ہے ایک نامِ عائشہ
یہ تجھے معلوم تو پیتا ہے کس مشرب کی مے
اہل سنت کے تو ہاں چلتا ہے جامِ عائشہ
ذہن میں لا کر تصور عظمتِ بوبکر کا
ایک نعرہ اے علی مستو!بنامِ عائشہ

## شاعر کا کمال

شاعر کا کمال یہ ہے کہ: شعر کو زمین سے اٹھائے، آسمان تک پہنچائے
اور شارح کا کمال یہ ہے کہ: شعر کو پہلے آسمان سے ساتویں آسمان تک لے کر جائے-
لیکن سیدی اعلیٰ حضرت امام احمد رضا رحمہ اللہ کا شعر ہی ساتویں آسمان پر ہے، اب شارح کیا کرے!!
میرے خیال میں، وہ اگر اتنا ہی بتانے میں کام یاب ہو گیا کہ یہ شعر ساتویں آسمان تک پہنچا کیسے ہے، تو.....
اس کی محنت ٹھکانے لگ جائے گی-
کچھ دن پہلے میں نے حضور سید عالم ﷺ کے پاؤں کی ایڑیوں کی شان میں سیدی اعلیٰ حضرت کا ایک شعر سنا:

تاجِ رُوح القدس کے موتی جسے سجدہ کریں
رکھتی ہیں واللہ! وہ پاکیزہ گوہر ایڑیاں

خدا جانتا ہے میں تڑپ گیا-ایسا کمال تخیل!!! شاید زمانۂ ادب اس کی مثال پیش نہ کر سکے!!

## ایک شعر کی تشریح

شیخ الاسلام، برکۃ الانام امام احمد رضا قدس سرہ کے ایک شعر کی تشریح:

مالکِ کونین ہیں گو پاس کچھ رکھتے نہیں
دو جہاں کی نعمتیں ہیں اُن کے خالی ہاتھ میں

دنیا وآخرت کی نعمتیں اللہ تعالی نے میرے حبیب کو عطا فرمائی ہیں، لیکن سرکار اپنے پاس وہ نعمتیں جمع کیے نہیں رکھتے،

عطافرماتے جاتے ہیں-

آپ کے توصرف ہاتھوں میں دونوں جہان کی نعمتیں ہیں، سارے وجوداطہر کا کیا کہنا!!

یہاں "خالی" بہ معنی "صرف" ہے-

اور "صرف" بھی دوطرح کا ہوتا ہے:

ایک صرف، "فقط" کے معنی میں آتا ہے، جس کا مطلب ہے کہ دونوں جہان کی نعمتیں صرف (فقط) آپ ہی کے ہاتھ میں ہیں-

یہ معنی بھی آپ کی شان کے لائق ہے، کیوں کہ اللہ کریم نے جتنی نعمتیں آپ کو عطا کی ہیں، مخلوق میں سے کسی کو عطا نہیں ہوئیں-اور دوسرے "صرف" کا مطلب ہے میرے آقا کے دیگر اعضا:

زُبان مبارک، منہ شریف، قلبِ اَطہر وغیرہ کی کیا مثال دی جائے، خالی (یعنی صرف) ہاتھ مبارک ہی اتنے کمال کے ہیں کہ دونوں جہان کی نعمتیں سمیٹے ہوئے ہیں-

یہ معنی بھی بڑا پُر لطف ہے اور اِسی طرف میرا دل مائل ہے-دو شاعروں نے اس شعر کی خوب صورت تضمین کی ہے:

1: پیر نصیر الدین نصیر گولڑوی کہتے ہیں:

ان کا اندازِ عطا کچھ بے خرد ، سمجھے نہیں
مانگنے والوں کے یوں ہی رابطے اُن سے نہیں
ہم نے دیکھے ہیں ، مگر ایسے غنی دیکھے نہیں
" مالک کونین ہیں گو پاس کچھ رکھتے نہیں
دو جہاں کی نعمتیں ہیں ان کے خالی ہاتھ میں "

2: میرزا امجد رازی کہتے ہیں:

کون سی نعمت ہے جو مانگوتو وہ دیتے نہیں
پھر، اگر ، یا نے ، مگر کا حرف وہ کہتے نہیں
اللہ اللہ اللہ! ایسے بادشہ دیکھے نہیں
" مالکِ کونین ہیں گو پاس کچھ رکھتے نہیں
دو جہاں کی نعمتیں ہیں اُن کے خالی ہاتھ میں "

## انشاءاللہ خاں انشا کی صنعت التزام میں باکمال غزل

انشاءاللہ خاں انشا کی صنعت التزام میں باکمال غزل، اربابِ ذوق کی نذر:

سر ، چشم ، صبر، دل ، دیں ، تن ، مال ، جان آٹھوں
صدقے کیے ہیں تم پر لو مہربان آٹھوں
سج ، دھج ، نگہ ، اکڑ ، چھب ، حسن وادا وشوخی
نامِ خدا ہیں تجھ میں اے نوجوان آٹھوں
مِردنگ وچنگ ونَے ، دَف ، بِین ورُباب وسُرنی
ہم ساز وہم نوا ہیں لیتے ہیں تان آٹھوں
ساتوں سُروں میں مُطرِب گت بھی یہ گُتھ رہے ہیں
ہیں سَم پہ آٹھہرتے ، یک جا ندان آٹھوں
رُخ ، خال ، زلف وخط ، لب ، دنداں ، ذَقَن ، زَنَخْداں
اُس کے ہیں اپنے دشمن انشا ہر آن آٹھوں

## ایک شعر کی تشریح

چل اُٹھ ، جَبْہَہَ فَرسا ہو ، ساقی کے در پر
درِ جود ، اے میرے مَستانے والے

ہوا یہ کہ ایک مے خوار، مے خانے میں آیا؛ اُس نے جب وہاں جود وعطا دیکھا تو ساقی کا در بھول گیا، جود وعطا میں ہی کھو گیا! (درِ جود پر ہی مست ہو گیا)

میرے امام نے اُسے آداب سکھاتے ہوئے کہا:

چل اُٹھ ، جَبْہَہَ فرسا ہو ، ساقی کے در پر
درِ جود ، اے میرے مستانے والے

اے بخشش کے دروازے (درِ جود) پر ہی مستی میں آنے والے، اُٹھ اور اٹھ کر ساقی کے دروازے پر ماتھا رگڑنے والا بن (بہ طور کنایہ)، تیری منزل بخشش میں کھو جانا نہیں، ساقی تک پہنچنا ہے-

تُو نے تو صرف بخشش ہی دیکھی تَو مست ہو گیا، جا اور جا کر ساقی کو دیکھ- یہاں امام نے دو در بیان کیے ہیں:

درِ ساقی اور درِ جود- اور اس کے تناظر میں یہ شعر کہا ہے-

## ہے لبِ عیسیٰ سے جاں بخشی نرالی ہاتھ میں

رکھ دیا قدرت نے اعجازِ مثالی ہاتھ میں
منتظر ہے حکم کا گنج لآلی ہاتھ میں

سبز ہوجائے جو پکڑیں خشک ڈالی ہاتھ میں
"ہے لب عیسی سے جاں بخشی نرالی ہاتھ
سنگ ریزے پاتے ہیں شیریں مقالی ہاتھ میں "
اس کا فیضِ عام سائل کو صدا دیتا ہے آپ
وہ جہانِ لطف و احسان میں جواب اپنا ہے آپ
میں نے یہ جانچا ہے ، یہ پرکھا ہے ، یہ دیکھا ہے آپ
" جودِ شاہ کوثر اپنے پیاسوں کا پیاسا ہے آپ
کیا عجب اڑ کر جو آپ آ جائے پیالی ہاتھ میں "
ان کا اندازِ عطا کچھ بے خرد ، سمجھے نہیں
مانگنے والوں کے یوں ہی رابطے ان سے نہیں
ہم نے دیکھے ہیں ، مگر ایسے غنی دیکھے نہیں
" مالک کونین ہیں گو پاس کچھ رکھتے نہیں
دو جہاں کی نعمتیں ہیں ان کے خالی ہاتھ میں "
میرے خالق! حشر میں امت کا یہ مقسوم کر
پل سے گزرے ان کے نعلینِ مبارک چوم کر
ہر طرف سے اک یہی آواز آئے گھوم کر
" سایہ افگن سر پہ ہو پرچم الٰہی جُھوم کر
جب لواءُ الحمد لے امت کا والی ہاتھ میں "
زانووں کا پیار سے منبر دیا سبطین کو
کیا شباہت کا حسیں منظر دیا سبطین کو
نعمتِ باطن سے ایسا بھر دیا سبطین کو
" دستگیر ہر دو عالم کردیا سبطین کو
اے میں قرباں جانِ جاں انگشت کیا لی ہاتھ میں "
بانٹنے کو آئے جب وہ ساقی کاکُل بدوش
ہر ادا جس کی خود اک ہنگامہ محشر خموش
سرد پڑ جائے مرے بحر تعقل کا خروش

" کاش ہو جاؤں لبِ کوثر میں یوں وارفتہ ہوش
لے کر اس جانِ کرم کا ذَیلِ عالی ہاتھ میں "
حاضری کا کیا وہ منظر تھا تہِ چرخِ کبود
ہاتھ اٹھتے ہی وہ ابوابِ اجابت کی کشود
دل کی دنیا پر وہ انوارِ سکینت کا وُرُود
" آہ وہ عالم کہ انکھیں بند اور لب پر دُرُود
وقفِ سنگِ در جبیں ، روضے کی جالی ہاتھ میں "
اے نصیر اس نعت میں لائے ہیں کیا مضموں ، رضا
کملی والے کے ثنا خواں ، عاشق و مفتوں رضا
شاہ کے پائے مبارک پر جو بوسہ دوں رضا
" حشر میں کیا کیا مزے وارفتگی کے لوں رضا
لوٹ جاوں پا کے ان کو ذَیلِ عالی ہاتھ میں "

(پیر نصیر الدین نصیر)

## ایک نعتیہ غزل

حافظ مظہر الدین مظہر کی ایک نعتیہ غزل کے کچھ اشعار:

عطائے خاص ہے یہ لذتِ گُداز تری
بلائیں کیوں نہ لوں عشقِ شہ حجاز تری
ہزار شکر غمِ دوجہاں ہوا معدوم
ہزار شکر ملی بارگاہِ ناز تری
زہے کہ نام بھی ہے تیرا اِنْبِساط آور
خوشا کہ یاد بھی ہے زَمزمہ طراز تری
مدام محوِ درود و سلام ہو اے دل
یہی رکوع ترا ہے یہی نماز تری
اسی لیے توگزرتی ہے بے نیازانہ
سنا ہے ہم نے کہ رحمت ہے کارساز تری

حضور کا بھی کرم بے حساب ہے مظہر
حکایتِ غم دل ہے اگر دراز تری

## پیر نصیر الدین نصیر کا امتحان

پیر نصیر الدین نصیر کو کسی شاعر نے بہ طور امتحان ایک مصرعہ گہ کر بھیجا اور کہا:
اگر نصیر صاحب اس زمین میں پانچ شعر گہ دیں تو میں انھیں اُستاد مان لوں۔
نصیر نے اس زمین پر پانچ نہیں، بارہ اشعار کی پوری غزل لکھ کر بھیجی اور کہا: آپ مجھے استاد اب بھی نہ مانیں، بلکہ اساتذہ فن کے زمرہ تلامذہ ہی میں رہنے دیں۔ بڑی پُر لطف غزل ہے آپ بھی ملاحظہ فرمائیں:

ہر بول اُس کا روح کے آزار چاٹ لے
جس کی زبان خاکِ درِ یار چاٹ لے
گُل چِیں نہ پا سکا کبھی جوہر پہ دسترس
مشکل ہے کوئی پھول کی مہکار چاٹ لے
ملتا ہے اور تشنگیٔ راہرو کو چین
پانی جو آبلے کا کوئی خار چاٹ لے
رہتا ہے زلفِ یار تیری چھاؤں میں یہ دِل
جب تیز دھوپ سایۂ اشجار چاٹ لے
مٹتا نہیں کسی سے بھی رسوائیوں کا داغ
کس کی مجال ، سُرخیٔ اخبار چاٹ لے
مل پائے ایسے قاتلِ شاطر کا کیا ثبوت
جو قتل کر کے خنجرِ خونخوار چاٹ لے
ایسے میں کیا پٹے کوئی سودا سرِ دُکاں
بائع جو اُٹھ کے مغزِ خریدار چاٹ لے
اے خوش قدم ! ذرا نظرِ بد سے ہوشیار
ایسا نہ ہو کہ شوخیٔ رفتار چاٹ لے
اس خوف سے وہ رکھتے ہیں زلفیں لپیٹ کر
افعٰی کہیں نہ زلف کا رخسار چاٹ لے

واعظ کی بات دِل میں جو اُترے تو کس طرح
جب کان اُس کی کثرتِ گفتار چاٹ لے
اِترائیے نہ شوکتِ فانی پہ اس قدر
دیمک کہیں نہ کرسیٔ سرکار چاٹ لے
منکر جو ہو نصیر کے فضل و کمال کا
کہہ دو اُسے ، نوشتۂ دیوار چاٹ لے

(کلیات نصیر گیلانی، ص944)

## ابنِ سعود نجدی کے مظالم پر ایک نظم

ہمارے گجرات کے مشہور و معروف مزاحیہ شاعر استاد امام دین گجراتی نے ابنِ سعود نجدی کے مظالم پر ایک نظم لکھی ہے، جو پوری کی پوری حُسنِ مطلع پر مشتمل ہے اور کمال یہ ہے کہ مکرر کوئی قافیہ نہیں! ابنِ سعود اور اُس کا ظلم

نجد سے غضب کی اُٹھتی ہوا کیا ہے
مقابل جس کے آفات وبلا کیا ہے
مرا تہذیبِ حاضر پہ گِلا کیا ہے
طوفانِ بے تمیزی یہ مچا کیا ہے
گذرا واقعاتِ کربلا کیا ہے
یزید و شمر ، جور و جفا کیا ہے!
اب مکے مدینے میں رہا کیا ہے
سوا روضہ پیمبر کے بچا کیا ہے
آہ! ابنِ سعود کو سودا کیا ہے
مزارات پُرانوں میں دھرا کیا ہے
وجودِ اِس کا جہالت سے بھرا کیا ہے
گلے اِس کے طبق لعنت پڑا کیا ہے
نِشانِے پنجتن ہائے مِٹا کیا ہے
خاک واطہرِ وجودوں کا اڑا کیا ہے
کس سنگ جبر کی اچھی سزا کیا ہے
ملزموں کا بید سے پچھا کٹا کیا ہے

تجھے استاد کہتا چلبل بلا کیا ہے
کاش پوچھو کہ مدعا کیا ہے

(بانگ دہل، ص60، خزینہ علم وادب لاہور)

## شیرِ پنجاب

سلطان الوعظین حضرت مولانا ابوالنور محمد بشیر رحمۃ اللہ تعالی علیہ بڑے ظریف اور حاضر جواب تھے-
آپ کہتے ہیں کہ:
متحدہ ہندوستان کے زمانے میں اکثر دہلی جایا کرتا تھا، ایک مرتبہ فراش خانہ کے جلسۂ میلاد شریف میں گیا تو ایک دہلوی مولوی صاحب سے تعارف ہوا-دہلی والوں نے پوسٹر میں میرے نام کے ساتھ "شیرِ پنجاب" لکھا تھا اور ان مولوی صاحب کے نام ساتھ "فخر دہلی"-
ایک مجلس میں سارے احباب بیٹھے تھے، یہ پوسٹر سامنے تھا، دہلوی مولوی صاحب نے مزاحاً فرمایا:
مولانا! اگر شیر پنجاب سے "ی" اڑ جائے تو باقی کیا رہ جائے گا-
مطلب اُن کا یہ تھا کہ شیر پنجاب سے "ی" نکال دی جائے تو باقی "شر پنجاب" رہ جاتا ہے-
میں نے عرض کی: اور مولانا! اگر فخر دہلی کے فخر سے "ف" اُڑ جائے تو باقی کیا رہ جائے گا؟
(باقی "خَر" رہ جاتا ہے، خر گدھے کو کہتے ہیں)
اس لطیفے سے حاضرین بہت محظوظ ہوئے-ایک صاحب جو شاعر بھی تھے اور شاعر بھی دہلی کے؛ بڑی متانت سے بولے:
قبلہ! ان حروف "ی" اور "ف" کو اڑائیے مت، اپنے استعمال میں لائیے:
شیر کی "ی" اِن مولانا کو دے دیجیے، تاکہ یہ خر کے بیچ لگا کر "خیر" پا سکیں-
اور فخر کی "ف" آپ لے لیجیے تاکہ شر کے آگے لگا کر "شرف" حاصل کر سکیں-

## متروکات

قدیم شعرا نے اپنے کلام میں لفظ: "آگو" بھی استعمال کیا ہے، جس کا معنی ہے: آگے یا پہلے سے؛ اب یہ متروک ہو چکا ہے-
اس کی مثالیں:
میر تقی میر کہتا ہے:

خورشید تیرے چہرے کے آگو نہ آسکے

اس کو جگر بھی شرط ہے جو تاب لا سکے

مصحفی کہتا ہے:

یاں ہو رہا ہے سینہ مرا آگو ہی چھلنی
ڈھونڈے ہے کہاں تیر کو سوفار کدھر ہے

سوز دل اپنا اس کو کیا مصحفی سناؤں
آگو ہی وہ پھرے ہے کانوں میں شال باندھے

ایک لفظ ہے "باؤ"، جس کا معنی ہَوا ہے؛ یہ دور پنجم تک شعروں میں مستعمل تھا اب متروک ہو چکا ہے۔
اس کی مثالیں:
میر تقی میر کا شعر ہے:

باؤ کرتی پھرے ہے پھول نثار
گلشن دہر میں ہے تازہ بہار

میر حسن کہتا ہے:

سیکڑوں عالم دکھاتا ہے حسن دلبر کے ساتھ
ٹھنڈی ٹھنڈی باؤ اور پچھلے پہر کی چاندنی

خواجہ وزیر کا شعر ہے:

خاک میری لے اُڑ اگر اُس پری رُو کی طرف
باؤ کا جھونکا مجھے تحت رواں ہو جائے گا

## ایک انتہائی نازُک غزل.....

براہِ مہربانی احتیاط سے پڑھیے کہیں اس کی نازُکی کو ٹھیس نہ پہنچے:

رُکو تو تم کو بتائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
کلی اَکیلے اُٹھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
طبیب نے کہا ، گر رَنگ گورا رَکھنا ہے
تو چاندنی سے بچائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ بادلوں پہ کمر سیدھی رَکھنے کو سوئیں
کرن کا تکیہ بنائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں

وُہ نیند کے لیے شبنم کی قرص بھی صاحب
بغیر پانی نہ کھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
بدن کو چومیں جو بادل تو غسل ہوتا ہے
دَھنک سے غازہ لگائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ دو قدم بھی چلیں پانی پہ تو چھالے دیکھ
گھٹائیں گود اُٹھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
کلی چٹکنے کی گونجے صدا تو نازُک ہاتھ
حسین کانوں پہ لائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
پسینہ آئے تو دو تتلیاں قریب آ کر
پروں کو سُر میں ہلائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
ہَوائی بوسہ پری نے دِیا ، بنا ڈِمپل
خیال جسم دَبائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ گھپ اَندھیرے میں خیرہ نگاہ بیٹھے ہیں
اَب اور ہم کیا بجھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ گیت گائیں تو ہونٹوں پہ نیل پڑ جائیں
سخن پہ پہرے بٹھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
جناب کانٹا نہیں پنکھڑی چبھی ہے انہیں
گھٹا کی پالکی لائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
کبوتروں سے کراتے ہیں آپ جو جو کام
وُہ تتلیوں سے کرائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ پانچ خط لکھیں تو ”شکریہ“ کا لفظ بنے
ذِرا حساب لگائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
گواہی دینے وُہ جاتے تو ہیں پر اُن کی جگہ
قسم بھی لوگ اُٹھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
ہر ایک کام کو ”مختارِ خاص“ رَکھتے ہیں
سو عشق خود نہ لڑائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں

وُہ سانس لیتے ہیں تو اُس سے سانس چڑھتا ہے
سو رَقص کیسے دِکھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
بس اِس دلیل پہ کرتے نہیں وُہ سالگرہ
کہ شمع کیسے بجھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
اُتار دیتے ہیں بالائی سادہ پانی کی
پھر اُس میں پانی ملائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ سیر ، صبح کی کرتے ہیں خواب میں چل کر
وَزن کو سو کے گھٹائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
کلی کو سونگھیں تو خوشبو سے پیٹ بھر جائے
نہار منہ یہی کھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وَزن گھٹانے کا نسخہ بتائیں کانٹوں کو
پھر اُن کو چل کے دِکھائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ دَھڑکنوں کی دَھمک سے لرزنے لگتے ہیں
گلے سے کیسے لگائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
نزاکت ایسی کہ جگنو سے ہاتھ جل جائے
جلے پہ اَبر لگائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
حنا لگائیں تو ہاتھ اُن کے بھاری ہو جائیں
سو پاؤں پر نہ لگائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ تِل کے بوجھ سے بے ہوش ہو گئے اِک دِن
سہارا دے کے چلائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
کل اَپنے سائے سے وُہ اِلتماس کرتے تھے
مزید پاس نہ آئیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
وُہ تھک کے چُور سے ہو جاتے ہیں خدارا اُنہیں
خیال میں بھی نہ لائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
پری نے پیار سے اَنگڑائی روک دی اُن کی
کہ آپ ٹوٹ نہ جائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں

غزل وُہ پڑھتے ہی یہ کہہ کے قیس رُوٹھ گئے
کہ نازُکی تو بتائیں ، وُہ اِتنے نازُک ہیں
(شہزاد قیس)

## بحر طویل

بحر طویل میں میاں نظیر اکبر آبادی کا ایک شعر پیش خدمت ہے، اگر آپ باذوق ہیں تو یہ شعر پڑھیں، مزہ لیں اور زبان و بیان پر قدرت کی داد بھی دیں:

پہلا مصرع:

ایک دن باغ میں جا کر ، چشم حیرت زدہ وا کر ، جامہء صبر قبا کر ، طائر ہوش اڑا کر ، شوق کو راہ نما کر ، مرغ نظارہ اڑا کر ، دیکھی رنگت جو چمن کی ، خوبی نسرین و سمن کی ، شکل غنچوں کے دہن کی ، تازگی لالہ کے تن کی ، تازگی گل کے بدن کی ، کشت سبزے کی ہری تھی ، نہر بھی لہر بھری تھی ، ہر خیاباں میں تری تھی ، ڈالی ہر گل کی ہری تھی ، خوش نسیم سحری تھی ، سروشمشاد وصنوبر ، سنبل و سوسن وعرعر ، نخل میوے سے رہے بھر ، نفس باد معنبر ، درو دیوار معطر ، کہیں قمری تھی مطوق ، کہیں انگور معلق ، نالے بلبل کے مدقق ، کہیں غوغائی کی بق بق ، اس قدر شاد ہوا دل ، مثل غنچے کے گیا کھل ، غم ہوا کشتہ و بسمل ، شادی خاطر سے گئی مل ، خرمی ہو گئی حاصل ، روح بالیدہ ہو آئی ، شان قدرت کی دکھائی جان سی جان میں آئی ، باغ کیا تھا گویا اللہ نے اُس باغ میں جنت کو اتارا

دوسرا مصرع:

نا گہاں صحن چمن میں ، مجمع سرو وسمن میں ، جیسے ہو روح بدن میں ، جیسے ہو شمع لگن میں ، جیسے خورشید کرن میں ، ماہ پرویں وپرن میں ، دیکھا اک دل بر رعناوطرح دارجفا کار ، دل آزار نمودار ، نگہ ہمسر شمشیر ، مژہ ترکش پرتیر ، سر زلف گرہ گیر ، دل خلق کی زنجیر ، جبیں نور کی تصویر ، وہ رخ شمس کی تنویر ، زباں شہد بیاں شیر، نظر روح کی اکسیر ، دہن غنچہء خاموش ، سمن برگ بردوش ، سخن بحر گہر جوش ، بدن سرو قبا پوش ، چھڑی گل کی ہم آغوش ، وفا رحم فراموش ، ہر اک آن ستم کوش ، عجب حسن دل آرا ، نہ کبھی مہر نے دیکھا ، نہ کبھی ماہ نے دیکھا ، نہ کسی فہم میں آیا ، نہ تصور میں سمایا ، وہ نظر مجھ کو جو آیا ، مجھے حسن اپنا دکھایا ، دل نے اک جوش اٹھایا ، جی نے سب ہوش اڑایا ، سر کو پاؤں پہ جھکایا ، اشک آنکھوں سے بہایا ، اُس نے جب یوں

مجھے پایا ، یہ سخن ہنس کے سنایا ، کہ تو ہے عاشق شیدا ، لیکن عاشق نہیں پیدا ، ہووے تجھ پر یہ ہویدا ، کہ اگر ہم کو تو چاہے یا محبت کو نباہے ، نہ کبھی غم سے کراہے ، نہ کسی غیر کو چاہے نہ کبھی گل کی طرف دیکھ ، نہ سنبل کی طرف دیکھ ، نہ بلبل کی طرف دیکھ ، نہ بستاں پہ نظر کر نہ گلستاں میں گذر کر ، چھوڑدے سب کو مودّت ، ہم سے رکھ دل کی محبت ، اس میں ہم بھی تجھے چاہیں ، تجھ سے الفت کو نبا ہیں ، ہیں یہی چاہ کی راہیں ، گر یہ مقدور تجھے ہو ، اور یہ منظور تجھے ہو ، تو نظیر آج سے تو چاہنے والا ہے ہمارا

(کلیات نظیر، ص480، ر650، الفیصل لاہور)

## فراق گورکھپوری اور محسن نقوی کی دو خوب صورت غزلیں

فراق گورکھپوری اور محسن نقوی کی دو خوب صورت غزلیں پڑھیے:

دیکھ محبت کا یہ عالم
ساز بھی کم کم ، سوز بھی کم کم
یہ شیرازۂ دل کا ہے عالم
یکجا یکجا ، برہم برہم
حسن گلستاں شعلہ و شبنم
سوزاں سوزاں ، پرنم پرنم
ساکت ساکت شورش عالم
دل کی صدا بھی مدھم مدھم
عالم عالم عشق بھی تنہا
تنہا حسن بھی عالم عالم
یہ کیا کم ہے عشق کا حاصل
کچھ مجھ کو غم ، کچھ تجھ کو غم
رنگ ہے کس کا ، روپ ہے کس کا
نکھرا نکھرا ، مبہم مبہم
دل کی جراحت ، تیری محبت
ایسا زخم نہ ایسا مرہم

آتی بہاریں جاتی بہاریں
دونوں کا حاصل دیدۂ پرنم
عشق میں سچ ہی کا رونا ہے
جھوٹے نہیں تم ، جھوٹے نہیں ہم
ہم نے بھی آج فراق کو دیکھا
سوز مکمل ، درد مجسم
محسن نقوی کی غزل:
رات کی زلفیں بر ہم برہم
درد کی لَو ہے مدہم مدہم
میرے قصے گلیوں گلیوں
تیرا چرچا عالم عالم
پتھر پتھر عشق کی راتیں
حسن کی باتیں ریشم ریشم
یاقوتی ہونٹوں پر چمکیں
اُس کی آنکھیں نیلم نیلم
چہرہ لال گلاب کا موسم
بھیگی پلکیں شبنم شبنم
ایک عذاب ہے بستی بستی
ایک صدا ہے ماتم ماتم
ساری لاشیں ٹکڑے ٹکڑے
ساری آنکھیں پرنم پرنم
ہجر کے لمحے زخمی زخمی
اس کی یادیں مرہم مرہم
داد طلب اعجازِ عصمت
عیسیٰ عیسیٰ ، مریم مریم
محسن ہم اخبار میں گم ہیں

صفحہ صفحہ کالم کالم

## شوکت علی خاں فانی بدایونی کی ایک غزل

شوکت علی خاں فانی بدایونی کی ایک غزل ہے، کیفیت سے پڑھیں:

ضبط اپنا شعار تھا ، نہ رہا
دل پہ کچھ اختیار تھا ، نہ رہا
دلِ مرحوم کو خدا بخشے
ایک ہی غم گسار تھا ، نہ رہا
آ، کہ وقتِ سکونِ مرگ آیا
نالہ نا خوش گوار تھا ، نہ رہا
ان کی بے مہریوں کو کیا معلوم
کوئی اُمیدوار تھا ، نہ رہا
آہ کا اعتبار بھی کب تک
آہ کا اعتبار تھا ، نہ رہا
کچھ زمانے کو سازگار سہی
جو ہمیں سازگار تھا ، نہ رہا
اب گریباں کہیں سے چاک نہیں
شغلِ فصلِ بہار تھا ، نہ رہا
موت کا انتظار باقی ہے
آپ کا انتظار تھا ، نہ رہا
مہرباں ، یہ مزارِ فانی ہے
آپ کا جاں نثار تھا، نہ رہا

(کلیاتِ فانی، ص70، غزل نمبر82)

## الفاظ کا برمحل استعمال

الفاظ کا برمحل استعمال کلام کو جادو اثر کر دیتا ہے!

جنابِ امیر مینائی کا ایک شعر ہے:

وہ تجھے بھول گئے ، تجھ پہ بھی لازم ہے امیر
خاک ڈال ، آگ لگا ، نام نہ لے ، یاد نہ کر

آج ایک خوب صورت غزل پیش خدمت ہے، جس میں ایک نعتیہ شعر بھی ہے، آپ بہ ذوق پڑھیں اور لطف اٹھائیں:

ثبات بحرِ جہاں میں اپنا فقط مثالِ حباب دیکھا
نہ جوش دیکھا ، نہ شور دیکھا ، نہ موج دیکھی ، نہ آب دیکھا
ہماری آنکھوں نے بھی تماشا عجب عجب انتخاب دیکھا
برائی دیکھی ، بھلائی دیکھی ، عذاب دیکھا ، ثواب دیکھا
نہ دل ہی ٹھہرا ، نہ آنکھ جھپکی ، نہ چین پایا ، نہ خواب آیا
خدا دکھائے نہ دشمنوں کو جو دوستی میں عذاب دیکھا
طرب میں جس سے جانِ محزوں اُسی کو گردش وہی ہے پر خون
کہ چرخ زن مثل دورِ گردوں مدام جامِ شراب دیکھا
نظر میں ہے تیرے کبریائی سما گئی تیری خودنمائی
اگرچہ دیکھی بُہت خُدائی مگر نہ تیرا جواب دیکھا
پڑے ہوئے تھے ہزار پردے، کلیم دیکھو تو جب بھی غش تھے
ہم اُس کی آنکھوں کے صدقے جس نے وہ جلوہ یوں بے حجاب
دیکھا
یہ دل تو اے عشق گھر ہے تیرا کہ جس کو تو نے بگاڑ ڈالا
مکاں سے تا لامکاں جو دیکھا تجھی کو خانہ خراب دیکھا
سرورِ عیش و نشاط کیسی ، بدل گئے رنگ ہی جہاں کے
سنا نہ تھا کان سے جو ہم نے وہ آنکھ سے انقلاب دیکھا
جو تجھ کو پایا تو کچھ نہ پایا یہ خاکدان ہم نے خاک پایا
جو تجھ کو دیکھا تو کچھ نہ دیکھا تمام عالم خراب دیکھا
شراب غفلت سے داغ غش تھے دکھائے غفلت نے کیا تماشے
کہ سوتے سوتے جو چونک اُٹھے مگر کوئی تم نے خواب دیکھا

(داغ دہلوی)

## سمجھ کر پڑھ لیجیے

شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری نوراللہ مرقدہ کے یہ اشعار، ایک دفعہ سمجھ کر پڑھ لیجیے۔

اُلُوہِیَّت ہی احمد نے نہ پائی
نُبُوَّت ہی سے تُو عاطِل ہے یا غوث
صحابیّت ہوئی ، پھر تابِعِیّت
بس آگے قادِری منزِل ہے یاغوث
ہزاروں تابعی سے تُو فُزوں ہے
وہ طبقہ مُجْمَلًا فاضل ہے یا غوث
یہ چشتی ، سہروردی ، نقشبندی
ہر اِک تیری طرف مائل ہے یا غوث
تِری چڑیاں ہیں ، تیرا دانہ پانی
تِرا میلہ ، تِری محفل ہے یا غوث
مَشائخ میں کسی کی تجھ پہ تَفْضِیل
بحُکمِ اَولیا باطِل ہے یا غوث
خدا کے در سے ہے مَطْرُود و مَخْذُول
جو تیرا تارک و خاذِل ہے یا غوث !

## کلام محترم مقصود علی شاہ

ابھی فیس بک کھولی تو اِس نعتیہ کلام پر نظر پڑی، بہت لطف آیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔قلب پر رقت طاری ہوگئی

۔

یہ کلام محترم مقصود علی شاہ صاحب کا ہے۔
اگرچہ افاعیل سالم ہیں، لیکن بحر شیخ سعدی کے بَلَغَ العُلیٰ والی ہے۔
ذوق و شوق سے چند اشعار آپ بھی پڑھ لیجیے:

بڑی تشنگی ہے نیاز کی ، بڑی آرزو ہے غُلام کو
کوئی ایسا صیغۂ شوق دے کہ وہ لکھ سکے تِرے نام کو

تُو خیالِ عجز کے گھر میں آ ، تُو اِدھر سے آ تُواُدھر سے آ
مِری چشمِ تَر ، مِرے قلب و جان ترس رہے ہیں خِرام کو
تری دسترس میں ہیں یا نبی! مری ساعتیں ، مری چاہتیں
تُونکھار صبحِ طلب مری ، تواُجال عرصۂ شام کو
تری بارگاہِ جمال میں ، مرے نُطق و خامہ ہیں سَربَہ خَم
تُو خیال دے مِرے حَرف کو ، تُو کمال کردے کلام کو
مِری صبح صبح ہے دَم بخود ، تِرے خوابِ دید کے شوق میں
مِری رات رات ہے منتظر ، کبھی دیکھ میرے خیام کو!

## یہ بھی نہیں،وہ بھی نہیں

کل مجھ سے ایک دوست نے پوچھا:

اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ کے اس شعر کا کیا مطلب ہے۔

ڈر تھا کہ عِصیاں کی سزا ، اب ہو گی یا روزِ جزا
دی اُن کی رحمت نے صدا ، یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں

میں نے کہا:

باپ نے گھر آکر پوچھا: بیٹا کدھر ہے؟

ماں: اسے بار بار سمجھاتی ہوں، لیکن کھیلنے کودنے چلا جاتا ہے۔

باپ: میں اسے کر ٹھیک لیتا ہوں، ذرا آ لینے دو۔

بیٹا کھیل کود کے گھر آیا اور ڈر اڈر ا بستر پر لیٹ گیا کہ پتا نہیں اب کیا ہو گا۔

باپ: ابھی سو گیا ہے، صبح ہو لینے دو، اس کی خبر لیتا ہوں!

بیٹا ڈر بھی رہا تھا اور سوچ رہا تھا:

اگر سزا ملنی ہوتی تو ابھی مل جاتی، صبح پہ ٹالی نہ جاتی؛ لگتا ہے کل جب سورج طلوع ہو گا تو ماں کی سفارش کام آجائے گی۔

پھر یہی ہوا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!

صبح طلوع ہوئی تو ماں کہنے لگی: میرے آقا بچہ تھا، غلطی ہو گئی، معاف کر دیں!

باپ: میں اسے سخت سزا دیتا، لیکن تیری خاطر معاف کر دیتا ہوں۔

بلا تمثیل و تشبیہ، جن امتوں کو عذاب دینا تھا ان کے دنیا میں چہرے بگاڑ دیے گئے، تختے الٹ دیے گئے، نام و نشان مٹا دیے

گئے ،انھیں گناہوں کی پاداش میں اسی وقت ہلاک کر دیا گیا۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اپنے پیارے کی امت کو معاف کرنا تھا، اسے دنیا میں عذاب میں مبتلا نہ فرمایا۔

اور۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

امیدِ رحمت کہتی ہے:

جب صبحِ قیامت ہوگی ،ہم ڈرے ڈرے ، سہمے سہمے حاضرِ بارگاہ ہوں گے تو رحمتِ عالم کا صدقہ اس وقت بھی بخش دیے جائیں گے۔

ڈر تھا کہ عِصیاں کی سزا ، اب ہو گی یا روزِ جزا
دی اُن کی رَحمت نے صدا ، یہ بھی نہیں وہ بھی نہیں !!

اللہ مجھے معاف کرے، میں نے کیا کہ دیا

## اقبال کی بعض شاعری

فکری اعتبار سے بہت بلند ہے۔

ایسی شاعری ہر دور میں ہونی چاہیے، یہ قوم میں بیداری کا سبب بنتی ہے۔

آج شُعرا تو بڑی تعداد میں موجود ہیں، لیکن شاعری "فکر" سے یکسر خالی ہے۔ دیکھیے! اقبال نے لکھی تو غزل، لیکن کس انداز میں:

مِلے گا منزِلِ مقصود کا اُسی کو سُراغ
اندھیری شب میں ہے چِیتے کی آنکھ جس کا چَراغ
مُیسر آتی ہے فُرصت فقط غلاموں کو
نہیں ہے بندۂ حُر کے لیے جہاں میں فَراغ
فَروغِ مَغربِیاں خِیرہ کر رہا ہے تجھے
تری نظر کا نگہباں ہو " صاحبِ مَازَاغ " ﷺ
وہ بزمِ عیش ہے مہمان ، یک نفس دو نفس!
چمک رہے ہیں مثالِ ستارہ جس کے اَیاغ
کِیا ہے تجھ کو کتابوں نے کَور ذَوق اتنا
صبا سے بھی نہ ملا تجھ کو بُوئے گُل کا سراغ !!

## اشعار کے معنی

شیخ شرف الدین احمد یحییٰ منیری رحمہ اللہ کہتے ہیں:

اشعار کے معنی کا کوئی طریقہ معین نہیں ہے۔

سننے والے کے دل میں جو معنی ہیں، جب وہ شعر سنتا ہے تو اُس میں اپنے حال کی مناسبت سے معنی سمجھتا ہے۔

اور اِس کی مثال آئینے سے دی گئی ہے کہ:

آئینے میں صورت کے منعکس ہونے کی کوئی مُتعین شکل نہیں ہے، کہ آئینہ جو بھی دیکھے، ایک معین صورت نظر آئے؛ بلکہ وہ جو بھی دیکھے گا، اپنی ہی صورت کا عکس دیکھے گا۔

اِسی طرح اشعار میں ہے کہ:

جو بھی سنتا ہے، اپنے انداز کے مطابق سنتا ہے؛ اس کے دل میں جو مثال ہے، اُسی پر شعر کے معنیٰ لیتا ہے۔

(شعر شور انگیز، ج1، ص20، ط اظہار سنز لاہور، س2013ء)

## خَطِّ تَوَام

لکھنے کے انداز کو "خَطّ" کہتے ہیں۔

خَطّ کی مختلف قسمیں ہیں، جن میں ایک قسم "خَطِّ تَوَام" بھی ہے۔

خط توام میں جو لکھائی کی جاتی ہے اُس کے لیے ایک نہیں، دو ورقے استعمال ہوتے ہیں، جن پر الفاظ کا ایک ایک حصہ لکھا جاتا ہے، اور تحریر کے ارد گرد نَقش و نِگار بنا دیے جاتے ہیں۔

دیکھنے والا پہلی نظر میں دیکھ کر انھیں نقش و نگار ہی سمجھتا ہے، لیکن جب دونوں ورقے ملا کر غور کرتا ہے تو پھر اُس پر عُقدہ کھلتا ہے کہ یہ تو خط توام میں ترتیب دی گئی تحریر ہے۔

حدیث پاک میں ہے:

امام حَسَن رضی اللہ عنہ سر سے لے کر سینے تک رسول اللہ ﷺ سے مشابہت رکھتے تھے، اور امام حسین رضی اللہ عنہ سینے سے نچلے حصے میں رسول اللہ کے مُشابِہ تھے۔ (ترمذی شریف، ر3779)

امام عشق و محبت، سیدی اعلیٰ حضرت کہتے ہیں ؎

صاف شکلِ پاک ہے دونوں کے ملنے سے عِیاں
خَطِّ تَوَام میں لکھا ہے یہ دو وَرقہ نُور کا

خط توام کی تعریف آپ کو اچھی طرح ذہن نشین ہو گئی، آپ نے حدیث پاک بھی پڑھ لی، اور شعر بھی ملاحظہ کر لیا۔

اب شعر سمجھیے!

حسن وحسین پاک کو ہر ایک نے اپنی اپنی نظر سے دیکھا، اور اپنے اپنے لہجے میں بیان کیا۔
لیکن جب میں نے دیکھا تو اش اش کر اٹھا کہ: "یہ تو نور کے دو ورقے ہیں، جن پر "خط توام" میں شکل مصطفیٰ بنائی گئی ہے۔"
اس شکل پاک کو سمجھنے کے لیے دونوں ورقے ملانا ضروری تھا، جس کا شعور اللہ کریم جَلَّ جَلَالُہٗ نے صرف اہل سنت کو بخشا۔
اسی شعور سے اہل سنت نے جب نور کے دونوں ورقوں (حسن وحسین پاک) کو، عقیدے کے پاکیزہ ہاتھوں سے ملایا، تو انھیں رُخِ پاک صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا نظارا ہو گیا؛ پھر انھوں نے کبھی بھی ان ورقوں کو نظروں سے اوجھل نہیں ہونے دیا۔

صاف شکلِ پاک ہے دونوں کے ملنے سے عِیاں
خَطِّ تَوَام میں لکھا ہے یہ دو وَرقہ نُور کا

## اقبال مرحوم کا ایک دعائیہ کلام

اقبال مرحوم کا ایک دعائیہ کلام ہے۔

یا ربّ! دلِ مُسلِم کو وہ زندہ تمنا دے
جو قلب کو گرما دے ، جو رُوح کو تڑپا دے

اِس کا ایک شعر ہے۔

بھٹکے ہوئے آہُو کو پھر سُوئے حَرَم لے چَل
اِس شہر کے خُوگر کو پھر وُسعتِ صَحرا دے

فارسی زبان میں ہَرَن کو آہُو کہتے ہیں۔ آہو کئی خوبیوں کا مالک ہوتا ہے، جن میں ایک تیز رفتاری بھی ہے۔
کہا جاتا ہے:
ہَرن 90 کلومیٹر فی گھنٹے کی رفتار سے بھی دوڑ سکتا ہے۔ (واللہ اعلم)
تیز دوڑنا اگرچہ ہَرن کی فطرت کا حصہ ہے، لیکن اسے تیز دوڑنے کے لیے صحرا (یعنی ایسا کھلا میدان) چاہیے، جہاں نہ کوئی درخت ہو، نہ کوئی فصل ہو، نہ کوئی روک رکاوٹ۔۔۔۔۔۔
ہُوا یہ کہ:
ہرن صحرا کا راستہ بھول کر شہر میں آگھسا، یہاں اِسے طرح طرح کی رکاوٹوں کا سامنا کرنا پڑا، جنھوں نے اس کی دوڑ کو تباہ کر دی۔
یہ بے چارہ دوڑنا چاہتا تھا، لیکن شہر کی بندشوں میں دوڑ نہیں سکتا تھا۔
آپ بخوبی جانتے ہیں کہ گاڑی جتنی مرضی تیز رفتار ہو، روڈ کے بغیر دوڑ نہیں سکتی؛ اُس کی تیز رفتاری سے اُسی صورت محظوظ ہوا جا سکتا ہے جب وہ صاف ستھرے روڈ پر فراٹے بھرے، راستے میں کوئی روک رکاوٹ نہ ہو۔

اب شعر سمجھیے!

مسلمان ایک ہَرَن کی طرح تھا، جس کی دنیا جہان فتح کرنے کی رفتار بہت تیز تھی، لیکن یہ بھٹک گیا۔

صحرائے حرم (اسلامی فکر کے میدان) کی طرف جانے کے بجائے، شہر (فرنگی فکر) کی طرف جا نکلا، جہاں اِسے طرح طرح کی رکاوٹیں (فیشن، عیاشی، بے راہ روی، مایوسی، غلامی، بزدلی وغیرہ) پیش آئیں، جنھوں نے اس کی دوڑ کو تباہ کر دی۔

افسوس اس پر بھی ہے کہ ایسا کیوں ہوا! لیکن.....

اس سے زیادہ افسوس اس پر ہے کہ:

یہ آہُو شہر کا خُوگر (عادی) ہو کر، اپنے صحرا کا راستہ بھول بیٹھا۔

اے میرے رب! میں اس بھٹکے ہوئے آہو کی فریاد کس سے کروں.....!!

میرے مالک! تجھی سے عرض ہے کہ اِس ؎

بھٹکے ہوئے آہُو کو ، پھر سُوئے حَرَم لے چل
اس شہر کے خُوگر کو پھر وسعتِ صحرا دے

## شاعر ڈرپوک ہوتے ہیں

ایک دوست کَہنے لگے: شاعر ڈرپوک ہوتے ہیں۔ میں نے کہا: ایسی بات نہیں، شاعروں میں بڑے بڑے بہادر گزرے ہیں۔

حیدر کرار سمیت، ایسے بہت سے صحابہ علیہم الرضوان شاعر بھی تھے، جنھوں نے کافروں کے چھکے چھڑا دیے۔

مرد تو ایک طرف، سیدہ خَولہ بنت اَزور رضی اللہ عنھا عورت تھیں، اور زبردست شاعرہ تھیں؛ لیکن بہادر اتنی کہ:

آپ کو کافروں سے لڑتا دیکھ کر، سیدنا خالد بن ولید سمیت کئی صحابہ حیران رہ گئے۔

شاعری انسان کو ڈرپوک نہیں بناتی، اس کے جذبات میں خلوص بھر دیتی ہے؛ اسے اپنوں سے محبت اور وفا کرنا سکھا دیتی ہے۔

## شعرائے فیس بک کے حضور!

فیس بک پر ہمارے معزز شعرا نے کچھ عرصے سے یہ انداز اختیار فرما لیا ہے کہ:

جب کوئی کلام لکھتے ہیں تو "حسبِ آمد" پہلے ایک ایک شعر پوسٹ کرتے ہیں، پھر سارا کلام یکجا پوسٹ کرتے ہیں۔

ہماری کیا مجال جو ان کے حضور لب کشائی کی جسارت کریں۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ہمیں اچھی طرح معلوم ہے کہ:

شاعر کو اپنا کلام اولاد کی طرح پیارا ہوتا ہے۔ بس ادب کے ساتھ اتنی سی عرض کرتے ہیں کہ:

اگر آپ اپنا کلام شعر شعر شیئر کرنے کے بجائے، ایک ہی دفعہ پوسٹ کر دیا کریں تو زیادہ مناسب ہو گا۔ کیوں کہ ایک ہی دفعہ

شیئر کرنے سے:

1: آپ کا کلام پڑھنے والا، ایک ہی بار مکمل پڑھ کر، کامل طور پر محظوظ ہو سکے گا۔

2: آپ کی پوسٹ سے بے اعتنائی نہیں برتی جائے گی، بلکہ آپ کے کلام کو بہ نظرِ تحسین دیکھا جائے گا۔

3: جب آپ کی وال مکررات کے بوجھ تلے نہیں دبے ہوگی تو اسے دیکھنے والا (وزٹ کرنے والا) اکتائے بغیر، تھوڑے وقت میں زیادہ کچھ حاصل کر سکے گا۔

4: یہ چیز آپ کی دانش مندی پر دلالت کرے گی، اور دیکھنے والے کو احساس ہوگا کہ آپ اپنے لفظوں کی نمائش کا بے جا شوق نہیں رکھتے، بلکہ الفاظ کو شعر میں ڈھال کر حسن پیدا کرنے کا ملکہ رکھتے ہیں۔

5: آپ جانتے ہوں گے کہ:

جس طرح کچھ اشعار مل کر محظوظ کن ہو جاتے ہیں، ہر "فرد" یا "شعر" اس طرح نہیں ہوتا۔

آپ الفاظ کی تقدیم و تاخیر، فصل و وصل، ایجاز و اطناب، استعارہ و کنایہ سے، کلام میں جو بلاغت پیدا کرتے ہیں اور انھیں نئے معانی بلیغ دیتے ہیں، اسے یوں فیس بک پر ضائع نہ کریں بلکہ ایک لڑی میں پرو کر قارئین کو پیش کیا کریں؛ تاکہ کسی شعر میں رہ جانے والی کمی کو دوسرا شعر چھپا لے اور آپ کا سارا کلام ہی خوب صورت لگے۔

ان معروضات سے ناراض نہ ہوں، اور نہ انھیں تنقیدی سمجھیں؛ یہ تعمیری گفتگو ہے جو آپ کے پڑھنے والوں کے دل کی آواز ہے۔

ہر اک بات زباں سے کہی نہیں جاتی
جو چُپکے بیٹھے ہیں ، کچھ اُن کی بات بھی سمجھو
میں رہ رہا ہوں زمانے میں سائے کی صورت
جہاں بھی جاؤ ، مجھے اپنے ساتھ ہی سمجھو

## حیدر علی آتش

سُخن شناس حُسنِ کلام میں مرزا غالب کی مثالیں دیتے ہیں، جب کہ حیدر علی آتش بھی غالب سے کچھ کم نہیں۔

اہلِ ذوق آتش کی ایک غزل کے چند اشعار ملاحظہ فرمائیں اور حسنِ بیان کے ساتھ ایک ہی غزل میں مضارع، متقارب، متدارک اور بسیط کا لطف اٹھائیں۔

بوسہ دِیے سے حُسن میں ہوگی کمی نہ یار
ہوتا نہیں زکوٰۃ سے نُقصان مال کا
روزِ سیاہ ہِجر میں میرے جلے چراغ

پروانوں کو نصیب ہوا دن وصال کا
شانہ بَنیں گے بعدِ فنا اپنے اُستخواں
عُقدہ کھلے گا گیسوؤں کے بال بال کا
کِس کس بَشَر کو لائی ہے دنیا فریب میں
کیا کیا جواں مُرید ہے اُس پیرِ زال کا
اے دل ! قضا نہ آئے ، اُدھر ٹِکٹکی نہ باندھ
گولی کا سامنا ہے یہ نظارہ خال کا
رونے کے بدلے حال پر اپنے ہنسا کیے
پردہ ہوا نہ فاش ہمارے ملال کا
آتشؔ لحد سے اٹھوں گا کہتا یہ روزِ حشر
مشتاق ہوں میں یار کے حسن و جمال کا

## امیر خسروؔ

بحرِ ہَزَج مُثَمَّن سالَم میں حضرت امیر خسروؔ کے کلام ۔

نَمی دانم چہ منزل بُود ، شَب جای کہ مَن بُودَم
بَہ ہر سُو رَقصِ بِسمل بُود ، شب جای کہ مَن بُودَم

اور حضرت عطّارؔ کے اس کلام کا اپنا ہی ایک لطف ہے ۔

بلا لو پھر مجھے اے شاہِ بحرو بَر مدینے میں
میں پھر روتا ہوا آؤں تِرے دَر پر مدینے میں
میں پہنچوں کوئے جاناں میں گریباں چاک ، سینہ چاک
گِرا دے کاش ! مجھ کو شوق تڑپا کر مدینے میں
مدینے جانے والو جاؤ ، جاؤ فی امانِ اللہ
کبھی تو اپنا بھی لگ جائے گا بستر مدینے میں
وہاں اک سانس مل جائے یہی ہے زِیست کا حاصل
وہ قسمت کا دھنی ہے ، جو گیا دم بھر مدینے میں
نہ دولت دے ، نہ ثروت دے ، مجھے بس یہ سعادت دے
تِرے قدموں میں مرجاؤں میں رو رو کر مدینے میں

مدینہ اس لیے عطّار جان و دل سے ہے پیارا
کہ رہتے ہیں مِرے آقا ، مِرے سرورمدینے میں

# (10) دسواں باب: واقعات و حکایات

یہ باب مختلف قسم کے واقعات اور حکایات پر مشتمل ہے۔

## حضرت ابوہریرہ کی دعا

سیدنا ابوہریرہ رضی اللہ عنہ نے ایک دفعہ دعا مانگی:

اے اللہ مجھے نہ بھولنے والا علم عطا فرما۔ تو سرکار دوعالم ﷺ نے آمین کہا۔

اُس آمین کی برکت تھی کہ سیدنا ابوہریرہ نے پانچ ہزار تین سو چوہتر (5374) حدیثیں بیان کر دیں۔

جن صحابی رضی اللہ عنہ کی دعا پر رسول اللہ "آمین" کہیں، ان کے علم کا یہ عالم ہو۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، تو جنھیں رسول اللہ ﷺ ہادی و مہدی ہونے کی "دعا" دیں ان کی ہدایت کا کیا عالم ہو گا!!

وہ دعا جس کا جوبَن بہارِ قبول
اُس نسیمِ اِجابَت پہ لاکھوں سلام

## ظالم کا احتساب

بغداد کی جیل سے بیس مجرموں کو نکال کر پھانسی گھاٹ لے جایا گیا، تو اُن میں سے ایک بھاگ نکلا۔ پولیس نے تعاقب کیا لیکن اسے پکڑنے میں ناکام رہی۔ ڈیوٹی پر مامور پولیس افسر بہت پریشان ہوا اور اپنے ساتھیوں سے کہنے لگا: بڑا افسر کوئی عذر قبول نہیں کرے گا، وہ یہی کہے گا کہ میں نے کچھ رشوت لے کر اسے بھگا دیا ہے اور مجھے دھر لے گا۔

ایک سپاہی نے کہا: صاحب! ہمیں بھاگ جانا چاہیے۔ کہنے لگا: رات کے اس پہر بھاگ کر کہاں جائیں گے!!

پھر کچھ سوچ بچار کے بعد کہنے لگا: یہ آدھی رات کا وقت ہے کسی کو کیا معلوم، کیا پیش آیا۔ تم میرے ساتھ آؤ، کوئی نہ کوئی بدبخت مل جائے گا جسے پکڑ کر سولی پر لٹکا دیں گے، اور 20 کی تعداد پوری ہو جائے گی۔ چناں چہ وہ سپاہیوں کو ساتھ لے کر پُل کے مغربی کنارے کی طرف چل دیا۔ انھوں نے دیکھا کہ ایک آدمی پل کے قریب رفع حاجت کے لیے بیٹھا ہوا ہے۔ وہ اس کی طرف لپکے اور اسے جا دبوچا۔ اس نے شور مچانا شروع کر دیا کہ تمھیں کیا ہو گیا، میں تو ملاح ہوں ابھی کشتی سے پیشاب کرنے اترا ہوں، میری تمھاری کوئی دشمنی نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ لیکن پولیس والے اسے مارتے جاتے اور کہتے تو وہی ہے جو سولی سے بھاگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اور اسے لا کر سولی پر کھڑا کر دیا۔ وہ ساری رات چیختا چلاتا رہا۔ اس کی آہ و بکا سے بعض پولیس والوں کے دلوں میں رحم پیدا ہوا لیکن ان کے پاس کوئی چارہ نہیں تھا۔

جب صبح پھانسی کا وقت ہوا تو بڑا افسر آ گیا، لوگ بھی جمع ہو گئے۔ افسر سزا کا حکم جاری کرنے لگا تو مَلّاح پھر چلّا کر کہنے لگا: اے افسر، اللہ کے حضور پیش ہونے سے ڈر اور میری بات سن! میں اُن مجرموں میں سے نہیں ہوں، جنھیں تو نے پھانسی کے لیے جیل سے نکالا تھا، "انا مظلوم وقد وقعت بی حیلۃ" میں ایک مظلوم ہوں، میرے ساتھ چال چلی گئی ہے۔ افسر نے اسے سولی سے اتارا اور پوچھا:

تیرا کیا معاملہ ہے؟ اس نے ساری بات سچ سچ بتا دی۔

افسر نے پولیس والوں کو بلا کر پوچھا تو انھوں نے صاف انکار کر دیا اور کہا: آپ نے جو بیس آدمی ہمارے سپرد کیے تھے یہ انھی میں سے ایک ہے۔

افسر نے کہا: تم لوگوں نے پیسے لے کر اصل مجرم چھوڑ دیا اور اس کی جگہ اس غریب کو لا کھڑا کیا!

پھر اس نے ملاح کے علاوہ سب کی گردنیں اڑا کر حکم دیا: جیلروں اور پہرے داروں کو پیش کرو!

وہ جب حاضر ہوئے تو اس نے پوچھا:

کیا یہ شخص اُنھی بیس مجرموں میں سے ہے جنھیں پھانسی کے لیے ہم نے جیل سے نکالا تھا؟

انھوں نے بہ غور دیکھنے کے بعد کہا: نہیں! افسر نے کچھ سوچ کر ملاح کو آزاد کر دیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

پھر کہنے لگا: اسے میرے سامنے لاؤ!

پولیس نے جب اسے دوبارہ پیش کیا تو افسر نے پوچھا:

تم آدھی رات کو وہاں کیا کر رہے تھے؟

کہنے لگا: میں اپنی کشتی میں سویا تھا، پیشاب نے زور کیا تو وہاں اترا۔

پولیس افسر کچھ دیر سوچنے کے بعد کہنے لگا:

مجھے سچ سچ بتاؤ تم وہاں کیا کر رہے تھے تاکہ تمھیں چھوڑ دوں۔

ملاح نے جب کوئی نئی بات نہ بتائی تو افسر نے اپنے مخصوص طریقے سے اسے سب کچھ اگلنے پر مجبور کر دیا۔

ملاح نے کہا: اللہ تم پر گواہ ہے، اگر میری جان اور اعضا سلامت رہیں تو سچ بتاؤں؟ اس نے کہا: بولو!

کہنے لگا: میں ملاح ہوں فلاں پَتَّن پر کام کرتا ہوں۔

کل رات ایک خادم میرے پاس آیا، اُس نے مجھے کرایہ دیا اور ایک خوب صورت عورت کو دو بچیوں سمیت میرے حوالے کرتے ہوئے کہا: انھیں بابِ شَمّاسِیَہ تک چھوڑ آؤ۔ میں انھیں کشتی میں بٹھا کر چل پڑا۔ کچھ فاصلہ طے کرنے کے بعد خاتون نے چہرے سے نقاب ہٹایا تو مجھے ایسے لگا کہ وہ لوگوں میں سب سے زیادہ حسین ہے اور اس کا چہرہ چاند جیسا ہے۔ مجھ پر شہوت نے غلبہ کیا تو میں نے چپو رکھ دیا اور کشتی کو دریائے دجلہ کے درمیان لے گیا۔ پھر عورت کی طرف ہاتھ بڑھایا تو وہ چیخنے لگی۔ میں نے قسم کھا کر کہا: اگر تو چیخے چلّائے گی تو میں تجھے ابھی دریا بُرد کر دوں گا۔ وہ خاموش تو ہو گئی لیکن مجھے خود سے دور کرنے لگی۔

جب بڑی کوشش کے بعد بھی میں اس پر قابو نہ پا سکا تو میں نے پوچھا: یہ بچیاں کون ہیں؟

کہنے لگی: میری بیٹیاں ہیں۔ میں نے کہا: تم خود کو میرے سپرد کرنا پسند کرو گی یا انھیں دریا میں پھینک دوں؟

اس نے کہا: جو چاہے کرو، لیکن میں تمھارے قریب نہیں آؤں گی۔

میں نے اس کی ایک بیٹی کو دریا میں پھینک دیا۔

اس نے چیختے ہوئے کہا: اللہ کی قسم میں تیری بات نہیں مانوں گی، چاہے تو مجھے قتل کر دے!
میں نے کہا: میری بات مان لو ورنہ دوسری بچی کو بھی پھینک دوں گا۔
اس نے کہا: اللہ کی قسم میں ایسا نہیں کروں گی!
میں نے اس کی دوسری بیٹی کو بھی پانی میں پھینک دیا۔
اس نے زوردار چیخ ماری تو میں نے چلّا کر کہا: اگر تُو نے میری بات نہ مانی تو تجھے بھی مار دوں گا۔
پھر میں اسے ہاتھوں سے پکڑ کر دریا میں پھینکنے لگا تو اس نے (ڈر کے مارے) ہاں کر دی۔
جب میں اس کے ساتھ بدکاری کر چکا، تو خیال آیا اگر اسے زندہ چھوڑ دیا تو یہ اپنے گھر والوں سے مجھے قتل کروا دے گی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تو اسے بھی ہاتھ پاؤں باندھ کر دریا میں پھینک دیا۔
یہ سب کچھ کرنے کے بعد میں بہت شرمندہ ہوا اور میری حالت اس شخص جیسی ہو گئی جو نشے سے ہوش میں آ گیا ہو۔ میں نے اپنی کشتی بصرے کی طرف چھوڑ دی تاکہ مجھے کوئی بھی پہچان نہ سکے۔ جب میں پُل کے پاس پہنچا تو پیشاب آ گیا اور میں کشتی روک کر پیشاب کرنے بیٹھا ہی تھا کہ اِنھوں نے مجھے گرفتار کر لیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
پولیس افسر نے ملاح کی بات سن کر حکم دیا: اس کے ہاتھ کاٹ دو!
ملاح نے کہا: آپ نے مجھے امان نہیں دی تھی؟ کہنے لگا: اے کتے تیرے جیسے کو امان دی جاتی ہے!!
تُو نے تین قتل کیے، زنا کیا اور اپنی خباثت کو چھپایا۔
پھر اس کے ہاتھ پاؤں کاٹ کر اس کی گردن بھی کاٹ دی اور جسم کو آگ لگا دی۔
(ملخصًا: ذم الھوی، الباب الرابع والاربعون، فی ذکر من حملہ العشق علی قتل الناس، ص 318 تا 320، رقم 1030، دارالکتاب العربی بیروت 1424ھ)
ظالم کسی نہ کسی دن، کسی نہ کسی طرح گرفت میں آ ہی جاتے ہیں۔
علما کو ناحق جیلوں میں بند کرنے والے، نہتے شہریوں کو دن دیہاڑے بھون دینے والے، لوگوں کی املاک تباہ کرنے والے ظالم بھی انجام کو پہنچ کر رہیں گے، انشاء اللہ تعالیٰ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

## حلوہ

کئی سال پہلے ایک بزرگ نے مجھے یہ کہانی سنائی تھی:
پرانے زمانے کی بات ہے، ایک قوم اپنے بادشاہ کا اس طرح انتخاب کرتی کہ جب موجودہ بادشاہ مر جاتا تو اس کی موت کو مخفی رکھا جاتا، اور اگلے دن جو شخص سب سے پہلے پایہ تخت میں داخل ہوتا اسے بادشاہ تسلیم کر لیتے۔
ایک دفعہ بھوک کا مارا ایک فقیر صبح سویرے کاسہ لیے شہر میں داخل ہوا، تو اسٹیبلش منٹ نے اسے مسند شاہی سونپ دی۔

فقیر نے تاجِ شاہی پہنا تو سب نے جُھک کر سلامی دی، اور کہا: عالم پناہ! اب آپ سیاہی سفیدی کے مالک ہیں، جو حکم دیں گے سب اس کی تعمیل کریں گے۔ اس نے کہا اچھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، تو میں حکم دیتا ہوں: حلوہ بنایا جائے!

فوراً تعمیل ہوگئی۔ بادشاہ سلامت نے جی بھر کر حلوہ کھایا، اور دل ہی دل میں بہت خوش ہوئے کہ کبھی وہ وقت تھا سات گاؤں مانگ کر بھی حلوہ میسر نہ آتا، اور اب ایک حکم پر حلوے کے تھال۔ بادشاہ سلامت جان گئے کہ بادشاہی حلوہ کھانے کا نام ہے، اور یہی معمول بنالیا۔ جب بھی کوئی اہم مہم درپیش ہوتی، فوراً حلوہ بنواتے۔ دو تین ماہ ایسے ہی گزر گئے۔

ایک دن بیٹھے حلوے کا سوچ رہے تھے کہ جنرل صاحب حاضر ہوئے اور عرض کی: عالم پناہ! دشمن کی فوجیں کوچ کر چکی ہیں، ہمارے لیے کیا حکم ہے؟ کہنے لگے: فوراً حلوہ تیار کرواؤ، خود بھی کھاؤ، فوج کو بھی کھلاؤ۔ کچھ دیر بعد سپہ سالار دوبارہ حاضر ہوا اور عرض کی: عالی جاہ! دشمن کی فوجیں شہر پناہ کے بالکل قریب آچکی ہیں۔ فرمانے لگے: کوئی بات نہیں، حلوہ تیار کرواؤ!

جب دشمن کی فوجیں شہر میں داخل ہونا شروع ہوگئیں تو پھر عرض کی گئی:

بادشاہ سلامت! کچھ تدبیر کریں، دشمن شہر میں داخل ہو رہا ہے۔

بادشاہ سلامت فرمانے لگے: بس حلوہ بناؤ۔

جب دشمن پایہ تخت پر قبضہ جما چکا تو بادشاہ سلامت نے فقیرانہ لباس پہنا، کاسہ پکڑا اور خفیہ راہ داریوں کی طرف چل پڑے۔ وزیر نے پوچھا: عالی جاہ رعایا کس کے آسرے پر چھوڑ کر جا رہے ہو؟

کہنے لگے: میں نے حلوہ کھانا تھا، خوب کھا لیا؛ جو بچ گیا ہے وہ مزے مزے سے تم کھاؤ؛ رہ گئی رعایا تو اسے اس کے حال پر چھوڑ دو، وہ جانے اور اس کا کام! بادشاہ سلامت! ملکی معیشت ڈوب رہی ہے، کیا کیا جائے؟

سرحدیں کھول دو! سرکار! بیرونی ممالک سے امداد نہیں مل رہی کیا کیا جائے؟

علما کو جیلوں میں بند کر دو! جناب عالی! مہنگائی عروج پر پہنچ گئی، ڈالر کی قیمت آسمان سے باتیں کرنے لگی، کچھ تدبیر فرمائیں۔

مرغیاں پالو، انڈے بیچو! عالی جاہ! مرغیاں اور انڈے وحشت ناک بِلوں سے رعایا کو کیسے نجات دلائیں گے؟ بلوں کو چھوڑو، بل گیٹس کی مانو!

بس! حلوہ حلوہ حلوہ حلوہ!!!

## چینی کی جگہ نمک

قبلہ پیر صاحب رحمت اللہ علیہ اپنے مرید فضل داد کے گھر گئے، اس نے کھانے میں بُوڑما پیش کیا لیکن غلطی سے چینی کی جگہ نمک ڈال دیا۔ (چینی یا شکر ملے گرم دیسی گھی کو پنجابی میں بوڑما کہتے ہیں)

جب کھانا شیخ کی خدمت میں پیش کیا تو آپ نے بڑی خوشی سے تناول فرمایا۔
بعد میں فضل داد کو معلوم ہوا تو اسے بہت دکھ ہوا۔
فوراً حاضر خدمت ہو کر دست بستہ عرض کرنے لگا:
حضور! ایک برتن میں چینی پیس کر رکھی تھی اور دوسرے میں نمک؛ گھر والوں نے بھول کر چینی کی جگہ نمک ڈال دیا۔
چوں کہ آپ کا کھانا تھا، چکھنا بے ادبی سمجھا اس لیے معلوم نہ ہو سکا۔
سرکار غلطی ہو گئی کرم فرمائیں، معاف کر دیں!
آپ نے اسے سینے سے لگا لیا اور کہنے لگے: میاں فضل داد تم نے غلطی نہیں کی، بہت اچھا کیا؛ میٹھا کھا کھا کے منھ کا ذائقہ بدل گیا تھا آج نمک کھانے کا بہت مزہ آیا۔ اللہ اللہ، اب ایسے مربی کہاں سے ڈھونڈ کر لائیں!

نشانِ راہ دکھاتے تھے جو ستاروں کو
ترس گئے ہیں کسی مردِ راہ داں کے لیے
نِگہ بلند، سُخن دل نواز، جاں پُرسَوز
یہی ہے رختِ سفر میرِ کارواں کے لیے

## سورت لہب کی تلاوت

آج ہمارا ہمسایہ محمد احسان قضائے الٰہی سے انتقال کر گیا، اللہ پاک مغفرت فرمائے!
مرحوم مذہبی اعتبار سے سیدھا سادھا انسان تھا، پچھلے ربیع الاول شریف میں مرحوم نے اپنے گھر محفل میلاد کا اہتمام کیا، میں حاضر ہوا تو کہنے لگا: میں فلاں مسجد میں نماز تراویح پڑھنے جایا کرتا، وہ امام صاحب وتروں میں روزانہ سورت لہب پڑھتے تھے، میں نے انھیں کہا:
قاری جی آپ روزانہ وہ سورت کیوں پڑھتے ہیں جس میں ابولہب کا نام آتا ہے، اور کوئی سورت نہیں آتی آپ کو!
ایسی سورتیں پڑھا کرو جن میں میرے پاک نبی کی شانیں بیان کی گئی ہوں۔

مرحوم کی بات سن کر میں ہنس پڑا، میں نے کہا:
محمد احسان سورت لہب بھی در حقیقت نبی پاک کی شان ہے، اس میں اللہ تعالی نے دشمن رسول ابولہب اور اس کی بیوی کی جو مذمت کی ہے وہ حضور ہی کی خاطر کی ہے۔ نیز وہ امام صاحب شاید سورت لہب بہ طور وظیفہ پڑھتے ہوں، کیوں کہ جو بندہ وتروں کی پہلی رکعت میں سورت نصر، دوسری میں سورت لہب اور تیسری میں سورت اخلاص پڑھتا ہے وہ دانتوں کی تکلیف سے محفوظ رہتا ہے۔
میری بات سن کر احسان کچھ مطمئن ہوا۔ کہنے لگا میں سمجھتا تھا جیسے حضرت عمر کے زمانے میں ایک آدمی سورت عبس پڑھا

کرتا تھا یہ بھی اسی طرح سورت لہب پڑھتا ہے۔ میں نے کہا ایسی بات نہیں ہوگی۔
اللہ کریم مرحوم کو بے حساب بخش دے، اس کے تمام صغیرہ کبیرہ گناہ معاف فرمائے!

## مشیر

حضرت لقمان رحمہ اللہ ایک اسرائیلی کے غلام تھے۔
اُس نے کسی سے چَوسَر کھیلتے وقت یہ شرط لگائی کہ جو ہار گیا وہ ساری نہر پانی کی پیے گا یا فدیہ ادا کرے گا۔
اتفاق سے وہ خود ہار گیا۔
اب جیتنے والے نے کہا میاں اپنی شرط پوری کر، پانی پی یا فدیہ دے!
اس نے پوچھا: فدیہ کیا ہوگا؟
کہنے لگا: تیری دونوں آنکھیں نکالوں گا یا جو کچھ تیرے پاس ہے اس پر قبضہ کروں گا۔
اس نے کہا مجھے ایک دن کی مہلت دے۔ اس نے مہلت دے دی۔ اب یہ بہت پریشان ہوا کہ کیا کرے۔

حضرت لقمان رحمہ اللہ لکڑیاں لے کر جب گھر پہنچے تو اسے پریشان دیکھ کر پوچھا: کیا ہوا؟
پہلے تو اس نے ٹال مٹول سے کام لیا لیکن جب آپ نے کہا: مجھے بتاؤ، ہو سکتا ہے تمھاری مشکل حل کر دوں۔
تو اس نے آپ کو سارا ماجرا کہہ سنایا۔ آپ نے فرمایا:
اس میں غمگین ہونے والی کون سی بات ہے، میرے پاس اس کا حل موجود ہے۔
اس نے کہا وہ کیا؟ کہنے لگے: جب وہ آپ سے پانی پینے کا مطالبہ کرے تو اُسے کہنا:
لمبائی سے پیوں (یعنی جہاں سے نہر شروع ہوتی ہے وہاں سے پیوں) یا چوڑائی سے؟
لازماً وہ چوڑائی کا کہے گا (کیوں کہ جہاں سے نہر شروع ہوتی ہے وہاں تک پہنچنا مشکل کام ہے)۔
اب اسے کہنا: لمبائی سے پانی روکو تاکہ میں چوڑائی سے پینا شروع کروں (کیوں کہ جب تک پانی رکے گا نہیں میں کیسے ساری نہر ختم کروں گا)۔
یہ کام اس سے کبھی نہیں ہو سکے گا اور اس طرح آپ بَری ہو جائیں گے۔
اس نے حضرت لقمان کی یہ تدبیر سنی تو خوش ہو گیا۔ اگلے دن جیتا ہوا شخص آکر کہنے لگا: میری شرط پوری کرو گے؟
اس نے کہا ہاں! بس یہ بتاؤ کہ پانی لمبائی سے پینا ہے یا چوڑائی سے؟
اس کے کہا لمبائی سے نہیں، چوڑائی سے پیو۔
کہنے لگا ٹھیک ہے، چوڑائی سے پیتا ہوں؛ لیکن پہلے لمبائی سے پانی روکو تاکہ میں دونوں کناروں سے پی سکوں (اگر پانی روکو گے نہیں، تو سارا نہیں پیا جائے گا اور شرط نامکمل رہ جائے گی)۔

وہ (پریشان ہوگیا اور) کہنے لگا: یہ تو ممکن ہی نہیں! بس اسی تدبیر سے حضرت لقمان کا آقا اُس پر غالب آگیا اور پھر (اسی خوشی میں) آپ رحمہ اللہ کو آزاد بھی کر دیا۔

(ملخصًا وملتقطًا: الاذکیا لابن جوزی، الباب السادس فی سیاق المنقول من ذلک عن امم السالفۃ، ص22، ط دار الفکر بیروت، س1425ھ)

اگر آج بھی کسی کو حضرتِ لقمان جیسا دانا مشیر مل جائے تو ہر مسئلے کا بہ آسانی حل نکل سکتا ہے!

## شیر کا بچہ

شیر کا بچہ پیدا ہوتے ہی ماں باپ سے بچھڑ گیا، جب اس کی آنکھ کھلی تو ارد گرد بکریوں کا ریوڑ تھا؛ وہ انھی میں پلا، بڑھا، جوان ہوا۔ بکریوں کی صحبت نے اسے بکری بنا دیا؛ بکریوں کے ساتھ گھاس پھوس کھاتا، بکریاں بھیڑیے کو دیکھ کر بھاگتیں تو یہ بھی بھاگ کھڑا ہوتا۔

ایک دن ایک شیر چراگاہ کی طرف آنکلا، اُس نے جب اپنے ہم جنس کو بکریوں کے ساتھ چرتے دیکھا تو بڑا حیران ہوا اور حیرانی اس وقت مزید بڑھی جب اُسے دیکھ کر بکریوں کے ساتھ یہ بھی بھاگ کھڑا ہوا۔ شیر نے کہا یہ اصل میری، نسل میری، شکل میری؛ اس کی عادتوں کو کیا ہوگیا! ضرور اِسے بکریوں کی صحبت نے خراب کر دیا ہے۔

کیوں نہ اسے بتایا جائے کہ تو کون ہے، کہاں سے آیا ہے، کیوں آیا ہے۔

شیر اس بچے کو کان سے پکڑ کر پانی کے چشمے پر لے گیا اور کہا اندر جھانکو۔ اس نے پانی میں جب اپنی شکل وصورت دیکھ لی تو شیر نے اس کے کان پر منھ رکھ کے گرج دار آواز نکالی، جس نے اس کا دماغ کھول دیا؛ اور اسے معلوم ہوگیا کہ میں کون ہوں، کیا ہوں!!

چودہ اگست کو معرض وجود میں آنے والے اسلامی ملک کی فوج شیر کی اولاد تھی، اس نے اصلی ونسلی شیر (پاکستان) کی کوکھ سے جنم لیا، لیکن بکریوں (امریکہ وبرطانیہ وغیرہ) کے ریوڑ نے اس کے عادات واطوار خراب کر دیے؛ یہ بھول گئی میں کون ہوں، کیا ہوں!

اب کئی سالوں بعد خادم حسین رضوی نامی ایک شیر کا ادھر سے گزر ہوا ہے، جو اِسے بدر وحنین کے چشمے پر کھڑا کر کے منھ دکھانا اور گرج دار آواز میں سمجھانا چاہتا ہے کہ تو کون ہے، کیا ہے!!

اگر یہ سمجھ گئی تو بھیڑیوں (گستاخان رسول) سے ڈر کر بھاگے گی نہیں، بلکہ اِس کی گرج دار آواز (بندوقیں، میزائل، جہاز) گیرٹ ولڈرز جیسے بھیڑیوں کا پتا پانی کر دے گی۔ خدا کرے یہ سمجھ جائے!!

## امریکہ بہادر

مولانا جلال الدین رومی لکھتے ہیں:

ایک شیر، بھیڑیا اور لومڑی شکار کی طلب میں پہاڑ پر پہنچے، اور گائے، بکری، خرگوش کا شکار کیا۔
شیر نے بھیڑیے سے کہا: تو پرانا ہے، اِنھیں انصاف سے تقسیم کر، تاکہ تیرا تجربہ معلوم ہو سکے۔
بھیڑیا کہنے لگا: بادشاہ سلامت! یہ گائے آپ کے لیے، کیوں کہ یہ بڑی ہے اور آپ بھی بڑے ہیں، شہ زور ہیں۔

بکری درمیانی ہے (میں بھی درمیانہ ہوں) اس لیے یہ میری ہوئی، اور خرگوش لومڑی صاحبہ کا ہوا (کیوں کہ ان کا قد ہم دونوں سے چھوٹا ہے)؛ میرا تو یہی درست فیصلہ ہے!
شیر نے اُس کی کھوسٹ تقسیم دیکھی تو چراغ پا ہو گیا، کہنے لگا:

شیر گفت ای گرگ چون گفتی بگو
چون کہ من باشم تو گویی ما و تو
گفت پیش آ ای خری کاو خود بدید
پیشش آمد پنجہ زد او را درید

او بھڑیے یہ کیا بکتا ہے، جب میں موجود ہوں تو میرے تیرے کی کیا بات؛ او خود پسند گدھے آگے آ! جب بھیڑیا آگے آیا، تو شیر نے پنجے سے اسے چیر پھاڑ دیا۔
اس کے بعد لومڑی کی طرف رخ کیا اور کہا، تُو تقسیم کر! لومڑی سجدے میں گر گئی اور عرض کی:
یہ موٹی تازی گائے میرے بادشاہ کا ناشتہ ہو گا، بکری دوپہر کو یخنی کے لیے استعمال فرمائیے گا اور خرگوش شام کے کھانے میں۔ شیر اس تقسیم پر بہت خوش ہوا اور کہا:

گفت ای روبہ تو عدل افروختی
این چنین قسمت ز کی آموختی
از کجا آموختی این ای بزرگ
گفت ای شاہ جہان از حال گرگ

تو نے انصاف روشن کر دیا؛ اے عقل مند لومڑی! بتا یہ عمدہ تقسیم تو نے کہاں سے سیکھی ہے؟
عرض کرنے لگی: اے شاہِ جہاں، بھیڑیے کے انجام سے!

گفت چون در عشق ما گشتی گرو
ھر سہ را برگیر و بستان و برو

شیر کہنے لگا:
جب تو میرے عشق میں اس طرح گم ہے تو یہ تینوں تیرے ہوئے، انھیں قبضے میں کر اور چلتی بن!
(دیکھیے: مثنوی معنوی، دفتر اول، ص 115، 116، 117، ط تھران، س 1387)

امریکہ بہادر اس وقت شیر بنا بیٹھا ہے، جو ملک بھیڑیے کی طرح حکومتی معاملات تقسیم کرنے کی کوشش کرتے ہیں، انھیں انجام تک پہنچا دیتا ہے؛ اور جو لومڑی کا کردار ادا کرتے ہے ان پر نوازشات کی بارشیں ہوتی ہیں۔
اِس خون خوار کو پچھاڑنے کے لیے، موجودہ سیاسی بھیڑیوں اور لومڑیوں کی نہیں، سلطان ایوبی جیسے شیروں کی ضرورت ہے!!

## بابُل کی چُوڑیاں

مجھے بازار میں ایک بچی ملی، جو بڑے غور سے چوڑیوں والی دکان کی طرف دیکھ رہی تھی، میں نے سوچا شاید چوڑیاں لینا چاہتی ہے لیکن پیسے نہیں۔
میں اس کے قریب گیا۔ بیٹی! آپ کون سی چوڑیاں پہنیں گی؟
اُس نے میری بات کا کوئی جواب نہ دیا۔
میں نے ایک چوڑی سیٹ اٹھا کر اسے پہنانا چاہا تو مجھے دکان دار نے کہا:
بھائی! یہ بچی چوڑیاں نہیں پہنے گی۔ میں نے پوچھا کیوں؟
دکان دار: کچھ دن پہلے بم دھماکہ ہوا تھا، جس میں اِس کے والد بھی مارے گئے۔
وہ دراصل گھر سے اِسی کے لیے چوڑیاں لینے آئے تھے۔ اِس نے شام تک بابا کا انتظار کیا لیکن بابا نہ آئے۔
شام کے وقت اطلاع ملی کہ بم نے دیگر بے گناہوں کے ساتھ اُن کے بھی پرخچے اڑا دیے ہیں؛ گھر میں صف ماتم بچھ گئی، اِس نے والدہ سے پوچھا:
امی! بابا جی ابھی تک میری چوڑیاں لے کر کیوں نہیں آئے؟؟
ماں نے روتے ہوئے کہا بیٹی! وہ کبھی نہیں آئیں گے۔
بیٹی: کیوں امی جان؟ ماں: بیٹی وہ گھر کا راستہ بھول گئے ہیں۔
یہ بچی خاموش ہوگئی، اس کے بعد تین دن تک آتے جاتے مہمانوں کو دیکھتی رہی، کوئی اِسے پیار کرتا تو کوئی آنسو بہاتا۔
تیسرے دن ظہر کے وقت یہ میری دُکان پر آئی اور پوچھنے لگی:
چچا جان! آپ کے پاس میرے بابا چوڑیاں لینے آئے تھے؟
میں سمجھ گیا اور میرے آنسو بہنے لگے۔ بچی نے دوبارہ پوچھا: چچا جان بتائیں ناں؟
میں نے اس کے سر پر ہاتھ پھیرتے ہوئے کہا: بیٹی آتے ہی ہوں گے!
اُس دن سے لے کر آج مہینہ ہونے کو ہے، یہ روزانہ آکر پوچھتی ہے۔ چچا جان میرے بابا چوڑیاں لینے نہیں آئے!!
میں اسے کئی بار کہہ چکا ہوں، گڑیا آؤ میں آپ کو چوڑیاں پہناؤں لیکن یہ نہیں مانتی؛ کہتی ہے بابا چوڑیاں لائیں گے تو پہنوں

گی.....نہ جانے میرے وطن کی کتنی معصوم بچیوں نے بابُل کی چوڑیوں کا انتظار کیا، لیکن.....نہ بابل آیا، نہ چوڑیاں!!

## لال رومال والا وہابی

لال رومال والے صاحب مسجد نبوی شریف میں ایک حاجی کا تعویذ پکڑ کر پوچھ رہے تھے یہ کیا ہے؟
وہ کہہ رہا تھا: اس میں قرآنی آیتیں لکھی ہیں، جو شفا اور برکت کے لیے پہن رکھی ہیں!

اِس پر طنزیہ انداز میں کہتے ہیں: قرآن پڑھنے میں شفا اور برکت ہے، پہننے اور لٹکانے میں نہیں؛ تعویذ رسول اللہ نے کبھی نہیں پہنے یہ بدعت ہے۔
میں نے کہا: جناب! یہ جو قرآنی آیات مسجد نبوی کی دیواروں پر لکھی ہیں، کیا یہ سنت ہیں؟ کیا رسول اللہ ﷺ نے لکھیں؟
اللہ نے قرآن دیواروں پر لکھ کر برکت حاصل کرنے کے لیے اتارا ہے یا تلاوت کر کے ہدایت حاصل کرنے کے لیے؟
پھر آپ نے واش رومو ں کی سیڑھیوں پر سگریٹ نوشی کی حرمت پہ جو یہ آیت چسپاں کی ہے:
"وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ"
اور (وہ نبیِ اُمی) ان کے لیے پاکیزہ چیزیں حلال فرماتے اور گندی چیزیں ان پر حرام کرتے ہیں۔
تو کیا نبی علیہ السلام نے سگریٹ نوشی بھی حرام فرمائی؟
آپ کو کس نے اختیار دیا کہ اس آیت کو سگریٹوں کی حرمت پر چسپاں کریں؟
کیا یہ بدعت سیئہ نہیں کہ آیت کو غیر محل میں ایسے معنی کے لیے بیان کیا جائے جس سے اس کا دور کا بھی تعلق نہیں؟؟
پھر کچھ نہ پوچھیے!! بس یہ محاورہ دہرا لیجیے جو بڑے بوڑھے سناتے تھے:
"پانہ پڑھی، وَخت نوں پھڑی"

## شیخ سعدی اور ایک سائل

شیخ سعدی کہتے ہیں:

بر درِ کعبہ سائلے دیدم
کہ ہمی گفت و میگریستے خوش

میں نے خانہ کعبہ کے دروازے پر ایک سائل کو دیکھا جو بول رہا تھا اور زار و قطار رو رہا تھا کہہ رہا تھا:

می نگویم کہ طاعتم بپذیر
قلمِ عفو بر گناہم کش

میرے اللہ، میں یہ تو نہیں کہتا میری عبادت قبول فرما، صرف اتنی عرض کرتا ہوں کہ میرے گناہوں پر معافی کا قلم پھیر دے!

(کلیات سعدی، باب دوم در اخلاق درویشاں، حکایت 2، ص 83، ناشر انتشارات پیام عدالت تہران، 1387ھ)

## دو باتیں

### پہلی بات:

جہاں تک یاد پڑتا ہے، یہ واقعہ کئی سال پہلے مجھے ایک ریٹائرڈ فوجی نے سنایا تھا کہ:

کچھ جوانوں کو پِٹھو کی سزا ملی، گرمی کا موسم تھا، جوں ہی سزا ختم ہوئی سارے دوڑے دوڑے نل کے پاس آئے.....، پانی پی کر پیاس بجھائی۔

دُور کھڑکی سے ایک کرنل اُن کی حرکات و سکنات بہ غور دیکھ رہا تھا، اُس نے ایک جوان کو بلا کر پوچھا:

تم نے ہاتھ، منھ دھو کر پانی منھ میں ڈالا اور کلی کر دی، پیا کیوں نہیں؟

جوان: سر! میرا روزہ ہے۔

کرنل: کیا تمھیں پیاس نہیں لگی؟

جوان: لگی ہے۔

کرنل: پھر تم پانی پی لیتے تو کیا ہرج تھا؟

جوان: سر میں اللہ تعالیٰ کے حکم کا پابند ہوں، غروب آفتاب سے پہلے پانی نہیں پی سکتا۔

کرنل: تمھارے روزے کے متعلق کسی کو کچھ پتا نہیں تھا، تمھیں پانی پی لینا چاہیے تھا۔

جوان: سر! میں نے جس کے لیے رکھا ہے وہ سب کچھ جانتا ہے!!

اِس جواب نے، غیر مسلم کرنل کو اتنا متاثر کیا کہ وہ کچھ دنوں بعد مسلمان ہو گیا۔

### دوسری بات:

میرے چچا جی کی عمر ساٹھ سال کے قریب ہے۔

پرسوں وہ مجھے بتا رہے تھے: میں صاحب ترتیب ہوں، میری زندگی میں نہ کوئی نماز قضا ہے، نہ روزہ —

سنہ 1982ء میں منڈی بہاؤالدین رینجر کی ٹریننگ لے رہا تھا، تو جولائی کے روزے آ گئے، جو میں نے دوران ٹریننگ بھی پورے ذوق و شوق سے رکھے۔

میں نے سخت ڈیوٹی کے دوران، رات کے ایک دو بجے بھی، دریائے راوی کے پانی سے وضو کر کے نمازِ عشا ادا کی ہے، کبھی قضا نہیں کی —

نیکی کرنے والے نیکی کر لیتے ہیں، ان کے راستے میں کوئی چیز رکاوٹ نہیں ہوتی۔
اللہ کریم ہمیں بھی استقامت اور خلوص کے ساتھ اچھے اعمال کرتے رہنے کی توفیق عطا فرمائے!

## حماقت کی تعریف

امیر شہر کا پرندہ اڑ گیا تو اس نے حکم دیا:
"شہر کا دروازہ بند کر دیا جائے"
(اخبار الحمقی والمغفلین لابن جوزی، الباب الاول فی ذکر الحماقۃ ومعناھا، ص 28، دار الکتاب العربی بیروت، 1427ھ)
اس کا مقصد تھا: پرندہ پکڑنا۔ لیکن.....اس نے جو طریقہ اختیار کیا وہ غلط تھا—
پرندہ کبھی چل کر شہر سے نہیں نکلا، اڑتا ہوا شہر چھوڑتا ہے!
اب حماقت کی تعریف یہ ہوگی:

**هو الغلط فی الوسیلة والطریق الی المطلوب مع صحة المقصود۔**

مقصد صحیح ہونے کے باوجود، مطلوب تک پہنچنے کے لیے غلط راستے اور ذریعے کا انتخاب کرنا۔ (ایضًا)
اسے مزید آسان لفظوں میں یوں سمجھیے کہ:
سیدنا علی پاک کی محبت و نظرِ شفقت حاصل کرنا ہر بندۂ مومن کا مقصود ہے؛ اللہ کریم کسی مسلمان کو اس سے محروم نہ کرے —!
لیکن.....اس کے لیے صحابیِ رسول سیدنا معاویہ پاک یا دیگر صحابہ رضوان اللہ علیہم اجمعین کی تنقیص غلط راستہ ہے۔
اس غلط راستے سے صحابہ و تابعین، ائمہ مجتہدین، اولیا صالحین اور علماے ربانیین مسلمانوں کو ہمیشہ روکتے رہے ہیں!!
میری یہ بات صرف عقل مند سمجھیں گے، رہے احمق؛ تو بہ قول امام جعفر صادق:
احمق کو اَدَب سکھانا ایسے ہی ہے جیسے اَندرائن کی جڑوں میں پانی ڈالنا؛ کہ اُسے جتنا پانی دو گے اُتنی کڑوی ہوگی۔

## سرخ موزے والا

امام شعبی رحمہ اللہ کہتے ہیں:
شیر بیمار ہو گیا، سارے جانور بیمار پرسی کے لیے آئے مگر لومڑی نہ آئی۔
بھیڑیا کہنے لگا: اے بادشاہ! آپ بیمار ہوئے، تمام جانور عیادت کے لیے آئے لیکن لومڑی نہیں آئی۔
شیر نے کہا: جب وہ آئے تو ہمیں اطلاع دی جائے!

لومڑی کو پتا چل گیا کہ بھیڑیے نے میری شکایت کی ہے۔
وہ آئی تو شیر نے پوچھ گچھ کی.....، کہنے لگی:
مجھے جوں ہی آپ کی بیماری کی اطلاع ملی، میں دوا کی تلاش میں مصروف ہوگئی تھی (اسی وجہ سے حاضری میں تاخیر ہوئی)۔
شیر: پھر کوئی چیز ملی؟
لومڑی: مجھے کہا گیا ہے بھیڑیے کی پنڈلی میں ایک دانہ ہے اسے نکال لیجیے (وہ اس بیماری میں بہت مفید رہے گا)۔
شیر نے بھیڑیے کی پنڈلی پر پنجہ مارا.....، لومڑی ایک طرف ہٹ کر راستے میں جا بیٹھی۔
جب بھیڑیا اس کے پاس سے، خون آلود ٹانگ کے ساتھ گزرا تو کہنے لگی:
او سرخ موزے والے! آئندہ جب بادشاہ کے پاس بیٹھا تو اس بات کا خیال رکھنا کہ تیرے سر سے کیا نکل رہا ہے۔
(یعنی جو ذہن میں آئے فوراً منھ سے نہ نکال دینا، سوچ سمجھ کر بات کرنا)
(ملخصًا: الاذکیا لابن جوزی، ص224، الباب الثالث والثلاثون، دارالفکر بیروت، 1425ھ)
ویسے آج کل کے خطیبوں کو بھیڑیے کے انجام سے ضرور عبرت حاصل کرنی چاہیے.....، جو اِن کے دماغ میں آتا ہے بغیر سوچے سمجھے اگل دیتے ہیں!

## بری موت

اَبدال، اولیاء اللہ کی وہ قسم ہے جس کی برکت سے بارش برستی اور دشمنوں پر فتح حاصل ہوتی ہے۔
ثقہ محدث امام محمد بن عبد الملک بھی اپنے زمانے کے ابدال تھے، آپ فرماتے ہیں:
میں نے خواب میں سرکار دوعالم ﷺ کی زیارت کی، آپ کے ساتھ خلفاے اربعہ اور حضرت معاویہ رضی اللہ عنھم بھی تھے۔ آپ ﷺ کے پاس راشد کندی نامی ایک شخص آیا تو حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے عرض کی:
یارسول اللہ! یہ ہماری تنقیص کرتا ہے۔
سرکار نے اُسے جھڑکا تو وہ کہنے لگا: یارسول اللہ! میں اِن کی نہیں، صرف معاویہ کی تنقیص کرتا ہوں۔
نبی پاک ﷺ نے (اس کے منھ سے یہ الفاظ سن کر) تین مرتبہ فرمایا:
ویلک اولیس من اصحابی۔ تیرا ناس ہو جائے، کیا معاویہ میرے صحابی نہیں!
پھر آپ ﷺ نے سیدنا معاویہ کو نیزہ دے کر فرمایا: یہ اس کے سینے میں مارو!
آپ رضی اللہ عنہ نے اسے نیزہ دے مارا۔
حضرت محمد بن عبد الملک رحمہ اللہ صبح راشد کندی کے گھر پہنچے تو معلوم ہوا وہ مر گیا ہے، اسے رات کو کسی نے ذبح کر دیا تھا۔
(انظر: البدایة والنهایة. ترجمة معاویة وذکر شیئ من ایامه.....ج8، ص149، داراحیاء التراث العربی بیروت، 1408ھ۔ مختصر

تاریخ دمشق، معاویۃ بن صخر.....ج25، ص76، دارالفکر دمشق، 1420ھ۔)

ہم اللہ تعالیٰ سے عافیت کا سوال کرتے ہیں، رب تعالیٰ ہمیں راشد کندی جیسی فکر اور بری موت سے محفوظ رکھے؛ ہمارا خاتمہ ایمان واسلام اور محبت صحابہ واہل بیت پر فرمائے!

## یااللہ مجھے ایسا بنادے!

عارف باللہ امام عبدالوہاب شعرانی رحمۃ اللہ علیہ لکھتے ہیں:

سیدنا عمرو بن عاص اور سیدنا خالد بن ولید رضی اللہ عنھما کے درمیان کوئی معاملہ تھا۔

سیدنا خالد کے سامنے سیدنا عمرو کا ذکر ہوا تو آپ نے ان کی بہترین الفاظ سے تعریف کی۔ کہا گیا: حضور وہ تو آپ کو پسند نہیں کرتے! آپ نے فرمایا: ہمارا معاملہ ہمارے دین تک نہیں پہنچا۔

(یعنی ہمارا اختلاف دنیاوی ہے، دینی نہیں کہ میں بھی ان کو ناپسند کروں)

الحمدللہ! میں (عبدالوہاب شعرانی) اُن فُقَراوعُلَما کے مناقب بیان کرتا ہوں، جو مجھ سے دشمنی وحسد رکھتے ہیں۔

"میں انھیں دیکھتا ہوں، اپنی ذات کو نہیں دیکھتا۔

یہی وجہ ہے کہ اپنے نفس کی تسکین کے لیے کسی مسلمان سے عداوت نہیں رکھتا!

اور میں سمجھتا ہوں یہ عنایتِ الٰہی کی دلیل ہے۔"

بعض مخالفین نے میرے قتل کی کوشش کی، بعض نے مصر سے نکالنے کی، اور بعض نے میری کتابوں میں مسلکِ اہل سنت کے خلاف عقائد داخل کرکے مصر وحجاز میں شائع کیے؛ بعض نے وزیرِ مصر سے میرے متعلق ایسی باتیں کیں جنھیں کوئی مومن زبان پر نہیں لاسکتا۔

لیکن.....مَیں نے طبقات العلماء والصوفیہ میں ان کا بہت اچھے انداز سے ذکر کیا، اور اس کے برعکس برتاؤ کیا جیسا وہ میرے ساتھ کرتے تھے۔ تمام تعریفیں اُس پروردگار کے لیے ہیں جس نے ہمیں اس خُلقِ محمدی کا نمونہ بنایا، اور ہمیں ان لوگوں میں سے کیا جو برائی کا بدلہ برائی سے نہیں دیتے بلکہ عفوودرگذر سے کام لیتے ہیں۔

(ملتقطاً: تنبیہ المغترین، ص252، مرکز اھل سنت برکات رضا ھند، 1427ھ)

آج میں نے امام شعرانی کی یہ تحریر پڑھی تو دعا کی: اے میرے پاک پروردگار مجھے بھی ایسا بنادے!

## مفکر

ایک جلد ساز تھا، جو کوئی اُسے جلد بندی کے لیے کتاب دے کر جاتا یہ اُس سے چند سطریں کھرچ کر اپنی طرف سے کچھ اضافہ کردیتا، اور نیچے "از مفکر اسلام" لکھ کر اپنے دستخط کردیتا- جب کتاب لینے والا آتا تو اُسے کہتا اِس میں یہ یہ غلطی تھی

جس کی میں نے تصحیح کر دی!

ایک آدمی "مفکر صاحب" کے پاس قرآن پاک لے کر آیا اور کہا:

حضور! یہ لاریب کلام ہے، اس میں کوئی قطع و برید نہ کرنا، بس جلد بندی کر دینا۔

لیکن مفکر صاحب کا دماغی کیڑا انھیں کب بیٹھنے دیتا تھا—

جب وہ صاحب قرآن پاک واپس لینے آئے تو مفکر صاحب کہنے لگے یار بات سن! جب میں نے پہلا پارہ کھولا تو اس میں شیطان لعین کا نام لکھا تھا، میں نے کہا یہ بدبخت نبیوں رسولوں کا دشمن ادھر! میں نے اس کا نام کھرچ دیا۔

جب آگے بڑھا تو فرعون لکھا تھا، میں نے سوچا یہی وہ بدبخت ہے جس نے بے گناہ بچے قتل کروائے، موسیٰ علیہ السلام کو ستایا، بنی اسرائیل پر ظلم کیے؛ میں نے اس کا نام بھی مٹا دیا۔

جب تیسویں پارے پر پہنچا تو حد ہو گئی! وہاں دشمن خدا ابولہب کا نام لکھا تھا—میں نے وہ بھی مٹا دیا۔

اُس نے کہا: تیرا بیڑا غرق ان جگہوں پر کیا لکھ دیا؟

کہنے لگا: فکر نہ کر ان کی جگہ تیرا اور تیرے باپ دادے کا نام لکھ دیا ہے۔

(منقول از سلطان الواعظین مولانا ابوالنور محمد بشیر رحمہ اللہ، خلاصہ)

کیا اس طرح کا کوئی مفکر ہمارے زمانے میں بھی پایا جاتا ہے؟؟

## فہمِ رسا کی پہنچ

امامِ اعظم رحمہ اللہ سے ایک مخالف نے پوچھا: آپ اُس شخص کے بارے میں کیا کہتے ہیں جو:

1: نہ جنت کی امید رکھتا ہو

2: نہ دوزخ سے ڈرتا ہو

3: نہ اُسے خوفِ خدا ہو۔

4: وہ مردار کھاتا ہو

5: بغیر رکوع و سجود نماز پڑھتا ہو

6: بغیر دیکھے گواہی دیتا ہو

7: حق کو ناپسند کرتا ہو

8: فتنے سے محبت رکھتا ہو

9: رحمت سے بھاگتا ہو

10: اور یہود و نصاریٰ کو سچا سمجھتا ہو۔

آپ نے پوچھا:
کیا تجھے ایسے شخص کے بارے میں معلوم ہے؟
اُس نے کہا نہیں! لیکن یہ سمجھتا ہوں کہ اس سے بُرا کوئی نہیں —
امام صاحب نے اپنے شاگردوں سے پوچھا: ایسے آدمی کے بارے میں تم کیا کہتے ہو؟
اُنھوں نے عرض کی:

"شر هذا الرجل هذه صفة كافر"
ایسا شخص بہت برا ہے، یہ تو کافرانہ صفات ہیں-

امام صاحب مسکرا دیے اور فرمانے لگے:

"هو من اولياء الله تعالىٰ حقا"
ایسا شخص تو اللہ کے سچے ولیوں میں سے ہے-

پھر (سوال کرنے والے سے) فرمانے لگے: اگر میں تجھے بتادوں تو تُو میری مخالفت سے باز آجائے گا اور جو چیز (غیبت وبہتان وغیرہ) تیرے لیے نقصان دہ ہے، اُس سے بچا رہے گا؟
اس کے کہا: ہاں- فرمایا: (پھر سن!)

1: وہ (جنت سے نہیں) جنت کے رب سے امید رکھتا ہے،
2: (دوزخ سے نہیں) دوزخ والے رب سے ڈرتا ہے
3: اللہ تعالیٰ سے اس لیے بے خوف ہے کہ وہ اپنی سلطنت میں اُس پر ظلم نہیں کرے گا-
4: مچھلی کھاتا ہے جو مری ہوتی ہے
5: نماز جنازہ اور نبی علیہ السلام پر درود پڑھتا ہے
6: وہ گواہی دیتا ہے کہ اللہ کے سوا کوئی معبود نہیں اور سیدنا محمد ﷺ اس کے بندے اور رسول ہیں
7: وہ اللہ تعالیٰ کی فرماں برداری کے لیے موت کو ناپسند کرتا ہے جب کہ یہ حق ہے
8: مال اور اولاد سے محبت کرتا ہے جو فتنہ ہیں
9: بارش سے بھاگتا ہے جو کہ رحمت ہے
10: یہودیوں کی اِس بات کی تصدیق کرتا ہے کہ: عیسائی کچھ نہیں، اور عیسائیوں کی اس بات کو سچا سمجھتا ہے کہ: یہودی کوئی شے نہیں-
(یہ جوابات سن کر) وہ شخص کھڑا
ہو گیا اور امام کے سرِ انور کو بوسہ دے کر کہنے لگا:

"اشھد انك علی الحق"

میں گواہی دیتا ہوں آپ حق پر ہیں۔

(الخیرات الحسان فی مناقب الامام الاعظم.....، لابن حجر ہیتمی، م 973ھ، الفصل الثانی والعشرون.....، ص 63، 64، ط دارالکتب العلمیہ بیروت 1403ھ)

امام صاحب کی اِس گفتگو سے کئی سبق ملتے ہیں، لیکن میں سرِدست اس پر میں کوئی تبصرہ نہیں کرتا؛ آپ اِسے اپنی فہم کے مطابق ہی سمجھ کر نتیجہ نکالیں۔

البتہ ایک آپ بیتی سُنا دیتا ہوں:

کئی ماہ پہلے مجھے یہی گفتگو سنانے کے بعد ایک "نومولود محقق" نے کہا تھا: "دیکھیے جی امام صاحب مسئلہ تکفیر میں کس قدر محتاط تھے"

میں نے اُسے کہا: میاں صاحب زادے! جہاں تم بول رہے ہو میں وہاں پہنچ گیا ہوں —

امام صاحب نے فتویٰ دینے سے پہلے اپنے شاگردوں سے پوچھا تو انھوں نے کہا: ایسا شخص غلط ہے۔

یہ شاگرد امام اعظم کے شاگرد تھے جو عام نہیں بلکہ علم و فضل کے بادشاہ تھے؛ اِس کے باوجود امام نے اُن کی بات کو رد کر دیا، تو امام کے علم و فضل کے آگے سبھی شاگرد خاموش ہو گئے اور آج بھی تمھارے سمیت ساری دنیا خاموش ہے، آخر کیوں؟؟

کہنے لگا: شاگردوں کو پتا تھا کہ امام نے اپنی فہم و ذکا سے وہاں تک رسائی حاصل کر لینی ہے جہاں تک ہم نہیں پہنچ سکتے۔

میں نے کہا:

سیدی اعلیٰ حضرت نے جب بہ دلائل صحیح و صریح کچھ لوگوں کو گستاخی رسول کی بِنا پر کافر کہا اور اسماعیل دہلوی کی تکفیر سے کف لسان کیا تو اِس سے بھی علما نے سمجھ لیا کہ آپ اپنی عقل رسا اور فہم و ذکا سے وہاں تک پہنچے ہیں جہاں تک ناقص عقلیں نہیں پہنچ سکتیں۔

اِسی لیے اُس وقت سے لے کر آج تک کے ائمہ اہل سنت یہی تسلیم کرتے ہیں کہ اعلیٰ حضرت کی تفہیم و تشریح بالکل درست ہے!!

## بے عقل رِپورٹر

نوکر نے بیٹھک میں آکر خبر دی:

چوہدری صاحب! آپ کی بیٹی ڈرائیور کے ساتھ چلی گئی۔

کچھ دیر بعد آکر کہنے لگا: صاحب جی غلطی ہو گئی.....وہ تو کسی کام گئی تھی، واپس آگئی ہے۔ چوہدری نے کہا:

"میری بیٹی اُسی وقت نکل گئی تھی جب تُو نے آکر خبر دی"

(یعنی تو نے بھرے مجمعے میں جو کہہ دیا تھا؛ اب اگر غلط بھی ہو تو کیا فرق پڑتا ہے، میری عزت کا جنازہ تو اُسی وقت نکل گیا تھا)

پیر صاحب نے اگر غلط کہا ہے تو ڈاکٹر صاحب کے "رپورٹر" اُسے سوشل میڈیا پر اچھال کر نوکر والا کردار ادا کر رہے ہیں۔
اگر یہ اہل سنت کے عظیم تر مفاد میں خاموش ہو جائیں اور اسے قابل اعتنا ہی نہ سمجھیں، یا عقل سے کام لیتے ہوئے ڈاکٹر صاحب کے موقف کی ایسی بھرپور تائید کریں کہ پیر صاحب کو بھی ماننا پڑے کہ ڈاکٹر صاحب درست ہیں، تو کیا یہ بہتر نہیں!!
پیر صاحب کے دھرنے کی بھی مخالفت ہوئی تھی لیکن اُنھوں نے مخالفت کی طرف دھیان دینے کے بجائے اپنے دھرنے پر بھرپور توجہ دے کر مخالفوں کو بھی موافق بنالیا۔ اے کریم مالک، ہمیں عقلِ کامل عطا فرما!!

## مصیبت

سمجھ داری یہ ہے کہ جب انسان پر مصیبت آئے تو وہ پریشان ہونے کے بجائے، مصیبت سے بھی فائدہ حاصل کرے۔

امام سرخسی کو اندھے کنویں میں قید کر دیا گیا تو آپ نے علمِ فقہ پر مشتمل بیس جلدیں لکھ دیں۔
امام ابن اثیر کو بٹھا دیا گیا تو آپ نے جامع الاصول اور النہایہ لکھ دیں؛ جو علم حدیث میں مشہور و نافع کتابیں ہیں۔
امام ابن جوزی کو بغداد سے نکالا گیا تو اُنھوں نے سات قراتوں کے قواعد تیار کر دیے۔
مالک بن الریب کو بخار چڑھا جو مرض الموت بھی ثابت ہوا، تو اُس نے وہ زبردست قصیدہ لکھ دیا جو عباسی شعرا کے پورے دواوین کے برابر ہے۔
ابوذؤیب ہذلی کا بیٹا مر گیا تو اُس نے وہ شان دار مرثیہ لکھا جس نے زمانے کو خاموش کر دیا، لوگ اَش اَش کر اٹھے اور تاریخ داد دیے بغیر نہ رہ سکی۔

(ملخصاً: لا تحزن، عائض القرنی، اصنع من الليمون شرابا حلوا، ص 31، مكتبة العبيكان الرياض، 1428ھ)

آپ جب کسی مصیبت میں مبتلا ہوں تو سوچیے کہ:
مجھ پر بھی اگر مصیبت آگئی ہے تو اسے دل پر لے کر دُہری مصیبت کیوں بنالوں؟
مجھے اس سے نفع حاصل کرنے کی کوشش کرنی ہے!
سب کو میٹھا آم ملا اور میرے حصے میں کھٹا لیموں آیا تو کیا ــــــــ!!
میں اِسی میں پانی ڈال کر، سکنجبین تیار کروں گا اور مزے سے پی کر الحمد للہ کہوں گا۔

## سچی طلب

ایک نیک آدمی رات بھر جاگ کر عبادت کرتا رہا، صبح کے وقت جب دعا مانگنے لگا تو اُس کے کان میں غیب سے آواز

آئی:

تیری عبادت بے کار ہے، تو روتا دھوتا کھڑا رہے یا ذلت کے ساتھ چلا جائے، تجھ پر قبولیتِ دعا کا دروازہ بند ہے-

دوسری رات بھی یہی معاملہ ہوا تو اُس کے ایک مرید نے کہا:

جب آپ کو معلوم بھی ہے کہ قبولیت کا دروازہ بند ہو چکا تو پھر سعی لاحاصل کا کیا فائدہ؟؟

بزرگ کے سرخ چہرے پر آنسو بہنے لگے اور بڑی حسرت سے گویا ہوئے:

اے مرید! ہرگز یہ نہ سمجھنا کہ اگر اُس نے مجھ سے (اپنی عطا کی) باگ موڑ لی ہے تو میں (التجا کے) شکار دان سے ہاتھ اٹھا لوں گا- میں تب ناامید ہوتا اگر اُس سے بہتر کوئی در ہوتا-

بھکاری کو ایک دروازے سے خیر نہ ملے اور اس کے لیے دوسرا دروازہ کھلا ہو تو اسے پروا نہیں ہوتی-

میرے لیے اس کوچے میں اگر کوئی راستہ نہیں تو اس کے علاوہ بھی تو کوئی در نہیں، میں اسی چوکھٹ پر پڑا رہوں گا!!

پھر اس کا سر عاجزی سے زمین بوس ہو گیا، تو غیب سے ندا آئی:

اگرچہ تجھ میں کوئی ہنر و کمال نہیں لیکن (تیرے اس اعتقاد کی وجہ سے کہ) ہمارے در کے سوا کوئی پناہ گاہ نہیں، تیری دعا قبول ہو گئی!!

(بوستان، شیخ سعدی شیرازی، م 691ھ، باب سوم در عشق، حکایت در معنیٰ آنکہ طالب صادق..... ص 112، اہل السنۃ پبلی کیشنز دینہ، 1429ھ)

آپ کو جب بھی کچھ مانگنا ہو، اِدھر اُدھر بھٹکنے کے بجائے اپنے رب سے مانگیں، ایک بار نہیں، بار بار مانگیں، ہزار بار مانگیں؛ وہ کریم ہے، کریم کسی کو خالی ہاتھ نہیں لوٹایا کرتے!!!

کس سے مانگیں، کہاں جائیں، کس سے کہیں، اور دنیا میں حاجت روا کون ہے
سب کا داتا ہے تُو، سب کو دیتا ہے تُو، تیرے بندوں کا تیرے سوا کون ہے

## بہترین فیصلہ

حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ایک موذِّن رُحبہ (گاؤں) میں رہتا تھا جو رات کے آخری پہر اذان دیا کرتا- آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی جاریہ موذن کے پاس سے گزر کر (دریائے) فُرات سے پانی بھرنے جایا کرتی تھی-

وہ جب بھی اس کے قریب سے گزرتی تو وہ اُسے کہتا:

"اللہ کی قسم! میں تجھ سے محبت کرتا ہوں"

جب اُس نے یہ بات کافی دفعہ کہی تو جاریہ نے سیدنا علی پاک سے شکایت کی-

آپ نے فرمایا:
اگر آیندہ اُس نے کہا تو تُو بھی یہی کہنا اور اُس سے پوچھنا تم چاہتے کیا ہو؟
جاریہ نے اِسی طرح کیا، تو موذن نے کہا:
"ہم صبر کریں گے، یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ فیصلہ فرمادے اور وہی بہتر فیصلہ کرنے والا ہے"
جاریہ واپس حضرت علی کے پاس آئی اور سارا ماجرا کہ سنایا- آپ نے فرمایا: جاؤ اُسے میرے پاس لاؤ!
جب موذِّن آپ کے پاس آیا تو آپ نے اُس کا اعزاز واکرام کیا اور پوچھا: تیرے دل میں واقعی اس کی محبت ہے؟
اُس نے کہا: ہاں، امیر المومنین!
آپ نے پوچھا: کیا اس بارے میں کوئی اور آدمی بھی جانتا ہے؟
کہنے لگا: اللہ کی قسم کسی کو معلوم نہیں-
آپ نے یہ بات تین دفعہ پوچھی تو اُس نے ہر بار قسم کھا کر نفی میں جواب دیا-
آپ نے فرمایا: میں نے یہ جاریہ تجھے دی، تُو اس کا ہاتھ تھام لے-

**فھذا من حکم اللہ وھو خیرُ الحاکمین!**

میرا یہ فیصلہ اللہ ہی کے حکم سے ہے اور وہی خَیرُ الحاکمین ہے-

(انظر: ذم الھوی، الباب التاسع والاربعون، فی ذکر ادویۃ العشق، ص398، 399، رقم 1181، دار الکتاب العربی بیروت 1424ھ)

اِس حکایت سے، بہ طورِ سبق دو باتیں یاد رکھنے کو ملتی ہیں:
1: باہم محبت کرنے والوں کے درمیان نکاح کروا دینا کارِ ثواب بھی ہے اور مقتضائے حکمت بھی؛ اس لیے اگر کوئی مانع شرعی نہ ہو تو اِس معاملے میں رکاوٹ بننے کے بجائے ان کی مدد کرنی چاہیے-

ویسے بھی صحیح حدیث میں ہے کہ:
لم یر للمتحابین مثل التزوج "دو محبت کرنے والوں کا ہمیں نکاح سے بہتر کوئی حل نظر نہیں آتا"
2: جیسے موذِّن نے اپنے دل کا معاملہ کسی کو بتانے کے بجائے اپنے رب کے سپرد کر دیا تو اُس کریم جل جلالہ نے اُس کی حضرت علی کے ذریعے مدد فرمائی، اِسی طرح اگر آج بھی "ایسے معاملات" میں خلافِ شرع راستے اختیار کرنے اور خاندان کی ذلت کا سبب بننے کے بجائے اپنے مالک و مولا کی طرف ہی رجوع کیا جائے تو مرادیں بر آئیں گی—
جب بندہ کامل یقین کے ساتھ اُس کی طرف رجوع کرتا ہے تو وہ کبھی مایوس نہیں لوٹاتا، اُس کی بارگاہ سے تو یہ صدا آتی ہے:

دروازۂ فضل کھٹکھٹائے تو سہی
دل میں جو مقاصِد ہیں بتائے تو سہی

مُنھ مانگی مُرادوں سے بھروں گا جھولی
لیکن مِرے در پہ کوئی آئے تو سہی

## ذکرِ حسین رضی اللہ عنہ کی برکت

گذشتہ رات میری زندگی کی ایسی رات تھی، جسے عمر بھر بُھلا نہیں پاؤں گا-

کل مغرب کے بعد میں نے عجمان میں ذکرِ امام حسین میں سجائی گئی محفل سے خطاب کیا تو ایک صاحب مجھے گاڑی پر ساتھ لے گئے-ہم ایک شیخ کے گھر پہنچے، سیڑھیاں چڑھتے، مختلف کمروں سے گزرتے کمرہ خاص میں پہنچے-

کیا دیکھتا ہوں وہاں سرورِ کائنات ﷺ کے کئی تبرکات رکھے ہیں اور ساتھ ساتھ امام حسن وحسین، سیدنا ابوایوب انصاری، سیدہ خدیجہ، سیدہ عائشہ، سیدہ فاطمہ، سیدہ زینب بنت علی، حضور غوث پاک اور حضرت ابرہیم بن ادہم کے تبرکات بھی ہیں-انھیں دیکھ کر محبت وخشیت کی ایسی کیفیت طاری ہوئی کہ بیاں نہیں کی جاسکتی-

کہاں میں گنہ گار اور کہاں یہ کرمِ پروردگار!!

میں اسی نظارے میں گم تھا کہ دو سو سال پرانی وہ چادر جو کبھی قبرِ نبوی پر ہوا کرتی تھی، میرے سر پر پھیلا دی گئی، اور میں اس کے سائے تلے تادیر اپنے رب سے دعائیں مانگتا رہا! اللہ اللہ!!

یہ روح پرور منظر دیکھ کر حضور مفتیِ اعظم ہند کے ایک خلیفہ دام ظلہ نے مجھے سندِ اجازت وخلافت سے بھی نواز دیا-

## الیکشن

دو احمق سفر کر رہے تھے، ایک نے کہا:

اللہ کی بارگاہ میں کسی تمنا کا اظہار کرتے ہیں، اِس طرح باتوں باتوں میں سفر اچھا گزر جائے گا-

ایک بولا: میری خواہش ہے کہ مجھے بکریوں کے ریوڑ مل جائیں تو میں اُن کے دودھ اور کھال سے فائدہ اُٹھاؤں-

دوسرے نے کہا:

میری تمنا ہے کہ میرے پاس بھیڑیوں کے ریوڑ ہوں جنھیں تمھاری بکریوں پر چھوڑ دوں، جو اُن کی تِکا بوٹی کر دیں-

پہلے نے جب اس خواہش کا اظہار دیکھا تو سیخ پا ہو کر کہنے لگا:

تجھ پر افسوس، تُو نے مصاحبت کا بھی لحاظ نہیں کیا!!

پھر وہ دونوں آپس میں جھگڑنے لگے-

جھگڑا شدت اختیار کر گیا.....قریب تھا دونوں گتھم گتھا ہو جاتے، کہ انھوں نے باہم طے کیا کہ ابھی جو شخص سب سے پہلے ہمارے پاس آئے گا اس سے فیصلہ کروا لیتے ہیں-

زیادہ وقت نہیں گزرا تھا کہ ایک بوڑھا گدھے پر شہد کے دو برتن لادے آدھمکا۔
دونوں نے اُس کے حضور اپنا مقدمہ پیش کرتے ہوئے فیصلے کا تقاضا کیا۔۔۔
بوڑھے نے گدھے سے شہد کے برتن اتار کر کھول دیے، جب سارا شہد مٹی میں مل گیا، تو (یہ بے مثال) فیصلہ سنایا:
صب اللہ دمی مثل ھذا العسل ان لم تکونا احمقین۔
اللہ میرے خون کو اِس شہد کی طرح بہادے اگر تم دونوں احمق نہ ہو!!
(انظر: المستطرف فی کل فن مستظرف، الباب الثانی، ص 27، دار مکتبۃ الحیاۃ بیروت، 1412ھ، ملتقطاً وملخصًا)
جنھوں نے مسلمانوں پر حکومت کرنے کے لیے انگریز کا عطا کردہ نظام الیکشن قبول کرلیا کیا اُن کی حالت دو احمقوں جیسی نہیں، اور جو اسلام کے نام پر اس کا حصہ بنتے جارہے ہیں ان کی مثال فیصلہ کرنے والے بوڑھے جیسی!!؟؟
جواب دینے سے پہلے اسلامی نظام خلافت بھی ذہن میں رکھیے گا۔

## عامر تیری عظمت کو سلام

عامر شہزاد ہمارے ہمسائے ہیں، جنھوں نے کچھ عرصہ پہلے جرمنی کے ایک پولیس مین کی ٹُھکائی کی، کیوں کہ اُس خبیث نے بھرے مجمع میں نبی کریم ﷺ کی شان میں گستاخی کی تھی۔
آج میری عامر بھائی کے والدین سے ملاقات ہوئی، وہ بتا رہے تھے کہ ہمارا بیٹا کہتا ہے مجھے صرف ایک صدمہ ہے کہ وہ خبیث میرے ہاتھوں سے بچ نکلا، کاش میں اُسے واصلِ جہنم کرنے میں کامیاب ہوجاتا۔
عامر بھائی پر مقدمہ چل رہا ہے، فیصلے کی بیس تاریخ ہے؛ دعا کریں اللہ کریم اُن کی حفاظت فرمائے۔
جرمنی کے مسلمان، بالخصوص وہاں مقیم ترک مسلمان عامر بھائی کی بھرپور حمایت اور اخراجات کررہے ہیں اور ترک وکیل ہی مقدمہ لڑرہا ہے۔
بے شک ترکیوں کو اللہ کریم نے عشق رسول سے وافر حصہ عطا کیا ہے!
عامر بھائی نے مکے مار کر پولیس والے کے دانت توڑ دیے، اور اس کا ریوالور چھین کر گولی مارنا ہی چاہتے تھے کہ اُس کے ساتھیوں نے اِنھیں جکڑ لیا۔

## الو کی کہانی

ایک رات عبدالملک بن مروان کو نیند نہیں آرہی تھی، اُس نے قصہ گو کو کہانی سنانے کے لیے بلایا۔
قصہ گو نے کہانی شروع کی: اے امیر المومنین! ایک اُلو مَوصِل میں اور ایک بصرے میں رہتا تھا۔
موصل کے الو نے اپنے بیٹے کے لیے بصرے کے الو کی بیٹی کا رشتہ مانگا۔

بصرے والے اُلو نے کہا: میں تمھارا پیغام اس شرط پر قبول کروں گا کہ تم میری بیٹی کو مہر میں سو(100) اجڑے ہوئے مکان دو گے-

موصل والے اُلو نے کہا: فی الحال تو میں اِس کی طاقت نہیں رکھتا، لیکن.....اگر اللہ تعالی نے ہمارے حاکم کو ایک سال تک ہم پر مزید باقی رکھا تو میں تمھاری یہ شرط پوری کردوں گا- عبدالملک بن مروان یہ کہانی سن کر (غفلت سے) بیدار ہوگیا اور لوگوں کو انصاف دلانے لگا، اور امور سلطنت کی چھان بین کرنے میں مصروف ہوگیا-

(انظر: حیاۃ الحیوان الکبری، دمیری م 808، ج 1، الیوم والبومۃ، ص 196، داراحیاء التراث العربی بیروت 1426ھ)

پہلے زمانے کے قصہ گو کیسے دانش مند تھے، جو بَھٹکے ہوئے بادشاہوں کو اُلووں کی مثالیں دے کر بھی راہِ راست پر لے آتے —اور ایک آج کل کے کچھ قصہ گو (ٹی وی اینکر) ہیں جو بادشاہوں کو اُلو بنا کر خود "الو کے پٹھے" بنے بیٹھے ہیں-

## وزیر

ایک ہندستانی حکیم، اپنے ملک کے وزیر کی خدمت میں حاضر ہوا-

وزیر صاحب جو عقل کے پورے سارے تھے، حکیم سے کہنے لگے: سب سے بڑا علم کون سا ہے؟

حکیم نے کہا: طِب

کہنے لگے: میں اکثر طب جانتا ہوں-

حکیم نے پوچھا: حضور! برسام (بیماری) کی دوا کیا ہے؟

کہنے لگے: اُس کی دوا موت ہے؛ مرنے سے جب سینے کی حرارت کم ہوجائے تو پھر ٹھنڈی دوائیوں سے مریض کا علاج کیا جائے، تاکہ اُس کی زندگی واپس آجائے-

حکیم نے پوچھا: (سرکار!) مرنے کے بعد اُسے کون زندہ کرے گا؟؟

وزیر: یہ الگ علم ہے جو نجوم کی کتابوں میں پایا جاتا ہے؛ اور نجوم کی کتابوں میں میری نظر سے صرف باب الحیات گزرا ہے، جس سے میں نے یہ بات حاصل کی ہے کہ:

"انسان کے لیے زندگی، موت سے بہتر ہے"

حکیم (نے جب وزیرِ باتدبیر کی "پر حکمت" گفتگو سنی تو) کہنے لگا:

جنابِ وزیر! "جاہل کے لیے زندگی سے ہر حال میں موت ہی بہتر ہے"

(اخبار الحمقی والمغفلین، لابن جوزی، الحکیم والوزیر الرکیك، الباب الثانی عشر فی ذکر المغفلین من الامراء والولاۃ، ص 96، 97، دار الکتاب العربی بیروت، 1427ھ)

ہمارے آج کل کے اکثر وزیروں کی تدبیریں بالکل ہندستانی وزیر جیسی ہیں، اللہ کرے اِنھیں بھی کوئی "نصیحت کرنے

والا "حکیم مل جائے، جس کی نصیحت پر فوراً عمل درآمد ہو جائے!

## ایک قطرہ

میرے دادا جی حافظ محمد عالم رحمۃ اللہ علیہ بچپن میں ہمیں ایک بات سنایا کرتے تھے، کہتے:
میں کسی گاؤں میں قرآن پاک سنانے گیا، وہاں ایک عمر رسیدہ شخص تھا جو ہر وقت پیچا کے لگاتا رہتا۔
مجھے بہت حیرانی ہوتی، میں نے لوگوں سے اس کا سبب پوچھا تو انھوں نے بتایا:
ہمارے گاؤں میں صدیوں پرانا قلعہ تھا، اس کی دیوار گری تو نیچے سے ایک قبر برآمد ہوئی، جس میں موجود ہستی کا جسم مبارک تروتازہ تھا، منھ کھلا ہوا تھا اور اس میں سفید رنگ کا ایک ایک قطرہ ٹپک رہا تھا۔
سارا گاؤں زیارت کے لیے جمع ہو گیا، یہ بزرگ بھی ہمارے ساتھ تھے؛ اِنھوں نے اصرار کیا کہ میں وہ چیز ضرور چکھوں گا جس سے یہ نیک بندہ لطف اندوز ہو رہا ہے۔ ہم نے بہت منع کیا لیکن یہ باز نہ آئے اور ایک قطرہ چکھ ہی لیا۔
آج تقریباً اٹھارہ سال ہونے کو ہیں، اُس قطرے کا ذائقہ اِن کے منھ سے نہیں گیا، یہ جب بھی پیچا کا لگاتے ہیں اِنھیں وہی لذت محسوس ہوتی ہے، اسی لیے بار بار محظوظ ہونے کے لیے ایسا کرتے ہیں!!
اللہ کریم ہمیں بھی جنت کی نہ ختم ہونے والی نعمتیں عطا فرمائے، بے شک جنت کا قطرہ قطرہ، ذرہ ذرہ بے مثال ہے!

## لومڑی کو دعوت

ایک پرندے نے اپنے ولیمے پر بعض دوستوں کو مدعو کیا۔
قاصد غلطی سے لومڑی کے پاس بھی چلا گیا اور اُسے شرکت کی دعوت پیش کر دی۔
لومڑی نے کہا: میں نے آپ کی بات سن لی، اطاعت کروں گی۔
قاصد نے واپس آکر جب بتایا تو پرندے پریشان ہو گئے، کہنے لگے: تُو نے ہمیں ہلاک کر دیا، ہمیں موت کے منہ میں ڈال دیا۔
اُن میں قنبرہ نامی ایک پرندہ بھی تھا، اس نے کہا: میں ایک تدبیر سے یہ بلا تمھارے سروں سے ٹالتا ہوں۔
تم جا کر لومڑی سے کہو کہ: تمھارے بھائی نے تمھیں سلام بھیجا ہے اور کہا ہے:
ولیمہ سوموار کو ہو گا، آپ سلوقی کتوں کے ساتھ بیٹھنا پسند کریں گی یا کُردی کتوں کے ساتھ؟؟
قاصد نے جب یہ پیغام پہنچایا تو لومڑی کے پاؤں تلے کی زمین نکل گئی۔
کہنے لگی، میرے بھائی کو میرا اسلام عرض کرنا اور کہنا: ابو سرور (لومڑی) نے کہا ہے میں نے یہ منت مانی تھی کہ سوموار اور جمعرات کو روزہ رکھا کروں گی، عرصہ ہوا منت کی تکمیل کے لیے کوشاں ہوں۔ میرے لیے آپ کی دعوت سے اہم منت کو

پورا کرنا ہے، اس لیے میری معذرت!!

(خلاصہ: الاذکیا، ابن جوزی، الباب الثالث والثلاثون، ص 227، دارالفکر بیروت)

معذرت کے ساتھ!!

آج کے کچھ پیروں اور صوفیوں کو آپ نذرانوں کے لیے جہاں بلوائیں، خوشی خوشی چلے آئیں گے؛ لیکن اگر اسلامی قوانین کے خلاف بھونکنے والے حکومتی اور دیگر کتوں سے آمنے سامنے کا کہیں تو انھیں "ابوسرور" کی ادا یاد آجاتی ہے۔

## نقارچی

پاک و ہند میں سکول و کالج کے تعلیمی نصاب کا مرتب مسٹر لارڈ میکالے ہے۔ یہ ایک عیسائی تھا جو 1834ء میں ہندوستان آیا اور گورنر جنرل کی کونسل میں پہلا رکن برائے قانونی امور تعینات ہوا۔

اِس نے برطانیہ کی پارلیمنٹ میں 1835ء میں ایک قرارداد پیش کی جس کے کچھ حصے کا ترجمہ یہ ہے:

میں نے ہندوستان کے طول و عرض میں سفر کیا ہے، مجھے کوئی بھی شخص بھکاری یا چور نظر نہیں آیا؛ اِس ملک میں مَیں نے بہت دولت دیکھی ہے، لوگوں کے اخلاقی اقدار بلند ہیں اور سمجھ بوجھ اتنی اچھی ہے کہ میرے خیال میں ہم اُس وقت تک اِس ملک کو فتح نہیں کر سکتے جب تک ہم اِن کے دینی اور ثقافتی اقدار توڑ نہ دیں، جو اِن کی ریڑھ کی ہڈی کی حیثیت رکھتے ہیں۔ اس لیے میں یہ تجویز کرتا ہوں کہ ہم ان کا قدیم نظامِ تعلیم اور تہذیب بدل دیں؛ کیوں کہ اگر ہندوستانی لوگ یہ سمجھیں گے کہ ہر انگریزی اور غیر ملکی شے ان کی اپنی اشیا سے بہتر ہے تو وہ اپنا قومی وقار اور تہذیب کھو دیں گے اور حقیقتاً ویسی ہی مغلوب قوم بن جائیں گے جیسی ہم انہیں بنانا چاہتے ہیں۔

میکالے کی اس قرارداد کے بعد کیا ہوا؟

انگریزوں نے اُسے ہی ہندوستان کے لیے نظامِ تعلیم مرتّب کرنے کا کام سونپا اور اُس نے پوری شَیطنت سے نصاب مرتب کیا، جسے حکومت برطانیہ نے ہاتھوں ہاتھ لیا۔

اُس زمانے میں چوں کہ ہندوستان میں عربی، فارسی اور سنسکرت زُبان میں تعلیم دی جاتی تھی، اِسے نگریزی میں بدلنے کے لیے:

قانون برائے انگریزی زبان

(English Education Act)

بنایا گیا۔

یاد رہے کہ میکالے ہندوستانیوں کو جب انگریزی پڑھانے پر زور دے رہا تھا اُس وقت انگریز بہ ذاتِ خود کیمیا، برقیات، دھات کاری اور معدنی وسائل سے متعلق تعلیم حاصل کر رہے تھے!

آخرش.....

انگریزی نظامِ تعلیم رائج ہو گیا-

اس نصاب نے کافروں کی کس خواہش کو پورا کرنا تھا یہ میکالے ہی کی زبانی سنیے..... ایک ایک لفظ زہر میں بجھا ہوا ہے:

"ہمیں ایسی نسل تیار کرنا چاہیے جو دیسی آبادیوں کے لیے ہمارے افکار و نظریات کی ترجمان ہو اور جو رنگ و نسل کے اعتبار سے بلاشبہ ہندوستان کی باشندہ ہو لیکن فکر و نظر اور سیرت و کردار و عادات و اخلاق کے اعتبار سے خالص انگریز ہو"

(انکشاف، ص22،23)

اقبال مرحوم اسی لیے رویا ہے:

اک لُردِ فرنگی نے کہا اپنے پِسر سے
منظر وہ طلب کر کہ تری آنکھ نہ ہو سیر
بیچارے کے حق میں ہے یہی سب سے بڑا ظلم
برّے پہ اگر فاش کریں قاعدۂ شیر
سینے میں رہے راز ملوکانہ تو بہتر
کرتے نہیں محکوم کو تیغوں سے کبھی زیر
تعلیم کے تیزاب میں ڈال اس کی خودی کو
ہو جائے ملائم تو جدھر چاہے ، اُسے پھیر
تاثیر میں اِکسیر سے بڑھ کر ہے یہ تیزاب
سونے کا ہمالہ ہو تو مٹی کا ہے اک ڈھیر!

(لُرد فرنگی: انگریزی لارڈ- پسر: بیٹا- برہ: بھیڑ کے بچے کو کہتے ہیں، کنایۃً غلام آدمی- راز ملوکانہ: بادشاہوں کے راز- محکوم: غلام قوم- ہمالہ: ہمالیہ پہاڑ)

چلیں خیر جو ہونا تھا سو ہو گیا.....!!

اب اِس نصاب سے نجات کا راستہ ڈھونڈیں.....

اور وہ ایک ہی راستہ ہے کہ.....

کفار کی اس سازش کو ذہنی طور پر تسلیم کیا جائے اور.....

اسے ناکام بنانے کے لیے اُس دینی تعلیم کو "کامل طور پر" عام کیا جائے جو سید المرسلین صلی اللہ علیہ والہ وسلم نے دی!!

## سفید لباس میں ملبوس ایک شخصیت

میرے دادا جی حافظ محمد عالم رحمہ اللہ سچے اور کھرے انسان تھے، میں نے انھیں کبھی جھوٹ بولتے یا جھوٹی گواہی دیتے نہیں دیکھا۔

ان کے متعلقین کہتے ہیں: حافظ صاحب ہمیشہ سچ بولتے رہے، چاہے سامنے کوئی بھی ہو۔

دادا جی رحمہ اللہ نے جس مسجد میں پچاس سال امامت کروائی، اُس مسجد کے ساتھ ایک ولی اللہ کا مزار تھا، اور تھوڑے فاصلے پر، دوسرے ولی اللہ کا مزار تھا۔

دادا جی بتاتے تھے:

میں ایک دن تہجد کے وقت مسجد میں گیا، جوں ہی دروازہ کھول کر اندر داخل ہوا تو مزار شریف سے دو آدمیوں کی باتوں کی آواز آرہی تھی، جب کہ اس وقت وہاں میرے علاوہ کوئی نہیں تھا۔

میں مزار شریف کے قریب پہنچا تو آواز آنا بند ہوگئی اور سفید لباس میں ملبوس ایک شخصیت احاطۂ مزار سے باہر نکلی۔

مجھے شک ہوا کہ یہ دوسرے صاحبِ مزار ہیں جو اِنھیں ملنے آئے ہیں۔

میں نے آواز دی لیکن انھوں نے کوئی جواب نہ دیا اور اپنے مزار شریف کی طرف چلے گئے۔

اس واقعہ کو میں بالکل سچ تسلیم کرتا ہوں، اس کا راوی بھی سچا انسان ہے، اور میرے کچھ ذاتی مشاہدات بھی اس کے موید ہیں۔

ہمارے کچھ احباب غوثِ پاک رضی اللہ عنہ کی خاطر امام احمد بن حنبل کے قبرِ انور سے نکلنے کو درست تسلیم نہیں کرتے۔

ایسے احباب کے لیے ہماری دعا ہے کہ اللہ کریم انھیں کسی ولی اللہ کی صحبت نصیب فرمائے جو ان کے انشراحِ صدر کا سبب بن جائے۔

## بدعقیدہ شخص

میرے ایک شاگرد سے ایک بدعقیدہ خواہ مخواہ الجھتا رہتا تھا، ان کے مابین گفتگو کے لیے وقت مقرر ہوا تو میں نے اسے کہا:

1: جب آپ کے مُقابِل کوئی بدعقیدہ شخص آجائے تو اُس کے قد کاٹھ سے مرعوب نہ ہوں، پوری جُرات سے اس کا مقابلہ کریں۔

2: اس کی غلطی پر جب گرفت کریں تو اس وقت تک آگے نہ بڑھنے دیں جب تک وہ غلطی تسلیم نہ کرلے۔

3: اگر وہ ایسا سوال کرے جس کا جواب آپ کے ذہن میں نہ ہو تو اس کا سوال اُسی پر پلٹا دیں، بہت جلد جواب آپ کے

ذہن میں آجائے گا۔

4: سارے دلائل ایک دفعہ ہی نہ دے دیں، آہستہ آہستہ آگے بڑھیں، اور مضبوط دلیل کو آخر کے لیے سنبھال کے رکھیں

۔

5: گم راہ شخص کے ساتھ ہر مقام پر نرمی نہیں برتنی چاہیے، بعض جگہ نرمی سے زیادہ سختی فائدہ دیتی ہے۔

دیکھیے! اللہ کریم نے زانیوں کو کوڑے مارنے کا فرمایا، تو ساتھ کہا:

لَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ۔ تمھیں ان پر کوئی ترس نہ آئے۔

6: حاضر دماغی اور حاضر جوابی سے کام لیں۔

مد مقابل علمی لہجے میں بات کرے تو علمی پیرائے میں جواب دیں، اور اگر تعریض و تنقیص پر اتر آئے تو پھر ایسی تعریض کریں کہ دوبارہ اُسے جرات نہ ہو۔

ابوالفیض فیضی اور عُرفی شیرازی بڑے نامور ادیب گزرے ہیں۔

فیضی نے ایک کتا پال رکھا تھا جسے پیار سے بیٹا کہتا تھا۔

ایک دن عرفی نے پوچھا: بیٹے کا نام کیا رکھا ہے؟

کہنے لگا: عُرفی۔

عرفی نے فوراً کہا: مبارک باشد۔

(عُرفی کا ایک مطلب تو یہ ہے کہ عُرف میں (عام طور پر) جو کتے کا نام ہوتا ہے وہی میرے کتے کا بھی ہے۔

اور دوسرا مطلب یہ بنتا ہے کہ:

اس کا نام تیرے نام پر رکھا ہے یعنی عُرفی۔

فیضی کے باپ کا نام "مبارک" تھا، اس لیے عُرفی نے جواباً مبارک باشد کہا۔

جس کا ایک معنٰی بنتا ہے تجھے مبارک ہو، اور دوسرا معنی بنتا ہے:

تیرا کُتا تیرے باپ مبارک کی طرح ہوگا)

گویا فیضی نے "عُرفی" کہہ کر تعریض کی، تو عُرفی نے "مبارک باشد" کہہ کر اس کا ایسا جواب دیا کہ فیضی جیسے قادر الکلام کا منھ بند ہوگیا۔

## لاعلاج مریض

ایک مال دار شخص کچھ عجیب قسم کے مرضوں میں مبتلا تھا، کافی عرصہ دم کروانے اور دوائیاں لینے کے باوجود اُس کا مسئلہ حل نہ ہوا۔

اتفاق سے ایک دن مَیں اُس کے گھر گیا تو دیکھا کہ اُس کا ملازم باہر والے دروازے کے پاس بیٹھ کر چائے پی رہا ہے اور رَس زمین پر رکھے ہوئے ہیں۔ مجھے بہت دکھ ہوا، میں نے کہا:

کیا یہ انسان نہیں ہے ؟

تم خود دس دس برتنوں میں کھانا کھاتے ہو اور اِس بے چارے کے لیے ایک پلیٹ بھی نہیں، جس میں رس ہی رکھ لے !

کہنے لگا: حضرت صاحب! میری بیوی ملازم کو چائے کا پیالہ بھر کے دیتی تھی ، اور وہ بھی دودھ پتی۔-----------------

میں نے ایک دن دیکھ لیا تو بیوی کو سمجھایا کہ:

بے وقوف کہیں کی ! نوکروں کو اس طرح چائے دیں تو وہ خراب ہو جاتے ہیں، اِسے پتلی چائے دیا کر اور صرف ایک کپ دیا کر۔

میں نے جب اُس کی یہ بات سنی تو مجھے سمجھ آ گئی کہ یہ کیوں ٹھیک نہیں ہو رہا!!

وہ چاہے پوری دنیا کے عاملوں سے دم کروالیتا، ڈاکٹروں سے دوائی لے لیتا، اُس نے ٹھیک نہیں ہونا تھا۔

کیوں کہ اُس کے مرض کا سبب جادو وغیرہ نہیں تھا، اُس کے یہی کَرتُوت تھے--------------

کئی مال دار ملازموں کی تحقیر و تذلیل کرتے ہیں، ان سے مشقت زیادہ لیتے اور معاوضہ کم دیتے ہیں؛ پھر الٹا ڈانٹ ڈپٹ بھی کرتے رہتے ہیں۔

ایسے لوگوں سے مزدور بے چارے انتقام لیں نہ لیں، مُنتقِم حقیقی جَلَّ جَلَالَہٗ سخت انتقام لیتا ہے۔

غور کیا کریں! یہ نہ ختم ہونے والی ٹینشنیں ، دور نہ ہونے والے غم ، بڑھتے رہنے والے دکھ ، نِت نئی آنے والی مصیبتیں-----------کہیں ہماری زِیادتیوں کا نتیجہ تو نہیں۔

کہتے ہیں: بِلی کو ستائیں تو اُس کی آہ بھی سات آسمان پار کر جاتی ہے، انسان تو پھر انسان ہے۔

کہیں آہِ مظلوم خالی گئی ہے ؟؟
یہ درخواست ، تا بابِ عالی گئی ہے!!

## خونِ حُسین

سیدنا عبداللہ بن عباس نے نبی کریم ﷺ کو (عاشورہ کے دن) خواب میں دیکھا کہ آپ کے بال بکھرے ہوئے تھے، اور آپ کے ہاتھ مبارک میں ایک شیشی تھی جس میں خون تھا۔

آپ نے پوچھا: حضور یہ کیا ہے ؟

فرمایا: یہ حُسین اور اُس کے ساتھیوں کا خون ہے، جسے آج جمع کر تا رہا ہوں۔

(انظر: المبشرون بالجنۃ المذکورون علی لسان النبی ﷺ، ص 114، ر 20، ط دار المقتبس بیروت۔ قال الھیثمی: رجال احمد، رجال الصحیح)

اللہ اللہ، وہ کس پیارے کا خون تھا جسے رحمتِ عالم جمع کرتے رہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔آقا و مولا حسین!!

فخر کا دل میں دریچہ باز کرنا چاہیے
جس کا تُو آقا ہو اُس کو ناز کرنا چاہیے

## پہرہ

سیدنا ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مسلمانوں کا پہرہ دینے کے لیے ایک جگہ ٹھہرے تھے کہ آپ کے پاس سے ایک شخص گزرا، اور کہنے لگا:

ابوہریرہ! یہاں کیوں کھڑے ہو؟

آپ نے فرمایا، میں نے رسول اللہ ﷺ سے سنا ہے:

"ایک گھڑی اللہ کی راہ میں ٹھہرنا، شبِ قدر میں حجرِ اَسود کے پاس نفل ادا کرنے سے بہتر ہے۔"

(انظر: الترغیب والترھیب، کتاب الجھاد، ص 233، رقم 1842، ط دار الکتاب العربی بیروت۔)

کشمیر کے مظلوم، اُمتِ مسلمہ کے پہرے داروں کو پکارتے رہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔وہ حجرِ اسود کے پاس تو چلے گئے، اِن کی مدد کے لیے نہیں پہنچ سکے۔

آج وہ کشمیر ہے محکوم و مجبور و فقیر
کل جسے اہلِ نظر کہتے تھے ایرانِ صغیر
سینۂ افلاک سے اُٹھتی ہے آہِ سوز ناک
مردِ حق ہوتا ہے جب مرعوبِ سُلطان و امیر

## مجاہد کا گھوڑا

ایک دوست پوچھ رہے تھے:

اسلامی ممالک کے پاس اتنے ٹینک، توپیں، میزائل، بارود اور جہاز ہیں؛ پھر بھی میدان جہاد کی طرف رُخ کیوں نہیں کرتے ؟؟

میں نے انھیں کہا، غالباً حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ نے لکھا ہے:

سلطان رکن الدین بیبرس کے زمانے میں کسی مجاہد کے پاس ایک گھوڑا تھا، جو میدان جنگ میں خوب بھاگ دوڑ کرتا۔

ایک دفعہ لڑائی کے دوران وہ سُست پڑ گیا تو مجاہد نے اسے آگے بڑھنے کے لیے مارا، لیکن وہ آگے نہ بڑھا، پیچھے ہی پیچھے ہٹتا گیا۔

مجاہد کو اس کی حرکت پر بہت غصہ آیا اور حیرانگی بھی ہوئی۔

وہ رات کو سویا تو اس نے خواب میں اپنے گھوڑے کو دیکھا اور اُسے میدان جہاد میں سستی کرنے پر ملامت کرنے لگا۔

اِس پر گھوڑے نے کہا:

"میں دشمن پر کیسے چڑھائی کرتا، جب کہ تم نے میرے لیے کھوٹے پیسے سے چارہ خریدا تھا!"

مجاہد صبح اٹھ کر چارہ بیچنے والے کے پاس گیا، تو چارہ فروش نے اسے دیکھتے ہی کہا:

کل تم مجھے کھوٹا درہم دے گئے تھے!!

اب آپ خود ہی غور کرلیں کہ:

جس گھوڑے کو ایک بار کھوٹے پیسے کا چارہ کھلایا جائے جب وہ بھی میدانِ جہاد میں آگے نہیں بڑھتا تو وہ ٹینک، گاڑیاں، اور جہاز کیسے آگے بڑھیں گے جن کی پرورش میں سود کا پیسہ بھی شامل ہے!

اِنھیں "جہاد فی سبیل اللہ" کی طرف لے جانا ہے تو اِن کی پرورش پاکیزہ مال سے کرنی ہوگی، نیز انھیں میدان جہاد میں لے جانے والے فوجیوں کی غذا بھی سود وغیرہ سے پاک کرنی ہوگی۔

یہ عِلم ، یہ حِکمت ، یہ تَدَبُّر ، یہ حکومت
پیتے ہیں لَہو ، دیتے ہیں تعلیمِ مساوات
ظاہِر میں تجارت ہے ، حقیقت میں جُوَا ہے
سُود ایک کا ، لاکھوں کے لیے مرگِ مَفاجات
وہ قوم کہ فیضانِ سَماوِی سے ہو محروم
حَد اُس کے کمالات کی ہے بَرق و بخارات

## فرنگی طبیب

ہمارے علاقے میں ایک طبیب تھا، جسے متھرا کہتے تھے۔

نبض شناس، مزاج شناس، ذہین و فطین اور اپنے فن کا ماہر تھا۔

اگر کسی کا ہاتھ، پاؤں وغیرہ ٹَل جاتا تو بغیر تکلیف دیے باتوں باتوں میں چڑھا دیتا تھا۔

بزرگ بتاتے ہیں: راجہ رنجیت سنگھ کی بیوی کا چُوکلا (کمر کی ہڈی سے نچلا حصہ) ٹل گیا، بڑے بڑے طبیبوں نے علاج کیا لیکن افاقہ نہ ہوسکا۔

راجے کو کسی نے متھرے کا بتایا تو اس نے فوراً متھرے کی طرف قاصد روانہ کر دیا۔
قاصد نے پہنچ کر ساتھ چلنے کا تقاضا کیا تو متھرا کہنے لگا:
بیمار میں نہیں، رانی ہے؛ اسے میرے پاس آنا چاہیے۔
میں اتنے سارے مریضوں کو زیرِ علاج چھوڑ کر ایک مریضہ کے لیے نہیں جا سکتا۔
رنجیت سنگھ تک جب یہ پیغام پہنچا تو اُس نے رَختِ سفر باندھا اور اہلیہ سمیت متھرے کے گاؤں پہنچ گیا۔
متھرے نے رانی کا علاج اس طرح کیا کہ:
راجے کی گھوڑی کو پیٹ بھر کر چنے کھلائے، پھر اس کا منھ باندھ دیا۔
کچھ دیر بعد اُس کی ننگی پشت پر رانی کو بٹھا کر، نیچے سے رانی کے پاؤں باندھے ور گھوڑی کو بہتے پانی کی طرف لے جا کر اس کا منھ کھول دیا۔
چوں کہ وہ طویل سفر سے آئی تھی اور اس نے کافی سارے چنے کھا لیے تھے، اس لیے پیاس کی شدت نے اسے نڈھال کیا ہوا تھا؛ اس نے جیسے ہی پانی دیکھا، بے صبری سے پینے لگی۔
جب خوب پی چکی، تو حسبِ عادت پُھر کڑاما را (زور سے سانس لیا)، جس سے پیٹ کچھ باہر نکلا۔
متھرا پاس کھڑا تھا، اس نے دیکھا کہ جیسے ہی گھوڑی کا پیٹ پھولا، رانی کا چُوکلا چڑھ گیا۔
متھرے نے راجے سے کہا: اپنی بیوی کو لے جاؤ اب اس کا چُوکلا اپنی جگہ سے نہیں ہِلے گا۔
راجہ بہت خوش ہوا، اور کہنے لگا: مانگ، کیا مانگتا ہے؟
متھرے نے کچھ بھی لینے سے انکار کر دیا۔
لیکن جب راجے نے بے حد اصرار کیا تو کہنے لگا:
نمک پر جو ٹیکس وصول کرتے ہو وہ ختم کر دو تاکہ لوگوں پر گِرانی نہ ہو۔
یہ تھے پہلے زمانے کے دیسی حکیم اور سیانے، جو بڑے بڑے مسئلے حکمت و دانائی کے ساتھ مفت میں حل کر دیتے تھے۔
ان کے دل میں مخلوق کا احساس تھا، یہ طب کو خدمتِ شکم نہیں، خدمتِ خَلق کا ذریعہ سمجھتے تھے۔
اور ایک آج کل کے بعض فرنگی طبیب (ڈاکٹرز) ہیں۔
توبہ توبہ توبہ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
پانچ سو، ہزار فیس دے کر مریض کی ان تک رسائی ہوتی ہے، اُوپر سے اُسے دو چار ہزار کے ٹیسٹ لکھ دیتے ہیں۔
بندہ ان سے پوچھے:
جب ٹیسٹ دیکھ کر ہی تمھیں مرض کا پتا چلنا ہوتا ہے، تو فیس "منھ دکھائی" کی لیتے ہو؟؟
حکیم صابر ملتانی اگر فرنگی طِب اور اِس کے طریقہ کار کے خلاف تھا، تو بالکل ٹھیک تھا؛ وہ آج کل کے ان فرنگی طبیبوں (

ڈاکٹروں) کی کارستانیاں دیکھ لیتا، تو سر پکڑ کر بیٹھ جاتا۔
یہ مریض کو ناقص دوائیاں لکھ کر دیتے ہیں، وہ بھی مُٹھوں کے مُٹھے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اور دوائیاں بھی وہ، جن پر اچھا خاصہ کمیشن وصول کر چکے ہوتے ہیں۔
پھر طُرفہ یہ کہ سب کچھ کرنے کے باوجود خود کو قوم کا مسیحا بھی باور کرواتے ہیں!!

انا للہ وانا الیہ راجعون

## پاؤں والا

بنی اسرائیل کا ایک راہب عبادت خانے میں رہتا تھا، اس نے طویل عرصہ عبادت و ریاضت میں گزارا۔
ایک دن اس کی نظر کسی عورت پر پڑ گئی اور وہ فتنے میں مبتلا ہو گیا۔
اُس نے عورت کے پاس جانے کے لیے عبادت خانے سے قدم باہر نکالا، تو اللہ کریم نے اس کے سابقہ اعمال کی وجہ سے اس کی دست گیری فرمائی۔ وہ خود سے کہنا لگا: میں یہ کیا کرنے لگا ہوں؟
اور اس ارادے سے باز آ گیا، اور اپنی پاکیزگی کو یاد کر کے بہت شرمسار ہوا۔
پھر جب اپنا قدم حجرے میں واپس رکھنے کا ارادہ کیا تو (خود کو مخاطب کر کے) کہنے لگا:
ہرگز نہیں، ہرگز نہیں!
جس قدم نے اللہ پاک کی نافرمانی کی ہو، وہ واپس عبادت خانے میں میرے ساتھ آئے؟؟
اللہ کی قسم ایسا کبھی نہیں ہو گا!! اس نے پاؤں کو وہیں جمائے رکھا (یہاں تک کہ) ہواؤں، بارش، سورج کی تپش اور برف باری کی وجہ سے، پاؤں کٹ گیا؛ تو اس نے اللہ کا شکر ادا کیا۔ اس راہب کا تذکرہ بعض کتابوں میں "پاؤں والے" کے نام سے فرمایا گیا اور یہ اسی نام سے مشہور ہوئے۔
(انظر: کتاب التوابین لابن قدامہ، ذکر التوابین من آحاد الامم الماضیۃ، توبۃ ذی الرجل، ص 72، ط دار الفاروق للاستثمارات الثقافیۃ مصر، س 2009ء)
اللہ اللہ وہ کیسے لوگ تھے، جنھوں نے توبہ کے لیے اس قدر مشقتیں اٹھائیں!
ہماری شریعت میں اس طرح خود کو تکلیف دے کر توبہ کرنا جائز نہیں۔
ہم گناہ پر شرمسار ہو کر، سچے دل سے معافی مانگ لیں تو ہمارا رب رحمت عالم ﷺ کے صدقے ہمیں معاف فرما دیتا ہے۔

## مالک کے حضور

ایک امام مسجد نے مجھے یہ واقعہ سنایا کہ:

میرے چھوٹے بھائی پر جادو کے اثرات تھے۔
اسے دورہ پڑتا تو وہ بے ہوش ہو جاتا، اور سر پہ ایک گہرا زخم نمودار ہوتا، جس سے خون بہنے لگتا۔
ہمیں یوں محسوس ہوتا جیسے کسی نے تیز کلہاڑی سے سر پر وار کیا ہے۔
کچھ دیر یہ کیفیت رہتی اور اس کے بعد زخم خود بہ خود مُندَمِل ہو جاتا۔
ہم سے یہ تکلیف دہ منظر دیکھا نہیں جاتا تھا، ہم بہت سارے عاملوں اور پیروں کے پاس گئے، لیکن کچھ فرق نہ پڑا۔
ایک دفعہ معلوم ہوا کہ فلاں جگہ بڑا ماہر عامل ہے، تو ہم اس کے پاس گئے۔
اس نے حاضری وغیرہ کر کے بتایا کہ جادو فلاں قبر میں دفن ہے۔
ہم اس قبر پر پہنچے تو عامل نے قبر پہ ہاتھ رکھ کے کچھ پڑھنا شروع کیا تو ہمیں قبر ہلتی نظر آنے لگی۔
ہم ڈر گئے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اس نے کہا: ڈرو نہیں! اس قبر سے مٹی ہٹاؤ۔
جب ہم نے مٹی ہٹائی تو وہاں سے ایک پتلا برآمد ہوا جس میں سوئیاں چُبھی تھیں۔
وہ پتلا لے کر دریا پر آیا اور کہنے لگا: چالیس ہزار ہدیہ لوں گا پھر یہ پتلا کھولوں گا۔
ہم نے چالیس ہزار دیے اور اس نے پتلا کھول کر دریا بُرد کر دیا۔
اس عمل کے بعد ایک سال تک بھائی ٹھیک رہا، لیکن پھر دورے پڑنے شروع ہو گئے۔
ہم دوبارہ اس عامل کے پاس گئے تو اس نے کہا:
میں جو کر سکتا تھا کر چکا، اب یہ میری طاقت سے باہر ہے؛ اسے کسی اور کے پاس لے جاؤ۔
ہم کہاں لے کر جاتے؟ پریشانی کے عالم میں گھر لوٹ آئے۔
ایک دن بھائی مسجد میں نماز پڑھنے گیا تو اس کی ملاقات ایک شخص سے ہوئی جو بہت ملنسار تھا۔
بھائی نے اسے اپنا مسئلہ بتایا، تو وہ کہنے لگا: پریشانی والی کوئی بات نہیں، میں دم کرتا ہوں، آرام آجائے گا۔
اس نے کچھ دن دم کیا جس سے بھائی کی طبیعت بہت بہتر ہو گئی۔
وہ چوں کہ انگلینڈ کا رہائشی تھا، پاکستان چھٹی گزارنے آیا تھا، اس لیے چند ہی دنوں بعد واپس چلا گیا۔
بھائی اس سے کافی مانوس ہو چکا تھا اور وہ بھی۔
اس نے جاتی دفعہ کہا: اگر آئندہ کبھی مسئلہ بنے تو مجھے کال کرنا، میں دم کر دوں گا۔
تقریباً ایک ماہ گزرا تھا کہ بھائی کو تکلیف ہو گئی۔
ہم نے اسے کال ملائی، تو اس نے کہا:
فون بند کرو، میں دم کرتا ہوں۔

تھوڑی دیر بعد بھائی کو ہوش آیا تو زار و قطار رو رہا تھا۔

ہم نے پوچھا کیا ہوا؟

کہنے لگا میرے انگلینڈ والے دوست کو میری چیزوں نے مار دیا ہے۔

ہم بہت حیران ہوئے؛ ہم نے کہا: ابھی ابھی تو ہماری اس سے بات ہوئی ہے اور اسی کے دم سے تمھیں ہوش آیا ہے۔

کہنے لگا: تم لوگ مانو یا نہ مانو، وہ زندہ نہیں۔

ہم نے جب انگلینڈ کال ملائی تو پتا چلا واقعی اس کی ڈیتھ ہو گئی ہے۔

ہم بہت زیادہ پریشان ہو گئے، اب تو بظاہر کوئی سہارا بھی نظر نہیں آ رہا تھا۔

آخر ہم سب گھر والوں نے فیصلہ کیا کہ آج رات رو رو کے اللہ کی بارگاہ میں التجا کرتے ہیں، وہ تو ہر دُکھی کا سہارا ہے!!

ہم سب نے وضو کر مصلے ڈال لیے اور خوب رو رو کے دعائیں کیں۔

بس وہی آہیں اور دعائیں ہمارے کام آ گئیں اور مصیبت سے نجات مل گئی۔

آج دس سال ہونے کو ہیں بھائی کو دوبارہ شکایت نہیں ہوئی۔

اللہ پاک اسے ہمیشہ صحت مند رکھے۔

جب تمام سہارے ٹوٹ جاتے ہیں، اسباب منقطع ہو جاتے ہیں، خواب بکھر جاتے ہیں، غم گھیر لیتے ہیں، سب دروازے بند ہو جاتے ہیں تو بندہ اپنے مالک کے حضور آ جاتا ہے؛ اور وہ کریم اسے دامن رحمت میں چھپا لیتا ہے۔

کون سنتا ہے فریاد مظلوم کی ، کس کے ہاتھوں میں کنجی ہے مقسوم کی
رزق پر کس کے پلتے ہیں شاہ و گدا ، مسند آرائے بزمِ عطا کون ہے
کس سے مانگیں ، کہاں جائیں ، کس سے کہیں ، اور دُنیا میں حاجت روا کون ہے
سب کا داتا ہے تُو ، سب کو دیتا ہے تُو ، تیرے بندوں کا تیرے سِوا کون ہے

## بیوی اغوا ہو گئی

قبلہ والد صاحب سناتے ہیں کہ:

گورنرِ پاکستان امیر محمد خان کے دور میں ایک شخص کی بیوی اغوا ہو گئی۔

اس نے تھانے کے بہت چکر لگائے لیکن کچھ نہ بنا۔

اُسے کسی نے کہا:

ہر روز عَلَی الصُّبح گورنر صاحب فلاں جگہ سے گزرتے ہیں، تم اُن سے شکایت کرنا وہ کوئی نہ کوئی حل نکال دیں گے۔

وہ شخص امیر محمد خان کے راستے میں کھڑا ہو گیا، جیسے ہی گورنر صاحب کی گاڑی نظر آئی، آگے لیٹ گیا اور رونا شروع کر دیا۔

گورنر نے معاملہ پوچھا تو کہنے لگا:

سرکار آپ کے دورِ حکومت میں میری بیوی اغوا ہو گئی ہے!!

گورنر نے اُسے گاڑی میں ساتھ بٹھایا اور پوچھا: تجھے تھانہ کون سا لگتا ہے؟

اس نے بتایا، تو موصوف اُسے سیدھا تھانے لے گئے۔

تھانے دار نے جب گورنر کو اس طرح اچانک آتے دیکھا تو اس کا رنگ فَق ہو گیا۔

گورنر صاحب نے اسے کہا:

اس کی بیوی اب تک کیوں نہیں ملی؟

کہنے لگا: سر تلاش جاری ہے، جلد مل جائے گی۔

گورنر صاحب کہنے لگے: ایسے نہیں۔

اس کے چھوٹے چھوٹے بچے جو بلک رہے ہیں انھیں کھانا کون بنا کے دے گا؟

تم ایسے کرو کہ اپنے گھر کی کسی خاتون کو اس کے گھر بھیجو تاکہ وہ بچوں کو روٹی پکا کر دے..... جب اِس کی بیوی تلاش کر لو گے تو اسے ساتھ لے آنا۔ گورنر صاحب اتنے بارعب تھے کہ اُن کے منھ سے نکلے الفاظ حکم کا درجہ رکھتے تھے، کسی کو مجال چون و چرا نہ ہوتی۔

والد صاحب کہتے ہیں اس پر فوراً عمل ہوا تو آٹھ پہر سے پہلے مغوی خاتون کو پولیس نے برآمد کر لیا۔

امیر محمد خان کے دور میں ایک دفعہ چینی کا بحران پیدا کر دیا گیا تو اس نے تاجروں کا اجلاس طلب کر کے ایک دن کے اندر اندر وافر مقدار میں چینی مہیا کر لی تھی۔

امیر محمد خان کا عوام پر ہی نہیں، اعلیٰ عُہدے داروں پر بھی زبردست کنٹرول تھا، ان کے زمانے میں کسی بھی اعلیٰ شخصیت کو اجازت نہیں تھی کہ سرکاری رہائش گاہوں پر شراب اور رَقص و سُرُود کی محفل جمائے۔

ایک تو وہ گورنر صاحب تھے، اور ایک ہمارے "مرحوم" وزیرِاعظم صاحب ہیں..... جن کی اعلیٰ شخصیات نے کیا سننی ہے، "پٹرول پمپوں" والے بھی نہیں سن رہے۔

حکمرانی عقل و دانش سے ہوتی ہے، بے عقل حکمران سب کو لے ڈوبتا ہے۔

## سونے کا گھڑا

جب پاک و ہند بٹوارا ہو رہا تھا، اُن دنوں ایک ہندو، حاجی احمد دین مرحوم کے پاس گھڑا لے کر آیا اور کہا:

یہ سونے سے بھرا ہوا ہے، اِسے اپنے پاس رکھ لو..... اگر میں واپس آ گیا تو لے لوں گا، ورنہ تم پر سارے کا سارا حلال ہے۔

حاجی احمد دین نے اس سے گھڑا لے لیا اور اس طرح سنبھالا کہ اپنے گھر والوں کو بھی کانوں کان خبر نہ ہونے دی۔
کئی سال گزر جانے کے بعد وہ ہندو کسی کام سے پاکستان آیا، جب اس کی حاجی صاحب سے ملاقات ہوئی تو انھوں نے وہ گھڑا جوں کا توں اسے تھما دیا۔ وہ کہنے لگا:
احمد دین! یہ تم نے رکھ لینا تھا، میں نے تمھیں اختیار جو دیا تھا۔
حاجی صاحب نے کہا: جب میرا تھا ہی نہیں تو رکھتا کیوں..... یہ تیرا تھا، تجھے ہی نصیب ہو۔
اللہ پاک ایسے مسلمانوں کی کثرت کرے اور ہمیں ان میں سے کرے، جو کسی صورت بھی اپنا ایمان نہیں بیچتے .....جن کی نظروں میں سونے سے بھرے ہوئے صندوق بھی کچھ وقعت نہیں رکھتے۔

## اللہ نے شفا دی

حکیم اورنگ زیب آج بتا رہا تھا:
میں آرمی میں تھا، ابھی پانچ سال سروس رہتی تھی کہ میری کمر میں تکلیف شروع ہوگئی، جس نے اتنی شدت اختیار کی کہ میرا سیدھا کھڑا ہونا محال ہوگیا۔ مجھے آرمی سے ریٹائر کر دیا گیا، میں نے دنیا جہان کی دوائیاں لے لیں، لیکن کچھ افاقہ نہ ہوا۔
ایک دن میرے گھر والے مجھے اٹھا کر گولڑہ شریف لے گئے۔
میں جب وہاں پہنچا تو پیر صاحب جمعہ پڑھ کے باہر نکل رہے تھے۔
میرے والد صاحب نے آگے بڑھ کر دعا کے لیے کہا تو پیر صاحب نے وہاں کھڑے تمام لوگوں سے کہا:
سب ہاتھ اٹھاؤ!
سب نے ہاتھ اٹھائے تو پیر صاحب نے اللہ کریم سے میرے لیے دعا مانگی اور عرض کی: یا اللہ اب اسے معاف کر دے!
جب دعا کر کے فارغ ہوئے تو میری تکلیف دور ہوگئی، اور میں اٹھ کھڑا ہوا۔
پھر مسلسل سترہ سال تک گولڑے شریف جاروب کشی کرتا رہا، دوبارہ تکلیف نہ ہوئی۔
ایک دن میں نے پیر صاحب کے سامنے نعت شریف پڑھی تو پیر صاحب نے میرا ہاتھ چوم لیا۔
میں پیر صاحب کے پاپوش درست کرنے لگا تو فرمانے لگے:
آئندہ کبھی میرے جوتوں کو ہاتھ نہ لگانا، تُو سرکار کا نعت خواں ہے۔
میں نے عرض کی: حضور، مجھے آپ سے فیض ملا ہے۔
کہنے لگے: اس میں میرا کوئی کمال نہیں، تجھے اللہ نے شفا دی ہے۔
کتنے سال گزر گئے..... آج بھی الحمدللہ بالکل تندرست ہوں، سرکار ﷺ کی نعتیں پڑھتا ہوں۔

کس سے مانگیں، کہاں جائیں، کس سے کہیں؛ اور دُنیا میں حاجت روا کون ہے

سب کا داتا ہے تُو، سب کو دیتا ہے تُو، تیرے بندوں کا تیرے سِوا کون ہے !

## کالے چنے

آج ہم بھول کر اہلیہ سے پوچھ بیٹھے:

کیا پکایا ہے؟

تو بڑا سنجیدہ جواب ملا: بلیک گرین۔

نام سن کر منھ میں پانی آنے ہی والا تھا کہ ہانڈی پر نظر پڑی.....اُس میں "کالے چنے" اُبل رہے تھے۔

شکر ہے بلیک گرین کے بجائے: Bengal gram whole نہیں کہہ دیا، ورنہ ہم آکسفورڈ ڈکشنری لے کر بیٹھ جاتے۔

اردو زبان نے سیدھا سادھا نام دیا "کالے چنے"، تاکہ نام سنتے ہی جس کی بھوک مرنی ہے، مرجائے؛ وہ بے چارہ ترسے نہیں۔

لیکن انگریزی نے شاید قسم کھا رکھی ہے کہ:

چیز کو ایسا نام دینا ہے کہ سننے والا اُسے دیکھنے کے لیے ترس ہی جائے۔

(بھلے دیکھتے ہی منھ لٹکا لے)

اب دیکھیے:

گھر میں مُسُور پکے ہوں، اور بیگم سیدھا کہہ دے: مسور پکے ہیں، تو پتا چل جاتا ہے کہ دال پکی ہے۔

لیکن بیگم صاحبہ جب کہیں: آج ہم نے "براؤن لینٹیل" (brown lentil) پکائے ہیں..... تو ایک دفعہ خاوندِ نامدار کے پاؤں تلے سے زمین کیوں نہ نکلے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

یوں ہی لوبیا پکا کر کہے کہ:

آج kow peas بنایا ہے، تو شوہر بیچارہ خوشی سے پھولا نہ سمائے گا۔

(یہ الگ بات ہے کہ جب پکا ہوا سامنے آئے گا تو کیا حالت ہوگی۔)

## داڑھی

نعت گو شاعر محمد علی ظہوری صاحب مرحوم، ایک محفل میں یہ نعت شریف پڑھ رہے تھے۔

یوں تو سارے نبی محترم ہیں مگر، سرورِ انبیا تیری کیا بات ہے

حاجی ابوداود محمد صادق رحمہ اللہ اس محفل میں بیٹھے ہوئے تھے۔

بروقت نیکی کی دعوت دینا اور برائی سے منع کرنا، آپ کی عادت کریمہ میں شامل تھا۔

ظہوری صاحب کی داڑھی ایک مٹھی سے کم تھی، جب وہ نعت شریف پڑھتے ہوئے مقطع پر پہنچے ۔

آرزو تھی جو دل کی وہ پُوری ہوئی ، روضۂ مصطفیٰ کی حُضوری ہوئی
ہر جگہ پر ظہوری ظہوری ہوئی، اے نبی کے گدا تیری کیا بات ہے

تو حاجی صاحب رحمہ اللہ کہنے لگے:

آرزو تھی جو دل کی وہ پوری ہوئی ، روضۂ مصطفیٰ کی حضوری ہوئی
داڑھی تیری نہ اب بھی جو پوری ہوئی، اے نبی کے گدا.... تیری
کیا بات ہے!!

ظہوری صاحب پر قبلہ حاجی صاحب کے اِن الفاظ کا اتنا اثر ہوا کہ اُنھوں نے اُسی وقت داڑھی کٹوانے سے سچی توبہ کرلی۔
اللہ کریم انھیں غریقِ رحمت کرے، اور ہمارے موجودہ نعت خوانوں بلکہ تمام سُنیوں کو، سنت کے مطابق ایک مٹھی داڑھی رکھنے کی توفیق عطا فرمائے!

## ڈرامے پر پوسٹ کا نتیجہ

مجھے ایک بڑے ہی پیارے دوست نے ترکش ڈرامے "سلطان عبدالحمید" کے کچھ کلپ دے کر کہا:
انھیں ضرور دیکھیں، ان میں عورتوں وغیرہ والے سین نہیں ہیں۔
یہ سلطان کے رعایا پرور، نیک سیرت، محب وطن، انصاف پسند اور عاشقِ رسول ہونے کے عکاس ہیں۔
خیر، میں ان کی باتوں میں آگیا.....اور دیکھتے دیکھتے آنکھ لگ گئی۔
کیا دیکھتا ہوں کہ:
خواب میں گجرات شہر کے، قصبہ ٹانڈہ میں داخل ہوا ہوں۔
وہاں کی ایک مسجد کے باہر موٹر سائیکل کھڑا کر کے اندر نماز پڑھنے چلا گیا۔
جب نماز سے فارغ ہو کر باہر نکلا تو جوتا غائب تھا۔
وہاں موجود لوگوں سے پوچھا، لیکن کسی نے کچھ نہ بتایا۔
سوچا، کسی کا بلا اجازت جوتا پہن کر جانا تو ویسے ہی جائز نہیں، اور لاک ڈاؤن کے حالات میں دکان سے جوتا ملنا بھی مشکل ہے، چلو ننگے پاؤں گھر چلا جاتا ہوں۔
خیر..... ننگے پاؤں جب موٹر سائیکل کی طرف آیا تو وہ بھی غائب تھا۔
آس پاس کھڑے لوگوں سے پوچھا لیکن کسی نے سیدھی طرح بات نہ کی۔
دوبارہ مسجد میں آیا کہ اپنی جرابیں لے لوں، لیکن وہ بھی غائب تھیں۔۔۔۔۔۔۔

خیال آیا تھانے جاکر رپورٹ کرواتا ہوں، تاکہ موٹر سائیکل تو مل جائے۔

جب تھانے جانے لگتا ہوں تو سامنے "سلطان عبدالحمید" کھڑے نظر آتے ہیں جو موبائل پر کسی سے بات کر رہے ہوتے ہیں۔

میں فریاد فریاد کرتا ہوا اپنا مدعا پیش کرتا ہوں۔

سلطان اپنی فیاضانہ عادت کے مطابق کچھ رقم عطا کر دیتے ہیں، جو موٹر سائیکل کی قیمت سے زیادہ ہوتی ہے۔

بس وہ رقم سنبھال ہی رہا تھا کہ اچانک آنکھ کھل گئی۔۔۔۔۔۔۔۔

بیدار ہونے پر، رقم چلے جانے کا افسوس تو اپنی جگہ..... لیکن یہ سمجھ میں نہیں آیا کہ:

کیا سلطان کے وقت بھی لاک ڈاؤن ہوا تھا، جس میں جوتے کپڑے کی دکانیں بند کر دی گئی تھیں۔

اور سلطان کے زمانے میں:

نہ ہنڈا موٹر سائیکل ایجاد ہوا تھا

نہ سام سنگ موبائل

اور

نہ بورجان کے جوتے

یہ تینوں خواب میں کہاں سے آ گئے۔

لگتا ہے یہ سب ڈرامے پر پوسٹ کرنے کا نتیجہ ہے۔

میری توبہ جو دوبارہ کسی ڈرامے پر وال پہ بات کروں۔

شکر ہے اس نے ارطغرل کا کوئی کلپ نہیں بھیجا، ورنہ آنکھ لگتے ہی "بعض" فیس بک فرینڈز نے کردوغلو، نویان اور امیر سعدالدین کو پیک کے روپ میں تلواریں باندھے آجانا تھا۔

خوش رہیں، خوش رکھیں!

## لال رومال والا

گنبد خضرا کی طرف منھ کر کے درود و سلام پیش کر رہا تھا کہ ایک لال رومال والا آکر "حسبِ عادت" قیل و قال کرنے لگا۔

میں نے اُسے بڑے پیار سے کہا:

آپ جو کہتے ہیں رسول اللہ کی طرف منھ کر کے اللہ کے حضور دعا نہ کرو، یہ بات قرآن و حدیث میں کہیں نہیں لکھی ہوئی، یہ آپ کی خود ساختہ ہے۔

اللہ کے نبی نے کہیں بھی یہ نہیں فرمایا کہ جب بھی دعا کرو تمھارا منھ قبلہ شریف کی طرف ہونا چاہیے۔

رسالت مآب ﷺ نے قبلہ رُو بھی دعا مانگی ہے اور دوسری سمتوں کی طرف منھ کر کے بھی؛ اور یہی عمل امت کے لیے ہے کہ وہ جس طرف چاہیں منھ کر کے اللہ سے مانگیں، اللہ جل جلالہ ان کی سنے گا، انھیں عطا کرے گا۔

دیکھیں، میں اگر آپ کی طرف منھ کر کے دعا کروں تو کیا یہ ناجائز ہو گا؟ بالکل نہیں!

تو جب آپ کی طرف منھ کر کے دعا کرنا جائز ہے، زید بکر کی طرف منھ کر کے دعا کرنا جائز ہے تو رسول خدا کی طرف منھ کر کے دعا کرنا کیسے ناجائز ہو گیا۔ پھر میں آپ سے مُخاطَب ہوں، میں نے آپ کی طرف منھ کیا ہوا ہے، جو کہ قرینِ عقل ہے؛ کیوں کہ میں آپ سے ہی بات کر رہا ہوں۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔ اگر میں بات آپ سے کر رہا ہوں، اور منھ آپ کی طرف کرنے کے بجائے پشت کر لوں، تو کتنا نامناسب لگے گا۔

اسی طرح جب ہم رسول اللہ کے پاس آئے ہیں، آپ کی بارگاہ میں حاضر ہیں؛ تو تمھیں کوئی حق نہیں پہنچتا کہ ہمیں کہو: اللہ کے رسول کی طرف منھ کر کے بات نہ کرو، ادھر پشت کرو۔ (معاذ اللہ ثم معاذ اللہ)

اللہ پاک ایسے لوگوں سے حرم رسول کو پاک فرمائے، جو رسول اللہ کے مہمانوں کو خواہ مخواہ تنگ کرتے ہیں۔

شاید ان کی تربیت ہی ایسے کی جاتی ہے کہ تم نے کسی کی کوئی بھی معقولی و منقولی بات نہیں ماننی، چاہے وہ سو فی صد قرآن و حدیث کے مطابق ہو؛ تم نے صرف وہی کہنا ہے جو ہم کہتے ہیں۔

## بہادر

حضرت عبداللہ بن زبیر بڑے جُرات مند تھے، آپ کی والدہ نے بچپن ہی سے آپ کی بہادروں جیسی تربیت کی تھی

۔

بچپن میں، ایک دفعہ ہم جولیوں کے ساتھ کھیل رہے تھے کہ ایک آدمی نے انھیں ڈانٹ دیا۔

سارے بچے ڈر کر بھاگ گئے، لیکن آپ اپنی جگہ پر کھڑے رہے اور بچوں کو آواز دے کر کہنے لگے:

اے بچو! (بھاگو نہیں) مجھے اپنا امیر بنا لو، اور میرے ساتھ مل کر اس پر حملہ کرو۔

اِسی طرح آپ بچوں کے ساتھ کھیل رہے تھے کہ سیدنا فاروق اعظم کا وہاں سے گزر ہوا تو آپ کو دیکھ کر دوسرے بچے بھاگ کھڑے ہوئے، لیکن آپ وہیں رہے۔ سیدنا فاروق اعظم نے کہا: اپنے دوستوں کے ساتھ تُو کیوں نہیں بھاگا؟

کہنے لگے: امیر المومنین! میں نے کوئی جرم نہیں کیا، کہ ڈر کے مارے بھاگ جاتا؛ اور نہ راستہ تنگ تھا کہ مجھے بھاگ کر آپ کے لیے کشادہ کرنا پڑتا۔

(انظر: الاذکیا، لابن جوزی۔ الباب التاسع والعشرون، فی ذکر طرف من اخبار فطن الصبیان، ص186، ط دار الفکر بیروت)

آپ افریقہ کی ایک جنگ میں شریک ہوئے تھے، جس میں جُرجِیر بادشاہ ایک لاکھ بیس ہزار کا لشکر جرار لے کر آیا تھا،

اور مسلمانوں کی تعداد صرف بیس ہزار تھی۔
آپ رضی اللہ عنہ نے ایک دستہ ساتھ لے کر جُرجِیر پر حملہ کر کے اسے واصل جہنم کر دیا، اور مسلمانوں کو فتح حاصل ہوگئی۔
آپ رضی اللہ عنہ کی والدہ سیدہ اسما بنت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنھا بیمار تھیں، آپ اپنی شہادت سے دس دن پہلے انھیں ملنے آئے تو کہنے لگے: موت میں سکون ہے۔
والدہ (نے جب بہادر بیٹے کے منھ سے یہ الفاظ سنے تو) کہنے لگیں:
شاید تم موت کی آرزو میری وجہ سے کر رہے ہو، (کہ میری بیماری تم سے دیکھی نہیں جاتی، لیکن یاد رکھو!) میں اس وقت تک مرنا نہیں چاہتی جب تک تمھاری شہادت نہ ہو جائے اور میں صبر کر کے اجر کی حقدار نہ بن جاؤں۔

یا

تم دشمن پر فتح یاب ہو کے میری آنکھیں ٹھنڈی نہ کر دو!!
آپ رضی اللہ عنہ (اپنی ماں کے بہادرانہ جملے سن کر) ہنسنے لگے۔
پھر جس دن آپ کی شہادت ہونی تھی، آپ کی والدہ وہاں سے گزریں تو کہنے لگیں:
اے بیٹے! موت سے ڈر کر، کسی ذلت والی چیز کو قبول نہ کرنا؛ اللہ کی قسم عزت والی تلوار کی ضرب، ذلت والے کوڑے سے بہتر ہے۔
آپ نے اپنی ماں کی نصیحت یاد رکھی اور شہید ہوتے وقت کہا:

وَلَسْنَا عَلَى الْأَعْقَابِ تَدْمى كُلُومُنَا
وَلٰكِنْ عَلىٰ أَقْدَامِنا يَقْطُرُ الدِّمَا

ہمارے زخموں کا خون، ہماری ایڑیوں پر نہیں، ہمارے قدموں پر گرتا ہے۔

(انظر: الاصابة فی تمییز الصحابة، ج2، ص598، 599، ر 2949، ط دار المعرفة بیروت)

آج کی ہر مسلمان ماں کو، سیدہ اسما کی طرح اپنے بچوں کی تربیت کرنی چاہیے، تاکہ بہادر قوم وجود میں آئے جو کافروں اور ظالموں کا مقابلہ کر سکے۔

## استاد، مرشد، اور۔۔۔۔۔روغن

کاشت کار نے بادام کا چھوٹا سا پودا لگایا، جو چند سالوں میں درخت بن گیا۔
اُس پر پھول کھلے، پھولوں سے پھل نکلا، پھل پک کر پھٹا تو۔۔۔۔۔۔۔ بادام برآمد ہوئے؛ ان باداموں کو توڑا تو گریاں نکلیں۔
گریوں کو "حکیم صاحب" کے پاس لے جایا گیا، انھوں نے کھرل میں ڈال کر رگڑا لگایا۔۔۔۔۔۔۔ جب وہ یک جان

ہوگئیں تو چمچ کے ساتھ اُن پر تھوڑا تھوڑا گرم پانی ڈالا، اور پوری قوت کے ساتھ آہستہ آہستہ رگڑا تو ان سے روغنِ بادام برآمد ہوا۔

جس کے استعمال نے:

لوگوں کو جسمانی طور پر بہت نفع دیا۔

کسی نے اس سے سردی دور کی، کسی نے دماغی طاقت لی تو کسی نے پیٹ کا علاج کیا۔

اگر آپ نے بادام روغن کی کہانی توجہ سے پڑھ لی ہے، تو یہ بھی پڑھ لیجیے:

انسان چھوٹا سا پودا ہوتا ہے، جسے "استاد" زمینِ علم پر بوتا ہے۔

چند سالوں بعد اِس کا قد کاٹھ نکل آتا ہے، تو اس پر پھول لگنے شروع ہوجاتے ہیں، جن سے پھل برآمد ہوتا ہے۔

جب پھل پک جاتا ہے تو اس سے مغزِ علم نکلتا ہے۔

اب۔۔۔۔۔۔۔۔اُس مغز سے روغن نکالنے کے لیے "شیخ و مرشد" کے پاس لے جایا جاتا ہے۔

"مرشدِ کامل"، تصوف کی کھرل میں ڈال کر، ارادت کا رگڑا لگاتا ہے؛ جب ظاہر و باطن ایک ہوجاتا ہے تو خلوص کے پانی کے چھینٹے مارتا ہے، تو۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔"روغنِ عمل" برآمد ہوتا ہے۔

پھر مرید شیخ کا دیا ہوا یہ روغن لے کر جس علاقے میں جاتا ہے، لاکھوں ہزاروں لوگ اس سے نفع حاصل کرتے ہیں۔

کوئی: خلوص و للّٰہیت لیتا ہے، تو کوئی تقویٰ و طہارت؛ کوئی خوف و خشیت لیتا ہے، تو کوئی احساس و مروت۔

ہمارے استاد پر اللہ کی رحمت ہو جس نے علم کا پودا لگایا، اور مرشد پر بھی رحمت ہو جس نے عمل کا روغن برآمد کیا۔

سیکڑوں کتابیں ایک طرف۔۔۔۔۔۔۔اور استاد کا بتایا ہوا "ایک لفظ" ایک طرف۔

کئی علوم و معارف ایک طرف۔۔۔۔۔۔۔۔اور شیخ کا دیا ہوا "سبق" ایک طرف۔

جو عالم نہیں، وہ علم حاصل کرنے کے لیے استاد پکڑے، اور جو عالم ہے، وہ علم کو نافع بنانے کے لیے شیخ پکڑے؛ تاکہ ایسا روغن برآمد ہو، جس سے ایک زمانہ نفع حاصل کرے۔

## میں بوڑھا ہوں

سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں، ایک بندہ نبی پاک ﷺ کے پاس آیا اور کہنے لگا:

اے اللہ کے نبی! میں بوڑھا ہوں، (روزانہ) قیام کرنا میرے لیے مشکل ہے، آپ مجھے کوئی ایسی رات بتادیں جس میں (قیام کروں تو) شاید اللہ تعالیٰ مجھے شبِ قدر کی سعادت نصیب کردے۔

آپ ﷺ نے فرمایا: (رمضان شریف کے آخری عشرے کی) ساتویں رات کو قیام کرلیا کرو۔

(تذکرۃ الحفاظ للذھبی رحمہ اللہ، ج2، ص431، 432، ر438، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

رب تعالیٰ جَلَّ جَلَالُہٗ ہم کمزوروں کو بھی رمضان شریف کی ستائیسویں رات قیام (یعنی نوافل ادا) کرنے کی توفیق بخشے!

1نفل اللہ پاک کے قرب کا بہترین ذریعہ ہیں، صحیح حدیث میں ہے کہ:

نفل پڑھ پڑھ کے بندہ اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کا دوست بن جاتا ہے، پھر وہ جو مانگتا ہے اللہ پاک اسے عطا کر دیتا ہے۔ (رواہ البخاری)

2نفل نماز ہمیشہ خشوع و خضوع سے پڑھنی چاہیے، چاہے تھوڑی رکعتیں ہی پڑھی جائیں۔

نفل نماز میں جتنی زیادہ ہو سکے تلاوت کلام پاک کرنی چاہیے، اس کا بہت زیادہ اجر ہے۔

## میری گھریلو ڈائری کا ایک پرانا ورق

پردادا جی قبلہ حافظ احمد خاں رحمہ اللہ حفظ کر رہے تھے، تقریباً دس پارے حفظ ہوئے ہوں گے کہ آپ کا استاد مرزائی ہو گیا۔ (معاذ اللہ ثم معاذ اللہ!) آپ صلاح مشورے کے لیے اعوان شریف قاضی سلطان محمود رحمہ اللہ کے پاس گئے، جو ہمارے علاقے کے متبحر عالم اور صاحب کشف ولی تھے۔

کہتے ہیں: قاضی صاحب کا کشف ایسا تھا کہ اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کی عطا سے اپنے پاس آنے والوں کی دلی کیفیت سے فوراً مطلع ہو جایا کرتے تھے۔

پردادا جی، قاضی صاحب کے پاس ایسے وقت پہنچے جب آپ ورد وظیفے میں مشغول ہوتے اور کسی سے ملاقات نہیں کرتے تھے۔

پردادا جی کے پہنچتے ہی قاضی صاحب خلاف معمول حجرے سے باہر آئے اور کہنے لگے:

آپ کا استاد مرزائی ہو گیا ہے، آپ نے اب اس کے پاس نہیں پڑھنا، نہ اسے ملنا ہے؛ لیکن یہ یاد رکھنا ہے کہ وہ آپ کا استاد ہے (اس کے لیے دعاے ہدایت کرتے رہنا ہے)۔

اب آپ گاؤں بَنیاں چلے جائیں، وہاں حافظ کرم الٰہی صاحب ہیں ان کے پاس بقیہ پارے مکمل کر لیں۔

پردادا جی رحمہ اللہ حسبِ حکم رَولیے بَنیے آ گئے اور حافظ صاحب کی شاگردی اختیار کر لی۔

حافظ کرم الٰہی رحمہ اللہ انتہائی نیک انسان تھے، سجدے کی حالت میں آپ کی روح قبض ہوئی ہے۔

پردادا جی رحمہ اللہ استاد ہونے کے ناطے ان کا بے حد احترام کرتے تھے ان کی کوئی بات نہیں ٹالتے تھے۔۔۔۔۔۔۔ اگر وہ یہ بھی کہتے کہ احمد خاں تین دن تک یہاں کھڑے رہو تو پردادا جی کھڑے ہی رہتے۔

پردادا جی رحمہ اللہ نے جب حفظ مکمل کر لیا تو پیر سید مہر علی شاہ صاحب رحمہ اللہ کے حکم پر اپنا مدرسہ کھول کر طلبہ کو حفظ کروانا شروع کر دیا۔

آپ سے سیکڑوں طلبہ نے حفظ کیا، اور صحیح معنوں میں حفظ کیا۔

دادا جی حافظ محمد عالم رحمہ اللہ کہتے تھے کہ:

ہمارے استاد صاحب سے پڑھے ہوؤں کا حفظ اتنا مضبوط ہوا کرتا تھا کہ جس وقت بھی۔۔۔۔۔۔کوئی جہاں سے بھی سنتا، فوراً سنا دیتے تھے؛ عام حافظوں کی طرح یہ نہیں کہتے تھے: دیکھ لوں، نظر مار لوں، تیاری کر لوں، پکا لوں وغیرہ وغیرہ۔

ان کے شاگرد ایک ایک رکعت میں بیس بیس پارے پڑھ دیا کرتے تھے لیکن کوئی غلطی نہیں ہوتی تھی۔
خود استاد صاحب نے ایک جگہ کھڑے ہو کر ستائیس پارے زبانی سنا دیے تھے لیکن کوئی متشابہ نہیں لگا تھا۔
ان کے طلبہ اتنی محنت کرتے تھے کہ صبح تین بجے جاگتے، اور رات گیارہ بجے تک تلاوت کرتے رہتے تھے۔
قبلہ پردادا جی رحمہ اللہ اپنے اہل خانہ کے معاملے میں بھی بہت اچھے تھے۔
اپنے بھائیوں، بھتیجوں اور رشتے داروں کا بہت زیادہ خیال رکھتے، ہر معاملے میں ان کی مدد کرتے رہتے۔
گھر والوں سے نرمی کا عالم یہ تھا ایک دفعہ چالیس کلو دیسی گھی کا ٹین رکھا ہوا تھا کہ اہلیہ سے سارے کا سارا گر گیا، تو بالکل ناراض نہ ہوئے بلکہ کہنے لگے: پریشان نہ ہو کوئی بات نہیں، اللہ اور دے گا۔
اللہ پاک کی ان پر رحمت ہو!

## مفلس

شیخ سعدی شیرازی رحمہ اللہ کہتے ہیں:
ایک بادشاہ نے کسی بال بچے دار عابد سے پوچھا: تیری گزر بسر کیسے ہوتی ہے؟
وہ کہنے لگا:

**همه شب در مناجات، و سحر در دعای حاجات، و همه روز در بند اخراجات.**

ساری رات مناجات میں، صبح کا وقت دعاے حاجات میں، اور دن فکرِ اخراجات میں گزرتا ہے۔

همه روز اتفاق می سازم
که به شب با خدای پردازم
شب چو عقد نماز می بندم
چه خورد بامداد فرزندم

روزانہ نیت کرتا ہوں کہ رات کو اللہ تعالیٰ کی عبادت کروں گا، لیکن رات کو جب نماز کی نیت باندھتا ہوں تو یہ فکر لاحق ہو جاتی ہے کہ صبح میرے بچے کیا کھائیں گے۔

(گلستان سعدی، باب دوم در اخلاق درویشان، حکایت شمارۂ 32)

آپ امام ہیں، خطیب ہیں، یا مؤذن و مدرس؛ آپ کا کوئی نہ کوئی کاروبار ضرور ہونا چاہیے تاکہ فکر معاش سے آزاد ہو کر دینی فریضہ ادا کر سکیں۔ ویسے بھی آج کے دور میں کاروبار کے بغیر پرسکون زندگی گزارنا، اور حرام سے بچتے ہوئے اپنی

ضرورتیں پوری کرنا بہت مشکل ہے۔
لوگوں پر مفلس و تہی دامن عالم کی بات کا وہ اثر نہیں ہوتا جو صاحبِ استطاعت عالم کی بات کا ہوتا ہے، کیوں کہ وہ لوگوں کے مال کا محتاج نہیں ہوتا۔ مفسر قرآن مفتی احمد یار خان نعیمی رحمہ اللہ کہتے تھے:
مفلس (غریب) کی بات کا وزن ہی نہیں ہوتا، پیشہ ور واعظ اور علما کو بدنام کرنے والے مہذب بھکاری اعلیٰ درجہ کا وعظ کہہ کر جب اخیر میں کہہ دیں کہ: بھائیو! میرے پاس کرایہ نہیں، میں مفلس ہوں، میری مدد کرو!
ان دو لفظوں سے سارا وعظ بیکار ہو جاتا ہے۔
بھیک وہ کھٹائی ہے جو وعظ کے سارے نشہ کو اتار دیتی ہے۔
"حق تو یہ ہے کہ مفلس کی نہ نماز اطمینان کی، نہ روزہ؛ زکوۃ و حج کا تو ذکر ہی کیا، یہ عبادتیں اُسے نصیب ہی کیسے ہوں!!"
(ضمیمہ اسلامی زندگی، ص137، ط مکتبۃ المدینہ کراچی، س1431ھ)

نیچے ایک سو کاروبار کی فہرست دی جارہی ہے، اس میں سے اپنی مرضی اور آسانی کا کاروبار منتخب کرلیں ۔۔۔۔۔۔ خدا توفیق دے تو آج سے ہی کاروبار کی ابتدا کرلیں، اور اس میں اتنی ترقی کریں کہ اپنے غریب مقتدیوں اور طالب علموں کی مدد کرسکیں، انھیں بلا سود قرضے دے سکیں، شادی بیاہ میں معاونت کرسکیں، ان کا علاج معالجہ کراسکیں۔ ظاہر ہے جب آپ مدد کریں گے تو چھپا کر کریں گے، اخلاص کے ساتھ کریں گے اور عزت نفس بھی پامال نہیں ہونے دیں گے، کیوں کہ آپ پہلے دین دار ہوں گے، پھر دنیادار۔
رب تعالیٰ جَلَّ جَلَالُہٗ آپ کو دنیا، آخرت میں آسودگی نصیب فرمائے!

## ایک خوب صورت واقعہ

مشہور سیّاح ابن بطوطہ نے تقریباً 29 سال دنیا کی سیر کی، اور اس دوران تقریباً 75000 میل سفر کیا۔
یہ سفر کرتے کرتے جب مکہ مکرمہ پہنچے تو وہاں اِن کی ملاقات ایک نوجوان سے ہوئی جس کا نام حسن تھا اور لوگ اُسے حسن مجنون کہتے تھے۔
اس نوجوان سے عجیب و غریب چیزیں ظاہر ہوتی تھیں ۔۔۔۔۔۔ وہ جس دکان سے کھانا کھالیتا خیر و برکت کا رخ ادھر ہو جاتا؛ لوگ اس کا از حد احترام کیا کرتے تھے، اور تمنا کرتے کہ کاش وہ ہم سے کچھ قبول کرے۔

ابن بطوطہ نے اس کے متعلق معلوم کیا تو پتا چلا کہ:
حسن رات کو بیت اللہ شریف کا کثرت سے طواف کیا کرتا تھا۔
اس کے ساتھ ایک فقیر بھی طواف کرتا تھا جو صرف رات کو ہی نظر آتا، دن کو نظر نہیں آتا تھا۔
ایک رات وہ فقیر حسن سے ملا، اس کا حال چال پوچھا اور کہنے لگا:

حسن! تیری ماں اللہ کی نیک بندی ہے وہ تیرے لیے روتی ہے اور تجھے دیکھنا چاہتی ہے، کیا تُو چاہتا ہے کہ وہ تیرا دیدار کرلے ؟

حسن نے کہا: ہاں، لیکن مجھ میں یہ طاقت نہیں کہ میں اپنا آپ والدہ کو دکھا سکوں (کیوں کہ وہ یہاں سے میلوں دور ہیں)۔

فقیر نے کہا: ہم کل رات انشاء اللہ یہیں ملیں گے (میرا انتظار کرنا)۔

اگلی رات فقیر حسب وعدہ پہنچ گیا، دونوں نے بیت اللہ شریف کا طواف کیا۔۔۔۔۔۔۔ پھر فقیر باہر نکل گیا، حسن اس کے پیچھے تھا، جب باب مُعلٰی پر پہنچے تو فقیر نے کہا:

اپنی آنکھیں بند کرو اور کپڑے سمیٹ لو۔

حسن نے اسی طرح کیا تو تھوڑی دیر بعد فقیر نے پوچھا:

کیا اپنے شہر کو پہچانتے ہو؟

اس نے کہا ہاں!

فقیر نے کہا: دیکھ، کیا یہی تیرا شہر ہے؟ حسن نے آنکھیں کھولیں تو کیا دیکھتا ہے کہ اپنی والدہ کے گھر پر موجود ہے۔

حسن والدہ کے پاس چلا گیا اور انھیں کچھ نہ بتایا، اور آدھا ماہ ان کی خدمت میں رہا۔

(ابن بطوطہ کہتے ہیں) میرا خیال ہے حسن کا شہر اَسَفی تھا۔

پھر ایک دن حسن قبرستان کی طرف گیا تو کیا دیکھتا ہے کہ وہی فقیر اُس کے ساتھ ہے۔

اس نے حسن سے پوچھا: کیا حال ہے؟

حسن نے کہا:

یا سیدی! (میں اپنے پیر و مرشد) شیخ نجم الدین کی زیارت کے لیے ترس رہا ہوں، میں تو حسب معمول وہاں سے آیا تھا اب اتنے دن ہو گئے ان سے جدا ہوئے؛ میں چاہتا ہوں مجھے آپ کی طرف لوٹا دیا جائے۔

فقیر نے کہا ٹھیک ہے، رات کو اسی قبرستان میں ملاقات کا وعدہ رہا۔

جب رات کو وہاں پہنچے تو فقیر نے پہلے کی طرح ہی آنکھیں بند کروائیں اور جب کھولیں تو وہ مکہ معظمہ میں تھے۔

فقیر نے حسن کو نصیحت کی کہ یہ معاملہ شیخ نجم الدین یا کسی اور کے سامنے بالکل بیان نہ کرنا۔

حسن جب شیخ نجم الدین کے پاس گیا تو آپ نے پوچھا: تم اتنے دن کہاں غائب رہے؟

کہنے لگا: حضرت، نہ پوچھیے!

لیکن جب انھوں نے اصرار کیا تو مجبوراً بیان کرنا پڑا۔

اب شیخ کہنے لگے: مجھے وہ شخص دکھاؤ! (جو تمھیں پلک جھپکنے میں اتنی دور لے گیا، اور لے بھی آیا۔)

حسن انھیں لے کر رات کے وقت (حرم کعبہ میں) آیا۔

جب وہ فقیر حسب عادت آیا اور ان کے پاس سے گزرنے لگا تو حسن نے کہا: یا سیدی! یہ ہے وہ شخص۔
یہ بات فقیر نے سن لی اور اس نے حسن کے منھ پر ہاتھ مار کر کہا:
چپ ہو جا، خدا تجھے خاموش کرے!
اتنا کہنا تھا کہ حسن گونگا ہو گیا، اور اس کی عقل جاتی رہی۔
پھر وہ اسی حال میں حرم پاک میں رہتا تھا اور دن رات بغیر وضو کے ہی طواف کرتا رہتا اور اسے نماز کا کوئی ہوش نہ رہا۔
(تحفۃ النظار فی غرائب الامصار وعجائب الاسفار، ج1، ص171، 172، ط دار احیاء العلوم بیروت، س 1407ھ)

1 رجال الغیب ایک مخلوق ہے جسے اللہ کریم نے بڑے مرتبے سے نوازا ہے، اگر خوش قسمتی سے کسی کی ان سے ملاقات ہو جائے تو اسے غنیمت سمجھنا چاہیے اور ان کی اجازت کے بغیر ان کے معاملات کو کسی پر ظاہر نہیں کرنا چاہیے۔
2 مکہ مکرمہ اور مدینہ منورہ میں رجال الغیب بکثرت حاضری دیتے ہیں، وہاں ہر ایک کا احترام کرنا چاہیے کسی کے ساتھ جھگڑنا نہیں چاہیے، کیا معلوم جسے آپ بداخلاق ہوٹل والا سمجھ رہے ہوں، یا غبار سے اٹا صفائی کرنے والا نظر آرہا ہو وہ انھی میں سے ہو۔
(نوٹ: بعض باتیں خاص قسم کی ہوتی ہیں جنھیں مخصوص لوگ ہی سمجھ سکتے ہیں۔)

## واللہ، وہ سن لیں گے!

اُندُلُس کے ایک شخص کا بیٹا (رُومیوں کا) قیدی بن گیا، تو یہ اپنے شہر سے نکلا تاکہ (مدینے شریف جاکر) رسول پاک ﷺ کی بارگاہ میں بیٹے کا معاملہ پیش کرے۔
راستے میں اِس کی ایک جاننے والے سے ملاقات ہوئی، تو اُس نے سوال کیا: کہاں جارہے ہو؟
کہنے لگا: رسول اللہ ﷺ کی طرف جارہا ہوں، آپ سے شفاعت کی التجا کرنی ہے، کیوں کہ میرے بیٹے کو رومیوں نے گرفتار کرلیا ہے اور اس کی رہائی کے لیے تین سو دینار مقرر کیے ہیں، جو میں ادا نہیں کرسکتا۔
اُس نے کہا: (خدا کے بندے!) رسول پاک ﷺ کی شفاعت تو ہر جگہ نفع دیتی ہے (تو یہیں سے کیوں عرض نہیں کرلیتا، کیا اس کے لیے مدینہ پاک ہی جانا ضروری ہے)۔
(چوں کہ اِس کی اپنی ایک محبت تھی، یہ نہ مانا اور اپنی منزل کی طرف چل پڑا) یہ جب مدینہ پاک پہنچا تو بارگاہِ اقدس میں حاضر ہو کر اپنی حاجت بیان کی اور (بارگاہ الٰہی میں دعا کے لیے) آپ کا وسیلہ پیش کیا۔
اِسے خواب میں نبی پاک ﷺ کی زیارت نصیب ہوئی اور آپ نے فرمایا: اپنے شہر واپس چلا جا!
یہ جب اپنے شہر واپس آیا تو اِس نے دیکھا کہ اللہ تعالی نے اِس کے بیٹے کو رہائی عطا فرمادی ہے۔
اِس نے بیٹے سے حال پوچھا تو وہ کہنے لگا: (والد بزرگ وار!) فلاں رات اللہ تعالی نے مجھے اور میرے ساتھ بہت سارے

قیدیوں کو رہائی عطا فرمادی

(باپ نے جب غور کیا تو اِسے معلوم ہوا کہ) یہ وہی رات تھی جس رات یہ اپنے بیٹے کے لیے بارگاہ رسالت میں حاضر ہوا تھا۔

(انظر: مصباح الظلام فی المستغیثین بخیر الانام علیہ الصلاۃ والسلام فی الیقظۃ والمنام، ص106، 107، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

مدینے پاک کی طرف کیا جانے والا سفر کبھی رائیگاں نہیں جاتا۔۔۔۔۔۔۔بس صدقِ نیت، غیر متزلزل یقین اور خلوص و محبت کا ساتھ ہونا چاہیے۔

## شرف قبولیت

حافظ ابن ابی الدنیا رحمہ اللہ نے ایک کتاب لکھی ہے جس میں اُن لوگوں کے واقعات جمع کیے ہیں جن کی دعائیں قبول ہوئیں، مشکلیں حل ہوئیں، اور مرادیں بر آئیں۔

یہ کتاب پڑھنے کے لائق ہے۔۔۔۔۔اسے پڑھ کر یقین مزید مضبوط ہوجاتا ہے؛ اور جب یقین مضبوط ہوتا ہے تو دعائیں شرف قبولیت بھی پالیتی ہیں۔ (اگر کوئی فاضل دوست اس کتاب کا اردو ترجمہ کردیں تو بہت سارے اہل اردو کا بھلا ہوجائے گا۔)

اس کتاب میں اپنے زمانے کے طبیب حضرت عَبدُالملِک بن اَبجر تابعی رحمہ اللہ کا ایک واقعہ لکھا ہے کہ:

آپ کے پاس (علاج کے لیے) ایک شخص آیا تو آپ نے اس کا پیٹ چیک کرکے کہا: تمھیں ایک لاعلاج مرض ہے۔

اس نے پوچھا: وہ کیا؟

کہنے لگے: دُبَیلَہ (یعنی تیرے پیٹ میں ایک خاص قسم کا پھوڑا) ہے۔

وہ شخص (یہ سن کر) واپس آیا اور (اپنے رب کے حضور فریاد کرتے ہوئے) کہنے لگا:

اللہ، اللہ، اللہ، میرا رب ہے؛ میں اس کا کسی کو شریک نہیں ٹھہراتا۔

اے اللہ! میں تیری طرف تیرے نبی محمد پاک علیہ الصلاۃ والسلام کے وسیلے سے متوجہ ہوتا ہوں، جو رحمت والے نبی ہیں۔

یا محمد! میں آپ کے وسیلے سے آپ کے اور اپنے رب کی طرف متوجہ ہوتا ہوں، وہ جَلَّ جَلَالُہٗ میری بیماری میں مجھ پر رحم فرمائے۔۔۔۔۔مجھے ایسی رحمت کی ضرورت ہے جو مجھے اس کی رحمت کے علاوہ ہر رحمت سے مستغنی کردے!

تین دفعہ یہ دعا مانگ کر وہ شخص دوبارہ حکیم عبدالملک رحمہ اللہ کے پاس جب گیا تو آپ نے اس کا پیٹ دبا کر کہا: تم ٹھیک ہوچکے ہو، اب تمھیں کوئی مرض نہیں رہا۔

(مجابو الدعوۃ، دعاء من مرض فی بطنہ، ص136، مکتبۃ القران القاھرۃ)

صدق یقین سے اپنے نبی کا وسیلہ پیش کرنے والا بارگاہِ الٰہی سے کبھی خالی نہیں لوٹایا جاتا۔

## ایک واقعہ

(یہ ایسا واقعہ ہے جس کے متعلق امام احمد بن حنبل اپنے شاگردوں سے فرمایا کرتے تھے: اسے بیان کیا کرو، اسے یاد کرلو یہ بڑا فائدے مند ہے۔)

امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ کا ایک ہمسایہ بڑا فاسق فاجر تھا، ایک دن اس نے آپ کی مجلس میں آکر سلام کیا تو آپ نے اسے صحیح طرح سے جواب نہ دیا اور اس سے بے رخی کا اظہار کیا۔

وہ کہنے لگا: اے ابو عبداللہ! مجھ سے کیوں نالاں ہیں؟

آپ کو میرے (برے اعمال کے) متعلق جو کچھ معلوم ہے، ایک خواب دیکھنے کے بعد میں اُس سے توبہ کر چکا ہوں۔

امام صاحب نے فرمایا: تُو نے کیا خواب دیکھا ہے؟

کہنے لگا: میں نے خواب میں رسول اللہ ﷺ کی زیارت کی ہے۔۔۔۔۔ آپ زمین کے ایک بلند حصے پر تشریف فرما تھے اور بہت سارے لوگ نیچے بیٹھے ہوئے تھے۔

ان میں سے ہر بندہ اٹھ کر بارگاہِ اقدس میں عرض کرتا:

حضور! میرے لیے دعا فرمادیں، تو آپ دعا فرمادیتے۔۔۔۔۔۔ یہاں تک کہ میرے سوا کوئی باقی نہ رہا۔

میں نے کھڑے ہونے کا ارادہ کیا لیکن اپنے برے اعمال کی وجہ سے مجھے حیا آگئی۔ (کہ کہاں میں، اور کہاں یہ بارگاہ!)

سرکار نے مجھے فرمایا: اے فلاں! تو اٹھ کر مجھ سے کیوں سوال نہیں کرتا، کہ میں تیرے لیے بھی دعا کروں؟

۔میں نے عرض کی: یارسول اللہ! میرے عمل بہت برے ہیں جن کی وجہ سے مجھے حیا آرہی ہے۔

ارشاد فرمایا: اگر (گناہوں کی) حیا تجھے کھڑا ہونے سے روک رہی ہے تو میں تجھے کہتا ہوں کھڑا ہو جا اور سوال کر، تاکہ میں تجھے دعا دوں

"فانك لاتسب احدا من اصحابي"

کیوں کہ تُو میرے کسی بھی صحابی کو برا نہیں کہتا۔

میں (حضور کی اس شفقت سے) اٹھ کھڑا ہوا تو آپ نے میرے لیے دعا فرمادی۔ جب میں بیدار ہوا تو مجھے سب برائیوں سے نفرت ہو چکی تھی۔

(طبقات الحنابلة للقاضي ابي يعلى، ت جعفر بن محمد بن شاكر، ج 1، ص 338، ر 151)

(آج مسجد الحرام شریف میں بیٹھ کر یہ واقعہ پڑھا تو بے ساختہ آنسو نکل آئے۔ ترجمہ کر کے آپ کے سامنے پیش کر دیا ہے، آپ بھی اسے یاد کرلیں۔۔۔۔۔ ہم جیسے بھی ہیں لیکن بے ادب نہیں؛ رب تعالیٰ ہمیں اپنے حبیب پاک کی برکتوں سے

کبھی محروم نہیں فرمائے گا۔)

## قحط پڑھ گیا

حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ کے دور میں لوگوں پر قحط پڑھ گیا۔
ایک آدمی نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی قبر مبارک پر آیا اور کہا:
یارسول اللہ! اللہ عزوجل سے اپنی امت کے لیے بارش طلب کریں، یہ ہلاک ہو رہی ہے۔
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اُس آدمی کے خواب میں تشریف لائے، اور فرمایا: عمر کو میرا اسلام کہنا، اور اسے خبر دینا کہ بارش ہوگی۔
(حج وعمرہ اور عقائد ونظریات، ص299۔ علامہ قسطلانی رحمہ اللہ کہتے ہیں: اس کی سند صحیح ہے۔)
اگر آج بھی کوئی سیدِ عالم ﷺ کی تُربتِ اطہر پر حاضر ہوکر اپنا عریضہ پیش کرتا ہے تو سرکار اُسے جواب عنایت فرماتے ہیں، اور اُس کی دست گیری بھی کرتے ہیں۔

گوشِ شہ کہتے ہیں فریاد رَسی کو ہم ہیں
وَعدہ چشم ہے ، بخشائیں گے گویا ہو کر
ہے یہ امّید رضاؔ کو تِری رحمت سے شہا
نہ ہو زِندانیِ دوزخ ، تِرا بندہ ہو کر !

## ایک عبادت گزار

بنی اسرائیل میں ایک عبادت گزار رہتا تھا جس نے اپنے صومعے (عبادت خانے) میں ساٹھ سال عبادت الٰہی کی۔
ایک دن بارش برسی تو زمین پر سبزہ اگ آیا۔۔۔۔۔ وہ دیکھ کر کہنے لگا:
اگر میں صومعے سے اتر (کر باہر نکل) جاؤں اور اللہ کا ذکر کرتا رہوں تو زیادہ بہتر ہوگا۔
وہ ایک دو روٹیاں لے کر صومعے سے اتر پڑا۔۔۔۔۔۔۔ تو زمین پر اس کی ملاقات ایک عورت سے ہوگئی۔
وہ اس سے باتیں کرنے لگ گیا اور عورت اس سے۔۔۔۔۔۔۔ حتیٰ کہ وہ گناہ میں مبتلا ہوگیا۔
وہ غسل کر رہا تھا کہ ایک سوالی آگیا تو اُس نے اشارے سے کہا کہ یہ روٹیاں (جو میں اپنے کھانے کے لیے لایا تھا) تم لے لو۔
پھر اُس کا انتقال ہوگیا تو اس کی ساٹھ سالہ عبادت کا اُس کے گناہ کے ساتھ وزن کیا گیا تو گناہ کا پلڑا بھاری ہوگیا۔۔۔۔۔۔
پھر اس کی روٹیوں کو (جو سائل کو دی تھیں) نیکیوں کے پلڑے میں رکھا گیا تو نیکیوں کا پلڑا بھاری ہوگیا اور اسے بخش دیا گیا۔

(الترغیب والترھیب، کتاب الحدود، باب الترھیب من الزنا .....ص 426، ر 3534، ط دار الکتاب العربی بیروت۔ رواہ ابن حبان فی صحیحہ)

بندہ چاہے جتنا بھی نیک ہو، اپنے نفس پر کبھی اعتماد نہ کرے، یہ ظالم کسی وقت بھی بہکا سکتا ہے۔۔۔۔۔۔ بس اپنے رب سے عافیت کا سوال کرتا رہے، اُس جَلَّ جَلَالُہٗ کی مدد شامل حال رہی تو ہی بچ سکے گا۔

غیر محرم عورت سے گپ شپ سے ہمیشہ پرہیز کرے، ایسا نہ ہو کہ برسوں کی اطاعت و عبادت پل بھر میں جاتی رہے۔

اگر شامت نفس سے کوئی گناہ ہو جائے تو فوراً توبہ کر کے، ساتھ ہی کوئی نیکی کر لے؛ ہو سکتا ہے ارحم الرحمین اس نیکی کو گناہ کا کفارہ بنا دے۔

ہمارا رب بڑا مہربان ہے، بے حد رحم فرمانے والا ہے۔۔۔۔۔۔ گناہ کیسے ہی بڑے کیوں نہ ہوں وہ پل بھر میں محو فرما سکتا ہے، کیوں کہ وہ ہم سے بہت محبت فرماتا ہے؛ بس ہمیں جلدی توبہ کر لینی چاہیے۔

جب کہا عِصیاں سے میں نے ، سخت لاچاروں میں ہوں
جن کے پَلّے کچھ نہیں ہے اُن خریداروں میں ہوں
تیری رَحمت کے لیے شامِل گنہگاروں میں ہوں
بول اُٹھی رَحمت نہ گھبرا ، میں مَدد گاروں میں ہوں !

## تھپڑ دے مارا

امام المناطقہ، ملک المدرسین حضرت علامہ مولانا عطا محمد بندیالوی نور اللہ مرقدہ روزہ لیٹ افطار کیا کرتے تھے، اور اس مسئلے پر آپ کی مستقل اور مدلل تحقیق تھی۔

ایک دفعہ اپنے پیر خانے (گولڑہ شریف) حاضر تھے۔۔۔۔۔۔ لوگ روزہ افطار کر رہے تھے تو ایک بندے نے آپ سے کہا کہ روزہ افطار کر لیں! آپ نے فرمایا ابھی وقت نہیں ہوا۔ اس نے کہا:

حضرت اعلیٰ گولڑوی (پیر مہر علی شاہ صاحب) بھی اسی وقت افطار کیا کرتے تھے۔

آپ نے فرمایا:

حضرت اعلیٰ میرا شیخ ہے، میں اوہدا مقلد ناں، میں اوہدا مقلد ہاں حضرت اعلیٰ جیدا مقلد ہے۔

(یعنی: اعلیٰ حضرت پیر سید مہر علی شاہ صاحب رحمہ اللہ میرے پیر ہیں۔۔۔۔۔ میں ان کا مرید ہوں، مقلد نہیں ہوں، کہ اِس فقہی مسئلے میں بھی اُن کی تقلید کروں؛ میں اس امام اعظم رضی اللہ عنہ کا مقلد ہوں جن کے میرے پیر و مرشد بھی مقلد ہیں۔)

اُس بندے نے جب یہ بات سنی تو امام المناطقہ رحمہ اللہ کو تھپڑ دے مارا۔

آپ رحمہ اللہ نے کمال صبر کا مظاہرہ کیا اور جوابی کاروائی نہ کی، لیکن اس بات کی اطلاع جب پیر مہر علی شاہ صاحب کے صاحبزادے پیر سید غلام محی الدین گیلانی (قبلہ بابو جی) رحمہ اللہ تک پہنچی تو انھوں نے اس بندے کو بلا کر دو تھپڑ مارے ،اور کہا:

وہ عالم دین ہیں تمھیں ان پر اعتراض کرنے کا کیا حق ہے؟

ایسی بہت ساری مثالیں ہیں کہ:

کاملین و صادقین مریدین باوجود کمالِ ادب اپنے شیوخ سے علمی اختلاف کرتے رہے، اور علم دوست شیوخ ان کی حوصلہ افزائی فرماتے رہے۔

شیخِ کامل کے ساتھ دلائل سے کسی علمی مسئلے پر اختلاف کر لینے سے نہ شیخ کے کمال میں فرق پڑتا ہے، اور نہ مرید کی صداقت پر آنچ آتی ہے۔

لیکن اِس کا مطلب یہ بھی نہیں کہ شیخ کی جو بات سمجھ میں نہ آئے، فوراً اختلاف شروع کر دے۔۔۔۔۔ایسا کرنا باعث محرومی ہے۔

اختلاف کے بھی آداب ہیں اور یہ آداب، ادب والے ہی جانتے ہیں؛ بے ادب نہ اختلاف کے آداب سمجھتے ہیں، نہ اختلاف کرنے والے سے آشنا ہوتے ہیں۔۔۔۔۔۔۔وہ بس "دو چار" تھپڑوں کے لائق ہوتے ہیں۔

## میرا ایک بہت ہی پیارا دوست

میرا ایک بہت ہی پیارا دوست تھا، جسے مجھ سے جدا ہوئے چند سال گزر گئے ہیں، لیکن اس کی یاد آج بھی دل میں زندہ ہے۔ہم دونوں نے ایک دن طے کیا تھا کہ مراۃ المناجیح شرح مشکوۃ المصابیح مکمل آٹھ جلدیں پڑھتے ہیں اور دیکھتے ہیں پہلے کون ختم کرتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اس سے پہلے کہ کتاب مکمل ہوتی، وہ مجھے "ادھورا" چھوڑ کر خود "پورا" ہو گیا۔

آج اس کی بہت یاد آ رہی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اور مجھے اچھی طرح معلوم ہے کہ صرف یاد ہی آنی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اُس نے لوٹ کر تھوڑا آنا ہے؛ بھلا جانے والے بھی کبھی لوٹ کر آیا کرتے ہیں!!۔

ہوا کے جھونکے بھی لے کر خبر نہیں آتے
جو گھر سے جاتے ہیں پھر لوٹ کر نہیں آتے
ہزار شاخِ تمنا کی دیکھ بھال کرو
یہ شاخ وہ ہے کہ جس پر ثمر نہیں آتے

# (11) گیارہواں باب: تحریروں کی چوری

یہ باب ان لوگوں کی مذمت کے لیے ہے جو دوسروں کی تحریریں چوری کرتے ہیں۔

## تحریر چرانا

اگر آپ دوسروں کی تحریریں کاپی کرکے اپنے نام سے شیئر کرتے رہیں گے تو کبھی باصلاحیت لکھاری نہیں بن سکیں گے۔ نقالی نہ صرف بندے کی صلاحیتیں منجمد کردیتی ہے، بلکہ عقل کو بھی بڑھنے نہیں دیتی۔

اچھا برا، جیسا بھی لکھیں۔۔۔۔۔۔۔از خود لکھیں۔۔۔۔۔۔!!

کوئی بات نہیں، شروع شروع سے تحریر اچھی نہ ہوئی تو کیا ہوگا۔۔۔۔۔۔۔۔۔ایک دن اچھا بھی تو آپ ہی لکھیں گے۔

میں نے اپنے خاندان کی ایک عمر رسیدہ خاتون کو بہت پیاری روٹیاں بناتے دیکھا تو پوچھا:

ماں جی آپ نے اتنی پیاری روٹیاں کہاں سے سیکھیں۔

کہنے لگیں: بیٹا! میں جب سکول پڑھتی تھی تو اکثر اپنی استانی جی کے گھر کام کاج بھی کرآتی۔

وہ مجھے روٹیاں بنانے کا کہتیں اور میں جیسی کیسی بناتی وہ خوشی خوشی کھالیتیں، اور مجھے شاباش دیتیں۔

ایک دن میں پراٹھے بنارہی تھی کہ ہمسائی آگئی، اس نے استانی صاحبہ سے کہا: یہ لڑکی اتنا گھی روٹی پر نہیں لگارہی جتنا نیچے گرارہی ہے، اسے تو روٹیاں پکانے کا ڈھنگ ہی نہیں۔ استانی صاحبہ نے اسے کہا:

"کوئی بات نہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اگر آج نیچے گرائے گی تو کل کو سنبھالے گی بھی۔۔۔۔۔۔۔۔۔انشاءاللہ آہستہ آہستہ سارے کام ٹھیک ہوجائیں گے!" اور ایسا ہی ہوا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، ایک دن میرے سارے کام ٹھیک ہوگئے۔

## داتا علی ہجویری کی کتاب

سیدنا ابوالحسن علی بن عثمان ہجویری (داتا صاحب) رحمت اللہ تعالیٰ علیہ نے "منہاج الدین" کتاب لکھی، تو ایک چرب زبان شخص نے اُس سے آپ کا نام مٹا کر اپنا نام لکھ دیا، اور لوگوں سے کہا یہ میری کتاب ہے۔

اللہ تعالیٰ نے اس پر بے برکتی مسلط کردی اور اس کا نام طالبانِ درگاہ کی فہرست سے خارج کردیا۔

(دیکھیے: کشف المحجوب، دیباچہ، ص2، ط انتشارات مرکز تحقیقات فارسی ایران وپاکستان، س1995ء)

نام و نمود کی خاطر کسی کی تحریر سے اس کا نام مٹا کر اپنے نام سے شائع کرنا سوشل میڈیا پر عام ہے، اور اس مرض میں کئی قد کاٹھ والے بھی مبتلا ہیں؛ اللہ پاک ہدایت عطا فرمائے!

اپنی بے جا تعریف کے خواہش منداس آیت کو تین مرتبہ سمجھ کر پڑھیں:

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا

فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ

ہرگز گمان نہ کرو ان لوگوں کو جو اپنے اعمال پر خوش ہوتے ہیں اور پسند کرتے ہیں کہ ان کی ایسے کاموں پر تعریف کی جائے

جو انھوں نے کیے ہی نہیں؛ انھیں ہرگز عذاب سے دور نہ سمجھو اور ان کے لیے دردناک عذاب ہے۔ (سورت آل عمران، آیت 188)

## ہر لکھاری کے لیے!

علامہ قسطلانی رحمہ اللہ نے جب مواہب لدنیہ لکھی تو اُس میں امام سیوطی رحمہ اللہ کی کتابوں سے بھی مدد لی، لیکن امام صاحب کا ذکر تک نہ کیا؛ امام صاحب کو اس بات سے سخت صدمہ پہنچا اور شکایت کرتے ہوئے کہنے لگے:

"انھوں نے میری کتابوں سے مدد لی ہے اور اس کا اعتراف نہیں کیا؛ یہ ایک قسم کی "خیانت" ہے، جو نقل میں معیوب اور حق کو چھپانے کی طرح ہے"۔ امام صاحب کی شکایت اتنی بڑھی کہ قاضیِ وقت شیخ الاسلام زکریا انصاری رحمہ اللہ کے حضور بہ طور مقدمہ پیش ہوئی۔

قاضی صاحب نے فریقین کی بات سنی؛ امام سیوطی نے بہت سے مواقع پر علامہ قسطلانی کو موردِ الزام ٹھہرایا اور کہا کہ انھوں نے اپنی کتاب میں کئی جگہ بیہقی کا حوالہ دیا ہے، یہ بتائیں کہ اِن کے پاس بیہقی کی محولہ کتابیں کہاں ہیں، جن سے انھوں نے نقل کیا؟؟

علامہ قسطلانی کوئی جواب نہ دے سکے، جس پر امام سیوطی نے کہا:

آپ نے میری کتابوں سے نقل کیا ہے اور میں نے امام بیہقی کی کتابوں سے؛ تو آپ کو چاہیے تھا کہ اس طرح اعتراف کرتے:

نقل السیوطی عن البیہقی کذا۔

تاکہ اس طرح مجھ سے استفادے کا حق ادا ہو جاتا اور آپ صحتِ نقل کی ذمے داری سے بھی بری ہو جاتے۔

آخر شیخ الاسلام کی عدالت سے علامہ قسطلانی ملزم کی حیثیت سے اٹھے۔

علامہ قسطلانی ہمیشہ سوچتے رہتے تھے کہ امام سیوطی کے دل سے اس کدورت کو دھویا جائے، مگر.....ناکام رہے— ایک دن آپ (امام سیوطی سے معافی کا) ارادہ کرکے مصر (قاہرہ) سے نکلے اور روضہ (امام سیوطی کے مقام) تک پیدل پہنچے، جو مصر سے کافی دور تھا۔ آپ نے دروازے پر دستک دی۔

امام سیوطی رحمہ اللہ نے پوچھا: کون؟

عرض کی: احمد کہ برہنہ پا و برہنہ سر و بر دروازہ شما ایستادہ ام۔

احمد ہوں، ننگے سر اور ننگے پاؤں در پر معافی کے لیے کھڑا ہوں۔

آپ اپنے دل کا میل دور فرما کر مجھ سے راضی ہو جائیں!!

امام سیوطی نے دروازہ کھولے بغیر اور اُن سے ملاقات کیے بغیر صرف اتنا جواب دیا:

"میں نے دل سے کدورت نکال دی"

(ملخصًا: بستان المحدثین فارسی، تصنیف: شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی، ص120، در مطبع محمدی واقع لاہور)

اس واقعہ سے وہ "شریف النفس" بھی ضرور عبرت حاصل کریں جو فیس بک، ٹیلی گرام، واٹس ایپ اور دیگر سوشل میڈیا پر دوسروں کی تحریروں سے ان کا نام حذف کر کے اپنی وال پر لگاتے ہیں۔

ایسا ہرگز نہیں کرنا چاہیے یہ اخلاقی طور پر خیانت ہے۔

جس نے محنت سے مضمون ترتیب دیا اُسی کے نام کے ساتھ آگے بھیجیں، اِس سے آپ کی "محققانہ" شان میں فرق نہیں آئے گا بلکہ آپ دیانت داری و احتیاط میں مشہور ہوں گے۔

الحمدللہ! میں اس پر سو فی صد عمل کی کوشش کرتا ہوں؛ کاپی کی ہوئی چیز کو اپنے نام سے آگے نہیں بھیجتا۔

میرا طریقہ یہ ہے کہ سوشل میڈیا پر جب کوئی تحریر بھیجتا ہوں تو نیچے اپنا نام لکھتا ہوں، جس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ:

1: میں نے یہ تحریر از خود ترتیب دی ہے، کاپی پیسٹ نہیں۔ (یعنی کسی کی محنت اپنے ماتھے نہیں مڑھی، خود محنت کر کے لکھا ہے)

2: میں اس کے غلط، صحیح ہونے کا ذمے دار ہوں۔

3: میں یہ چاہتا ہوں کہ یہ تحریر میرے نام سے ہی آگے بھیجی جائے، کوئی اپنے نام سے منسوب نہ کرے۔

4: میری تحریر اگر درست ہوگی تو میرے لیے دعاے خیر کی جائے گی اور اگر قابل اصلاح ہوئی تو اہل علم مجھے متنبہ کریں گے، جس کی برکت سے ہمیشہ کے لیے میں اپنی غلطی کی اصلاح کر لوں گا۔

## پروفیشنل چور

کسی کی تحریر سے اُس کا نام کاٹ کر اپنے نام سے شائع کرنا ایک قسم کی چوری ہے۔

ایسے لوگ مُصلِح نہیں، مُفسِد کہلانے کے زیادہ حق دار ہیں۔

سوشل میڈیا پر ایسے "پروفیشنل چور" بہ کثرت پائے جاتے ہیں جو جیسے ہی کسی کی عمدہ تحریر دیکھتے ہیں، فوراً ایسے اُچکتے ہیں، جیسے:

"شیطان نمازی کی آنکھیں اُچکتا ہے۔"

ایسوں کی خبر لیا کریں، جیسے ہی انھیں چوری کرتے دیکھیں، ان کی ایسے گرفت کریں جیسے:

"سیدنا ابوہریرہ نے رات والے چور کی کی تھی۔" اِن چوروں کا تعاقب از حد ضروری ہے۔

## مصنف و محرر کا نام کاٹ کر...

جس کی تصنیف ہو اُسی کے نام سے شائع ہونی چاہیے، جس کی تحریر ہو اسی کے نام سے شیئر کی جانی چاہیے؛ مصنف و محرر کا نام کاٹ کر "منقول"، "کاپی" یا اپنا نام لکھ دینا دیانت داری نہیں۔

حضور داتا صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے "منہاج الدین" نامی ایک کتاب لکھی تھی۔

جسے کسی چرب زبان شخص نے حاصل کیا اور اُس سے آپ رحمہ اللہ کا نام مٹا کر اپنا نام لکھ دیا، اور لوگوں سے کہنے لگا: یہ میری تصنیف ہے۔

داتا صاحب فرماتے تھے:

(اُس کی اِس حرکت سے) اللہ تعالیٰ نے اُس پر بے برکتی مسلط کر دی اور اس کا نام طالبانِ درگاہ کی فہرست سے خارج کر دیا۔

(دیکھیے: کشف المحجوب، دیباچہ، ص2، ط انتشارات مرکز تحقیقات فارسی ایران و پاکستان، س1995ء)

کچھ لوگ میری تحریریں بھی اپنے نام سے شائع کرتے ہیں، بعض تو ایسی کاٹ چھانٹ کرتے ہیں کہ کیا کہنے!

# (12)بارہواں باب:ادب

یہ باب عربی اور اردو ادب اور زبان و بیان سے متعلق تحریروں پر مشتمل ہے۔

## ان شاء اللہ یا انشاء اللہ

ان شاء اللہ کی طرح "انشاء اللہ" لکھنا بھی جائز ہے۔

اردو زبان میں یہ مروج ہے اور اہلِ اردو اس سے وہی معنی مراد لیتے ہیں جو ان شاء اللہ سے لیتے ہیں۔

اسے عربی لفظ "انشاء" پر قیاس کرتے ہوئے تغلیط کرنا درست نہیں۔

امام احمد رضا قدس سرہ فرماتے ہیں:

صدہا الفاظ عربی ہیں کہ اُردو میں غیر معنی عربی پر مستعمل ہیں، ان معانی کو قاموس میں تلاش کرنا حماقت ہے بلکہ اُردو کے اہل زبان سے دریافت کرنا چاہیے۔ (فتاوی رضویہ، ج29، ص86)

"انشاء اللہ" پر کل سیدی اعلی حضرت رحمہ اللہ کی تحریر بھیجی جس پر بعض احباب نے شُبہ ظاہر کیا کہ یہ اعلیٰ حضرت کے دستِ مبارک کی تحریر نہیں۔ ہم ان احباب سے بحث نہیں کرتے اور نہ انھیں اس مخطوطے کے متعلق بتاتے ہیں جس سے ہم نے تصویر لی؛ کیوں کہ اگر وہ دلیل سے بات کرتے تو ہم دلیل سے جواب عرض کرتے، ان کے بے جا شُبہے زائل کرنا ہمارے لیے ضروری نہیں۔ ہم اپنے موقف کی تائید میں مزید ایک ایسا حوالہ پیش کرتے ہیں جس سے انکار نہیں کیا جاسکتا۔ کیوں کہ یہ تحریر "علم جفر" کے متعلق ہے اور اہل علم جانتے ہیں یہ علم عامی کی دسترس سے باہر ہے۔ نہ اسے عام کاتب لکھ سکتے ہیں، نہ عام لوگ سمجھ سکتے ہیں۔ سیدی و مرشدی اعلی حضرت رحمہ اللہ نے نہ صرف اپنے دست مبارک سے یہ علم لکھا بلکہ اس میں کمال بھی حاصل کیا۔

اللہ تعالی ان کے طفیل ہم پر بھی اس کے در وا فرمائے!!

"انشاء اللہ" پر یہ ہماری آخری پوسٹ ہے۔ کسی کا دل مانتا ہے تو لکھے، نہیں مانتا تو نہ لکھے۔۔۔۔۔۔۔۔ بس مسلمانوں پر غلط سلط فتوے نہ لگائے اور نہ قرآن پاک سے الٹا سیدھا استدلال کرے۔

اصولاً تو "الفاظ" پر لکھنے کا اسے حق ہونا چاہیے جو علم صوتیات و املا وغیرہ سے بہ خوبی واقف ہو، لیکن ہمارے ہاں ایسا نہیں۔ انشاء اللہ یا ان شاء اللہ دونوں طرح لکھنا بالکل جائز ہے، ان میں سے کسی ایک کی بھی تغلیط کرنا درست نہیں۔

## کھڑوچ

ایک انگریز پنجابی زبان سیکھ کر خود کو پنجابی کا بہت بڑا عالم سمجھنے لگا۔

اُس کی ملاقات ایک بوڑھے پنجابی سے ہوئی تو اسے کہنے لگا: بابا مجھ سے پنجابی زبان کا جو لفظ چاہو پوچھ سکتے ہو۔

بوڑھے نے کہا: بھینس جب کیچڑ میں پاؤں رکھتی ہے تو ایک نشان بنتا ہے، بتاؤ اسے پنجابی میں کیا کہتے ہیں؟

کہنے لگا: ٹُویا بوڑھے نے کہا: ابھی جا کر پنجابی سیکھ!

برخوردار! ٹویا عام گڑھے کو کہتے ہیں، بھینس کے کیچڑ میں پاؤں رکھنے سے جو وجود میں آتا ہے وہ ٹویا نہیں، کھڑوچ کہلاتا

ہے۔

یہ سن کر انگریز صاحب کا سارا نشہ زبان دانی ہرن ہو گیا۔

آج ایک دوست نے مجھے کتاب: "فِقہُ اللغَۃ" کا تحفہ دیتے ہوئے کہا: اسے پڑھیے، بڑی دل چسپ ہے۔

لفظِ "دل چسپ" نے میری دل چسپی مزید بڑھا دی، جب میں نے اس کا مطالعہ شروع کیا تو واقعی بہت دل چسپ پایا۔

اس کے متعلق صرف اتنا کہوں گا کہ اگر آپ عربی کے گھڑوچ، کَھڈے، ٹُوئے وغیرہ میں فرق جاننا چاہتے ہیں تو اِسے پڑھیے، لطف کے ساتھ بہت ساری معلومات ہاتھ آئیں گی، ان شاء اللہ!

## دو علامتیں

فیس بک پر ایک صاحب علم کی تحریر دیکھی جس میں انھوں نے دو علامتوں کو گڈمڈ کر دیا تھا، ان کے لیے یہ کچھ سطریں لکھیں، آپ بھی ملاحظہ فرمالیں:

ع: یہ علامت مصرعے کی ہے، آپ جہاں مصرع لکھنا چاہیں اس سے پہلے "ع" لگائیں، مثلاً:

ع روح نہ کیوں ہو مُضطَرِب موت کے انتِظار میں

ے یہ علامت شعر سے پہلے لگاتے ہیں، مثلاً:

ے روح نہ کیوں ہو مضطرب موت کے انتظار میں

سُنتا ہوں مجھ کو دیکھنے آئیں گے وہ مزار میں!

دو مصرعوں سے ایک شعر بنتا ہے، جب ہم نے صرف ایک مصرع یعنی شعر کا آدھا حصہ لکھا تو علامت: "ع" لگا دی۔

اور

جب دو مصرعے یعنی پورا شعر لکھا تو یہ: "ے" علامت لگا دی۔

شعر سے پہلے: ع اور مصرعے سے پہلے: ے استعمال کرنا غلط ہے!

## اردو ترجمے

دھڑا دھڑ عربی مآخذ اردو زبان میں منتقل ہو رہے ہیں، اور اس اعتبار سے اردو زبان نے انفرادیت کا درجہ حاصل کر لیا ہے۔ اللھم زد فزد! یقیناً یہ خوش آئند ہے، لیکن دو کمیاں باعث تشویش ہیں جنھیں دور کرنا چاہیے:

1: مترجمین کا بغیر توضیح و تشریح، ہر صحیح و سقیم کا ترجمہ کر دینا بہت غلط ہے!

اگر دیانت داری کا تقاضہ یہ ہے کہ من و عن ترجمہ کر دیا جائے تو یہ بھی ایمان داری کا حصہ ہے کہ موضوع و باطل روایات کی نشاندہی کی جائے تاکہ عوام گم راہی اور فتنے سے بچ سکیں۔

بہت پہلے کی بات ہے، کسی مترجم نے حافظ ابن جوزی رحمہ اللہ کی ایک عبارت کا کفریہ ترجمہ کیا تھا؛ میں نے توبہ ورجوع کی طرف توجہ دلائی لیکن وہ اس پر مصر رہے کہ عبارت کا یہ مطلب ہوسکتا ہے۔

حتیٰ کہ دارالافتا سے اس ترجمے کے کفریہ ہونے پر فتوی بھی منگوایا لیکن موصوف اپنی منطق پر اڑے رہے، اللہ پاک انھیں ہدایت عطا فرمائے!!

2: اردو زبان کے قواعد واملا وغیرہ کا لحاظ نہ رکھنا بھی بہت بڑی غلطی ہے۔

جس طرح دینی طبقہ اردو زبان کی خدمت کرسکتا ہے، دوسروں سے امید نہیں؛ لیکن افسوس کہ ہمارا میلان اردو ادب کی طرف نہ ہونے کے برابر ہے۔

اس طرف ہر مترجم کو توجہ دینی چاہیے، اور ترجمہ کرنے سے پہلے اردو قواعد واملا کی چند کتابیں ضرور دیکھ لینی چاہییں —

میری معلومات کے مطابق اردو ترجموں پر سب سے زیادہ کام ملک پاکستان میں ہورہا ہے؛ اللہ تعالیٰ میرے ملک اور اس کے مترجمین کو شاد وآباد رکھے!!

## (1) حسنِ تحریر

حافظ نور دین صاحب بچوں کو پڑھا رہے تھے، کرم داد نے آکر کہا:

حافظ جی! باہر ایک آدمی آیا ہے-

حافظ صاحب نے اُسے ڈانٹتے ہوئے کہا:

نامعقول! آیندہ جب میرے پاس آؤ تو دو منٹ ہاتھ باندھ کر خاموش کھڑے رہو، پھر اس طرح کہو:

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ!

استادِ محترم ایک عرض کرنا چاہتا ہوں، اجازت ہے؟

میں اگر اجازت دوں تو بات کرنی ہے ورنہ واپس چلے جانا ہے-

فرماں بردار شاگرد نے آدابِ گفتگو ازبر کرلیے—

دن میں اگر بیس مرتبہ بھی حاضری مقصود ہوتی تو آداب کی بجاآواری کے بعد!

ایک دفعہ چراغ گُل کرتے، حافظ صاحب کی دستار کو آگ لگ گئی—

یہ اطلاع دینے آیا، مگر جوں ہی بولنے لگا------آدابِ نیاز یاد آگئے-

ہاتھ باندھ کر پورے دو منٹ گھڑی کو ٹکٹکی باندھے دیکھتا رہا پھر ہکلائی آواز میں کہا:

السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ!

استاد محترم ایک عرض کرنا چاہتا ہوں، اجازت ہے؟ جی کرو!

اُستادِ محترم آپ کی دستار مبارک کو آگ لگ گئی ہے، اگر بروقت قابو نہ پایا گیا تو مع کُلاہ جل کر خاکِستر ہو جائے گی۔
حافظ صاحب بھاگم بھاگ آئے، دیکھا تو دستار واقعی خاکِستر ہو چکی تھی!
یاد رکھیے: "ہر جگہ کے لیے ایک ہی اصول نہیں ہوتا، ہر اصول کے لیے ایک جگہ ہوتی ہے"
آپ نے پچھلے سبق میں پڑھا تھا:
"جو بات دو لفظوں میں کہی جا سکتی ہو اُسے دو میں ہی مکمل ہونا چاہیے—"
اِس اصول میں یہ الفاظ: "کہی جا سکتی ہو"، قابل غور ہیں!
آپ نے دو لفظوں میں صرف وہ بات کہنی ہے جو دو لفظوں میں مکمل ہو سکے۔
جو بات تین، چار لفظوں میں مکمل ہو اسے دو لفظوں میں مکمل کرنے کی ہرگز کوشش نہیں کرنی۔
بے شک آپ کے الفاظ "سونے" کی طرح قیمتی ہیں، لیکن----------
"جو چُوڑیاں دو تولے میں تیار ہوتی ہیں وہ ایک یا ڈیڑھ تولے میں نہیں ہوں گی"
ڈاکٹر گورناتھ بنگالی بڑا فلسفی تھا، اُس نے ایک محفل میں کہا:
"ہم آج کل دودھ پیا کرتے ہیں"
اِس پر سب لوگ بے ساختہ ہنس پڑے۔
(مشرقی تمدن کا آخری نمونہ یعنی گذشتہ لکھنؤ، عبدالحلیم شرر، باب 44، ص 223، غضنفر اکیڈمی کراچی)
کیوں ہنسے؟
اس لیے کہ ڈاکٹر صاحب نے دو غلطیاں کیں:
1: خلافِ روزمرہ جملہ استعمال کیا۔
2: آٹھ لفظی بات سات لفظوں میں کہی۔
پاک و ہند میں دودھ پینا شیر خوار بچوں کے لیے استعمال ہوتا ہے، کسی عاقل بالغ کے لیے کہنا کہ:
"یہ دودھ پیتے ہیں"، عیب ہونے کے علاوہ اِن معنوں میں بھی مستعمل ہے کہ موصوف ابھی ناسمجھ ہیں!
اِس مفہوم کو جملے میں ادا کرنے کے لیے یوں کہنا چاہیے تھا:
"ہم آج کل دودھ کا استعمال کرتے ہیں"
جیسا کہ اہل لکھنؤ یہ جملہ کبھی استعمال نہیں کرتے کہ: "میں دودھ پیتا ہوں"، بلکہ کہتے ہیں:
[1]میں دودھ کا استعمال کرتا ہوں۔
[2]میری غذا دودھ ہے۔
اسی طرح آپ جب کسی سے بات کر کے سوالیہ انداز میں پوچھتے ہیں: "سمجھ آئی؟"، تو یہ بھی غلط ہوتا ہے۔

اس مفہوم کو ادا کرنے کے لیے آپ کو دو نہیں، تین لفظوں کی ضرورت ہے۔
آپ بات کر کے پوچھیں گے: "سمجھ میں آئی؟"، تو درست ہو گا!
کیوں کہ سمجھ اُس ذہنی قوت کا نام ہے جس کے ذریعے کسی بات کا علم حاصل ہوتا ہے۔
اور ظاہر ہے یہ قوت دماغ میں پہلے سے موجود ہوتی ہے، بات کے وقت اِس کا آنا کوئی معنی نہیں رکھتا۔
آج کے لیے اتنا ہی کافی ہے! آپ نے لکھائی سے پہلے دو باتیں یاد رکھنی ہیں:
1: جو بات دو لفظوں میں کہی جا سکتی ہو اُسے تین یا چار میں نہیں کہنا۔
اور
2: چار پانچ لفظوں میں مکمل ہونے والی بات کو دو تین لفظوں میں مکمل کرنے کی ہرگز کوشش نہیں کرنی۔
کسی بات کے بارے میں کیسے معلوم ہو گا کہ: یہ دو تین لفظی ہے، یا چار پانچ لفظی؟؟
اِس سوال کا جواب بہت آسان ہے، بس آپ کو اگلے اسباق کا انتظار کرنا ہو گا!

## لسانی لطیفہ

کافی عرصہ پہلے کسی نے سوال کیا تھا:
"دودھ گرم کرنے کے بعد، جو اُوپر تہ جمتی ہے، اسے ملائی کہنا چاہیے یا بالائی؟"
جواب کے لیے، مجھے کئی اُدبا و فُصحا کی تحریریں دیکھنی پڑیں؛ کوئی بالائی کا مخالف تو کوئی ملائی کا دشمن نظر آیا۔
آخر.....، آج بعد از تحقیق اِس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ:
چاہے ملائی کہیں، یا بالائی؛ دونوں الفاظ ہی فصیح ہیں۔

## (2) حسنِ تحریر

چند آدمی صرافہ بازار کی نالیوں میں ہاتھ ڈالے کچھ ٹٹول رہے تھے۔
مجھے بہت حیرانی ہوئی.....، قریب کھڑے شخص سے پوچھا: یہ کیا کر رہے ہیں؟
کہنے لگا: سونا ڈھونڈ رہے ہیں.....قیمتی جو ہوا! ہمارے الفاظ بھی سونے کی طرح قیمتی ہیں، ہمیں اِن کی بہت زیادہ حفاظت کرنی چاہیے۔
دوران تحریر کوئی لفظ گر پڑے (فضول لکھا جائے) تو قیمتی سمجھ کر فوراً اٹھا لینا چاہیے!
الفاظ کی قدر کرنا ہی لکھائی کا پہلا اصول ہے؛ اگر یہ اصول اپنا لیا جائے تو کلام خود بہ خود فصیح ہو جاتا ہے۔
جو بات دو لفظوں میں کہی جا سکتی ہو اُس کے لیے تین الفاظ کیوں استعمال کیے جائیں؟ اُسے دو میں ہی مکمل ہونا چاہیے۔

لاہور، ایک دکان پر گاہک آیا، اُس نے کوئی چیز مانگی جو دکان میں نہیں تھی- دکان دار نے جواب دیا:
"آپ لاہوری دروازے دیکھ لیجیے-
وہاں ملی، ملی؛ نہیں تو اکبری منڈی ملے گی-"

سبحان اللہ! کیسے مختصر اور جامع الفاظ ہیں-
اگر اِس جگہ کوئی الفاظ ضائع کرنے والا ہوتا، تو گاہک سے کہتا:
"آپ لاہوری دروازے چلے جائیں-
وہاں کی دکانوں پر جاکر دیکھیں، اگر یہ چیز مل گئی تو مل گئی؛ نہ ملی تو اکبری منڈی سے ضرور مل جائے گی-"
دونوں جملوں میں کتنا فرق ہے، یہ آپ نے محسوس کر لیا ہوگا-
آپ یہ بات اچھی طرح ذہن نشین کر لیں کہ الفاظ کو ضائع نہیں کرنا، صرف ضرورت کے وقت، ضرورت کے مطابق ہی استعمال کرنا ہے؛ اور وہ بھی اِس طرح جیسے سونا استعمال کیا جاتا ہے-
لیکن.....اس طرح کیسے استعمال کریں گے؟ یہ جاننے کے لیے اگلے اسباق کا انتظار کیجیے!!

## (3) حسنِ تحریر

تحریر کو بہتر بنانے کے لیے، کل سے فیس بک پر ایک سلسلہ شروع کر رہا ہوں، جس کا نام "حُسنِ تحریر" ہوگا-
آپ اس سلسلے میں شامل رہیں، ان شاء اللہ معلومات افزا پائیں گے-
میں نے نثر کی قسموں: مرجز، مقفیٰ، مسجع، عاری، کا علم حاصل کیا ہے- دقیق، سلیس، سادہ، رنگین-------اور ابتذال، تنافر، قطع، تعقید و تصرف وغیرہ سب کچھ پڑھا، سیکھا، سمجھا ہے—
مجھے جس طرزِ نِگارش نے متاثر کیا ہے، آپ کی خدمت میں اُس کے اصول پیش کروں گا، جن پر عمل کر کے اپنی تحریر بہتر کر سکیں گے-
آپ ہر اصول بہ غور پڑھیں، یاد رکھیں، عمل میں لائیں اور میرے لیے دعاے خیر فرمائیں-
میں یہ کام رضاے الٰہی کے لیے، ثواب سمجھ کر کرنے لگا ہوں؛ اللہ تعالیٰ قبول فرمائے!

## مُتَوَفّٰی

جو فوت ہو گیا ہو اُسے "متوفی" کہتے ہیں، یعنی وفات پایا ہوا- لفظِ متوفی کا عربی زبان میں درست تلفظ:
مُ تَ وَفَّ یٰ (مُتَوَفًّا) ہے-
لیکن اُردو زُبان میں یہ لفظ مُ تَ وَفِّ (مُتَوَفِّی) یعنی آخر میں ی کے ساتھ پڑھا جاتا ہے-

عربی کے اعتبار سے اگر آخر میں ی کے ساتھ (یعنی مُتَوَفِّی) پڑھیں تو معنٰی ہو گا وفات دینے والا-
لیکن اُردو میں اِس معنٰی میں نہیں بولا جاتا بلکہ وفات یافتہ کے معنٰی میں ہی بولا جاتا ہے، اس لیے اردو میں مُتَوَفِّی کہنا بالکل درست ہے-

## دُرست اُردو

اُردو کے اہلِ زبان حرفِ نفی: "نہ" کے ساتھ زیر والی: "ہ" کبھی استعمال نہیں کرتے ـــ مثلاً: نہ تو آیا نہ ہی میں آیا-
کتاب نہ اُدھر ہے نہ ہی ادھر- یہ: "نہ ہی" غلط ہے-

## ہمشیر/ہمشیرہ

بہن کو "ہمشیرہ" یا "ہمشیر" کہنا، لکھنا دونوں طرح درست ہے-
ہمشیر، بہن، بھائی دونوں کے لیے مستعمل ہے، میر انیس کہتا ہے:

آتے نہیں مسلم کے جگر بند کہاں ہیں
دونوں مری ہمشیر کے فرزند کہاں ہیں

یہاں ہمشیر بہن کو کہا گیا ہے-
اور بھائی کو ہمشیر کہنے کی مثال مرزا غالب کے انوار الدولہ شفق کے نام لکھے خط میں یوں ہے:
"وہ میرا ہمشیر بھی تھا، یعنی میں نے اپنی ممانی کا اور اس نے اپنی پھوپھی کا دودھ پیا تھا"
آبرو کہتا ہے:

سارے معالجوں میں جلاب خوب تر ہے
ہمشیر ان سبھوں کا پہچانتے ہو ہڑ ہے

لفظ ہمشیرہ بھی بہن کے لیے استعمال ہوتا ہے اور یہ بالکل درست ہے-
فارسی زبان کے ضخیم لغت نامہ دہخدا میں لکھا ہے:
در تداول امروز بہ معنی خواھر بہ کار میرود، ج ھمشیر گان-
اس زمانے کے رواج میں یہ لفظ سگی بہن کے معنٰی میں برتا جاتا ہے، جس کی جمع ہمشیر گان ہے-
چوں کہ اس لفظ پر ہمارے بعض مہربانوں کو اعتراض ہے، اس لیے اس لفظ کا استعمال اساتذہ کے کلام سے پیش کر کے حجت تام کرتے ہیں:
1: فردوسی کہتا ہے:

ابا آنکه همشیره بودی ورا
کجا آب از او تیره بودی ورا
که هستند همشیرگان پدر
سزد گر بجویی از ایشان خبر
که من چون ز همشیرگان برترم
همی بآسمان اندر آید سرم

2:فرخی کہتا ہے:

پروردگار دینی آموزگار فضلی
هم پیشهٔ وفایی همشیرهٔ سخایی

3:منوچہری:

دولتش همشیره و دل همره و دین همنشین
نصرتش هم زانو و اقبال همروی سرای

4:مسعود سعد:

بسی بود همشیره با شاخ گل
بسی بود همخوابه با شیر نر

5:خاقانی:

خاقان اعظم آنکه بقا با سعادتش
همشیرهٔ ابد شد و پیمان تازه کرد
نیز چون همشیره با شروان رسید
کار شروان دست بالادیده ام

6:نظامی

آن می که محیطبخش گشته ست
همشیرهٔ شیرهٔ بهشت است
شکر همشیرهٔ دندان من شد
وفا همشهری پیمان من شد

7:مولانا روم:

تا تو تاریک و ملول و تیرہ ای
دان کہ با دیو لعین ھمشیرہ ای

8: شیخ سعدی کہتے ہیں:

ھمشیرۂ جادوان بابِل
ھمسایۂ لعبتان کشمیر

## درُست لکھیے!

ہائے مُختفی (ہ) سے پہلے حرف پر عموماً زبر ہوتا ہے جیسے: کعبہ، پردہ، پیمانہ، زمزمہ، واقعہ وغیرہ۔

جب یہ لفظ مُحرَّف ہوں گے اُس وقت لازمی طور پر ہائے مختفی، یائے مجہول سے بدل جائے گی، اور اس سے پہلے حرف کا زبر، زیر سے تبدیل ہوجائے گا، مثلاً: کعبے میں، پردے پر، عرصے سے، وقفے میں، تین مرثیے، چار واقعے، کعبے کا دیدار اللہ اللہ!، مدینے کی بہار اللہ اللہ!، جلوے بکھر گئے، وغیرہ۔

یہ غلط نگاری بہت عام ہوگئی ہے کہ محرف صورت میں بھی ایسے لفظوں کو اسی طرح لکھا جاتا ہے جس طرح قائم صورت میں لکھا جانا چاہیے، یعنی:

کعبہ میں، پردہ پر، عرصہ سے، تین مرثیہ، چار واقعہ، وغیرہ۔ یہ بالکل غلط لکھاوٹ ہے۔

اس قاعدے کی پابندی لازمی ہے کہ محرف صورت خواہ جمع کی ہو، جیسے: تین مرثیے؛ خواہ حرفِ ربط یا علاماتِ فاعلی و مفعولی وغیرہ کے واسطے سے ہو، جیسے: مرثیے میں، پردے نے، اس واقعے کو، وغیرہ؛ ایسی سب صورتوں میں ہائے مختفی کی جگہ یائے مجہول لکھی جائے گی اور ماقبل ہائے مختفی کا زبر، زیر سے بدل جائے گا، یعنی: کعبہ اور کعبے (ک ع بَ ہ - ک ع بِ ے)

اسی طرح ایسے لفظ جب منادا ہوں گے، تب بھی ہائے مختفی، یائے مجہول سے بدل جائے گی، جیسے:

غنچے! تری زندگی پہ دل ہلتا ہے
بس ایک تبسم کے لیے کھلتا ہے

اسی طرح ایک لفظ ہے: "ذمہ"، مُحرَّف صورت میں یہ بھی "ذمے" ہوجائے گا، جیسے: اُن کے ذمے، ذمے دار، ذمے داری۔

## (1) ضروری اِصطِلاحیں

جب ہم علمی کتابیں پڑھتے ہیں تو اُن میں کچھ علامات نظر آتی ہیں، جن کی تفصیل یہ ہے۔

1: الخ (اَلَ خْ)

کسی قول، مصرعے یا جملے وغیرہ کا کچھ حصہ لکھنے کے بعد "الخ" لکھ دیا جاتا ہے، جس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ بات یہیں پر ختم نہیں ہوئی مزید آگے بھی ہے، اِسے آخر تک دیکھیں۔ مثلاً: مصطفیٰ جان رحمت۔۔۔۔۔ الخ

2: ۱۲

بعض کتابوں کے حاشیے کے آخر میں "۱۲" لکھا ہوتا ہے۔

علم اعداد میں لفظِ "حَد" کے بارہ عدد ہیں، اور حد کا معنیٰ ہے اختتام؛ تو "۱۲" کا مطلب یہ ہوا کہ یہاں پر حاشیے کی عبارت ختم ہوگئی ہے، حاشیے کی یہی حد ہے۔

3: منہ (مِ نْ ہُ)

بعض کتابوں کے حاشیے کے آخر میں "منہ" بھی لکھا ہوتا ہے اور یہ مصنف خود لکھتا ہے؛ جس کا مطلب ہوتا ہے کہ یہ حاشیہ کسی اور کا نہیں، میرا (کتاب لکھنے والے کا) اپنا ہے۔

4: ۱۲ منہ

بعض حواشی میں یہ دونوں ہوتے ہیں، جن سے یہی مراد ہوتا ہے کہ یہ حاشیہ مصنف کا ہے جو کہ یہاں تک ختم ہوگیا ہے (اس سے آگے جو اضافہ ہوگا وہ محشی کا ہوگا مصنف کا نہیں)۔

## (2) ضروری اصطلاحیں

5: ایضًا (اَیْ ضَ نْ)

جب ایک ہی بات، یا حوالے کو دُھرانا مقصود ہوتا ہے، یا ایک ہی چیز کے مختلف مطالب بیان کرنا ہوتے ہیں تو بار بار تفصیل لکھنے کے بجائے نیچے "ایضًا" لکھ دیا جاتا ہے۔

مثلاً:

بخاری شریف کے بیالیسویں صفحے سے دو حدیثیں بیان کرنی ہیں تو پہلی حدیث کے نیچے حوالہ لکھیں گے:

بخاری شریف ص 42۔

اس کے بعد والی حدیثِ پاک لکھ کر حوالہ لکھنے کے بجائے "ایضًا" لکھ دینا ہی کافی ہوگا؛ اِس سے پڑھنے والا سمجھ جائے گا کہ اِس حدیث کا بھی وہی حوالہ ہے جو اوپر والی حدیث کا ہے۔

میرزا داغ دہلوی کہتے ہیں:

جو تم کو ہم سے نفرت ہے تو ہم کو تم سے ایضًا ہے
جو تم نظریں بدلتے ہو تو ہم بھی دل بدلتے ہیں

یعنی تم کو ہم سے نفرت ہے تو ہم کو بھی تم سے ایضًا (یعنی نفرت) ہی ہے۔

"بات"، ایک لفظ ہے جس کے مختلف معانی ہیں، جنھیں ہم اس طرح بھی بیان کر سکتے ہیں:

بات: بہ معنیٰ قول۔ جیسے معروف کا شعر ہے:

زلف رخ پہ جو چھٹی رات ہوئی یا نہ ہوئی
کیوں نہ کہتا تھا مری بات ہوئی یا نہ ہوئی

ایضًا: شہرت۔ جیسے سحر کہتا ہے:

اپنی تو ہر طرح بسر اوقات ہوگئی
وہ بات کی کہ شہر میں اک بات ہوگئی

ایضًا: عادت۔ جیسے امیر کا شعر ہے:

بت میں نہ وفا کی بات پائی
بے عیب خدا کی ذات پائی

یہاں ہر جگہ لفظِ بات لکھ کر اس کا معنی لکھنے کے بجائے ایضًا لکھ دیا ہے جس کا مطلب ہے کہ یہ تمام معانی "بات" کے ہیں۔

6: ع

یہ مصرع کی علامت ہے، علما و اُدبا جب مصرع نقل کرتے ہیں تو "ع" لگاتے ہیں۔

7: ے

یہ شعر یا نظم کی علامت ہے، اگر آپ اپنی تحریر میں صرف مصرع لکھنا چاہتے ہیں تو "ع" استعمال کریں، اور اگر ایک، یا زیادہ شعر لکھنا چاہتے ہیں تو یہ "ے" علامت استعمال کریں۔

اِنھیں گڈمڈ نہیں کرنا چاہیے؛ یہ نہ ہو کہ شعر کی جگہ مصرع کی علامت اور مصرع کی جگہ شعر کی علامت درج کر دیں۔

راولپنڈی کے ایک صاحب نے کتاب لکھی تھی جس میں دیگر غلطیوں کے ساتھ ان علامات کو بھی گڈمڈ کر دیا تھا۔

گجرات کے ایک مفتی صاحب نے دیگر غلطیوں کے ساتھ اس پر بھی اُن کا سخت تعقب کیا اور اِسے کم علمی و جہالت قرار دیا۔ کہیں ایسا نہ ہو کہ ہمارے ساتھ بھی یہ ماجرا پیش آجائے، اس لیے "ع اور "ے" کا استعمال ذہن نشین کر لینا چاہیے!

## (3) ضروری اصطلاحیں

8: کذا (کَ ذَا)

کسی لفظ یا عبارت کے ٹکڑے کے آگے قوسین () میں "کذا" لکھا ہوا ہو تو اُس کا مطلب یہ ہوگا کہ اصل متن میں یہ لفظ یا

فقرہ اُسی طرح لکھا ہوا ہے جس طرح نقل کیا گیا ہے-
(کلاسیکی ادب کی فرہنگ، مصنفہ رشید حسن خان، ص 515، مجلس ترقی ادب لاہور، سال اشاعت 2013ء)
مثلاً آپ بہار شریعت سے نقل کرتے ہیں کہ:
بُرا کام کرکے تقدیر کی طرف نسبت کرنا اور مشیتِ الٰہی کے حوالہ کرنا بہت بری بات ہے-(کذا)
اس عبارت کے ٹکڑے کے آخر میں قوسین میں لکھا گیا "کذا" اس بات کی نشان دہی کر رہا ہے کہ یہ ٹکڑا آپ نے لفظ بہ لفظ بہار شریعت سے نقل کیا ہے، اس میں اپنی طرف سے کوئی کمی بیشی نہیں کی-

9: مُلَخَّصًا/ملخص (مُ لَ خَّ صَ نْ/مُ لَ خَّ صْ)

بعض عبارات و روایات وغیرہ نقل کرنے کے بعد قوسین میں ملخص یا ملخصا لکھا ہوتا ہے، جس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ یہ بات لفظ بہ لفظ نقل نہیں کی گئی بلکہ لکھنے والے نے اپنے لفظوں میں خلاصہ کیا ہے-
مثلاً: فتاوی رضویہ میں ہے: مزامیر یعنی آلات لہو ولعب بروجہ لہو ولعب بلاشبہ حرام ہیں جن کی حرمت اولیا وعلما دونوں فریق مقتدا کے کلمات عالیہ میں مصرح-(کذا)
اب اِس عبارت کا خلاصہ یوں ہوگا:
مزامیر، لہو ولعب ہونے کی وجہ سے بلاشبہ حرام ہیں، ان کی حرمت پر اولیا وعلما کے واضح اقوال موجود ہیں-(ملخصًا)
اِس عبارت کے آخر میں قوسین میں لکھا گیا "ملخصا" اس طرف اشارہ کر رہا ہے کہ یہ لفظ بہ لفظ نہیں بلکہ خلاصہ ہے-

10: ملتقطاً (مُ لْ تَ قَ طَ نْ)

جب کسی روایت وعبارت وغیرہ میں سے کچھ چیزوں کا چناؤ کرکے بقیہ چھوڑ دی جاتی ہے تو آخر میں "ملتقطا" لکھتے ہیں، جس کا مطلب یہی ہوتا ہے کہ یہ ساری روایت نقل نہیں کی گئی بلکہ اس میں سے بعض چیزیں لکھی ہیں، مثلاً مشکوۃ شریف میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ عنہ سے مروی پوری روایت اس طرح ہے:
فرمایا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے:
کون ہے جو مجھ سے یہ چند باتیں لے لے، پھر ان پر عمل کرے یا اُسے سکھادے جو ان پر عمل کرے-
(حضرت ابوہریرہ کہتے ہیں) میں نے عرض کیا یا رسول اللہ میں ہوں!
تو آپ نے میرا ہاتھ پکڑا پھر پانچ چیزیں گنیں؛ فرمایا:
حرام چیزوں سے بچو تمام لوگوں میں بڑے عابد ہوجاؤ گے، اور اللہ نے جو تمھاری قسمت کردیا اس پر راضی رہو لوگوں سے غنی ہوجاؤ گے، اور اپنے پڑوس سے اچھا سلوک کرو کہ مومن ہوجاؤ گے، اور لوگوں کے لیے وہ ہی چاہو جو اپنے لیے چاہتے ہو مسلمان ہوجاؤ گے، اور زیادہ ہنسو نہیں کیوں کہ زیادہ ہنسی دل کو مردہ کردیتی ہے-
(ترجمہ حکیم الامت مفتی احمد یار خان نور اللہ مرقدہ)

اب اگر اس حدیث پاک سے کچھ چیزیں لکھ کر کچھ چھوڑ دی جائیں گی تو یہ لکھنا "ملتقطا" ہو گا، جیسے:
رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:
حرام چیزوں سے بچو تمام لوگوں میں بڑے عابد ہو جاؤ گے، اللہ نے جو تمھاری قسمت کر دیا اس پر راضی رہو لوگوں سے غنی ہو جاؤ گے، اور اپنے پڑوس سے اچھا سلوک کرو کہ مومن ہو جاؤ گے، اور لوگوں کے لیے وہی چاہو جو اپنے لیے چاہتے ہو مسلمان ہو جاؤ گے۔ (ملتقطاً، مشکوۃ المصابیح)
(ایک بات ملحوظ رہنی چاہیے کہ خلاصہ و اِلتِقاط (چناؤ) میں مفہومِ متن کی مخالفت نہ ہو؛ ایسا نہ ہو کہ متن کچھ ہو اور خلاصہ و التقاط کچھ۔)

## اردو دانی

پیر نصیر الدین نصیر گولڑوی لکھتے ہیں:
حُور عربی زبان کا لفظ ہے، حوراء کی جمع ہے۔
مگر اکثر اہلِ علم بھی اِسے بطورِ واحد باندھتے ہیں اور حُوریں اِس کی جمع سمجھتے ہیں، جو غلط ہے۔
چونکہ لفظ حُور خود جمع ہے اور اِس کا، واحد حوراء ہے؛ لہٰذا اِسے حُوریاں، حُوریں یا حُوراں باندھنا بالکل ہی غلط ہے۔
پنجابی والے باندھتے ہیں تو باندھتے رہیں کم از کم اُردو والوں کو ایسی صریح غلطی زیب نہیں دیتی۔
(فیضِ نسبت، ص45، مطبوعہ گولڑہ شریف، طبع 1437ھ)
پیر صاحب کی یہ بات عربی کی حد تک ٹھیک ہو، ہمیں اس پر کوئی اعتراض نہیں؛ لیکن اُردو کے اعتبار سے درست نہیں — اُردو میں حور کا واحد حوراء کوئی بھی استعمال نہیں کرتا، واحد کے لیے حور ہی استعمال ہوتا ہے اور جمع کے لیے حوریں وغیرہ۔
حور کی اُردو جمع اساتذہ اُردو نے اتنی کثرت سے استعمال کی ہے جس کا شمار نہیں۔
مشتے نمونہ از خروارے، پیر صاحب کے تین ممدوحین کے کلام سے استشہاد، جو اردو زبان کے بلند پایہ علما میں سے تھے۔
حضرت رضا کہتے ہیں:

وصف رخ میں گاتی ہیں " حوریں " ترانہ نور کا
قدرتی بینوں میں کیا بجتا ہے لہرا نور کا

میر انیس:

حق سے جس شے کے طلب گار ہوں ، فوراً پائیں
جامِ کوثر یہیں فردوس سے " حوریں " لائیں

مرزا غالب:

تسکیں کو ہم نہ روئیں جو ذوقِ نظر ملے
" حورانِ " خلد میں تری صورت مگر ملے

انگریزی لفظ کا بے ضرورت استعمال

(اُردو زبان میں )انگریزی لفظ کا بے ضرورت استعمال.....ایک بدعت ہے-

(کیفیہ، برج موہن دتاتریہ کیفی، ص177، دارالنوادر لاہور، 2016ء)

جس طرح انگریز، انگریزی زُبان میں اُردو کی ملاوٹ نہیں کرتے، کاشکے !ہم بھی اپنی پیاری زبان اُردو میں انگریزی نہ گھسیڑا کریں—

## درُست اُردو

(یادرکھیں !آپ کی تحریر میں ایک بھی خلافِ قواعد لفظ، آپ کی علمی ثقاہت مجروح کرسکتا ہے )

ہم عام بول چال میں ایک لفظ استعمال کرتے ہیں: "بے شک "

یہ لفظ اردو زُبان میں اپنے اصل معنیٰ میں ہی استعمال ہوتا ہے، اِسے دیگر معنیٰ میں استعمال کرنا درست نہیں-

مثلاً یہ کہا جائے کہ:

بے شک اللہ ایک ہے-تو یہ درست ہوگا؛ کیوں کہ یہاں یہ اصل معنیٰ میں ہے، یعنی کہنے والا کہہ رہا ہے کہ اِس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ ایک ہے-

لیکن

اگر یوں کہا جائے کہ: آپ بے شک اِس سے پوچھ لیجیے میں بازار نہیں گیا-یا

آپ بے شک یہاں تشریف رکھیں-

تو یہ دونوں جملے غلط ہوں گے؛ کیوں کہ یہاں بے شک اصلی معنیٰ میں نہیں، یہاں بات میں زور دینا مقصود تھا جس کے لیے بے شک کے بجائے یہ الفاظ موزوں تھے:

آپ "چاہے "اِس سے پوچھ لیجیے میں بازار نہیں گیا-آپ "شوق سے "یہاں تشریف رکھیں-

## (1) گوشۂ ادب

ایک شاعر نے جہاں گیر کی مدح میں قصیدے کا آغاز یوں کیا:

" اے تاجِ دولت برسرت از ابتدا تا انتہا "

مصرع سنتے ہی جہاں گیر نے شاعر کو روک دیا اور پوچھا:

کیاتم عروض جانتے ہو؟
شاعر نے کہا: نہیں-
جہاں گیر نے کہا: اگر جانتے ہوتے تو تمھارا سر قلم کروادیتا-
پھر وضاحت کی کہ اگر اس مصرع کی تقطیع کی جائے تو یوں ہوگی:
اے تاج دو..... مستفعلن
لت بر سرت..... مستفعلن
اور اس میں ذم کا پہلو ہے کہ "لت "تھپڑ کو کہتے ہیں، چناں چہ اس ٹکڑے کا مطلب ہوگا: "تیرے سر پر تھپڑ"
(مقدمہ کائنات غزل، ص 19، مجلس ترقی ادب لاہور)

آج کل نامی گرامی شعرا بھی علم عروض سے محروم ہیں، شاید اسی محرومی کی بہ دولت سر سلامت لیے پھرتے ہیں!!
ہاں سر ہتھیلی پر رکھ کر اس جاں گُسِل گھاٹی کو عبور کرنے والوں کی بھی خال خال مثالیں موجود ہیں-
اگر آپ واقعی شاعری سے محبت رکھتے ہیں تو آپ کو عروض سے بھی پیار ہونا چاہیے، اور اس کے سیکھنے میں کوئی کمی، کوتاہی نہیں ہونی چاہیے-

## (2) گوشۂ ادب

عربی ادب سے دل چسپی رکھنے والے جانتے ہیں کہ فرزدق بلاغت کلام کا کیسا امام گزرا ہے-
اِس کے بارے میں مشہور ہے کہ کسی نے اس کے سامنے حضرت لبید بن ربیعہ رضی اللہ عنہ کا یہ شعر پڑھا:

وجَلا السیول عن الطّلول کانّها
زبر تجد متونها اقلامها

(سیلابوں نے کھنڈروں کو مٹی میں دب جانے کے بعد ظاہر کر دیا، گویا کہ وہ کتابیں ہیں جن کی قلموں نے ان کی کتابت کو دوبارہ چمکا دیا)
فرزدق یہ شعر سن کر سجدے میں گر گیا-
کسی نے کہا:
اے ابوفراس، یہ سجدہ کیسا؟ کہنے لگا:

انکم تعرفون سجدۃ القران وانا اعرف سجدۃ الشعر -
تم قران کے سجدوں کو جانتے ہو میں شعر کے سجدوں کو جانتا ہوں-
(خاص الخاص، امام ابو منصور ثعالبی (م 429ھ)، ص 147، دار الکتب العلمیہ بیروت)

شعر کو جب صاحبِ فہم و غوّاص معانی دیکھتا ہے تو نِثار ہو جاتا ہے۔

مومن خان مومن کا ایک شعر ہے:

تم میرے پاس ہوتے ہو گویا
جب کوئی دوسرا نہیں ہوتا

(کلیات مومن، ص 83، ط مجلس ترقی ادب لاہور)

یہ شعر، کہنے کو عام سی ایک بات ہے؛ لیکن جب شناور بحرِ سخن مرزا غالب نے اسے دیکھا تو تڑپ اٹھا اور کہنے لگا:

"مومن کے اس شعر کے بدلے میں اپنا پورا دیوان دینے کو تیار ہوں"

(اردو شاعری کا تنقیدی مطالعہ، ڈاکٹر سنبل نگار، ص 54، دارالنور لاہور)

## (3) گوشۂ ادب

اچھے اشعار پڑھنا، سننا بہت اچھی بات ہے۔

امیر المومنین سیدنا عمر فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے:

اپنے بچوں کو مشہور محاورے اور اچھے اشعار یاد کرواؤ۔

آپ نے اپنے بیٹے حضرت عبدالرحمان سے کہا:

بیٹا! اچھے اچھے شعر یاد کرو، تاکہ تمھارے ادب میں اضافہ ہو؛ (یاد رکھو!) جسے اچھے شعر نہ آتے ہوں وہ کبھی ادیب نہیں بن سکتا۔

(ملخصًا: شاہکار رسالت، دسواں باب، ص 311)

اچھے اشعار رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم بھی پسند فرمایا کرتے:

حضرت عَمْرو بن شَرِید اپنے والد گرامی کے حوالے سے بیان کرتے ہیں کہ:

ایک دن مَیں رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے پیچھے سوار ہوا تو آپ نے ارشاد فرمایا:

کیا تمھیں اُمَیَّہ بن اَبِی صَلْت کے اشعار میں سے کچھ شعر یاد ہیں؟

میں نے عرض کی: جی ہاں۔

آپ نے فرمایا: سناؤ!

میں نے ایک شعر سنایا، تو آپ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم نے فرمایا اور سناؤ! میں نے ایک اور سنایا۔

آپ نے ارشاد فرمایا: مزید سناؤ!

حتیٰ کہ میں نے سو (100) اشعار سنائے۔

(صحیح مسلم، کتاب الشِعر، حدیث 1)

ہمیں بھی اچھے اشعار پڑھتے سنتے رہنا چاہیے-
اشعار اگر حمدیہ و نعتیہ ہوں گے تو ان شاء اللہ ثواب بھی ملے گا-
میرا مشورہ ہے کہ:
شیخ الاسلام امام احمد رضا رحمہ اللہ کا لکھا کلام، جو کہ تمام شعری خوبیوں کا حامل ہے؛ پڑھیے، سُنیے!
اگر آپ نے رسمی طور پر نہیں بلکہ حقیقی معنوں میں اسے پڑھنا، سننا اور سمجھنا شروع کیا، تو آپ کو از خود معلوم ہو گا کہ شعر چیز کیا ہے!!

## (4) گوشۂ ادب

حضرت حسان بن ثابت کے چھوٹے بیٹے عبدالرحمان کو بھڑ نے کاٹ کھایا؛ وہ آپ کے پاس روتا ہوا آیا کہ مجھے ایک جانور نے کاٹ لیا ہے- آپ نے جانور کا نام پوچھا، وہ نام سے واقف نہیں تھا-
آپ نے کہا: اچھا یہ بتاؤ کہ اُس جانور کی صورت کیسی تھی؟
کہنے لگا:

كأنه ملتف في بردي حبرة

یعنی: گویا یہ معلوم ہوتا تھا کہ وہ مُخطط چادروں میں لپٹا ہوا ہے-
چوں کہ بھڑ کے پردوں پر رنگین دھاریاں ہوتی ہیں اس لیے اُس نے مخطط (دھاری دار) چادر سے تشبیہ دی-
حضرت حسان اچھل پڑے اور خوشی کے جوش میں کہا: خدا کی قسم میرا بیٹا شاعر ہو گیا-
(اس واقعہ کا زیادہ حصہ شبلی نعمانی کی شعر العجم، ج 1، ص 9 سے، اور کچھ حصہ امام جرجانی کی اسرار البلاغۃ، ص 191 سے نقل کیا ہے)

یہ بات حضرت حسان بن ثابت نے اس لیے نہیں کہی تھی کہ فقرہ موزوں تھا، بلکہ اس لیے کہی کہ تشبیہ کمال تھی؛ بچے نے نہایت عمدہ پیرائے میں بھڑ کی تصویر کھینچی تھی-
اِسی طرح کسی چیز کی تصویر کشی کو محاکات (مُ حَ اک ات) کہا جاتا ہے، جو کہ شاعری کا بنیادی جز ہے-
مشہور ہے کہ یونان میں کسی مصور نے ایک ایسے آدمی کی تصویر بنائی جس کے ہاتھ میں انگور کا خوشہ تھا، وہ تصویر جب نمائش گاہ میں آویزاں کی گئی تو دیکھنے والوں نے دیکھا کہ تصویر اصل سے اس قدر مطابقت رکھتی تھی کہ پرندے اس خوشۂ انگور کو اصلی انگور سمجھ کر اس پر گرنے اور چونچ مارنے لگے؛ تمام نمائش گاہ میں دھوم مچ گئی اور ہر طرف سے لوگ آ آ کر تحسین و آفرین کے نعرے لگانے لگے-
لیکن مصور بجائے خوش ہونے کے روتا جاتا تھا اور کہتا تھا:

تصویر میں نقص رہ گیا ہے-لوگوں نے حیرت سے پوچھا:
اس سے بڑھ کر اور کیا کمال ہو سکتا ہے ؟
کہنے لگا: انگور کی تصویر تو اچھی بنی، مگر اس آدمی کی تصویر، جس کے ہاتھ میں انگور ہے، اچھی نہیں بنی؛ ورنہ کیا مجال کہ پرندے قریب آتے!
(خلاصہ: چراغِ سخن، مرزا ایاس عظیم آبادی، ص 59، مجلس ترقی ادب لاہور، 1996ء)
شاعری کرنے اور سمجھنے کے لیے محاکات میں بھی ملکہ ہونا چاہیے-

## (5) گوشۂ ادب

مصور اور شاعر صبح صبح صحرا دیکھ کر آئے، دونوں نے صحرا کا نقشہ کھینچا-
مصور نے مختلف رنگوں سے اوس، ریت، گھاس وغیرہ اس طرح بنائی کہ دیکھنے والے کو حقیقی صحرا کا گمان ہوتا تھا-
لیکن.....
وہ، وہ اثر پیدا نہ کر سکا جو شاعر نے، شعر میں کر دیا!
شاعر نے صحرا کی نقشہ کشی یوں کی:

کھا کے اَوس اور بھی سبزا ہرا ہوا
تھا موتیوں سے دامنِ صحرا بھرا ہوا

معنی کے اعتبار سے شاعر، صاحب شعور کو کہتے ہیں؛ اب جیسا شعور پختہ ہو گا ویسا ہی شعر اعلیٰ ہو گا-
شیخ الاسلام امام احمد رضا رحمہ اللہ کے اشعار پختگی شعور کا بہترین نمونہ ہیں-
آپ کا ایک نعتیہ شعر ہے:

گلزارِ قُدس کا گل رَنگیں ادا کہوں
درمان دردِ بلبل شیدا کہوں تجھے

(عام پھول نہیں، رنگیں ادا پھول؛ اور وہ بھی گلزار قدس کا- پھر بلبل شیدا کے درد کا علاج!)
کیسی زبردست تشبیہ ہے، اور وہ بھی: "کہوں تجھے" کے ساتھ!!

## (6) گوشۂ ادب

مسمط (مُ سَ مَّ ط) موتیوں کی لڑی کو کہتے ہیں، یہ ایک صِنفِ شاعری ہے جس کی آٹھ قسمیں ہیں:
1: مثلث (مُ ثَ لَّ ث)

2: مربع (مُ رَبَّ ع)
3: مخمس (مُ خَ مَّ س)
4: مسدس (مُ سَ دَّ س)
5: مسبع (مُ سَ بِّ ع)
6: مثمن (مُ ثَ مَّ ن)
7: متسع (مُ تَ سَّ ع)
8: معشر (مُ عَ شَّ ر)

اِن آٹھوں قسموں کو مع اَمثِلہ ملاحظہ فرمائیں، یہ واقعی موتیوں کی لڑیاں ہیں!

## مثلث

اِس کے ہر بند میں تین مصرعے ہوتے ہیں۔

پہلے بَند کے تینوں مصرعے ہم قافیہ ہوتے ہیں اور بقیہ میں دو مصرعے الگ قافیہ رکھتے ہیں، جب کہ تیسرا مصرع پہلے بند کے ساتھ ہم قافیہ ہوتا ہے۔

عباس علی خان بیتاب رام پوری کہتا ہے:

امید کا ہے کو تھی دلربا کے آنے کی
خوشی نہ ہو مجھے کیوں کر قضا کے آنے کی
خبر ہے نعش پہ اُس بے وفا کے آنے کی
نہیں ہوں اتنا بھی ناداں بھلا میں اے ناصح
سمجھ کے اور ہی کچھ مرچلا ، میں اے ناصح
کہا جو تُو نے نہیں جان جا کے آنے کی
بگڑ نہ پہلے ہی ظالم ذرا سمجھ تو سہی
نہ جائے کیوں دل مرغ چمن کہ سیکھ گئی
بہار وضع ترے مسکرا کے آنے کی
شب فراق محبت نے مرنے بھی نہ دیا
خیال زلف میں خود رفتگی نے قہر کیا
امید تھی مجھے کیا کیا بلا کے آنے کی
نہ کی کسی نے وفا ، تھی امید جس جس سے

کروں میں وعدہ خلافی کاشکوہ ، کس کس سے
اجل بھی رہ گئی ، ظالم سناکے آنے کی
کہواس آفت جاں سے کوئی برائے خدا
مرے جنازے پرآنے کاہے ارادہ توآ
کہ دیراٹھانے میں کیا ہے صبا کے آنے کی
خدا کے واسطے بیتاب تم توسچ کہہ دو
مجھے یہ ڈرہے کہ مومن کہیں نہ کہتاہو
مری تسلی کو روز جزا کے آنے کی

(یہ مثلث، مولانانجم الغنی رام پوری کی بحرالفصاحت، حصہ اول، صفحہ 188،187 سے نقل کیا ہے)

## (7) گوشۂ اَدب

جوش ملیح آبادی نے کسی کی یاد میں "تقاضائے سرد مہری" نظم لکھی، جس کے متعلق کہتا ہے:

(اِس نظم کی) دنیائے شاعری میں کوئی نظیر ہی نہیں ملتی اور میں دعوے کے ساتھ کہہ رہاہوں کہ جب سے اِس کُرۂ ارض پہ شاعری کا آغاز ہوا ہے، اُس وقت سے لے کر آج کی تاریخ تک، اِس نوعیت کا ایک مصرع بھی، دنیا کی کسی زبان کی شاعری میں بھی، نہیں کہا گیا—

### تقاضائے سَرد مہری

مجھے آزاد کرکے ، پَرکُشائی کیوں نہیں کرتیں
جو ۔ دل کو توڑدے ، وہ کج اَدائی کیوں نہیں کرتیں
بچھادوں بوریاجاکر ، پھر اپنے شہرِحکمت میں
کبھی مجھ سے ، تم ایسی بے وفائی کیوں نہیں کرتیں
قَلَم ہوجائے سَرہَیجانِ وصل و سعیٔ قُربت کا
رواں ، یوں ، خنجر طولِ جدائی کیوں نہیں کرتیں
مری رُخصت کے حسرت خیز لمحوں کے تلاطم میں
جُدا ، آنکھوں سے تم اپنی دُلائی کیوں نہیں کرتیں
شِکَن جوڈال دے میرے غُرورِفن کے ماتھے پر
کبھی اتنی اہانَت سے رُکھائی کیوں نہیں کرتیں

حسینوں سے بَغاوت کا جودل کودرس دیتی ہے
مری سرکار ؛ وہ بے اعتنائی کیوں نہیں کرتیں
جَکڑ رکھا ہے میرادل ، وفاؤں کے شکنجے میں
جَفاکرکے مری مشکل کُشائی کیوں نہیں کرتیں
مری دانائی ہے شرکِ محبت کی تمنّائی
مری دانائی کی حاجت روائی کیوں نہیں کرتیں
بُرائی میں تمھاری ،جوش کے دل کی بَھلائی ہے
بھلائی ترک فرماکر ، برائی کیوں نہیں کرتیں

(یادوں کی برات، ص775،776،777،اُردوڈائجسٹ پرنٹرز لاہور،1975ء)

## اُردو کا تصرف: پہلی قسط

کچھ الفاظ کی وضاحت:

1: نفع (نَ فْ ع) کی ف ساکن ہے، لیکن ہم اردو گفتگو میں ف پر زبر پڑھتے ہیں (یعنی نَفَع)، یہ بھی جائز ہے۔

2: اصل لفظ نگراں (نِ گ رَ اں) ہے، گ کے زبر کے ساتھ؛ لیکن ہم گ ساکن پڑھتے ہیں (نِ گْ راں)، یہ بھی درست ہے۔

3: سمت (سَ مْ ت) کی س پر زبر ہے لیکن ہمارے ہاں زیر بھی بولا جاتا ہے (یعنی: سِ مْ ت)، یہ بھی درست ہے۔

4: مولوی (مَ وْ لَ وِی) کے ل پر زبر ہے، لیکن ہم بول چال میں ل ساکن پڑھتے ہیں (مَ وْلْ وِی)، یہ بھی جائز ہے۔

## اُردو کا تصرف: دوسری قسط

1: آصف (آصَ ف) کے ص پر زبر ہے، لیکن اُردو میں ص کے زیر کے ساتھ (یعنی: آصِ ف) بھی پڑھا جاتا ہے، یہ بھی درست ہے۔

2: اسلحہ (اَسْ لِ حَ ہ) کے ل پر زیر ہے، لیکن ہم عام طور پر ل پر زبر پڑھتے ہیں (یعنی: اَسْ لَ حَ ہ)، یہ بھی درست ہے۔

3: افق (اُفُ ق) کی ف پر پیش ہے، لیکن اردو میں ف پر زبر پڑھی جاتی ہے (اُفَ ق)، یہ بھی درست ہے۔

4: محبت (مَ حَ بَّ ت) کی م پر زبر ہے، لیکن ہم اُردو میں پیش بولتے ہیں (یعنی: مُ حَ بَّ ت)، یہ بھی جائز ہے۔

## اُردو کا تصرف: تیسری قسط

1: بہادر (بَ ہَ ادُر) کے دال پر پیش ہے، لیکن اُردو میں دال پر زبر بھی پڑھا جاتا ہے (بَ ہَ ادَر)، یہ بھی درست ہے۔

2: جحم (حَ جْ م) کے جیم پر جزم ہے، لیکن اُردو میں اکثر جیم پر زبر پڑھا جاتا ہے (حَ جَ م)، یہ بھی دُرست ہے-
3: ذبح (ذَ بْ ح) کی ب پر جزم ہے، لیکن اُردو بول چال میں ب پر زبر بولا جاتا ہے (ذَ بَ ح)، یہ بھی درست ہے؛ بلکہ اُردو میں ذال کے نیچے زیر پڑھنا بھی جائز ہے (یعنی: ذِ بَ ح)-
4: سبقت (سَ بَ قْ ت) کی ب پر زبر ہے، لیکن ہم ب پر جزم پڑھتے ہیں (سَ بْ قَ ت)، یہ بھی جائز ہے؛ شعرا دونوں طرح نظم کر سکتے ہیں-

## آخری قسط

1: رمضان (رَ مَ ضَ ان) کی میم پر زبر ہے، لیکن ہم میم پر جزم پڑھتے ہیں (رَ مْ ضَ ان)، یہ بھی درست ہے-
2: قطعہ (قِ طْ عَ ہ) کے قاف پر زیر ہے، لیکن اُردو میں زبر بھی پڑھا جاتا ہے (قَ طْ عَ ہ)، دونوں طرح درست ہے-
3: کفنی (کَ فَ نِ ی) کی ف پر زبر ہے، لیکن بول چال میں ف پر جزم پڑھتے ہیں (کَ فْ نِ ی)، یہ بھی درست ہے-
4: بشرب (بَ شْ رِ ب) کی ر پر زیر ہے، لیکن ہم اُردو میں ر پر زبر پڑھتے ہیں (بَ شْ رَ ب)، یہ بھی درست ہے-

قسط وار کچھ الفاظ لکھے ہیں، بعض اہل علم کا تقاضا تھا کہ ان کے مآخذ کی نشان دہی کی جائے-اس سلسلے میں عرض ہے کہ ذاتی مطالعہ اور صوت ولسان کے اصولوں کو سامنے رکھتے ہوئے، رشید حسن خان صاحب کی کتاب زبان اور قواعد کو بنیاد بنایا، اور ساتھ ساتھ:

شمس الرحمان فاروقی کی لغات روزمرہ، امیر مینائی کی امیر اللغات، مولوی نورالحسن کی نوراللغات، سید احمد دہلوی کی فرہنگ آصفیہ، مولوی غیاث الدین کی غیاث اللغات، اور دیگر لغات:

رافع اللغات، فرہنگ عامرہ، کریم اللغات، فرہنگ سیرت وغیرہ؛ اور استاد شعرا کے لفظ کو نظم کرنے کے طریقے سے استفادہ کیا ہے-

میں نے بساط بھر مکمل غور وفکر، چھان بین، تحقیق وتفتیش کے بعد یہ الفاظ بھیجے ہیں، میرا مقصد اپنی پیاری زُبان کی خدمت ہے-اگرچہ یہ سلسلہ بہت وسیع ہے مگر میں اسی قسط پر ختم کرتا ہوں-والسلام مع الاکرام!!

## انشاءاللہ اور ان شاءاللہ

اُردو کی قدآور شخصیت، ڈاکٹر فرمان فتح پوری نے لکھا ہے:

انشاءاللہ کو بعض نے ان شاءاللہ لکھنے کا مشورہ دیا ہے

(یعنی "ان" الگ اور "شاء" الگ)، مشورہ غلط نہیں ہے؛ لیکن اُردو میں انشاءاللہ ہی مروج ہے اس لئے انشاءاللہ کو صحیح اور ان شاءاللہ (کے املا) کو غلط سمجھنا چاہیئے-

(اردو املا اور رسم الخط، ص67، الوقار پبلی کیشنز، 2013-سنگ میل پبلی کیشنز، 77ء)

ڈاکٹر صاحب کا "ان شاء اللہ "لکھنے کو غلط قرار دینا بالکل غلط ہے؛ اُردو زبان کا کوئی اُصول اس سے میل نہیں کھاتا-
اُردو میں "انشاء اللہ "کا رواج، جواز کی دلیل ہو سکتا ہے، "ان شاء اللہ "کی تغلیط کی نہیں-
درست یہ ہے کہ انشاء اللہ اور ان شاء اللہ، دونوں طرح لکھنا درست ہے-

## اہلِ زَبان، توجہ فرمائیں!

میں نے کل فیس بک پر کسی دانش ور کی تحریر پڑھی، اُس نے بہت اچھا لکھا تھا؛ میں دل جمعی سے پڑھتا اور محظوظ ہوتا گیا-
لیکن.....
جوں ہی یہ محاورہ نظر پڑا، سارا مزہ زہر ہو گیا:
"کیا وہ لوگ صاحبِ عقل کہلائے جاسکتے ہیں جو ان انسانی عبارات کے قیدی بن کر تشتت و افتراق کی چھری سے امتِ محمد کو چور چور کر ڈالیں؟"
آج سے پہلے تو یہی سمجھتا تھا کہ:
چھری سے "حلال "کیا جاتا ہے، یا پھر ٹکڑے کیے جاتے ہیں-
چھری سے "چور چور "کرنا پہلی دفعہ پڑھا؛ نہ جانے یہ کس زبان کا محاورہ تھا!!
کہاں گئے وہ لوگ جو غلط بولنا، لکھنا کجا، غلط بات سننا بھی گوارا نہیں کرتے تھے-
میر تقی میر صاحب جب دلی سے لکھنؤ جانے لگے تو پاس کرایہ نہ ہونے کی وجہ سے ایک آدمی کے ساتھ بیٹھنا پڑا-
اُس شخص نے گفت گو شروع کی جو خلافِ فصاحت تھی، تو میر نے منہ پھیر لیا-
اُس نے دوبارہ بات کی تو میر نے کہا:
آپ نے کرایہ دیا ہے، بے شک گاڑی میں بیٹھیے مگر باتوں سے کیا تعلق!
اس نے کہا: حضرت کیا مضائقہ ہے، راہ کا شغل ہے، باتوں میں ذرا جی بہلتا ہے-
میر صاحب بگڑ کر بولے: خیر آپ کا شغل ہے، میری زبان خراب ہوتی ہے-
(دیکھیے: آبِ حیات، ص186)

مرد تو مرد پہلے زمانے کی عورتیں بھی درست محاورات کا کتنا لحاظ رکھتی تھیں، اس واقعہ سے اندازہ کریں:
علامہ مجد الدین فیروزآبادی نسباً عجمی تھے، بچپن میں عربی زبان سیکھنے کا شوق پیدا ہوا اور اسی دھن میں نہ جانے کہاں کہاں اور کتنی مدت تک عرب و عجم کی خاک چھانتے رہے- جب عربی میں کمال حاصل کر لیا تو عربی لغت کی

عالی شان کتاب قاموس لکھی-

قاموس گہرے دریا کو کہتے ہیں، اور یہ کتاب واقعی ایسی ہے-آپ نے ایک عربی عورت سے نکاح کر لیا، اسے آپ کا عجمی ہونا معلوم نہیں تھا-

رات کے وقت چراغ بجھانے کے لیے آپ نے خادمہ سے کہا:

اُقتلی السراج-(چراغ گُل کر دو)

جب کہ عربی محاورے کے مطابق کہنا یہ چاہیے تھا:

اَطفئ السراج (چراغ بجھا دو)

دراصل آپ کے ذہن میں فارسی محاورہ "چراغ بکش" (چراغ گُل کر دے) بیٹھا ہوا تھا، اور کُشتن کا معنیٰ قتل کرنا ہے، اسی کے پیش نظر آپ نے اسے عربی میں یوں ادا کر دیا-

لیکن قتل اور اطفاء میں زمین و آسمان کا فرق ہے، کہاں بجھانا اور کہاں قتل کر دینا!!

بیوی صاحبہ نے جب یہ نئی قسم کا محاورہ سنا تو متعجّب ہوئیں اور سمجھ گئیں کہ ہو نہ ہو میاں عجمی ہیں-

خیر جُوں تُوں رات گزری، صبح اٹھ کر بیوی صاحبہ کچہری جا پہنچیں اور اپنے خاوند کے خلاف شکایت کر دی-

(خلاصہ: مصباح القواعد، ص22)

## ایکسر سائز کے بجائے اگر ورزش

اُردو میں بات کرتے، "ایکسر سائز" کے بجائے اگر "ورزش" کہ لیا جائے تو اس کے دو فائدے ہوں گے:

1: اُردو زبان کا خون نہیں ہو گا-

2: چار حروف کی مدد سے وہ بات اچھی طرح سمجھ میں آجائے گی جسے سمجھانے کے لیے، انگریزی کے آٹھ نو حروف کے سہارے کی ضرورت ہے-

ہاں! ایک نقصان کا بھی خَدشہ ہے، کہ:

"لوگ مسٹر اور میڈم نہیں، شریف انسان سمجھیں گے"

## اردو کا جنازہ ہے ذرا دھوم سے نکلے

میں جب پاک و ہند کے، پڑھے لکھے، سمجھ دار بھائیوں کو بھی سوشل میڈیا پر:

ھم، ھمیں، ھمارا، ھنسی، ھوں، ھے، ھیں وغیرہ الفاظ لکھتے دیکھتا ہوں تو مجھے یہ مصرع یاد آتا ہے:

"اُردو کا جنازہ ہے ذرا دھوم سے نکلے"

اُردو زُبان کے حروفِ تہجی باون (52) ہیں جن میں پندرہ بھاری آواز والے ہیں (بھ، نھ، مھ وغیرہ)، جوہ کے مخلوط ہونے سے وجود میں آئے ہیں؛ یہ حروف چاہے الگ لکھے جائیں یا کسی لفظ کا حصہ ہوں انھیں دوچشمی ھ سے ہی لکھا جائے گا ،ہائے ملفوظ (ہ) سے لکھنا غلط ہو گا-

مثلاً لفظِ کمھار کو کمہار، گھر کو گہر، کلھاڑی کو کلہاڑی، جنھیں کو جنہیں انھیں کو انہیں، تمھارا کو تمہارا لکھنا درست نہیں-

اِسی طرح جن حروف میں ہائے مخلوط نہیں، جیسے: ہم، ہمیں، ہمارا، ہنسی، ہوں، ہے، ہیں وغیرہ اُن کی ہائے ملفوظ (ہ) کو ہائے مخلوط (ھ) میں بدل کر: ھم، ھمیں، ھمارا، ھنسی، ھوں، ھے، ھیں لکھنا بھی سراسر غلط ہے-

## اُردو میں انگریزی

ڈاکٹر نے کہا: آپ کے بچے کو جانڈس (jaundice) ہے، اِسے شوگر کین (sugar cane) کھلائیں-

سیدھے سادھے والد کی سمجھ میں مرض تو نہ آیا البتہ وہ سمجھا کہ شوگر کین کسی شربت کا نام ہے-

پوچھنے لگا: ڈاکٹر صاحب!

صبح و شام کتنے کتنے چمچے؟؟

کتنا اچھا ہوتا جو ڈاکٹر اپنی مغربی علمیت بگارنے کے بجائے اردو میں گہ دیتا:

آپ کے بچے کو پیلیا (یرقان) ہے اِسے گنے کھلائیں- نہ جانے اُردو میں انگریزی گھُسیڑنے سے لوگ کب باز آئیں گے!!

جہاں اُردو کا صرف ایک لفظ بات کو احسن انداز سے سمجھانے کی صلاحیت رکھتا ہے وہاں بھی انگریزی کے دو چار لفظوں کا سہارا ضرور لیں گے، جیسے مادر پدر انگریز ہوں-

## گُزیدن

گُزیدن: ("گ" کے پیش کے ساتھ) پسند کرنا، اختیار کرنا- اور گَزیدن: (گ کے زبر کے ساتھ) کاٹنا، ڈنک مارنا-

ان دونوں مصدروں میں "زے" ہے، ان کے مشتقات میں بھی "زے" ہی آئے گی، جیسے:

گُزیدہ، برگُزیدہ، برگُزیدگی، جاگُزیں، خلوت گُزیں، حق گُزیں-

اِسی طرح مار گَزیدہ، سگ گَزیدہ، مردم گَزیدہ وغیرہ-

"پانی سے سگ گزیدہ ڈرے جس طرح اسد
ڈرتا ہوں آئنے سے کہ مردم گزیدہ ہوں"

بعض احباب کسی نیک بندے کو برگزیدہ (گ پر زبر کے ساتھ)
گہ کر یاد کرتے ہیں؛ اس کا معنیٰ بالکل غلط ہو جائے گا- برگُزیدہ: "گ" کے پیش کے ساتھ درست ہے جس کا مطلب ہے:
چنا ہوا، پسندیدہ-

## گوشۂ ادب

جن الفاظ کے اَعداد سے کوئی تاریخ حاصل ہو اُن الفاظ کو مادّہ تاریخ کہا جاتا ہے-
جس مادہ سے پورا پورا سَنہ بے کم و کاست برآمد ہو، اُسے مستقل مادہ کہتے ہیں، خواہ وہ ایک ہی لفظ ہو یا زیادہ الفاظ پر مشتمل ہو-
اگر مادّہ کے اعداد میں سے کوئی عدد (یا کسی لفظ کا عدد) گھٹانا، بڑھانا پڑے تو مادہ غیر مستقل کہلاتا ہے اور گھٹانے، بڑھانے کے عمل کو تعمیہ (تَ عْ مِ یَ ہ) کہتے ہیں-
مستقل مادہ اعلیٰ سمجھا جاتا ہے مگر غیر مستقل میں بھی شعرا نے بہت نازک خیالیاں دکھائی ہیں-
تاریخ منظوم بھی ہو سکتی ہے اور منثور بھی؛ البتہ منظوم کو منثور پر ترجیح ہے-
منظوم تاریخ میں مادہ ایک مصرع یا مصرعے کا جز یا پورا شعر بھی ہو سکتا ہے-
شعرا نے مادہ نکالنے میں بہت نازک خیالیاں، نکتہ سنجیاں، نوا پردازیاں، نغز گوئیاں، اور خوش گفتاریاں دکھائی ہیں، کچھ ملاحظہ کریں:
ڈاکٹر اقبال مرحوم نے رموز بیخودی میں سید الشہدا کے زیرِ عنوان امام حسین پاک رضی اللہ عنہ پر بہت عمدہ شعر کہا ہے:

دشمناں چوں ریگِ صحرا لاتُعَد
دوستانِ او بہ یزداں ہم عدد

اُن کے دُشمن صحرا کی ریت کے ذروں کی طرح لاتعداد تھے- اُن کے دوست یزداں (خدا کے نام) کے ہم عدد تھے-
یعنی یزداں کے 72 عدد ہیں-
ی زدان: 10+1+4+7+50=72
اور سیدنا امام حسین کے رفقا کی تعداد بھی بہتر تھی- ایک شاعر نے شمس صاحب پہ شعر کہا:

گرچہ ہے نام اِس کا تین حرف سے ترکیب لیک
تین سو چالیس وساٹھ مول ہے یہ ایک ایک

یعنی 300 عدد شین کے ہیں، 40 میم کے اور 60 سین کے؛ ان تینوں کو ملائیں تو "شمس" حاصل ہوتا ہے-
ایک بادشاہ نے 1111 میں قلعہ فتح کیا تو شاعر نے تاریخ اِس طرح نکالی:

شہ نے کیا جو قلعہ مفتوح دشمنوں سے

احباب کے دلوں کو یک لخت پہنچی تسکیں
ہاتف سے جب کہ میں نے تاریخ اس کی پوچھی
بتلانے کی غرض سے چار انگلیاں اُٹھا دیں

انگلی ایک (1) کی طرح سیدھی ہوتی ہے، توجب چار انگلیاں اٹھائیں گے تو چار ایک بن جائیں گے، جن کا مجموعہ 1111 ہے-

1213ھ میں حضرت ٹیپو سلطان نور اللہ مرقدہ کی شہادت ہے-

نواب حیدرآباد دکن نظام علی خاں، وزیر اعظم ارسطوجاہ اور سپہ سالار میر عالم نے انگریزوں کی مدد کی تھی، شاعر نے ان تینوں کو مسٹر کہہ کر سلطان کی تاریخ نکالی ہے، کہتا ہے:

مسٹر نظام و مسٹر اعظم یزید شُد
شمرِ لعیں چہ مسٹر عالم پلید شد
تاریخ از شہادتِ سلطان حیدری
ٹیپو بوجہِ دینِ محمد شہید شُد

اس میں آپ:

"ٹیپو بوجہِ دینِ محمد شہید شُد کے عدد نکالیں گے تو یہ بنیں گے:

1213=304+309+92+64+16+418

ایک حکیم کی معزولی کی تاریخ 1248 تھی، شاعر نے اسے یوں بیان کیا:

آٹھ حاے حکیم سے تُولے لے
سہ مرتبہ ، نصف نصف کم کر

مطلب یہ کہ ح کے 8 عدد ہیں، جن کا نصف 4 ہے اور 4 کا نصف 2 اور دو کا نصف 1 ہے، ان چاروں ہندسوں کو ایک سطر میں لکھیں گے تو بنے گا 1248

"میر واعظ علی"، نام کے عدد 1337 ہیں، میر صاحب کی وفات 1327 میں ہوئی تو مرزا تقی نے اس طرح تاریخ کہی:

کاش دس سال اور یہ جیتے
نام ہی سال وصال ہوجاتا

یعنی میر واعظ علی کے عدد:

1337=250+977+110

ہیں جب کہ موصوف کی وفات 1327 میں ہوئی، اور شاعر نے کہا کہ اگر 10 سال مزید جیتے رہتے تو اِن کی وفات 1337 میں ہوتی تو ان کا نام "میر واعظ علی" جس کے عدد 1337 ہیں، ان کا سالِ وصال ہو جاتا تھا۔

## اردو دُرُست بولیے!

اجل (اَ جَ لْ) کا معنٰی ہے: اعلا، ذی شان، بزرگ، برتر۔

مرزا رفیع سودا کہتا ہے:

وصف تیرے کی ہے شایان زباں تیری ہی
سمجھے تو آپ کو ، یا تجھ کو خداوندِ اجلّ

اجل (اَ جَ لْ) لام کی تشدید کے بغیر ہو تو اس کا معنی ہو گا: موت، قضا۔

ابراہیم ذوق کی ایک غزل میں ہے:

اَجَل آئی نہ شبِ ہجر میں اور ہم کو فلک
بے اَجَل تُو نے تمنائے اَجَل میں مارا
آنکھ سے آنکھ ہے لڑتی ، مجھے ڈر ہے دل کا
کہیں یہ جائے نہ اِس جنگ و جَدَل میں مارا
نہ ہُوا پر نہ ہوا میر کا انداز نصیب
ذوق ، یاروں نے بہت زور غَزل میں مارا

اسی طرح ایک لفظ ہے: اُجل (اُ جَ ل)، جس کا معنی ہے: روشنی، اجالا۔

اور جیم کی تشدید کے ساتھ: اُجل (اُ جَّ ل) ہو تو اس کا معنی ہو گا: مہذب، عمدہ، صاف، پاکیزہ۔

## اردو دُرُست لکھیے!

عام طور پر ایک لفظ لکھا جاتا ہے: "گہما گہمی"۔

اِس کا درست املا "گھما گھمی" ہے (یعنی دو چشمی ھ کے ساتھ)۔

دوکان لکھنا درست نہیں، اس کا درست املا "دُکان" ہے (بغیر واو کے)۔

پرواہ کے بجائے "پروا" لکھنا درست ہے (اس میں ہ نہیں)

ایک عربی لفظ ہے: "جزء"؛ جس کا معنی ہے ٹکڑا۔

اِسے اُردو میں جُز (بغیر ہمزہ کے) اور جُزو (واو کے ساتھ) دونوں طرح لکھنا درست ہے۔

اِس کے لکھنے کا فصیح طریقہ یہ ہے کہ جب یہ لفظ مضاف ہو تو واو کے ساتھ لکھا جائے، جیسے: جزوِ بدن۔

اور دیگر صورتوں میں بغیر واو کے (جُز) لکھیں۔

فارسی زُبان میں بھی ایک لفظ: جُز ہے، جس کا معنی ہے سوا۔

احمد فراز کہتا ہے:

جُز تیرے کوئی بھی دِن رات نہ جانے میرے
تو کہاں ہے مگر اے دوست پُرانے میرے

فرہنگ آصفیہ میں جُز بہ معنی ٹکڑا اور جُز بہ معنی سوا؛ دونوں کو فارسی زبان کا لفظ لکھا گیا ہے۔

نیز ٹکڑا کے معنی میں اِسے جُزو کا مخفف بتایا گیا ہے۔

یہ دونوں باتیں ہی غلط ہیں؛ نہ تو جُز، جُزو کا مخفف ہے اور نہ ہی یہ دونوں معنوں میں فارسی لفظ ہے۔

## حَرج اور ہَرج

حَرج اور ہَرج دونوں لفظ اُردو میں ایک ہی معنی میں مستعمل ہیں، اِن دونوں میں بہتر ہرج ہے، اِسے استعمال کرنا چاہیے۔

اثر لکھنوی نے یہی رائے ظاہر کی ہے، چناں چہ فرہنگ اثر میں ہے:

"اُردو میں ہرج بہ معنی نقصان، خرابی، مستعمل ہے، میری رائے ہے کہ اسی کو رکھیے اور حرج سے دست بردار ہو جیے"

(اُردو املا، ص289)

## اُردو زبان کے حروفِ تہجی

ہماری پیاری اُردو زبان کے حروفِ تہجی 52 ہیں جن میں پندرہ بھاری آواز والے حروف ہیں (بھ، نھ، مھ وغیرہ) جو ہا کے مخلوط ہونے سے وجود میں آئے ہیں، یہ حروف چاہے الگ لکھے جائیں یا کسی لفظ کا حصہ ہوں اِنھیں دوچشمی ہا (ھ) سے ہی لکھا جائے گا، ہائے ملفوظ (ہ) سے لکھنا غلط ہو گا۔ جس طرح لفظِ کمھار کو کمہار، گھر کو گہر، کلھاڑی کو کلہاڑی لکھنا غلط املا قرار دیا جائے گا، اسی طرح جنھیں، جنھوں، انھیں، تمھارا، تمھارے وغیرہ الفاظ میں ہائے مخلوط (ھ) کی جگہ ہائے ملفوظ (ہ) بھی درست نہیں ہو گی۔

## دُرست اردو لکھیے!

فارسی زُبان میں اگر اسمِ صفت کا آخری حرف "ہ" نہ ہو تو حاصلِ مصدر بنانے کے لیے اُس کے آخر میں "ی" لگاتے ہیں۔

چناں چہ ناراض، حیران، محتاج، درست وغیرہ جتنے اسماے صفات ہیں، جو "ہ" پر ختم نہیں ہوتے، اِن کے حاصل مصدر: ناراضی، حیرانی، محتاجی، درستی وغیرہ بنیں گے۔

البتہ یہ دو لفظ:

"ادا" اور "کَرخْت"

اس قاعدے سے مستثنیٰ ہوں گے؛ ان کے حاصلِ مصدر کرختی اور ادائی کے بجائے کرختگی اور ادائیگی ہی بنائے جائیں گے۔ دیگر کو ناراضگی، حیرانگی، اور درستگی وغیرہ لکھنا درست نہیں ہو گا بلکہ ناراضی، حیرانی، محتاجی اور درستی لکھا جائے گا۔

## ختمہ

(۔) اس علامت کو ختمہ کہتے ہیں۔

1: یہ علامت جملے کے مکمل ہونے پر لگائی جاتی ہے، مثلاً:

دنیا دار العمل ہے۔

جو آیا، ایک دن جائے گا۔

2: انگریزی مخففات کے بعد بھی یہ علامت لگا دیتے ہیں، جیسے:

کے۔سی۔آئی۔ای، بی۔اے۔

یہ یاد رہے کہ صرف انگریزی مخففات کے بعد ہی یہ علامت لگائی جاتی ہے، عربی کے مخففات کے بعد اکثر نہیں لگاتے۔

نیز جب ایک سے زیادہ مخففات ایک ہی سلسلے میں لکھے جائیں تو ہر مخفف کے بعد سکتے کی علامت دینی چاہیے، مثلاً:

ڈاکٹر محمد اقبال ایم۔اے، پی۔ایچ۔ڈی، بیرسٹر ایٹ لا۔

عثمان علی، جی۔سی۔ایس۔آئی، جی۔سی۔بی۔ای۔

## وقفہ

(؛) اس علامت کو وقفہ کہتے ہیں۔

جب سکتے سے زیادہ ٹھہرنا مقصود ہو تو وقفہ استعمال کیا جاتا ہے۔ اس کا استعمال حسب ذیل موقعوں پر ہوتا ہے:

1: جملوں کے لمبے لمبے اجزا ایک دوسرے سے علاحدہ کرنے کے لیے

(یہاں سکتوں کے علاوہ وقفوں کا استعمال اس لیے ضروری ہے کہ خلط مبحث نہ ہو جائے)، جیسے:

"حق یہ ہے کہ اس زمانے میں، جب قومی پیش نما کا پارا ہر گھڑی گھٹتا بڑھتا رہتا ہے؛ جب کہ باوجود تعلیمی کاموں کی کثرت کے، قومی تعلیم کا کوئی صحیح خاکا سامنے نہیں ہے؛ جب کہ سیاسی تار و پود سارے ملک میں پھیلا ہوا ہے، مگر کوئی طریقہ قومی فلاح کا ایسا نہیں ہے، جس پر تمام جماعتیں متفق ہو سکیں؛ جب کہ باوجود سادگی کے ادّعا کے، عیش پرستی کے بہت سے چور دروازے کھلے ہوئے ہیں....."

2: جہاں جملوں کے مختلف اجزا پر زیادہ تاکید دینا مد نظر ہوتا ہے، وہاں بھی وقفے استعمال ہوتے ہیں،

جیسے:

جو کرے گا، سو بھرے گا؛ جو بوئے گا، سو کاٹے گا-

آنا، تو خفا آنا؛ جانا، تو رلا جانا-

3: جن جملوں کے بڑے بڑے اجزا کے درمیان ورنہ، اس لیے، لہذا، اگرچہ، درآں حالے کہ، لیکن اور اسی قسم کے ربط دینے والے الفاظ آئیں؛ وہاں ذہن کو سمجھنے کا موقع دینے کے لیے، ان لفظوں سے پہلے وقفے کی علامت لگاتے ہیں، (واضح رہے کہ جب مذکورہ بالا الفاظ چھوٹے چھوٹے جملوں کو ملاتے ہوں تو یہ علامت نہیں لگائی جائے گی، بلکہ سکتہ ہی کافی ہوگا)

مثلاً: چوں کہ میں مدینے شریف چلا گیا، اور وہاں کافی دن حاضری رہی؛ اس لیے آپ سے بات بھی نہ ہو سکی اور ملاقات بھی-

4: جن صورتوں میں سکتے لاتے ہیں، ان میں وقفہ صرف ایسی حالت میں لائیں گے جب پہلے جملے کے بعض ایسے حصوں کو ایک دوسرے سے الگ کرنا پڑے جن میں اندرونی طور پر سکتہ موجود ہو، جیسے:

علامہ ارشد القادری کی زلزلہ، زیر و زبر، زلف و زنجیر؛ مولانا حسن رضا کی نگارستان لطافت، تُزک مرتضوی، ثمر فصاحت؛ اعلیٰ حضرت کی حدائق بخشش، اِنباء الحیّ، الامن والعلی؛ پڑھنے اور بار بار پڑھنے کے قابل ہیں-

وقفے کے یہ چار مقام ہیں اِنھیں مد نظر رکھنا چاہیے-

## دُرست اُردو لکھیے!

دورانِ تحریر "رموز او قاف" کا برمحل استعمال کلام میں حُسن پیدا کرتا ہے، اور ترک و بے جا استعمال کلام کی معنویت و چاشنی ختم کر دیتا ہے-

چوں کہ اُردو لکھنے والوں کے لیے رموز او قاف جاننا اتنا ہی ضروری ہے جتنی اُردو زبان؛ اِس لیے رموز او قاف اور اِن کا محل استعمال پیش خدمت ہے، پڑھیں، یاد رکھیں اور استعمال میں لا کر نیک دعاؤں سے نوازیں- (محمد لقمان عفا عنہ الرحمٰن)

اُردو رموز او قاف یہ ہیں:

،

؛

:

-

!

()

؟

1:(،)اِس علامت کو سکتہ کہتے ہیں، یہ سب سے چھوٹا وقفہ ہے جو حسب ذیل موقعوں پر استعمال ہوتا ہے:

1:ایسے اسما یا ضمائر کے بیچ میں جو ایک دوسرے کے بدل کا کام دیتے ہیں، جیسے: امام احمد رضا، ابنِ مفتی نقی علی، مجد دامت نے جب مدینہ طیبہ کا سفر کیا.....

2:ایک ہی قسم کے کلمے کے اُن تین، یا تین سے زیادہ لفظوں کے بیچ میں جو ساتھ ساتھ استعمال کیے گئے ہوں (اُس حالت میں جب آخری دو لفظوں کے درمیان حرفِ عطف یعنی و، یا اور یا حرفِ تردید یعنی یا، آئے)،

جیسے: چوری کرنا مذہباً، اخلاقاً اور رسماً برا سمجھا جاتا ہے-

امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ بہت عقل مند، وسیع النظر، ہم درد اور مدبر امام تھے-

3:ندائیہ لفظوں کے بعد، جیسے: جناب صدر، خواتین و حضرات-

4:جب ایک ہی درجے یا رتبے کے لفظ جوڑوں میں استعمال ہوں، تو ایک جوڑے اور دوسرے جوڑے کے درمیان سکتہ دیتے ہیں، مثلاً: دن ہو کہ رات، سفر ہو کہ حَضر، خلوت ہو کہ جلوت، انسان کو چاہیے کہ خدا کو نہ بھولے-

5:ایسے اجزائے جملہ کے درمیان جو تشریحی ہوں، مثلاً: یہ مینار 30 فٹ لمبا، 4 فٹ چوڑا، 5 فٹ اونچا ہے-

6:دو یا زیادہ ایک ہی درجے کے ایسے چھوٹے جملوں کے بیچ میں جو ایک بڑے جملے کے جُز ہوں، جیسے: میں گھر سے بازار گیا، بازار سے مدرسے آیا، اب مدرسے سے گھر واپس جاتا ہوں-

کھیلنے کے وقت کھیلو، پڑھنے کے وقت پڑھو-

زباں بگڑی تو بگڑی تھی، خبر لیجے دہن بگڑا-

7:شرط اور جزا یا صلے اور موصول کو بیان کرنے والے سادہ جملوں کے بیچ میں، مثلاً: اُس کے منہ جو کوئی لگا، ذلیل ہی ہوا-

جب مطلع صاف ہو گیا اور سورج نکل آیا، تو میں اپنے گھر سے نکلا-

جس شخص نے مجھ سے، آپ سے کل باتیں کیں وہ عبداللہ تھا-

8:ایسے سادہ جملوں کے بیچ میں جو مستثنا اور مستثنا منہ کا بیان کریں، جیسے: وہ شخص ایمان دار ہے، لیکن سست-

سارا زمانہ آیا، پر عمر نہ آیا-

9:جب ایک سادہ جملہ دوسرے کی توجیہ کرے تو دونوں کے بیچ میں، مثلاً: میں نہیں گیا، اس لیے کہ وہ خود ہی میرے ہاں آپہنچا- اسے گھر بیٹھے نوکری مل گئی، پھر باہر کیوں جاتا؟

10:جب کسی فعل کے بعد "کر" یا "کے" مقدر ہو، تو سکتہ لانا ضروری ہے، مثلاً: وہ کتاب ہاتھ میں لے، نکل کھڑا ہوا-

11:جب مبتدا اور خبر کے بیچ میں کوئی حجاب نہ ہو تو سکتہ ضرور ڈالتے ہیں، جیسے: یہی مجموعہ یا انتخاب مضامینِ مطبوعہ،

رسالے کا نہایت عمدہ اشتہار بھی بن گیا۔

مولانا حسن رضا، ثمر فصاحت کے مصنف ہیں۔

اعلیٰ حضرت علیہ الرحمہ کی سب سے عام پسند کتاب، فتاوی رضویہ ہے۔

12: عبارت اور خصوصاً شعر کی تعقید کو دور کرنے کے لیے بھی سکتہ لگاتے ہیں، جیسے:

(ا) اس زمانے میں دین کی بات میں لوگ کتنی راہیں چلتے ہیں، کتنے گم راہوں کی رسموں کو پکڑتے ہیں، کتنے، قصے، جاہلوں کے دیکھتے ہیں اور کتنے، ملحدوں کی باتوں کو جو انھوں نے اپنے ذہن کی تیزی سے نکالی ہیں، سند پکڑتے ہیں اور کتنے، اپنی عقل کو دخل دیتے ہیں۔

(ب) سب، رقیبوں سے ہوں ناخوش، پر زنان مصر سے۔

(ج) کروں بیدادِ ذوقِ پرفشانی، عرض، کیا قدرت؟۔

(د) دیوار، بارِ منتِ مزدور سے، ہے خم۔

(ھ) ولے مشکل ہے حکمت، دل میں سوزِ غم چھپانے کی۔

(و) نہیں بہار کو فرصت؛ نہ ہو، بہار تو ہے۔

سکتہ کے استعمال کے یہ بارہ مقام ہیں جنھیں مع امثلہ عرض کر دیا ہے۔

## تَعْرِیب، تَفْرِیس، تارِید، تَہْنِید

جب کسی زُبان کا کوئی لفظ کسی دوسری زُبان میں داخل ہوتا ہے تو دوسری زبان والے اُسے اپنے لہجے کے مطابق ڈھال لیتے ہیں۔

جب کوئی لفظ کسی غیر زبان سے عَربی میں داخل ہو تو اس کے تَلَفُّظ اور اِملا میں جو تبدیلی ہوتی ہے اُس عمل کا نام تَعْرِیب ہے، یعنی عربی بنانا۔

اس عمل کے بعد لفظ جو شکل اختیار کرتا ہے اُسے معرب (مُ عَ رَّ ب) کہتے ہیں۔

اِسی طرح جس عمل سے لفظ کو فارسی بنایا جاتا ہے اسے عملِ تَفْرِیس کہتے ہیں اور بننے والے لفظ کو مفرس (مُ فَ رَّ س) کہا جاتا ہے۔ یوں ہی اُردو میں عملِ تَارِید سے مؤرد (مُ وَرَّ د) لفظ وجود میں آتا ہے، اور ہندی میں عمل تَہْنِید سے مہند (مُ ہَ نَّ د) بنتا ہے۔

عربی لفظ بَطلیموس یونانی کے Ptolemaeus کا مُعرب ہے، فارسی لفظ: برشگال، ہندی کے ورش کال (بارش کا زمانہ، برسات) کا مفرس ہے، اردو لفظ: لالٹین، انگریزی Lantern (لاطینی Lanterna) کا مؤرّد ہے، اور اُردو الفاظ: بالٹی، چابی، کمرہ، میز، تولیا، پرتگیزی الفاظ: Chave,Camara,Mesa,Toalla,Balde کے

مؤرد ہیں-
(بعض لوگوں نے اس عمل کو تخریب یا بگاڑ کہا ہے اور اس عمل سے بننے والے لفظ کو مخرّب (مُ خَ رَّ ب) قرار دیا ہے، جو کہ بالکل غلط ہے، اسے کسی طور تسلیم نہیں کیا جا سکتا؛ الفاظ کی تبدیلی کا یہ عمل ہر زبان میں ہوتا ہے جو کہ ایک فطری ہے، اسے مخرب کہنا بہ ذات خود تخریب ہے)

## اُردو زبان کی اہمیت

دوسری زبانوں میں اتنی اہمیت ہے:

"اُردو زبان کی".

جتنی

خَلق میں انسان کی

سننے میں کان کی

بولنے میں زُبان کی

معاہدے میں پیمان کی

نیزے میں پیکان کی

رونق میں گلستان کی

پودوں میں ریحان کی

فصلوں میں دھان کی

وادیوں میں کاغان کی

موتیوں میں مرجان کی

مضمون میں عنوان کی

وزن میں میزان کی

صَرف میں گردان کی

عروض میں ارکان کی

بدن میں جان کی

اور.....اور.....

حکمت میں "لقمان" کی

## روزمرہ بولے جانے والے دو الفاظ کا مطلب

### بعض

بعض کی تعداد معین نہیں مگر اس میں کثیر تعداد سے نسبت پائی جاتی ہے، مثلاً:

بعض لوگوں کا خیال ہے کہ تیسری عالم گیر جنگ نہیں ہوگی - یعنی ایک کثیر تعداد کے مقابلے میں نسبتاً تھوڑے سے (مثلاً دس یا پندرہ فی صدی، غرض آدھے سے کم) لوگوں کا خیال ہے کہ جنگ نہیں ہوگی -

### اکثر

لفظِ اکثر بعض کی ضد ہے، یعنی جس طرح بعض میں بڑی تعداد سے نسبت اور مقابلہ پایا جاتا ہے اِسی طرح اکثر میں تھوڑی تعداد سے - مثلاً:

اکثر اہل علم و دانش کا خیال ہے کہ میڈیا بیرونی ہاتھوں میں کھیلتا ہے -

یہاں اکثر سے مراد زیادہ تعداد ہے مگر واضح رہے کہ اکثر ہمیشہ آدھی سے زیادہ تعداد کے لیے نہیں آتا - اِس جملے میں اکثر کا مطلب آدھے سے زیادہ نہیں، بلکہ صرف مبالغہ اور زیادتی دکھانے کے لیے بولا گیا ہے؛ آدھی سے زیادہ تعداد کے لیے مخصوص لفظ "بیش تر" ہے، اِسی جملے میں اکثر کی جگہ بیش تر لگا دینے سے لازماً آدھے سے زیادہ لوگ مراد ہوں گے -

بعض اوقات یہ دونوں لفظ ملا کر بھی استعمال کیے جاتے ہیں، مثلاً:

اکثر و بیش تر لوگ اس خیال کے حامی ہیں -

مجھے اکثر و بیش تر وہاں جانے کا اتفاق ہوا -

پہلے جملے میں اکثر و بیش تر کا موصوف 'لوگ'، موجود ہے اور دوسرے میں (مرتبہ یا دفعہ) محذوف ہے -

اگر موصوف جملے میں موجود ہو تو اکثر و بیشتر کا مطلب آدھی سے زیادہ تعداد ہوگا، اگر محذوف ہو تو فقط کثرتِ تعداد مراد ہوگی -

چناں چہ پہلے جملے کا مطلب ہے کہ آدھے سے زیادہ لوگ اِس خیال کے حامی ہیں اور دوسرے کا مطلب ہے کہ مجھے وہاں بہت سی مرتبہ جانے کا اتفاق ہوا -

## درُست لکھیے!

ہمارے ہاں عام طور پر گنتی میں پانچ کے بعد "چھ" لکھتے ہیں، یہ اِملا درست نہیں؛ "چھ" بہ ذات خود کوئی مستقل لفظ نہیں، اِس کے ساتھ جب تک کوئی اور لفظ نہ ملایا جائے یہ کوئی حرکت قبول کرنے کی صلاحیت نہیں رکھتا، یہ ہمیشہ کسی لفظ کا جُز ہوا کرتا ہے، جیسے لفظِ پُوچھ میں ہے -

اس لفظ کا دُرست املا "چھے" ہے -اکیلے چھے لکھاجائے گا اور عدد استغراقی بنانے کے لیے اس کی ی کے آگے "وں" کا اضافہ کریں گے، جیسے: دونوں، تینوں، چاروں، پانچوں "چھیوں" -اور اس کے دیگر اعداد میں بھی "ی" قائم رہے گی، جیسے چھیاسٹھ (66) اور چھیتر (76) ہیں-

ہوسکتا ہے آپ کا ذہن یہ بات قبول کرنے میں متردد ہو..... ایسا ہونا بھی چاہیے کہ یہ بشری تقاضا ہے؛ میں بھی اس معاملے میں عرصے تک متردد رہا ہوں، لیکن بعد از تحقیق اِسی نتیجے پر پہنچا ہوں کہ "چھ" درست املا نہیں، چھے ہی درست املا ہے-

## دُرست لکھیے!

عربی کی بہت ساری جمعیں اور مصدر ایسے ہیں جن کے آخر میں الف کے بعد ہمزہ آتا ہے، جیسے:

ابتداء، املاء، انشاء، علماء، وغیرہ-

اِنھیں جب اُردو میں لکھاجائے گا تو آخر میں ہمزہ نہیں لکھیں گے، کیوں کہ: ہمزہ، آخر تلفّظ میں نہیں آتا-

اضافت کے لیے، ایسے لفظوں کے آخر میں "ے" آئے گی، مثلاً:

انبیا، علما، حکما، شعرا، وزرا، امرا، ادبا، اقربا، ابتدا، انتہا، اخفا، املا، انشا، اقتدا، اکتفا، ارتقا، ابتلا، کو بہ صورتِ اضافت اِس طرح لکھیں گے:

انبیاے کرام، علماے حق، حکماے حاذق

ابتداے عشق، اخفاے راز، املاے صحیح وغیرہ

عطف کی صورت میں:

انبیا و اولیا، علما و شعرا، ابتدا و انتہا، امرا و وزرا، املا و انشا وغیرہ

یہی صورت ایسے عام الفاظ کی بھی ہوگی جن کے آخر میں عربی ہمزہ آتا ہے، کہ اُردو میں وہ سب ہمزہ کے بغیر لکھے جائیں گے -

صرف دو لفظ ایسے ہیں جنھیں ہمزہ کے ساتھ ہی لکھاجائے گا:

"مبدء" اور "سوء"

اضافت کی صورت میں ان کے ہمزہ کے نیچے زیر آجائے گا، جیسے:

سوءِ ظن، سوءِ اتفاق، سوءِ ہضم، سوءِ مزاج، سوءِ تنفّس، سوءِ ترکیب- مبدءِ فیاض، مبدءِ اول، مبدءِ کل-

## دُرست لکھیں!

ہاے مُختفی (ہ) سے پہلے والے حرف پر عموماً زبر ہوتا ہے جیسے:

کعبہ، پردہ، پیمانہ، زمزمہ، واقعہ وغیرہ - جب یہ لفظ مُحرّف ہوں گے اُس وقت لازمی طور پر ہائے مختفی، یائے مجہول سے بدل جائے گی اور اِس سے پہلے والے حرف کا زبر، زیر سے بدل جائے گا، جیسے:

کعبے میں، پردے پر، عرصے سے، وقفے میں، تین مرثیے، چار واقعے، کعبے کا دیدار اللہ اللہ!، مدینے کی بہار اللہ اللہ!، جلوے بکھر گئے، وغیرہ وغیرہ - یہ غلط نگاری بہت عام ہوگئی ہے کہ محرف صورت میں بھی ایسے لفظوں کو اُسی طرح لکھا جاتا ہے جس طرح قائم صورت میں لکھا جانا چاہیے، یعنی:

کعبہ میں، پردہ پر، عرصہ سے، تین مرثیہ، چار واقعہ، وغیرہ -

یہ بالکل غلط لکھاوٹ ہے -

اس قاعدے کی پابندی لازم ہے کہ محرف صورت خواہ جمع کی ہو، جیسے: تین مرثیے؛ خواہ حرفِ ربط یا علاماتِ فاعلی و مفعولی وغیرہ کے واسطے سے ہو، جیسے: مرثیے میں، پردے پر، اس واقعے کو، وغیرہ؛ ایسی سب صورتوں میں ہائے مختفی کی جگہ یائے مجہول لکھی جائے گی اور ماقبل ہائے مختفی کا زبر، زیر سے بدل جائے گا، یعنی: کعبہ اور کعبے (ک ع ب ہ - ک ع بِ ے)

اسی طرح ایسے لفظ جب منادا ہوں گے، تب بھی ہائے مختفی، یائے مجہول سے بدل جائے گی، جیسے:

غنچے ! تری زندگی پہ دل ہلتا ہے
بس ایک تبسم کے لیے کِھلتا ہے

اسی طرح ایک لفظ ہے: "ذمہ"، مُحرّف صورت میں یہ بھی "ذمے" ہو جائے گا، جیسے: اُن کے ذمے، ذمے دار، ذمے داری -

## لفظِ "مشکور" کے استعمال کے بارے میں

لفظِ "مشکور" کے استعمال کے بارے میں یہ کہا جاتا ہے کہ:

"عام طور پر شکریہ ادا کرنے کے لیے لفظ مشکور بولا جاتا ہے جب کہ مشکور وہ ہوتا ہے جس کا شکریہ ادا کیا جائے، شکریہ ادا کرنے والا مشکور نہیں، شاکر ہوتا ہے - اس جگہ لفظِ "ممنون" ہونا چاہیے، جس کا معنی شکر گزار ہے" -

اس بارے میں تحقیق کیا ہے؟

اہلِ علم ملاحظہ فرما کر اپنی رائے گرامی سے آگاہ فرمائیں!

مشکُور کو عربی لُغت کے اعتبار سے تو وہی حیثیت حاصل ہے جو اوپر بیان کی، لیکن اردو زبان کے اعتبار سے ایسا نہیں؛ اردو میں یہ شاکر کے معنی میں مستعمل ہے، لہٰذا کسی احسان کرنے والے کو یہ کہنا کہ میں آپ کا مشکور ہوں بالکل درست ہے -

ڈاکٹر فرمان فتح پوری نے رافع اللغات میں مشکور کا اردو معنی یہ لکھا ہے: پسندیدہ، شکر گزار، ممنون، احسان مند، شاکر -

اس بات کو سمجھنے سے پہلے کہ مشکور کی اردو میں کیا حیثیت ہے، معروف ادیبِ اردو انشاءاللہ خان کا اردو زُبان کے حوالے سے بیان کردہ یہ قاعدہ ملاحظہ فرمالیں:

"جاننا چاہیے کہ جو لفظ اردو میں آیا وہ اردو ہو گیا خواہ وہ لفظ عربی ہو یا فارسی، ترکی ہو یا سریانی، پنجابی ہو یا پوربی، اصل کی رُو سے غلط ہو یا صحیح، وہ لفظ اردو کا لفظ ہے - اگر اصل کے موافق مستعمل ہے تو بھی صحیح اور اگر اصل کے خلاف ہے تو بھی صحیح - اس کی صحت اور غلطی اس کے اردو میں رواج پکڑنے پر منحصر ہے کیوں کہ جو چیز اردو کے خلاف ہے وہ غلط ہے گو اصل میں صحیح ہو اور جو اردو کے موافق ہے وہی صحیح ہے خواہ اصل میں صحیح نہ بھی ہو"

(دریائے لطافت، دوسری فصل، ص235، طبع سوم 2015ء)

بہت سارے عُلما و اُدبائے اردو نے لفظِ مشکور کو شکریہ ادا کرنے کے معنی میں استعمال کیا ہے، مثلاً:

زبانِ اردو کے عالم جناب رشید حسن خان نے ایک ادیب کے حوالے سے لکھا ہے کہ:

عربی میں مشکور اس کو کہتے ہیں جس کا شکریہ ادا کیا جائے، مگر ہماری زبان میں اس کو کہتے ہیں جو کسی کا شکریہ ادا کرے - اس لیے مشکور کی جگہ بعض عربی کی قابلیت جتانے والے اس کو غلط سمجھ کر، صحیح لفظ شاکر یا متشکر بولنا چاہتے ہیں؛ مگر ان کی یہ اصلاح شکریے کے ساتھ واپس کرنا چاہیے -

(اُردو قواعد، ص13)

بہت بڑے ادیب اور علامہ، سیدی و مرشدی شیخ الاسلام امام احمد رضا خان بریلوی نوراللہ مرقدہ سے فتاوی رضویہ میں کیے گئے کئی سوالات ایسے بھی ہیں جن میں سائل نے سوال کے آخر میں لفظِ مشکور استعمال کیا ہے، جس پر امام اہل سنت نے کوئی تَعقُّب نہیں فرمایا -

مثلاً: حضرت مولانا حکیم عبدالرحیم صاحب نے ایک سوال کے آخر میں کہا ہے کہ: اس کی بندہ کو ضرورت ہے ممنون و مشکور ہو گا

(فتاوی رضویہ، ج29، ص63)

محدث، فقیہ، مفتی اور شاعر حضرت سیدی حکیم الامت احمد یار خان نعیمی گجراتی لکھتے ہیں:

اس کا جواب دلوادیں ہم مشکور ہوں گے -

(علم القران، ص24)

کیفی نے لکھا ہے:

جب مشکور مدتوں سے احسان مند کے معنی میں استعمال ہو رہے ہیں اور متکلّم اور سامع دونوں کا ذہن انھی معنی کی طرف جاتا ہے، تو اب قاموس اور صراح سے فتویٰ لے کر، ان الفاظ کو اردو سے خارج کرنے میں کیا مصلحت ہے؟ (منثورات، ص164)

امیر مینائی نے لکھا:

جو کچھ ہو سکے وہ لکھا کرو اور ممنون و مشکور کیا کرو۔

(مکاتیب امیر مینائی، مرتبہ احسن اللہ خاں ثاقب، ص170)

حسن بلگرامی:

آپ کا خط پہنچا، میں ممنون و مشکور ہوں۔

(تاریخ نثر اردو، ص598)

شبلی کا ایک شعر ہے:

آپ کے لطف و کرم سے مجھے انکار نہیں
حلقہ در گوش ہوں ممنون ہوں مشکور ہوں میں

آپ کی رائے گرامی کا منتظر:

## علامت (؛)

بعض تحریروں میں آپ نے یہ علامت: (؛) دیکھی ہوگی۔ اس میں چھوٹے سے واو کو الٹا کر کے نیچے نقطہ لگا ہوتا ہے۔
اِس علامت کو اردو زبان میں وَقفہ کہتے ہے، اور انگریزی میں اسے سیمی کولن (semicolon) کہتے ہیں۔

(انگریزی لکھائی چوں کہ بائیں طرف سے شروع ہوتی ہے، اس لیے وہاں اِس علامت کی شکل تبدیل ہو کر اس طرح ہو جاتی ہے: (;)
یعنی سیدھا واو لکھ کر، اوپر نقطہ ڈالا جاتا ہے)

اس علامت کا استعمال تحریر کو خوب صورت اور آسان بنا دیتا ہے، اس لیے ہر لکھاری کو معلوم ہونا چاہیے کہ یہ علامت کہاں استعمال ہوتی ہے۔

یہ علامت نو (9) مقامات پر استعمال ہوتی ہے، جن میں سے تین مقام بہت عام ہیں، اس لیے انھیں جان لیں۔

1: آپ ایک بات کرنا چاہتے ہیں، جس میں چھوٹے چھوٹے مکمل جملے آتے ہیں؛ تو اُن میں سے ہر ایک جملے کے بعد یہ علامت استعمال کریں گے۔

مثلاً:

میں جب مدینے پاک گیا، روضے پاک کی زیارت کی؛ تو زبان پر یہی عرض تھی ؎

نزع کے وقت جب مِری سانسوں میں اِنتشار ہو
میری نظر کے سامنے ، گنبد ہو وہ ہَرا فقط

اب دیکھیے:

"روضہ پاک کی زیارت کی"، یہ ایک مکمل جملہ بھی ہے، اور پوری عبارت کا حصہ بھی؛ اس لیے اس کے آگے وقفہ ڈالا گیا۔

2: جہاں جملوں کے مختلف حصوں میں تاکید پیدا کرنی ہو، وہاں بھی وقفہ دیتے ہیں۔

مثلاً:

ا: جو کرے گا، سو بھرے گا؛ جو بوئے گا، سو کاٹے گا؛ جو سوئے گا، سو روئے گا۔

۲: آنا، تو خفا آنا؛ جانا، تو رُلا جانا۔

3: جن جملوں کے بڑے بڑے حصوں میں یہ الفاظ آئیں:

ورنہ، البتہ، چناں چہ، اگرچہ، لہٰذا، تاہم۔

وہاں ذہن کو سمجھنے کا موقع دینے کے لیے وقفہ لگائیں گے۔

مثلاً:

ا: میں نے خود سے کہا: زندگی مختصر ہے، نیک عمل کرلے؛ ورنہ مرنے کے بعد تیری لیے آزمائش بن جائے گی۔

۲: میرے پیارے! جہاں چاہے جاؤ؛ البتہ لوٹ کر میرے پاس ہی آنا۔

۳: وہ اس دفعہ جب حجاز مقدس گیا، تو مدینے شریف بھی گیا؛ اگرچہ پہلے بھی کئی دفعہ جا چکا تھا۔

(آپ چاہیں تو کمینٹ میں وقفے کی مشق بھی کرسکتے ہیں۔ اللہ کریم ہم سب کو خیرِ کثیر عطا فرمائے!)

## حسنِ تکلُّم

خلیفہ ہارون رشید کی ماں کا نام خَیزُرَان تھا۔ اور خیزران اس لکڑی کا بھی نام ہے جس سے نیزے بنائے جاتے ہیں۔

ایک دفعہ خلیفہ نے اپنے گھر میں خیزران (لکڑی) کا گٹھا دیکھا تو اپنے وزیر فضل بن ربیع سے پوچھا:

یہ کیا ہے؟

کہنے لگا: امیر المومنین! یہ وہ لکڑی ہے جس سے نیزے بنائے جاتے ہیں۔

(اُس کا حُسنِ تکلم دیکھیں کہ) جواب میں اُس نے خَیزران نہیں کہا، اس لیے کہ خلیفہ کی والدہ کے نام سے (لکڑی کی) موافقت نہ ہو جائے۔

(دیکھیے: الاذکیا لابن جوزی، ترجمہ مولانا فرحان رفیق قادری، ص 51، رقم 91، ط مکتبہ العصریہ بیروت)

اپنے پیاروں سے جب بات کریں تو اچھے سے اچھے الفاظ استعمال کریں، خوب صورت لہجہ اپنائیں۔

پیارے اس چیز کے زیادہ مستحق ہوتے ہیں کہ انھیں پیار سے مخاطب کیا جائے۔

آج کل بے تکلف دوست جو تُو تکار، اَبے تبے سے بات کرتے ہیں اِس سے کئی درجے بہتر حفظِ مراتب کا خیال رکھنا اور

اچھے انداز سے گفتگو کرنا ہے۔ میری ایک دوست سے ملاقات ہوئی تو وہ دیکھ کر مسکرانے لگے۔
میں نے پوچھا: حضرت! آپ کا کیا حال ہے؟

میری طرف اشارہ کر کے کہنے لگے۔

اُن کے دیکھے سے جو آ جاتی ہے مُنہ پر رونق
وہ سمجھتے ہیں کہ بیمار کا حال اچّھا ہے
حُسنِ مَہ گرچہ بَہ ہَنگامِ کمال اچّھا ہے
اُس سے میرا مہِ خورشید جمال اچّھا ہے

حُسنِ تَکَلُّم، حُسنِ اخلاق اور حُسنِ سیرت کا حَسین ترین پہلو ہے؛ اِس سے پہلو تہی نہیں کرنی چاہیے!

## لکھیں

خاقانیِ ہند ابراہیم ذوق نے کہا تھا۔

رہتا ، سُخَن سے نام قیامت تلَک ہے ذَوقؔ
اولاد سے تو ہے یہی دو پُشت ، چار پُشت

آپ لکھیں، ضرور لکھیں، لکھتے جائیں؛ آپ کی تحریریں آپ کو تادیر زندہ رکھیں گی۔
آپ لکھنے کے لیے زندہ رہیں، اور زندہ رہنے کے لیے لکھیں!
جو اچھی بات آپ کے ذہن میں آئے، لکھیں۔ جو مناظر دیکھتے ہیں انھیں لکھیں۔ جو حادثہ پیش آتا ہے اسے لکھیں۔ غمی، خوشی، دکھ، سکھ لکھیں۔
کاغذ پر لکھیں، کتابیں لکھیں، فیس بک، واٹس ایپ، ٹیلی گرام وغیرہ پر لکھیں۔
بس اتنا کریں کہ:
جو بھی لکھیں، اچھا لکھیں؛ اچھی نیت سے لکھیں، اچھے الفاظ میں لکھیں۔
اچھی نیت کرتے دیر نہیں لگتی، اچھا لکھنے پر وقت صَرف نہیں ہوتا، صِرف اچھے الفاظ کے انتخاب پر تھوڑا وقت لگتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔؛ آپ کا وہ بھی تھوڑے سے تھوڑا لگے گا، بس کوشش کریں!!
آج الفاظ بے ربط ہوں گے لیکن کل مربوط ہو جائیں گے، آج بے اثر ہوں گے لیکن کل موثر ہو جائیں گے؛ بس آپ کل کا انتظار کریں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اور ہاتھ پہ ہاتھ دھرے بیٹھ کر انتظار نہیں کریں، قلم پکڑیں اور لکھنا شروع کر دیں۔
اللہ آپ کا حامی و ناصر ہو!

رہتا ، سُخَن سے نام قیامت تلَک ہے ذَوقؔ
اولاد سے تَو ہے یہی دو پُشت ، چار پُشت

## حُروف تہجی تین طرح کے ہیں

اُردو زبان کے حُروف تہجی تین طرح کے ہیں:

بعض مذکر ہیں، کچھ مونث ہیں اور کچھ ایسے ہیں جنھیں مذکر، مونث دونوں طرح استعمال کر سکتے ہیں۔

تفصیل یہ ہے:

1: ا، س، ش، ص، ض، ط، ظ، ع، غ، ف، ق، ک، گ، ل اور ن مذکر ہیں۔

2: ب (بے) اور اِس کے ہم آواز سارے حروف:

پے، پھے، تے، تھے، ٹھے، چے، رے وغیرہ مونّث ہیں۔

3: اِن کے علاوہ جو حروف ہیں، اُن کے مذکر و مونّث ہونے میں اگرچہ اختلاف ہے، مگر صحیح یہ ہے کہ اُنھیں مذکر و مونّث دونوں طرح استعمال کرنا جائز ہے، اساتذہ نے دونوں طرح استعمال کیے ہیں۔

جلیل مانک پوری نے لغتِ تذکیر و تانیث میں امیر مینائی کے حوالے سے، ب (بے) اور اِس کے ہم آواز حرفوں کو مونث بتایا ہے۔

اس لحاظ سے:

ب، بھ، پ، ت، تھ، ٹ، ٹھ، چ، چھ، ح، خ ر، ڑ، ز، ژ، ف، ہ اور ی مونث ہیں۔

مولوی عبدالحق صاحب نے د، ذ اور و کو بھی مونث لکھا ہے؛ جیم اور میم کو مختلف فیہ بتایا ہے، یعنی انھیں مذکر بھی لکھ سکتے ہیں مونث بھی۔

صحیح بات یہ ہے کہ:

د، ڈ، ذ اور و بھی مختلف فیہ ہیں، اِنھیں اساتذہ نے دونوں طرح استعمال کیا ہے۔

## نکات/نُکات

اصل لفظ نِکات ہے (ن کے زیر سے)، لیکن بعض لوگ اِسے نُکات (ن کے پیش سے) بھی پڑھتے ہیں۔

چوں کہ پیش سے اہل زبان کے ہاں منجھ کر نہیں پڑھا گیا اس لیے فی الحال اس کا ترک افضل ہے۔

اگر رواں ہو گیا تو اردو زبان اسے قبول کرنے میں تامل نہیں کرے گی۔

لیکن اگر کوئی نُکات کہہ لیتا ہے تو اس پر سختی نہیں برتنی چاہیے، بہت سارے اردو الفاظ کو صوتیات نے نیا ڈھنگ دے کر مرج

قرار دے دیا ہے۔
بہ طور تمثیل چند الفاظ:
1: نفع میں ف ساکن ہے، لیکن اردو میں مفتوح عام ہے۔
2: نفقہ میں ف مفتوح ہے، لیکن اردو میں راجح سکون ہے۔
3: مولوی کے ل پر زبر ہے، لیکن ہمارے ہاں ساکن پڑھا جاتا ہے۔
4: یثرب میں ر مکسور ہے، لیکن ہمارے ہاں مفتوح معروف ہے۔
اسی طرح اردو زبان کے بیسیوں الفاظ ہیں جنھیں اہلِ زبان علم صوتیات اور روز مرہ کی بِنا پر غلط قرار نہیں دیتے۔
واللہ اعلم

## درست لہجہ

اردو زبان میں کسی بھی لفظ سے پہلے زبر آجائے تو وہ معروف پڑھا جاتا ہے، لیکن جب "ح" اور "ہ" سے پہلے زبر آئے تو اسے اکثر مجہول پڑھتے ہیں۔ جیسے: شہر (شے ہر)، دہر (دے ہر)، بحر (بے حر) وغیرہ۔
حضرت رضا نور اللہ مرقدہ کہتے ہیں:

وہی جلوہ شہر بَشہر ہے ، وہی اصلِ عالَم و دَہر ہے
وہی بحر ہے ، وہی لہر ہے ، وہی پاٹ ہے وہی دھار ہے

## یہ تینوں مصدر

فارسی زبان کے یہ تینوں مصدر ایک ہی قبیل سے ہیں:
① گذشتن ② گذاشتن ③ گذاردن
یہ جب چلنے، چھوڑنے، اور پار کر دینے کے معنے میں آتے ہیں تو اِنھیں، اور اِن کے مشتقات کو "زے" سے نہیں، "ذال" سے لکھنا چاہیے۔
مثلاً: "گُذشتہ" کا معنی ہے: گزرا ہوا، اور یہ فارسی مصدر: گُذشتَن سے مشتق ہے۔
اِسے "گزشتہ" (یعنی زے) کے ساتھ نہیں لکھیں گے۔
میر تقی میر کہتے ہیں۔

غفلت میں گئی آہ مِری ساری جوانی
اے عمرِ گذشتہ ! میں تِری قدر نہ جانی

مرزا غالب کہتے ہیں۔

آ پہنچے ہیں تا سوادِ اقلیمِ عدم
اے عُمرِ گُذشتہ ! یک قدم استقبال

## تحریر(1)

زبان سے نکلے ہوئے الفاظ تو ہوا میں بھی تحلیل ہو جاتے ہیں، لیکن..... تحریر میں آئے ہوئے الفاظ:
بہت دیر تک زندہ رہتے ہیں، اور لکھنے والے کو بھی زندہ رکھتے ہیں۔
اِس لیے زندگی بھر تحریر کو بہتر سے بہتر بنانے میں لگے رہنا چاہیے، تاکہ باقیات یادگار ہو سکیں۔
تحریر کے حوالے سے، آسان انداز میں کچھ چیزیں پیش خدمت ہیں، جنھیں عمل میں لانے سے تحریر دل پذیر و دل رُبا ہو جاتی ہے۔
1: ہلکے پُھلکے اور آسان الفاظ استعمال کریں، جو ہر خاص و عام سمجھ لے۔
بعض اہلِ علم ایسے مشکِل الفاظ استعمال کرتے ہیں، جنھیں سمجھنا عام بندے کے بس میں نہیں ہوتا۔
اِس کا ایک نقصان یہ بھی ہوتا ہے کہ اُن کی تحریریں جس پذیرائی کی حق دار ہوتی ہیں، انھیں وہ نہیں ملتی۔۔۔۔
2: جو لفظ جہاں جَچتا ہو، اُسے وہیں رکھیں، یہی تحریر کا فن ہے۔
جب آپ ہر لفظ کو اُس کی جگہ پر رکھیں گے تو عام سی بات بھی خاص ہو جائے گی۔
ہر لفظ کو اُس کی جگہ پر کیسے رکھا جاتا ہے؟
ان شاءاللہ اگلی قسط میں بیان ہو گا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔(جاری ہے)

## تحریر(2)

جو لفظ جہاں جَچتا ہو اُسے وہیں رکھنا چاہیے، ایسے نہیں ہونا چاہیے کہ:
"کہیں کی اِینٹ کہیں کا رَوڑا، بھان مَتی نے کُنبہ جَوڑا۔"
اِس کے لیے ان باتوں کا خیال رکھیں:
[1]ایک ہی معنیٰ کے جب دو لفظ آپ کے سامنے ہوں، تو اُن میں سے ایسے لفظ کا انتخاب کریں جو عبارت میں گُھل مِل جانے کی صلاحیت رکھتا ہو، تاکہ بہ آسانی پڑھا جا سکے۔
مثلاً: میرا دل اُداس ہے۔
اِس عبارت میں لفظِ "دل" بالکل درست ہے، یہاں اِسے ہی آنا چاہیے۔

اگر اِس کی جگہ "قلب" لائیں گے، اور کہیں گے:

میرا قلب اداس ہے۔

تو جملہ بَھدّا ہو جائے گا۔

اگرچہ قلب اور دل ایک ہی چیز کے دو نام ہیں، لیکن جملے میں کون جچتا ہے؟

یہ ہمیں الفاظ اور لہجے نے بتا دیا۔

اس کی ایک مثال کائنات کے سب سے فصیح کلام قرآنِ پاک سے بھی سمجھ لیں۔

قرآن پاک میں ہے: مَا كَذَبَ ٱلْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ۔

اس میں جو لفظ: "فُواد" آیا ہے، یہ دل کے لیے بولا جاتا ہے۔

اور لفظِ "قلب" بھی دل کے لیے بولا جاتا ہے۔

اگرچہ یہ دونوں عربی الفاظ ہیں اور دونوں کا معنی ایک ہے، لیکن جو جگہ فواد کی تھی وہ قلب نہیں لے سکا۔

اسی طرح ہماری تحریر میں بھی جو جگہ جس لفظ کی ہو، اُسے ہی لینی چاہیے۔

[2] جو لفظ جس چیز کے ساتھ تعلق رکھتا ہو، اسی کے ساتھ ہی استعمال کریں۔

مثلاً: بارش برستی ہے اور ہوا چلتی ہے۔

برسنا بارش کا کام ہے اور چلنا ہوا کا۔

اب اگر کوئی کہے گا کہ:

پہلے تو ہوا برسی، پھر اچانک بارش نے چلنا شروع کر دیا۔

تو یہ درست نہیں ہو گا۔

درست اس طرح ہو گا کہ:

پہلے تو ہوا چلی، پھر اچانک بارش برسنے لگی۔

## قَوسَین

()اِس نشان کو قَوسَین کہتے ہیں۔

یہ اُردو تحریر میں تقریباً آٹھ جگہوں پر استعمال ہوتا ہے۔

ہمارے ہاں عام طور پر اس کا استعمال یہ ہے کہ:

جب ہم کسی فرد، یا کتاب کی عبارت نقل کرتے ہیں اور وضاحت کے طور پر کچھ اپنی طرف سے بھی کہنا چاہتے ہیں، تو قوسَین میں اپنی بات کہتے ہیں؛ تاکہ پڑھنے والے کو معلوم ہو جائے کہ یہ ہماری طرف سے اضافہ ہے۔

اِسے مثال سے یوں سمجھیے:

سیدنا و مولانا امام محمد غزالی نوراللہ مرقدہ لکھتے ہیں:

"حضرت ابراہیم تیمی رحمہ اللہ سے جب کوئی مسئلہ پوچھتا تو رو پڑتے اور کہتے:

تجھے میرے علاوہ کوئی نہیں ملا، جو میری ضرورت پیش آگئی!!"

(احیاء علوم الدین، ربع العبادات، کتاب العلم، 91، ط دار الکتاب العربی بیروت، س1429ھ)

اب ہم اس عبارت کو واضح کرنے کے لیے، قوسین سے اس طرح مدد لیں گے:

"حضرت ابراہیم تیمی رحمہ اللہ سے جب کوئی مسئلہ پوچھتا تو (خوفِ خُدا سے) رو پڑتے، اور (بہ طورِ عاجزی) کہتے:

تجھے میرے عِلاوہ کوئی (دوسرا عالم) نہیں ملا، جو میری ضرورت پیش آگئی!!"

یہاں قوسین کے ذریعے ہم نے بات واضح کردی، اور اصل عبارت کا مفہوم بھی نہیں بدلنے دیا؛ بلکہ اِس میں مزید حُسن پیدا کردیا۔

یہاں ایک بات اچھی طرح یاد رہنی چاہیے کہ:

عبارت کے دوران قوسین کا برمحل استعمال کرنا ہے، اور اس طرح کرنا ہے کہ:

"اگر قوسین کو ہٹادیا جائے تو عبارت کی روانی میں فرق نہ آئے، اور قوسین کو لگادیا جائے تو بھی عبارت کی روانی برقرار رہے"۔

مثلاً: حضرت ابراہیم تیمی رحمہ اللہ سے جب کوئی مسئلہ پوچھتا تو (خوفِ خدا سے) رو پڑتے۔

غور فرمائیں، کہ یہ عبارت لفظی و معنوی اعتبار سے بالکل رواں ہے۔

لیکن اگر اسی عبارت کو یوں کردیا جائے:

حضرت ابراہیم تیمی رحمہ اللہ سے جب کوئی مسئلہ پوچھتا (تو خوفِ خدا کرتے) رو پڑتے۔

اب اگر قوسین کو ہٹادیا جائے تو عبارت کی وہ روانی نہیں رہتی، جو "تو" سے ہے۔

اسی طرح قوسین کو لگادیا جائے پھر بھی فصاحت ختم ہوجاتی ہے، کیوں کہ: "سے" کی جگہ "کرتے" لانا، غیر فصیح ہے۔

اگر طوالت کا اندیشہ نہ ہوتا تو مزید مثالیں دے کر بات واضح کرتا، لیکن امید ہے اسی ایک مثال سے بہت سارے احباب پر بات واضح ہوگئی ہوگی۔ اللہ کریم ہمیں خلوصِ نیت کے ساتھ اِملا و انشا کی دُرُستی کی بھی توفیق بخشے اور ہمارے کلام کو موثر بنائے۔

## وَاوعاطِفَہ

دو لفظوں کو آپس میں ملانے کے لیے جو "و" استعمال ہوتی ہے، اِسے وَاوعاطِفَہ کہتے ہیں۔

اردو زبان میں واو عاطفہ ہر دو الفاظ کے درمیان نہیں آتی بلکہ:

1: جن دو الفاظ کے درمیان واو عاطفہ لانی ہو وہ دونوں واحد ہونے چاہییں، یا جمع۔

ایک واحد اور ایک جمع ہو تو واو عاطفہ نہیں لائیں گے۔

مثلاً:

حقوق و فرض، یا حق و فرائض لکھنا غلط ہے؛ درست: "حقوق و فرائض" ہے۔

گل و بلبلیں لکھنا غلط ہے، درست: گُل و بلبل ہے۔

2: جن دو الفاظ کے درمیان واو عاطفہ آئے گی، وہ دونوں الفاظ فارسی ہونے چاہییں، یا عربی؛ یا ایک فارسی اور دوسرا عربی، یا ایک فارسی اور دوسرا تُرکی۔ اگر ایک اردو اور دوسرا فارسی یا عربی ہو تو واو عاطفہ نہیں آئے گی۔

مثلاً:

[1]اَرض و سَما: دونوں الفاظ عربی ہیں۔

[2]اُمید و بیم: دونوں فارسی ہیں۔

[3]اُمید و یاس: ایک لفظ فارسی اور دوسرا عربی ہے۔ (امید فارسی، اور یاس عربی)

یہ ترکیب بالکل درست ہے، جب کہ:

رنگ و روپ کہنا درست نہیں، کیوں کہ روپ اردو لفظ ہے، اور رنگ فارسی۔

اردو زبان کا حرفِ عطف واو نہیں "اور" ہے؛ اس لیے یہ ترکیب اس طرح ہونی چاہیے:

رنگ اور روپ، یا رنگ، روپ۔

جیسے کسی نے اس شعر میں باندھا ہے۔

پیسا ہی رنگ روپ ہے ، پیسا ہی مال ہے
پیسا نہ ہو تو آدمی چرخے کی مال ہے

(چرخے کی مال اُس ڈورے کو کہتے ہیں جو چرخے پر گھومتا رہتا ہے، اور اس بیچارے کا کوئی پُرسانِ حال نہیں ہوتا)

اسی طرح پھول و بلبل کہنا بھی درست نہیں، کیوں کہ بلبل عربی لفظ ہے اور پھول اردو۔

اسے یا تو گل و بلبل کہیں گے (ایک فارسی اور دوسرا عربی) یا پھر پھول اور بلبل کہیں گے۔

3: علم عروض میں واو عاطفہ کا اسقاط جائز اختیاری ہے، شاعر چاہے تو اِسے گرا سکتا ہے اور چاہے تو قائم رکھ سکتا ہے۔

حالی پانی پتی کے دو شعر ہیں، پہلے میں واو عاطفہ قائم ہے، اور دوسرے میں ساقط۔

[1] حِجازی امیروں کے گھر جا کے دیکھے

خِلافت کے زیر و زَبَر جاکے دیکھے
2 کوئی قرطبہ کے کھنڈر جاکے دیکھے
مساجِد کے دیوار و دَر جاکے دیکھے

## لکھنے کے لیے

ایک دوست نے سوال کیا ہے:
لکھنے کے لیے بندے کے پاس کتنا علم ہونا چاہیے؟
اس سلسلے میں عرض ہے:
لکھنے کے لیے بہت زیادہ علم کی ضرورت نہیں، صرف لکھنے کا طریقہ آنا چاہیے، اور جو لکھنا ہے اس کے بارے میں علم ہونا چاہیے۔
آپ بہت زیادہ پڑھے ہوئے نہیں ہیں، آپ کو لکھنے کا طریقہ آتا ہے تو آپ بہت اچھا لکھیں گے۔
اور
اگر آپ بہت زیادہ پڑھے ہوئے ہیں، مگر آپ کو لکھنے کا طریقہ نہیں آتا تو آپ صحیح طرح نہیں لکھ سکیں گے۔
لکھنے کا طریقہ مَشق سے آتا ہے۔
آپ مشق کرتے رہیں (مسلسل لکھتے رہیں)، اور اپنے الفاظ کو بہتر سے، بہتر بنانے کی کوشش میں لگے رہیں؛ انشاءاللہ بہت جلد لکھنا سیکھ جائیں گے۔

## شدید اتفاق

1: بعض لوگ کسی کی بات پر کہتے ہیں س:
"مجھے آپ کی بات سے شدید اتفاق ہے۔"
یہ جملہ درست نہیں!
شدید اختلاف ہوتا ہے، شدید اتفاق نہیں۔
درست اس طرح ہے: "مجھے آپ کی بات سے مکمل اتفاق ہے۔"
یا میں آپ کی بات سے پورا متفق ہوں۔
اختلاف کی صورت میں کہنا چاہیے:
"مجھے اس بات سے شدید اختلاف ہے۔"

2: مِٹّی، زمین کی تہ اور خاک کو کہتے ہیں۔ (میم کے زیر سے) اور
مَٹّی (میم کے زبر کے ساتھ)، ایک برتن کا نام ہے جو پیٹی سے چھوٹا ہوتا ہے، جس میں آٹا یا چاول وغیرہ ڈالتے ہیں۔

## لکھنے والوں کے حضور!

1: اگر کسی کے نام سے پہلے "جناب" لکھیں، تو اس کے نام کے آخر میں "صاحب" نہ لکھیں۔
اور اگر آخر میں صاحب لکھیں، تو نام سے پہلے جناب نہیں لکھنا چاہیے۔
"جناب اور صاحب کو ایک نام کے ساتھ جمع نہیں کر سکتے۔"
2: جب تلفظ کی سہولت کے لیے، اردو زبان کے کسی لفظ پر زبر، زیر، پیش لگائیں تو اس کا خیال رکھیں کہ آخری حرف پر جزم وغیرہ نہ آئے؛ اردو زبان کے الفاظ کا آخری حرف خالی ہوتا ہے۔
3: دو آنکھوں والی "ھ"، اردو کے کسی لفظ سے پہلے نہیں آتی، سارے اردو الفاظ "ہ" سے شروع ہوتے ہیں؛ اس لیے کسی بھی لفظ سے پہلے دو آنکھوں والی ھ استعمال نہ کریں۔

## مختصر اور جامع

جب بھی کچھ لکھیں تو مختصر اور جامع ہونا چاہیے، بے جا طوالت۔۔۔۔۔۔ پڑھنے والے کو دِقت میں مبتلا کر دیتی ہے اور بات سمجھنا مشکل ہو جاتا ہے۔ ؎

واعِظ کی بات، دل میں جو اُترے تو کس طرح۔۔۔۔۔۔ ؟
جب کان، اُس کی کثرتِ گُفتار چاٹ لے !

آج کتاب: "Don't Sweat the small stuff" نظر سے گزری، جو سیلف ہیلپ پہ ہے۔
اس جیسی کئی کتابیں لکھی جا چکی ہوں گی، لیکن اس کی ایک چیز اچھی لگی کہ:
100 موضوعات کو، سو سے بھی کم صفحات میں مکمل کر دیا؛ جنھیں نہ پڑھتے الجھن ہوتی ہے، نہ سمجھتے۔۔۔۔۔۔
یہ طرزِ تحریر بور نہیں کرتا، کتاب مکمل ہونے تک دل چسپی برقرار رکھتا ہے۔

## "صحابیِ نبی"

لفظ: "صحابیِ نبی" کے متعلق بعض احباب نے پوچھا ہے کہ:
اسے ہمزہ کی اضافت سے صحابیٔ نبی پڑھنا درست ہے، یا زیر کے ساتھ صحابیِ نبی؟
اس سلسلے میں عرض ہے کہ:

درست املای کے زیر کے ساتھ "صحابیِ نبی" ہے، ی پر ہمزہ کی اضافت غلط ہے۔
کسی لفظ کے آخر میں جب اضافی ی آتی ہے تو وہ اضافت کی صورت میں مکسور ہو جاتی ہے، اس پر ہمزہ نہیں آتا جیسے:
مرضیِ خدا، نبیِ رحمت، صحابیِ نبی، ولیِ کامل پڑھنا درست ہے۔
جب کہ: مرضیٔ خدا، نبیٔ رحمت، صحابیٔ نبی، ولیٔ کامل وغیرہ درست املا نہیں۔
ایک دفعہ ثواب کی نیت سے یہ نعرہ لگا لیجیے:
ہر صحابیِ نبی۔۔۔۔۔۔جَنّتی جَنّتی

## اردو زبان بہت پیاری ہے

اردو زبان بہت پیاری ہے، اس کے اصول و قواعد سیکھیں، اس میں گفتگو کریں، اسے عام کریں، اس سے محبت کریں۔
جو کرے بات تو ہر لفظ سے خوشبو آئے
ایسی بولی وہی بولے جسے اردو آئے
انور مسعود صاحب سے ایک انٹرویو میں پوچھا گیا:
آپ کی کوئی خواہش؟
کہنے لگے ہاں، میری خواہش ہے کہ:
کوئی گورا ہو۔۔۔۔۔۔۔۔اُس کے ہاتھ میں ایک فارم پکڑا ہوا ہو۔۔۔۔۔۔۔اور وہ فارم اردو میں ہو۔
وہ میرے پاس آئے اور درخواست کرے کہ مجھے پُر کر دیجیے۔
(تو اس کی یہ عرضی سن کر) میری دو سو سال کی تھکن اتر جائے۔

## قصیدہ معراجیہ

آج شبِ معراج ہے، جو کہ انتہائی عظمت والی رات ہے۔
اِس رات ہمارے پیارے نبی ﷺ اپنے کرم والے رب جل جلالہ کے پاس گئے تھے۔
سرکار معراج پر کس شان سے گئے۔۔۔۔۔۔۔۔؟
محبت کی زُبان میں اِس کی جو عکاسی سیدی اعلیٰ حضرت نے کر دی ہے، شاید کوئی کر سکے۔
آپ نے معراج شریف پر 67 اشعار پہ مشتمل ایک قصیدہ لکھا ہے، جسے "قصیدہ معراجیہ" کہا جاتا ہے۔
اگرچہ آپ رحمہ اللہ کی شاعری کو کما حقہ سمجھنے والے کے لیے ضروری ہے کہ وہ:
تخیل و محاکات کے ساتھ ساتھ، علمِ بیان سے آگاہ ہو۔

دلالت لفظی و غیر لفظی جانتا ہو؛ حقیقت، مجاز، کنایہ، استعارہ، تشبیہ وغیرہ کی اسے پہچان ہو۔
اور ان کی قسمیں (تبعیہ، اصلیہ، مطلقہ، مجردہ، مرشحہ۔ ملفوف، مفروق، مسلسل، مشروط، معکوس وغیرہ) سمجھتا ہو۔
اسے علم معانی کی شُدبُد ہو۔

اور وہ:

مسند، قصر، انشا، ایجاز و اطناب اور وصل و فصل وغیرہ کی معلومات رکھتا ہو۔
نیز بدیع کا علم رکھتا ہو۔
اُسے: توسیم، تصحیف، تکریر، تجنیس، تفریع، ترصیع۔ تجرید، ترسیم، تلمیح، تفریق، تقسیم وغیرہ صنائع لفظی و معنوی کی پہچان ہو۔
لیکن پھر بھی ہو سکے تو آج یہ قصیدہ ضرور پڑھیں، اور اللہ توفیق دے تو ہر سال معراج شریف کے موقع پر پڑھنے کی نیت کریں۔
یہ اتنا بابرکت قصیدہ ہے کہ بیان نہیں کیا جاسکتا۔
آپ کو الفاظ و معانی کی مکمل طور پر سمجھ آئے، نہ آئے۔۔۔۔۔۔ انشاءاللہ لطف ضرور آئے گا اور پڑھنے کا اجر بھی ملے گا۔

## سید انشاءاللہ خان

سید انشاءاللہ خان (متوفی 1817ء) کا شمار اردو زبان کے مقتدر علما میں ہوتا ہے، اِنھیں اردو کا امیر خسرو بھی کہا جاتا ہے۔
انھوں نے اردو زبان میں ایک ایسی کتاب لکھی جس میں کوئی لفظ بھی عربی اور فارسی کا استعمال نہیں کیا۔۔۔۔۔ سارے لفظوں کو اردو جامہ پہنایا۔
ان کی ایک کتاب "دریائے لطافت"، بھی ہے جس کا شمار اردو قواعد کی اولیں کتابوں میں ہوتا ہے۔
اگرچہ انھیں عربی، فارسی، ترکی، پنجابی، فرانسیسی، انگریزی وغیرہ زبانوں پر عبور تھا، لیکن اردو سے الگ ہی محبت تھی۔
ان کی شاعری دوسرے شعرا سے منفرد ہے۔
انھوں نے ایسے ایسے شعر کہے ہیں جنھیں اختلافِ معنٰی کے بغیر۔۔۔۔۔۔۔ محض نقطوں کی تبدیلی سے عربی، فارسی اور ہندی میں پڑھا جاسکتا ہے۔ ان کے بعض شعر ایسے بھی ہیں جن کا ایک مصرع غیر منقوط اور دوسرے مصرعے کے تمام الفاظ منقوط ہیں۔
اور اردو میں ایسی ایسی غزلیں کہی ہیں جن کی نظیر شاید کسی زبان میں بھی نہ مل سکے۔
کل ان کی ایک غزل کا مطلع نظر سے گزرا تو بہت لطف آیا، آپ بھی ملاحظہ کر لیجیے۔

دلِ ستم زَدہ بے تابیوں نے لُوٹ لیا

ہمارے قبلہ کو وہابیوں نے لُوٹ لیا

(کہتے ہیں: ہمارا دل، ہمارا قبلہ تھا؛ ہم اسی کی رہنمائی میں چلتے تھے۔ یہ پہلے پہل تو غموں اور پریشانیوں کے ستم کا شکار ہوا ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ رہی سہی کسر بے تابیوں نے نکال دی، اور سارا ساز و سامان (سکون و اطمینان) لوٹ کر رفو چکر ہو گئیں ۔۔۔۔۔۔۔۔ بالکل اسی طرح

جیسے: وہابیوں نے جاے قبلہ مکہ شریف کو لوٹا تھا۔)

شعر کا اصل مزہ تو شعر کو از خود سمجھ کر ہی آتا ہے، شعر کا لفظی معنیٰ اور تشریح اس لطف کا نعم البدل نہیں ہوتے۔

اسی شعر کو ہی لے لیجیے:

اس میں دیکھنے کو تو عام سے الفاظ نظر آئیں گے لیکن تخیل کی جس بلندی پر انھیں منظوم کیا گیا ہے اس تک وہی رسائی حاصل کر سکتا ہے جو سید انشاءاللہ خاں کے دورِ کس مپرسی سے واقف ہونے کے ساتھ ۔۔۔۔۔۔۔ وہابیوں کے مکہ مدینہ پر ڈھائے گئے مظالم سے بھی آگاہ ہو کہ:

کس طرح انھوں نے اُس وقت انگریزوں کی مدد سے مکہ شریف میں لوٹ مار کی جب عثمانی فوجیں کافروں کے خلاف مصروفِ جہاد تھیں۔

رب تعالیٰ جَلَّ جَلَالُہٗ ہمارے گناہ معاف فرمائے اور اپنے حبیب پاک صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے صدقے حرمین شریفین کو ہمیشہ کے لیے ظالموں سے نجات عطا کرے!

مفتی اعظم ہند نور اللہ مرقدہ کہا کرتے تھے:

تِرے حبیب کا پیارا چمن کیا برباد
الٰہی! نکلے یہ نجدی بلا مدینے سے
لگاؤ دل کو نہ دنیا میں ، ہر کسی شے سے
تعلق اپنا ہو کعبے سے ۔۔۔۔۔ یا مدینے سے

## مرکبات

کئی سال پہلے اردو زبان کے ماہرین مل بیٹھے تھے، اور انھوں نے اتفاق رائے سے بعض مرکبات کے بارے میں طے کیا تھا کہ انھیں اکٹھا نہیں، الگ الگ لکھنا چاہیے۔ مثلاً: خوبصورت کو "خوب صورت" آجکل کو "آج کل" قلمکار کو "قلم کار" وغیرہ وغیرہ۔

لیکن اس کے ساتھ ساتھ انھوں نے یہ بھی طے کیا تھا کہ:

مشتقات کو جہاں تک ہو سکے ملا کر ہی لکھنا چاہیے، مثلاً: زمین دار کو "زمیندار"، شان دار کو "شاندار"، دل دار کو "دِلدار"

لکھنا چاہیے۔
(البتہ جن مشتقات کو الگ لکھنے کا چلن ہو انھیں الگ لکھنا بھی درست ہے۔)
اسی طرح کئی ایک چیزوں کے متعلق طے ہوا تھا۔

ہمارے معاصر بعض اہل علم مرکبات کو الگ الگ لکھنے والے مسئلے پر قیاس کرتے ہوئے بعض ایسے الفاظ کو بھی الگ الگ لکھ دیتے ہیں جن کے الگ لکھنے کا نہ تو رواج رہا ہے، اور نہ ہی انھیں الگ لکھنا درست معلوم ہوتا ہے۔
مثلاً: لفظ "سرخرو" کو بعض سرخ رو لکھتے ہیں، جو کہ نہ صرف غلط املا ہے بلکہ معنوی طور پر بھی درست معلوم نہیں ہوتا۔
سُرخرو کا معنی ہوتا ہے: کامیاب اور بامراد۔
غلام محمد کلکتوی کا شعر ہے۔

سرخرو ہوتا ہے اِنساں آفتیں آنے کے بعد
رنگ لاتی ہے حِنا پتھر پہ پِس جانے کے بعد

اب اگر اِس کا املا "سرخ رو" کر دیں تو اس سے سرخ چہرے والا معنی مترشح ہوگا۔
جیسا کہ رشید لکھنوی کا شعر ہے۔

گئے تھے حضرتِ زاہد تو زرد تھا چہرہ
شراب خانے سے نکلے تو سُرخ رُو نکلے

اسی طرح کئی مرکب الفاظ کے ساتھ سلوک کیا جاتا ہے جو کہ ناروا ہے۔
اردو کے کون سے مرکب الفاظ توڑ کر لکھنے چاہییں، اور کون سے نہیں؟
اس کی تفصیل گوپی چند نارنگ کے املا نامہ (قومی کونسل برائے اردو زبان ہند، طبع اول 1974ء، طبع سوم 2010ء) میں ملاحظہ کی جا سکتی ہے۔

## اشعار زبانی یاد کر لیں

حافظ ذہبی رحمہ اللہ نے سِیَر میں لکھا ہے کہ:
امام حافظ محمد بن قاسم (ابن الانباری) رحمہ اللہ، متوفی 328ھ بہت بڑے سُنی عالم، محدث، مفسر اور زاہد و متواضع تھے۔
آپ نے تین لاکھ اشعار زبانی یاد کر رکھے تھے، جن سے (الفاظِ) قران پر استدلال کیا کرتے تھے۔
اللہ کرے آج کے علما بھی کچھ اشعار زبانی یاد کر لیں، اور دورانِ تقریر و تحریر اُن کا برمحل استعمال کیا کریں؛ تاکہ قوتِ نُطق میں اضافہ ہو، استدلال میں نکھار آئے، اور حُسنِ بیان کو چار چاند لگ جائیں۔
اردو اشعار یاد کرنے کے لیے، اگر آپ مناسب سمجھیں تو کتاب: "معین الادب" سے استفادہ کر سکتے ہیں؛ یہ اس سلسلے میں

بہترین معاون ثابت ہوگی ۔ یہ ایسی کتاب ہے جس میں ہر لفظ کا استعمال، شعری دلیل سے ثابت کیا گیا ہے؛ اس لفظ کی تذکیر و تانیث بیان کی گئی ہے، اور ابجد کے اعتبار سے اس کے عدد بھی بیان کر دیے گئے ہیں۔

اس میں پچاسی شعرا کے، تقریباً سات ہزار اشعار ہیں۔

کل سے میرا دل کر رہا ہے اس کتاب کو حفظ کر لوں ۔۔۔۔۔۔۔ چلو لاکھوں نہ سہی، کم از کم ہزاروں شعر تو زبانی یاد ہو ہی جائیں گے ۔ اب اللہ ہی میرا مددگار ہے، اُسی سے قوتِ حافظہ کا سوال ہے اور اسی کی رحمت میرا مآل ہے۔

# (13) تیرہواں باب: اورادو وظائف

یہ باب کچھ اورادو وظائف پر مشتمل ہے۔

## اے اللہ! امت محمد ﷺ پر رحم فرما

حضرت معروف کرخی رحمہ اللہ فرماتے تھے:

جو بندہ روزانہ تین بار کہتا ہے:

اے اللہ امت محمد کی اصلاح فرما، اے اللہ امت محمد پر رحم فرما، اے اللہ امت محمد کو خوش حال کر دے۔

اُس کا نام گروہِ اَبدال میں لکھ دیا جاتا ہے۔

(کیمیائے سعادت فارسی، رکن دوم معاملات، در حقوق مسلمانان و خویشاوندان۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔در حق ھوھم، ص 332، مطبوعہ تہران)

"ابدال" اولیاء اللہ کی ایک قسم ہے، جو مختلف انبیا علیہم السلام کے مشرب پر ہوتے ہیں، اور مدد معنوی کا فریضہ انجام دیتے ہیں۔

## کتے اگر حملہ کر دے تو

آج صبح ایک جگہ جانا ہوا، جوں ہی گاڑی سے اترا تین کتے حملہ کرنے کے لیے میری طرف لپکے۔

مجھے فوراً اپنے استاد محترم کی بات یاد آگئی کہ: "اگر تم پر کتا حملہ آور ہونے لگے تو بھاگنا نہیں، اسی جگہ پر سکون کھڑے رہنا ہے اور قدرے بلند آواز سے اس آیت کا ورد کرنا ہے:

وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ

ان شاءاللہ کتا کاٹے گا نہیں۔" میں نے ایسے ہی کیا تو وہ تینوں کتے کاٹنے کے بجائے دم ہلانے لگے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔واقعی استاد کی بات کسی نہ کسی موڑ پر ضرور کام آتی ہے، اسے کبھی ضائع نہیں کرنا چاہیے یہ بڑا قیمتی خزانہ ہوتا ہے۔ ایک پاکستانی جاسوس ہندستان گیا، وہ کسی جگہ چھپا بیٹھا تھا کہ انڈین آرمی کو شک ہو گیا، انھوں نے اسے تلاش کرنے کے لیے کھوجی کتے چھوڑے۔ وہ کہتا ہے:

کتے تیزی سے میری طرف بڑھ رہے تھے کہ مجھے اپنے استاد کی بات یاد آگئی:

"بیٹا! اگر تمھیں پکڑنے کے لیے کتے استعمال کیے جائیں تو آٹھ کے ہندسے جیسا چکر کاٹ کے کہیں چھپ جانا، اگر کتوں نے پہلے سے تمھاری خوش بو نہ سونگھی ہوئی تو تمھیں کبھی نہیں پکڑ سکیں گے۔" میں نے ایسے ہی کیا، دو تین چکر کاٹ کے پہاڑی کی اوٹ میں ہو گیا۔

کتے چکروں پہ آکر رک گئے اور زمین کریدنا شروع کر دی، آخر تھک ہار کر دوسری طرف چلے گئے۔۔۔۔۔۔

بے شک زندگی سنوارنے والی اور ہر موڑ پر کام آنے والی بہترین ہستی "استاد" ہے۔ استاد میسر آنے سے پہلے انسان بے خبر اور بے علم ہوتا ہے، اللہ پاک استاد کے ذریعے اس پر علم کے در وا کرتا ہے۔

مجھ سے کسی نے پوچھا تھا: علم عروض حاصل کرنا چاہتا ہوں کسی بہترین کتاب کی طرف رہنمائی کریں۔

میں نے اسے کہا: کوئی بھی فن سیکھنے کے لیے "استاد" سے بہترین کوئی کتاب نہیں! یہ وہ کتاب ہے جو نہ صرف علوم وفنون سکھاتی ہے بلکہ استعمال کا طریقہ بھی سمجھاتی ہے۔ اللہ تعالی ہمیں اپنے استادوں کا قدردان بنائے!

## سَحر کے تیر

معتصم باللہ کے زرخرید، چہیتے غلاموں نے جب اہل بغداد کو تنگ کیا تو وہ شکایت لے کر آئے اور کہا:

(اے بادشاہ!) اپنے غلاموں کو روک لے، ورنہ ہم تجھ سے لڑائی کریں گے۔

معتصم نے پوچھا: تم کس چیز سے لڑو گے (تمھارے پاس تو اسلحہ ہی نہیں)؟

کہنے لگے: ہم سَحر کے تیر چلائیں گے (یعنی بہ وقت سَحر تیرے لیے بددعا کریں گے)۔

معتصم نے کہا: مجھ میں اس مقابلے کی سکت نہیں!

(انظر: تاریخ الخلفا للسیوطی، ص262، دارالارقم بن ابی الارقم بیروت)

پاکستان میں امریکی زرخرید غلاموں نے لوگوں کا جینا حرام کر رکھا ہے، یہ ظالم آہِ سحر سے بچ نہیں پائیں گے۔

کہیں آہِ مظلوم خالی گئی ہے ؟؟
یہ درخواست ، تا بابِ عالی گئی ہے!

## چاند گرہن

محکمہ موسمیات کے مطابق: آج رات گیارہ بجے کے بعد چاند گرہن ہے۔

چاند گرہن اللہ پاک کی نشانیوں میں سے ایک نشانی ہے، اس سے ہماری زندگی پر کوئی منفی اثر نہیں پڑتا؛ ہمیں کسی قسم کے وہم میں مبتلا ہونے کی کوئی ضرورت نہیں۔

چاند گرہن کے وقت بعض جادوگر مخصوص عملیات کرتے ہیں، ان کی تاثیر الگ چیز ہے۔

اگر آپ چاہیں تو 29 بار یہ وظیفہ پڑھ لیں، انشاء اللہ گرہن کے وقت کیے گئے ہر جادو سے محفوظ رہیں گے۔

اس کے پڑھنے کا وقت گرہن والی رات غروبِ آفتاب سے لے کر گرہن سے پہلے تک ہوتا ہے:

اَوَلَمۡ یَکۡفِ بِرَبِّکَ اَنَّہٗ عَلٰی کُلِّ شَیۡءٍ شَہِیۡدٌ

## پھوڑے، پھنسیوں یا خارش

سَاون، بھادُوں میں کئی لوگ پھوڑے، پھنسیوں یا خارش میں مبتلا ہو جاتے ہیں۔

ان کا ظاہری علاج کرنے کے ساتھ، یہ روحانی علاج بھی کریں۔

مائیں، بہنیں جب آٹا گوندھنے لگیں تو اُس میں پانی ڈالتے وقت یہ دو آیات کریمہ ایک دفعہ پڑھ لیں، انشاءاللہ تندرستی مل جائے گی:

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۔

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۔

## استخارہ

عظیم محدث و مفسر، حضرت علامہ غلام رسول سعیدی قدس سرہ نے لکھا ہے:

"واضح رہے کہ ہر شخص اپنے لیے خود استخارہ کرے۔

کوئی شخص دوسرے کے لیے استخارہ نہیں کر سکتا، جیسا کہ صحیح بخاری کی حدیث میں متکلّم کے صیغوں سے ظاہر ہوتا ہے۔

آج کل بعض لوگ مسجد کے امام سے کہتے ہیں:

آپ ہمارے فلاں کام کے لیے استخارہ کر دیں، یا ٹی وی پر کوئی صاحب دوسروں کے لیے استخارہ کر کے مسئلہ کا حل بتاتے ہیں، یہ دونوں طریقے غلط اور خلافِ حدیث ہیں۔"

**(نعمة الباری، ج3، ص311، 312)**

حضرت کی رائے گرامی اپنی جگہ، لیکن ہمیں اس سے اختلاف ہے۔

بے شک استخارے کا سب سے اعلیٰ وہی طریقہ ہے جو نبی اقدس ﷺ نے تعلیم فرمایا، کہ بندہ دو نفل پڑھ کر اپنا معاملہ اللہ کے حضور پیش کرے۔

لیکن اس طریقے کے علاوہ بھی اگر کوئی رب تعالیٰ سے خیر طلب کرتا ہے تو اُسے منع نہیں کر سکتے، کیوں کہ شریعت میں نہی وارد نہیں۔

نیز یہ کہنا بھی درست نہیں کہ دوسرے کے لیے استخارہ نہیں کیا جا سکتا۔

استخارہ اللہ پاک سے خیر طلب کرنے کو کہتے ہیں، اور جس طرح دوسرے کے لیے دعاے خیر کی جا سکتی ہے، اسی طرح استخارہ بھی کیا جا سکتا ہے۔ واللہ اعلم

## روزانہ یہ پڑھا کریں

سیدنا عثمان غنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بیٹے، حضرت ابان رحمہ اللہ کہتے ہیں: میں نے اپنے والد گرامی سے سنا، کہ نبی

پاک صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

جو بندہ ہر روز، صبح و شام، تین تین بار کہے:

بِسْمِ اللهِ الَّذِی لَا یَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَیْءٌ فِی الْأَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَهُوَ السَّمِیعُ الْعَلِیمُ

اسے کوئی چیز (بیماری یا آفت وغیرہ) نقصان نہیں پہنچائے گی۔

چوں کہ حضرت ابان کو ایک جانب فالج تھا، (آپ نے جب یہ حدیث بیان کی تو) ایک شخص آپ کی طرف دیکھنے لگا۔

(اس کے دیکھنے کا مطلب یہ تھا کہ آپ پھر خود مصیبت میں کیسے مبتلا ہو گئے)

آپ نے اسے کہا: میری طرف کیا دیکھتے ہو، یہ حدیث اِسی طرح ہے جیسے میں نے بیان کی۔

بات دراصل یہ ہے کہ جس دن مجھے فالج ہوا، اس دن میں نے یہ کلمات نہیں پڑھے تھے؛ بس اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ نے مجھ پر اپنی تقدیر کا فیصلہ جاری کر دیا۔

(جامع الترمذی، ر3388، حسن)

اگر ہم بھی صبح و شام پابندی سے یہ کلمات پڑھ لیا کریں تو انشاء اللہ کرونا وائرس سے محفوظ رہیں گے۔

## ایک دعا یہ بھی

حبیب پاک صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کی عادت کریمہ تھی کہ جب سیدنا داود علیہ السلام کا ذکر کرتے، تو فرماتے:

وہ سب سے زیادہ عبادت گزار انسان تھے۔

اور فرماتے، داود علیہ السلام کی ایک دعا یہ بھی تھی کہ:

اَللّٰهُمَّ إِنِّی أَسْأَلُكَ حُبَّكَ، وَحُبَّ مَنْ یُحِبُّكَ، وَالْعَمَلَ الَّذِی یُبَلِّغُنِی حُبَّكَ؛ اللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ أَحَبَّ إِلَیَّ مِنْ نَفْسِی، وَأَهْلِی وَمِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ۔

اے اللہ! میں تجھ سے تیری محبت مانگتا ہوں، اور اُس بندے کی محبت مانگتا ہوں جو تجھ سے محبت کرتا ہے، اور ایسے عمل کا سوال کرتا ہوں جو مجھے تیری محبت تک پہنچا دے؛ اے اللہ! تو اپنی محبت کو میرے لیے میری ذات، میرے اہلِ خانہ اور ٹھنڈے پانی سے بھی زیادہ محبوب کر دے۔

(جامع ترمذی، ر3490۔ حسن)

اللہ کریم اپنے حبیب صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے طفیل ہمیں بھی یہ دعا مانگتے رہنے کی توفیق بخشے اور اسے شرف قبولیت عطا فرمائے!

محبت میں اپنی گُما یاالٰہی
نہ پاؤں میں اپنا پتا یاالٰہی

رہوں مست وبے خود میں تیری وِلا میں
پِلا ، جام ایسا پِلا یاالٰہی !
مِرا ہر عمل بس ترے واسطے ہو
کر اِخلاص ایسا عطا یاالٰہی
مسلماں ہے عطآر تیری عطا سے
ہو ایمان پر خاتِمہ یاالٰہی

# (14)چودھواں باب: سحر اور عملیات

اس باب میں جادو، سحر اور عملیات سے متعلق تحریریں ہیں۔

## جنات والا چشمہ

پرسوں ایک پہاڑ کی کھوہ میں کچھ عملیات کرنے کے لیے جانا ہوا تو وہاں ایک چشمہ دیکھا جس پر جنات کی آمد و رفت لگی رہتی ہے۔ گرمی میں لوگ اس چشمے پر بڑے شوق سے نہاتے ہیں، لیکن بے احتیاطی کی وجہ سے بعض دفعہ انھیں کافی نقصان بھی اٹھانا پڑتا ہے۔ وہاں کے مقامی بتا رہے تھے کہ ایک جوان یہاں غسل کرنے کے بعد اچانک غائب ہو گیا (جب کہ وہ علاقہ ایسا نہیں کہ کوئی غائب ہو جائے)، تین دن بعد وہ ملا تو اس کی یاداشت کھو چکی تھی اور بہکی بہکی باتیں کرتا تھا۔ اس چشمے کے ارد گرد رہنے والوں کی ایک تعداد ایسی ہے جن کی ذہنی حالت عام انسانوں جیسی نہیں۔ یہاں بتانے کا مقصد یہ ہے کہ:

عموماً گرمیوں میں لوگ سیر کے لیے نکلتے ہیں، اور پہاڑوں، جھیلوں، دریاؤں اور چشموں کی طرف رخ کرتے ہیں۔

وہ اگر یہ احتیاطیں کر لیں تو بہتر رہے گا:

۱ چشمے پر غسل کرنے سے پہلے یہ دعا پڑھ لیا کریں:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ.

اگر یہ دعا یاد نہ ہو تو اعوذ باللہ، بسم اللہ پڑھ لیا کریں۔

﴿۲﴾ کسی بھی چشمے میں پیشاب نہ کریں، نہ اس میں کوئی نجاست ڈالیں۔

﴿۳﴾ پہاڑوں کی کھوہ میں واقع چشموں پر رات کے وقت جانے سے گریز کریں۔

﴿۴﴾ اگر کسی چشمے پر نہانے یا اس کا پانی پینے کے بعد اچانک طبیعت خراب ہونی شروع ہو جائے (غنودگی طاری ہو، ذہن میں بہکے بہکے خیال آئیں، یا سر بھاری ہونا شروع ہو جائے) تو گنبد خضریٰ شریف کو آنکھوں کے سامنے لا کر سرکارِ مدینہ ﷺ پر درود شریف پڑھنا شروع کر دیں، چند منٹوں میں یہ کیفیت زائل ہو جائے گی۔ اگر بالفرض یہ کیفیت زائل نہ ہو تو کسی ماہرِ فن دم کرنے والے سے، دم کروا لیجیے، اور اس کے بعد کچھ دیر سو جائیے۔ اللہ کریم ہم سب کو اپنی امان میں رکھے!

## بندش

آج ایک صاحب علم نے سوال کیا:

آپ چودہ سو سال کی تاریخ میں دکھا سکتے ہیں کہ "بندش" بھی کوئی چیز ہے؟

میں نے ان سے عرض کی:

صدیوں پہلے کے علمائے کرام "بندش" کو جادو ہی کی ایک قسم سمجھتے تھے جسے بہ ایں الفاظ بیان کرتے رہے:

"اَلتَّخَیُّلات وَالاَخذ بالعُیُون" (یعنی جادو کی ایک قسم) خیالات اور آنکھوں کی بندش۔

یہ الفاظ:

1: امام فخرالدین رازي متوفی:606ھ نے تفسیر کبیر میں
2: امام ابن کثیر دمشقی متوفیٰ 774ھ نے تفسیر القرآن العظیم میں
3: علامہ ابوحفص عمر بن عادل حنبلی متوفیٰ 775ھ نے اللباب فی علوم الکتاب میں
4: امام بدرالدین عینی حنفی متوفیٰ 855ھ نے عمدۃ القاری میں اور
5: امام ابن حجر ہیتمی متوفیٰ 974ھ نے الزواجر عن اقتراف الکبائر میں۔

## بندش

آج میرے پاس ایک شخص دم کروانے آیا، اُس نے حضرت علامہ مفتی اکمل صاحب کی یہ ویڈیو دکھائی جس میں موصوف نے بغیر دلیل شرعی، بندش کا مطلقاً انکار کیا ہے۔

چوں کہ میں شعبہ جادو، جنات وبندش کی کاٹ سے منسلک ہوں اور الحمدللہ اِن کے شرعی مسائل سے بھی آگاہ ہوں؛ یہ کہاں اور کس حد تک موثر ہیں یہ بھی جانتا ہوں۔

بے شک توہم پرستی بُری چیز ہے لیکن توہم پرستی کی آڑ میں حقیقت کو جھٹلانا بھی اچھا نہیں۔

قبلہ مفتی صاحب کی نیک نیتی پر شک نہیں، لیکن آپ کی بات شرعی واصولی اعتبار سے کمزور ہے؛ آپ کو اس مسئلے میں قران وحدیث، آثار صحابہ اور اقوال ائمہ کا مزید مطالعہ کرنا چاہیے۔

## جادو

جس طرح مختلف بیماریاں:

بخار، نزلہ، زکام وغیرہ جسم انسانی پر اثر کرتی ہیں، اِسی طرح جادو بھی اثرانداز ہوتا ہے؛ جو کبھی بندش کی صورت میں ہوتا ہے تو کبھی بیماری و پریشانی کی صورت میں۔

جیسے دیگر بیماریوں کا علاج موجود ہے اسی طرح جادو کا علاج بھی نہ صرف موجود ہے بلکہ اللہ کی رحمت سے موثر ہے۔

متاثرین جادو کی شرعی رہنمائی کے بجائے آج کل بعض لوگ جادو کے انکار کو باعثِ فوز وفلاح سمجھ رہے ہیں۔

سمجھ دار وہ نہیں جو بخار کے وجود کا انکار کردے، سمجھ دار وہ ہے جو بخار کو تسلیم کرتے ہوئے اُس کا علاج تلاش کرے!!

جادو کے متعلق امام ومحدث، فقیہ ومفسر، محی السنہ حسین بن مسعود بغوی، شافعی (متوفی:516ھ)، ایک قول نقل فرماتے ہیں:

جادو ثابت شدہ حقیقت ہے؛ عرب، فارس، ہند اور بعض روم کی اکثر قوموں کا جادو کے اثبات پر اتفاق ہے۔

اور یہی قومیں زمین پر بسنے والے لوگوں میں افضل ہیں اور علم وحکمت بھی ان میں زیادہ ہے.....

جادو کے متعلق رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث ہیں جن کا انکار وہی شخص کر سکتا ہے جو آنکھوں دیکھی چیزوں اور بدیہی باتوں کو نہ مانتا ہو

(شرح السنۃ، ج12، ص187، 188، المکتب الاسلامی بیروت، 1403ھ)

## جادوئی تعویذات

گھر، دکان، قبرستان یا کپڑوں وغیرہ سے کوئی پُتلہ، تعویذ، ہڈی، چمڑا یا اس قسم کی چیز ملے جس پر آپ کا یا آپ کے کسی جاننے والے کا نام لکھا ہو، تو اسے کسی باشرع صاحبِ علم کے پاس لے جائیں، اور وہ جس طرح کہیں عمل کریں۔

اگر فی الفور ایسا ممکن نہ ہو تو سات بار اعوذ باللہ من الشیطن الرجیم پڑھ کر، بہتے ہوئے پاک پانی میں ڈال دیں۔

بعض لوگ تعویذات کو گندگی میں پھینک دیتے ہیں، بعض مقدس اوراق میں رکھ دیتے ہیں، بعض گھر میں سنبھال دیتے ہیں؛ یہ سب طریقے غلط ہیں۔

یہ ذہن میں رکھیں کہ:

1: جادو کے تعویذات عموماً ناپاک چیزوں (خون، پیشاب، گوبر وغیرہ) سے لکھے جاتے ہیں۔

اب اگر آپ کو ملنے والا تعویذ ایسی ہی کسی گندی چیز سے لکھا گیا ہو تو اسے مقدس اوراق میں رکھنا انتہائی بے ادبی ہوگی۔

2: بعض جادوئی تعویذ ناپاک چیزوں سے تو نہیں لکھے جاتے، لیکن ان میں کچھ مقدس ناموں اور قرآنی آیات کو غلط معنوں میں لکھا جاتا ہے۔

اب اگر ایسا ہوا اور آپ نے تعویذ کُوڑے کرکٹ میں پھینک دیا، یا گندے پانی میں بہا دیا تو یہ بھی سخت بے ادبی ہوگی۔

اس لیے تعویذات کو ہمیشہ بہتے ہوئے پاک پانی کی نذر کر دینا چاہیے۔

اس کا ایک فائدہ یہ بھی ہوتا ہے کہ جب تعویذ پانی میں بہتا ہے تو اس کا اثر زائل ہونا شروع ہو جاتا ہے، بلکہ بعض اوقات تو مکمل طور پر اثر ختم ہو جاتا ہے۔

## مصری پُتلے

مصر کے کسی قبرستان سے کچھ جادوئی تعویذات اور پُتلے برآمد ہوئے ہیں جو سوشل میڈیا پر زور شور سے دکھائے جا رہے ہیں۔

میرا مشورہ ہے کہ عوام میں ایسی چیزیں بالکل نہیں پھیلانی چاہییں، انھیں اس کا فائدہ نہیں، الٹا نقصان ہوگا۔

کئی سال پہلے کی بات ہے:

میں فجر کے بعد طلبہ کو پڑھانے بیٹھا تو ایک جاننے والے آئے اور مجھے علاحدہ لے جا کر ایک لفافہ تھماتے ہوئے کہنے لگے:

ہم سوئے ہوئے تھے کہ ہمارا کُتا زور زور سے بھونکنے لگا، جب ہم نے قریب جاکر دیکھا تو اس کے پاس سے یہ شاپر ملا جسے وہ اُلٹ پلٹ رہا تھا۔

آپ دیکھیے، اس شاپر میں کیا ہے!

میں نے جب وہ لفافہ کھولا تو اس سے انتہائی گندی بدبو آئی۔

اس میں ایک کپڑے پر ان کی ہمشیرہ کا نام لکھا تھا اور طلاق طلاق لکھا تھا، اس کے علاوہ کچھ ناقابلِ بیان چیزیں بھی تھیں۔

جادو چوں کہ موثر ہو چکا تھا اس لیے کچھ دیر بعد ان کا کتا مر گیا اور ہمشیرہ کو بھی طلاق ہو گئی۔

پھر جنھوں نے وہ جادوئی چیزیں دیکھی تھیں وہ بھی ایک عرصے تک عجیب کیفیت میں مبتلا رہے، اور پڑھائی کر کے انھیں اس کیفیت سے نکالا گیا۔

اللہ پاک ہم سب کو عافیت عطا فرمائے!!

جادو ایک قسم کا علم ہے، جس طرح دیگر علوم میں اللہ تعالیٰ نے تاثیر رکھی ہے اسی طرح جادو میں بھی ہے۔

جادو کی مختلف قسمیں ہیں جو انسان کو بیماری کی طری اپنی لپیٹ میں لے لیتی ہیں۔

جادو لاعلاج مرض نہیں، بلکہ اللہ کریم نے ہر بیماری کی طرح اس کا بھی علاج پیدا کیا ہے، اور اس کا علم اپنے بندوں کو عطا فرمایا ہے۔

اس سلسلے میں کچھ گزارشات ہیں:

1: جو بندہ خود پر جادو محسوس کرے، اسے چاہیے کہ فوراً کسی باشرع صاحبِ علم سے رجوع کرے، جو پنج گانہ باجماعت نماز کا پابند ہو۔

(فاسق فاجر یا بے نمازی سے ہرگز رجوع نہ کرے)

2: جادوئی پُتلے، تعویذات، ہڈیاں یا سوئیاں وغیرہ گھر سے ملیں تو ان کی تصویریں بنانے اور انھیں کھول کر دیکھنے کے بجائے، کسی صاحبِ علم سے رجوع کریں

3: جادو برآمد یا محسوس ہونے کے فوراً بعد، کرنے والا کام یہ ہوتا ہے کہ:

70 بار اعوذ باللہ من الشیطن الرجیم پڑھ لی جائے۔

4: بالفرض آپ پر دنیا کا سب سے سخت ترین جادو بھی ہو جائے تو وہم اور وسوسوں میں بالکل مبتلا نہ ہوں، بلکہ اپنے رب سے دعا کریں؛ اللہ چاہے تو اسی وقت جادو کا اثر باطل ہو سکتا ہے۔

## جادو کے ذریعے اولاد کی بندش

جب مسلمان ہجرت کر کے مدینہ پاک آئے تو انھیں کہا گیا:

ان الیھود قد سحرتکم فلا یولد لکم۔

تم پر یہودیوں نے جادو کر دیا ہے، تمھارے ہاں بچے نہیں ہوں گے۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔

پروردگار عالم نے سیدنا زبیر کو حضرت عبداللہ عطا فرمائے۔

ان کی پیدائش پر مسلمان بہت خوش ہوئے۔

(انظر: صحیح البخاری، رقم 5469)

جادو کے ذریعے اولاد کی بندش، کاروبار کی بندش اور شادی وغیرہ کی بندش کے لیے عملیات کیے جاتے ہیں، اور یہ آج کی بات نہیں، زمانہ قدیم سے چلتا آرہا ہے۔ لیکن یہ یاد رہنا چاہیے کہ جادوئی عملیات اللہ کے حکم کے بغیر بالکل اثر نہیں کر سکتے۔۔

وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ۔

اس لیے جادوگروں سے ڈرنے کے بجائے، اپنے رب سے دعا کرتے رہا کریں، پروردگار آپ کو ہر قسم کی بندشوں سے محفوظ رکھے گا۔

## دم

رحمتِ عالم ﷺ کے حضور عرض کی گئی:

یارسول اللہ! یہ جو دم (کے کلمات ہوتے) ہیں، جن کے ساتھ ہم دم کرتے ہیں، اور دوائیں، جن کے ذریعے علاج کرتے ہیں، اور حفاظتی چیزیں، جن کے ذریعے ہم اپنا بچاؤ کرتے ہیں؛ کیا یہ تقدیرِ الٰہی کو ٹال سکتے ہیں؟

نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

یہ تو خود اللہ کی تقدیر سے ہیں۔

(اللہ پاک چاہتا ہے کہ میرا بندہ جب بیمار ہو تو وہ دم کروائے، دوائی لے، حفاظتی اقدامات کرے اور میں اسے شفا سے نوازوں۔)

(سنن الترمذی، ر 2065، قال الترمذی: ھذا حدیث حسن صحیح)

اس حدیث پاک پر غور کریں! رسول اللہ ﷺ سے بیماری کے تین طریقۂ علاج پوچھے گئے:

[1] دم

[2] دوائی

[3] پرہیز

سرکار نے تینوں طریقوں کو برقرار رکھا اور اللہ کی تقدیر قرار دیا۔
جب ہم بیمار ہو جائیں تو اللہ پاک سے شفا کی امید رکھتے ہوئے، ہمیں ان تینوں طریقوں سے علاج کرنا چاہیے۔
مجھے کچھ سال پہلے ایک مرض لاحق ہوا تھا، میں نے اس کا دوائی کے ذریعے علاج کیا، پرہیز بھی بہت کیا، لیکن افاقہ نہ ہوا۔
ایک دن مسجد میں بیٹھے اچانک خیال آیا کہ کیوں نہ خود کو دم کروں۔
الحمدللہ، میں نے صدق دل سے اپنے آپ کو دم کیا تو اللہ کے حکم سے میرا مرض جاتا رہا۔
کرونا وائرس کے مبتلاؤں کو دوائی لینی چاہیے، پرہیز بھی کرنا چاہیے اور ساتھ ساتھ اپنے اوپر دم بھی کرنا یا کروانا چاہیے۔
اگر ہو سکے تو دم کے یہ الفاظ پڑھیں جو دم بھی ہیں، دعا بھی ہیں، اور رسول پاک ﷺ کی زبان مبارک سے ادا بھی ہوئے ہیں:

اَللّٰھُمَّ رَبَّ النَّاسِ، اَذْھِبِ البَأْسَ، وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِي لاَ شِفَآءَ إِلاَّ شِفَآؤُكَ، شِفَآءً لَا يُغَادِرُ سَقماً۔

ان کے علاوہ سات دفعہ سورت فاتحہ پڑھ کر اپنے اوپر دم کر لیں۔
اللہ پاک کی رحمت سے کوئی بعید نہیں کہ اس کی برکت سے شفائے کاملہ عطا فرما دے۔

## بہو کرواتی ہے

تقریباً چار سال پہلے، میرے پاس ایک بزرگ خاتون آتی تھیں، جنھیں شک تھا کہ اُن پر عملیات ہیں اور وہ، بہو کرواتی ہے۔
میں نے انھیں سمجھایا کہ اِس طرح بدگمانی نہیں کرتے، آپ کے پاس اِس کا کوئی شرعی ثبوت نہیں کہ آپ کی بہو ہی آپ پر عملیات کرواتی ہے۔
وہ کہنے لگیں:
میرے پاس ثبوت ہے، میں آپ کو لا کر دکھاؤں گی۔ ایک کتاب ہے جس سے وہ منتر پڑھتی ہے۔
پھر وہ بڑی بی کچھ دنوں بعد یہ کتاب لے آئی اور کہنے لگی:
بڑے طریقے سے اس کے کمرے سے نکال کر لائی ہوں، اس سے ہی وہ پڑھ پڑھ کے خاوند پہ پھونکیں مارتی ہے۔ (جون ایلیا کی کتاب)

## جادو کی بے شمار قسمیں

جس طرح جادو کی بے شمار قسمیں، لاتعداد طریقے اور مختلف ذریعے ہیں۔

اسی طرح جادو کے توڑ کے لیے بھی اَن گنت عملیات ہیں جن کے الگ الگ اثرات ہیں۔
پندرہ شعبان کو بیری کے پتوں سے نہانے والا عمل ایک خاص قسم کے جادو سے حفاظت کے لیے ہے، ہر قسم کے جادو کا توڑ نہیں۔

علما کا بیان کردہ بیری کے پتوں والا عمل ہو، یا محدثین کا بتایا ہوا کوئلوں پر پیشاب کرنے والا عمل؛ یہ علاج ہیں ۔۔۔۔۔۔اور حسبِ مرض علاج تجویز کرنے کا اختیار طبیب کو ہوتا ہے۔
اگر آپ جادو وغیرہ کے معاملات میں مبتلا نہیں، تو پتوں والے پانی سے نہ بھی نہائیں، کوئی ہرج نہیں۔۔۔۔۔۔!

## جنات انسان سے ڈرتے ہیں

اپنے بچوں کو جِنوں بھوتوں سے نہ ڈرایا کریں، نہ خود ڈرا کریں۔ جنوں پر انسان کا ایسا رعب طاری کیا گیا ہے کہ وہ خود انسان سے ڈرتے ہیں۔
یہ بات ایک تو میں اپنے ذاتی تجربے کی بنیاد پر کر رہا ہوں، کیوں کہ:
کئی سالوں سے میرا جنات سے ربط ہے اور اللہ کی رحمت سے اب تک ہزاروں ایسے مریضوں کا علاج کر چکا ہوں جن کے ساتھ جادو، جنات وغیرہ کے مسائل تھے۔

اور دوسرا یہ کہ: سیدنا عبداللہ بن عباس، عبداللہ بن عمر اور سیدہ عائشہ پاک رضی اللہ عن جمیعھم کے شاگردِ رشید ۔۔۔۔۔۔جنھیں شوق بَرہوت کنواں دیکھنے ملکِ یمن لے گیا تھا، اور جو ہاروت وماروت کو بھی بابل میں دیکھ کر آئے تھے ؛ مفسر قرآن، محدث امت، حضرت مجاہد بن جَبر تابعی رحمہ اللہ م ۱۰۳ھ کہتے ہیں: جتنا تم لوگ جن سے ڈرتے ہو، وہ اس سے زیادہ تم سے ڈرتا ہے؛ اگر تمھارا کسی جن سے سامنا ہو جائے تو گھبرایا نہ کرو۔۔۔۔۔۔۔ گھبراؤ گے تو وہ تم پر سوار ہو جائے گا، لیکن اگر تم اس پر سختی کرو گے (یعنی پوری جرات سے ذہنی طور پر اس کے مقابلے کے لیے تیار ہو جاؤ گے) تو وہ بھاگ کھڑا ہو گا۔

(آکام المرجان فی غرائب الاخبار واحکام الجان، ت المحدث ابی عبداللہ بدرالدین الشبلی الحنفی م ۷۶۹، الباب الثالث والاربعون فی بیان خوف الجن من الانس، ص 107، ط مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت)

[1] اگر کبھی آپ کا کسی جن سے پالا پڑ جائے تو دل مضبوط کر کے آیت الکرسی شریف پڑھیں انشاءاللہ دور ہو جائے گا۔
[2] اگر کسی انسان کو جن نے مَس کیا ہوا ہو تو اسے کسی ماہر اور دین دار عامل کے پاس لے کر جانا چاہیے، از خود حاضریاں اور گفتگو شروع نہیں کر دینی چاہیے، اس سے نقصان ہوتا ہے۔
[3] بندۂ مسلم کا اللہ کے حضور بڑا مرتبہ ہے، یہ اپنے دین پر مضبوط ہو جائے تو جنات کیا، " تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ " فرشتے اس پر نازل ہوتے ہیں۔ رب تعالیٰ جَلَّ جَلَالُہٗ ہمیں اپنی اطاعت و محبت اور خوف و خشیت عطا فرمائے اور دنیا کا ہر

خوف ہم سے دور کردے!

## ایک جِن سے کی ملاقات

سیدنا انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شاگرد اور عظیم محدث، حضرت امام اَعمش رحمہ اللہ سے صحیح سند کے ساتھ مروی ہے کہ:

آپ رحمہ اللہ کی ملاقات ایک جِن سے ہوئی تو آپ نے اس سے کہا:

کیا کھانا پسند کرو گے؟

کہنے لگا: چاول.

آپ نے چاول لاکر اس کے سامنے رکھے تو دیکھا کہ لقمے اٹھانے والا بھی کوئی نہیں پھر بھی خود بخود لقمے اس کے منھ میں جارہے ہیں۔

آپ نے اس سے پوچھا:

جس طرح ہم میں اہلِ ہوا (یعنی مختلف فرقے) ہیں، کیا تم میں بھی ہیں؟

کہنے لگا: ہاں۔

آپ نے پوچھا: تمھارے ہاں جو رافضی (جن) ہیں، وہ کیسے ہیں؟

کہنے لگا: بدترین قسم کے ہیں۔

(انظر: آکام المرجان فی غرائب الاخبار واحکام الجان، ت المحدث ابی عبداللہ بدرالدین الشبلی الحنفی م ۷۶۹، باب فی بیان مناکحۃ الجن، ص 82، ر182، ط مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت)

اصحابِ رسول کا دشمن (رافضی) چاہے انسان ہو یا جن، پرلے درجے کا شیطان ہوتا ہے۔

سیدنا علی کریم رضی اللہ عنہ کے طفیل مالک کائنات جَلَّ جَلَالُہٗ ہر مسلمان کو اِس قوم کے شر سے بچائے۔

## عملیات و وظائف کی دنیا

عملیات و وظائف کی دنیا بڑی وسیع اور موثر ہے۔

بعض عملیات دشمن کے شر سے محفوظ رکھتے ہیں، بعض دشمن کا رُخ پھیرنے کا کام کرتے ہیں، بعض دشمن کی ذلت و رسوائی کا سبب بنتے ہیں۔

(اور اِن میں یہ ساری تاثیر مالک کائنات ہی کی پیدا کردہ ہے)

بعض مخلص احباب نے مجھے مشورہ دیا کہ آپ فلسطین پر مظالم ڈھانے والے یہودیوں کے خلاف کچھ عملیات کیوں نہیں

کرتے، وہ بھی تو زمانہ قدیم سے جادو ٹونے میں مشہور ہیں، اور جنگوں کے دوران بھی ان سے مدد لیتے رہے ہیں۔
تو میں نے اُن کے مشورے پر غور کرنے کے بعد، عملیات کی نیت کرلی؛ جسے پایہ تکمیل تک پہنچانے کے لیے آج پہاڑی دروں اور چشموں کی جانب روانہ ہوچکا ہوں، دعا فرمائیں اللہ پاک مدد کرے۔
(آپ کو بتانے کا مقصد صرف آپ سے دعا لینا ہے، کیوں کہ ایسے عمل شروع کرنے سے پہلے دعا کی حاجت ہوتی ہے اور دعا انھیں عافیت سے پایہ تکمیل تک پہنچاتی ہے)
کافروں کا اصل حل جہاد بالسیف ہے، جو جس طرح اسلامی افواج کرسکتی ہیں، ہم اکیلے نہیں کرسکتے؛ اور یہ ہمارے لیے بہت بڑی حسرت ہے
ہم انفرادی طور پر جہاں تک ہوسکے، جیسے ہوسکے، جتنی ہوسکے۔۔۔۔۔۔۔۔ کافروں کے خلاف مسلمانوں کی مدد کرسکتے ہیں۔
اس لیے دعا کرکے، حزب البحر و دلائل الخیرات شریف وغیرہ کا ورد کرکے، اسرائیلی مصنوعات کا بائیکاٹ کرکے، سوشل و پرنٹ میڈیا پر آواز اٹھا کے فلسطینی مسلمانوں کی مدد کریں اور ساتھ ساتھ دعا بھی کریں کہ:
اے مالک! ہمیں اور ہماری افواج کو جہاد بالسیف کے ذریعے مقبوضہ فلسطین کو آزاد کروانے کی توفیق عطا فرما، ایمان کی زندگی اور شہادت کی موت نصیب فرما!

## عاملین کے لیے

اگر کسی قاطع السحر (جادو کا توڑ کرنے والے) کو ایسی جگہ میسر آجائے جہاں جھیل اور چشموں کا پانی جمع ہوتا ہو، جس میں مستعمل پانی کی کوئی آمیزش نہ ہو، اور وہ عام گزر گاہ سے ہٹ کر بھی ہو؛ نیز اس کی سطح زمین ریتلی اور پتھریلی ہو، اس کے اردگرد پہاڑی یا بیابانی سلسلہ ہو، اور وہاں شرائط سبعہ "مف صط توح" بھی پائی جائیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تو اس کے لیے کسی نعمت غیر مترقبہ سے کم نہیں!
(پاکستان میں یہ جگہ دریائے کنہار کے ایک مقام پر ہے)
آج کل حکیموں کی طرح عاملین بھی تن آسانی اور سہل پسندی کا شکار ہوگئے ہیں، الا ماشاء اللہ۔
انھوں نے پہاڑوں، صحراؤں، غاروں، اور قدیم کنوؤں کو خیرباد کہ دیا ہے۔
جب کہ یہ ایسے شعبے سے منسلک ہیں جو انتھک محنت، اور جہد مسلسل کا تقاضا کرتا ہے۔
دورِ حاضر میں جب کہ جادو کے نت نئے طریقے اور نئی قسمیں دریافت ہو رہی ہیں، اس کے توڑ کے لیے بڑی محنت اور جانفشانی کی ضرورت ہے۔
ساحر دن رات ایک کرکے بھی اپنے ناپاک عزائم میں کامیاب نہیں ہوسکتا اگر اس کا مدمقابل کچھ محنت کا عادی ہو۔

لَا یُفْلِحُ السَّاحِرُ حَیْثُ اَتٰی۔ (جادوگر جہاں بھی آجائے کامیاب نہیں ہوتا)
اپنے شیوخ کی رہنمائی میں قُدما کی پیروی کرتے ہوئے چلہ کشی کو شعار بنائیے، سستی غفلت چھوڑ دیجیے، اصول و قواعد کے تابع رہ کر نئی نئی دریافتیں کیجیے تاکہ ایک زمانہ آپ سے نفع حاصل کرے اور فن جِلا پائے۔

آپ اپنا وقت صَرف کرنے کا (صاحبِ استطاعت) سے بھلے معاوضہ بھی وصول کر لیا کریں، اس میں شرعا اور اخلاقا کوئی قباحت نہیں؛ لیکن اپنے فن کو بھی وقت دیں، اس سے پیار کریں؛ اسے محض کمائی کا ذریعہ نہ بنالیں۔
جن عاملوں کی نظر ہمہ وقت لوگوں کے مال پر رہتی ہے وہ اخلاق و مروت سے ہی نہیں، علم و فن سے بھی بیگانے ہو جاتے ہیں۔

ایک بزرگ رحمہ اللہ کو ان کے شیخ نے قرآنی آیت کا وظیفہ دیا کہ یہ دریا میں کھڑے ہو کر کرنا ہے۔
وہ جب وظیفہ شروع کرنے لگے تو آیت بھول گئے۔۔۔۔۔ اب انھوں نے کیا کیا کہ دریا میں کھڑے ہو کر سارا قرآن ہی پڑھ دیا، اور ایک بار نہیں جتنی تعداد میں شیخ نے آیت کا وظیفہ بتایا تھا اتنی تعداد میں پڑھا کہ شیخ کے بتائے ہوئے وظیفے کی تعداد پوری ہو جائے۔

## جادو

مشہور ولی اللہ حضرت خواجہ نظام الدین اولیا رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ پر جادو کر دیا گیا، جس سے آپ سخت بیمار ہو گئے۔
آپ کے مریدین (جادو کا توڑ کرنے والے) ایک ماہر شخص کو آپ کی خدمت میں لائے، جس نے خانقاہ کی زمین سونگھ کر ایک جگہ کھودنے کے لیے کہا۔

جب وہاں سے زمین کھودی گئی تو علامات سحر ظاہر ہو گئیں اور جادو برآمد ہو گیا۔
وہ ماہر کہنے لگا: مجھے اس کام میں کمال حاصل ہے، میں جادو کرنے اور کروانے والوں کے نام بھی بتا سکتا ہوں۔
جب حضرت نے یہ سنا تو فوراً فرمایا:
خبردار! ہرگز ایسا نہ کرنا، میں نے تو ان لوگوں کو جنھوں نے جادو کیا، یا کرایا تھا معاف کر دیا ہے۔
(دیکھیے: انوار الفرید المعروف تاریخ فریدی، ص 242، زاویہ پبلشرز لاہور)

اللہ والوں کے اخلاق بہت بلند ہوتے ہیں، وہ دشمن کی بھی کُنہ میں نہیں رہتے، معاف کرنا ہی پسند کرتے ہیں۔
اور ایک ہم ہیں کہ دوستوں کو بھی معاف نہیں کرتے۔۔۔۔۔۔۔ ان سے غلطی ہو نہ ہو، لٹھ لے کر پیچھے پڑے رہتے ہیں
۔
اللہ کریم ہمیں شعور دے، وسعت ظرفی عطا کرے، عفو و درگزر والی خو اپنانے کی توفیق بخشے!

## جادو کا اثر

شیخ المشائخ حضرت بابا فرید الدین گنج شکر رحمۃ اللہ تعالی علیہ ایک دفعہ بہت سخت بیمار ہوگئے، آپ کی بھوک پیاس جاتی رہی، چند دن تک نہ کچھ کھا سکے، نہ پی سکے۔

طبیب بلائے گئے جنھوں نے ہر قسم کے معائنے کے بعد کہا کہ ہمیں نہیں معلوم یہ کیا مرض ہے۔

جب مرض بڑھا تو آپ رحمہ اللہ نے اپنے صاحبزادے بدرالدین اور دیگر خاص مریدوں کو بلا کر فرمایا:

اللہ کے حضور میری صحت کی دعا کرو!

سب (اولیا) دعا میں مشغول ہوگئے، تو حضرت بدرالدین رحمہ اللہ نے اسی رات خواب میں دیکھا کہ ایک شخص کہہ رہا ہے:

حضرت پر شہاب جادوگر کے بیٹے نے جادو کیا ہوا ہے، اور اپنے باپ کی قبر میں دبایا ہے، تم وہاں جاکر یہ کلمات پڑھو، جادو ظاہر ہوجائے گا:

ایھا المقبور المبتلی ---------الخ

حضرت محبوب الٰہی خواجہ نظام الدین اولیا رحمہ اللہ حسبِ ارشاد شہاب کی قبر پر گئے، اور جب مقررہ تعداد میں کلمات پڑھ کر قبر سے کچھ مٹی ہٹائی تو آٹے کا ایک پتلا برآمد ہوا جس میں سوئیاں لگی ہوئی تھیں، اور گھوڑے کی دُم کے بالوں سے بندھا ہوا تھا۔

آپ اسے لے کر (اپنے) شیخ کے پاس آئے تو حضرت نے فرمایا:

بالوں کی گرہیں کھول دو، اور سوئیاں نکال دو۔

اب جیسے جیسے گرہیں کھلتی گئیں شیخ رحمہ اللہ کی طبیعت بہتر ہونی شروع ہوگئی، حتیٰ کہ اللہ کریم نے کامل شفا دے دی۔

جب یہ معاملہ اجودھن (پاکپتن شریف) کے حاکم کو معلوم ہوا تو اس نے ابنِ شہاب ساحر کو گرفتار کرکے حضرت کی پاس بھیج دیا، اور کہا:

یہ واجب القتل ہے، آپ اس کے قتل کا حکم صادر فرمائیں تاکہ اس پر عمل کیا جائے۔

آپ رحمہ اللہ نے فرمایا:

خدا تعالی نے مجھے صحت عطا فرمادی ہے، میں نے اِس شکرانے میں عفو و کرم سے کام لیتے ہوئے اِس کی خطا معاف کردی ہے، تو بھی اس سے پوچھ گچھ نہ کر۔

(ملخصًا: سیر العارفین، ت حضرت حامد بن فضل اللہ جمالی رحمہ اللہ، ص39، 40، ط در مطبع رضوی دہلی۔۔۔)

جس طرح اللہ کریم نے زہر وغیرہ میں تاثیر رکھی ہے، اسی طرح جادو میں بھی ہے؛ یہ اللہ کے حکم سے موثر ہوتا ہے ۔۔۔۔۔۔ مسلمانوں کے لیے آزمائش ہے، اور کافروں پر عذاب۔

بعض دفعہ اس کے اثرات کی لپیٹ میں علما و صالحین بھی آجاتے ہیں، اور جب تک اللہ چاہتا ہے ان پر یہ آزمائش

رہتی ہے، پھر انھیں نجات دے دی جاتی ہے۔

جادو کے معاملے میں نہ تو وہمی ہونا چاہیے کہ بات بات کو جادو سمجھ لے۔۔۔۔۔۔۔ اور نہ ہی متکبر و غافل ہونا چاہیے کہ اس کے وجود کا ہی انکار کردے یا اسے ہلکا سمجھ بیٹھے۔

اللہ و رسول کے فضل سے میں اب تک ہزاروں مسحورین (جادو میں مبتلا لوگوں) کا علاج کر چکا ہوں، میں نے اس میں ایسے ایسے سرکشوں اور غافلوں کو بھی مبتلا ہوتے دیکھا ہے جو مسحورین کا مذاق اڑایا کرتے تھے، یا اسے ہلکا سمجھتے تھے، لیکن جب ان کی جان پر بنی تو انھیں پھر کچھ نہیں سوجھتا تھا۔

اور۔۔۔۔۔۔۔

وہم میں مبتلا لوگوں کو بھی دیکھا ہے جو کئی کئی سالوں سے مختلف جگہوں پر دھکے کھا رہے ہیں جب کہ انھیں جادو نام کی کوئی چیز نہیں۔

اگر آپ محسوس کریں کہ آپ پر جادو کے اثرات ہیں تو سب سے پہلے اللہ سے مدد مانگیں، رو رو کے دعا کریں کہ اللہ کریم آپ کو راستہ دکھائے۔۔۔۔۔۔ پھر کسی ایسے شخص کی طرف رجوع کریں جو اس فن میں مہارت بھی رکھتا ہو اور اس کا ظاہر حال شریعت مطہرہ کے مطابق ہو۔

اور مکمل اعتماد کے ساتھ اس کے بتائے ہوئے طریقے کے مطابق علاج کریں، اللہ کے حکم سے جلد شفایاب ہو جائیں گے۔

ایک بات ہمیشہ کے لیے ذہن نشین کرلیں کہ جادو گر میں اتنی طاقت نہیں ہوتی کہ وہ ہر بندے پر جادو کر سکے ۔۔۔۔۔۔۔۔ لوگ جادوگروں کو لاکھوں، ہزاروں روپے دے دیتے ہیں، اور وہ ایڑی چوٹی کا زور لگاتے ہیں لیکن کامیاب نہیں ہوتے۔

وجہ یہ ہے کہ حکم الٰہی کے بغیر جادوگر کا جادو کسی پر نہیں چل سکتا:

وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اگر امرِ ربی ہو تو پھر اس کا موثر ہونا کوئی بعید نہیں۔

اسے دو مثالوں سے سمجھیے:

1: جب مسلمان ہجرت کر کے مدینہ پاک آئے تھے تو یہودیوں نے ان پر جادو کر دیا تھا کہ ان کے ہاں اولاد نہ ہو، اور انھیں بتایا بھی گیا کہ:

ان الیھود قد سحرتکم فلا یولد لکم۔

تم پر یہودیوں نے جادو کر دیا ہے، تمھارے ہاں بچے نہیں ہوں گے۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اللہ کا حکم نہیں تھا، وہ موثر نہ ہوا؛ اور پروردگار عالم جَلَّ جَلَالُہٗ نے سیدنا زبیر کو حضرت عبداللہ عطا فرما دیے، جس پر مسلمان بہت خوش ہوئے۔

(انظر: صحیح البخاری، رقم 5469)

2: سیدنا عبداللہ بن عمر پاک پر خیبر کے یہودیوں نے جادو کیا، تو وہ حکمِ ربی سے موثر ہو گیا، اور آپ کے ہاتھ کی ہڈی کا جوڑ ہل گیا۔ آپ خود فرماتے تھے:

فسحرونی فتکوعت یدی۔

(دیکھیے: مسند امام احمد بن حنبل، ر 4854)

# (15) پندرہواں باب: حقانیت اسلام

اس باب میں اسلام کی حقانیت سے متعلق تحریریں ہیں۔

## دہشت گرد کون؟

پیر سید غلام نظام الدین جامی گولڑوی فرمارہے تھے:

"اس وقت اہل اسلام کے لیے یہ بہت بڑا لمحہ فکریہ ہے کہ اقوام عالم کے کٹہرے میں کھڑے ہونے والے ایک مسلمان کو کس طریقے سے اس الزام سے بری الذمہ کیا جائے کہ مسلمان دہشت گرد نہیں"

سادات گھرانے کے اس چاند کو چاہیے تھا جیل کی تاریک راتیں منور کرتا، اپنے جد اعلیٰ کے وارثوں تک روشنی پہنچاتا، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔پُورا دُکھ۔۔۔۔۔۔۔۔اور آدھا چاند

ہِجر کی شب۔۔۔۔۔۔اور ایسا چاند! کس "مقتل" سے گزرا ہوگا۔۔۔۔۔۔۔

اتنا "سہما سہما" چاند!

"دہشت گرد اقوامِ عالم" کو یہ باور کرانے کی کوئی ضرورت نہیں کہ مسلمان دہشت گرد نہیں!

مسلمانوں پر ہر طرح کے ظلم وستم ڈھاکر الٹا انھیں دہشت گرد مشہور کرنے والی سفاک قومیں یہ کب تسلیم کریں گی کہ مسلمان دہشت گرد نہیں!! اب یہ رونا چھوڑ دو، اس کا کوئی فائدہ نہیں.....!

اب لوگوں کو سمجھاؤ کہ سید عالم ﷺ کے خاکے بنانے والے دہشت گرد ہیں، لاکھوں بے گناہ مسلمانوں کو بھیڑ بکریوں کی طرح ذبح کر دینے والے دہشت گرد ہیں، مسلمانوں کی نسل کشی کرنے والے دہشت گرد ہیں، ڈرون دھماکے کرنے والے دہشت گرد ہیں۔

## قربانیاں رنگ لائیں گی

امام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانے کا بادشاہ قرآنِ پاک کو مخلوق کہتا تھا، لیکن آپ فرماتے:

"قرآن پاک اللہ کا کلام ہے، مخلوق نہیں۔"

حکومتی اذیتوں کے ڈر سے کئی علما نے بھی آپ کا ساتھ چھوڑ کر بادشاہی مسلک قبول کرلیا، لیکن آپ رحمہ اللہ نے کوڑے کھالیے، بیڑیاں پہن لیں، دو تین سال بامشقت قید برداشت کرلی، مگر اپنے موقف پر ثابت قدم رہے۔

آپ رحمہ اللہ کو پہنائی جانے والی بیڑیاں اتنی وزنی تھیں کہ انھیں پہن کر نہ آسانی سے چل سکتے، نہ کھڑے ہوسکتے، نہ بیٹھ سکتے تھے۔ اگر وہ نماز کے وقت نہ اتاری جاتیں تو انھی میں ہی باجماعت نماز ادا فرماتے۔

آپ کو کوڑے اس شدت سے لگائے جاتے کہ بہ قول محمد بن اسماعیل:

اگر ایسا ایک کوڑا ہاتھی کو بھی لگایا جاتا تو وہ چنگھاڑتا ہوا بھاگ کھڑا ہوتا۔

کوڑے لگانے والے جلاد تھک جاتے، آپ کوڑے کھا کھا کر بے ہوش ہوجاتے، لیکن ہوش آنے کے بعد حق بات کا ہی اعلان فرماتے۔

ایک دفعہ جیل میں کچھ خیر خواہ سمجھانے آئے اور اپنے بچاؤ کی حدیثیں سنانے لگے۔ آپ رحمہ اللہ نے فرمایا اس حدیث کا کیا جواب دو گے جس میں فرمایا گیا ہے کہ:

"پہلے زمانے کے بعض لوگوں کے سروں پر آرے چلا دیے گئے لیکن وہ اپنے دین سے نہیں پھرے!"

آپ کی بات سن کر وہ خاموش ہو گئے۔

اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ کی کروڑوں رحمتیں اس امام برحق پر، بے شک وہ بعد والوں کو ثابت قدمی کا عظیم درس دے گئے۔

جس طرح اس امام ہُمام کی استقامت فتنہ خلق قرآن کو ہمیشہ کے لیے دفن کر گئی، ان شاء اللہ علما و عوام اہل سنت کی قربانیاں بھی قانون ناموس رسالت کا دفاع کر جائیں گی۔

## مذہبی زندگی

چارلس ایف کیٹرنگ جو کہ جنرل موٹرز ریسرچ لیبارٹری کا محقق تھا، اپنی جیب سے اینٹوک کالج کو تیس ہزار ڈالر سالانہ ادا کرتا رہا.....کیوں؟

یہ دریافت کرنے کے لیے کہ گھاس کا رنگ سبز کیوں ہے؟ گھاس کس طرح سورج کی روشنی، پانی اور کاربن ڈائی آکسائیڈ سے اپنی خوراک حاصل کرتی ہے؟؟

لیکن.....

برسوں کی کھپت کے باوجود وہ اس کُنہ تک نہ پہنچ سکا!!

یہ مثال دینے کے بعد ڈیل کارنیگی کہتا ہے:

اگرچہ میں عبادت کے بھید کو نہیں سمجھ سکتا.....مذہب کے بھید کو نہیں پا سکتا لیکن.....

یہ چیزیں مجھے ان سے لطف اندوز ہونے سے بھی نہیں روک سکتیں!!

میں اس بات میں بہت زیادہ دل چسپی لیتا ہوں کہ اگر بجلی، غذا اور پانی مجھے جینے کے لیے بھرپور فائدہ دیتے ہیں تو مذہب مجھے اِن سے کہیں بڑھ کر فائدہ دیتا ہے.....

یہ مجھے امن و سکون فراہم کرتا ہے، میری زندگی کو جہنم سے جنت بناتا ہے.....مجھے روحانی اقدار سے نوازتا ہے۔

ولیم جیمز کہتا تھا:

"مذہب زندگی کے لیے نیا ذوق و شوق اور ولولہ دیتا ہے، ایک مطمئن، عظیم اور پُر لطف زندگی عطا کرتا ہے۔"

آج بہت سے ماہر نفسیات مذہب کا درس دے رہے ہیں، کیوں؟

اس لیے کہ شدید دنیاوی بیماریوں، جیسے: معدے کا السر، دل کے امراض، اعصابی تناؤ اور جنون وغیرہ سے بچا جا سکے۔

ڈاکٹر برل نے کہا تھا:

"جو بندہ حقیقی معنوں میں مذہبی ہو جائے وہ کبھی بھی اعصابی، ذہنی اور نفسیاتی امراض کا شکار نہیں ہوتا۔"
( how to stop worrying and start living )

## خدا کی قدرت

جب 1953ء میں تحریک ختم نبوت چلی تھی تو ہزاروں عاشقانِ رسول گرفتار اور شہید ہوئے تھے۔
اُس وقت غلام محمد گورنر جنرل (یعنی موجودہ صدر) کے عہدے پر فائز تھا، جس نے تاجدارِ ختم نبوت کے نعرے مارنے والے نہتے مسلمانوں کو شہید کروایا۔
تعجب کی بات ہے کہ غلام محمد نے یہ سب کچھ کروانے کے باوجود سعودی حکومت سے درخواست کی کہ:
مجھے مدینہ پاک میں رہائش دی جائے۔
درخواست قبول کر لی گئی اور حکومت نے اسے باب جبریل سے قریبی علاقے میں رہائش دے دی، جو پاکستان ہاؤس کے نام سے معروف ہوئی۔
پھر اس نے یہ وصیت بھی کی کہ مجھے وہیں دفنایا جائے۔
لیکن خدا کی قدرت کہ جب یہ مرا تو اس کی لاش کو امانتاً عیسائیوں کے قبرستان میں رکھا گیا، جب کچھ عرصے بعد حسبِ وصیت لاش کو قبر سے نکال کر سعودی عرب روانہ کرنے کے لیے ایک ڈاکٹر، فوج کے کیپٹن، پولیس اہلکار، دو گورکن اور غلام محمد کے قریبی رشتے دار قبرستان پہنچے، تو گورکن نے جیسے ہی قبر کھود کر تختے ہٹائے تو تابوت کے گرد ایک سانپ چکر لگاتا دکھائی دیا؛ گورکن نے لاٹھی سے اسے مارنے کی کوشش کی، مگر وہ نہ مرا۔
پولیس کے سب انسپکٹر نے پستول سے چھے گولیاں داغیں مگر سانپ کو کوئی گولی نہ لگی۔
پھر ڈاکٹر کی ہدایت پر زہریلا سپرے کر کے قبر عارضی طور پر بند کر دی گئی۔ جب دو گھنٹے بعد دوبارہ کھولی تو سانپ اسی طرح چکر لگا رہا تھا۔ آخر باہمی صلاح مشورے سے قبر کو بند کر دیا گیا اور اگلے دن اخبار میں خبر شائع ہوئی کہ:
"سابق گورنر جنرل غلام محمد کی لاش سعودی عرب نہیں لے جائی جا سکی اور وہ اب کراچی ہی میں دفن رہے گی۔"
وہ لاش آج بھی کراچی کے گورا (عیسائیوں کے) قبرستان میں دفن ہے۔
عرفان محمود برق صاحب کے مطابق:
اس قبر پر کتے آکر پیشاب کرتے ہیں اور وہاں کا عیسائی گورکن کہتا ہے کہ اس قبر سے چیخوں کی بھی آواز سنائی دیتی ہے۔
ہم اللہ پاک سے عافیت کا سوال کرتے ہیں، پروردگار جَلَّ جَلَالُہٗ ہمیں ذلت والی موت سے بچائے۔
ہر ظالم کا برا حشر نہیں دکھایا جاتا، عبرت کے لیے کسی کسی کا دکھا دیا جاتا ہے۔
اللہ پاک ہمارے حکمرانوں کو بھی اس سابقہ صدر سے عبرت حاصل کرنے کی توفیق دے!

# (16)سولہواں باب: تقریر، مقررین اور روایات

اس باب میں تقریر کے آداب اور مقررین کی اصلاح سے متعلق تحریریں ہیں۔

## بے عمل مقررین

رسول اللہ ﷺ فرماتے ہیں:

معراج کی رات میرا گزر ایسے لوگوں کے پاس سے ہوا جن کے ہونٹ آگ کی قینچیوں سے کاٹے جا رہے تھے۔

میں نے پوچھا: اے جبریل! یہ کون ہیں؟ کہنے لگے:

خُطَبَاءُ أُمَّتِكَ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْن۔

آپ کی امت کے خطیب ہیں، تقریریں کرتے تھے لیکن عمل نہیں کرتے تھے۔

(الترغیب والترھیب من الحدیث الشریف، للمنذری، کتاب العلم، باب الترھیب من ان یعلم ولا یعمل بعلمہ۔۔۔۔۔۔۔، ص37، ر208، ط دارالکتاب العربی بیروت، س2014ء)

جمعہ کا خطبہ دینے والے اور محفلوں میں تقریریں کرنے والے خُطبا ہی نہیں، فیس بک پر لوگوں کو نیکی کی دعوت دینے والے اور خود کو فراموش کر دینے والے بھی اِس حدیثِ پاک پر غور فرمائیں!

## قصاص

حضرت ابو قلابہ تابعی فرماتے تھے:

قُصّاص (کہانیاں سنانے والے جاہل مقررین وغیرہ) نے علم برباد کر کے رکھ دیا ہے، بندہ ایک سال تک قصہ گو شخص کے پاس بیٹھا رہے پھر بھی (سوائے کانوں کی لذت کے) کچھ حاصل نہیں کر سکتا۔

جب کہ کسی عالم کے پاس کچھ دیر بیٹھ جائے تو کچھ نہ کچھ لے کر ہی اُٹھتا ہے۔

(انظر: تحذیر الخواص من اکاذیب القصاص للسیوطی، الفصل العاشر فی زیادات فاتت الحافظ زین الدین العراقی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، ص186، ط المکتب الاسلامی بیروت، س1394ھ)

آج کل بہت سارے لوگوں کا رجحان علمائے کرام کے بجائے قُصّاص اور جاہل پیروں کی طرف ہو گیا ہے، اللہ کریم انھیں سمجھ عطا فرمائے!

## نذرانہ

سیدنا امیر معاویہ امام حسین پاک سے ملے تو کہا:

مرحبا یا ابن رسول اللہ واھلا، اے رسول اللہ ﷺ کے بیٹے خوش آمدید! پھر حکم دیا کہ شہزادۂ رسول کو تین لاکھ (نذرانہ) پیش کیا جائے۔

(انظر: الشریعۃ للآجری، ذکر تعظیم معاویۃ لاھل بیت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم واکرامہ ایاھم، ج5، ص2468

،ر1959،ط دارالوطن الریاض، س1420ھ)

یہ تھی اہل بیت پاک کی سچی محبت!

ایک آج کل کے نام نہاد محبین ہیں جو امام پاک کا نام لینے کے بھی پیسے لیتے ہیں؛ ایک ایک مجلس کا پانچ پانچ لاکھ اور ایک ایک محفل کا پچاس پچاس ہزار۔ رب تعالیٰ ہمیں اہل بیت پاک کی سچی محبت پر موت نصیب فرمائے!

## کلمہ نصیب نہیں ہوتا

ایک مولانا صاحب نے والدین کا مقام بیان کرتے ہوئے کہا:

اگر ماں کا نافرمان صحابی بھی ہو، تو اسے بھی مرتے وقت کلمہ نصیب نہیں ہوتا۔

اور پھر بہ طورِ دلیل حضرت علقمہ کا مشہور واقعہ بیان کیا کہ:

ماں کی نافرمانی کی وجہ سے ان کی زبان پر کلمہ طیبہ جاری نہیں ہو رہا تھا، تو رسول اللہ نے انھیں جلانے کا حکم دیا۔

ماں سے یہ دیکھا نہ گیا تو اُس نے بیٹے کو معاف کر دیا، تب جا کے زبان پر کلمہ جاری ہوا۔ (لاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم)

میں نے مولانا سے عرض کی: حضرت! آپ نے بہت غلط بات کی ہے جو نہ روایتاً درست ہے، نہ درایتاً۔

آپ نے بہ طورِ دلیل جو حدیث پیش کی ہے وہ لائقِ استدلال نہیں۔

اس حدیث کا راوی: فَائِد بن عبدالرحمٰن متروک و منکر الحدیث ہے۔

امام ابوحاتم رازی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

ولو ان رجلا حلف ان عامة حدیثه کذب، لم یحنث۔

اگر کوئی شخص قسم کھالے کہ فائِد کی بیان کردہ حدیثیں عام طور پر جھوٹی ہوتی ہیں، تو اس کی قسم نہیں ٹوٹے گی۔

اللہ معاف کرے ہمارے واعظین بغیر سوچے سمجھے پتا نہیں کیا کیا بیان کر دیتے ہیں۔

کتابوں میں لکھی ساری باتیں قابل بیان نہیں ہوتیں، بعض قابلِ رد بھی ہوتی ہیں۔

## ایک مولانا صاحب کی تقریریں

میرا دوست ہارون، ایک مولانا صاحب کی تقریریں بڑی دل چسپی سے سنتا ہے، اور بار بار سنتا ہے؛ پھر آکر مجھے سنانے لگ جاتا ہے۔

کچھ دن پہلے یوٹیوب پر انھی مولانا کی ایک تقریر دل پذیر سننے کا مجھے بھی اتفاق ہوا۔

خطابت اچھی تھی۔۔۔۔۔۔۔۔ سامعین سبحان اللہ، ماشاء اللہ اور واہ واہ بھی کیے جا رہے تھے۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مجھے ان کی تقریر سن کر ایک واقعہ یاد آگیا۔

قبلہ استاد صاحب دام ظلہ فرماتے تھے:

ہم طالب علم مدرسے میں ہر جمعرات کو محفل کیا کرتے تھے، جس میں سارے باری باری تقریریں کرتے۔

ایک دفعہ ہمارا سنگی احمد یار تقریر کر رہا تھا کہ اتفاق سے بڑے استاد صاحب (مولانا محمد نواز رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ) نے سن لی۔

صبح کلاس میں اسے فرمانے لگے: احمد یار اتقریر سوہنی کرنا اے پر چوٹھ نہ ماریا کر۔

(یعنی احمد یار تو تقریر اچھی کرتا ہے، بس تقریر میں جھوٹ نہ بولا کر، مطلب: مبالغہ آرائی سے کام نہ لیا کر!)

وہ کہنے لگا: استاد جی جے چوٹھ نہ ماریے تے نعرے نئی وجدے۔

(یعنی جھوٹ نہ بولیں تو لوگ داد نہیں دیتے۔ معاذاللہ ثم معاذاللہ!)

وہ خطیب، وہ واعظ، وہ مقرر جو اپنی تقریر میں غلط بیانی سے کام لیتا ہے، مبالغہ آمیزی کرتا ہے، غلط رنگ بھرتا ہے؛ وہ نہ صرف اپنی۔۔۔۔۔ بلکہ سامعین کی بھی عاقبت خراب کرتا ہے۔

ایسے خطبا کی اصلاح ہونی چاہیے، اور ان کی اصلاح سامعین سے بہتر شاید کوئی کر سکے!

جب سامعین اوٹ پٹانگ باتوں پر داد دینے کے بجائے قرآن و حدیث پر داد دیں گے تو خطبا کی خود بخود اصلاح ہوتی چلی جائے گی۔ اللہ کرے ہم اپنا ذوق بدلیں اور ترجیحات کو سمجھیں!

## الشاہ

ایک صاحب تقریر کر رہے تھے، بعض بزرگوں کے ناموں سے پہلے لکھا ہوا لفظِ "الشاہ" ان کی زبان پر آیا تو کہنے لگے:

الشاہ دراصل شاۃ سے نکلا ہے اور عربی میں شاۃ بکری کو کہتے ہیں اب اس لفظ کا معنی ہوا نبی پاک کی بکری۔

(یعنی جس بزرگ کے نام سے پہلے لفظ الشاہ آئے، اسے سرکار کی بکری سمجھ لیں۔ معاذاللہ ثم معاذاللہ!)

ربیع الاول شریف میں ایسے کئی نکتہ دان پیدا ہو جاتے ہیں جو خواہ مخواہ نکتہ آفرینی کرتے ہیں۔

ان کا مقصد واہ واہ سمیٹنا ہوتا ہے، لیکن در حقیقت وہ اپنی آخرت خراب کر رہے ہوتے ہیں۔

ربیع الاول شریف میں صرف اور صرف مستند اور محتاط علمائے اہل سنت کی تقریریں سنیں، چلتے پھرتے خطیبوں سے بچ کر رہیں ایسا نہ ہو کہ ثواب کے بجائے الٹا گناہ سمیٹ لیں۔

## غنیۃ الطالبین کے حوالے سے

ہمارے ایک انتہائی محترم و مکرم عالم دین کا سوشل میڈیا پر کلپ چل رہا ہے جس میں وہ غنیۃ الطالبین کے حوالے

سے حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کی فضیلت بیان کر رہے ہیں کہ:
"اُن کے گھوڑے کی خاک بھی حضور غوث پاک پر پڑ جاتی تو بقول غوث پاک میری مغفرت کا سبب تھی۔۔۔۔۔۔"
اور ساتھ یہ بھی کہہ رہے ہیں کہ اگر یہ غنیۃ الطالبین میں نہ ہو تو میں زبان کٹوا دوں گا۔
یہ روایت تلاش بسیار کے باوجود مجھے تو غنیۃ الطالبین کے کسی نسخے میں نہیں ملی، اگر آپ میں سے کسی کے علم میں ہو تو ضرور ارشاد فرمائیں۔

جھوٹی روایت بیان کرنا تو سید عالم ﷺ کے متعلق بھی جائز نہیں، کسی صحابی کے متعلق کیسے روا سمجھ لیا لوگوں نے!!
موضوعات کی ریت اب ختم ہونی چاہیے، صحیح، حسن، یا کم از کم ضعیف پر اکتفا کریں، موضوعات کو بالکل ترک کر دیں؛ انھی موضوعات نے عقائد و نظریات کا بیڑا غرق کر کے رکھ دیا ہے۔

عوام اہل سنت کا فرض ہے کہ کوئی خطیب جب بیان کرے تو اس سے استفسار بھی کیا کریں، کہ آپ کے اس بیان کا مآخذ کیا ہے۔۔۔۔۔۔ تاکہ وہ آئندہ محتاط رہے، اور آپ تک درست معلومات پہنچیں۔

## خطاب

رسول پاک ﷺ کا ارشاد مبارک ہے:
ہر شخص جو خطاب کرتا ہے، اُس سے اللہ جل جلالہ قیامت کے دن سوال فرمائے گا کہ (خطاب کرنے کے پیچھے) اُس کا ارادہ کیا تھا؟

سیدنا مالک بن دینار رحمہ اللہ جب اِس حدیث کو بیان فرماتے، تو روتے ہوئے ارشاد فرماتے:
"تم سمجھتے ہو کہ تم سے خطاب کر کے میری آنکھیں ٹھنڈی ہوتی ہیں، حالاں کہ میں جانتا ہوں کہ اللہ جل جلالہ قیامت کے دن مجھ سے سوال فرمائے گا، کہ اِس سے تیرا ارادہ کیا تھا؟"
پھر بارگاہِ الٰہی میں عرض کرتے:
تُو میرے دل پر گواہ ہے، اگر مجھے یہ یقین نہ ہوتا کہ خطاب تجھے بہت زیادہ پسند ہے تو میں کبھی دو شخصوں سے بھی خطاب نہ کرتا۔

(محمد رسول اللہ ﷺ، ج 1، ص 158، 159، ط اہل السنۃ پبلی کیشنز جہلم)

منبر پر کی جانے والی تقریر ہی خطاب نہیں، سوشل میڈیا پر لکھی جانے والی سطریں، بھیجی جانے والی تصویریں اور اپلوڈ کی جانے والی ویڈیوز بھی ایک طرح کے خطاب ہیں۔۔۔۔۔۔ اب اگر خطیب (یعنی بھیجنے والے) کی نیت ریاکاری، شہرت، حب جاہ اور نام و نمود ہوگی تو بارگاہِ الٰہی میں کیا جواب دے گا؟؟
کیا یہ کمینٹ اور لائک کرنے والے اُس وقت اُس کی سفارش کر کے اُسے عتاب الٰہی سے بچالیں گے۔۔۔۔ ہرگز نہیں!!

تو پھر ہمیں ابھی سے توبہ کرلینی چاہیے اور اپنی نیت کی اصلاح کرلینی چاہیے۔
دینی خطاب میں ہماری نیت سوفی صد رضاے الٰہی کی ہونی چاہیے، دکھاوا اور نام و نمود کا کوئی دخل نہیں ہونا چاہیے۔
ہمیں پڑھنے سننے والے جو چاہے سمجھیں، اس سے بھی سروکار نہیں ہونا چاہیے۔
وہ اگر ہماری اچھی گفتگو کے متعلق حُسن ظن رکھیں گے تو ہدایت کے ساتھ ساتھ اجر بھی پائیں گے، اور بدگمانی کریں گے تو اپنی ہی آخرت خراب کریں گے؛ ہمیں اپنی نیت کے مطابق اجر ملے گا۔

# (17)سترہواں باب: تحقیقات

یہ باب تحقیقی تحریروں پر مشتمل ہے۔

## تاریخ ولادت حضرت عیسی علیہ السلام

25 دسمبر سیدنا عیسی رُوح اللہ علیہ السلام کی تاریخ ولادت نہیں ہے۔

ایک عیسائی دانش ور نے لکھا ہے: حضرت مسیح علیہ السلام کی وفات کے دو سو سال کے بعد مورخین نے ان کا یوم پیدائش معلوم کرنے کی خاطر تگ و دو شروع کر دی۔ بعض کا خیال تھا کہ وہ 25 مئی کو پیدا ہوئے تھے، بعض کے مطابق حضرت مسیح علیہ السلام 19 اپریل کو دنیا میں آئے۔

بعد کے مورخین نے یہ دونوں تواریخ جھوٹی ثابت کر دیں اور دعویٰ کیا کہ حضرت مسیح علیہ السلام 17 نومبر کو پیدا ہوئے تھے ۔جدید مورخین کا کہنا ہے کہ حضرت مسیح علیہ السلام کی پیدائش کے بارے میں یقین سے کچھ نہیں کہا جا سکتا۔۔۔۔۔۔۔۔شاید آپ کے لیے یہ ایک نئی بات ہو کہ حضرت مسیح علیہ السلام کی پیدائش سے آٹھ سو سال بعد عیسوی سال شروع ہوا تھا۔

(کلیات ڈیل کارنیگی مترجم، مانیں نہ مانیں، صفحہ 822,823، طبک کارنر شوروم جہلم)

کرسمس خاص عیسائیوں کا تہوار ہے، اسے سیدنا عیسیٰ علیہ السلام سے کوئی نسبت نہیں؛ اسے آپ کا یوم ولادت سمجھ کر منانا، اس میں شامل ہونا یا اس کی مبارک دینا مسلمانوں کے لیے ہرگز جائز نہیں! ایک وقت وہ تھا جب عیسائی حکومتیں بھی کرسمس کو سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کی طرف منسوب کرنے والوں کو کڑی سزائیں دیتیں اور یہ دن منانے پر جرمانہ کرتی تھیں۔ ڈاکٹر طاہر القادری اور اس طبقے کے دیگر لوگ جاہل عیسائیوں کو خوش کرنے کے لیے کرسمس منا کر مسلمانوں کو گم راہ کرنا چاہتے ہیں، اللہ انھیں ہدایت دے!

## گرونانک کا مذہب

سردار جی سنگھ نے لکھا ہے: گورونانک نے تعلیم دی کہ: تمام انسان رنگ و نسل، خاندان مذہب برابر ہیں۔

گورونانک سکھ مذہب کے بانی تھے، جو کہ انھوں نے ہندو اور مسلمانوں کے درمیان ایک مفاہمت پیدا کرنے کے طریقے پر جاری کیا۔

(دیکھیے: بابا گرونانک، گورونانک کے عقائد، سکھ ازم کیا ہے؟، ص 217، 307، ط سیونتھ سکائی پبلی کیشنز لاہور، س 2014ء)

گرونانک کی یہ تعلیم دین اسلام کے سراسر خلاف ہے۔ رب تعالیٰ ناپاک کو پاک سے جدا کر دینا پسند فرماتا ہے۔

قرآن پاک میں ارشاد ہے:

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ

اللہ تعالیٰ ایمان والوں کو اس حالت پر نہیں چھوڑے گا جس پر تم (اب) ہو، جب تک وہ ناپاک کو پاک سے جدا نہ کر دے

۔الحمدللہ ہم سُنی مسلمان ہیں، صرف اسلام اور اہل سنت کو حق سمجھتے ہیں۔
صلح کلیت "نانک شاہی" مذہب ہے، جس کا اہل اسلام سے دور کا بھی کوئی تعلق نہیں۔
اللہ پاک ہمارا خاتمہ ایمان و اسلام اور اہل سنت پر فرمائے!
"تذکرہ علمائے ہندوستان" نامی کتاب
کچھ عرصہ پہلے خوشتر نورانی کی تحقیق سے "تذکرہ علمائے ہندوستان" نامی کتاب شائع ہوئی۔
بعض احباب کے ایما پر اس کا مطالعہ کیا تو محسوس ہوا: یہ کتاب محض علماے حق کے تذکرے پر مشتمل نہیں، اور نہ حق و باطل میں امتیاز کے لیے لکھی گئی ہے۔ اس میں رافضیوں، نیچریوں، نجدیوں، قادیانیوں وغیرہ کا تذکرہ بھی پورے آداب و القاب کے ساتھ ہے، بلکہ ضرورت سے زیادہ القاب کے ساتھ ہے۔ اگر یوں کہا جائے کہ:
"اس کتاب کا فکری منہج وہی ہے جو گرونانک نے اپنی برادری کو سکھایا تھا"، تو بے جا نہ ہوگا!
محقق نے بھی اسی اسلوب کو "اسپرٹ" قرار دے کر، برقرار رکھنے میں کوئی دقیقہ فروگزاشت نہیں کیا۔ شاید نئے قاری کے لیے فنی اعتبار سے یہ کتاب قدرے معلوماتی ہو، لیکن فکری اعتبار سے گم راہ کن ثابت ہو سکتی ہے۔
محدث اعظم پاکستان مولانا ابوالفضل سردار احمد رحمہ اللہ کے سامنے دستخط کے لیے ایک تحریر پیش کی گئی جس پر لکھا تھا: "علما کے دستخط"۔ آپ نے فرمایا: صرف علما کیا ہوتا ہے؟
لکھیں: علماے اہل سنت کے دستخط! علما تو بدمذہبوں میں بھی ہیں، جب شریعت نے علماے حق کے ساتھ، علماے سوء کی اصطلاح وضع فرمادی تو پھر اس کا اعتبار نہ کرنا مزاج شریعت کے خلاف ہے۔

## تاریخ ولادت صحیح سند سے

سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ سے صحیح سند کے ساتھ مروی ہے کہ بارہ ربیع الاول کو سرکار دوعالم ﷺ کی ولادت ہوئی۔

1: آج بارہ ربیع الاول شریف ہے، آج چلتے پھرتے، اٹھتے بیٹھتے درود و سلام پڑھیں، نعتیں پڑھیں، اپنے نبی ﷺ کا ذکرِ خیر کریں۔

2: اپنے اپنے علاقے میں ہونے والے جلسے جلوسوں میں باادب شرکت کریں۔

3: کسی کی دل آزاری نہ کریں، ہر کسی کے ساتھ حسن اخلاق سے پیش آئیں۔

4: جلسے جلوس کے دوران نماز کا وقت آجائے تو سب کچھ موقوف کر کے مسجد میں باجماعت نماز ادا کریں۔

3: کثرت سے صدقہ خیرات کریں، اپنے والدین اور رشتے داروں پر خرچ کریں۔

4: اپنے رب سے دعا مانگیں کہ:

اے کریم مالک ہمیں رسول کریم کی محبت میں ہی موت عطا فرمانا، ہم اپنے آقا ﷺ کے بغیر ایک سانس بھی نہ لے سکیں!

## امام بوصیری اور چار یار

چار یار علیہم الرضوان کی نسبت سے، امام بوصیری رحمہ اللہ کے چار اشعار کا خلاصہ:

۱-ہم نَصب اور رَفض دونوں سے اظہار برات کرتے ہوئے ہر صحابیِ رسول کی عزت کرنا ضروری سمجھتے ہیں۔
۲-یہ وہ جماعت ہے جس سے اللہ پاک راضی ہو گیا، ان کی مخالفت کرنا ہمارے لیے جائز نہیں۔
۳-میں تو صحابہ کرام سے محبت کرتا ہوں، میں کبھی کسی صحابی کی توہین نہیں کروں گا، بلکہ ان سے محبت کرنے والوں کی بھی توہین نہیں کروں گا۔
۴-(مجھے امید ہے کہ) اسی محبت کے طفیل رب تعالی ہم پر اپنے جود و فضل کے دروازے کھولے گا، اور خوب کھولے گا!!
(انظر: دیوان البوصیری، قافیۃ الباء، ص50، ط دار المعرفۃ بیروت، س1433ھ)

اِن اشعار سے اُن سبائیوں کا بھی رد ہو جاتا ہے جو امام بوصیری کی طرف منسوب ایک غلط شعر کو لے کر سیدنا معاویہ اور آپ کے والدہ ماجدہ پر طعن کرتے ہیں!

امام بوصیری تمام صحابہ و اہل بیت کے سچے غلام تھے، اللہ پاک ان کی تربت پر رحمت کا نزول فرمائے!

حضرت بوصیری رحمہ اللہ اہل بیت پاک کی شان بیان کرنے کے بعد، صحابہ کرام علیہم الرضوان کے بارے میں کہتے ہیں:

كلهم في احكامه ذو اجتهاد
وصواب و كلهم اكفاء
رضي الله عنهم و رضوا عن
ه فاني يخطو اليهم خطاء

ان اشعار کا آسان لفظوں میں خلاصہ یہ ہے:

میرے آقا کے تمام صحابہ دینی احکام میں مجتہد تھے، صواب و درستی پر تھے، اور سب کے سب علم و اجتہاد میں کافی تھے۔ اللہ ان سے راضی، وہ اللہ سے راضی؛ اُن سے کسی خطاے معصیت کو منسوب نہ کیا جائے (اس معاملے میں وہ بے گناہ و بے خطا تھے۔)

(دیوان البوصیری، قافیۃ الھمزۃ، ص35، ط دار المعرفۃ بیروت، س1433ھ)

## امام حسین پاک کہنا

ایک مولانا صاحب نے مجھے بھری محفل میں ڈانٹتے ہوئے کہا:

آپ "امام حسین پاک" کیوں کہہ رہے ہیں، یہ شیعیت ہے۔
دوسرے صحابہ کی طرح آپ کے نام کے ساتھ بھی سیدنا یا حضرت استعمال کریں۔
میں نے عرض کی:
ناصح محترم! میں امام حسین کو پاک کیوں نہ کہوں جب کہ میرے رب نے ان کی پاکی بیان فرمائی ہے۔

اُن کی پاکی کا خدائے پاک کرتا ہے بیاں
آیۂ تطہیر سے ظاہر ہے شانِ اہل بیت !

رہی بات امام کہنے کی، تو آپ نہ بھی کہیں انھیں قیامت تک امام کہا جاتا رہے گا؛ کیوں کہ ان کے جدِ کریم سیدنا ابراہیم علیہ السلام نے دعا جو فرمادی تھی کہ میرے اللہ میری اولاد کو امام بنادے! قرآن پاک میں ارشاد ہوتا ہے:

وَاِذِ ابْتَلٰٓى اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَ مِنْ ذُرِّیَّتِیْ ؕ۔

اور جب ابراہیم کو اس کے رب نے کچھ باتوں کے ذریعے آزمایا تو اس نے وہ پوری کر دکھائیں۔
(تو رب تعالیٰ نے) فرمایا: میں تمہیں لوگوں کا امام بنانے والا ہوں۔
(ابراہیم نے) عرض کی: اور میری اولاد میں سے بھی۔
اس آیت میں سیدنا ابراہیم علیہ السلام کے جس عریضے کی بات ہو رہی ہے وہ نبوت والی امامت نہیں، بلکہ "قدوۃ فی الدین" دینی امامت و پیشوائی ہے! پھر میں نے ان مولانا سے عرض کی:
جو بے سروپا اعتراض آپ نے کیا ہے، ایسے اعتراضات وہ دیوبندی وہابی کرتے ہیں جن کے دلوں میں اہل بیت رسول کے بارے میں اِنقباض ہے۔ آپ اپنے اسلاف رحمھم اللہ کے نقش قدم پر چلیں جنھوں نے ہمیں سمجھایا ہے کہ اگر شیعیت ورافضیت حرماں نصیبی ہے، تو ناصبیت وخارجیت بھی سیاہ بختی سے کم نہیں!

## 80 جلدوں پر مشتمل تاریخ دمشق

80 جلدوں پر مشتمل تاریخ دمشق بڑی وقیع کتاب ہے، جسے ثقہ ومتقن امام حافظ ابن عساکر رحمہ اللہ نے ترتیب دیا۔
میں نے اس میں موجود سیدنا معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ذکرِ خیر پڑھنے کا شرف حاصل کیا ہے، جو تقریباً پونے دو سو صفحات پر پھیلا ہوا ہے۔
آپ رضی اللہ عنہ کی تعریف وتوصیف دیکھ کر دل بہت خوش ہوا، لیکن ایک افسوس بھی ہوا کہ امام صاحب نے دیگر معتد بہ محدثین کی طرح منکر ومطروح اور باطل وموضوع روایات بھی جمع کر دی ہیں۔
(اور ایسا دیگر صحابہ کرام کے احوال میں بھی کیا ہے)

احباب سے گزارش ہے کہ تاریخ دمشق کے حوالے سے بیان کی گئی روایات پر، اُس وقت تک اعتماد نہ کریں جب تک کوئی صاحب علم اس کی تصحیح و تائید نہ کردے ـــــ بے شک صحابہ کرام علیہم الرضوان کی تعریف، در حقیقت رسول اللہ ﷺ کی تعریف ہے، لیکن.....سچی روایات سے!!

## مشاجرات صحابہ

جلیل الشان محدث، امام احمد بن محمد شافعی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

صحابہ کرام علیہم الرضوان کے درمیان جو جھگڑے ہوئے، اُن کا اثر دنیا تک ہی رہا، وہ آخرت پہ اثر انداز نہیں ہوسکے؛ کیوں کہ: فکلھم مجتھدون مثابون۔ سارے صحابہ مجتہد، اور ثواب کے حق دار تھے۔

البتہ ثواب میں فرق ہے (کسی کے لیے کم اور کسی کے لیے زیادہ)۔

جو مجتہد مصیب ہوتا ہے، جیسے: حضرت علی اور آپ کے متبعین تھے؛ اُسے دو، بلکہ دس اجر ملتے ہیں۔

اور جو مجتہد خطا پر ہوتا ہے، جیسے: حضرت معاویہ تھے؛ اُسے ایک ثواب ملتا ہے۔

یہ سب لوگ اللہ کی رضا اور اطاعت میں اپنے اپنے گمان اور اجتہاد کے مطابق کوشش کرتے رہے، ان کے علوم بہت وسیع تھے، جو انھوں نے سرور عالم صلی اللہ علیہ وسلم سے حاصل کیے تھے ـــ

(یہ جملہ ایک بار پھر پڑھیں: ان کے علوم بہت وسیع تھے، جو انھوں نے سرور عالم صلی اللہ علیہ وسلم سے حاصل کیے!)

اگر اپنے دین کو فتنوں، بدعتوں عناد اور مصیبت سے بچانا چاہتے ہو تو یہ بات اچھی طرح ذہن نشین کرلو!!

واللہ الھادی الی سواء السبیل، وھو حسبنا ونعم الوکیل

(انظر: تطہیر الجنان واللسان عن ثلب معاویۃ بن ابی سفیان، مع المدرج الجلی واثبات الحق لعلی، للحافظ ابن حجر الھیتمی، ص 34، 35، دار الصحابۃ للتراث بطنطا، 1413ھ)

## امام عادل یا سلطان جائر؟

آج ایک عزیز "ہدایہ" لے کر آئے، اور اس سے سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ کے متعلق "سلطان جائر" دکھاتے ہوئے، جواب طلب نگاہوں سے میری طرف دیکھنے لگے۔ میں نے انھیں کہا: اس میں کوئی شک نہیں کہ علامہ مرغینانی احناف کے بہت بڑے عالم تھے، انھوں نے ہدایہ جیسی وقیع کتاب لکھی، جو فقہ حنفی میں بڑی اہمیت کی حامل ہے۔

لیکن اس میں لکھا گیا یہ جملہ انتہائی دل آزار اور سراسر غلط ہے، اسے کسی صورت قبول نہیں کیا جاسکتا۔

امام اہل سنت حضرت احمد بن حنبل نے تو فرمایا تھا:

جو لوگ کہتے ہیں کہ سیدنا معاویہ نے تلوار کے زور پر خلافت غصب کی، ان کی یہ بری بات پھینک دینے کے قابل ہے،

ایسے لوگوں کے پاس بیٹھنا بھی نہیں چاہیے۔

(ملخصًا: السنۃ للخلال، ج1، ص340، رقم659)

صحابی رسول کے متعلق "سلطان جائر" جیسے مکروہ الفاظ سینے سے لگانے کے قابل نہیں، دیوار پر دے مارنے کے لائق ہے! بلاشبہہ صحابی رسول، کاتب وحی سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ امام عادل تھے، انھیں جائر کہنا بہ ذات خود جور ہے۔ اکابر محدثین، مجتہدین اور فقہا کے استاد، امام اعمش رحمہ اللہ کے سامنے لوگوں نے حضرت عمر بن عبدالعزیز کے عدل وانصاف کا تذکرہ کیا، تو آپ نے فرمایا:

فکیف لو ادرکتم معاویۃ۔

اگر تم سیدنا معاویہ کو دیکھ لیتے تو تمھارا کیا حال ہوتا!!

انھوں نے عرض کی:

یا ابا محمد یعنی فی حلمہ؟

اے ابو محمد آپ سیدنا معاویہ کے حلم وبردباری کی بات کر رہے ہیں؟

آپ نے فرمایا: لا واللہ، الا بل فی عدلہ۔

نہیں، (وہ تو ہے ہی) اللہ کی قسم میں آپ کے عدل وانصاف کی بات کر رہا ہوں!

(انظر: السنۃ للخلال، ج1، ص342، ر667۔ المنتقی للذھبی، الفصل الثالث، ص388۔)

صحابی رسول سیدنا و مولانا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ، جنھوں نے سیدنا معاویہ کو اپنی آنکھوں سے دیکھا، وہ فرماتے ہیں:

ما رایت رجلا کان اخلق للملك من معاویۃ

میں نے سیدنا معاویہ سے زیادہ حکومت کے لیے موزوں کسی کو نہیں دیکھا۔

(التاریخ الکبیر للبخاری، ج7، ص326، ر1405 1405۔ معجم الصحابۃ للبغوی، ج5، ص373۔)

تو جو ہستی ایک صحابی رسول کے نزدیک حکومت کے لیے سب سے زیادہ اہلیت رکھتی ہو، کیا معاذاللہ ثم معاذاللہ وہ جائر ہو سکتی ہے؟؟ ہرگز نہیں!! ہمارے اکابر سب سے پہلے صحابہ کرام ہیں ان کے بعد علما وفقہا۔

ہم علما و محدثین کا بہت احترام کرتے ہیں، لیکن صحابہ علیہم الرضوان کے بعد!

ہم غیر صحابی کا ہر ایسا قول مردود و مطرود سمجھتے ہیں، جو صحابہ کرام پر نقد وارد کرے۔

کسی غیر صحابی کو صحابی پر جرح کا کوئی حق نہیں!!

اگر ابن تیمیہ کہے کہ حضرت علی سے اتنی غلطیاں ہوئیں تو اس کا قول بھی مردود و مطرود ہے، اور اگر مرغینانی کہیں کہ حضرت معاویہ جائر تھے یا حضرت ابو محذورہ نے حدیث سمجھنے میں غلطی کی تو ان کا قول بھی مردود ہے —

## خارجی

عبدالرحمان بن عَمْرو (اِبنِ مُلْجَم)، بُرَک بن عبداللہ، عَمْرو بن بکر، یہ تینوں خارجی ایک جگہ جمع ہوئے اور تین مقدس ہستیوں کو شہید کرنے کا ناپاک منصوبہ تیار کیا۔

[1]ابن ملجم نے کہا: انا اکفیکم علی بن ابی طالب

میں علی بن ابوطالب کا کام تمام کروں گا

[2]بُرَک نے کہا: انا اکفیکم معاویۃ بن ابی سفیان

میں معاویہ بن ابوسفیان کے لیے کافی ہوں

[3]عمرو بولا: انا اکفیکم عمرو بن العاص

میں عمرو بن عاص سے نِبٹ لوں گا

پھر یہ مرنے مارنے کا پکا وعدہ کر کے، اور قسمیں کھا کر اپنے اپنے ہدف کی طرف روانہ ہو گئے۔

سترہ رمضان کو بہ یک وقت حملہ کرنا تھا، جس کے لیے تینوں گھات میں بیٹھ گئے۔

[1]سیدنا معاویہ فجر کی نماز کے لیے آرہے تھے کہ بُرک نے حملہ کر دیا، تلوار آپ کی ران پر لگی لیکن آپ بچ گئے۔

[2]سیدنا عمرو بن عاص اس رات بیمار تھے، اس لیے مسجد نہ جا سکے اور نماز پڑھانے کے لیے اپنے محافظ خارجہ بن حذافہ کو بھیجا۔ عمرو بن بکر جو تاک میں بیٹھا تھا اس نے سمجھا یہی عمرو بن عاص ہیں، اس نے حملہ کر کے خارجہ کو شہید کر دیا۔

[3]سیدنا علی پاک نماز کے لیے مسجد تشریف لا رہے تھے کہ ابن ملجم نے آپ پر ایسا گہرا وار کیا، جس کی تاب نہ لاتے ہوئے شہید ہو گئے!!

)انظر: تاریخ الرسل والملوک..... ذکر الخبر عن مقتل علی بن ابی طالب، ج 5، ص 143، 146، 149 دارالتراث بیروت 1387ھ(

[1]خارجی اُس وقت بھی صحابہ کرام کے دشمن تھے اور آج بھی ہیں؛ اللہ انھیں غارت کرے!

[2]وہ خارجی تو اپنے ناپاک عزائم سمیت واصل جہنم ہو گئے، لیکن باقیات چھوڑ گئے..... مسجدوں، مدرسوں، چوکوں، بازاروں میں خودکش حملے، نمازیوں اور نہتے مسلمانوں کا قتل عام؛ انھی باقیات کا حصہ ہے—!!

## ایک فیصلہ

بعض "علماے اہل سنت" سے فروعی اور تشریحاتی اختلافات اپنی جگہ؛ لیکن اس کا یہ مطلب ہرگز نہیں کہ ہم ان کی تذلیل جائز سمجھتے ہیں—

ہماری وال پر بات بات پہ علماے اہل سنت کی توہین و تنقیص کرنے والے، بے دلیل شرعی کسی کو رافضی تو کسی کو ناصبی کہنے والے، الٹے سیدھے القاب دینے والے؛ ایسے لوگ ہیں..... جن کے ساتھ ہم مزید نہیں چل سکتے !!

کل سے ہم اپنی فرینڈ لسٹ صاف کرنے کا فیصلہ کر چکے ہیں۔ ہمارے لیے وہ دوست قابل احترام اور لائق محبت ہیں جو ہم پر نامِ خدا اعتماد کرتے ہیں، ہمارے علمی و اصولی موقف کی تائید کرتے ہیں۔

اور..... وہ احباب بھی بہ سر و چشم قبول ہیں جو ہمارے موقف سے علمی اختلاف رکھتے ہیں، ہمارے موقف کے خلاف مہذب انداز میں دلائل دیتے ہیں، ہماری غلطیوں پر ہمیں متنبہ کرتے ہیں۔

صرف..... وہ لوگ قبول نہیں، جو ہمارے "سُنی موافق و مخالف" کو گالیاں دیتے، بدکلامی و بدزبانی کرتے، ذاتیات پر حملے کرتے اور اتہام باندھتے ہیں!

ہم فیس بک صرف اچھے اور علمی کاموں کے لیے استعمال کرنا چاہتے ہیں، اس کی وساطت سے اپنے نامۂ اعمال میں گناہوں کے انبار نہیں لگا سکتے !!

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ

## حدیث کی 380 کتب

محدث اعظم پاکستان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے تھے:

حدیث پاک کی 380 کُتُب ہیں، آج کل ساری کُتُبِ احادیث ملتی بھی نہیں، لہذا جب کبھی تم سے کوئی کسی حدیث کے بارے میں سوال کرے تو یہ مت کہو کہ: یہ حدیث کسی کتاب میں نہیں! بلکہ یوں کہو کہ: یہ حدیث میرے علم میں نہیں ہے، یا میں نے نہیں پڑھی —

(فیضان محدث اعظم پاکستان، ص45، مکتبۃ المدینہ کراچی)

آج کل سُنیوں میں جو بیماری پھیل رہی ہے کہ کوئی حدیث یا سند شاملہ اور گوگل سے نہ ملے تو موضوع!

یہ "فرمانِ محدث اعظم" اسی مرض کی ایک دوا ہے —

اللہ کریم مبتلاؤں کو صحت کاملہ، عاجلہ نصیب فرمائے؛ پس ماندگان و لواحقین کو ہمیشہ محفوظ رکھے !!

## حدیث: میں علم کا شہر

حدیثِ پاک:

انا مدینة العلم وابوبکر اساسها، وعمر حیطانها، وعثمان سقفها، وعلی بابها۔

میں علم کا شہر ہوں، ابوبکر اس کی بنیاد، عمر دیواریں، عثمان چھت اور علی دروازہ ہیں۔

اِس پر آج کل بعض احباب بہت برہم ہیں ، اور موضوع ثابت کرنے کے لیے اصولِ حدیث بیان کرنے کے بجائے، عجیب وغریب ڈھکوسلے کررہے ہیں۔

مجھے ایک دوست نے ریکارڈنگ بھیجی، جس میں ایک صاحب کہہ رہے تھے:

"بنیاد پہلے ہوتی ہے بلڈنگ بعد میں، تواگر حضرت ابوبکر کو بنیاد مان لیا جائے تواِس کا مطلب ہوگا کہ حضور کی بھی بنیاد ابوبکر ہیں، لاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم؛ جب کہ حضور سب کی بنیاد ہیں"

اِس بچکانہ استدلال کے جواب میں، مَیں نے انھیں کہا:

اگر موصوف کی اِس بات کو دُرست مان لیا جائے تو پھر زبان زدِ عام مصرع جسے محترم پورا ماہِ محرم گُن گناتے ہیں:

"حقا کہ بنائے لاالہ است حسین"

اس حدیث سے بھی زیادہ غلط ہوگا، کیوں کہ اِس کا توصاف مطلب یہ بنتا ہے کہ کلمے کی بنیاد امام حسین ہیں؛ گویا نبی پاک اور دین کا پہلا رکن بعد میں اور امام حسین پاک پہلے!!

لاحول ولاقوۃ الاباللہ العلی العظیم۔

اب جو جواب اِس "بنائے" کا ہے، فی الحال ہماری طرف سے وہی "اساسھا" کا سمجھیے—

جب آپ اصول حدیث کی روشنی میں اسے موضوع ثابت کریں گے تو پھر ہم بھی اصولِ حدیث کی روشنی میں ثابت کریں گے کہ یہ حدیث موضوع نہیں!

## علما وصوفیہ کا اختلاف

حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے پیرزادے خواجہ عبداللہ اور خواجہ عبیداللہ رحمھما اللہ کی طرف ایک خط بھیجا ،جس میں یہ بھی لکھا:

"وہ مسائل جن میں علما وصوفیہ کا اختلاف ہے، جب بہ خوبی ملاحظہ کیے جاتے ہیں تو حق علما کی جانب معلوم ہوتا ہے۔

اس کی وجہ یہ ہے کہ: علما کی نظر نے انبیاے کرام علیھم الصلوات والتسلیمات کی پیروی کے باعث، نبوت کے کمالات اور علوم میں نفوذ کیا ہے، جب کہ صوفیہ کی نظر کمالات ومعارفِ ولایت تک محدود ہے۔

تو جو علم سینہ نبوت سے حاصل کیا جائے وہ اس علم سے، جو مرتبہ ولایت سے اخذ ہو، بہ درجہا بہتر اور زیادہ حق ہوگا"

(مکتوبات امام ربانی، دفتر اول، حصہ چہارم، مکتوب دوصد وشصت وششم (266)، ص 123، مکتبہ امدادیہ کانسی روڈ کوئٹہ)

## عاجزانہ عرض!

(1) آپ تک پہنچانے سے پہلے، میں اپنی ہر تحریر پوری توجہ سے پڑھتا ہوں، اُس کی مختلف زاویوں سے چھان بین کرتا

ہوں تاکہ شرعی، لفظی، معنوی، یا املائی و انشائی غلطی کا امکان کم سے کم ہو۔

(2) اپنی تحریر میں غیر فصیح الفاظ استعمال کرنے سے پرہیز کرتا ہوں، بلکہ فصیح الفاظ کے استعمال میں بھی ایسے لفظوں کا انتخاب کرتا ہوں جو ثقیل ہونے کے بجائے سُبک، شُستہ، شیریں اور دل آویز ہوتے ہیں۔

کیوں کہ فصاحتِ کلام میں یہ چیز شامل ہے کہ:

"جو الفاظ ترتیب میں آئیں اُن کی ساخت، ہیئت، سُبکی، گرانی خاص توازن میں ہونی چاہیے، ورنہ فصاحت قائم نہیں رہتی۔" دیکھیے! قرآن پاک میں ہے:

"مَا كَذَبَ ٱلْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ"

اگر اس پر فصاحت کلام کے اعتبار سے غور کیا جائے تو معلوم ہوتا ہے:

"اگرچہ لفظِ فواد اور قلب دونوں ہم معنی ہیں، اور دونوں فصیح ہیں؛ لیکن یہاں فواد کے بجائے قلب آنے سے کلام کی فصاحت ختم ہو جاتی ہے۔

اس لیے کہ لفظِ قلب اگرچہ خود فصیح ہے لیکن جب اسے ماقبل و مابعد الفاظ کے ساتھ ملائیں گے تو آواز کا وہ تناسب نہیں رہے گا جو فواد کے ساتھ ہے۔ اسی طرح:

"إِنَّ ٱلسَّمْعَ وَٱلْبَصَرَ وَٱلْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ" پر غور کیجیے!"

(3) اِس تحریری احتیاط کے باوجود، خود کو غلطی سے مبرا نہیں سمجھتا اور نہ ان شاء اللہ سمجھوں گا!

آپ جب بھی میری کسی غلطی پر مطلع ہوں مجھے ضرور آگاہ کریں، میں آپ کا بے حد شکر گزار رہوں گا۔

بزرگوں سے سنا تھا: ایک امام صاحب رحمہ اللہ نے کتاب لکھ کر اپنے شاگردوں کو نظر ثانی (پروف ریڈنگ) کے لیے دی، اُنھوں نے بیسیوں دفعہ پڑھی لیکن ہر بار کوئی نہ کوئی غلطی سامنے آئی۔

آخر امام صاحب تھک ہار کر فرمانے لگے: "اسے شائع کر دو، ہر غلطی سے پاک اور لاریب صرف کلام الٰہی ہے۔"

مشہور شاعر و ادیب جوش ملیح آبادی فصیح و بلیغ شخص تھا۔

اس نے چھے سال کی عرق ریزی کے بعد ایک کتاب لکھنی شروع کی، جس کا پہلا مسودہ ڈیڑھ سال کی محنت کے بعد تیار کیا لیکن ردی کی ٹوکری میں ڈال دیا؛ پھر ڈیڑھ سال لگا کر دوسرا مسودہ تیار کیا، اُس پر بھی خط تنسیخ کھینچ دیا۔

پھر ڈیڑھ پونے دو سال لگا کر نو سو صفحوں کا تیسرا مسودہ تیار کیا، لیکن اُسے چھپوانے کے بعد جب بہ نظر غائر دیکھا تو معلوم ہوا نقص سے یہ بھی خالی نہیں۔ بعد ازاں چوتھا مسودہ تیار کرنے کے بعد کہنے لگا:

"میرے دل کی بات پوچھیں تو یہ بھی کہہ دوں کہ میں اس چوتھے مسودے سے بھی مطمئن نہیں ہوں، لیکن کیا کروں اب مجھ میں دم باقی نہیں رہا کہ دو برس کی عرق ریزی کر کے پانچواں مسودہ لکھوں اور اسے بھی قلم زد کر دوں۔"

(دیکھیے: یادوں کی برات ص 9، 10، مکتبہ شعر و ادب لاہور، اشاعت 1975ء)

(4) دوبارہ عرض ہے کہ آپ کو میری کسی تحریر میں، کسی موڑ پر، کسی قسم کی، غلطی، کوتاہی، کمی نظر آئے تو ضرور آگاہ فرمائیں، آپ کی نوازش ہوگی۔

## حُسام الحرمین علیٰ منحر الکفر والمین

وہ فتوی ہے جس میں بعض کفریہ عبارات کی نشان دہی کر کے، محررین کی تکفیر کی گئی ہے۔

اِس فتوے کو آج بھی اہل سنت اسی احترام سے دیکھتے ہیں جیسے صدی پہلے دیکھتے تھے۔

ان شاءاللہ میں بدھ سے اس فتوے کے مختلف پہلوؤں پر، (فیس بک پہ) لکھنا شروع کر رہا ہوں، اللہ نے چاہا تو اہل سنت کی آنکھیں ٹھنڈی ہوں گی! اِن جہتوں سے کام کرنے کا ارادہ ہے:

1: فتوے میں نقل کردہ عبارات سیاق و سباق کے مطابق ہیں یا نہیں؟

2: مذکورہ عبارات فنی اعتبار سے کس حد تک کفریہ ہیں؟

3: کیا یہ ایسی عبارات ہیں جن کا مفہوم سمجھنے کے باوجود ان کے کفریہ ہونے میں شک کرنے والے کی تکفیر کی جائے گی؟

4: ان کی جو تاویلیں کی جاتی ہیں وہ اصولاً قابل اعتنا ہیں یا نہیں؟

5: کیا اس فتوے پر علماے حرمین نے بغیر سوچے سمجھے مہریں لگا دیں یا تحقیق و تفتیش سے بھی کام لیا؟

6: جن علماے اہل سنت کی طرف حسام الحرمین کی مخالفت کی نسبت سکوت کا قول کیا جاتا ہے اس کی کیا حیثیت ہے؟

7: کیا فتوی حسام الحرمین آج بھی اسی طرح موثر ہے جیسے صدی پہلے تھا؟

(اس کے علاوہ اگر کوئی جہت آپ کے ذہن میں ہو تو کمینٹ میں ضرور بتائیے تاکہ اسے بھی شامل کر لیا جائے)

میں اس موضوع پر لکھنے سے پہلے، کامل اِحصا کا مدعی نہیں ہوں، لیکن..... اپنے اکابرین رحمھم اللہ کی نظر عنایت سے اُس وقت قلم اٹھا رہا ہوں جب اس یقین تک پہنچ گیا ہوں کہ:

"میں اس موضوع کو نہ صرف نبھا سکوں گا بلکہ اس پر اٹھنے والے سوالات کے دلیل سے جوابات بھی عرض کر سکوں گا"۔

آپ کو ہر پوسٹ پر تائیدی و تنقیدی کمینٹ کرنے کی اجازت ہے، لیکن دائرہ تہذیب میں رہتے ہوئے!

آپ کے علمی و اصولی کمینٹ میرے لیے باعث مسرت ہوں گے، آپ کے سوالات کے معقول جوابات دے کر مجھے خوشی ہوگی۔

آپ میری تحریر میں جو کچھ حُسن و خوبی دیکھیں اسے محض فضل الٰہی سمجھیں، اور جو خامی نظر آئے اسے میری "نادانستہ" کوتاہی سمجھ کر اصلاح کریں، میں آپ کا مشکور و ممنون ہوں گا! میرے لیے عافیت و سلامتی کی ضرور دعا کیجیے، میرے پیش نظر صرف ناموس محبوب ﷺ کا دفاع ہے!

انھیں جانا ، انھیں مانا ، نہ رکھا غیر سے کام

للہ الحمد میں دنیا سے مسلمان گیا

## اس طرف بھی توجہ!

ہمارے ہاں بہت سارے موضوعات پر لکھا جاتا ہے لیکن یہ موضوعات عدم توجہ کا شکار ہیں:

1: پریشانی سے چھٹکارا حاصل کرنے کے عملی طریقے

2: ناامیدی سے کیسے بچا جائے؟

3: حادثات کی صورت میں دل و دماغ کیسے قابو میں رکھے جائیں؟

4: مالی پریشانیوں سے کیسے نجات حاصل کی جائے؟

5: لوگوں سے تعلقات کیسے اور کتنے بڑھانے چاہییں!

6: اپنی صلاحیتوں کو کیسے اور کہاں استعمال کیا جائے؟

7: دن بہ دن ترقی کی طرف کیسے بڑھا جائے؟

8: اپنا ایک ایک سانس کیسے قیمتی بنایا جائے؟

9: مشکل وقت میں ہمیں کیا کرنا چاہیے!

10: ناکامی کو کامیابی میں کیسے بدلا جا سکتا ہے؟

ایسے موضوعات پر لکھنا نہ صرف وقت کی ضرورت ہے بلکہ فطرت کا سو فی صد سچا تقاضا ہے؛ جسے پورا کرنا ہماری ذمے داری ہے۔

## سرخ عمامہ

عمامہ شریف باندھنا سنت ہے، رنگ کی کوئی قید نہیں؛ آپ جس رنگ کا چاہے باندھ لیں سنت ادا ہو جائے گی۔

دیگر رنگوں کی طرح سرخ رنگ کا عمامہ شریف بھی بلا کراہت جائز ہے، بلکہ صحابہ کرام کی ایک جماعت نے باندھا ہے۔

حضرت سلیمان بن ابی عبداللہ تابعی رحمہ اللہ کہتے ہیں: مہاجرین صحابہ رضوان اللہ علیہم اجمعین سرخ عمامے بھی باندھتے تھے۔

(انظر: مسند اسحاق بن راھویہ (متوفی 238ھ)، ج3، ص882، 883، رقم 1556، مکتبۃ الایمان المدینہ المنورہ، 1412ھ)

## پانچویں دعوت

انبیٹھوی کا شمار مولانا غلام دستگیر قصوری نور اللہ مرقدہ کے احباب میں ہوتا تھا۔ جب اُس نے براہین قاطعہ لکھی تو آپ کو

گہرا صدمہ پہنچا-

اُن دنوں وہ بہاول پور کے مدرسہ عربیہ میں مدرس تھا، آپ رحمہ اللہ اُس کے پاس پہنچے، سمجھایا بُجھایا، لیکن وہ اپنی ہٹ پر قائم رہا- آخر آپ رحمۃ اللہ علیہ نے والیٔ بہاول پور کے پیر و مرشد خواجہ غلام فرید رحمہ اللہ کی ثالثی میں اُس سے بحث کر کے اُسے بہ دلائل غلط ثابت کر دیا—

(تفصیل: تقدیس الوکیل، مطبوعہ لاہور میں دیکھی جا سکتی ہے)

ہمارے معاصر ناصر رام پوری صاحب بھی سنی اور مصباحی ہونے کے ناطے ہمارے اپنے تھے، لیکن اب انھوں نے اہل سنت سے الگ راستہ اختیار کر لیا ہے - یہ کم علمی، کوتاہ نظری اور کج فکری کی وجہ سے گستاخانہ عبارات کا دفاع کر رہے ہیں-

اب اگر یہ اپنا موجودہ موقف ثابت کرنا چاہیں گے تو انھیں بہت پاپڑ بیلنے پڑیں گے، اس لیے میں اِنھیں مزید ایک راستہ بتاتا ہوں- "اِدھر اُدھر کی ساری باتیں چھوڑ دیں، مسئلہ تکفیر کون سا تقلیدی ہے!

اِس بارے میں کس نے کیا کہا، کیوں کہا؟ یہ سب باتیں ایک طرف رکھیں-

آپ متنازعہ عبارات میں سے ایک ایک پر ہمارے ساتھ گفتگو کر لیں، ہم دلیل سے اپنا موقف ثابت کریں گے اور آپ اپنا— "اکابر علماے اہل سنت میں سے "جنھیں آپ کہیں گے "، حکم بنا لیا جائے گا؛ جس طرح خواجہ غلام فرید رحمۃ اللہ علیہ نے فریقین کی گفتگو سننے کے بعد فیصلہ کیا تھا کہ: انبیٹھوی اور اُس کے معاونین اہلِ سنت سے خارج ہیں، اور اُن کے فیصلے کو بہاول پور کے عوام و خواص نے بہ دل و جان قبول کیا تھا؛ اِسی طرح ہمارے حکم بھی جو فیصلہ فرمائیں گے ہمیں منظور ہو گا—

یہ میری طرف سے آپ کو پانچویں دعوت ہے، اگر آپ دو چار دنوں میں قبول نہیں کرتے تو سمجھ لیا جائے گا کہ آپ کا مقصد حق قبول کرنا نہیں صرف اہل سنت میں انتشار پھیلانا ہے، اور اہل سنت کو فتنے میں الجھائے رکھنا ہے-

اس لیے آپ کی پوسٹوں کی روشنی میں ایک استفتا مرتب کیا جائے گا جس میں آپ کی اکابرین اہل سنت کی شان میں کی گئی گستاخیاں، اور اہل سنت مخالف نظریات لکھ کر، اُن پر علمائے پاک و ہند کی آرا لی جائیں گی، تاکہ عوام اہل سنت آپ سے اسی طرح محفوظ رہ سکیں جس طرح عوام بہاول پور انبیٹھوی کے شر سے محفوظ ہوئے تھے!

والسلام علیٰ من اتبع الھدی

## فراڈ

احباب اہل سنت! ناصر رام پوری صاحب شیخ محمد سعید بابصیل رحمہ اللہ کی تقریظ کے متعلق آپ سے فراڈ کرنا چاہتے ہیں- آپ اگر اِنھی کی زبانی اس فراڈ پر مطلع ہونا چاہتے ہیں تو اِن سے یہ سوالات پوچھیں:

1: تقدیس الوکیل پہلے کی ہے یا حسام الحرمین؟
2: کیا المہند میں شیخ کی طرف منسوب تقریظ من وعن ہے؟
3: شیخ نے تقدیس الوکیل پر تقریظ لکھی، مہر لگائی؛ حسام الحرمین پر تقریظ لکھی، مہر لگائی؛ لیکن المہند پر تقریظ لکھ کر مہر لگانا کیوں بھول گئے؟؟ اور اِنھیں یہ بھی بتائیں کہ:
فراڈی وہ بدنصیب شخص ہے جس کی بہ روز قیامت پہچان یہ ہوگی کہ اُس کے سرین (پچھلے مقام) کے پاس جھنڈا گاڑا جائے گا- العیاذ باللہ تعالیٰ

(انظر: مسند احمد، مسند ابی سعید الخدری.....، ج17، ص404، رقم 11303، مؤسسۃ الرسالۃ بیروت 1421ھ)

## جہالت و نادانی

شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی رحمہ اللہ (متوفی 1239ھ) نے رافضیوں کے رد میں تحفہ اثنا عشریہ کتاب لکھی، جس میں اُن کی کتابوں سے بہ کثرت حوالے دِیے-
آپ کتاب کے مقدمے میں فرماتے ہیں، میں نے رافضیوں کی جو عبارتیں نقل کی ہیں اُنھیں دیکھ کر یہ نہ کہنا کہ:
"ہیں تو شیعہ کی معتبر کتابوں میں، لیکن شاید اِن میں کوئی ایسی تاویل نکلتی ہو جس تک ہمارا ذہن نہیں پہنچ سکا—
کیوں کہ: بہ وقتِ مناظرہ یہ احتمال عجز و بے چارگی پر دلالت کرتا اور جہالت و نادانی کی گواہی دیتا ہے"
(تحفہ اثنا عشریہ نصیحۃ المؤمنین وفضیحۃ الشیاطین، ص5، مکتبۃ الحقیقۃ ترکی، 1432ھ)

## تحقیق و تدقیق

مجھے ایک صاحب کہتے ہیں: آپ کس طرف لگ گئے؟ تحقیق و تدقیق کے لیے اور تھوڑے کام ہیں!

میں نے اُنھیں کہا: سیدنا زید بن ثابت رضی اللہ عنہ کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے حکم دیا تھا:
"یہودیوں کی لکھائی سیکھو، اللہ کی قسم مجھے اپنے خطوط کے معاملے میں ان پر اعتماد نہیں"
آپ رضی اللہ عنہ نے اپنے آقا کے حکم پر پندرہ دنوں میں یہودیوں کی لکھائی سیکھ لی، پھر آپ ﷺ کے خطوط خود ہی لکھا اور پڑھا کرتے تھے—
چوں کہ مجھے سیدنا زید رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بہت زیادہ محبت ہے، میں نے جب دیکھا کہ سرکار دو عالم ﷺ کے سچے غلام (اہل سنت و جماعت)، بعض یہودی خصلت لوگوں کی تحریروں سے پریشان ہیں، تو میں نے بھی کچھ ہی دنوں میں اُن کی تحریروں کے مآخذ کا علم حاصل کر لیا؛ تاکہ اہلِ سنت اہلِ جنت اِس معاملے میں پریشان نہ ہوں، بہ وقت ضرورت میں ان کے کام آسکوں-

## اُصولی بات

ہم مرزا قادیانی کو کافر سمجھتے ہیں، اور اُس کے کفر میں شک کرنے والوں کو بھی۔
ہمارے اکابرین رحمھم اللہ نے جن اُصولوں کی روشنی میں مرزا کی تکفیر کی، اُنھی اصولوں کے پیشِ نظر بعض دیگر کو بھی کافر قرار دیا ہے۔
اگر کوئی سُنی کہلانے والا مرزا قادیانی کی قطعی تکفیر کا تو قائل ہے لیکن دیگر کی تکفیر میں وساوس کا شکار ہے، تو ہم اُسے ان وسوسوں سے نجات کا ایک وظیفہ بتاتے ہیں:
"وہ مرزا کی قطعی و کلامی تکفیر کے اُصول معلوم کرے، اگر اُس نے درست طریقے سے معلوم کر لیے تو اِن شاءاللہ ہمارے موقف کی تائید کرے گا" ایسے مسائل کا بہترین حل علم نافع ہے!
مولا علی پاک رضی اللہ عنہ نے کتنی سچی بات ارشاد فرمائی:
"الناس اعداء ما جھلوا" لوگ جن باتوں کو نہیں جانتے اُن کے دشمن ہو جاتے ہیں۔
(الاعجاز والایجاز، ص34، مکتبۃ القران قاہرہ)

## ایسا

حفظ الایمان، بسط البنان، تغییر العنوان، بار بار پڑھنے اور سمجھنے کے بعد:
"متنازعہ عبارت کی تاریخِ پیدائش 8 محرم 1319ھ ہے، جس میں باعثِ نزاع حرف: "ایسا" بھی ہے۔
اُردو زبان و ادب کا طالبِ علم ہونے کی حیثیت سے میں نے اِس عبارت کی پیدائش سے، سو سال پہلے تک کے اردو شُعرا، اُدبا اور فُصحا کی کتابیں کھنگال ڈالیں کہ شاید "ایسا" کا کوئی ایک معنیٰ ہی ایسا مل جائے جو عبارت کو کفر سے بچا سکے؛ لیکن---
-----ناکام رہا!!
'ایسا' کے اعتبار سے اِس عبارت کو جس زاویے سے بھی دیکھا جائے کفریہ نظر آتی ہے"
مسلکی تعصب کے بغیر اہلِ علم و ادب سے گزارش ہے کہ کیا آپ "ایسا" کا کوئی ایک ایسا معنیٰ بتا سکتے ہیں جو مستلزم کفر نہ ہو ؟؟
مجھے شدت سے انتظار رہے گا!!
وقت کا بھی یہی تقاضہ ہے کہ مناظرانہ و مجادلانہ طرز چھوڑ کر، مصلحانہ و منصفانہ انداز میں تحقیق کی جائے، اور حق کو حق تسلیم کیا جائے اگرچہ اپنے خلاف آتا ہو۔
"دفاعِ اکابرین میں مسلمانوں کے جذبات سے بہت کھلواڑ ہو چکا!!"

# حاصلِ مطالعہ حسام الحرمین

حُسَام الحرمین علیٰ منحر الکفر والمین کا اول سے آخر تک، لفظ بہ لفظ مطالعہ کرنے اور عباراتِ مطعونہ کو اصل کتابوں سے دیکھنے کے بعد، اِس نتیجے پر پہنچا ہوں: شیخ الاسلام، برکۃ الانام امام احمد رضا حنفی نوراللہ مرقدہ (متوفی 1340ھ) نے بعض ہندستانیوں کی جن عبارات کے متعلق حکمِ شرعی بیان فرمایا، وہ بالکل درست ہے!

آپ نے پوری نیک نیتی اور دیانت داری کے ساتھ، فرضِ منصبی نبھاتے ہوئے ان عبارات پر حکم لگایا-
ایسا نہیں کہ کتر بیونت سے مفہوم بگاڑا ہو، بلکہ حقیقت میں اُن عبارات سے جو مفہوم اخذ ہوتا تھا اُسی پر حکم شریعت بیان فرمایا ہے-
آپ رحمہ اللہ کے بیان کردہ حکم کی حرمین طیبین کے ان اجلہ علما، ائمہ، فقہا، محدثین و متکلّمین رضی اللہ عن جمیعھم نے تائید فرمائی ہے، جو ثقہ و صدوق ہونے کے ساتھ کمال درجے کے محتاط تھے-
ان کفریہ عبارات کو چھوڑنے کے بجائے صفائیاں پیش کرنا انتہائی غلط ہے-
مُتَنَبِّی قادیان مرزا غلام احمد نے کفریات چھوڑنے کے بجائے صفائیاں ہی پیش کی ہیں- مثلاً کہتا ہے:
" میں کافر نہیں ہوں، اور خدا تعالیٰ جانتا ہے کہ میں مسلمان ہوں، اور اُن سب عقائد پر ایمان رکھتا ہوں جو اہل سنت والجماعت مانتے ہیں، اور کلمہ طیبہ لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ کا قائل ہوں، اور قبلہ کی طرف نماز پڑھتا ہوں، اور میں نبوت کا مدعی نہیں بلکہ ایسے مدعی کو دائرہ اسلام سے خارج سمجھتا ہوں"
(آسمانی فیصلہ، ص 3، مطبع ریاض ہند امرتسر)
ایسی باتیں مرزا نے ایک دفعہ نہیں بارہا دہرائی ہیں- اِس کے باوجود پوری امت کا اُس کے کفر پر اجماع ہے؛ بلکہ جو اُس کے کافر ہونے میں شک کرے وہ بھی دائرہ اسلام سے خارج ہے-
جس طرح کفریہ عبارات کی موجودگی میں مرزا کی وضاحتیں اُسے کفر سے نہ بچا سکیں، اِسی طرح ان عبارات کی فاسد تاویلیں انھیں کفر سے اسلام کی طرف نہیں لا سکتیں! ان سے نجات کا ایک ہی طریقہ ہے کہ انھیں کفر سمجھتے ہوئے، ان سے اظہار برات کیا جائے اور سچے دل سے اللہ تعالیٰ کے حضور توبہ کی جائے، بے شک وہ معاف فرمانے والا مہربان ہے-
یہ عبارتیں الہامی نہیں کہ ان سے توبہ کرنے کے بجائے انھیں مضبوطی سے تھام کر امت کو پارہ پارہ کر دیا جائے!
واللہ العظیم! رسول اللہ ﷺ کی عزت و تکریم ہر معزز و مکرم سے بڑھ کر ہے؛ اُن کی جنابِ پاک میں ہلکی سی گستاخی بھی بھاری کفر ٹھہرتی ہے-
اُس جناب میں تو اونچی آواز سے بولنا بھی جائز نہیں—
اللہ کریم ہماری وفائیں صرف اور صرف سید عالم ﷺ کے لیے کر دے----------صرف اور صرف!!

## ضعیف احادیث فضائل میں

فقہاو محدثین رحمھم اللہ کا متفقہ فیصلہ "فضائل اور ترغیب وترہیب میں حدیثِ ضعیف پر عمل، جائز و مستحب ہے"

(الاذکار المنتخبۃ من کلام سید الابرار، امام نووی، فصل فی الامر بالاخلاص وحسن النیات.....، ص 16، ط دار لکتاب العربی بیروت، س 1427ھ)

الحمدللہ! اہل سنت اِس فیصلے کو بہ دل وجان قبول کرتے ہیں۔

## ایک بات

سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ عنہ نے جو ایک موقع پر:

" امصُصْ بظرَ اللاَّتِ " کہا تھا،

ہمارا اِسے اپنی سخت گفتگو کے جواز میں بار بار پیش کرنا نامناسب ہے۔ آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہ لفظ جسے کہے تھے وہ بعد میں شرف صحابیت سے مشرف ہوگئے، رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ تو کیا اب ان لفظوں کا بار بار دہرایا جانا اُن کی اذیت کا سبب نہیں؟

ابولہب کی ایک صحابیہ بیٹی رضی اللہ عنھا کے سامنے جب بہ طور طنز سورت لہب پڑھی جائے تو انھیں تکلیف پہنچے، اور رسول اللہ بھی اُن کی تکلیف محسوس فرمائیں؛ تو کیا مذکورہ الفاظ کو بار بار دہرایا جانا اذیتِ صحابی کا سبب نہیں!!

جو باتیں خاص تناظر میں ہوتی ہیں، انھیں اُسی حد تک ہی رہنے دینا چاہیے۔ فافہم!

## تاریخ ولادت

صحیح سند کے ساتھ، حضرت جابر بن عبداللہ انصاری اور حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنھما سے مروی ہے کہ: "نبی کریم ﷺ کی ولادت بارہ ربیع الاول کو ہوئی"

(الاباطیل والمناکیر والصحاح والمشاہیر، ص 83، دار الکتب العلمیہ بیروت 1422ھ)

اہل سنت بھائیوں سے اگر کوئی اِس مسئلے پر اُلجھے تو آپ اُسے کہیں:

ہم تیری مانیں یا اِن جلیل القدر صحابہ کی مانیں!!

حضرت عبداللہ بن عباس حضور سید عالم ﷺ کے چچا کے بیٹے ہونے کی وجہ سے آپ کے گھر کے فرد ہیں، تو جب گھر والے یہ کہہ رہے ہیں کہ:

"ولادت مبارک بارہ ربیع الاول کو ہوئی" تو پھر باہر والوں کے قیل و قال کا کیا مطلب ــــ!

## مطلب کی آواز

آج ایک بھائی پوچھ رہے تھے کہ:

"بریلی فوبیا" میں مبتلا جناب ناصر رام پوری اور ان کے احبابِ ذی وقار نے پاکستان میں شروع مسئلہ ختم نبوت پر کوئی پوسٹ نہیں کی اور نہ ہی دھرنے والوں کی حمایت میں کچھ لکھا ہے، جب کہ تمام ممالک کے اہل سنت وجماعت اس عظیم الشان دھرنے کی بھرپور تائید کررہے ہیں-

میں نے ان سے عرض کی:

ایک لُہار سارا دن لوہا کُوٹتا تھا، اُس کا کتا آرام سے پاس سویا رہتا؛ جیسے ہی وہ ہتھوڑا رکھ کر کھانا کھانے بیٹھتا تو کتا جاگ اٹھتا-

لوہار نے ایک دن اُس سے کہا:

ڈھیٹ کہیں کے، ہتھوڑے کی ٹھک ٹھک تو تجھے بیدار نہیں کرتی، مگر لقمے کی چپ چپ سے فوراً تیری آنکھ کھل جاتی ہے—

اُس نے کہا: عالی جناب!

"اپنے مطلب کی آواز ہر کوئی سن لیتا ہے"

پاکستان میں ایک فرد (مولانا منشا تابش قصوری صاحب) کا مسئلہ بنا تو ان لوگوں نے اُس کو اِتنا اچھالا، اِتنا اچھالا جیسے جماعتِ اہل سنت کا واحد اور ناقابلِ حل یہی مسئلہ ہو؛ لیکن افسوس کہ پاکستان میں ختم نبوت کے دفاع کے لیے اٹھنے والی لاکھوں لاکھ شیوخ وعلما، اور سنی بریلوی عوام کی آوازیں ہنوز اِن کی سماعت تک نہیں پہنچ سکیں!!

جو لوگ فتنہ انگیز دھیمی سی آواز پر ایسے بیدار ہوجاتے ہیں جیسے کبھی سوئے ہی نہیں تھے، اُن کے گوش مسلسل پندرہ دنوں کے فلک شگاف نعروں:

"لبیک یارسول اللہ، تاجدار ختم نبوت زندہ باد"

سے بہرے کیوں ہیں-

محض اس لیے کہ یہ ان کے مطلب کی آواز نہیں؟؟

اس آواز میں سنیوں بریلویوں کا عشق رسول میں ڈوبا ہوا اتفاق ہے، جب کہ یہ لوگ تو افتراق کے خواہاں ہیں—

## دعوتِ اِنصاف

ایک طرف پاکستانی اہل سنت تحفظ ختم نبوت کے لیے کوشاں ہیں تو دوسری طرف سوشل میڈیا پر "بعض ہندستانی مصباحی"، اپنے اساتذہ سمیت ہزاروں علماے اہل سنت کی تغلیط کرتے ہوئے حسام الحرمین پر قیل وقال کررہے ہیں—

اِن سے گزارش ہے کہ آپ ہمارے معاصر ہیں، آپ اس طرح فساد بپا کرنے کے بجائے اگر ہم سے اس موضوع پر علم کلام

وعقائد کی روشنی میں گفتگو کرلیں تو کتنا اچھا ہو گا!!

اگرچہ ہمیں پورا یقین ہے کہ کلام وعقائد پر جتنی کتابیں سیدی اعلیٰ حضرت نے لکھی ہیں اُن کا نصف بھی آپ نے نہیں پڑھا ،اور نہ ہی آپ کلامی باریکیوں سے آگاہ ہوں گے ؛لیکن اس کے باوجود ہم فراخ دلی سے آپ کے ساتھ مہذب گفتگو کرنے کے لیے تیار ہیں، چاہے تحریری کرلیں، تقریری کرلیں یا سوشل میڈیا پر کرلیں- ہماری گفتگو اس طرح ہوگی کہ:

" پہلے باہمی رضامندی سے اُصول طے ہوں گے ، پھر خلط مبحث کیے بغیر انھی اصولوں کی روشنی میں مدلل ومفصل اور مہذب گفتگو ہوگی "

اگر آپ اہل سنت میں مزید انتشار وافتراق کے خواہاں نہیں تو پھر بہ کشادہ ظرف ، ہماری دعوت قبول فرما کر شکریہ کا موقع دیں!!

اِس سے پہلے بھی ناصر مصباحی صاحب کو مکالمے کی دعوت دی جاچکی ہے جسے تعصب وتنگ نظری کی بھینٹ چڑھا دیا گیا، اب ذیشان مصباحی صاحب پتا نہیں کہاں تک یہ دعوتِ انصاف قبول کرتے ہیں-

مجھے بچپن ہی سے شیخ الاسلام برکۃ الانام امام احمد رضا خان نوراللہ مرقدہ کی کتابیں پڑھنے کا از حد شوق رہا ہے ، اور الحمدللہ پڑھی بھی ہیں-

سیدی اعلیٰ حضرت کی علمِ کلام وعقائد پر وہ مستقل کتابیں ، رسالے ، حواشی اور تعلیقات جن کے نام میں جانتا ہوں ، ساٹھ سے زیادہ ہیں-

میں نے آپ کو پڑھ کر جو سمجھا ہے وہ یہ ہے کہ: "آپ انتہائی محتاط متکلّم تھے ، آپ نے کسی 'مسلمان' کو کافر قرار نہیں دیا"

میں امید کرتا ہوں کہ یہ "بعض مصباحی " سوشل میڈیا پر ناپختہ عوامِ اہل سنت کو تشکیک وفتنے میں مبتلا کرنے کے بجائے ہمارے ساتھ اس موضوع پر علمی واصولی گفتگو کرنا پسند فرمائیں گے-

## اعلیٰ حضرت کی عروضی غلطی

ایک مہربان نے سیدی اعلیٰ حضرت کے شعر پر اعتراض کرتے ہوئے کہا:

"فاضل بریلوی کا صنعت اقتباس میں ایک شعر ہے:

من زار تربتی وجبت لہ شفاعتی

ان پر درود جن سے نوید ان بشر کی ہے

یہ شعر وزن رواں: مفعول فاعلات مفاعیل فاعلن میں ہے ، لیکن اس کا مصرع اول ساقط الوزن ہے ، کیوں کہ:

'لہ' کی "ہ" کو ساکن کردیا گیا ہے-

اگر اشباع ہوتا تو ہم مان لیتے کہ عروضی قاعدہ ہے ، لیکن متحرک کو ساکن کردینا کس قاعدے سے درست ہو گیا؟

اس لیے مان لینا چاہیے کہ امام احمد رضا معصوم عن الخطا نہیں تھے "

اِس مبنی بر جہالت اعتراض پر معترض کو میں کیا کہوں اور کیا نہ کہوں !!

دانائی وعلم پر تجھے اتنا ناز
پھر اُس پہ یہ اِفہام کا اوچھا انداز
تو کس کو پڑھا رہا ہے ، او طفل مزاج!
دیتا ہے کوئی ہوا کو درسِ پرواز ؟

سیدی اعلیٰ حضرت امام احمد رضا رحمہ اللہ دیگر علوم کے ساتھ عروض کے بھی ایسے ماہر تھے کہ مثال نہیں ملتی؛ لیکن "ولی را ولی می شناسد" صاحب فن کو صاحب فن ہی پہچان سکتا ہے۔ نصیر گولڑوی کہتے ہیں:

نکتہ رس ، ناقد ، رُباعی گو ، یَم فنِ عروض
پاک جوہر ، خوش بیاں ، شیریں کلام احمد رضا

یَم سمندر کو کہتے ہیں، یم فن عروض کا مطلب ہے "عروض کا سمندر"۔

یہ اُس شخص کی بات ہے جس کا باپ داد بھی شاعر تھا، اور وہ خود بھی شاعرِ ہفت زباں تھا۔

اور ایک معترض صاحب ہیں کہ.....کچھ نہ پوچھیے!

سیدی اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ کا اقتباس میں شعر سو فی صد درست ہے، لیکن اِس کے وزن کو سمجھنے کے لیے کلامِ اساتذہ کے وسیع مطالعے کی ضرورت ہے جس سے معترض کوسوں دور ہے! شاعر جب اقتباس کرتا ہے تو اُسے وزن شعری برقرار رکھنے کے لیے مقتبس الفاظ میں ترمیم واضافے، اشباع واسقاط اور تسکین کی اجازت ہوتی ہے؛ اس کی بیسیوں مثالیں اردو وفارسی شعرا کے کلام میں موجود ہیں۔

یہاں ہم "مشتے نمونہ از خروارے" صرف متحرک کو ساکن کرنے کی کچھ مثالیں پیش کرتے ہیں، کیوں کہ معترض کو اِسی پر اعتراض ہے۔

اردو زبان کے عظیم شاعر، ولی دکنی (متوفی قریب: 1725ء) کہتے ہیں:

تمام پات یسبح بحمدہ کے بہ حکم
زبان حال سوں کرتے ہیں ذکر سبحانی

(کلیات ولی، مرتب نورالحسن ہاشمی، در مدح حضرت شاہ وجیہہ الدین، ص 293، الوقار پبلی کیشنز لاہور 2016ء)

یہ شعر بحر مجتث مثمن مخبون محذوف مسکن میں ہے، تفعیل: مفاعلن فَعِلاتن مفاعلن فعلن

اس میں قرآنی آیت:

تُسَبِّحُ لَهُ ٱلسَّمَٰوَٰتُ ٱلسَّبۡعُ وَٱلۡأَرۡضُ وَمَن فِيهِنَّۚ وَإِن مِّن شَيۡءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمۡدِهِۦ وَلَٰكِن لَّا تَفۡقَهُونَ

تَسۡبِيۡحَهُمۡ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا - (بنی اسرائیل، 44) سے اقتباس کیا ہے -
لیکن یسبح کی "ح" آیت کی طرح متحرک نہیں، ساکن باندھی ہے؛ بالکل اسی طرح جیسے سیدی اعلیٰ حضرت نے وجبت لہ کی "ہ" ساکن باندھی ہے -
یہاں یہ بھی یاد رہے کہ ولی دکنی کوئی عام ہستی نہیں، یہ عالم فاضل اور صوفی طبیعت ہونے کے ساتھ ایسے بلند پایہ شاعر ہیں کہ میر تقی میر بھی جن کا عاشق ہے؛ میر ایک غزل میں کہتا ہے:

خوگر نہیں ہم یوں ہی کچھ ریختہ کہنے سے
معشوق جو اپنا تھا ، باشندہ دکن کا تھا

(کلیات غزلیاتِ میر، مرتبہ ڈاکٹر علی محمد خاں، غ170، ص148، فیصل ناشران و تاجران کتب لاہور، 2013ء)

خاقانی ہند ابراہیم ذوق (متوفیٰ 1854ء) کہتے ہیں:

گر قتل ہی کرنا ہے ، عاشق کہیں ہو جلدی
لاحول ولا قوۃ ، کیا دیر لگائی ہے

(کلیات ذوق، مرتبہ ڈاکٹر تنویر احمد علوی، غ205، ص235، مجلس ترقی ادب لاہور 1430ھ)

یہ شعر بحر ہزج مثمن اخرب میں ہے، تفعیل: مفعول مفاعیلن مفعول مفاعیلن -
اس میں الفاظ: لاحول ولا قوۃ الا باللہ سے اقتباس کیا ہے اور قوۃ کو قُوۃ باندھا ہے؛ ایک تو حرکت اڑادی ہے اور دوسرا "ۃ" کو ہ کے بجائے ت سے بدل دیا ہے -
عالم بے بدل پیر سید مہر علی شاہ گولڑوی (متوفیٰ 1937ء) کہتے ہیں:

لم یکن احد لك كفوا ولم
لیس شیئا مثلك یا ذالکرم

(کلام حضرت پیر مہر علی شاہ گولڑی رحمۃ اللہ علیہ، انتخاب پیر سید ارتضیٰ علی کرمانی، مثنوی المعروف گوگو، ص65، عظیم اینڈ سنز پبلشرز لاہور،)

یہ شعر بحر رمل مسدس محذوف میں ہے، تفعیل: فاعلاتن فاعلاتن فاعلن -
اِسے سورت اخلاص سے اقتباس کیا ہے، اِس میں پیر صاحب قبلہ نے احد کی "ح" کو ساکن باندھا ہے اور کفُوا کے "ف" کو بھی ساکن - بالکل اسی طرح جیسے میرے امام نے لہ کی "ہ" کو ساکن باندھا ہے -

میری طرف سے مقتبس متحرک کو ساکن کرنے کی یہ مثالیں معترض کی علمی ضیافت کے لیے بہت کافی ہیں -
اب میں "ماہرِ عروض" معترض صاحب کے ذمے بھی کچھ لگاتا ہوں:
یہ بتائیں کہ مولانا روم نے صنعت اقتباس کے اِن اشعار میں کس کس جگہ متحرک کو ساکن باندھا ہے!

[1] تا الیہ یصعد اطیاب الکلم

صاعداً منا الیٰ حیث علم

(د1، ش882)

2 لاجرم ابصار ما لا تدرکہ

وھو یدرک بین تو از موسیٰ وکہ

(د1، ش1135)

## علمِ عروض اور مدارس

کچھ دنوں پہلے پاکستان کے ایک مفتی صاحب کسی اخبار میں کالم لکھا، جس میں آجا کے مرزا غالب کا ایک ہی شعر نقل کیا اور وہ بھی درست نقل نہ کر سکے -اسی طرح مختلف ٹی وی چینلز کی زینت بننے والے ایک نامی گرامی مفتی صاحب نے مجھے ایک منقبت لکھ کر دکھائی جو غیر موزوں تھی، لیکن وہ اس پر مصر تھے کہ میں اس پر خوب واہ واہ کروں-

اشعار کے ساتھ اِس ستم ظریفی کی وجہ یہ ہے کہ ہمارا دینی علمی طبقہ فنِ عروض کو چھوڑ بیٹھا ہے؛ ہمارے مدارس کا نصاب تو اِس سے بالکل خالی ہو چکا ہے، یہی وجہ ہے کہ شعر کہنا تو دُور کی بات، دُرُست طریقے سے شعر پڑھنا بھی نہیں آتا-

ہمارے موجودہ مدارس کا تو یہ حال ہے کہ دس دس، بیس بیس سال سے متنبی و حماسہ پڑھانے والے بھی عروض سے کورے ہیں—

ادبیات یہ نہیں کہ عربی و فارسی یا اُردو شعر پڑھ، پڑھا کر اس کا نثری ترجمہ کر دیا جائے؛ بلکہ معانی و بدیع وغیرہ کے ساتھ ساتھ شعر کی تقطیع، اسقاط و زحافات وغیرہ مباحثِ تقطیع بھی شامل ہوں تو ادب، ادب بنتا ہے!!

آج نہ تو ہمارے خطیب و مفتی شعر درست پڑھتے ہیں، نہ ہمارے لکھاری اشعار کے غلط و صحیح میں تمیز کر سکتے ہیں-

ایک وقت تھا جب علما کمال کے شاعر اور زبردست عامل ہوا کرتے تھے، مگر اب ان دونوں شعبوں کو علما نے خیرباد کہہ دیا ہے (الا ماشاء اللہ)؛ اور اِن شعبوں پر فاسق و فاجر، اور بدمذہب و ملحد قسم کے لوگ قبضہ جمائے بیٹھے ہیں!! کاش کے! اہل علم میں یہ فن سیکھنے کا بھی ذوق بیدار ہو جائے-

خدا جانتا ہے اگر ہمارا دینی طبقہ یہ فن سیکھے تو دوسروں کی بہ نسبت کئی درجے بہتر سیکھ سکتا ہے—

## کیا اصحاب کہف کا کتا جنتی ہے؟

باوجود تلاشِ بسیار میں اصول شرعیہ سے یہ معلوم نہیں کر سکا کہ اصحابِ کہف کا کتا جنت میں داخل ہو گا-

میں یہ نہیں کہتا کہ ایسا ممکن نہیں، بس مجھے اس کے کُنہ تک پہنچنا ہے، جس کے لیے علمائے کرام میری مدد فرمائیں!

یہ بات بعض مفسرین نے لکھی ہے اور ان کی متابعت میں دیگر علما نے؛ جنھوں نے لکھا، ان مبارک ہستیوں پر کلام نہیں،

ان کی عظمت کو لاکھوں سلام! لیکن میں اُس وقت تک یہ بات تسلیم نہیں کر سکتا جب تک کسی واضح دلیل سے ثابت نہ ہو جائے؛ اور یہی میرے بزرگوں کی تعلیم ہے۔

شیخ الاسلام امام احمد رضا خان نور اللہ مرقدہ فرماتے ہیں:

بہت سی متداول تفسیروں میں جو مذکور ہوتا ہے وہ سب ایسا نہیں جس کا قبول کرنا ضروری ہو، اگرچہ نہ کوئی دلیلِ عقلی اُس کی معین ہو، نہ کوئی دلیل شرعی اس کی موید ہو۔ (فتاوی رضویہ، ج28، ص532)

ہر وہ شخص جسے علوم قرآن کی قسموں سے کسی قسم کے علم کی ممارست تھی، اُس کلام سے کلامِ عزیز کی تفسیر کرنے لگا جو اُس کی سمجھ تک تھا، اور جس کی طرف اُس کی نظر پہنچی۔

پھر لوگ رواں دواں اقوال کو جمع کرنے کے شائق ہوئے تو جو انھوں نے پایا اُسے نقل کر دیا اور تحقیق کم کی؛ تو اِسی سے اقوال کی کثرت اور حق کی ناحق سے آمیزش آئی۔ (ایضًا، ص534)

امام اجل احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ انھوں نے فرمایا:

تین کتابوں کی کوئی اصل نہیں، کتب سیر و غزوات و تفسیر۔

میں کہتا ہوں اگرچہ یہ بات اپنے اطلاق پر جاری نہیں جیسا کہ واقعہ اس کا گواہ ہے، مگر یہ بات یقینی ہے کہ امام احمد نے یہ بات نہ کہی جب تک ان کتابوں میں صحیح و سقیم کے خلط کا غلبہ نہ دیکھ لیا جیسا کہ ظاہر ہے۔

اور یہ تو اُن کے زمانہ میں تھا تو اُن کے بعد کیسی حالت ہوئی ہوگی۔ (ایضا، ص537، 538)

بس کسی بھی بات کا محض تفسیروں میں ہونا اُس کے صحیح ہونے کی دلیل نہیں ہو سکتا، تو کتے کے جنتی ہونے کو صرف تفسیروں کی وجہ سے کیسے درست تسلیم کر لیا جائے ــــ!!

## اہل علم کے لیے نکتہ

کسی امام سے منسوب کسی مسئلے کا ایک یا ہزار کتاب میں پایا جانا اِس بات کی دلیل نہیں بن سکتا کہ یہ واقعی اُنھی کا قول ہے ــــ

(الابریز من کلام سیدی عبد العزیز، ص430، دار صادر بیروت)

ہمارے وہ خطبا و واعظین جو "ہر بات پر"، یہی دلیل پیش کرتے ہیں کہ یہ فلاں فلاں کتاب میں ہے، فلاں فلاں نے لکھا ہے؛ انھیں اِس سے سبق حاصل کرنا چاہیے۔ بہت ساری ایسی باتیں بھی ہیں جو بہت ساری کتابوں میں موجود ہونے کے باوجود، وجود نہیں رکھتیں؛ اِس لیے علم و تحقیق کا دامن تھامے رکھنے ہی میں عافیت ہے۔

## جدید و قدیم

ہمارے علاقے میں محمد اسحاق نامی ایک عالم فاضل طبیب تھے، جو پیر مہر علی شاہ صاحب کے بھی معالج رہے۔

یہ بیان کرتے ہیں:

میں کراچی گیا تو مولوی محمد شفیع دیوبندی.... اپنی بیگم کو تشخیص کے لیے میرے پاس لایا۔

میں نے کہا:

تم نبی مکرم ﷺ کے علمِ غیب پر بحث و تمحیص اور نقد و جرح کرتے ہو، میں ایک ادنیٰ سا طبیب ہوں، کہو تو بچپن سے لے کر اب تک جو جو بیماری اس کو لاحق ہوئی ہے اور جو جو علاج تم نے کیے ہیں، میں سب بیان کر دوں؟

(میری اس بات پر) مولوی صاحب شرمندہ ہو کر رہ گئے اور کوئی جواب نہ دے سکے۔

(دیکھیے: مجلہ حجۃ الاسلام لاہور، ص37، دارالاسلام لاہور، شمارہ 1، 1434ھ)

جب بھی رمضان شریف آتا ہے تو ہمیں کہا جاتا ہے:

قدیم فقہا کے نزدیک تو فلاں چیز سے روزہ نہیں ٹوٹتا لیکن جدید طِبی تحقیق سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ ٹوٹ جاتا ہے، لہٰذا صحیح یہ ہے کہ ٹوٹ جاتا ہے - ہمیں اس پر کوئی اعتراض نہیں کہ دینی مسائل میں ایک عالم قُدما سے علمی و فقہی دلائل کی بِنا پر اختلاف کرے لیکن.....

یہ ہماری سمجھ سے بالاتر ہے کہ قُدَما کے علم و تجربے پر "جدید طِبی تحقیق" ٹھونسنا شروع کر دے۔

طِبی طور پر بھی جیسا علم و تجربہ انھیں حاصل تھا اُس تک جدید تحقیق نہیں پہنچ سکتی۔

کیا آج تک جدید طِبی تحقیق کو وہ وسعت علم نصیب ہوئی جو محمد اسحاق جیسے اَطبا کو تھی؟؟

## جنگ بدر میں تعداد تین سو پانچ

شیخ عبدالحق محدث دہلوی قدس سرہ کی توضیح کے مطابق:

وہ صحابہ جنھیں جنگ بدر میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ہمراہی نصیب ہوئی، اُن کی تعداد تین سو پانچ (305) تھی، جن میں اسی (80) مہاجرین اور بقیہ انصار تھے۔

ہاں! آٹھ (8) صحابی وہ ہیں جو کسی وجہ سے جنگ میں شریک تو نہیں ہوئے لیکن مال غنیمت سے انھیں حصہ عطا فرمایا گیا، اسی بِنا پر اہل سیر انھیں بھی بدری صحابہ میں شمار کرتے ہیں، اور وہ تین مہاجرین اور پانچ انصار میں سے ہیں، رضی اللہ عن جَمیعھم — اس طرح "313" تعداد ہوتی ہے۔

(دیکھیے: مدارج النبوت فارسی، ج2، ص81، نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور، 1997ء)

## خواجہ عثمان ہارونی یا ہرونی؟

حضور خواجہ غریب نواز معین الدین اجمیری کے مرشد گرامی، خواجہ عثمان رحمہ اللہ کے متعلق فیض ملت مفتی فیض احمد

اویسی قدس سرہ کہتے ہیں:

حضرت عثمان ہرونی ملک خراسان کے قصبہ ہرون میں پیدا ہوئے.....ہرونی کو لوگ ہارونی کہتے ہیں جو بالکل غلط ہے-

(حاشیہ: اخبار الاخیار مترجم، طبقہ اول، ص86، زاویہ پبلشرز لاہور)

## معین الدین حسن سَنجری یا سِجزی؟

ہندستان کے مشہور صوفی بزرگ حضرت خواجہ معین الدین چشتی اجمیری رحمہ اللہ کا نامِ پاک حسن ہے، اور عوام و خواص آپ کو "حسن سنجری" کہتے، لکھتے ہیں-

آپ کو سنجری کہنا، لکھنا درست نہیں؛ اصل لفظ سجز (سِ جز) ہے، جس کے ساتھ یاے نسبتی لگانے سے سِجزی بنا-

اِس کی وجہ یہ ہے کہ آپ رحمہ اللہ کا تعلق علاقہ "سجز" سے تھا، جو کہ سجستان کا مخفف اور سیستان کا معرب ہے-

(دیکھیے: مناقب الحبیب مترجم، حاجی خواجہ نجم الدین، م1287ھ، ص51، دارالاسلام لاہور)

ایک بات یاد رہے کہ: مناقب الحبیب کا کچھ ماہ پہلے دارالاسلام سے ترجمہ چھپا ہے، جس میں لفظ سجز کو کاتب نے سنجر کر دیا ہے، جو کہ غلط ہے؛ حضرتِ مصنف قدس سرہ نے باقاعدہ اس کا تلفظ اِن الفاظ میں لکھا ہے: سین مہملہ کی کسرہ، جیم کے سکون اور رائے معجمہ-(ص51)

مصنف نے رائے معجمہ، نقطے والے ز کو کہا ہے جسے کاتب رسمجھتا رہا}

اِس علاقے سے منسوب کو "سنجری" کہنا بالکل غلط ہے، درست سجزی ہے-

حافظ ابوبکر حازمی کہتے ہیں: سجز، سجستان کا نام ہے، جس سے منسوب سجزی کہلاتا ہے-

(انظر: تھذیب الاسماء واللغات، امام نووی، فصل فی اسماء المواضع، ج3، ص159، دارالکتب العلمیہ بیروت)

ثقہ مورخ علامہ یاقوت حموی م626ھ، کہتے ہیں:

سجز کے سین پر زیر، جیم ساکن اور آخر میں ز ہے.....اس سے منسوب سجزی کہلاتا ہے-

(معجم البلدان، ج3، ص189، دار صادر بیروت)

لہٰذا آپ کا نام پاک ہوا:

خواجہ معین الدین حسن سِجزی نوراللہ مرقدہ

## مودودی کی کتاب

مودودی نے " خلافت و ملوکیت " نامی انتہائی گم راہ کن کتاب لکھی، جس میں صحابہ کرام بالخصوص اموی صحابہ(

سیدنا عثمان غنی و سیدنا امیر معاویہ وغیرہ) پر زَبانِ طعن دراز کی، سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنھا، سیدنا طلحہ، سیدنا زبیر، سیدنا سعد اور سیدنا ابن مسعود رضی اللہ عنھم کو مشق ستم بنایا- مودودی کی لفّاظی اور خود اعتمادی سے بولے گئے جھوٹوں نے عوام تو عوام خواص کو بھی ورغلانے میں کسر نہ چھوڑی-

اس کتاب کے رد میں دیوبندی مسلک سے تعلق رکھنے والے ایک عالم نورالحسن بخاری نے "عادلانہ دفاع" لکھی-

جب یہ کتاب منظر عام پر آئی تو ایوانِ مودودیت میں زلزلے کے شدید جھٹکے محسوس کیے گئے اور شخصیت پرستی کا عفریت جاگ اٹھا جس نے اشاعتِ ثانی میں رکاوٹیں کھڑی کر دیں، جو آج بھی کھڑی ہیں-

مجاہدِ تحریکِ ختم نبوت حضرت علامہ عبدالستار خاں نیازی قدس سرہ اُس وقت جیل میں تھے جب نورالحسن بخاری نے انھیں اپنی یہ کتاب پیش کی؛ آپ بعد از مطالعہ اتنے خوش ہوئے کہ بیان سے باہر ہے-

مودودی کی خلافت و ملوکیت کے رد میں کافی کتابیں لکھی گئی ہیں جن میں سے اکثر میرے مطالعہ سے گزری ہیں، لیکن یہ کتاب مودودی کے پھیلائے زہر کا صحیح معنوں میں تریاق ہے-

## صوفیہ پر تین ایسی کتابیں

تصوف و صوفیہ پر تین ایسی کتابیں لکھی گئی ہیں جن کا نام: "بھجۃ الاسرار" ہے، اور تینوں کے مصنفین کا نام "علی" ہے- رحمھم اللہ

۱: شیخ علی بن حسین، متوفی 384ھ

۲: شیخ علی بن عبداللہ، متوفی 414ھ

۳: شیخ علی بن یوسف، متوفی 713ھ

ان میں شیخ علی بن یوسف رحمہ اللہ کی کتاب کو جو پذیرائی ملی، وہ کسی کو نہیں ملی۔

کیوں کہ یہ کتاب امام الاولیا، سیدنا غوث اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے فضائل و مناقب میں ہے۔

امام احمد رضا قادری نوراللہ مرقدہ کہتے ہیں:

امام ابوالحسن علی ۔۔۔۔۔۔۔۔ مصنف کتابِ مستطاب: بھجۃ الاسرار، امام اجل، امام یکتا، محقق، بارع، فقیہ، شیخ القرا، (عارف باللہ، ثقہ ثبت، حجت، محدث راویۃ الحضرۃ والعلیۃ القادریۃ) ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مشاہیر مشائخ علما (سے) ہیں۔

اور ۔۔۔۔۔۔۔ کتابِ مستطاب (بہجۃ الاسرار) معتبر و متعمد (ہے)، کہ اکابر ائمہ نے اس سے استناد کیا، اور کتب حدیث کی طرح اس کی اجازتیں دیں۔

اسی بہجۃ الاسرار شریف کی امام ابن ملقن شافعی اور امام ابن حجر عسقلانی رحمھما اللہ نے تلخیص بھی کی ہے۔

(ملتقطاً: کچھ غبطۃ الناظر فی ترجمۃ الشیخ عبدالقادر بارے، اور فتاوی رضویہ شریف)

## بهجة الاسرار

کچھ دیر پہلے فیس بک پر محمد علی (ابن طفیل ازہری) کی ایک پوسٹ نظر سے گزری، جس میں موصوف نے بعض علما کے اقوال کی آڑ لے کر یہ باور کروانے کی کوشش کی ہے کہ:

1: بهجة الاسرار ناقابل اعتبار کتاب ہے، اس کا مصنف متہم بالوضع ہے۔ (العیاذ باللہ) اور
2: قدمی هذه علی رقبة کل ولی الله، شطحیات میں سے ہے۔ (معاذاللہ ثم معاذاللہ)
یہ دونوں باتیں انتہائی غلط ہیں، جو محرر مُقتبس کی کم علمی و کوتاہ فہمی پر دلالت کرتی ہیں۔
محرر نے امام شطنوفی رحمہ اللہ جیسے ثقہ اور ثبت عالم دین کا نام بڑے عامیانہ انداز میں لکھا ہے، جس کی وجہ یا تو جہالت ہے، یا خُبث باطنی۔

دانائی وعلم پر تجھے اتنا ناز
پھر اُس پہ یہ اِفہام کا اوچھا انداز
تُو کس کو پڑھا رہا ہے، او طفل مزاج!
دیتا ہے کوئی ہوا کو درسِ پرواز؟

امام شطنوفی رحمہ اللہ اکابر اولیا میں سے ہیں، جنھیں حضرت ذہبی و سیوطی رحمہما اللہ جیسے ائمہ نے بھی "الامام الاوحد" تسلیم کیا ہے، اور اجلہ علما و محدثین رحمہم اللہ نے اُن کی اور ان کی کتاب بهجة الاسرار شریف کی تعریف کی ہے، اور اسے معتبر ترین قرار دیا ہے۔
نیز ارشاد پاک: قدمی هذه کو صدیوں سے کثیر علما، اولیا، فقہا، محدثین اور ائمہ رحمہم اللہ درست اور برحق تسلیم کرتے آرہے ہیں۔
ان کے آگے کسی طفل مکتب کی شیخیاں کوئی حیثیت نہیں رکھتیں۔
اہل سنت ایسے نومولود محققوں سے آگاہ رہا کریں جو کبھی صلح کلیت کی تبلیغ کرتے ہیں، کبھی ائمہ امت پر طعن کرتے ہیں، تو کبھی غوث پاک کے حضور لب کشائی کرتے ہیں۔

## پھکی شاہ

رافضی بڑی مکار قوم ہے، یہ مختلف حِیلوں بہانوں سے مسلمانوں کو اپنے چُنگل میں پھنساتی ہے۔
حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی رحمہ اللہ نے تحفۂ اِثنا عَشَرِیَّہ میں اِن کے 107 مکروں کی نشاندہی کی ہے، جن کے ذریعے یہ اہل سنت کو گمراہ کرتے ہیں۔

یہ بھی اِن کا ایک مکر ہے کہ:
اپنا کوئی بندہ مسلمانوں کی صفوں میں داخل کر دیتے ہیں، جو غیر محسوس طریقے سے رفض پھیلاتا رہتا ہے۔
پھکی شاہ مرزا محمد علی جہلمی اسی طرح کا ایک باطنی رافضی ہے، جو گھوسٹ بڈھے اسحاق جھالوی کی پھکیاں کھا کر توانا ہوا ہے۔
یہ پوری مکاری کے ساتھ مسلمانوں کی تعریف و توصیف کرتا ہے، محدثین کا ذکر کرتا ہے، حدیثیں بیان کرتا ہے؛ خود کو علمی اور داعی حق باور کرواتا ہے، لیکن موقع بہ موقع:
کُھلے یا دبے لفظوں ایسی باتیں کرتا ہے جن سے صحابہ کرام علیہم الرضوان کے بارے میں برا گمان پیدا ہو جائے۔ معاذاللہ ثم معاذاللہ!
آج میں نے ایک تبرائی رافضی کی تقریر سُنی جو اسے خراجِ تحسین پیش کرتے ہوئے کہہ رہا تھا:
"ہر کسی کو دل سے حفظہ اللہ نہیں بولا جاتا، لیکن میں انجنیر (مرزا محمد علی) صاحب کو دل سے حفظہ اللہ بولوں گا۔
وہ میرے عزیز ہیں، میرے بھائی ہیں، بڑا احترام کرتا ہوں میں ان کا۔
کیوں کہ ان کی بڑی خدمات ہیں، وہ بڑا کام کر رہے ہیں۔"
واقعی اسحاق جھالوی کی طرح اس کی بھی بڑی خدمات ہیں، جنھیں دنیاے رفض بہت یاد رکھے گی!!
ہمارے پاک نبی ﷺ ہمیں فرما گئے تھے:
"اللہ کریم نے ساری کائنات سے مجھے چُنا، اور میرے لیے میرے صحابہ کا انتخاب کیا۔۔۔۔۔۔۔" (حدیثِ صحیح)
ہم تو اپنے رب کے انتخاب پر بہت خوش ہیں اور دعا کرتے ہیں:
اے کریم! ہمارا حشر بھی اپنے منتخب بندوں کے ساتھ کرنا۔
ہمارے پروردگار کے انتخاب میں کوئی کمی نہیں، اس خالق و مالک نے اپنے حبیب ﷺ کے لیے ایسے پیارے لوگوں کا انتخاب کیا جن کی مثال کسی نبی علیہ السلام کے مصاحبوں میں نہیں ملتی۔ صَلوَاتُ اللہِ تعالیٰ وتَسلیماتُہ عَلَیہِ وَعَلَیہِم اَجمَعِین

## غزوہ ہند

۱: دینِ اسلام کی سربلندی کے لیے جو جنگیں سرزمینِ ہند میں لڑی گئیں، اُن کا شمار بھی غزوہ ہند میں ہو سکتا ہے۔
اور
۲: قیامت کے قریب بھی ایک جنگ ہوگی جو غزوہ ہند کہلائے گی، جس میں لڑنے والے مجاہدین کو سیدنا عیسیٰ روح اللہ علیہ السلام کی معیت نصیب ہوگی۔
موجودہ دور میں پاکستان کی ہندستان سے ایٹمی لڑائی کا غزوہ ہند ہونا، سمجھ سے باہر ہے۔

ہاں، اگر پاکستانی فوج کشمیری یا ہندستانی مسلمانوں کو کافروں کے چُنگل سے چُھڑانے کے لیے جہاد کرتی ہے تو یہ اَجر و ثواب سے خالی نہیں۔

## بددعا

بعض اہل علم اصرار کرتے ہیں کہ:

"انبیا علیہم السلام نے جو کافروں کے خلاف ہلاکت کی دعا کی تھی، اُسے "بددعا" کہنا درست نہیں، کیوں کہ بددعا میں لفظِ "بد" پایا جاتا ہے، جس کا استعمال ناجائز اور گناہ ہے۔"

اس سلسلے میں عرض ہے کہ:

لفظِ بددعا پر دعاے ضرر کو ترجیح دینا، اور بددعا کو گناہ پر محمول کرنا بلا دلیل ہے۔

بددعا با قاعدہ ایک لفظ ہے، جس کا اردو میں اطلاق اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ سے مانگی جانے والی اُس دعا پر ہوتا ہے جو کسی کے نقصان یا سزا کے لیے کی جائے۔

اب اس سے "بد" کو الگ کر کے نئے معنے اخذ کر لینا کیسے درست ہو گیا!!

اس طرح اگر آدھے آدھے لفظ سے معنی آفرینی کی جائے تو بات بہت دور تک چلی جاتی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

ایسے تو آپ کا مختار: "دعاے ضرر" بھی نہیں بچ پاتا، کیوں کہ یہ بھی "ایذا" کے معنے سے خالی نہیں۔

انبیا علیہم السلام کی بعض دعاؤں کو کثیر علماے اہل سنت لفظِ بددعا سے تعبیر کرتے آئے ہیں، اور اسے کسی قسم کی عُرفی و معنوی بے ادبی بھی قرار نہیں دیا۔ فتاوی رضویہ شریف کی تئیسویں جلد کے، صفحہ دو سو اٹھارہ پر سیدی اعلی حضرت نور اللہ مرقدہ جیسے مودب نے بھی سیدنا موسی علیہ السلام کے متعلق یہ لفظ استعمال کیا ہے۔

اس لیے اگر کوئی اردو خواں اِسے استعمال کرتا ہے تو اس پر جھٹ سے مرتکبِ ناجائز و گناہ کا فتوی نہیں لگا دینا چاہیے۔

## ترکش ڈرامے

کیا فرماتے ہیں مفتیانِ کِرام کہ:

تُرک صدر کی ترغیب پر، وزیرِ اعظم پاکستان نے ڈرامہ "Diriliş Ertuğrul" اردو زبان میں چلانے کا آرڈر جاری کیا ہے، جس پر یکم رمضان سے عمل ہونے جا رہا ہے۔ اس ڈرامے کا تقریباً تمام اسلامی ممالک میں شہرہ ہے، اور دنیا کی بڑی بڑی زبانوں میں اس کا ترجمہ بھی ہو چکا ہے۔ کیا اسے دیکھنا شرعاً جائز ہے یا ناجائز؟

اگر ناجائز ہے تو کس درجے کا.... اگر جائز ہے تو کیسے؟

یہ ڈرامہ دیکھ تو بہت سارے لوگ رہے ہیں، لیکن اس کے متعلق شرعی حکم کیا ہے؟

یہ ابھی تک تفصیلی طور پر بیان نہیں کیا گیا۔
اس لیے آپ کی خدمت میں گزارش ہے کہ اس کا ترجیحاتی بنیاد پر شرعی حکم بیان فرمائیں، اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ آپ کو اجر دے گا۔
شرعی حکم بیان کرنے سے پہلے کچھ چیزیں ملحوظ رکھی جائیں۔ یہ ڈرامہ اور اس جیسے دیگر تُرکی ڈرامے (کوت العمارہ، سلطان عبدالحمید، کورلش عثمان وغیرہ) ایک خاص سوچ کے تحت بنائے جا رہے ہیں۔
اِن ڈراموں میں یہ چیزیں ملتی ہیں:
1: محبت و تعظیم رسول اور شعائر اسلامیہ کی حفاظت کا درس
2: مسلمانوں کے عالمی خوف اور مایوسی کا خاتمہ
3: خلافت کی برکتیں اور اس کے فوائد
4: مشکل وقت میں اللہ کو پکارنا اور ہمت نہ چھوڑنا
5: نماز اور جمعہ کی ادائگی
6: جذبہ جہاد اور شوقِ شہادت
7: دمِ نزع کلمہ طیبہ کے ذکر کا التزام
8: علما اور صوفیہ سے رہنمائی اور ان کا احترام
9: میاں بیوی کی ایک دوسرے سے وفا
10: عورتوں کا مردوں کی طرح جہاد کرنا
11: امور خانہ داری اور بچوں کی کفالت کے ساتھ ساتھ معاشی بہتری کے لیے، مردوں کے ساتھ محنت کرنا
12: عقل مندی اور دانائی سے دشمنوں کی چالیں انھی پر پلٹنا، اور دن بہ دن ترقی کرنا وغیرہ
اس کے ساتھ ساتھ ان ڈراموں میں یہ چیزیں بھی ہیں۔
1: مسلمانوں کو کافروں کے کردار میں پیش کرنا، اور ان کے طور اطوار سے کفریہ شِعائِر کا اظہار ہونا۔
2: نامحرموں کو آپس میں محرم دکھانا، اور محرموں، نامحرموں کا باہمی اختلاط۔
3: بے پردگی اور عِشقیہ، فِسقیہ مناظر
4: موسیقی کی نہ ختم ہونے والی دُھنیں۔
5: خشخشی داڑھیاں اور عورتوں جیسے لمبے بال وغیرہ۔ خیر و شر کے ان دونوں پہلوؤں کو ملحوظ رکھ کر شرعی حکم بیان کیا جائے!

## ترکی ڈرامے

تُرک، جو تاریخی ڈرامے بنا رہے ہیں اُن کی شرعی حیثیت تو مفتیانِ کرام ہی متعیّن کر سکتے ہیں، ہم اُن پر کلام کرنے

کے مجاز نہیں۔

البتہ اتنا کہنے کی جسارت کرتے ہیں کہ:

یہ ڈرامے، آخر ڈرامے ہیں؛ اِنھیں ڈراموں کی حد تک ہی رکھیے!

ڈرامے دیکھنا کوئی کارِ ثواب نہیں کہ اِس کی ترغیب دلائی جائے۔

زیادہ سے زیادہ اِس کی اجازت ہو سکتی ہے کہ: اگر کوئی ایسا سین ہو، جس میں قرآن و حدیث کا ترجمہ یا صالح عمل (تلاوت، نعت وغیرہ) فلمایا گیا ہو، تو اسے دیکھا جا سکے۔ ویسے ہمارے نسیم حجازی صاحب نے جب ناول لکھے تھے تو ایک طبقہ ان سے بھی بہت متاثر ہوا تھا، اور وہ سمجھتا تھا کہ یہ ناول اپنے جیسے بہت سارے مجاہدین پیدا کر دیں گے؛ لیکن..... ہَنُوز ایسا نہیں ہوا۔

تاریخی ڈرامے، فلمیں، ناول، داستانیں؛ زیادہ سے زیادہ جذبات برانگیختہ کر سکتے ہیں۔ جذبات کا درست استعمال..... حقائق پر مبنی چیزیں ہی سکھاتی ہیں۔ ڈرامے بنانے کے بجائے اگر سکول کی تعلیم "مکمل اسلامی" کر دی جائے تو بہت کچھ حاصل کیا جا سکتا ہے۔

## ویڈیو اور تصویر

تقریباً بیس سال پہلے کی بات ہے، مجھے معلوم ہوا کہ:

عالمِ ربانی قبلہ مفتی فیض احمد اویسی رحمہ اللہ ہمارے علاقے میں تشریف لا رہے ہیں تو میں بڑے شوق سے زیارت کرنے کے لیے گیا، اور آپ کی تشریف آوری سے کافی دیر پہلے ہی جلسہ گاہ میں پہنچ گیا۔

آپ جب تشریف لائے تو ویڈیو بن رہی تھی، آپ نے کیمرہ دیکھ کر منھ پھیر لیا اور فرمانے لگے:

اسے بند کریں! آپ لوگ محفل اس لیے کر رہے ہیں کہ اللہ تعالیٰ راضی ہو اور وہ ایسے کاموں (مووی وغیرہ بنانے) سے راضی نہیں ہوتا۔

مجھے آپ کا یہ جملہ بہت اچھا لگا اور میں نے نیت کی کہ انشاء اللہ ویڈیو اور تصویر سے بچنے کی کوشش کیا کروں گا۔

دینی ویڈیو اور موجودہ تصویر وغیرہ کا مسئلہ علمائے اہل سنت کے مابین اختلافی ہے، اگرچہ معتد بہ اس کے جواز کے قائل ہو چکے ہیں۔۔۔۔۔۔۔ لیکن ہمارا دل اب بھی اسی طرف راغب ہے کہ:

"اصحاب تقویٰ اس سے منع فرما گئے، تو بچنا چاہیے۔"

شوقیہ تصویریں، فضول ویڈیوز اور سیلفیوں کے بجائے اپنے احوال بہتر کرنے چاہییں ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ہماری تصویریں دیکھ کر ہو سکتا ہے اہلِ محبت سراہیں، واہ واہ کریں؛ لیکن اگر ہمارا معاملہ اللہ رب العزت کے ساتھ درست نہ ہوا تو ہلاکت ہی ہلاکت ہو گی۔

## دم وغیرہ کا معاوضہ

شریعت مطہرہ کے دائرے میں رہتے ہوئے جو جائز و مباح کلمات سے دم کیے جاتے ہیں، یا تعویذات و عملیات کیے جاتے ہیں، اُن کا معاوضہ اور ہدیہ لینا بالکل جائز و حلال ہے۔

فقہائے کرام فرماتے ہیں:

"ان چیزوں کا تعلق عبادت محضہ سے نہیں، بلکہ علاج سے ہے؛ اس لیے ان پر جو اجرت لی جاتی ہے وہ علاج کی اجرت ہوتی ہے، تلاوت قران پاک یا ذکر الٰہی کی نہیں۔

البتہ ناجائز اور جھوٹے جنتر منتر پر اجرت یا نذرانہ لینا حرام ہے۔"

(انظر: ردالمحتار، ج6، ص57- مراۃ المناجیح، ج4، ص337، 583)

صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

بہت سے لوگ تعویذ کا معاوضہ لیتے ہیں یہ جائز ہے۔۔۔۔۔ مگر یہ ضرور ہے کہ تعویز ایسا ہو کہ اُس میں شرعی قباحت نہ ہو۔

(بہار شریعت، حصہ 14، ص147)

مفسر قرآن مفتی احمد یار خان نعیمی رحمہ اللہ فرماتے ہیں:

تعویذ کی اجرت بلا کراہت جائز ہے۔ (اور یہ جائز اور حلال کاروبار میں سے ایک ہے)

(اسلامی زندگی، ص144)

صحابہ کرام رضی اللہ عنھم نے دم کی اجرت بھی لی ہے، اور ہدیہ بھی؛ بلکہ خود سید عالم، نور مجسم ﷺ نے جِن نکالنے کے بعد ہدیہ قبول فرمایا ہے۔

آپ ﷺ کے پاس ایک عورت اپنا بیٹا لے کر آئی تھی جسے کوئی جن چمٹا ہوا تھا۔

آپ ﷺ نے اُس جن سے فرمایا:

اللہ کے دشمن نکل جا، میں اللہ کا رسول ہوں، تو وہ (جن نکل گیا اور) لڑکا صحت یاب ہو گیا۔

اس عورت نے دو مینڈھے، کچھ پنیر اور گھی خدمت اقدس میں پیش کیا تو آپ ﷺ نے حضرت یَعلیٰ رضی اللہ عنہ سے فرمایا:

اے یعلیٰ! پنیر، گھی اور ایک مینڈھا رکھ لو، دوسرا اسے واپس کر دو!

(مسند احمد، ج29، ص105، رقم 17563۔

مجمع الزوائد، ج9، رقم 14160۔ قال الهيثمي: رجاله رجال الصحيح ۔ المغنی عن حمل الاسفار۔۔۔۔ ص1560۔ قال العراقی: اسنادہ جید۔)

(دوسرا مینڈھا واپس کرنے کا یا تو اس کے حسبِ حال فرمایا تھا، یا جواز کے لیے کہ: ہدیہ ملنے کے بعد رکھا بھی جاسکتا ہے اور واپس بھی کیا جاسکتا ہے)

حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہ کہتے ہیں:

نبی کریم ﷺ کے صحابہ رضی اللہ عنہم کا گزر پانی کے ایک گھاٹ سے ہوا، وہاں ایک آدمی تھا جسے بچھو یا سانپ نے ڈسا ہوا تھا، گھاٹ والوں میں سے ایک شخص اِن کے پاس آکر کہنے لگا:

کیا تم میں کوئی دم کرنے والا بھی ہے؟

صحابہ کرام رضی اللہ عنہم میں سے ایک صحابی اس آدمی کے ساتھ مریض کے پاس گئے اور چند بکریوں کے عوض سورت فاتحہ پڑھ کر اس پر دم کیا تو وہ ٹھیک ہوگیا۔ وہ صحابی (مقررہ) بکریاں لے کر جب دوسرے صحابہ کرام کے پاس آئے تو اُنھوں نے (دم کے بدلے اجرت لینے کو) ناپسند کیا اور کہا:

تم نے اللہ کی کتاب پر اجرت لی ہے (جو کہ درست نہیں)۔

پھر جب یہ مدینہ پاک آئے تو انھوں نے سرورِ عالم ﷺ کی بارگاہ میں عرض کی کہ:

اے اللہ کے رسول، اس شخص نے کتاب اللہ پر اجرت لی ہے۔

رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

جن چیزوں پر تم اُجرت لیتے ہو، اُن میں سب سے زیادہ اجرت کی مستحق اللہ کی کتاب ہے۔

(صحیح بخاری، ج7، ص132، رقم5737)

حضرت خارجہ بن صُلت تابعی رحمہ اللہ بیان کرتے ہیں:

میرے چچا رسول اللہ ﷺ کی بارگاہ میں حاضر ہوکر مشرف بہ اسلام ہوئے، پھر جب واپس جارہے تھے تو اُن کا گزر ایک قوم پر ہوا جنھوں نے مرضِ جنون میں مبتلا ایک شخص کو زنجیر سے باندھ رکھا تھا۔

اس کے اہل خانہ آپ سے کہنے لگے:

سنا ہے تمھارے صاحب خیر و بھلائی لے کر آئے ہیں، تو کیا تم کسی چیز سے اس مریض کا علاج کرسکتے ہو؟

وہ کہتے ہیں: میں نے اس مریض کو سورت فاتحہ پڑھ کر دم کیا جس سے وہ شفایاب ہوگیا۔

اب اس کے گھر والوں نے مجھے سو بکریاں پیش کیں۔

میں یہ بکریاں لے کر رسول اللہ ﷺ کی بارگاہ میں حاضر ہوا اور سارا واقعہ آپ کو سنایا۔

آپ ﷺ نے پوچھا: تم نے (دم میں صرف سورت فاتحہ ہی پڑھی یا ناجائز کلمات میں سے) کچھ اور بھی پڑھا؟

میں نے عرض کی: نہیں، (حضور! صرف سورت فاتحہ ہی پڑھی ہے۔) تو آپ ﷺ نے فرمایا:

بکریاں رکھ لو، میرے زندگی کی قسم! لوگ ناجائز دم کرکے کھاتے ہیں تم نے تو جائز دم کرکے کھایا ہے۔

(سنن ابی داؤد، ص 13، رقم 3896۔ صحیح)

جادو وغیرہ کی مختلف قسمیں ہیں جن کے مختلف علاج ہیں، جن میں سے بعض آسان بھی ہیں اور بعض مشکل ترین بھی۔
عموماً عاملین علاج معالجے پر معاوضہ لیتے ہیں، جو کہ نہ شرعاً غلط ہے، نہ عقلاً؛ لیکن بعض لوگ اس پر اعتراض کرتے ہیں جو کہ بالکل بے جا ہے۔
یہاں معاوضہ لینا اس سے بھی زیادہ جائز اور حلال ہے جو امامت، خطابت، اور تدریس وفتاوی کے بعد لیا جاتا ہے۔
کیوں کہ ان چیزوں کے متعلق متاخرین نے جواز کا قول کیا۔۔۔۔۔۔ جب کہ دم وغیرہ کا معاوضہ تو سرور عالم ﷺ کے زمانہ اقدس سے ہی صراحتاً جائز رہا ہے۔

## پی ڈی ایف

تقریباً دس بارہ سال پہلے کی بات ہے، تاریخِ دمشق سے ایک حوالے کی ضرورت پیش آئی تھی تو بڑی کوشش کے بعد یہ کتاب 45000 کی خریدی تھی۔ اُس وقت اگر پی ڈی ایف کی سہولت سے آگاہی ہوتی تو صرف ایک حوالے کے لیے اتنی رقم صَرف نہ کی جاتی۔
اہل علم جانتے ہیں کہ ہر کتاب کا، ہر بندہ بالاستیعاب مطالعہ نہیں کر پاتا، بعض دفعہ 80 جلدوں کی کتاب سے صرف ایک حوالہ مطلوب ہوتا ہے، یا کسی کتاب سے ایک باب، ایک واقعہ، ایک مسئلہ یا ایک صفحہ مطلوب ہوتا ہے؛ جس کے لیے یا تو حطیر رقم صرف کرنی پڑتی ہے یا پھر دور دراز لائبریریوں کی خاک چھاننی پڑتی ہے (اور میں بذات خود اس مرحلے سے گزرا ہوں)۔

اس لیے پی ڈی ایف ایک نعمت سے کم نہیں، اس کی مخالفت کرنا عقل مندی نہیں۔
اب جب دنیا بھر کی بڑی بڑی قیمتی کتابیں بھی پی ڈی ایف میں آچکی ہیں، تو ہمارے علماے عظام کو اس کی مخالفت کرنے کے بجائے اس سے ہم آہنگ ہونا چاہیے۔ رہے ناشرین کے تحفظات تو انھیں دور کرنے کے لیے پی ڈی ایف کی مخالفت کے بجائے، ناشرین کو سیل کے نئے نئے طریقوں سے آگاہ کرنا چاہیے، اور لوگوں کو کتابیں خریدنے کی ترغیب دلانی چاہیے۔

کتاب ہر گھر کی زینت ہوتی ہے، اور اس زینت کے لیے کتابوں کا چھپتے رہنا بہت ضروری ہے۔
ویسے بھی جو لطف و سرور کتاب خرید کر پڑھنے کا ہے، پی ڈی ایف میں نہیں؛ اس لیے پی ڈی ایف سے استفادہ اپنی جگہ لیکن کتابیں ضرور خرید فرمایا کریں۔ اللہ پاک ہمارے ناشر بھائیوں کے رزق حلال میں برکت دے اور انھیں وسعت قلبی نصیب فرمائے۔

عربی کتب کی پی ڈی ایف فائلوں کا بہت بڑا مرکز "المکتبة الوقفیه" ہے، جس سے لاکھوں کی کتابیں مفت ڈاؤن لوڈ کی

جاسکتی ہیں، اور لوگ کرتے بھی ہیں؛ اس کے باوجود وہ کتابیں بار بار چھپ رہی ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔کیوں کہ ان کے ناشرین باشعور ہیں، انھوں نے پی ڈی ایف کا رونا رونے کے بجائے کتابیں سیل کرنے کے فن میں مہارت حاصل کی ہے؛ اللہ کرے ہمارے ناشرین بھی ایسے فراخ دل اور عقل مند ہوجائیں!

## جو مہارت سے قرآن پاک پڑھتے ہیں

سرور کونین ﷺ کا ارشاد پاک ہے:

جو قرآن پاک مہارت سے پڑھتا ہے وہ نیکی والے معزز فرشتوں کے ساتھ ہوگا۔

(جامع ترمذی، ر2904، صحیح)

پوری دنیا کے قُراعظام جو مہارت سے قرآن پاک پڑھتے ہیں، وہ سات لہجوں میں تلاوت کرتے ہیں، جنھیں اِن دو لفظوں سے یاد رکھا جاسکتا ہے:

"صُنِعَ بِسحرٍ"

ا ص سے صبا۔

۲ ن سے نہاوند۔

۳ ع سے عجم۔

۴ ب سے بیات۔

۵ س سے سیکا۔

۶ ح سے حجاز۔

۷ ر سے رست۔

سبحان اللہ کیا ذوق افزا لہجے ہیں۔۔۔۔۔۔۔رب تعالیٰ ہمیں بھی ان کا کامل علم عطا فرمادے!

## مصارف زکوٰۃ

قران پاک میں زکوٰۃ کے آٹھ مصارف بیان کیے گئے ہیں، ان کے علاوہ کسی کو زکوۃ دینا جائز نہیں؛ حتی کہ مسجد، مدرسہ، ہسپتال، مسافر خانہ اور جنازہ گاہ کی تعمیر پر بھی مال زکوٰۃ نہیں لگایا جاسکتا۔

مصارف زکوٰۃ

1: فقیر، یعنی وہ شخص جس کے پاس تھوڑا بہت مال ہو، لیکن وہ شرعی نصاب سے کم ہو۔

2: مسکین، یعنی وہ شخص جس کے پاس کچھ بھی نہ ہو۔

3: عاملین، یعنی وہ لوگ جنھیں حاکمِ اسلام نے زکوٰۃ وصول کرنے کے لیے مقرر کیا ہو۔
4: مؤلفۃ القلوب، یعنی وہ لوگ جن کا دل اسلام کی طرف مائل کرنا مقصود ہو۔
5: رقاب، یعنی وہ غلام جسے کچھ مال کے عوض آزادی مل سکتی ہو تو اُسے آزاد کروانے کے لیے مالِ زکوۃ خرچ کیا جائے۔
6: غارمین، یعنی جو مقروض ہوں اور قرض ادا کرنے کی سکت نہ رکھتے ہوں تو مالِ زکوۃ سے ان کا قرض ادا کیا جائے۔
7: فی سبیل اللہ، یعنی اللہ کی راہ میں نکلے ہوئے مجاہد اور حاجی وغیرہ۔
8: اِبن سبیل، یعنی ایسے مسافر جن کے پاس دورانِ سفر مال نہ ہو۔
اِن کے تفصیلی احکام کُتب فقہ میں دیکھے جاسکتے ہیں، یہاں یہ بتانا مقصود ہے کہ حکمِ الٰہی کے مطابق زکوۃ کے صرف یہی مصارف ہیں، انھیں ذہن نشین رکھنا چاہیے۔

## جھوٹی حدیثیں

رافضیوں نے فضائل حضرت علی اور اہل بیت میں تین لاکھ جھوٹی حدیثیں بنائی ہیں، اور بعض جاہل سُنیوں نے حضرت معاویہ کے فضائل میں جھوٹی حدیثیں گھڑی ہے، اور بعض جھوٹوں نے امام ابوحنیفہ اور امام شافعی کے نام کی حدیثیں وضع کی ہیں۔

(انظر: اسرار المرفوعة فی الاخبار الموضوعة، للقاری رحمه الله ص 343، ت ر 1307، دار الکتب العلمیة بیروت)

عوام اہل سنت جب کوئی نئی روایت یا واقعہ سنیں تو اسے آگے بیان کرنے سے پہلے محقق علما سے ضرور پوچھ لیا کریں کہ یہ بات سچی ہے، یا جھوٹی۔۔۔۔۔۔ ایسا نہ ہو کہ محبت محبت میں کبیرہ گناہ کے مرتکب ہوتے رہیں۔

آج کل ہمارے بعض خطبا، مبلغین اور واعظین بغیر تحقیق کیے ہی روایات بیان کر دیتے ہیں، انھیں ایسے الفاظ سے غرض ہوتی ہے جو مجمعے میں جان ڈال دیں اور لوگ واہ واہ، سبحان اللہ، ماشاء اللہ کہیں۔ انھیں اس چیز کا ادراک نہیں ہوتا کہ موضوع روایتیں دنیا آخرت میں کیسی تباہی کا سبب بنتی ہیں۔ یہ من گھڑت روایتیں مسلمانوں میں انتشار کو ہوا دیتی ہیں ۔۔۔۔۔۔ نئے عقیدے اور نظریے جنم لیتے ہیں، نئے نئے فرقے وجود میں آتے ہیں ۔۔۔۔۔۔۔۔ باہمی محبت و مودت ختم ہو جاتی ہے، لوگ خود ہی مُنصف، مفتی، قاضی بن کر ایک دوسرے کو گمراہ قرار دینا شروع کر دیتے ہیں۔

ہماری ترجیحات متواتر، صحیح اور حسن روایات ہونی چاہییں ۔۔۔۔۔۔۔ ضعیف روایات بیان کریں لیکن شرائط محدثین کے ساتھ۔ اور موضوع روایتیں کیسے ہی خوب صورت الفاظ میں کیوں نہ ہوں، انھیں بالکل ترک کر دیں۔

"دھوکا خوب صورت ہوتا ہے" اس لیے لوگ جلدی کھا جاتے ہیں، مگر۔۔۔۔۔۔۔۔۔ یہ کھانے والوں کو بدصورت بنا دیتا ہے۔ اس لیے آپ اپنے دین کا حُسن برقرار رکھیں، اور کبھی دھوکا نہ کھائیں۔۔۔۔۔ اللہ آپ کو ہمیشہ خوب صورت رکھے!

# (18)اٹھارہواں باب: شوہر اور بیوی

اس باب میں شوہر اور بیوی کی اصلاح سے متعلق تحریریں ہیں۔

## نصیحتیں

ایک شاگرد کو شادی سے کچھ دن پہلے کی گئی نصیحتیں:

1: بیوی کو محبت دینا، اس کے حقوق پورے کرنا، اس کا ہر طرح سے خیال رکھنا لیکن اسے والدین پر مسلط نہ کرنا۔

2: اگر تیرے سامنے والدین اور بیوی کا مقدمہ آئے، دونوں ایک دوسرے کو قصوروار ٹھہرا رہے ہوں تو بیوی کو خاموشی کا درس دینا اور والدین کو معاف کر دینے کی ترغیب دلانا۔

3: اگر والدین غلطی پر ہوں تو انھیں بیوی کے سامنے غلط نہ کہنا، بلکہ اکیلے میں انتہائی ادب کے ساتھ عرض کرنا تاکہ ان کی دل شکنی نہ ہو۔

4: والدین اور بہن بھائیوں سے مالی تعاون کرنے کا موقع آئے تو بیوی سے مشورہ نہ لینا۔

5: کسی کے سامنے بیوی کی تذلیل نہ کرنا، اس کی غلطی اسے اکیلے میں بتانا۔

6: بیوی کے سامنے کسی غیر عورت کی تعریف نہ کرنا اور نہ ہی بار بار دوسری شادی کا اظہار کرنا۔

7: بیوی کی چھوٹی چھوٹی غلطیوں سے صَرفِ نظر کرنا لیکن چھوٹی چھوٹی خوبیوں کی تعریف ضرور کرنا۔

8: اگر بیوی کسی کی شکایت کرے تو بڑے دھیان سے سننا اور اسے حوصلہ دینا کہ میں آپ کے ساتھ ہوں۔

اللہ کریم تمھارے گھر کو تمھارے لیے جنت کا باغ بنائے، تمھاری خوشیاں طویل اور غم قلیل کر دے!

## خوش حال میاں بیوی

آج ایک گھر دم کرنے گیا تو یہ دیکھ کر دل بہت خوش ہوا کہ ماشاءاللہ اہل خانہ خوش و خرم زندگی بسر کر رہے ہیں۔

میں نے انھیں دم کرنے کے ساتھ چار باتیں بھی عرض کیں:

1: میاں بیوی کا رشتہ خلوص و محبت کا رشتہ ہے، ہمیشہ یہی کوشش ہونی چاہیے کہ یہ رشتہ اِنھی بُنیادوں پر اُستُوار رہے۔

ہمارے ہاں ہوتا یہ ہے کہ اپنے ہی عزیز و اقارب کان بھرنا شروع کر دیتے ہیں۔

آپ دونوں سب کی باتیں سنیں ضرور لیکن کانوں کے کچے نہ بنیں!

ایسی کسی بات کو دل پر نہ رکھیں جو آپ کا رشتہ محبت کم زور کر دے۔

2: آپ دونوں جب گھر میں اکیلے ہوں تو بلا ضرورت موبائل استعمال نہ کریں بلکہ ایک دوسرے سے پیار محبت اور دُکھ سُکھ کی باتیں کریں، اور پوری دل چسپی سے ایک دوسرے کی باتیں سنیں۔

3: آپ کے گھر کا صحن نہیں، جہاں آپ لوگ دھوپ اور قدرتی ہوا سے لطف اندوز ہو سکیں؛ آپ چُھٹی والے دن باہر کسی مناسب جگہ جایا کریں تاکہ بچوں کو تنہائی اور قید کا احساس نہ ہو اور ان کی صحت بھی اچھی رہے۔

4: آپ ابھی سے اپنی کمائی کا کچھ نہ کچھ حصہ بچانا شروع کر دیں، ان شاءاللہ ضرورت کے وقت کام آئے گا۔

اچھی عورت وہ نہیں ہوتی جو خواہشیں پوری کرنے کے لیے مرد کی کمائی اُجاڑ دیتی ہے، بلکہ اچھی عورت وہ ہوتی ہے جو صرف ضرورتیں پوری کرتی ہے اور کچھ نہ کچھ بچاتی رہتی ہے۔

میری دعا ہے کہ اللہ کریم آپ دونوں کو ہمیشہ شاد و آباد رکھے!

## جوڑے بن گئے!!

ایک انصاری، نبی کریم ﷺ کے پاس آئے اور عرض کی:

حضور! میں ایک عورت سے نکاح کا ارادہ رکھتا ہوں، آپ دعا فرمائیں کہ میرا اُس کے ساتھ نکاح ہو جائے۔

(یہ بات اُنھوں نے تین دفعہ عرض کی مگر) آپ ﷺ نے تینوں مرتبہ اِعراض کیا۔

پھر فرمایا: اگر اسرافیل، جبرائیل، میکائیل اور عرش اٹھانے والے فرشتے مجھ سمیت تیرے لیے دعا کریں، تب بھی:

"ماتزوجت الا المراۃ التی کتبت لک" تیرا نکاح اُسی عورت کے ساتھ ہوگا جو تیرے مقدر میں لکھ دی گئی ہے۔

(جامع الاحادیث، امام سیوطی م 911ھ، مسند محمد بن عطیہ بن عروۃ السعدی، ج38، ص28، رقم41004)

1: جن کی من پسند شادی نہ ہو سکے انھیں غمگین ہونے کے بجائے اس حدیثِ پاک کو بار بار ذہن میں دہرانا چاہیے، ان شاء اللہ دل مطمئن ہو جائے گا۔

2: اگر بیوی خلاف مزاج ہو تو بھی یہ سوچ کر اُس کے ساتھ حسن سلوک سے پیش آنا چاہیے کہ اگر یہ میرے مقدر میں نہ ہوتی تو مجھے کبھی نہ ملتی!!

3: بہت دفعہ: "تقدیر ہزار تدبیروں پر غالب آجاتی ہے"

## پسند کی شادی

میرے پاس ایک نیک آدمی تعویذ لینے کے لیے آیا جو شریعت کے دائرے میں رہتے ہوئے پسند کی شادی کرنا چاہتا تھا، لیکن معاشرے کی ناجائز رسومات آڑے آرہی تھیں۔

میں نے اُسے ایک واقعہ سنایا، آپ بھی سن لیجیے!!

حضرت محمد بن عبید زاہد رحمہ اللہ کہتے ہیں:

میرے پاس ایک جاریہ تھی جسے میں نے فروخت تو کر دیا لیکن وہ میرے دل سے نہ نکلی۔

میں اپنے بھائیوں کو ساتھ لے کر اُس کے مالک کے پاس پہنچا اور کہا:

میں کیا گیا عقد فسخ کرنا چاہتا ہوں اور تجھے مزید بیس دینار بھی دیتا ہوں (تو میری جاریہ مجھے واپس لوٹا دے!)، اُس نے انکار کر دیا۔ میں واپس لوٹ آیا، (لیکن اُس کی محبت نے میری یہ حالت کر دی کہ) میں کھانا کھانا چاہتا تھا لیکن کھا نہیں سکتا تھا؛

مجھے کچھ نہیں سوجھ رہا تھا کہ کیا کروں!!

اُدھر اُس کے مالک کو خدشہ ہوا کہ میں (جاریہ کا مطالبہ لے کر) دوبارہ اُس کے پاس پہنچ جاؤں گا، تو وہ اُسے ساتھ لے کر مدائن چلا گیا- میں نے جب یہ تکلیف دہ معاملہ دیکھا تو جاریہ کا نام ہاتھ پر لکھ کر قبلہ رو بیٹھ گیا-

جب اُس کی یاد ستاتی تو ہاتھ آسمان کی طرف اٹھا کر (اپنے رب کے حضور) عرض کرتا:

یاسیدی ھذا قصتی!! اے میرے مالک! میری یہ حالت!!

دوسرے دن صبح سویرے ایک شخص نے میرا دروازہ کھٹکھٹایا- میں نے پوچھا: کون؟ تو آنے والے نے کہا: میں لونڈی کا مالک ہوں- میں اُس کے پاس گیا تو اُس نے کہا:

خذ الجاریۃ بارک اللہ لک فیھا- یہ لونڈی پکڑو اللہ تمھیں اِس میں برکت دے! (یہ کہ کر وہ چل دیا)

میں نے اُسے کہا: اصل رقم اور منافع تو لیتے جاؤ!

اس نے کہا: نہیں..... میں نے آپ سے کوئی درہم و دینار نہیں لینے!

میں نے پوچھا وہ کیوں؟ کہنے لگا: رات کو ایک شخص نے میرے خواب میں آکر کہا:

رد الجاریۃ علی ابن عبید، ولك علی اللہ الجنۃ

یہ جاریہ ابن عبید کو واپس کر دو اِس کے بدلے اللہ تمھیں جنت عطا فرمائے گا!

(ملخصًا: ذم الھوی، الباب التاسع والاربعون، ص397، 398، رقم 1178، دار الکتاب العربی بیروت 1424ھ)

امام ابن جوزی رحمہ اللہ یہ واقعہ لکھنے سے پہلے کہتے ہیں:

اگر محبوب سے شادی کرنا شرعًا جائز ہو لیکن عُسرت (وغیرہ کی وجہ) سے نہ کر سکے تو ناجائز راستہ اختیار کرنے کے بجائے اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں آسانی کے لیے التجا کرے، اور صبر سے کام لے؛ ان شاء اللہ بہت جلد اُس کی مراد پوری ہو جائے گی- (ایضًا)

صرف شادی کے لیے ہی نہیں، آپ کو جو بھی مشکل پیش آئے اپنے پروردگار کے حضور عرض کریں وہ کریم کبھی خالی نہیں لوٹائے گا-

مشکل میں ترا ہی ساتھ کام آیا ہے
مجھ پر تیرے ہی فضل کا سایا ہے
اب وقت پڑا تو دے مجھے مُنھ مانگا
تیرا ہی دِیا تو عُمر بھر کھایا ہے!

# صوفی کانفرنس

فیس بک پر افتخار الحسن رضوی صاحب نے کراچی میں ہونے والی حالیہ صوفی کانفرنس پر تبصرہ کیا، اُس پر کچھ معروضات-

کہتا ہوں وہی بات سمجھتا ہوں جسے حق
نَے ابلۂ مسجد ہوں ، نہ تہذیب کا فرزند

مشکل ہے کہ اک بندۂ حق بین و حق اندیش
خاشاک کے تودے کو کہے کوہِ دماوند
ہر حال میں میرا دل بے قید ہے خرم
کیا چھینے گا غنچے سے کوئی ذوقِ شکر خند!

عزت مآب افتخار الحسن رضوی صاحب!

آپ کی کڑھن بجا لیکن آپ حالات کے تقاضے سمجھنے سے قاصر ہیں-

1: طارق جمیل جیسے دہشت گردوں کے حامی کے بیانات کے متعلق بھرے مجمع میں کمپنیوں سے درخواست کرنا اتنا غلط نہیں تھا جتنا فیس بک پر آپ کی طرف سے اس کی تردید غلط ہے-

آپ کو معلوم ہونا چاہیے کہ کمپنیاں اور میڈیا ریٹنگ چاہتے ہیں ان سے اکیلے لاکھ ملاقات کی جائے نتیجہ صفر ہوگا-

لیکن اگر اس بات کو مجمع عام میں بیان کیا جائے اور لوگ تیار ہو جائیں، پھر وہ مل کر احتجاج کریں تو زیادہ موثر ہوگا-

میرے خیال میں آپ کو اس کی مخالفت کرنے کے بجائے یہ تعمیری مشورہ دینا چاہیے تھا کہ:

"جو لوگ طارق جمیل کے بیانات کے خلاف تیار ہو چکے ہیں وہ بھی اور میرے سمیت میرے محبین بھی، مل کر احتجاج کرتے ہیں، تاکہ کمپنیاں یہ سلسلہ بند کریں"

(لیکن مجھے معلوم ہے کہ آپ ایسا ہرگز نہیں کریں گے کیوں کہ یہ تعمیری کام ہے جو تنقیدی فرد کے مزاج کے بالکل خلاف ہے، تنقیدی کا کام محض مخالفت ہوتا ہے اداروں سے مل کر بات کرنا نہیں!!)

2: صوفی کانفرنس میں پاکستانی علما میزبان تھے اور بیرونی مشائخ مہمان، اس لیے میزبانوں نے مہمانوں کو زیادہ وقعت دی- رہی یہ تہمت کہ:

"عرب مشائخ کی تقاریر ہرگز ہرگز پاکستان کے کسی مفاد میں نہیں تھیں"

اس پر اتنا ہی کہا جا سکتا ہے کہ محفل میں پھولوں بھری شاخ کا ذکر ہو رہا تھا لیکن بہرے نے اشارے سے کانٹوں بھری ڈالی سمجھ کر ایک عدد مزید غلطی کر دی-

3: وہ میڈیا اہل سنت کی زبانی دہشت گردی سے کیسے نالاں ہو سکتا ہے جو خود عملی دہشت گردی میں مبتلا ہے- بات صرف

اتنی تھی کہ اسے کوریج کا سرکار کی طرف سے حکم نہیں ملا تھا، لیکن.....
نادان و بدگمان دوستوں نے کچھ کا کچھ سمجھ لیا—

4: افتخار الحسن بھائی آپ کو اس کانفرنس سے جو انتہائی اہم سبق ملا تھا وہ اگر آپ کسی استاد کو سنا لیتے تو اچھا تھا-
کیوں کہ آپ کو معلوم ہونا چاہیے کہ:
ابن ھمام، زیلعی، ابن نجیم، شرنبلالی، ابن عابدین، طحطاوی، شلبی رضی اللہ عن جمیعھم پاکستانی یا ہندی نہیں تھے اس کے باوجود یہ اسے ہی مسنون داڑھی سمجھتے تھے جسے پاکستانی و ہندستانی سمجھتے ہیں-
بلکہ ان میں سے کئی تو فرماتے ہیں:
داڑھی کو مٹھی سے کم کرنا کما یفعل بعض المغاربۃ والمخنثۃ من الرجال- جیسا کہ بعض مغربی اور ہیجڑے مرد کرتے ہیں، کسی کے نزدیک جائز نہیں-
لیکن افسوس کہ آپ نے مسئلے کی نوعیت کو سمجھنے سے زیادہ فاتر عقل سے نتیجہ اخذ کیا اور لوگوں کے دلوں میں خشخشی داڑھی کی محبت پیدا کرنے کی راہ ہموار کی-
آپ کو معلوم ہونا چاہیے تھا کہ غلط کام غلط ہے چاہے کوئی بھی کرے-
جامعہ ازہر کے شیوخ اور کئی ممالک کے ائمہ مساجد و خطبا اگر حلیق (داڑھی منڈے) ہیں اور وہ ہمارے مہمان بنیں اور ہم ان کی عزت بہ طور مہمانی کریں تو کوئی بے عقل ہی ہوگا جو یہ کہے گا کہ یہ داڑھی منڈوں کو عزت دے کر منافقت کر رہے ہیں-
رسول محتشم کی پیاری سنت داڑھی شریف کے بارے میں ہمارا جو موقف ہے وہ سب کے لیے ہے چاہے وہ کسی ملک کا ہو، اور الحمدللہ یہ ہمارا پاک و ہند والوں کا ہی نہیں اجلہ فقہاے امت کا ہے-
5: آپ کی اہم ترین بات درست ہے یا غلط اس کا فیصلہ اس وقت تک نہیں کیا جا سکتا جب تک ان علما سے پوچھ نہ لیا جائے -لیکن.....
آپ کی اس سلسلے میں کیا رائے ہے کہ:
ایسا امام جو یزید کو امام برحق اور امیر المومنین سمجھتا ہو، رسول اللہ کی طرف سفر کو حرام سمجھتا ہو، شفاعت کا منکر ہو اور اس کے دیگر عقائد بھی درست نہ ہوں، نیز وہ نماز میں فرائض تک چھوڑ دیتا ہو، اگر وہ مسجد الحرام شریف کا امام بن جائے تو اس کی اقتدا جائز ہوگی یا ناجائز؟؟
(صرف اپنا موقف بتائیں)
6: ڈاکٹر طاہر القادری کے باطل نظریات کو پڑھ، سن اور سمجھ کر جو اس کی حمایت کرتے ہیں ان کا الگ حکم ہے، دیگر کا الگ-
آخر میں آپ سے گزارش ہے کہ:

میرے پیارے! دور بدل چکا ہے، حالات کے تقاضے مختلف ہو چکے ہیں، جب سنیت غریب ہو چکی ہے اور سنی در در کی ٹھوکریں کھا رہا ہے تو تھوڑی آنکھیں کھولنے کی ضرورت ہے۔

آپ سنیوں کی اصلاح کریں لیکن اس انداز میں نہ کریں کہ غیروں کی نظروں میں انھیں مجرم و نااہل بنا دیں۔

آپ نے صوفی کانفرنس کی ایک بھی خوبی بیان نہیں کی، خود ساختہ خامیوں کا ڈھیر لگا دیا، کیا یہی طریقہ اصلاح ہے؟؟

خدا کے لیے اہل سنت پر رحم کریں، نادان دوست نہ بنیں۔

میں امید کرتا ہوں کہ آپ ان معروضات کو مبنی بر خلوص سمجھتے ہوئے ناراض ہونے کے بجائے قبول فرمائیں گے اور اپنی بے اعتدالیوں کی اصلاح کریں گے۔

## شادی شدہ اولیا سے کم درجہ ملا

آج کل ایسے لطیفے سنائے جاتے ہیں جن میں نکاح و ازدواجی زندگی جیسے پاکیزہ افعال کا مذاق اڑایا جاتا ہے اور حرام کاری (گرل فرینڈ کلچر) کو خوب صورت کر کے پیش کیا جاتا ہے۔

یاد رکھیے! وہ عورت جو بغیر نکاح کے آپ کے قریب ہے، اس میں لاکھ اچھائی ہو حقیقتاً برائی ہی برائی ہے، اور برائی بھی ایسی جس کی سزا دوزخ سے کم نہیں۔

اور آپ کی منکوحہ عورت، اگرچہ زیادہ خوبیوں والی نہ ہو؛ پھر بھی اس میں اچھائی ہی اچھائی ہے۔

حضرت بشر حافی کی شادی نہیں ہوئی تھی آپ کو بعدِ وصال کسی نے خواب میں دیکھ کر پوچھا:

اللہ تعالیٰ نے آپ کے ساتھ کیا معاملہ کیا؟

فرمانے لگے: مجھے میرے رب نے بخش تو دیا لیکن شادی شدہ اولیا سے کم درجہ ملا۔

پوچھا، وہ کیوں؟

فرمایا: میں نے بیوی بچوں کے دکھ نہیں سہے تھے!!

## بیوی سے جھگڑا

میرے ایک دوست کا اپنی بیوی سے جھگڑا ہوا تو وہ کہنے لگی: مجھے میکے چھوڑ آؤ۔

وہ اسے میکے چھوڑنے گئے تو ساتھ خرچہ بھی دے کر آئے، اور کہا:

اگرچہ ہم میں جھگڑا ہوا ہے، اور سخت جھگڑا ہوا ہے؛ لیکن تم اب بھی میری بیوی ہو، تمھارا بوجھ اٹھانا میری ذمے داری ہے۔

تم جب تک چاہے میکے رہو، لیکن اخراجات میرے ذمے!

بیوی پر اُن کے اخلاق کا اتنا اثر ہوا کہ جلد ہی راضی ہو کر واپس آگئی، اور آج سترہ سال ہونے کو ہیں، وہ دوبارہ کبھی

ناراض ہوکر میکے نہیں گئی۔

بیویوں کے ساتھ ہمیشہ کریمانہ اخلاق سے پیش آنا چاہیے، یہ کمزور مخلوق ہے اس پر رحم کھانا چاہیے۔

کریم رب نے تو طلاق دینے والے مردوں کو بھی فرمادیا کہ طلاق دینے کے بعد: سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ، عورتوں کو اچھے طریقے سے چھوڑو۔

یہ نہیں کہ زوجیت سے نکل گئی ہیں تو انھیں ذلیل ورسوا کرو۔

ہمارے معاشرے کا یہ بھی ناسور ہے کہ لوگ چھوٹی چھوٹی باتوں پر بیویوں سے ناراض ہوجاتے ہیں اور صرف ناراض ہی نہیں ہوتے، بچے تک چھین کر اُنھیں میکے بھیج دیتے ہیں۔ بعض خواتین تو ایسی بھی ہوتی ہیں جن کے بچے میکے والے ہی چھڑا دیتے ہیں۔ العیاذ باللہ

اللہ کریم ہمیں اچھے اخلاق کا مالک بنائے اور اپنی بیویوں کے ساتھ ہمیشہ نیک سلوک کرنے کی توفیق عطا فرمائے!

## شوہر کا مسئلہ

ایک بہن نے سوال کیا ہے:

اگر کسی کا شوہر اجنبی لڑکیوں سے چیٹنگ کرتا ہو تو کیا بیوی خفیہ طریقے سے اُس کا موبائل چیک کر سکتی ہے؟

میں نے جواب دیا: موبائل چیک کرنے سے یہ مسئلہ حل نہیں ہوگا، اِس سے صرف بیوی کی اذیت میں اضافہ ہوگا۔

اگر واقعی شوہر ایسا ہے تو اُس کی اصلاح اِس طرح کریں:

1: اسے بالکل محسوس نہ ہونے دیں کہ آپ کو کچھ پتا ہے، وہ یہی سمجھے کہ آپ اس کی حرکت سے بے خبر ہیں۔

2: اُسے بے لوث اور بے انتہا محبت دیں، اور "مسلسل" دیں۔

محبت وہ تِریاق ہے جو اِس مہلک زہر کا اثر زائل کر دیتا ہے۔

3: شوہر کا خود دھیان رکھیں، اُسے کسی کے سپرد نہ کریں۔

دھیان رکھنے کا مطلب ہے: اُس کے کھانے، پینے، پہننے وغیرہ کا خیال رکھیں۔

یہ نہیں کہ:

جاسوسوں کی طرح اس کے پیچھے لگی رہیں، اس کی ایک ایک حرکت پر نظر رکھیں اور ناکردہ غلطیاں بھی اسی کے کھاتے میں ڈالتی جائیں۔

4: تنقید، شک اور وہم کی عادت چھوڑ دیں۔

آپ کی یہ عادت شوہر کی بری عادتیں کبھی نہیں بدل سکتی۔

5: شوہر کے لیے اللہ کے حضور دعا کریں، اور اس کا معاملہ اللہ کے سپرد کر دیں؛ وہ پروردگار آپ کو محروم نہیں لوٹائے گا۔

امام عبدالوہاب شعرانی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

میرا بیٹا عبدالرحمان علم حاصل کرنے کی طرف دھیان نہیں دیتا تھا، میں اِس وجہ سے بڑا پریشان تھا۔

اللہ کریم نے میرے دل میں یہ بات ڈالی کہ میں اُس کا معاملہ خدا تعالیٰ کے سپرد کردوں؛ تو میں نے ایسا ہی کیا—

(پھر میں نے دیکھا کہ) وہ اُسی رات میرے حکم کے بغیر خود بہ خود مطالعہ میں جُت گیا، اور اُسے اُسی رات علم کی مٹھاس نصیب ہوگئی؛ اُس کا فہم اُن لوگوں سے بڑھ گیا جو کئی سال سے علم میں مشغول تھے۔

"فاراحنی اللہ تعالیٰ بتفویضی الیہ من التعب الذی کنت فیہ"

تو اپنا معاملہ رب تعالیٰ کے سپرد کرنے سے اُس نے مجھے اس مشقت سے راحت بخشی جس میں مَیں مبتلا تھا۔

(تنبیہ المغترین اواخر القرن العاشر علی ماخالفوا فیہ سلفھم الطاہر، امام شعرانی (م 973ھ)، ص 23، مرکز اہل سنت برکات رضا ہند، 1427ھ)

## اللہ تجھے فرشتہ دے

ایک شخص کی دو بیویاں تھیں۔

ایک کی رنگت سفید اور دوسری کی سیاہ۔ اس سے کسی نے کہا:

جب تمھاری پہلی بیوی خوب صورت تھی تو تمھیں چاہیے تھا دوسری بیوی اس سے بڑھ کر خوب صورت لاتے، لیکن تم نے سیاہ فام عورت کا انتخاب کیا۔ اس نے کہا: میری دوسری بیوی کی نانی اسے ہمیشہ یہ دعا دیتی تھی:

"اللہ تجھے فرشتہ دے!"

اس نے ایک دن نانی سے پوچھا:

نانی اماں! فرشتے تو کسی کو نہیں ملتے، شادی انسانوں سے ہوتی ہے؛ پھر آپ مجھے یہ دعا کیوں دیتی ہیں؟

وہ کہنے لگی: بیٹی! مرد یا فرشتے ہوتے ہیں یا حیوان۔

یاد رکھو! مرد کو عورت ہی حیوان بناتی ہے، اس کی دنیا آخرت اجاڑ کے رکھ دیتی ہے؛ اور عورت ہی انسان سے فرشتہ صفت بنا دیتی ہے۔

میری دوسری بیوی نے اپنی نانی کی نصیحت پلے باندھ لی اور جب میرے گھر آئی تو مجھے انسان سے فرشتہ بنا دیا۔ اس کے عمدہ اخلاق اور بہترین عادتوں نے میری دنیا آخرت سنوار دی ہے۔

مرد کی تعمیر میں عورت کا بڑا کردار ہوتا ہے، جذبات اپنی جگہ لیکن کچھ چیزیں عقل مندی کا تقاضا کرتی ہیں۔

1: عورت کو شوہر پر کبھی شک نہیں کرنا چاہیے، اگر وہ برا ہوا تو شک سے اچھا نہیں ہوگا، البتہ اچھا ہوا تو بیوی کے شکی مزاج سے شاید برا بن جائے۔

2: شوہر سے کبھی یہ تقاضا نہیں کرنا چاہیے کہ وہ ساری دنیا سے کٹ کے صرف میرا ہو کے رہ جائے۔

اسے بہن بھائیوں، رشتے داروں کے لیے بھی وقت دینا چاہیے۔
3: شوہر کی خوبیاں یاد رکھنی چاہییں اور انھیں بڑھانے کی کوشش کرتے رہنا چاہیے۔
خامیوں سے درگزر کرتے ہوئے انھیں دور کرنے کی کوشش کرنی چاہیے۔
4: بے جا تنقید اور طعنہ زنی ایسی بری خصلتیں ہیں جو اچھے بھلے انسان کی عادتیں بگاڑ کر رکھ دیتی ہیں، ان سے بچنا چاہیے؛ ہمیشہ مثبت انداز اختیار کیے رکھنا چاہیے۔
5: سمجھ داری اور سلیقہ شعاری سے اگر عورت نے ایک انسان کو فرشتہ بنا دیا، تو گویا اس نے پوری دنیا فتح کر لی۔

## بیوی کا شکوہ

کوئی چھے سات سال ہونے کو ہیں، میرا ایک عزیز اٹھتے بیٹھتے اپنی بیوی کا شکوہ کرتا رہتا ہے۔
جب اُس سے پوچھا جائے کہ تجھے بیوی سے مسئلہ کیا ہے؟ تو کہتا ہے:
"وہ میرا مزاج نہیں سمجھتی۔"
سوچنے کی بات ہے:
مزاج ہمارا ہے، اِسے ہمارے سمجھائے بغیر کوئی دوسرا کیسے سمجھے گا!!
کمی ان میں نہیں جو ہمارا مزاج نہیں سمجھتے، کمی ہم میں ہے کہ ہم اپنا مزاج دوسروں کو سمجھا نہیں پاتے۔
میاں بیوی ہوں، بہن بھائی ہوں، دوست احباب ہوں، یا رشتے دار۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ان سے یہ امید رکھنے کے بجائے کہ:
یہ ہمارا مزاج سمجھیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ہمیں خود انھیں اپنا مزاج سمجھانا چاہیے۔
انھیں بتانا چاہیے کہ ہمیں کیا پسند ہے، اور کیا ناپسند۔
اور ایک دفعہ ہی بتا کر یہ نہیں سمجھ لینا چاہیے کہ یہ حافظ ہو گئے ہیں، بلکہ گاہے گاہے اچھے انداز سے یاد دہانی کراوتے رہنا چاہیے۔
وہ دَور گیا جب لوگ مزاج شناس ہوتے تھے، اب تو بتانے سے بھی سمجھ جائیں تو غنیمت ہے۔
پہلے زمانے کے حکیم نبض نہیں، چہرہ دیکھ کر ہی مرض بتا دیتے تھے۔
لیکن اب ڈاکٹر ایک ہزار فیس لے کر بھی کچھ نہیں بتا سکتے، جب تک لیبارٹری ٹیسٹ نہ دیکھ لیں۔
اس لیے اگر رشتے ناطے نبھانا چاہتے ہیں تو حالات سے سمجھوتا کرنا سیکھیں۔
ویسے بھی ساری کائنات کے ہادی، اللہ کے پیارے رسول ﷺ کا فرمان ہے:
إِذَا اَحَبَّ الرَّجُل أَخَاهُ، فَلْيُخْبِرْهُ اَنَّهُ يُحِبُّهُ۔

جب کوئی بندہ اپنے بھائی سے محبت کرے تو اسے بتادے کہ میں تیرے ساتھ محبت کرتا ہوں۔(ابوداود شریف، ر 5124)

آپ اس حدیث پاک پر غور کریں گے تو بہت کچھ سیکھنے کو ملے گا، مثلاً:

[1]کسی سے محبت جیسا جذبہ نہیں چھپانا چاہیے، اسے کیا معلوم آپ کے دلی جذبات کیا ہیں۔

[2]اگر آپ اپنے دلی جذبات کی قدر کروانا چاہتے ہیں تو اپنے پیاروں کو ان سے آگاہ کریں، انھیں احساس ہوا تو قدر کریں گے، نہ احساس ہوا تو کم از کم آپ ان سے آگاہ ہو جائیں گے۔

## مِسکین

حافظ مُنذِری رحمہ اللہ نے ایک حدیث نقل کی ہے جس کے آخر میں یہ بھی ہے:

"وہ مرد مِسکین و لاچار ہے جس کی بیوی نہ ہو، اور وہ عورت بھی غریب مسکین ہے جس کا شوہر نہیں۔"

(الترغیب والترھیب، کتاب النکاح وما یتعلق بہ، ص 353، رقم 2863، ط دار الکتاب العربی بیروت)

اگرچہ یہ حدیث ضعیف ہے، لیکن دورِ حاضر کے مطابق اس کا معنی بہت قوی ہے۔

اللہ کریم سارے مسکینوں پر رحم فرمائے!!

## احمقانہ حرکت

آج کل فیشن ہوا جا رہا ہے کہ:

لڑکے، لڑکیاں جب نکاح کے بندھن میں بندھتے ہیں تو سابقہ زندگی میں کی گئی غلطیاں، کوتاہیاں بھی ایک دوسرے کو بتاتے ہیں۔

یہ انتہائی احمقانہ حرکت ہے، جو دلوں میں نفرت کے ایسے بیج بوتی ہے کہ ساری زندگی نہ فصل پکتی ہے، نہ کٹتی ہے؛ ہری بھری ہی کھڑی رہتی ہے۔

گناہ کرنا ایک گناہ ہے، جب کہ کسی کے سامنے اس گناہ کا اظہار کرنا دوسرا گناہ ہے۔

ایک گناہ کر چکے، کیا یہی کافی نہیں تھا۔۔۔۔۔اب جو بتا کر دوسرا گناہ کرنے پہ تلے ہوئے ہیں!!

جب ستار العیوب جَلَّ جَلَالُہٗ آپ کے گناہ چھپا کر آپ کی عزت رکھنا چاہتا ہے تو پھر آپ خود اپنے گناہ کا اظہار کر کے کیوں ذلیل ہونا چاہتے ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

یہ اللہ ہی ہے جو آپ کے سارے گناہ دیکھ کر بھی آپ پر شفقت فرماتا ہے، کسی انسان کا اتنا ظرف نہیں۔

ایک ولی اللہ کو لوگوں کے گناہ نظر آجایا کرتے تھے، انھوں نے بارگاہ خداوندی میں عرض کی:

میرے مالک، میری یہ قوت سلب کرلے!

تو ہی ہے جو سب کچھ دیکھ کر بھی رحم فرماتا رہتا ہے، مجھ سے تو برداشت نہیں ہو سکتا۔

ہمیشہ کے لیے نیت کرلیں کہ: اپنے کسی گناہ کا، کسی کے سامنے کبھی بھی اظہار نہیں کرنا۔۔۔۔۔۔۔۔ چاہے وہ کتنا ہی پیارا اور معزز کیوں نہ ہو۔

گناہوں کی اللہ کریم سے ہی معافی مانگنی ہے اور اسی کے سامنے اپنی خطاؤں کا اظہار کر کے کہنا ہے:

اے میرے پیارے جَلَّ جَلَالُہٗ! مجھے معاف کردے، میں جیسا بھی ہوں تیرا ہی ہوں۔

## اہلیہ کے ساتھ حسن سلوک

سیدنا عثمان غنی رضی اللہ عنہ سفر و حضر میں رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے ساتھ رہے، لیکن سرکار نے آپ کو بدر میں جانے سے منع کر دیا تھا اور کہا تھا:

تمھاری بیوی بیمار ہے، تم اس کے پاس رہ کر اس کی دیکھ بھال کرو، تمھیں بھی اُس شخص جتنا ہی ثواب ملے گا جو بدر میں شریک ہوا ہو گا۔

(صحیح البخاری وغیرہ)

سیدنا عثمان پاک نے تعمیلِ حکم کی اور اپنی زوجہ محترمہ سیدہ رقیہ بنت رسول اللہ رضی اللہ عنھا کی خوب اچھی طرح دیکھ بھال کرتے رہے۔

حضور جب جنگ سے واپس تشریف لائے تو سیدنا عثمان پاک کو مال غنیمت سے حصہ بھی عطا فرمایا اور بدری صحابہ میں شمار بھی کیا۔

سبحان اللہ، اپنی اہلیہ کے ساتھ حسن سلوک کرنے کا کتنا اجر ہے!

جب کسی عام مسلمان کی دیکھ بھال پر بھی اللہ کریم اجر عطا فرماتا ہے، بلکہ کسی مسلمان کے راستے سے کانٹا ہٹا دینے پر بھی نیکیوں سے محروم نہیں کرتا تو بیوی کا خیال رکھنے اور اس کا احساس کرنے سے کتنا راضی ہوتا ہو گا۔۔۔۔۔۔۔۔!

اللہ توفیق دے ہم بھی اپنی بیویوں کا ہر طرح سے خیال رکھا کریں، ان کا احساس کیا کریں، اور ان کے معاملے میں صبر و درگزر سے کام لیا کریں۔

حدیث پاک میں اس شخص کو بہترین مسلمان قرار دیا گیا ہے جو اپنی بیوی کے ساتھ اچھا برتاؤ کرتا ہے۔

## میاں بیوی کا رشتہ

میاں بیوی کا رشتہ ہمیشہ کا رشتہ ہوتا ہے، جسے پیار محبت، اور خلوص و وفا دوام بخشتے ہیں۔

بغیر کسی معقول وجہ کے یہ رشتہ توڑنا تو پرلے درجے کی حماقت ہے۔۔۔۔۔۔۔وجہ ہوتے ہوئے بھی آخری حد تک نبھا کی کوشش کرنی چاہیے۔

ایک شخص نے امام احمد بن حنبل سے پوچھا تھا کہ:

میرے والد نے مجھے بیوی کو طلاق دینے کا حکم دیا ہے، تو کیا میں اسے طلاق دے دوں؟

آپ نے فرمایا: نہیں۔

وہ کہنے لگا:

کیا حضرت عمر رضی اللہ عنہ نے اپنے بیٹے عبداللہ رضی اللہ عنہ کو طلاق کا حکم نہیں دیا تھا (تو انھوں نے اپنے باپ اطاعت کی تھی)؟

امام صاحب نے جواب دیا: اگر تمھارا باپ بھی حضرت عمر فاروق کی طرح ہے تو دے دو۔

(مطلب: تمھارا باپ سیدنا عمر پاک جیسا معاملہ فہم، زیرک اور دانا کبھی نہیں ہو سکتا۔۔۔۔۔اس لیے اس روایت سے دلیل پکڑنے کے بجائے بیوی کے ساتھ نبھا کرو)

(الصبر علی الزوجات، ص 10، ترجمہ مولانا فرحان رفیق قادری، ط دار الفتح للدراسات والنشر)

اللہ کریم امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ کے طفیل ہمارے گھروں کو آباد رکھے، ہمیں اور ہمارے والدین کو خلوص و للٰہیت نصیب فرمائے، اور ہم سب کو معاملہ فہم بنائے!

## مرحوم اکبر کی.....مجبور شہناز

میں پاگل ہو جاؤں گی۔۔۔۔۔۔۔میری شکل دیکھو میں بھکارن بن گئی ہوں، تھک گئی ہوں میں۔۔۔۔۔۔۔۔۔

میرے پاس بیٹھ کر بولا: تُو ہر وقت جھگڑتی رہتی ہے کبھی تو پیار سے بات کر لیا کر میرے ساتھ۔

میں نے اسے سائیڈ پہ دھکا دیا، وہ خاموش ہو گیا۔

میں تھک ہار گئی تھی، اب سوچ رہی تھی بس اس سے طلاق لے لوں گی، اپنے ایک دو کزن سے بھی بات کی تھی جو وکیل تھے، انھوں نے تسلی دی کہ ہم ساتھ ہیں آپ کے طلاق لے لو اس کمینے سے۔ میں سوچ رہی تھی آج گھر آئے گا تو بس اس کو بول دوں گی طلاق دے دو مجھے۔

میں انتظار کر رہی تھی، وہ رات 10 بجے آیا۔۔۔۔۔۔۔۔بچے سو رہے تھے، دونوں بچوں کے ماتھوں پر اس نے بوسہ دیا، ان کے ہاتھ چومے، پھر چارپائی پہ بیٹھ کر مجھے آواز دی: شہناز مجھے روٹی دے!

میں کروٹ بدلے لیٹی رہی، اس نے پھر آواز دی، شہناز! سن لے، اٹھ جا۔۔۔

میں چپ رہی، وہ پاس آیا مجھے دیکھا، میں نے آنکھیں بند کر لیں؛ مجھ پہ کمبل اوڑھا کر بولا: تھک جاتی ہے سارا دن

۔۔۔۔۔۔۔ پھر کچن میں گیا، کھانا دیکھنے لگا، کچھ بھی نہیں تھا کھانے کے لیے۔۔۔۔۔۔۔ ایک پیالی میں نمک مرچ ڈال کر اس میں تھوڑا پانی ملا کر سوکھی روٹی کھانے لگا، میں دیکھ رہی تھی، میں دل میں سوچنے لگی: یہ مرتا بھی نہیں ہے، وہ کھانا کھا کر سو گیا۔

دوسرے دن صبح صبح ہم کسی بات پہ جھگڑنے لگے، میں نے اسے کہا:

بس مجھے طلاق دے دو میں اب برداشت نہیں کر سکتی، میں تھک گئی ہوں، غصے میں مَیں نے اس کے کپڑے بھی پھاڑ دیئے؛ وہ طلاق کا نام سنتے ہی چپ ہو گیا، جلدی سے کپڑے چینج کرنے لگا، پھر بائیک لی اور باہر جانے لگا۔

میں نے چلا کر کہا:

اللہ کرے تو مر جائے، میری جان تو چھوٹ جائے تم سے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ وہ بائیک باہر کھڑی کر کے کمرے میں گیا، کسی کاپی پہ کچھ لکھا، چلا گیا۔

میں گالیاں دے رہی تھی، رو رو کر تھک گئی تھی، اسے بدعا دے رہی تھی، میں نے ارادہ کر لیا تھا بس اب اس انسان کے ساتھ نہیں رہنا۔

دو چار گھنٹے گزرے، اور میں میکے جانے لگی، بچوں کو ساتھ لے لیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اتنے میں گلی میں ایک شور سا برپا ہوا، میں رو رہی تھی، ہمارے دروازے پہ دستک ہوئی، میں نے دروازہ کھولا، پورا گاؤں چارپائی اٹھائے میرے دروازے کے سامنے کھڑا تھا، میں حیران تھی کیا ہوا۔۔۔؟

اتنے میں ایک لڑکا فون پہ بات کر رہا تھا، یار اکبر کا ایکسیڈنٹ ہوا ہے اور وہ مر گیا ہے۔

یہ سنتے ہی جیسے مجھ پر قیامت ٹوٹ پڑی، میں ساکت ہو گئی۔۔۔۔۔۔۔ چارپائی صحن میں رکھی گئی، سب لوگ قبر کھودنے کی بات کرنے لگے، کچھ جنازے کا ٹائم دیکھنے لگے، مسجد میں اعلان ہونے لگا۔۔۔۔۔۔۔ اکبر میرے سامنے چارپائی پہ لیٹا ہوا تھا، کون یقین کرے وہ مر چکا ہے؛ میں چیخنے چلانے لگی: اکبر اٹھ جا، میں نہیں کچھ مانگتی، مجھے کچھ نہیں چاہیے، میں طلاق کی بات بھی نہیں کرتی

میں اس کے پاؤں چومنے لگی۔۔۔۔۔۔۔ اکبر اٹھ جا میری جان اٹھ جا، دیکھ، دیکھ میں کہیں نہیں جا رہی، مجھے تیرے ساتھ ہی رہنا ہے؛ میں بھوکی پیاسی رہ لوں گی، مجھے یوں چھوڑ کر نہ جا۔۔۔۔۔۔ میں کھانا بنا کر لاتی ہوں، بھوک لگی ہے نا تم کو ۔۔۔؟؟

لیکن اب بہت دیر ہو چکی تھی، اب وہ مجھے چھوڑ کر جا چکا تھا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ میں چیختی چلاتی رہی لیکن وہ منوں مٹی تلے جا سویا۔

اس کے جانے کے بعد مجھے دنیا کے رنگ نظر آنے لگے، مجھے رشتے بدلتے دکھائی دینے لگے، پھر جو اپنے تھے وہ سب منہ موڑنے لگے، مجھ پہ دنیا نظریں کسنے لگی، بچے بابا ڈھونڈنے لگے، اب کون ان کا نیند میں آ کر ماتھا چومے گا؟؟

کون مجھے آواز دے گا، کون میرے تلخ لہجے برداشت کرے گا۔۔۔؟

مجھ سے مکان چھین لیا گیا، جو حصہ بنتا تھا وہ بھی نہ دیا، میں اکبر کے بعد در بدر ٹھوکریں کھانے لگی۔

اب بچے بھی کچھ فرمائش نہیں کرتے، وہ جانتے ہیں بابا اب نہیں رہے۔۔۔۔۔۔۔۔ میرے سگے بھائی بھی منھ موڑ گئے، میں لوگوں کے گھروں میں نوکرانی بن کے کام کرنے لگی۔

ایک دن مجھے اس کی ڈائری ملی، جس پہ لکھا تھا:

شہناز سے شادی کر کے بہت خوش ہوں، شہناز سے بہت پیار کرتا ہوں۔۔۔

وہ پاگل ہے بلکل سمجھتی ہی نہیں جھگڑتی رہتی ہے، دیکھو آج اس نے مجھے کھانا نہیں دیا۔

وہ کہتی ہے: مہنگا موبائل لا کر دو، اسے کیسے بتاؤں نہیں لا سکتا۔۔۔۔۔۔۔۔!

آج میرے بچوں کو میرے بھائی نے گالی دی، میں بہت رویا ہوں میرے بچے میری جان ہیں۔۔۔

شہناز کو بخار ہے وہ بیچاری میرے لیے کیا کچھ برداشت کر رہی ہے، اللہ نے چاہا تو ہمارے حالات بدل جائیں گے، پھر شہناز کو دنیا کی ہر خوشی دوں گا؛ اب وہ مجھے کھانا نہیں دیتی، میں جانتا ہوں ناراض ہے مجھ سے۔۔۔۔۔۔۔ میں نے نمک مرچ کے ساتھ سوکھی روٹی کھائی ہے، آج میری کمر میں اینٹ لگی ہے، زخم بہت گہرا ہے۔۔۔۔۔۔۔ یہ شہناز کو نہیں بتاؤں گا وہ پریشان ہو جائے گی بیچاری۔

ڈاکٹر کہہ رہا تھا 15 ٹانکے لگنے ہیں، آج مجھے چوٹ لگی ہے، کہہ رہی ہے طلاق دے دو، میں مر جاؤں گا اس کے بنا۔۔۔۔۔۔۔ ابھی غصے میں ہے ٹھیک ہو جائے گی۔ میں ڈائری کو سینے لگا کر چیخ چیخ کر رونے لگی۔۔۔۔۔۔

ہمسفر تو ہمسفر ہوتا ہے نا، وہ جیسا بھی تھا میرا سایہ تھا، میری ڈھال تھا، اس کے بعد زمانے کی ٹھوکریں کھا کر سمجھی ہوں اس کے ساتھ میرے دونوں جہاں تھے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ تھک ہار کر گھر آتی ہوں، اب ٹوٹ گئی ہوں، میں بچوں کی خاطر زندہ ہوں بس؛ ورنہ کب کی ختم ہو جاتی۔۔۔۔۔۔ میں خود کو اذیت دیتی ہوں، کیوں جھگڑتی تھی اس کے ساتھ، کیوں اس کو ستاتی تھی، کیوں میں لوگوں کو دیکھ کر بڑے خواب دیکھتی تھی، وہ میرے ساتھ ہوتا تو کیسی زندگی گزار رہی ہوتی۔

کیا میں بخشی جاؤں گی۔۔۔؟؟ اللہ مجھے معاف کرے گا۔۔۔؟

میں مشکل وقت میں اس کا سہارا، اس کی ہمت نہ بن سکی؛ میں مطلب پرست لالچی ہو گئی تھی، اب تو اکثر لوگ میری مدد کرتے ہوئے میرے جسم کی بات بھی کرتے ہیں۔۔۔۔۔۔

سب عورتوں سے ہاتھ جوڑ کر اپیل کرتی ہوں کہ پیسہ ہمسفر کے سامنے خاک بھی نہیں ہے، لالچ اور بڑے بڑے خواب کی تمنا میں لوگوں کی نوکرانی نہ بن جانا۔۔۔۔۔۔۔۔ شوہر اگر ایک وقت کی روٹی بھی کھلائے تو مسکرا کر سینے سے لگ جانا، خدا کی قسم زمانے کی لاکھ تلخیوں کو وہ تمھاری خاطر اپنے سینے پہ برداشت کرتا ہے، پلیز اگر کوئی بہن اپنے شوہر سے بیزار ہے تو وہ سمجھ جائے۔۔۔۔۔۔ اس سے پہلے کہ آنسو اس کا مقدر بن جائیں۔۔۔

(مرحوم اکبر کی.....مجبور شہناز)

## بیویوں کی قدر

ایک بنگالی درزی کے پاس، سعودی خاتون الریاض سے بائے ایئر جدہ کپڑے سلائی کروانے آتی تھی۔
وہ کہتا ہے میں سوچتا کہ کیا میں اتنا ہی قابل درزی ہوں جو یہ خاتون دارالحکومت چھوڑ کر میرے پاس آتی ہے۔
میں نے ہمت کر کے اسے ایک دن پوچھ ہی لیا کہ:
محترمہ آپ جو اتنا سفر کر کے میرے پاس ہی تشریف لاتی ہیں، اس کی کیا وجہ ہے؟
وہ کہنے لگی:
میں نے اپنے شوہر کو بتا رکھا ہے کہ تم بڑے قابل درزی ہو، تمھارے جیسا درزی کوئی نہیں۔۔۔۔۔۔اور تمھارے پاس بار بار اِسے ساتھ لے کر بائے ایئر اس لیے آتی ہوں کہ اس کے پاس پیسے جمع نہ ہو سکیں، اور یہ دوسرا نکاح نہ کر سکے ۔۔۔۔۔۔جیسے ہی یہ پیسے گننا شروع کرتا ہے تو میں خرچ کروانے شروع کر دیتی ہوں۔
پاکستانی احباب کو بیویوں کی قدر کرنی چاہیے، بے چاری ساری زندگی اِن کے پیسے جمع کرتی رہتی ہیں، ان کے گھر والوں اور بال بچوں کی خاطر خدمت کرتی ہیں، اور ساتھ ان کے نخرے بھی برداشت کرتی ہیں۔
اگر انھیں ایسی ذہین و فطین سعودی خواتین مل جاتیں تو لگ پتا جاتا تھا کہ کتنے بیسیوں سو ہوتا ہے۔
(یہ تحریر مدینہ طیبہ کی حدود سے باہر، وادی ملل میں لکھی ہے۔)

# (19)انیسواں باب: مناقب شخصیات

یہ باب مختلف ہستیوں کے اور تنظیموں کے مناقب پر مشتمل ہے۔

## حکیم الامت

آج مفسر قرآن، حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی رحمہ اللہ کا یوم عرس ہے۔
آپ رحمہ اللہ انتہائی متبع شریعت اور سچے عاشق رسول تھے۔
اتباع شریعت کا یہ عالم تھا کہ آپ کی چالیس سال میں کوئی تکبیر اولیٰ بھی نہیں چھوٹی۔
اور عشق رسول ایسا کہ بہ کثرت سرکار مدینہ ﷺ کی زیارت کیا کرتے، اگر کچھ عرصے تک زیارت نہ ہوتی تو بے چین ہوجاتے۔
آپ رحمہ اللہ کا ایک شعر مجھے بہت پسند ہے، وہ پڑھتا ہوں تو آنکھیں نم ہوجاتی ہیں ۔

رُوح نہ کیوں ہو مضطرب، موت کے انتظار میں
سُنتا ہوں مجھ کو دیکھنے آئیں گے وہ مَزار میں!

## شان علی اور امام بوصیری

امام بوصیری رحمہ اللہ نے حضرت علی کریم کرم اللہ وجھہ کی شان میں ایک شعر کہا ہے:

لم یزدہ کشف الغطاء یقینا
بل ھو الشمس ماعلیہ غطاء

پردہ ہٹ جانے سے اس کی تابشوں میں اضافہ نہیں ہوا، وہ تو پردے میں لپٹا ایک سورج ہے۔
آپ اسے یوں بھی سمجھ سکتے ہیں کہ:
ہم پر مولا علی پاک رضی اللہ عنہ کی شانیں ظاہر ہونے سے، آپ کا مقام نہیں بڑھے گا؛ آپ کی عظمت کا سورج تو پہلے ہی بلندیوں پر ہے۔
یہ شعر پڑھ کر جو کیفیت مجھ پر طاری ہوئی وہ الفاظ میں بیان نہیں کرسکتا اور نہ اس شعر کی الفاظ میں تشریح کرسکتا ہوں۔
اگر حضرت بوصیری میرے سامنے ہوتے تو ان کے قدم اور قلم چوم لیتا!

## جنت میں محل معاویہ

سیدنا عبداللہ بن مسعود رضی تعالیٰ عنہ کے جلیل القدر شاگرد حضرت ابو میسرہ رحمہ اللہ کہتے ہیں:
میں نے خواب دیکھا کہ جنت میں داخل ہوا ہوں، وہاں خیمے لگے ہیں۔
میں نے پوچھا: یہ کس کے ہیں؟
جواب دیا گیا: ذِی کَلاع اور حَوْشَب کے۔

یہ دونوں (معرکہ صفین میں) سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کے ساتھ تھے۔
میں نے پوچھا: سیدنا عمار رضی اللہ تعالی عنہ اور ان کے ساتھی کہاں ہیں؟
کہا گیا: وہ بھی ان کے آگے ہیں۔
میں نے کہا: انھوں نے تو ایک دوسرے سے جنگ کی تھی!
جواب ملا: یہ جب بارگاہِ خداوندی میں حاضر ہوئے تو اُسے بہت زیادہ مغفرت کرنے والا پایا۔
)شرح الصدور بشرح حال الموتی والقبور للسیوطی، باب تلاقی ارواح الموتی.....، ص 240، ر 1145، مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت(
توبہ توبہ! جنھیں اللہ پاک نے بخش دیا، یہ تفضیلی و تفسیقی انھیں محرم شریف میں بھی نہیں بخش رہے۔

## تاج الشریعہ کے حضور!

تاج الشریعہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے وصالِ پر ملال پر نظم و نثر میں بہت کچھ لکھا گیا ہے اور ہنوز سلسلہ جاری ہے، جو یقناً اعلا سے اعلا ہے۔ آپ سے قلبی لگاؤ کی بِنا پر میں نے بھی ایک ادنا سی کوشش کی ہے، گر قبول افتد زہے عزو شرف!
تاج الشریعہ رحمہ اللہ کا نام پاک اختر ہے جس میں چار حروف ہیں (ا خ ت ر)۔ اس نسبت سے میں نے آپ کی شان میں چار مصرعے کہے ہیں جو ان خصوصیات کے حامل ہیں۔
1: ان مصرعوں کے لیے اس بحر کا انتخاب کیا ہے جس کے نام میں چار حروف ہیں، یعنی بحر جمیل (ج م ی ل)۔
اس انتخاب کی ایک وجہ یہ ہے کہ اس بحر کے واضع کا نام نصیر الدین طوسی ہے، اور لفظِ نصیر میں بھی چار حروف ہیں (ن ص ی ر)۔ دوسری وجہ یہ کہ "جمیل"، "اختر" کی ایک صفت ہے۔
اختر: چمکتے ستارے کو کہتے ہیں، اور جمیل کا معنی ہے: خوب صورت۔
گویا میں نے اپنے "اختر" کا ذکر کرنا چاہا تو اس کے لیے "جمیل" کا انتخاب کیا؛ یہی اس کے شایاں تھا!
تیسری وجہ یہ ہے کہ حضرت اختر رضا رحمہ اللہ بہت حسین و جمیل تھے، گویا چاند کا بے داغ ٹکڑا معلوم ہوتے تھے؛ اسی لیے میں نے اس حسین و دل ربا کے ذکر خیر کے لیے جس بحر کو چنا وہ بھی حسین (جمیل) تھی؛ کیوں کہ ایسے حُسن والے کا ذکر حَسین بحر میں زیادہ حسین لگتا ہے!
2: بحر جمیل میں "مربع" کا انتخاب کیا؛ یعنی مفاعلاتن، مفاعلاتن ایک شعر میں چار مرتبہ لایا۔
اس کی ایک وجہ یہ بھی تھی کہ ابجد کے اعتبار سے جمیل کے 83 عدد ہیں، اور تاج الشریعہ کی عمر مبارک 75 سال تھی۔
چار مصرعوں میں رکن: مفاعلاتن آٹھ بار آیا، تو 83 سے جب آٹھ کا عدد نکالا تو 75 رہ گیا؛ یہ عمر مبارک کی طرف اشارہ ہے
3: مزاحف رکن کے بجائے سالم کو ترجیح دی ہے، کیوں کہ تاج الشریعہ نے عمر بھر اپنا دامن زحافات (فروعی مسائل کی توڑ

پھوڑ) سے بھی بچا کے رکھا؛ آپ نے اپنے علم کے مطابق جس رائے پر اسلاف کو پایا، تادمِ زیست اسی پر سختی سے کاربند رہے۔

4: ان چاروں مصرعوں سے نئے انداز میں قطعہ تاریخ بھی نکالا ہے، اور وہ اس طرح کہ:

پہلے اور آخری مصرعے میں 18 حروف لایا ہوں، جو 2018ء کی طرف اشارہ ہے۔ دوسرے مصرعے میں 16 حروف ہیں، انھیں باہم اس طرح جمع کریں (1+6=7) تو جواب 7 آتا ہے؛ یہ ساتوے مہینے (جولائی) کی طرف اشارہ کرتا ہے۔

تیسرے مصرعے میں 21 حروف ہیں، یہ آپ کی تاریخ وفات کی طرف اشارہ ہے۔ 2018/7/21ء

(آپ نے 20 تاریخ کو پردہ فرمایا اور 22 کو تدفین ہوئی۔ میں نے 20 اور 22 تاریخ کے بجائے 21 کو ترجیح دی ہے کیوں کہ اس تاریخ کو ہمہ وقت جسدِ انور ہم میں موجود رہا)

5: آپ کا نامِ پاک منقوط ہے، اس نسبت سے میں نے چاروں مصرعوں میں صرف منقوط الفاظ ہی استعمال کیے ہیں۔

علاوہ ازیں ان دو شعروں میں کچھ معنوی خوبیاں بھی ہیں جن کی تفہیم قاری پر چھوڑتا ہوں: نذرانہ عقیدت

فلک نشاں تیرا نام اختر
بلند تیرا مقام اختر
نہیں جھلک دیکھی انھوں نے تیری
جو کہتے ہیں آج شام اختر

## علامہ عنایت اللہ سانگلہ ہل

آج فجر کے بعد سے قبلہ استاد مکرم زید مجدہ کے ساتھ ایک علمی سفر پر ہوں، حضرت کے ملفوظاتِ عالیہ سے دامن دل بھرنے کی کوشش کر رہا ہوں؛ ابھی شیرِ اہل سنت حضرت علامہ عنایت اللہ سانگلہ ہل والوں کا ذکر آیا تو فرمانے لگے:

میں نے ان سے شرح وقایہ کے کچھ اسباق پڑھے ہیں۔ آپ بہت نیک تھے، میں نے سفر میں بھی آپ کو عصر کی سنتیں چھوڑتے نہیں دیکھا؛ ایک دفعہ وقت کم تھا پھر بھی سنتیں ادا کر کے فرض پڑھے۔

آپ بزرگوں کے انتہائی مُودب تھے، پڑھاتے وقت امام شافعی کا نام آتا تو کہتے:

سرکار سیدنا حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ، اور جب امام پاک کا نام آتا تو جھک کر کہتے:

ساڈی سرکار سیدنا امام اعظم ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ؛ پھر نام پاک چوم لیتے۔

پیر عبدالقادر شاہ ٹیچ بھاٹوی نے انگلینڈ میں آپ کی سخت حق تلفی اور دل آزاری کی؛ آپ اس ناروا سلوک سے بہت دل برداشتہ ہوئے اور بددعائیں کرتے ہوئے کہتے تھے: اس کا خاتمہ اچھا نہیں ہوگا۔ (پروردگار ہم سب کا خاتمہ ایمان پر فرمائے!)

آپ کا گورا رنگ اور نورانی چہرہ تھا، آخری وقت جب بیمار ہوئے تو کم زوری کے سبب چہرے کا رنگ کچھ بدلا، تو دعا کرنے لگے: یااللہ میں گناہ گار ہوں، لیکن تیرے محبوب کا گستاخ نہیں؛ میرا چہرہ تبدیل نہ فرمانا! اللہ کریم نے آپ کی دعا قبول فرمائی اور چہرہ مبارک پہلے کی طرح روشن و منور ہو گیا۔ آپ نے وصیت فرمائی تھی کہ بعدِ مُردن میری چارپائی رکھ دینا، اور لوگوں سے کہنا دیکھ لو نبی پاک کا غلام جا رہا ہے۔

## ایسے لکھنے والے بھی!

ابھی امام ذہبی کی تذکرۃ الحفاظ پڑھ رہا تھا، اس میں حافظ ابن عساکر رحمہ اللہ کی کتابوں کی فہرست دیکھی تو سوچنے لگا: الٰہی! ایسے لوگ بھی تھے—

دیکھیے:

1: تاریخ دمشق 80 جلد

2: موافقات 6 جلد

3: الاطراف الاربعہ 4 جلد

4: عوالی مالک 50 جز

(التالی لحدیث مالک العالی 19 اجزا، اور کتاب الملتمس من عوالی مالک بن انس 31 جز اس کے علاوہ ہیں)

5: السباعیات 17 جز

6: مناقب شبان 15 جز

7: الاربعین الطوال 13 جز

8: غرائب مالک 10 جز

9: فضل الجمعہ 4 جز

10: فضل عاشورا 3 جز

11: الزلازل 3 جز

12: الجواہر فی الابدال 3 جز

ان کے علاوہ بیسیوں کتابیں ایک جلد میں لکھیں، اور ابواب العلم میں 407 مجلسیں املا کروائیں۔

(انظر: تذکرۃ الحفاظ، الطبقۃ السادسۃ عشر، ج4، ص83، 84، ر1094، دار الکتب العلمیۃ بیروت، 1419ھ)

یہ سارا کام تن تنہا اُس وقت کیا جب شاملہ، گوگل، سرچ انجن اور ڈیجیٹل لائبریوں کا تصور تک نہیں تھا؛ اور نہ ہی ٹیم ورک "ماتھے مڑھنے" کا رواج!! اللہ پاک ان پاک طِینت لوگوں کی تُربتوں پر، کروڑوں رحمتوں کا نزول فرمائے۔

## شان علی بہ زبان معاویہ

ایک آدمی نے حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عنہ سے مسئلہ پوچھا تو آپ نے فرمایا:
سل عنھا علی بن ابی طالب، فھو اعلم۔ یہ مسئلہ حضرت علی سے پوچھو وہ مجھ سے بڑے عالم ہیں۔
اس نے کہا: امیر المؤمنین! مجھے آپ کا جواب حضرت علی کے جواب سے زیادہ پسند ہے۔
آپ نے فرمایا: تو نے بہت بری بات کہی، تو اُس ہستی کو ناپسند کرتا ہے جس کے علم کی نبی پاک ﷺ نے عزت کی!!
جس کے بارے میں فرمایا: تیری مجھ سے وہی نسبت ہے، جو ہارون کو موسٰی (علیہما الصلوٰۃ والسلام) سے تھی، مگر میرے بعد کوئی نبی نہیں—

(فضائل الصحابۃ لامام احمد بن حنبل، ج2، ص675، ر1153، مؤسسۃ الرسالۃ بیروت، 1430ھ)

امام پرہاروی رحمہ اللہ کہتے ہیں:
بعض حضرات نے اس روایت میں یہ بھی اضافہ کیا ہے کہ حضرت امیر معاویہ نے اسے فرمایا: اللہ تجھے تیرے پاؤں پر کھڑا نہ کرے!
نیز اراکین دیوان سے اس کا نام بھی کاٹ دیا۔

(انظر: الناھیۃ عن طعن امیر المؤمنین معاویہ رضی اللہ عنہ، ص27، مکتبۃ الحقیقۃ ترکی، 1411ھ)

سنداً ضعیف ہونے کے باوجود، سیدنا معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا یہ فعل قابل رشک ہے—
اللہ کریم اس جلیل القدر صحابی کے طفیل کسی بھی مسلمان کو مولا علی پاک کی محبت و تعظیم سے کبھی محروم نہ کرے!!

## شان علی

ایک دن سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہنے لگے:
جو حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شایانِ شان شعر پڑھے گا، میں اسے ہر شعر کے بدلے ایک ہزار دینار دوں گا۔
حاضرین اشعار پڑھنے لگے؛ حضرت معاویہ شعر سنتے جاتے اور کہتے: علی افضل منہ
حضرت علی اس سے افضل ہیں۔ پھر حضرت عمرو بن عاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کچھ اشعار پڑھے، اور جب اِس شعر پر پہنچے:

هو النباء العظيم وفلك نوح
وباب الله وانقطع الخطاب

تو سیدنا معاویہ کو یہ شعر بہت پسند آیا اور آپ نے سات ہزار دینار ان پر نچھاور کر دیے—

(انظر: الناھیۃ عن طعن امیر المؤمنین معاویہ رضی اللہ عنہ، ص28، 29، مکتبۃ الحقیقۃ ترکی، 1411ھ)

اللہ کریم ہمیں بھی مولا علی پاک کی سچی محبت نصیب فرمائے!

## امیر معاویہ کے لیے رحمت کی دعا

عظیم تابعی حضرت سعید بن مسیب رحمۃ اللہ علیہ نے امام زہری سے فرمایا:

اے زہری سنو! جو شخص جناب ابوبکر و عمر، اور عثمان و علی کی محبت میں مرے، عشرہ مبشرہ کے جنتی ہونے کی گواہی دے، حضرت معاویہ کے لیے رحمت کی دعا کرے؛ تو اللہ پر حق ہے کہ اُس کے حساب میں سختی نہ فرمائے۔

(تاریخ دمشق، ج59، ص207، دار الفکر بیروت، 1415ھ)

## ڈاکٹر طاہر القادری اور امیر معاویہ

ایک مُحدث کا کہیں سے گزر ہوا، دیکھا کہ ایک آدمی اوٹ میں رفع حاجت کے لیے بیٹھا ہوا ہے، وہ رک گئے اور اُس کے فارغ ہونے کا انتظار کرنے لگے۔ اُس شخص نے فارغ ہوتے ہی نماز شروع کر دی۔

جب سلام پھیرا تو حضرت نے بڑی حیرانی سے پوچھا: میاں تم بغیر وضو کون سی نماز پڑھ رہے تھے؟

کہنے لگا: آج تک سنتا آیا تھا آپ کو بہت حدیثیں یاد ہیں، مگر آج معلوم ہوا کہ آپ کو کچھ پتا نہیں!

کیا آپ نے بخاری میں نہیں پڑھا: مَنِ اسْتَجْمَرَ فَلْيُوتِرْ۔ جب استجا کرو تو وتر پڑھو!

وہ ہنسنے لگے اور کہا: اوہ بے وقوف! حدیث کا یہ مطلب نہیں کہ جب استنجا کرو تو وتر پڑھو۔

حدیث کا مطلب ہے: استنجے میں جو پتھر استعمال کرو اُن کی وتر تعداد ہونی چاہیے، یعنی ایک یا تین ہوں۔

سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کے متعلق "شہرا عتکاف" میں کی گئی ڈاکٹر صاحب کی تشریح، اس شخص سے بالکل مختلف نہیں !!

## بارگاہ علی میں نذرانہ عقیدت

آج سیدنا علی پاک فداہ روحی و جسدی کا یوم شہادت ہے، ہر ذی شعور مسلمان اپنے اپنے فہم کے مطابق آپ کی تعریف میں مگن ہے؛ میں نے بھی آپ کی بارگاہ میں نذرانہ عقیدت پیش کرنے کی کوشش کی ہے، اللہ کرے قبول ہو جائے!

اس میں دو خصوصیتیں ہیں:

[1] ہر لفظ منقوط ہے، کوئی غیر منقوط نہیں۔

[2] اکیس تاریخ کی نسبت سے، علم حدیث کی 21 اصطلاحیں استعمال کی ہیں۔

ان اصطلاحوں کے استعمال میں لفظی و معنوی رعایت کا پورا خیال رکھا ہے.....باذوق احباب اگر اسی گہرائی سے پڑھیں گے جس میں مَیں نے لکھا ہے، تو ان شاءاللہ محظوظ ہوں گے۔

حدیث جاں

تو میری حدیثِ جاں! سَنَد تیرا نسب، مَتْن تیرا وجود، مُسْنَد تیری صفت، مُتَّصِل تیری عادت، مَوقُوف کیا، مَرفُوع تیری فضیلت۔ تیری بعض جہتیں مَشْہُور و عَزِیز ضرور ہیں لیکن..... تیرے مُتَواتِر شرف تک نہیں پہنچتیں!

جس نے تیرا درجہ محفوظ کیا:

ثِقَہ، ثَبْت، مُتْقِن، حُجَّۃ، صَدُوق و مَقبول سُنی بنا۔

جس نے تیرا درجہ فراموش کیا: کَذَّاب، دَجَّال، وَضَّاع و متروک رافضی قرار پایا—

## سرکار مدینہ ﷺ کی چار شہزادیاں

سرکار مدینہ ﷺ کی چار شہزادیاں تھیں:

1: سیدہ زینب رضی اللہ عنھا

2: سیدہ رقیہ رضی اللہ عنھا

3: سیدہ ام کلثوم رضی اللہ عنھا

4: سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنھا

رمضان شریف کے یہ ایام سیدہ رقیہ کے مرض و وصال کے ہیں؛ جس وقت سیدنا زید بن حارثہ رضی اللہ عنہ فتح بدر کی خوش خبری لے کر مدینہ طیبہ میں داخل ہوئے تھے اس وقت لوگ آپ رضی اللہ عنھا کی تدفین میں مشغول تھے—

سیدہ رقیہ رضی اللہ عنھا کا نام پاک منقوط ہے، اور جُمَّل میں اس کے 315 عدد ہیں؛ اسی نسبت کو ملحوظ رکھتے ہوئے میں نے تین سو پندرہ حروف پر مشتمل نذرانہ عقیدت پیش کیا ہے، جس میں ادبی اعتبار سے یہ انفرادیت ہے:

[1] ہر لفظ منقوط استعمال کیا ہے، کوئی بھی غیر منقوط نہیں!

[2] سیدہ پاک رضی اللہ عنھا رسول اللہ ﷺ کی دوسری شہزادی ہیں، اس نسبت سے ہر جملے کے آخر میں ایسا لفظ استعمال کیا ہے جو تثنیہ (یعنی دو) پر دلالت کرے، مثلاً: مشرقین: دو مشرق، عینین: دو آنکھیں، قوسین: دو ابرو، شفتین: دو ہونٹ وغیرہ

[3] تین سو تیرہ اصحاب بدر کی تعداد، اور بہن بھائیوں میں سیدہ رقیہ کا دوسرا نمبر؛ اس اعتبار سے بھی 315 عدد نکلتے ہیں، یہ نسبت بھی میرے پیش نظر رہی ہے؛ اللہ کریم میرا یہ نذرانہ قبول فرمائے!

بہ حضور سیدہ رقیہ!

تُو شہزادی کونَین رقیہ، تو وسیلۂ دارَین رقیہ، تیرا رب، ربِ مشرقین رقیہ، تیرے اَب سیدِ ثَقلین رقیہ، تیرے زوج جنابِ ذُوالنورین رقیہ، حضرتِ عبداللہ ترے نورِ عینین رقیہ، تجھ پر فدا حسنینِ کریمین رقیہ، لختِ جگرِ خدیجہ! کون تیرے جیسا نجیب الطرفین رقیہ، تیری تقدیس مثلِ حرمین رقیہ، تیرے شرف تک کبھی نہ پہنچ سکیں قُطبَین رقیہ، بس! میری آنکھوں میں کاجل تیری خاکِ نعلین رقیہ، جُھکے رہیں تیری چوکھٹ پر ہمیشہ قوسین رقیہ، کھلیں تری مدحت میں شَفَتَین رقیہ!!

## مفتی حنیف قریشی

مفتی حنیف قریشی صاحب

1: اعلیٰ حضرت قدس سرہ کے نام لیوا، مفتی حنیف قریشی صاحب نے، کل بول چینل پر کہا:

اہل سنت وجماعت کے اندر دو نظریے ہیں:

1: خطاے معصیت ہے یا

2: وہ خطا، خطاے اجتہادی۔

لیکن.....افسوس کہ اعلیٰ حضرت کے حوالے سے یہ نہیں بتایا کہ:

بلاشبہہ اُن کی خطا، خطاے اجتہادی تھی (خطاے معصیت ہرگز نہیں تھی)؛ اور اس پر "الزامِ معصیت" عائد کرنا.....ارشادِ الٰہی کے صریح خلاف ہے۔

(دیکھیے: فتاوی رضویہ، ج29، ص228)

اور یہ بھی نہیں بتایا کہ خطاے معصیت کہنے والے خاطیوں کا علماے اہل سنت نے رد کیا ہے۔

کیوں کہ خطاے معصیت کہنا بہ ذات خود معصیت ہے—

اہل سنت کے امام، حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے امام شافعی اور حضرت عمر بن عبدالعزیز رحمہما اللہ کا ایک قول نقل کرنے کے بعد یہاں تک کہا ہے کہ:

ازیں عبارت مفہوم میشود کہ بحقیت یکے وخطائے دیگر ہم لب نباید کشود وہمہ را جزبہ نیکی یاد نباید کرد۔

اس عبارت سے یہ مفہوم اخذ ہوتا ہے کہ ایک کو حق پر اور دوسرے کو خطا پر بھی نہیں کہتے رہنا چاہیے؛ بلکہ سب کو نیکی سے یاد کرنا چاہیے۔

(دیکھیے: مکتوبات شریف، ج2، م36، د2، ص78، مکتبہ امدادیہ کانسی روڈ کوئٹہ)

2: مفتی صاحب نے بہار شریعت اور فتاوی رضویہ کی آڑ میں "خطاے منکر" پر بڑا زور دیا ہے، اور منکر و مقرر نہ سمجھنے والوں کے لیے جاہل اور گنجے جیسے اعزازی الفاظ بھی استعمال فرمائے ہیں، لیکن حیرانی کی بات ہے کہ موصوف کو خود بھی معلوم نہیں کہ "خطائے اجتہادی منکر" کیا ہوتی ہے!

آں جناب نے خطاے اجتہادی منکر کے بارے میں کہا ہے کہ:

"جب خطاے اجتہادی منکر ہے تو یہ مطلب ہے کہ ان کے ان معاملات پر انھیں ثواب نہیں ملے گا"

سبحان اللہ، علم و فضل کے کیا کہنے !! یہ عدم ثواب والی بات کہاں سے اخذ کرلی ؟؟

بہار شریعت یا فتاوی رضویہ شریف میں تو ایسی کسی بات کا نام و نشان تک نہیں ـــ

بہار شریعت میں تو یہ لکھا ہے: خطا دو قسم ہے:

[1]خطاے عنادی: یہ مجتہد کی شان نہیں۔

اور

[2]خطاے اجتہادی: یہ مجتہد سے ہوتی ہے، اور اس میں اس پر عند اللہ اصلا مؤاخذہ نہیں! مگر..... "احکام دنیا میں" وہ دو قسم ہے:

[1]خطاے مقرر

[2]خطاے منکر

(دیکھیے: بہار شریعت، ج1، ص256، مکتبۃ المدینہ کراچی)

لگتا ہے مفتی صاحب نے "احکام دنیا" پر غور نہیں فرمایا، اس لیے ٹھوکر کھا گئے۔

ان کی خدمت میں مودبانہ التماس ہے کہ اس پر ٹھنڈے دل سے غور فرمائیں اور کتب فقہ و کلام سے، ایسے منکر کے ثواب و عدم ثواب کا فیصلہ کریں۔ جب شریعت مطہرہ ایک عام مسلمان کے متعلق اچھی بات کا حکم دیتی ہے، تو کیا رسول پاک ﷺ کے تربیت یافتہ لوگوں کا اتنا حق بھی نہیں کہ ان کے معاملات کو خیر کی طرف لوٹایا جائے ـــ

ہم دعا کرتے ہیں کہ اللہ کریم آپ کو اس مسئلے میں امام اہل سنت کی پیروی نصیب فرمائے، اور آپ اس مسئلے میں بھی مسلک اہل سنت پر ہی قائم رہیں اور ہر قسم کے رفض و خروج سے بچیں۔

## فضائل علی

امام اہل سنت سیدنا احمد بن حنبل فرماتے ہیں:

رسول اللہ ﷺ کے صحابہ میں سے کسی کے اتنے فضائل نہیں آئے جتنے حضرت علی کے آئے ہیں۔

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب معرفۃ الصحابۃ، ج3، ص83، رقم4614، دار الکتاب العربی بیروت)

علی پاک ہمارے آقا و مولا، ملجا و ماویٰ؛ ہماری آنکھوں کی ٹھنڈک، دلوں کا چین ـــ

ہمارے ماں باپ، آل اولاد سب کچھ آپ پر قربان !!

علی شاہِ مَرداں اِماماً بَصِیرا
کہ بعدِ نبی شُد بَشیراً نذِیرا

زمیں ، آسماں ، عرش و کُرسی بہ حُکمش
علی داں عَلیٰ کلِّ شَیئٍ قَدِیرَا
مُحبِّ علی جنّتی بعدِ مُردَن
بوَد اَیمَنَ ازْ خوفِ منکر نَکیرا

## علی سے نبی کی محبت

میں نے جب بھی یہ حدیث پاک پڑھی، دل پر گہرا اثر ہوا:
سیدہ ام عطیہ رضی اللہ عنہا کہتی ہیں: رسول خدا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم نے ایک لشکر روانہ کیا، جس میں حضرت علی بھی تھے۔
میں نے سُنا، رسول اللہ ہاتھ اٹھا کر دعا مانگ رہے تھے:
"اے اللہ! مجھے اُس وقت تک دنیا سے نہ اٹھانا جب تک علی کو نہ دیکھ لوں"
(سنن ترمذی، ج5، ص643، ر3737، طبع مصر)

میں قربان اس اندازِ محبت پر!! یا اللہ ہمارے دلوں سے آپ رضی اللہ عنہ کی محبت کبھی کم نہ کرنا!

کعبۂ دل قبلۂ جاں ، طاقِ ابروئے علی
ہُو بہ ہُو قرآنِ ناطِق ، مُصحفِ رُوئے علی
خاک کے ذروں میں عطرِ بوترابی کی مہک
باغ کے ہر پھول سے آتی ہے خوش بوئے علی !
دامنِ فردوس ہے ہر گوشۂ شہرِ نجف
ہے مقیمِ خُلد گویا ساکنِ کوئے علی
کیوں نہ ہوں کونین کی آزادیاں اس پر نثار
ہے دلِ بیدم اسیرِ دامِ گیسوئے علی!
رضی اللہ تعالی عنہ

## حافظ احمد دین

میرے پردادا جی، حافظ احمد خاں رحمۃ اللہ علیہ بہت مضبوط حافظ قرآن تھے، آپ نے اپنے شاگردوں کو بھی پختہ حافظ قرآن بنایا۔ دادا جی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کہتے تھے: آپ کے پاس احمد دین نامی ایک طالب علم پڑھتا تھا۔
اُس زمانے کے طلبہ میں جس طرح پڑھائی کا ذوق تھا، اسی طرح استادوں کے گھریلو کام کاج بھی شوق سے کیا کرتے تھے۔

رمضان شریف کا مہینہ شروع ہوا تو گندم کی کٹائی کا موسم بھی آگیا۔
ایک دن نمازِ مغرب پڑھ کر تمام طلبہ کٹائی (واڈی) کے لیے کھیتوں میں چلے گئے۔
جب تراویح کا وقت ہوا تو استاد صاحب فرمانے لگے: "آج احمد دین تراویح پڑھائے گا۔"
احمد دین کا ان دنوں اکیسویں پارے میں سبق تھا۔
وہ مصلے پر کھڑا ہوا اور پڑھتا گیا، پڑھتا گیا حتیٰ کہ پہلی رکعت میں ہی پورے بیس پارے پڑھ دیے —
جب اُتْلُ مَآ اُوْحِیَ (اکیسواں پارہ) شروع کیا، تو سحری کا وقت بہت کم رہ گیا تھا، اس لیے استاد صاحب نے اللہ اکبر کہا اور احمد دین نے رکوع کیا۔
سلام پھیرنے کے بعد استاد صاحب نے طلبہ سے فرمایا:
صرف وتر پڑھو اور سحری کرو، کٹائی کل کریں گے!
دادا جی کہتے ہیں: حافظ احمد دین قرآن پاک حفظ کرنے کے بعد گُڑ شکر کے کاروبار میں مشغول ہو گیا اور اس قدر غافل ہوا کہ دس سال تک قرآن پاک کھول کر نہ دیکھا۔
ایک دن اس کی دکان پر کسی عورت نے آکر کہا: حافظ جی گڑ دو!
پاس ہی اس کا دوست خدا بخش کھڑا تھا، وہ خاتون سے کہنے لگا:
بی بی! اسے قرآن کا نہیں، گڑ شکر کا حافظ کہو۔
حافظ احمد دین نے جب یہ بات سنی تو اس کی غیرت جاگ گئی۔

اس نے خدا بخش سے کہا: میں اُس استاد کا شاگرد ہوں، جو رات کو نیند کی حالت میں بھی قرآن پڑھا کرتے تھے، اور کروٹ بدلنے تک پارہ پارہ پڑھ دیا کرتے! اور میں وہ حافظ ہوں جس نے ایک رکعت میں بیس پارے سُنا دیے تھے۔
لیکن آج تو مجھے حافظ قرآن ماننے کو بھی تیار نہیں!
میں آج سے اپنی منزل یاد کرنے لگا ہوں، ان شاء اللہ اس رمضان میں پورا قرآن پاک سناؤں گا اور سامع تیرا حافظ قرآن بیٹا ہوگا۔ حافظ احمد دین رحمہ اللہ نے اسی دن سے، پوری دل جمعی سے منزل دہرانی شروع کر دی۔ ان دنوں صرف ایک بس شکر گڑھ جایا کرتی تھی، حافظ صاحب بھی گڑ وغیرہ لینے اسی بس میں سفر کرتے، اور راستے بھر قرآن پاک پڑھتے رہتے۔
آخر جب ماہ رمضان آیا تو حافظ صاحب نے تراویح میں پورا قرآن پاک سنا دیا۔
لوگوں نے خوشی سے حافظ صاحب کی بہت زیادہ خدمت کی۔
حافظ صاحب تمام ہدیے، نذرانے لے کر اپنے استاد گرامی کے پاس پہنچے۔ سلام کیا، لیکن استاد صاحب پہچان نہ سکے، اور پوچھا: کون ہو؟
حافظ صاحب رو پڑے اور کہا: حضور! وہی احمد دین، جس نے ایک رکعت میں 20 پارے سنائے تھے، آج دس سال بعد

پھر قرآن پاک سنا کر آیا ہوں۔ استاد صاحب بہت خوش ہوئے اور سینے سے لگا کر ڈھیروں دعاؤں سے نوازا!
ماہ رمضان آنے والا ہے، جو حفاظ دنیاداری میں مشغول ہو کر قرآن پاک چھوڑ بیٹھے ہیں، اللہ پاک انھیں بھی کسی خدا بخش سے ملا دے!

## حضرت معاویہ ہیں پیارے حضور کے

ماہ رجب میں صحابیِ رسول، سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے وصال فرمایا۔
اہل سنت و جماعت دیگر بزرگوں کی طرح آپ کا ذکر خیر بھی بہ کثرت کرتے ہیں، کیوں کہ:

حضرت معاویہ ہیں پیارے حضور کے
کاتب ہیں ذی وقار ، ہمارے حضور کے
امت کے ہیں یہ ماموں مکرم ومحترم
ذی قدر و ذی وجاہت و ذی جاہ و ذی حَشم
گاڑا ہے خوب تُو نے اے سلطانِ مُحتشم!
آماج گاہِ کُفر میں اسلام کا عَلَم
دے کر خطاب ہادی و مہدی رسول نے
شاہی کی تیرے حق میں دعا کی رسول نے
مسند ملی ہے تجھ کو یہ ابنِ رسول کی
سبطِ علی کی ، گلشنِ زہرا کے پھول کی
لعنت تیرے عدو پہ خدا کی مدام ہے
حاسد پہ تیرے خلد کی نعمت حرام ہے
بس اس سے کیا موازنہ ہو چشم حور کا
جس آنکھ نے کیا ہو نظارا حضور کا
پرچم وہاں پہ فوز و فلاح اپنے گاڑ دے
صاحب رسول کا جہاں بینی کو جھاڑ دے
میری بھی تیرہ بختی کو للہ سنوار دے
تھوڑا سا نقشِ پا کا ہمیں بھی غبار دے
ہو دیکھنا اگر تیرے لطف و عطا کا حال

پوچھے عقیل سے تیرے جود وسخا کا حال
توریت میں بھی تیرا رقم کیف وحال ہے
قرآن تیری عظمت و رفعت پہ دال ہے
تُوفیض یاب بارگہِ مصطفی سے ہے
راضی خداہے تُجھ پر توراضی خداسے ہے

(سفیراحمد سفیر علوی)

## بابے کی گالیاں

آج شیخ ارشاد نے بڑی خفگی سے پوچھا ہے:
آپ نے پوسٹ کی تھی "لاتسبوا الشیطن "،شیطان کو گالی نہ دو-
توآپ کا بابے خادم کے بارے میں کیا خیال ہے؟
میں نے کہا: بہت اچھا خیال ہے !کیوں کیا ہوا؟ کہنے لگا: وہ جو بڑی بڑی گالیاں دیتا ہے؟؟
میں نے کہا: آپ نے زندگی میں "شیطن الرجیم "کتنی بار کہا ہو گا؟ کہنے لگا: روز کہتا ہوں-
میں نے پوچھا: آپ کو پتا ہے رجیم کا کیا مطلب ہے؟
کہنے لگا: نہیں !میں نے کہا: بس اتنا سمجھ لو کہ یہ لفظ بابے خادم کی گالیوں سے کچھ کم نہیں —
وہ ناک سکیڑتا چلا تو گیا ہے، اب پوچھتا پھرے گا کہ "رجیم "کسے کہتے ہیں!!

## محدث بریلی

امام احمد رضا محدث بریلی رحمہ اللہ نے حدیث وعلوم حدیث میں جو کتابیں چھوڑی ہیں، ان پر ایک نظر فرمالیں:
1: الھاد الکاف فی حکم الضعاف
2: مدارج طبقات الحدیث
3: اسماع الاربعین فی شفاعۃ سید المحبوبین
4: تلالؤ الافلاک بجلال حدیث لولاک
5: انباء الحذاق بمسالک النفاق
6: اعجب الامداد فی مکفرات حقوق العباد
7: الھدایۃ المبارکۃ فی خلق الملائکۃ

8:الاحادیث الراویہ لمدح الامیر معٰویہ

9:الاجازات المتینہ لعلماء بکۃ والمدینہ

10:النجوم الثواقب فی تخریج احادیث الکواکب

11:الروض البھیج فی آداب التخریج

12:البحث الفاحص عن طرق احادیث الخصائص

اِن کے علاوہ جن کُتبِ احادیث ورجال وغیرہ پر امام کی تعلیقات وشروح ہیں:

13:بخاری

14:مسلم

15:ترمذی

16:نسائی

17:ابن ماجہ

18:سنن دارمی

19:مسند امام اعظم

20:کتاب الآثار

21:کتاب الحج

22:شرح معانی الآثار

23:الترغیب والترہیب

24:کنز العمال

25:الخصائص الکبری

26:اللآلی المصنوعۃ فی الاحادیث الموضوعۃ

27:ذیل اللآلی المصنوعۃ

28:شرح الصدور

29:التعقبات علی الموضوعات

30:الکشف عن مجاوزۃ ہذہ الامۃ الالف

31:المقاصد الحسنۃ

32:القول البدیع

33:الموضوعات الکبیر
34:فتح الباری شرح بخاری
35:ارشادالساری
36:عمدۃ القاری
37:فیض القدیر
38:التیسیر
39:جمع الوسائل
40:مرقاۃ المفاتیح
41:المدخل الی الصحیح
42:نیل الاوطار
43:اشعۃ اللمعات
44:جواہر البیان
45:احسن الوعا(ذیل المدعی لاحسن الوعا)
46:نخبۃ الفکر
47:فتح المغیث
48:نصب الرایۃ
49:العلل المتناہیۃ فی الاحادیث الواہیۃ
50:کشف الاحوال فی نقد الرجال
51:ترتیب الطبقات لابن جوزی
52: تھذیب التھذیب
53:تقریب التھذیب
54:الاسماء والصفات
55:تذکرۃ الحفاظ
56:میزان الاعتدال فی نقد الرجال (میرے ایک دوست اس پر کام کر رہے ہیں اللہ ان کی مدد فرمائے!)
57:تذہیب تہذیب الکمال فی اسماء الرجال
58:الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ

59: مجمع بحارالانوار

## غازی علم دین شہید

غازی علم دین شہید (م، 31 اکتوبر 1929ء) کی نذر:

وِچ چودھویں صَدی دے ہَویا روشن تیرا عشق عاشق حضور دیا
جُھوٹا دار دِی پینگھ تے جُھوٹیا اِی شَوق نال ساتھی منصور دیا
سب دِیاں اَکھیاں وِچ سما گیا ایں علم الدین توں ذریا طُور دیا
عشق لہر دی عرض دربارِ رسول اندر پہلے کریں مسافرا دُور دیا!

یہ شعر غازی علم دین شہید رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی فرمایش پر "اُستاد عشق لہر" نے پڑھے تھے، جنھیں سُن کر غازی صاحب بہت خوش ہوئے اور کہنے لگے: اے استاد عشق لہر! آپ کے ذوق سے مجھ میں مزید کیف، جذب اور مستی پیدا ہوگئی ہے۔

(ناموس رسالت کے سات شہید، رائے محمد کمال، ص 163، جہانگیر بک ڈپو لاہور 2006ء)

## دعوت اسلامی

میری معلومات کے مطابق دعوتِ اسلامی راسخ العقیدہ اہل سنت وجماعت کی عظیم تحریک ہے، جس کا کام دلوں کی گہرائی میں اسلام و اہل سنت کی محبت پیدا کرنا ہے۔ جیسے صوفیہ کرام دل بدلتے تھے تاکہ صاحبِ دل دین کے کام آسکے، امیر دعوت اسلامی زید مجدہ نے بھی دل بدلے ہیں؛ جس کی ایک جھلک غازی تنویر قادری عطاری حفظہ اللہ میں بھی دیکھی جاسکتی ہے۔

مجھے برطانیہ کے ایک مفتی صاحب نے بتایا کہ تنویر قادری میرے پاس آتے اور کُڑھتے، کہ آخر میرے نبی کے گستاخ کب تک دنیا میں رہیں گے، ہمارے علما و عوام ان کا نوٹس کیوں نہیں لیتے؟؟ اور آخر اُنھوں نے از خود نوٹس لے لیا!!

یہ فیضان نظر تھا یا کہ مکتب کی کرامت تھی
سکھائے کس نے اسمٰعیل کو آداب فرزندی!

محدود معلومات اور بعض غلط فہمیوں کی بنیاد پر سوشل میڈیا وغیرہ پر دعوت اسلامی کی تردید کرنا انتہائی نامناسب رویہ ہے، آپ سب سے پہلے اِس کا منشور دیکھیں جس کے مرتبین اکابر علمائے اہل سنت ہیں، پھر اس کے تناظر میں کلام کریں!

## ذکرِ عمر

امامِ اولیا خواجہ حسن بصری رضی اللہ عنہ فرماتے تھے:

"اگر تم چاہتے ہو کہ تمھاری مجلس پاک ہو جائے، تو ذکرِ عمر (رضی اللہ عنہ) کیا کرو"

(محض الصواب فی فضائل امیر المؤمنین عمر بن خطاب، لابن مبرد حنبلی، ج3، ص909)

یہ ایام ہمارے آقا و مولا سیدنا عمر پاک کی علالت و شہادت کے ہیں، اِن دنوں اہل سنت کی ہر محفل میں آپ ہی کا ذکرِ خیر ہونا چاہیے!

## گجر قوم

گجر قوم کا شمار دنیا کی قدیم، عظیم، معزز اور فاتح قوموں میں ہوتا ہے۔

حافظ عبدالحق سیالکوٹی نے مستند تاریخوں کے حوالے سے جو لکھا ہے اس کے مطابق، گجروں کا نسب سکندرِ اعظم کے بیٹے اسکندروس سے ہوتا ہوا سیدنا ابراہیم خلیل اللہ علیہ السلام تک پہنچتا ہے۔

(دیکھیے: تاریخ گوجراں، فصل دوم، ص48، قادری رضوی کتب خانہ لاہور)

اِس قوم میں علماے ربانیین و اولیاے کاملین بڑی تعداد میں پائے جاتے ہیں، جن کا تعلق پاکستان سے ہے اُن میں سے کچھ کا تذکرہ سعید اختر چوہدری صاحب نے اس کتاب میں کیا ہے۔ میرا تعلق بھی چوں کہ گجر قوم سے ہے، اس لیے میرے لیے یہ باعثِ شرف و اعزاز ہے کہ میری قوم میں ایسے اہل اللہ موجود ہیں۔ میرے گجر بھائی یہ کتاب ضرور پڑھیں اور اپنے اِن اکابرین جیسا بننے کی کوشش کریں۔

## سیدنا ابوسفیان

کافروں سے جہاد کرتے، سیدنا ابوسفیان کی ایک آنکھ جاتی رہی تو رسول اللہ ﷺ نے فرمایا:

آپ کو جنتی آنکھ پسند ہے، یا اللہ تعالیٰ سے دعا کروں کہ یہ آنکھ لوٹا دے؟

آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے عرض کی:

یہ نہیں، مجھے جنت کی آنکھ چاہیے۔

(سمط النجوم العوالی، فی انباء الاوائل والتوالی، ب غزوۃ الطائف، ج2، ص286، ط دار الکتب العلمیۃ بیروت، س1419ھ)

سبحان اللہ! سیدنا ابوسفیان کیسے کامل الایمان صحابی تھے، یہ پتا ہونے کے باوجود کہ رسول پاک ﷺ کی دعا سے میری آنکھ واپس آسکتی ہے، دعا نہیں کروائی؛ جنت کی آنکھ کو ترجیح دی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بڑے بڑے اولیا پر بھی جب دنیوی مصیبت آتی ہے تو رب تعالیٰ سے اُس کے ٹلنے کی دعا کرتے ہیں، بیمار ہوتے ہیں تو صحت مانگتے ہیں؛ ہمیں بھی یہی

کرنا چاہیے۔ لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ حضرت ابوسفیان، سیدنا ابراہیم خلیل اللہ علیہ السلام کے راستے پر چلتے ہیں کہ میرے مالک، جیسے تو راضی! سبحان اللہ، سبحان اللہ، سبحان اللہ

رسول پاک ﷺ کے سُسرِ محترم سیدنا ابوسفیان رضی اللہ تعالیٰ عنہ، صحابی ہونے کی وجہ سے تمام اولیاے امت سے زیادہ معزز ہیں؛ ان کی جناب میں گھٹیا الفاظ استعمال کرنے والا اللہ و رسول کو ایذا دیتا ہے۔

ابولہب کے کفر میں کون شک کر سکتا ہے، جس کی مذمت میں قرآن پاک کی پوری سورت نازل ہوئی۔

اس کی بیٹی سیدہ دُرّہ رضی اللہ عنھا کو کچھ عورتوں نے سورت لہب کا طعنہ دیا تھا، جس کی وجہ سے ان کی دل آزاری ہوئی اور انھوں نے بارگاہ رسالت میں شکایت کی۔ رسول اللہ ﷺ سخت ناراض ہوئے اور منبر پر جلوہ افروز ہو کر فرمایا:

اے لوگو! مجھے میرے خاندان کے متعلق تکلیف دیتے ہو، اللہ کی قسم میرے قرابت داروں کو میری شفاعت ضرور ملے گی۔

(انظر: معرفة الصحابة لابی نعیم، باب الدال، ص3324، ر3866)

جب رسول پاک کو اپنی چچازاد بہن کو "حکایتًا" طعنہ دینا بھی پسند نہیں آیا، تو حضور یہ کیسے پسند کریں گے کہ آپ ﷺ کے سُسرِ محترم کے متعلق گھٹیا زبان استعمال کی جائے!!

## حضور غوث پاک کی بارگاہ میں

غوث پاک کے خالہ زاد بھائی، خواجہ معین الدین حسن سِجزِی چِشتی رحمہ اللہ، حضور غوث پاک کی بارگاہ میں عرض کرتے ہیں۔

یاغوثِ مُعَظَّم ! نُورِ ھُدیٰ ، مُختارِ نبی ، مُختارِ خُدا
سُلطانِ دو عالم ، قُطبِ عُلیٰ ، حَیراں زِ جلالت اَرض و سَما

(مقدمہ: زبدۃ الآثار تلخیص بہجۃ الاسرار، ص20، ط مکتبہ نبویہ لاہور، س2001ء)

## علامہ سعید احمد اسعد

استاذ العلما حضرت علامہ سعید احمد اسعد بزرگ عالم دین ہیں، جن کی زندگی مسلکِ اہل سنت کے دفاع میں گزری ہے۔

آپ کا شمار میدانِ مناظرہ کے بہترین شہ سواروں میں ہوتا ہے۔

دورِ حاضر کا مناظرہ جو کہ کسی دَنگل سے کم نہیں رہا، آپ کامیابی سے نپٹا لیتے ہیں۔

آپ کی خوبی ہے کہ جب میدان میں اترتے ہیں تو مد مقابل کو من پسند جگہ پہ لا کر، چاروں شانے چِت گراتے ہیں۔

اللہ پاک آپ کے علم، عمل، عمر، صبر، اور فہم وذکاوت میں برکت فرمائے!

کچھ لوگ، بعض علمی اختلافات اور تفردات کی وجہ سے آپ کے متعلق گھٹیا زبان استعمال کرتے ہیں۔

معاذاللہ!

میرے خیال میں ایسے لوگ قابلِ رحم ہیں، ان کی نظروں سے اکابرینِ امت کے اختلافات وتفردات نہیں گزرے۔

ہم ان کے لیے دعا کرتے ہیں کہ اللہ پاک انھیں وافر علم اور شرحِ صدر عطا فرمائے!

حضرت نے جو رافضیوں اور ملحدوں کے رد کی ٹھان لی ہے، یہ خوش آئند ہے، اِس سے مسلمانوں کو اجتماعی طور پر نفع ہوگا۔ ان شاءاللہ تعالیٰ

(یہ چند جملے صرف اللہ کی رضا کے لیے لکھے ہیں، اور انصاف پسند طبیعتوں کے لیے لکھے ہیں؛ اللہ کریم ہمیں علماے اہل سنت کا قدردان بنائے!)

## حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی

عاشقِ رسول، محدث و مفسر، حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی رحمہ اللہ کو زندگی کے آخری سالوں میں بہ کثرت اچھے اچھے خواب آتے تھے، جن میں حضور پر نور ﷺ اور آپ کے خاصانِ بارگاہ کی زیارات نصیب ہوتیں تھیں۔

جب آپ نے "امیر معاویہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر ایک نظر" کتاب تالیف فرمائی، تو اُس موقع پر رات زیارتِ نبوی سے مشرف ہوئے۔

سرکار ﷺ فرمارہے تھے:

تم نے میرے صحابی کی عزت بچانے کی کوشش کی ہے، اللہ تمھاری عزت بچائے گا۔

(ملتقطاً: حالات زندگی حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی۔۔۔۔۔۔۔۔۔رحیات سالک، ص126، 127، ط نعیمی کتب خانہ گجرات، س2004ء)

## علم پروری

شیخ الحدیث، قبلہ مفتی محمد اشرف القادری محدث نیک آبادی دام ظلہ کو اللہ کریم نے علمِ نافع کے ساتھ، بے شمار عملی خوبیوں سے نوازا ہے۔

آپ جس انداز سے عربی عبارت پڑھتے ہیں یا اُس پر گرفت فرماتے ہیں، میں نے ایسا بہت کم دیکھا ہے۔

آپ کی علم پروری بھی دل کو بہت بھاتی ہے۔

جب جامع معقول و منقول علامہ غلام محمد تونسوی رحمہ اللہ حیات تھے، تو آپ نے اپنے مدرسے کے چند لائق طلبہ کو دورہ حدیث کے بعد اُن کے ہاں بھیجا کہ اجرا کرکے آؤ اور منطق وفلسفہ وغیرہ پڑھ کے آؤ۔

طلبہ وہاں چلے گئے۔
جب وہ اُدھر سے چھٹی آتے تو مفتی صاحب قبلہ انھیں پیسے دیتے اور فرماتے:
جاکر اپنی طرف سے، اپنے استاد صاحب کو بہ طور ہدیہ پیش کرنا، اس طرح ان کا دل خوش ہوگا اور تم پر مزید توجہ کریں گے۔
ایک دن حضرت نے مجھ سے ایک کتاب طلب فرمائی تو میں نے عرض کی:
حضور! کمپیوٹر میں ہے، وہاں سے پرنٹ کیسے نکالوں۔
فرمانے لگے:
میں آپ کو پیسے دیتا ہوں، اپنے لیے اچھا سا پرنٹر اور سکینر لے لیں، آپ نے تحقیق کرنی ہوتی ہے کام آئے گا۔
پھر مجھے رقم عنایت کی اور میں نے اپنی پسند کا اچھا سا پرنٹر خریدا۔ اب بھی جب اسے دیکھتا ہوں حضرت کی بے لوث عنایت یاد آتی ہے۔
اللہ کریم ایسے علما کی کثرت کرے جن کا مقصدِ حیات صرف اور صرف دین کی سرفرازی ہے۔ جنھوں نے زندگیاں خدمت علم کے لیے وقف کر رکھی ہیں۔

## گجر

کل اپنی برادری کے ایک عالم صاحب سے ملاقات ہوئی، جو اپنے نام کے ساتھ بہ اہتمام "گُجر" لکھتے ہیں۔
بہت دل خوش ہوا، اور اللہ کا شکر ادا کیا کہ ہماری برادری میں بھی ایسے علما پائے جاتے ہیں۔
1: گجر ایک بہادر اور فاتح قوم ہے، جس نے برصغیر میں عرصے تک حکومت کی ہے۔
2: حافظ عبدالحق سیالکوٹی نے مستند تاریخوں کے حوالے سے لکھا ہے کہ:
گُجروں کا سلسلہ نسب سیدنا ابراہیم خلیل اللہ علیہ السلام تک پہنچتا ہے۔ (واللہ اعلم)
(دیکھیے: تاریخ گوجراں، فصل دوم، ص48، قادری رضوی کتب خانہ لاہور)
اس قوم میں بڑے بڑے علما اور صُلحا گزرے ہیں۔
ہمارے پاکستان کے مشہور بزرگ:
میاں میر لاہوری، میاں محمد بخش کھڑی شریف والے، حافظ محمد عالم محدث سیالکوٹی، اور شیخ القرآن علامہ غلام علی اوکاڑوی رحمھم اللہ گجر برادری سے ہی تعلق رکھتے تھے۔
3: علم کی دنیا میں ہماری قوم کے افراد کو آگے آنا چاہیے، اور اپنی روایتی جرات کے ساتھ دین متین کی خدمت کرنی چاہیے۔
4: ہماری قوم کے علما اگر حسبِ موقع اپنے نام کے ساتھ قوم کا اظہار کر لیا کریں تو اس میں ہرج نہیں۔
اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ سمیت کئی علما کے نام کے ساتھ باقاعدگی سے "خان" لکھا جاتا ہے۔

5: اپنی قومیت اور قومی خوبیاں یادرکھنا اچھی بات ہے، لیکن نسبی تفاخُر اللہ پاک کو پسند نہیں۔
ہر قوم میں بہ حیثیتِ قوم کوئی نہ کوئی خوبی ضرور پائی جاتی ہے۔
سب کو عزت دیں، قومی خوبیوں کا اعتراف کریں، اور ان خوبیوں کو خراج تحسین پیش کریں۔
بے شک، اللہ کی بارگاہ میں وہی مکرم ومعظم ہے جو زیادہ متقی، پرہیزگار ہے۔

## حضرت امیر معاویہ

نبی پاک ﷺ کے زمانے میں کسی کو شراب نوشی کی وجہ سے سزا دی جاتی تھی، ایک دفعہ جب سزا کے لیے لایا گیا تو ایک صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہنے لگے:
اے اللہ! اس پہ لعنت فرما، اسے کتنی بار (سزا کے لیے) لایا گیا ہے (یہ پھر بھی باز نہیں آتا)۔
اِس پر آپ ﷺ نے فرمایا:

لَا تَلْعَنُوهُ. فَوَاللهِ مَا عَلِمْتُ إِنَّهُ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ.

اس پر لعنت نہ کرو، اللہ کی قسم! میں جانتا ہوں کہ یہ بندہ اللہ ورسول سے محبت کرتا ہے۔ (انظر: صحیح البخاری، رقم 6780)
غور کریں!
بار بار کبیرہ گناہ کے مرتکب پر بھی رسول پاک ﷺ کو لعنت کرنا ناگوار گزرا، کیوں؟؟
اس لیے کہ اُس کے دل میں رسول پاک کی محبت تھی!!
تو اُس صحابی پر لعن طعن کرنے سے سرکار ﷺ کو کتنی تکلیف ہوتی ہوگی، جس نے محبتِ رسول میں بہ وقتِ وصال بھی یہی کہا تھا:
"مجھے اُس قمیص میں کفنانا جسے رسول پاک کے ہاتھ لگے ہیں، اور میرے منھ اور آنکھوں پر میرے نبی کے ناخن رکھ دینا۔"

## جمشید پور

آج ایک پیارے نے جب اپنا تعارف یوں کروایا:
"میں علامہ ارشد القادری کے شہر جمشید پور سے ہوں۔"
تو میرا دل اتنا خوش ہوا کہ بیان نہیں کر سکتا۔
وہ کتنے پیارے سُنی ہیں جو: علامہ ظفر الدین بہاری کے علاقے میں رہتے ہیں۔ جن کی نسبت علامہ امجد علی اعظمی سے ہے۔
جو شہر بریلی، مارہرہ، یا کچھوچھہ وغیرہ میں بستے ہیں۔

## اہل بیتِ رسول

نبی اکرم ﷺ سیدہ خاتون جنت کے گھر تشریف فرما تھے تو دیکھا:

دونوں شہزادے بھوک کی وجہ سے رو رہے ہیں۔

فرمایا: کون ہے، جو کچھ لائے؟

سیدنا عبدالرحمٰن بن عوف دو روٹیاں اور کھانے کی دیگر چیزیں لے کر حاضر ہوئے۔

اِس پر سرکار نے فرمایا:

"اللہ تیرے دنیا کے کام درست کردے، اور تیری آخرت کے معاملے کا میں ذمے دار ہوں"

(ملخصًا: الامن والعلیٰ لناعتی المصطفیٰ بدافع البلاء، ص509، ط مونال پبلی کیشنز راولپنڈی۔ قال السیوطی: سندہ صحیح)

سبحان اللہ، اہل بیتِ رسول کو کھانا پیش کرنا بھی کتنے بڑے شرف کی بات ہے۔ ہم نے حسنین کریمین کا زمانہ نہیں پایا، اُن کی آل اولاد تو ہم میں موجود ہے۔ اگر ہم اِن کی بھی خدمت کریں گے تو اللہ کریم کی رحمت سے محروم نہیں رہیں گے۔

## علومِ اعلیٰ حضرت

اللہ تعالی نے جو علوم اپنے بندوں کو عطا فرمائے، ان کی تعداد بے حد و حساب ہے۔

ایک فرد کے علوم کا، دوسرا فرد کامل اِحصا نہیں کر سکتا۔

ہمیں تو اُن علوم کے نام بھی نہیں آتے جو بعض بندوں کو عطا ہوئے۔

علامہ پرہاروی رحمہ اللہ کو ہی لے لیجیے، آپ کے متعلق بیان کیا جاتا ہے کہ:

آپ کو 270 علوم و فنون میں مہارت تامہ حاصل تھی۔

کچھ اہل علم نے تحقیق کر کے امام احمد رضا رحمہ اللہ کے علوم و فنون کی سیکڑوں تعداد بتائی، تو بعض سطحی لوگ اسے سمجھنے سے قاصر رہے۔ حالاں کہ یہ کوئی بعید نہیں، اللہ پاک چاہے تو اپنے بندوں کو ہزاروں علوم عطا فرما دے!

اگر اس دور میں ایک ادنا سا طالبِ علم، "صرف ایک فن کے متعلق" اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ سے 13 علوم سیکھ سکتا ہے، تو ذاتِ اعلیٰ حضرت میں سیکڑوں علوم کیوں جمع نہیں ہو سکتے!!

ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

## یوم آزادی

آج پاکستان میں یومِ آزادی ہے۔

یقیناً آزادی بڑی نعمت ہے، اِس کی صحیح قدر تو کسی اسیر سے ہی پوچھی جا سکتی ہے؛ لیکن بہ حیثیتِ مسلمان ہماری "قومی آزادی" یہ ہے کہ ہم دینِ اسلام پر عمل کے معاملے میں مکمل طور پر آزاد ہوں.....

اور اس آزادی سے ہنوز ہم محروم ہیں!

آج ہماری مذہبی آزادی "محدود"، اور دینی آزادی پابندِ سلاسل ہے۔

مذہب تین چیزوں کا مجموعہ ہے: اعتقادیات، عبادات، رسومات۔

اور دین میں چھے چیزیں شامل ہیں: اعتقادیات، عبادات، رسومات، معاشرت، معیشت، سیاست۔

ہماری اسلامی معیشت، معاشرت اور سیاست میں سے کوئی بھی آزاد نہیں!!

ہے مملکت ہند میں اک طرفہ تماشا
اسلام ہے محبوس ، مسلمان ہے آزاد

اے اللہ! وہ دن جلد دِکھا کہ ہمارا دینِ اسلام ہی تمام مذاہب پر غالب ہو!

## مولانا محمد الیاس عطار قادری

کراچی شہر بہت خوب صورت ہے، یہاں کے لوگ بہت پیارے ہیں۔

مگر، دل کی کہوں تو:

"کراچی آکر کوئی سارے علما و مشائخ سے مل لے، مولانا محمد الیاس عطار قادری سے نہ ملے؛ تو وہ ایسا ہے جیسے اس نے سارا چمن دیکھ لیا، "گلاب کا پھول" نہ دیکھ سکا۔"

بہت ساری ایسی ہستیاں گزریں جو چمنِ اہلِ سنت کی بہار تھیں، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ خزاں رسیدہ لوگ اُن سے نفع نہ اٹھا سکے۔

ان میں سے ہر ایک جب یہ کہتے ہوئے گزر گیا۔

جیتے جی قدر بشر کی نہیں ہوتی پیارے
یاد آئے گی تمھیں ، میری وفا میرے بعد

تو پھر نوحہ خوانی شروع ہوئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

مخلص علما و مشائخ کی جیتے جی قدر کریں، جب یہ چلیں جائیں گے تو ان جیسے دوبارہ کبھی نہیں آئیں گے۔

## علی پاک میرے امام ہیں

فارسی زبان میں ایک شعر ہے۔

علی اِمامِ مَنَ ست و مَنَم غُلامِ علی
ہزار جانِ گرامی فِدائے نامِ علی !

اس کا اُردو میں مطلب ہے:

"علی پاک میرے امام ہیں، اور میں علی پاک کا غلام ہوں۔ میری ایک نہیں، ہزار قیمتی جانیں بھی نامِ علی پر فِدا۔"

یہاں شاعر نے اِظہارِ مُدّعا کے لیے دو لفظوں کا انتخاب کیا۔

پہلے مصرعے میں "منم" کہا، اور دوسرے میں "گرامی"۔

[1]مَنَم کا معنیٰ ہے: میں ہوں۔

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اِس لفظ کو وہاں بھی استعمال کیا جاتا ہے جہاں اپنی بڑائی بیان کرنا مقصود ہو۔

گویا شاعر یہاں منم لا کر بتا رہا ہے:

علی پاک کا امام ہونا، اور میرا غلام ہونا، کسی شرف سے کم نہیں؛ یہ میرے لیے بہت بڑے اعزاز کی بات ہے۔

[2]گرامی کا مطلب ہے: قیمتی۔

یہاں اس کے دو مطلب لیے جاسکتے ہیں۔

پہلا یہ کہ:

مولا علی کی غلامی اتنی عظیم تھی کہ جب مجھے میسر آئی تو میری جان گرامی (قیمتی اور بیش بہا) ہوگئی۔

اب میرا جی چاہتا ہے کہ ایسی قیمتی ایک جان نہیں، ہزاروں جانیں بھی ہوں تو اس سرکار کے نام پر قربان کردوں۔

دوسرا یہ کہ:

علی پاک کے نام پر ایک جان سے نہیں، ہزار قیمتی جانوں سے قربان۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مجھے آپ کی غلامی کی صورت میں رب تعالیٰ نے کتنی بڑی دولت عطا فرمائی!!

علی اِمامِ مَنَ ست و مَنَم غُلامِ علی
ہزار جانِ گرامی فِدائے نامِ علی

## سلطان عبدالحمید

سلطنت عثمانیہ کے چونتیسویں خلیفہ سلطان عبدالحمید نوراللہ مرقدہ بڑی خوبیوں کے مالک تھے۔

آپ عالمِ دین ہونے کے ساتھ، تصوف میں گہری دل چسپی رکھتے تھے، بلکہ تصوف کے رموز و معارف سے بھی آگاہ تھے۔

آپ نے اپنے دورِ خلافت میں مختلف سلاسل کے صوفیہ کرام کی خدمت میں عریضہ پیش کیا تھا کہ:

آپ سلطنت عثمانیہ کی سرپرستی کریں اور اسلامی اتحاد کی، سوچ کی ترویج کے لیے اپنی خدمات پیش کریں۔
(دیکھیے: سلطنت عثمانیہ للصلابی، ص 449، 471، ضیاء القرآن لاہور)

آپ کا دورِ حکومت اندرونی، بیرونی سازشوں کا شکار رہا، لیکن آپ نے کمال دانائی اور ثابت قدمی سے دشمنوں کا ہر محاذ پر مقابلہ کیا۔
تُرکی نے آپ پر ایک سیریز بھی بنائی ہے جس میں آپ کی سیاسی بصیرت، حکمتِ عملی، نیک دلی، خیر خواہی، اور محبت رسول جیسے اوصاف کو اجاگر کرنے کی کوشش کی ہے۔
آپ سچے عاشقِ رسول تھے، مدینہ طیبہ کی خاک روبی کے لیے اپنے ہاتھوں سے جھاڑو بناتے، اہلِ مدینہ کے لیے بڑی عقیدت سے تحائف بھیجتے، اپنے کسی مقرب سے خوش ہو کر انعام دینا چاہتے تو حرمِ رسول کی خاک دے کر یہ باور کراتے کہ:
ایک مسلمان کے لیے درِ رسول کی خاک سے بڑا انعام کوئی نہیں ہو سکتا۔
آپ نے اپنے آقا و مولا ﷺ کے حضور منظوم نذرانہ بھی پیش کیا ہے۔
آپ کے ایک محبت بھرے قصیدے کا پہلا شعر یہ ہے۔

يَا سَيِّدِيْ ، يَا رَسُولَ اللهِ خُذْ بِيَدِيْ
مَالِيْ سِوَاكَ وَلَا اَلْوِيْ عَلٰى اَحَدِ

میرے آقا، یا رسول اللہ میری دست گیری فرمائیے!
حضور آپ کے سوا میرا کوئی نہیں، اور نہ میں آپ کے علاوہ کسی کی طرف رجوع کرتا ہوں۔

## مصطفیٰ کمال

مصطفیٰ کمال، جدید ترکوں کا "قائد اعظم" ہے۔
یہ ایک بے دین اور اسلام دشمن شخص تھا، لیکن اِسے آج بھی "اَتاتُرک" یعنی ترکوں کا باپ کہا جاتا ہے۔
موجودہ تُرک صدر کی سوچ اور فکر اتاترک سے یکسر مختلف ہے، اور لازمی طور پر وہ اس کے ملحدانہ عقائد و نظریات سے بھی بیزار ہوں گے۔
لیکن.....انھوں نے اس کی مخالفت کے بجائے، اس کے پھیلائے ہوئے کفر و الحاد کو ختم کرنے کی کوشش کی ہے، اور اس میں کامیاب بھی رہے ہیں۔

اتاترک نے ہیرو بننے کے لیے جن مجاہدین اسلام سے تعلق توڑا تھا، موجودہ صدر "اتاترک کو کچھ کہے بغیر "انھی مجاہدین سے اپنی قوم کا رشتہ بحال کر رہے ہیں۔

اللہ کرے پاک و ہند والوں کا بھی جھوٹے قائدوں، اور جعلی ہیرووں کے بجائے:

محمد بن قاسم، محمود غزنوی، شہاب الدین غوری، قطب الدین ایبک اور شیر شاہ سوری سے رشتہ جڑ جائے؛ تاکہ یہ بابری مسجد اور کشمیر پر نوحے اور ترانے نہ لکھیں، "آیا صوفیہ" کی طرح ان سے آنکھیں ٹھنڈی کریں۔

کئی دفعہ ایسا بھی ہوتا ہے:

"بُرے کی برائی ختم کر دیں تو برا خود بہ خود ختم ہو جاتا ہے، لیکن ..... ہاتھ دھو کر بُرے کے پیچھے ہی پڑے رہیں تو برائی ایک نئی صورت اختیار کر لیتی ہے۔"

## حسن حسین سے محبت

جامع ترمذی میں ایک حدیث شریف ہے کہ نبی کریم ﷺ نے فرمایا:

"جو مجھ سے محبت کرے، حسن حسین سے محبت کرے، اِن دونوں کے والد اور والدہ سے محبت کرے، وہ قیامت کے دن میرے ساتھ، میرے درجے میں ہوگا۔"

اس حدیثِ پاک کی سند میں اہل بیتِ رسول کے نام آتے ہیں، اس لیے کہا جاتا ہے کہ:

اگر اس حدیث کی سند کسی مجنوں پر پڑھی جائے تو (اِس کی برکت سے) اُس کا مرضِ جنون ختم ہو جائے گا۔

آپ بھی پوری عقیدت کے ساتھ سند پڑھ لیجیے:

حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، أَخْبَرَنِي أَخِي مُوسَى بْنُ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ جَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِيهِ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ أَبِيهِ عَلِيِّ بْنِ الْحُسَيْنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ جَدِّهِ عَلِيِّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

---

اللہ اللہ، جن ہستیوں کے ناموں میں یہ تاثیر ہے اُن کی محبت میں کیا تاثیر ہوگی۔

پارہائے صُحُف غنچہائے قُدس
اہلِ بیتِ نبوت پہ لاکھوں سلام
آبِ تطہیر سے جس میں پودے جمے
اس ریاضِ نجابت پہ لاکھوں سلام
خونِ خیرُ الرُسُل سے ہے جن کا خمیر

اُن کی بے لَوث طِینَت پہ لاکھوں سلام

## سیدہ فاطمہ

نبی پاک ﷺ کے غلام حضرت ثوبان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں:

رسول اللہ ﷺ جب کسی سفر پر روانہ ہوتے تو اپنے اہل بیت میں سب کے بعد سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا سے ملتے، اور جب سفر سے واپس لوٹتے تو سب سے پہلے سیدہ فاطمہ رضی اللہ عنہا سے ملاقات کرتے۔

(سنن ابوداود، ر 4213)

یہ کمال درجے کی محبت تھی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

حضور چاہتے تھے میں جب گھر سے باہر نکلوں تو مجھے فاطمہ نظر آئے، اور جب گھر میں داخل ہوں تو بھی فاطمہ ہی نظر آئے

۔

زندگی بھر ایسا ہی ہوا.....اور جب رسول اللہ ﷺ پردہ فرمانے لگے تو کہا:

بیٹی! میرے اہل بیت میں، سب سے پہلے آپ مجھ سے آکر ملیں گی۔(صحیح مسلم وغیرہ)

اور ایسا ہی ہوا..... سیدہ فراقِ رسول زیادہ دیر برداشت نہ کر سکیں اور اہل بیت میں سب سے پہلے اپنے محبوب ﷺ کے پاس پہنچ گئیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

بعض علما کا زاویہ فکر اپنی جگہ، لیکن ہمارا دل کہتا ہے:

"انسان کو اگر کسی سے شدید محبت ہو تو وہ اُسی کی محبت میں گُم رہتا ہے، کوئی "خطا" نہیں کرتا؛ اسے خطا کی سوجھتی ہی نہیں، وہ تو محبوب کا نام لے لے کے جیتا ہے۔ سیدہ پاک نے رسول اللہ کی رحلت کے بعد جتنے لمحات گزارے، یادِ رسول میں گزارے؛ اور یہ یاد ایسی تھی کہ اِس نے خطا تو دور، کسی "اجتہادی خطا" کو بھی محبت رسول کے درمیان مُخِل نہیں ہونے دیا۔

"

تمھاری یاد میں گُزری تھی جاگتے شب بھر
چلی نَسِیم ، ہوئے بند دِید ہائے فلک
یہ اہلِ بَیت کی چکی سے چال سیکھی ہے
رواں ہے بے مددِ دَست آسیائے فلک

## لیکن علی مجھے زیادہ پیارا ہے

گدُو ایک سبزی ہے، جس کا ہم مسلمان احترام کرتے ہیں۔

کیوں؟

اس لیے کہ اس سبزی کو ہمارے پیارے نبی نے پسند فرمایا تھا۔

حضرت انس بن مالک کہتے: رسول اللہ ﷺ کو کدو کا سالن سب سے زیادہ پسند تھا۔

(مسند احمد بن حنبل، ر7358)

غور فرمائیں!

جس کدو کو رسول اللہ نے پسند فرمایا تھا، وہ ہمارے ہاں موجود نہیں..... ہمیں تو عام کسانوں کے کاشت کردہ کدو میسر آتے ہیں؛ پھر بھی ہم کدو کا احترام کرتے ہیں، کیوں کہ "اس نام کی سبزی" ہمارے پیارے نبی کو پسند تھی۔

تو پھر کیوں نہ اُس علی پاک کے نام پر جان و دل سے فدا ہو جائیں جسے رسول اللہ بے حد پیار کرتے تھے۔ حتیٰ کہ اپنی پیاری شہزادی سے فرماتے:

بیٹی فاطمہ! تیرے ساتھ بیٹی ہونے کے ناطے شفقت ہے، لیکن علی مجھے (تجھ سے بھی) زیادہ پیارا ہے۔

(انظر: مجمع الزوائد ومنبع الفوائد، کتاب المناقب، باب مناقب فاطمة۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ج9، ص325، ر15195، ط دار الفکر بیروت، س1432ھ۔ قال الهيثمي: رواه الطبراني ورجاله رجال الصحيح۔)

## رسول پاک ﷺ کی اولاد اطہار

آج دن کی ابتدا، رسول پاک ﷺ کی اولاد اطہار کے ناموں سے کی ہے، آپ بھی اِن مبارک ناموں کو ایک دفعہ پڑھ لیجیے۔ ہمارے پیارے نبی ﷺ کے تین شہزادے، چار شہزادیاں، پانچ نواسے، اور تین نواسیاں تھیں؛ جن کے اسمائے مبارک یہ ہیں:

1: سیدنا قاسم 2: سیدنا عبداللہ 3: سیدنا ابراہیم

1: سیدہ زَینب 2: سیدہ رُقیّہ 3: سیدہ فاطِمہ 4: سیدہ اُمِّ کُلثُوم

1: سیدنا علی بن اَبُوالعَاص 2: سیدنا عبداللہ بن عُثمان غنی 3: سیدنا حَسن بن علی 4: سیدنا حُسین بن علی

5: سیدنا مُحسِّن بن علی

1: سیدہ اُمامہ بنت ابوالعاص 2: سیدہ ام کلثوم بنت علی 3: سیدہ زینب بنت علی

(اللہ پاک کی ان پر کروڑوں رحمتیں اور اربوں سلام ہوں)

## اصحاب صفہ

مسجد نبوی شریف میں ایک جگہ ہے جس پر اصحابِ صفہ بیٹھ کر رسول اللہ ﷺ سے علم حاصل کرتے تھے۔

ہمیں استاد کہتے تھے:

اصحاب کہف کے نام لکھ کر اگر کسی کے گلے میں ڈالیں جائیں تو وہ ڈرتا نہیں، اس پر جادو کا اثر نہیں ہوتا، اسے نظر بد نہیں لگتی، وہ بے خوابی کا شکار نہیں ہوتا۔

یہ نام لکھ کر جس گھر میں رکھے جائیں، خیر اس گھر میں دوڑتی ہوئی آتی ہے۔

اللہ اللہ، جب اصحاب کہف کے ناموں میں یہ تاثیر ہے تو اصحابِ محمد۔۔۔۔۔۔۔ اور ان میں سے بھی اصحاب صُفہ کے مبارک ناموں میں کتنی برکت ہوگی!!

مجھے اصحاب صفہ کے جتنے نام میسر آسکے، میں نے آج اصحابِ صفہ کے جبوترے پر بیٹھ کر لکھے ہیں؛ اور انھیں لکھ کر، اصحاب صفہ کے امام، بلکہ۔۔۔۔ تمام صحابہ کے امام۔۔۔۔۔۔۔ سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ عنہ کے گھر والی جگہ لے کر آیا ہوں، جو کہ مسجد نبوی شریف میں شامل ہو چکی ہے۔

وہاں بیٹھ کر ان مبارک ناموں کے وسیلے سے اپنے رب کے حضور دعا کروں گا۔

ہو سکے تو آپ بھی شروع سے آخر تک یہ مبارک نام پڑھیں، اور ان کے وسیلے سے دعا کریں؛ اللہ کی رحمت سے امید ہے وہ خالی ہاتھ نہیں لوٹائے گا۔ آپ کی سہولت کے لیے میں نے تقریباً دو گھنٹے صَرف کر کے، انھیں حروف تہجی اور اعراب کے ساتھ مرتب کیا ہے؛ نیز مختصر کر کے لکھا ہے تاکہ درست تلفظ کے ساتھ، بہ آسانی پڑھے اور یاد کیے جا سکیں۔

اصحاب صفہ کے مبارک نام

1: ابو ثَعلبہ خُشَنِی 2: ابو دَرداء 3: ابو ذر غِفَاری 4: ابو رَزِین

5: ابو سَعید خُدری 6: ابو عُبَیدہ بن جَرّاح 7: ابو عُسَیب 8: ابو کَبشہ اَنماری

9: ابو مُوَیہبَہ 10: ابو ہُرَیرہ 11: اَسماء بن حارثہ

12: بَراء بن مالک 13: بَشیر بن خَصاصِیَہ (زَحم بن مَعبد) 14: بِلال بن رَبَاح

15: ثَقِیف بن عَمرو 16: ثَوبان 17: جاریہ بن جمیل

18: جَرہَد بن خُوَیلد 19: جُعَیل بن سُراقہ 20: حارثہ بن نعمان

21: حازم بن حَرملہ 22: حُذَیفہ بن اَسِید 23: حُذَیفہ بن یَمان 24: حَرملہ بن عبد اللہ

25: حکم بن عُمیر 26: حَنظلہ بن ابو عامر 27: خَبَّاب بن اَرَتّ 28: خُبَیب بن یَساف

29: خُرَیم بن اَوس 30: خُرَیم بن فَاتِک 31: خُنَیس بن حُذَافہ

32: ذُوالبِجَادَین (عبد اللہ بن عَبدِ نَہم) 33: رَبیعہ بن کعب 34: رِفَاعَہ بن عَبدِ المُنذِر (ابو لُبَابَہ)

36: زید بن خطاب 37: سالم بن عُبید 38: سالم بن مَعقِل 39: سائِب بن خَلّاد
40: سعد بن ابی وقاص 41: سعید بن عامر 42: سَفینہ (ابو عبدالرحمن مہران)
43: سَلمان فارسی 44: شَداد بن اَسِید 45: شُقران 46: شَمعون
47: صَفوان 48: صُہَیب بن سِنان 49: طِخفَہ بن قَیس 50: طلحہ بن عَمرو
51: طُفاوِی دَوسی 52: عِبَاد بن خالد 53: عُبادہ بن قُرص 54: عبدالرحمٰن بن قُرط
55: عبدالرحمن بن بَجر 56: عبداللہ بن اُنَیس 57: عبداللہ بن اُمِ مکتوم 58: عبداللہ بن حارث
59: عبداللہ بن حَبشی 60: عبداللہ بن حَوالہ 61: عبداللہ بن زَید 62: عبداللہ بن عبدالاسد
63: عبداللہ بن عمر 64: عبداللہ بن عَمرو 65: عبداللہ بن مسعود 66: عُبید (رسول اللہ کے غلام)
67: عُتبہ بن عَبد 68: عُتبہ بن غَزوان 69: عتبہ بن نُدّر
70: عرباض بن ساریہ 71: عُقبہ بن عامر 72: عُکّاشہ بن مِحصن 73: عَمرو بن تَغلب
74: عَمرو بن عَوف مُزنی 75: عَمرو بن عُتبہ 76: عُوَیم بن سَاعدہ 77: عَیاض بن حمار
78: فُرات بن حَیّان 79: فُضالہ بن عُبید 80: قُرّہ بن اَیاس 82: کعب بن عَمرو
83: کعب بن مالک 84: کَنّاز بن حُصَین 85: مسعود بن ربیع 86: مُصعب بن عُمیر
87: مُعاذ بن حارِث 88: مُعاویہ بن حَکَم 89: مقداد بن عَمرو 90: نَظلہ بن عُبید
91: واثِلہ بن اَسقَع 92: وَابِصہ بن مَعبد 93: ہِلال
94: ہِند بن حارثہ 95: یَسار ابو فُکَیہَہ

## پیر محمد الیاس عطار قادری

آج کل جب کئی پیرانِ عُظام عرسوں، میلوں، قوالیوں اور مزاروں پر پانی کی طرح پیسہ بہا رہے ہیں؛ دینی ترجیحات نام کی کوئی چیز ان کے پیشِ نظر نہیں۔

ایسے حالات میں پیر محمد الیاس عطار قادری حفظہ اللہ ایسے علما تیار کر رہے ہیں، جو آنے والی نسلیں سنوار دیں گے۔

حضرت کے تیار کردہ کچھ علما نے:

2008ء سے لے کر، 2020ء تک، 579 کتابیں شائع کی ہیں۔

تقریباً دو سال کے عرصے میں: 89 لاکھ، 74 ہزار، 694 کتابیں ڈاؤن لوڈ کی ہیں۔

اور

1 کروڑ، 80 لاکھ سے زیادہ کتابیں فروخت کی ہیں۔

اللہ کریم جملہ پیران عظام کو بھی، اِس کارِ خیر میں اِن کا متّبِع بنائے۔
مسلک اہل سنت کا فائدہ: قوالیوں، عُرسوں اور دھمالوں میں نہیں، دینی علوم کی ترویج واشاعت میں ہے۔

## قاری احمد حسین روہتکی

گجرات شہر میں ایک عالم دین ہوئے ہیں: "قاری احمد حسین روہتکی رحمہ اللہ۔"
ان کی پہچان نعت خوانی تھی۔
محبتِ رسول میں ڈوب کر نعت پڑھتے تھے، اگر کوئی بچہ بھی کہتا:
قاری صاحب نعت سنائیں، تو فوراً سنا دیا کرتے تھے۔
ان کے مزاج میں کسی قسم کا تکلُّف، اور تصنُّع نہیں تھا۔
ان کی نعت شریف سے والہانہ محبت ہی تھی کہ خواب میں یہ نعت شریف پڑھتے ہوئے۔

اے احمدِ مرسل نُورِ خدا ، تیری ذاتِ صفا کا کیا کہنا
پڑھتے ہیں ملائِک صلِّ علیٰ ، تیری شانِ عُلا کا کیا کہنا

سرکار مدینہ ﷺ کی زیارت نصیب ہوگئی۔
وہ کتنے پیارے نعت خواں تھے جو عشقِ رسول میں ڈوب کر نعتیں پڑھتے۔
جن کی نعت خوانی ساؤنڈ، سٹوڈیو، اشتہارات اور جملہ تکلُّفات کی محتاج نہ تھی۔
اللہ کریم ایسے نعت خواں ہمیں پھر لوٹا دے!!
آج کل کے بعض نعت خوانوں کے تو چلن ہی نعت خوانوں والے نہیں، اوپر سے ڈسکو طرزوں سے کلام پڑھتے ہیں۔ معاذ اللہ۔
اللہ پاک انھیں ہدایت دے!!

## لبیک والے سچے ہیں!

جو مسلمان رسول اللہ ﷺ کی محبت میں "لبیک" کہتے ہیں، وہ جھوٹے نہیں، سچے ہیں؛ چاہے اُن کی عملی حالت اچھی نہ ہو۔
اُنھیں نیک اعمال کی رغبت ضرور دلانی چاہیے، لیکن انھیں جھوٹا نہیں کہنا چاہیے۔
سرکار ﷺ کے زمانے میں کسی کو شراب نوشی کی وجہ سے سزا دی جاتی تھی، ایک دفعہ جب سزا کے لیے لایا گیا تو ایک صحابی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہنے لگے: اے اللہ! اس پہ لعنت فرما، اسے کتنی بار (سزا کے لیے) لایا گیا ہے (یہ پھر بھی باز نہیں آتا)۔

اِس پر آپ ﷺ نے فرمایا:

لَا تَلْعَنُوهُ، فَوَاللهِ مَا عَلِمْتُ إِنَّهُ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ۔

اس پر لعنت نہ کرو، اللہ کی قسم! میں جانتا ہوں کہ یہ بندہ اللہ و رسول سے محبت کرتا ہے۔ (انظر: صحیح البخاری، رقم 6780)

گناہ گار بھی سرکار سے پیار کرے تو وہ محبت میں سچا ہوتا ہے، جھوٹا نہیں۔

اگر کوئی لبیک یا رسول اللہ کہتا ہے لیکن نماز نہیں پڑھتا، داڑھی شریف نہیں رکھتا تو ہم اسے یہ نہیں کہہ سکتے کہ تُو لبیک کہنے میں جھوٹا ہے۔

وہ گناہ شامتِ نفس کی وجہ سے کر رہا ہے، حضور کی نافرمانی سمجھ کر نہیں کر رہا۔

ہمیں اس کے لیے دعا کرنی چاہیے کہ اللہ پاک اسے نماز پڑھ کے محبوب ﷺ کی آنکھیں ٹھنڈی کرنے کی توفیق عطا فرمائے، اور اسے سمجھانا بھی چاہیے کہ:

تم جس ذات سے محبت کرتے ہو انھیں نماز سے بہت زیادہ محبت تھی، اس لیے نماز پڑھا کرو تاکہ تمھاری محبتِ رسول مزید بڑھے۔

جو مسلمان کہے کہ مجھے نبی پاک ﷺ سے محبت ہے، اس کی بات مان لینی چاہیے، وہ یقیناً سچا ہوگا۔

سرکار ﷺ سے کسی نے عرض کی تھی:

"اے اللہ کے رسول! آپ اور آپ کے خیمے والے میرے نزدیک سب سے زیادہ پیارے اور عزت والے ہیں۔"

اِس پر آپ ﷺ نے فرمایا: اَيضاً وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ۔

اُس ذات کی قسم جس کے دستِ قدرت میں محمد ﷺ کی جان ہے، ایسا ہی ہے، جیسا تم نے کہا۔ (یعنی تمھارا محبت رسول کا دعویٰ سچا ہے)

(صحیح البخاری، رقم 6641)

یُوں تو سب انھیں کا ہے ، پَر دل کی اگر پوچھو
یہ ٹُوٹے ہوئے دِل ہی ، خاص اُن کی کمائی ہے!
بازارِ عمل میں تو سَودا نہ بَنا اپنا
سرکارِ کرم ، تجھ میں عیبی کی سَمائی ہے

## پہلے صحابی

ہمارے آقا و مولا صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ، رسولِ پاک ﷺ کے پہلے صحابی بھی ہیں، اور ظاہری و باطنی، سیاسی و روحانی طور پر پہلے خلیفہ بھی۔ اقبال نے بڑا خوب صورت مصرع کہا ہے، کہ ع

آں کَلِیم اَوّل سِینائے ما

(مطلب: طور سینا پہاڑ پر بھی جلوۂ ربانی ظاہر ہوا اور ہمارے آقا و مولا ﷺ بھی جلوۂ خداوندی کے مظہر رہے۔
طُورِ سینا پر تو جلوہ دیکھنے سیدنا موسی کلیم اللہ گئے تھے، لیکن اے آقا صدیق! حبیب پاک ﷺ پر جلوۂ ربانی آپ نے دیکھا
۔
سیدنا کلیم اللہ طور سینا پر جلوہ دیکھنے والے پہلے تھے، اور آپ بھی مانندِ کلیم میرے طور سینا ﷺ کو دیکھنے والے پہلے ہیں)

مسلمانوں کے متفقہ عقیدے کے مطابق:
انبیا و مرسلین کے بعد جو ہستی سب سے افضل ہے، وہ سیدنا و مولانا ابوبکر صدیق کی ذات پاک ہے۔
آپ رضی اللہ عنہ کی "افضلیت کلی" کو صرف مولا علی پاک سے روایت کرنے والوں کی تعداد، ایک سو بیس ہے۔
آپ کی افضلیت کا عقیدہ اتنا ضروری ہے کہ:
مولا علی پاک رضی اللہ عنہ نے آپ کی افضلیت کے منکر کو اسی کوڑوں کا سزاوار قرار دیا ہے۔
آپ کی افضلیت پر بہت ساری کتابیں لکھی گئی ہیں، لیکن ان سب میں علامہ ہاشم ٹھٹھوی رحمہ اللہ کی "الطریقۃ المحمدیہ" خاص اہمیت کی حامل ہے۔
اس میں کیا کیا خوبیاں ہیں؟ یہ آپ کو کتاب پڑھنے کے بعد ہی معلوم ہو سکتی ہیں!
خدا توفیق دے تو اس ماہِ مبارک میں یہ کتاب پڑھ لیجیے، انشاء اللہ بہت نفع ہو گا۔
یہ کتاب مخطوطے کی صورت میں تھی جس کا اردو ترجمہ بہت ہی پیارے دوست حضرت علامہ مولانا Shahbaz Ahmad ابن یوسف مدنی زیدت معالیھم نے کیا ہے، اور کمال یہ ہے کہ مختصر وقت میں کیا ہے؛ حالاں کہ عام طور پر تو مخطوط پڑھتے ہی کافی وقت لگ جاتا ہے۔
آپ ایک مخلص، محنتی، اور منکسر المزاج عالم دین ہیں؛ رب تعالیٰ آپ کے علم و عمل میں مزید برکت فرمائے۔
آپ کی خدمت عالیہ میں عرض ہے کہ "الطریقۃ المحمدیہ" کے عربی متن پر بھی تصحیح و تخریج کا کام کر دیں۔
انشاء اللہ جب یہ کام کوئی علمی ذوق رکھنے والا ناشر شایان شان طریقے سے شائع کرے گا تو ایک علمی دنیا مستفید ہو گی۔

## علامہ عنایت اللہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ

قبلہ استاد گرامی فرماتے ہیں:
میں نے حضرت علامہ عنایت اللہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ (سانگل ہل والوں) سے شرح وقایہ اور نورالانوار پڑھی ہیں، آپ باکمال عالم ہونے کے ساتھ ساتھ بڑے عابد بھی تھے۔ آپ کثرت سے ذکر الٰہی کرتے تھے۔۔۔۔۔۔۔ اور بلاناغہ کرتے تھے۔

نیز میں نے آپ کو کبھی عصر اور عشا کی سنتیں چھوڑتے نہیں دیکھا۔

ایک دفعہ ہم سفر میں تھے، عصر کی نماز لیٹ ہوگئی تو میں نے سوچا آج تو حضرت صرف فرض ہی پڑھیں گے، لیکن آپ نے حسبِ معمول پہلے سنتیں ادا کیں، پھر فرض پڑھے۔

آپ کو حضور نبی کریم ﷺ سے اس قدر محبت تھی کہ سنتوں کی نیت کرتے وقت بھی سرکار ﷺ کا نامِ پاک لیتے ۔۔۔۔۔۔بڑے والہانہ انداز سے لیتے۔۔۔۔۔۔اور بار بار لیتے؛ گویا بہ زبان حال کہتے ؎

مِرے تو آپ ہی سب کچھ ہیں رحمتِ عالم
میں جی رہا ہوں زمانے میں آپ ہی کے لیے
تمھاری یاد کو کیسے نہ زندگی سمجھوں
یہی تو ایک سہارا ہے زندگی کے لیے

## سَیِّدُ الشُّھَدَا

ایک صاحب نے امام حسین پاک کا ذکرِ خیر کرتے ہوئے آپ کو "سَیِّدُ الشُّھَدَا" کہا، جس پر ایک عالم صاحب معترض ہوئے اور کہنے لگے: سید الشہدا حضرت امیر حمزہ ہیں، جنھیں رسول اللہ ﷺ نے سید الشہدا کہا ہے، امام حسین پاک کو شہید کہیں، سید الشہدا نہیں۔

میں نے عرض کی: حضرت! بے شک سیدنا حمزہ پاک کو رسول اللہ نے سید الشہدا کہا ہے، لیکن امام حسین پاک بھی حضور ہی کے فرمان کی روشنی میں سید الشہدا ہیں۔

صحیح حدیث میں ہے:

سید الشھداء حمزۃ بن عبد المطلب، ورجل قام إلی إمام جائر فأمرہ ونھاہ فقتلہ۔

سید الشہدا حضرت حمزہ ہیں، اور وہ بندہ (بھی) ہے جو ظالم حکمران کے سامنے کھڑا ہو کر نیکی کا حکم دیتا اور برائی سے منع کرتا ہے تو حاکم اسے قتل کروا دیتا ہے۔

صحابہ کرام علیہم الرضوان کے جن فضائل کو خود رسول اللہ ﷺ نے خاص نہیں کیا، ہم از خود کیسے کر سکتے ہیں!!

آج ہمارے آقا و مولا سیدنا ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا یوم ہے۔

اللہ پاک نے دنیا جہان کی خوبیاں آپ رضی اللہ عنہ میں جمع فرما دی تھیں، حدیث شریف میں ہے:

بھلائی والی تین سو ساٹھ خصلتیں ہیں، جو ساری کی ساری ابو بکر صدیق میں جمع فرما دی گئی ہیں۔

(انظر: مکارم الاخلاق، ابن ابی الدنیا رحمہ اللہ، ص35، ر29، ط دار الکتب العلمیۃ بیروت، س1421ھ)

آپ کی سب خوبیوں پر جو خوبی فوقیت لے گئی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔وہ رسول اللہ ﷺ سے بے حد وانتہا اور لازوال محبت ہے۔

رب تعالیٰ ہمیں بھی اس میں سے حصہ عطا فرمائے۔

## مولا علی پاک

سیدنا سلمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ مولا علی پاک سے بہت زیادہ محبت کرتے تھے۔

ایک بندے نے آپ سے پوچھا: آپ حضرت علی رضی اللہ عنہ سے اتنی زیادہ محبت کیوں کرتے ہیں؟

کہنے لگے میں نے رسول اللہ ﷺ سے سنا ہے:

جس نے علی سے محبت کی اس نے مجھ سے محبت کی، اور جس نے علی سے بغض رکھا اس نے مجھ سے بغض رکھا۔

(المستدرک علی الصحیحین، ج3، ص100، ر4691، ط دار الکتاب العربی بیروت۔ قال الحاکم: ھذا حدیث صحیح علی شرط الشیخین وافقہ الذھبی رحمہ اللہ)

جس سے محبت ہو جائے اس کی ہر ادا پیاری لگتی ہے، اس کی یاد دل کو سکون دیتی ہے، اس کا نام باعثِ اطمینان ہوتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔بندہ بار بار اسی کا ذکر کرتا رہتا ہے۔

کبھی اُن کا نام لینا ، کبھی اُن کی بات کرنا
مِرا ذوق اُن کی چاہت ، مِرا شوق اُن پہ مرنا

ہم ہزار بار بغض علی سے اللہ کی پناہ مانگتے ہیں، اور بار بار دعا کرتے ہیں کہ:

اے اللہ! ہمیں حضرت علی کی لازوال محبت عطا فرما۔

اپنے پیارے رسول کے صدقے، آپ کو ہمارے دلوں سے کبھی جدا نہ کرنا۔

## مدح مرتضیٰ

مولا علی پاک کی شان میں لکھے گئے بہت سارے قصیدے پڑھے، منقبتیں، مخمس، سلام، رباعیاں، قطعے، فرد دیکھے۔۔۔۔۔۔۔لیکن جو لطف رسول اللہ ﷺ کی زبان پاک سے کی گئی "مدح مرتضیٰ" میں آیا، وہ کہیں نہیں ملا۔

گُھ سوادنہ مِصری اندر، کھنڈاں وی چکھ ڈِٹھیاں
ایناں ساریاں چیزاں نالوں گلاں سَجن دِیاں مِٹھیاں

جب حضور کہتے ہیں میرا علی ایسا ہے۔۔۔۔۔۔تو وجد آجاتا ہے۔

اللہ اللہ، سید الانبیا ﷺ جس ہستی کی تعریف کریں، کون ان کی شان بیان کر سکتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔!!

رسول اللہ ﷺ کا حضرت علی سے ایک انداز محبت ملاحظہ کریں۔

سیدنا جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں:
میں رسول اللہ ﷺ کے ساتھ ایک خاتون کے ہاں گیا، اُنھوں نے ہمارے لیے بکری ذبح کی۔
حضور نے فرمایا: (ابھی) ایک جنتی شخص آئے گا۔
تو حضرت ابوبکر تشریف لے آئے۔
پھر فرمایا: ایک جنتی شخص آئے گا، تو حضرت عمر آگئے۔
پھر فرمایا:
ایک (اور) جنتی شخص آئے گا، اَللّٰھُمَّ اِنْ شِئْتَ فَاجْعَلْہُ عَلِیًّا۔ اے اللہ! تُو چاہے تو اُس (آنے والے) کو علی بنادے۔
سیدنا جابر کہتے ہیں: پھر جو تشریف لائے، وہ حضرت علی ہی تھے۔
(المستدرک علی الصحیحین، ج 3، ص 104، ر 4704، ط دار الکتاب العربی بیروت۔ قال الحاکم: ھذا حدیث صحیح الاسناد وافقہ الذھبی رحمہ اللہ)
میں کیوں نہ اِس اندازِ محبت پر سو بار قربان ہو جاؤں، کہ: "اے میرے اللہ اگر تو چاہے تو اسے علی بنادے۔!"
مطلب: میرے مالک سب کچھ تیرے اختیار میں ہے، میں تیرا حبیب ہوں۔۔۔۔۔۔۔۔ اور میرا دل چاہتا ہے کہ ان دو جنتیوں (ابوبکر و عمر) کے ساتھ اپنے پیارے علی کو بھی دیکھوں؛ تو میری مان لے، اور آنے والے کو علی کر دے۔
رسول اللہ ﷺ کے ان جملوں میں پائی جانے والی شدت محبت صرف محسوس کی جا سکتی ہے، بیان نہیں کی جا سکتی؛ بھلا کیفیت محبت کو بھی کوئی لفظ بیان کر سکتا ہے۔۔۔۔۔۔۔۔! اے میرے آقا و مولا علی، اَعلیٰ و اَولیٰ علی، وَالا و بالا علی، اَکرَم و مُکرَّم علی، اَکمل و مُکمل علی۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ واللہ آپ حضور ﷺ کے تھے، اور حضور آپ کے۔۔۔۔۔۔۔۔!!

## حضرت موسیٰ کاظم

رسول اللہ ﷺ کے پیارے شہزادے حضرت موسیٰ کاظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ بڑی شان کے مالک تھے۔
ایک دفعہ آپ کنویں سے پانی پینے لگے تو دستِ مبارک سے برتن کنویں میں گر گیا۔
آپ نے آسمان کی طرف دیکھ کر کہا:
"جب مجھے پانی کی پیاس لگتی ہے تو میرا پالنے والا تُو ہوتا ہے، اور جب میں کھانے کا ارادہ کرتا ہوں تو تیری ذات ہی میری طاقت ہوتی ہے۔
اے میرے اللہ، اے میرے آقا جَلَّ جَلَالُہٗ اِس برتن کے علاوہ میرے پاس دوسرا برتن نہیں ہے، مجھے اِس سے محروم نہ فرما۔۔۔۔۔۔۔!
حضرت شَقِیق بَلخی رحمہ اللہ کہتے ہیں:
اللہ کی قسم، میں نے دیکھا کہ کنویں کا پانی اوپر آگیا اور آپ نے ہاتھ بڑھا کر اپنا برتن پکڑ لیا۔

پھر آپ نے وضو کر کے نماز ادا کی اور اُس برتن میں مٹی ڈالی اور ہلا کر پی گئے۔۔۔۔۔۔۔۔جب میں نے طلب کیا (کہ جو پی رہیں مجھے بھی عنایت فرمائیں) تو آپ نے میری طرف برتن بڑھا دیا۔

میں نے جب اس سے پیا تو وہ (مٹی نہیں تھی، بلکہ) شکر اور سَتُو تھے۔

بخدا میں نے آج تک ایسی لذیذ چیز نوش نہیں کی۔

(وہ اتنی لذیذ اور برکت والی چیز تھی کہ) میں نے سیر ہو کر پی تو کئی روز تک مجھے کھانے کی طلب نہ ہوئی۔

(ملخصًا: مثیر الغرام الساکن الی اشرف الاماکن، ت امام ابن جوزی رحمہ اللہ، ص402، 403، ط دار الحدیث القاہرہ، س1994ء)

امام موسی کاظم کی برکتیں آپ کی حیات ظاہری میں ہی نہیں تھیں، آج بھی جاری و ساری ہیں۔

امام شافعی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

امام موسی کاظم کی قبر (بھی دکھوں کا) تریاقِ مجرب ہے۔

(حیاۃ الحیوان الکبری، ت علامہ دمیری رحمہ اللہ، ج1، ص160، دار احیاء التراث العربی بیروت)

اللہ پاک مجھے اور آپ کو امام پاک کے دربارِ پر انوار کی باادب حاضری نصیب فرمائے۔

## فضیلت والا

حضرت مِسطَح سیدنا صدیق اکبر کے رشتے دار تھے اور غریب تھے۔

آپ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اِن کی مالی مدد کیا کرتے تھے۔

جب یہ منافقوں کی باتوں میں آکرام المومنین سیدہ عائشہ پاک رضی اللہ عنھا کی اذیت کا سبب بنے تو صدیق اکبر نے ان کی مدد کرنا چھوڑ دی اور کہا:

"اللہ کی قسم میں اب مسطح پر خرچ نہیں کروں گا۔"

آپ کی اس قسم پر اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ نے فرمایا:

وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ

اور تم میں فضیلت والے قسم نہ کھائیں۔

صدیق اکبر نے جب اپنے پاک پروردگار کا کلامِ محبت سنا تو فوراً توبہ کر کے حضرت مسطح کی مدد کرنے لگ گئے، اور کہنے لگے:

واللہ! اب کبھی بھی مسطح کی مدد سے ہاتھ نہیں روکوں گا۔

(ملتقطًا: صحیح البخاری، ر4141)

سبحان اللہ، جب رب تعالیٰ نے خود صدیق اکبر کو "فضیلت والا" کہ کر مخاطب کیا ہے، تو ہمیں بھی بہ دل و جان آپ کو افضل البشر بعد الانبیا کہنا چاہیے؛ اس سے انشاء اللہ تعالیٰ رضائے الٰہی حاصل ہوگی۔

## دعوت اسلامی کا ایک قافلہ

کئی سال پہلے ہمارے علاقے سے دعوت اسلامی کا ایک قافلہ بارہ دن کے لیے لکی مروت (خیبر پختونخواہ) جانے لگا تو میں بھی اس میں شامل ہوگیا۔ وہاں شین باغ میں دعوت اسلامی کا پہلا اجتماع ہونے والا تھا، جس کی تیاری کے لیے پاکستان بھر سے مدنی قافلے پہنچ رہے تھے۔

جب ہم وہاں پہنچے تو مدنی مرکز نے ہمیں ایسے علاقے کی طرف روانہ کیا جو متشدد قسم کے بدمذہبوں کا علاقہ تھا۔

ہمیں تاکید کی گئی کہ آپ نے ان کے سامنے الصلوۃ والسلام علیک یارسول اللہ نہیں پڑھنا، اور بڑی حکمت سے انھیں نیکی کی دعوت دینی ہے۔

یہ بات مجھے بالکل اچھی نہ لگی، کیوں کہ میرا مزاج ایسا نہیں تھا؛ میں نے سوچا کہ یہ کیسی تبلیغ ہے جس میں شعارِ اہل سنت صلاۃ وسلام سے بھی منع کیا جارہا ہے۔ بہر حال مرکز کی اطاعت میں بادل نخواستہ خاموش رہا۔

جب ہم اس علاقے میں پہنچے تو ہماری ملاقات وہاں کے مقامی ایک راسخ العقیدہ سنی پٹھان سے ہوئی۔

اس نے ہمیں دیکھ کر بہت مسرت کا اظہار کیا اور ساتھ کہا:

یہاں بدمذہبوں نے لوگوں میں یہ غلط فہمی پھیلا رکھی ہے کہ بریلوی مشرک ہوتے ہیں، یہ رسول اللہ ﷺ کو اللہ کی طرح سمجھ کر یارسول اللہ کہتے ہیں، اور شیخ عبدالقادر جیلانی کو اللہ کا بیٹا سمجھتے ہیں۔ (معاذاللہ ثم معاذاللہ)

اس لیے آپ یہاں سرعام یارسول اللہ کہنے سے پرہیز کیجیے گا، تاکہ آپ کے لیے آزمائش نہ بنے۔

آپ پہلے ان لوگوں کو اپنے قریب کریں، جب انھیں سمجھ آجائے گی کہ آپ کے وہ شرکیہ عقائد نہیں ہیں جو نجدیوں نے بتائے ہیں تو پھر یہ خود بھی یارسول اللہ کہنے والے بن جائیں گے۔

اس پٹھان کی یہ بات سن کر تسلی ہوگئی اور مرکز کی حکمت سمجھ میں آگئی۔

پھر ہم نے اللہ کی توفیق سے نیکی کی دعوت کا سلسلہ شروع کیا، تو ہمیں دھمکیاں ملیں، پتھر مارے گئے، گالیاں دی گئیں ۔۔۔۔۔۔۔۔ لیکن الحمدللہ ہم نے پوری جاں فشانی سے نیکی کی دعوت دی اور اجتماع پاک کو کامیاب کیا، اور اب الحمدللہ وہاں یارسول اللہ کی صدائیں عام ہیں۔

دعوت اسلامی اسلام اور اہل سنت کی نمائندہ عالمگیر تحریک ہے، انھوں نے صرف اپنے محلے، علاقے، شہر اور ملک میں نہیں ۔۔۔۔۔۔۔۔ پوری دنیا میں دین کا کام کرنا ہے۔

اس لیے ان کی اپنی حکمت عملی اور طریقہ کار ہے، جس کا منتہی خیر ہی خیر ہے۔

ان کی باقاعدہ مجلس شوری ہے جس میں ذہین، مدبر، دور اندیش اور باعمل لوگ ہیں؛ وہ جو فیصلہ کرتے ہیں سوچ سمجھ کر اور علما ومفتیان کرام کی مشاورت سے کرتے ہیں، اور آخرت کو مقدم رکھ کے کرتے ہیں۔

اس لیے اگر آپ کو ان کے کسی طریقے سے اختلاف ہو تو سلجھے انداز سے بے شک اظہار رائے کریں، یہ آپ کا حق ہے؛ لیکن اس سے پہلے ان سے وضاحت ضرور لے لیا کریں۔۔۔۔۔۔۔۔ کہیں ایسا نہ ہو کہ لاعلمی کی وجہ سے آپ ان خوش عقیدہ مسلمانوں کو ایذا دے بیٹھیں اور بعد میں آپ کو اپنے کیے پر شرمندہ ہونا پڑے۔

فَتُصْبِحُوْا عَلٰی مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِیْنَ !

(نوٹ: میں دعوت اسلامی کا کوئی تنظیمی کارکن یا عہدے دار نہیں ہوں، صرف ایک سنی مسلمان ہونے کے ناطے یہ عرض کیا ہے؛ اور مقصد صرف اتنا ہے کہ کسی سنی جماعت کی بے جا مخالفت سے احباب اپنی آخرت خراب نہ کریں۔ باقی ہدایت دینے والی اللہ کی ذات ہے۔)

## دعوت اسلامی پر تنقید

بعض علمائے اہل سنت دعوت اسلامی کی بعض چیزوں پر تنقید کرتے اور انھیں غلط سمجھتے ہیں، جس کے جواب میں دعوت اسلامی کے بعض محبین ان علما کے متعلق گھٹیا زبان بھی استعمال کر دیتے ہیں۔

یہ سراسر غلط حرکت ہے، امیر دعوت اسلامی حفظہ اللہ ایسے محبین کو دعوت اسلامی کا ذمے دار تسلیم نہیں کرتے ۔۔۔۔۔۔۔ ان سے اظہار برات کرتے ہیں۔ (جیسا کہ نیچے ویڈیو میں دیکھا جا سکتا ہے)

دعوت اسلامی ہو، امیر دعوت اسلامی ہوں، یا کوئی بھی مذہبی جماعت اور اس کے امیر ہوں۔۔۔۔۔۔۔۔ ان کا ہر معاملے میں سو فی صد درست اور تنقید سے بری ہونا بعید از عقل ہے۔

یہ بات ہمیں ہمیشہ یاد رکھنی چاہیے کہ:

ہمارے پیر، ہمارے استاد، ہمارے شیخ، ہمارے مرشد۔۔۔۔۔۔۔ جو کچھ بھی ہیں ہمارے لیے ہیں، سب کے لیے نہیں؛ ہم ان کی ہر بات پر عقیدت سے آنکھیں بند کر لیں گے لیکن دوسرے لوگ بھی ایسا کریں، یہ ضروری نہیں۔

دوسرے تنقید کریں گے جو بجا بھی ہوگی اور بے جا بھی، اس لیے جس طرح اپنے شیخ کے حق میں دوسروں کی تعریف قبول کرتے ہیں، تنقید سننے کا بھی حوصلہ پیدا کریں۔

بعض دفعہ تنقید کرنے والا ہمارے پیر و مرشد پر غلط فہمی کی وجہ سے تنقید کر رہا ہوتا ہے، اِس کے باوجود وہ مقبول بارگاہ ہوتا ہے؛ اور ہمارا اپنے پیر کی محبت میں اس سے بغض رکھنا غلط ہوتا ہے۔ مثلاً:

امام ابن عربی رحمہ اللہ کے پیر و مرشد حضرت ابو مدین شعیب بن حسین مالکی (متوفی 594ھ) پر ایک عالم طعن و تشنیع کرتے تھے، جس کی وجہ سے شیخ ابن عربی اُس عالم سے بغض رکھتے۔

شیخ فرماتے ہیں:

روزی حضرت پیغامبر را صلی اللہ علیہ وسلم بخواب دیدم۔

ایک روز میں نے خواب میں رسول پاک ﷺ کی زیارت کی، آپ فرمارہے تھے:
(ابن عربی!) تجھے فلاں سے کیوں بغض ہے؟
میں نے عرض کی:
حضور! وہ شیخ ابومدین سے بغض رکھتا ہے، جب کہ وہ میرے بزرگ ہیں۔
آپ نے فرمایا: الیس یحب اللہ ورسولہ؟
کیا وہ اللہ ورسول سے محبت نہیں رکھتا؟
میں نے عرض کی: رکھتا ہے۔
آپ نے فرمایا:

فلم ابغضته لبغضه ابامدين ولم تحبه بحبه رسول الله صلى الله عليه وسلم -

(بڑے تعجب کی بات ہے کہ) تجھے اُس سے ابومدین کے بغض کی وجہ سے بغض تو ہے، لیکن اللہ کے رسول کی محبت کی وجہ سے محبت نہیں!!

شیخ کہتے ہیں میں نے اُن عالم صاحب کے بغض سے توبہ کی اور اُن کی خدمت میں حاضر ہوکر معذرت کی، " واهديت اليه ثوبا عاليا " اور انھیں قیمتی سوٹ نذرانے میں پیش کیا۔
پھر اُن سے جو (اپنے پیر کے متعلق) بغض کی وجہ پوچھی تو وہ غلط فہمی تھی، جسے میں نے دور کردیا۔
اِس طرح اُن کا دل بھی (میرے شیخ کے متعلق) صاف ہوگیا۔
(ملخصًا: انفاس العارفین، شاہ ولی اللہ محدث دہلوی، ص 199، 200، در مطبع مجتبائی واقع دہلی)

## مولانا الیاس قادری صاحب

ایک روشن چہرے والے شخص نے میرے ساتھ نماز پڑھی، تو باتوں باتوں میں کہنے لگا:
کبھی میں ڈکیتوں کا سرغنہ ہوا کرتا تھا، جہاں جاتا تباہی مچا کے رکھ دیتا۔
جیسے ہی پتا چلتا کسی کی کمیٹی نکلی ہے یا کسی کے پاس مال اور زیور ہے تو تنِ تنہا اس کے گھر جا گھستا اور سب کچھ لوٹ کر رفوچکر ہوجاتا۔

ایک دن مجھے فلاں سید صاحب نے مولانا محمد الیاس قادری صاحب کا بیان سنایا، جسے سن کر میری چیخیں نکل گئیں۔
میں نے وہیں بیٹھے بیٹھے اپنے گناہوں سے توبہ کرلی، اور چہرے پر داڑھی شریف سجانے کی نیت کرلی۔
لوگوں کا لوٹا ہوا مال بھی واپس کردیا، ایک بندے کا تقریبا سوا پاؤ سونا لوٹا تھا وہ بھی اس کے گھر جا کر واپس کر آیا۔
پھر مولانا الیاس قادری صاحب سے ملاقات کرنے کے لیے کراچی گیا اور ان سے عرض کی مجھے مدینہ پاک کی حاضری کے

لیے دعا دے دیں۔
انھوں نے دعا فرمائی، تو اللہ پاک نے مدینہ پاک کی بار بار حاضری بھی نصیب فرما دی۔
یہ ایک ہی نہیں اس طرح کے بے شمار لوگ حضرت کی تبلیغ سے تائب ہوئے ہیں، اور کئی غیر مسلم دائرہ اسلام میں داخل ہوئے ہیں۔
رب تعالیٰ آپ دام ظلہ کو دائمی برکتوں سے نوازے!
آپ کا طریقۂ تبلیغ منفرد اور موثر ہے۔
جس طرح لوگوں کے اعمال کی اصلاح کرتے ہیں اسی طرح عقیدے کی بھی اصلاح کرتے رہتے ہیں۔
کچھ عرصہ پہلے سنی مسلمان صحابہ و اہل بیت کے معاملے میں تشکیک کا شکار ہونے لگے تو آپ نے بڑے احسن انداز میں تبلیغ شروع فرمائی، جس کی برکت سے بہت سارے مسلمانوں کے عقیدے اور عقیدتیں محفوظ ہوئیں۔
آپ باقاعدہ اہل بیت پاک اور صحابہ کرام کے ایام مناتے ہیں۔۔۔۔۔۔ سیدنا صدیق اکبر، سیدنا علی پاک، سیدہ زہرا پاک، حسنین کریمین، حضرت جعفر صادق اور حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عن جمیعھم کے خصوصی دن منا کر، اِن کے ذکرِ خیر سے مسلمانوں کے دل منور کرتے ہیں۔

## سید ابوالحسین احمد نوری

ہندستان میں ایک بلند مرتبہ ولی اللہ گزرے ہیں جن کے متعلق سیدی اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ کا یہ شعر ہے۔

برتر قیاس سے ہے مقامِ ابُوالحسین
سدرہ سے پوچھو رفعتِ بامِ ابُوالحسین

وہ سید ابوالحسین احمد نوری رحمہ اللہ فرماتے تھے:
"اِس زمانہ میں اہل سنت و جماعت کے لوگ رافضیوں کے پاس آنے جانے اور ان کے پاس اٹھنے بیٹھنے کی وجہ سے حضرت سیدنا امیر معاویہ رضی اللہ عنہ اور دوسرے صحابہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سوئے ظن رکھتے ہیں، یہ خود کھلا ہوا رفض ہے۔" (سراج العوارف فی الوصایا والمعارف، چھبیسواں نور، ص 61)

اللہ کریم ہر مسلمان کو کھلے اور پوشیدہ رفض سے محفوظ رکھے۔۔۔۔۔۔ سید الانبیا ﷺ کے تمام صحابہ کرام کا ادب کرنے کی توفیق عطا فرمائے!

## قبا

مدینۃ النبی میں ایک مسجد ہے جسے "قبا" کہتے ہیں۔

اس مسجد شریف کے ساتھ اللہ کے پیارے حبیب ﷺ کو خاص لگاؤ تھا، حضور یہاں ہر ہفتے کو تشریف لایا کرتے تھے۔ (بخاری شریف)

اور فرماتے تھے: اس مسجد میں نماز پڑھنے کا ثواب عمرے کے برابر ہے۔ (الترغیب والترہیب)

سیدنا سعد بن ابی وقاص رضی اللہ عنہ کہتے تھے:

مسجد قبا میں نماز پڑھنا، مجھے بیت المقدس میں نماز پڑھنے سے زیادہ پیارا ہے۔ (ایضًا)

سیدنا عبداللہ بن عمر پاک کا بھی ہر ہفتے اس مسجد کی حاضری کا معمول رہا۔

آپ نمازِ چاشت صرف دو دن پڑھا کرتے تھے، ایک جب مکہ معظمہ حاضر ہوتے تو طواف کے بعد مقام ابراہیم کے پاس پڑھتے، اور دوسرا جب ہفتے والے دن مسجد قبا آتے تو یہاں چاشت پڑھتے۔ (بخاری شریف)

اللہ پاک آپ کو جب مدینہ طیبہ، مدینہ منورہ، مدینہ مقدسہ کی حاضری نصیب فرمائے تو ہفتے والے دن، پیدل یا گاڑی پر یہاں آکر ضرور نماز پڑھیں، اللہ و رسول کی خوشنودی حاصل ہوگی۔

## مسجد فتح

سیدنا جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا معمول تھا کہ آپ کو جب بھی کوئی مشکل پیش آتی، بدھ کو ظہر اور عصر کے درمیان (مدینہ طیبہ کی) مسجد فتح آکر دعا کرتے، تو اللہ تعالیٰ مشکل حل کر دیتا۔

(انظر: الادب المفرد للبخاری، باب الدعاء عند الاستخارۃ، ص 293، ر 704، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

آج اسی مسجد میں حاضر ہو کر، فیس بک پر دعا کا کہنے والے سب احباب کے لیے دعا کی ہے، رب تعالیٰ قبول کرے۔

فیس بک پر بھی وہ عاشقانہ مزاج کے لوگ پائے جاتے ہیں جو مدینہ پاک جانے والوں کو دیکھ کر رویا کرتے تھے، اور مدینہ شریف سے ہو کر آنے والوں کی آنکھیں چومتے تھے۔

مدینے کی ایک کھجور مل جاتی تو چوم کر کھاتے اور اس کی گٹھلی بھی سنبھال کے رکھتے، کہ کہیں بے ادبی نہ ہو جائے۔

آبِ زم زم شریف کے چند قطرے مل جاتے تو انھیں بسم اللہ شریف پڑھ کر دوسرے پانی میں ملا لیتے، اور اُسے باعث برکت سمجھتے۔ اب اگرچہ ایسے لوگ کم ہیں، لیکن ہیں۔

وہ جن کے نقش قدم دیکھنے میں آتے ہیں
اب ایسے لوگ تو کم دیکھنے میں آتے ہیں

## ایک ہی مٹی سے پیدا کیا

امام ابن سیرین تابعی رحمہ اللہ فرماتے تھے:

اگر میں قسم کھا کر یہ بات کہوں تو بلاشک وشُبہ سچی ہوگی کہ:

اللہ تعالیٰ نے اپنے پیارے نبی ﷺ اور حضرت ابوبکر و عمر رضی اللہ عنھما کو ایک ہی مٹی سے پیدا کیا۔۔۔۔۔۔ پھر اسی کی طرف لوٹا دیا۔

(وفاء الوفا بأخبار دار المصطفی، الباب الثانی فی تفضیلها علی غیرها من البلاد مکة افضل ام المدینة، ج1، ص34، ط دار الکتب العلمیة بیروت، س1427ھ)

محبوبِ ربِّ عرش ہے اِس سَبز قبّہ میں
پہلو میں جلوہ گاہ عَتیق و عمر کی ہے
سعدین کا قِران ہے پہلوئے ماہ میں
جُھرمٹ کیے ہیں تارے تجلّی قمر کی ہے

## مکہ معظمہ

سید عالم ﷺ نے مکہ معظمہ کو دیکھ کر فرمایا تھا:

اللہ کی قسم! بلاشبہ تو اللہ کی زمین میں سب سے بہتر ہے، اور اللہ پاک کے نزدیک سب سے محبوب سرزمین ہے۔

(ترمذی، ر3925۔ صحیح)

سیدنا حسن بصری رحمہ اللہ فرماتے تھے:

روئے زمین پر مکہ مکرمہ کے علاوہ کوئی ایسا شہر نہیں جس کی طرف جمیع انبیا، ملائکہ، مرسلین اور آسمان و زمین سے اللہ کے نیک بندے اور جن جمع ہوتے ہوں۔ (یعنی یہ سب اسی بابرکت شہر میں جمع ہوتے ہیں)

(فضائل مکة والسکن فیها مترجم، ص19)

اللہ پاک اس بابرکت شہر کی محبت سے ہمارے دلوں کو کبھی محروم نہ کرے، یہ شہر سید الانبیا ﷺ کا مسکن بھی رہا ہے، نیز جو نبی علیہ السلام اپنی قوم کی طرف سے ستائے جاتے وہ یہیں تشریف لاتے تھے۔

یہاں سیکڑوں انبیا کی قبریں ہیں، بلکہ امام ابن جماعہ شافعی رحمہ اللہ نے ایک ہزار کے قریب انبیا علیہم السلام کی قبور کا قول کیا ہے۔

(انظر: هدیة السالك الی المذاهب الاربعة فی المناسك، فصل ما بین الحجر الاسود والرکن الیمانی ..... ج1، ص195)

## تم جنت میں چلے جاؤ!

جو حج یا عمرہ کرنے کے لیے نکلے اور راستے میں فوت ہو جائے، تو اُس سے (اللہ کے حضور) کوئی پوچھ گچھ نہیں ہوگی، نہ اس کا حساب لیا جائے گا، بلکہ اسے کہا جائے گا:

"تم جنت میں چلے جاؤ!"

(مجمع الزوائد ومنبع الفوائد، کتاب الحج، باب فضل الحج والعمرة، ج3، ص478، ر 5273، ط دار الفکر بیروت۔)

قال الهيثمي رحمه الله: رواه أبو يعلى والطبراني في الأوسط، وفي إسناد الطبراني: محمد بن صالح العدوي، ولم أجد من ذكره؛ وبقية رجاله رجال الصحيح۔)

وہ لوگ کتنے خوش نصیب ہوتے ہیں جو حج و عمرہ کے لیے جاتے ہیں تو واپس نہیں آتے۔۔۔۔۔۔۔۔ رب تعالیٰ ایسے خوش نصیبوں میں ہمارا نام بھی شامل فرمادے!

ایمان پہ دے موت مدینے کی گلی میں
مدفن مِرا محبوب کے قدموں میں بنادے!

## عرش و کرسی سے بھی افضل

زمین، آسمان سے افضل ہے؛ کیوں کہ حضور ﷺ اس میں جلوہ فرما ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔ اور زمین کا وہ حصہ جو آپ ﷺ کے جسمِ مبارک سے مَس کیے ہوئے ہے، وہ کعبہ شریف اور عرش و کرسی سے بھی افضل ہے۔

(انظر: ردالمحتار علی الدرر المختار، کتاب الحج، مطلب فی تفضیل قبرہ المکرم ﷺ، ج4، ص47، 48، ط داراحیاء التراث العربی بیروت)

اللہ اللہ ہمارے نصیب کہ ہم اُس زمین کے باسی ہیں جو آسمان سے بھی افضل ہے۔۔۔۔۔۔۔

کاشکے! اُس مٹی میں بھی مل جائیں جو روضۂ اطہر کے قریب ہے۔

## مولانا محمد الیاس عطار قادری

جب مکے مدینے کے عاشقوں کی فہرست مرتب ہوگی تو اس میں مولانا محمد الیاس عطار قادری حفظہ اللہ کا نام ضرور آئے گا۔

آپ نہ صرف خود بے مثال عاشق ہیں، بلکہ عاشقوں کے مقتدا ہیں۔

جسے اللہ کریم نے نورِ معرفت عطا فرمایا ہو وہ مکتبِ عشق کے اِس شیخ سے مستغنی نہیں ہوگا۔

علامہ ارشد القادری رحمہ اللہ نے کسی دیوار پر یہ جملہ لکھا دیکھا:

"واہ کیا بات ہے مدینے کی!"

تو آپ کو وجد آگیا، اور پوچھنے لگے یہ کس کا جملہ ہے؟

تو بتایا گیا: حضرت! یہ مولانا الیاس قادری صاحب کا ہے۔

آپ حفظہ اللہ کے عشق کے کیا کہنے۔۔۔۔۔۔۔۔ یہ آپ ہی کا شعر ہے جسے جب بھی پڑھیں نیا ذوق ملتا ہے۔

وَہاں پیارا کعبہ ، یہاں سبز گنبد
وہ مکہ بھی میٹھا تو پیارا مدینہ

آج مکہ مکرمہ میں، 26 اپریل، اور 26 رمضان المبارک کی رات ہے، اور چھبیس رمضان آپ کی تاریخِ ولادت بھی ہے۔
حرم مکہ کی بابرکت فضاؤں اور ان بابرکت ساعتوں میں آپ کے لیے رب کعبہ کے حضور ڈھیروں دعائیں ہیں اور آپ کی بارگاہ میں عرض ہے کہ شیخ! عشق کے کسی دائمی سبق کا یہ طالب، بھی طالب ہے؛ بنامِ "حضرتِ عشق" اس کی طلب پوری فرمادیں!!

پیر و مُرشد! اگرچہ مجھ کو نہیں
ذوقِ آرائشِ سر و دستار
نہ کہوں آپ سے تو کس سے کہوں
مُدعائے ضروری الاظہار
ختم کرتا ہُوں اب دُعا پہ کلام
شاعری سے نہیں مجھے سروکار
تُم سلامت رہو ہزار برس
ہر برس کے ہوں ، دن پچاس ہزار !

## رمضان شریف میں عمرہ

فِداكَ اَبِي واُمِي یارسول اللہ! حضور آپ نے فرمایا تھا:
رمضان شریف میں عمرہ کرنا "میرے ساتھ "حج کرنے کے برابر ہے۔
(صحیح البخاری، ر 1863)
حضور! آپ کے فرمان پر لبیک کہتے ہوئے غلام نے یہ شرف پالیا۔۔۔۔۔۔ کاشکے! ظاہری طور پر بھی "آپ کا ساتھ" نصیب ہوتا۔

جو ہم بھی واں ہوتے خاکِ گلشن ، لپٹ کے قدموں سے لیتے اُترن
مگر کریں کیا ، نصیب میں تو یہ نامُرادی کے دِن لکھے تھے

## ماہِ رمضان کے عمرے

نبی پاک ﷺ حج سے واپس تشریف لائے تو سیدہ اُمِ سِنان سے پوچھا:

تجھے حج کرنے سے کس چیز نے روکے رکھا(تُو ہمارے ساتھ حج کرنے کیوں نہیں گئی)؟۔
انھوں نے عرض کی: حضور! میرے خاوند کے پاس دو ہی اونٹ تھے، ایک پر وہ خود حج کرنے چلے گئے اور دوسرے اونٹ سے ہم (کنویں سے پانی نکال کر) اپنی زمین سیراب کرتے رہے۔
سید عالم ﷺ نے فرمایا:
(جب رمضان شریف آئے تو عمرہ کرلینا) بے شک رمضان شریف میں عمرہ کرنا "میرے ساتھ" حج کرنے کے برابر ہے۔
(صحیح البخاری، ر 1863۔ ودیگر کتب احادیث)

اللہ اکبر، ماہِ رمضان کے عمرے کی فضیلت!!
ویسے بھی زندگی میں ایک بار عمرہ شریف ضرور کرنا چاہیے، اور بار بار یہ سعادت ملے تو سبحان اللہ۔
ہمارے جمیع فقہاے احناف کے نزدیک عمرہ شریف سنت مؤکدہ ہے، (اور ان کی دلیل ترمذی شریف کی حدیث ہے) اور اسے ہی قولِ مختار قرار دیتے ہیں؛ البتہ بعض احناف رحمھم اللہ نے عمرہ شریف کے واجب ہونے کا بھی قول کیا ہے۔
علامہ احمد طحطاوی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

(فصل العمرة سنة) ای: مؤكدة على المذهب، وصحح في الجوهرة وجوبها۔
(حاشیۃ الطحطاوی علی المراقی الفلاح، فصل العمرۃ، ج2، ص 421، ط مکتبہ غوثیہ کراچی)

سیدنا و مولانا عبداللہ بن عمر پاک صاحبِ استطاعت کے لیے عمرہ کو واجب ہی قرار دیتے تھے۔۔۔۔۔ اسی طرح سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہ بھی فرماتے تھے کہ:
جس طرح صاحب استطاعت پر حج ہے، اسی طرح عمرہ شریف بھی واجب ہے۔ (انظر: المستدرک علی الصحیحین، ب الحج والعمرۃ فریضتان، ج 1، ر 1746، ط دار الکتاب العربی بیروت۔ قال الحاکم ھذا اسناد صحیح علی شرط الشیخین۔ وافقہ الذھبی رحمہ اللہ)
خدا توفیق دے تو اِسی رمضان میں عمرہ شریف ادا کرلیں، زندگی کا کیا بھروسہ آئندہ رمضان دیکھنا نصیب ہو، نہ ہو ۔۔۔۔۔۔

دو پل کے ہیں یہ سب مَہ و اختر، نہ بُھولنا
سورج غروب ہونے کا منظر نہ بُھولنا!

## طواف

رب تعالیٰ توفیق دے، آپ مکہ مکرمہ حاضر ہوں تو یہاں کثرت سے طواف کریں، کیوں کہ یہ وہ نیکی ہے جو صرف

یہیں ہوسکتی ہے، روئے زمین پر کسی اور جگہ نہیں ہوسکتی۔
ہوسکے تو پچاس طواف کریں، سید عالم ﷺ فرماتے تھے:
جس نے بیت اللہ شریف کے پچاس طواف کیے وہ گناہوں سے اس طرح نکل گیا جیسے اس کی والدہ نے اسے جنم دیا تھا (تو وہ گناہوں سے بالکل پاک تھا) (ترمذی، ر866)
نفلی طواف کے لیے احرام باندھنا ضروری نہیں ہوتا، عام کپڑوں میں بھی طواف کیا جاسکتا ہے، اور اگر احرام باندھ کر کرنا چاہیں تب بھی کرسکتے ہیں (کیوں کہ آج کل کپڑوں میں نیچے مطاف کی طرف نہیں جانے دیتے، صرف احرام والوں کو جانے دیتے ہیں) لیکن اس میں طواف کرتے وقت کندھا ننگا نہیں کرنا ہوتا، کیوں کہ کندھا اس طواف میں ننگا کرتے ہیں جس کے بعد صفا مروہ کی سعی کرنی ہو، اور نفلی طواف میں سعی نہیں کرنی ہوتی۔ اس کا مسنون طریقہ یہ ہے کہ:
آپ باوضو بیت اللہ شریف کے پاس آئیں، اور حجر اسود کے سامنے کھڑے ہوکر استلام کریں (یعنی حجر اسود کو چوم لیں، یا اس کی طرف ہاتھ کا اشارہ کریں) اور بِسْمِ اللّٰہِ وَاللّٰہُ اَکْبَر پڑھیں۔

متبع سنت صحابی، سیدنا عبداللہ بن عمر استلام کے وقت یہی پڑھا کرتے تھے۔ (مسند احمد، ر4316)
اس کے بعد طواف شروع کردیں، اور معمول کی رفتار سے بیت اللہ شریف کے گرد چلنا شروع کردیں، اور جو بھی ذکر و درود چاہیں پڑھتے رہیں؛ رسول اللہ ﷺ نے طواف کے دوران ہمیں مخصوص اذکار اور دعائیں پڑھنے کا پابند نہیں کیا۔
طواف کرتے کرتے جب رکن یمانی (یعنی کعبۃ اللہ شریف کے حجر اسود سے پہلے والے کونے) کے پاس آئیں تو اس کا بھی استلام کریں، جان عالم ﷺ اس کا بھی استلام کیا کرتے تھے، اور فرماتے تھے:
حجر اسود اور رکن یمانی کا استلام کرنے سے گناہ معاف ہوتے ہیں۔ (مسند احمد، ر4339)
سیدنا عبداللہ بن عمر کہتے تھے:
ہم نے جب سے حضور کو حجر اسود اور رکن یمانی کا استلام کرتے دیکھا ہے، تب سے تنگی ہو یا آسانی۔۔۔۔۔۔۔ اِن کا استلام نہیں چھوڑا۔
(مشکوۃ، ر2586)
رکن یمانی کے استلام کے بعد پھر حجرِ اسود شریف کا استلام کریں اور اسی طرح سات چکر مکمل کریں؛ یہ ایک طواف ہوجائے گا۔
اس کے بعد مقام ابراہیم کے قریب دو نفل پڑھیں، اور ان کی پہلی رکعت میں سورت کافرون اور دوسری میں سورت اخلاص پڑھیں؛ سرکار دوعالم ﷺ نے طواف کے نوافل میں یہی دو سورتیں پڑھی تھیں۔ (مسند احمد، ر4387)
پھر اتباعِ سنت میں یہ آیت پڑھیں:

وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهِيْمَ مُصَلًّى

سیدنا جابر بن عبداللہ کہتے ہیں، رسول اللہ ﷺ نے طواف کے دو نفل پڑھے تھے اور ان کے بعد یہ آیت پڑھی تھی۔ (ایضًا)

اگر آپ کا مکہ پاک میں ایک ہفتہ قیام ہے تو روزانہ طواف کریں۔

معروف تابعی امام حسن بصری رحمہ اللہ نے حدیث نقل کی ہے کہ:

جو بندہ ایک ہفتہ بیت اللہ شریف کا طواف کرتا ہے اللہ تعالی اس کے ہر قدم پر ستر ہزار درجات بلند فرماتا ہے، اور اسے ستر ہزار نیکیاں عطا فرماتا ہے، اور اسے ستر ہزار شفاعتیں عطا ہوتی ہیں، کہ اپنے اہل خانہ میں سے جس مسلمان کی چاہے شفاعت کرے؛ چاہے تو دنیا ہی میں اسے بدلہ مل جاتا ہے اور اگر چاہے تو آخرت کے لیے ذخیرہ کر دیا جاتا ہے۔

(فضائل مکۃ والسکن فیھا، مترجم، ص38)

سید عالم ﷺ فرماتے تھے:

کثرت سے طواف کرو، اس سے پہلے کہ تمھارے اور اِس کے درمیان رکاوٹ آجائے۔

بے شک میں حبشہ کے ایک ٹیڑھی ٹانگوں اور چوڑی پیشانی والے گنجے آدمی کو دیکھتا ہوں جو کعبہ معظمہ کے درپے ہوگا، اور اس کو منہدم کر کے ریزہ ریزہ کر دے گا۔ (ایضًا، ص39)

رب تعالی اس گھر کی برکتوں سے ہمیں کبھی محروم نہ کرے!

حضورِ کعبہ حاضر ہیں حرم کی خاک پر سر ہے
بڑی سرکار میں پہنچے مقدر یاوَری پر ہے
خبر کیا ہے بھکاری کیسی کیسی نعمتیں پائیں
یہ اونچا گھر ہے ، اس کی بھیک اَندازہ سے باہر ہے
تصدق ہو رہے ہیں لاکھوں بندے گرد پھر پھر کر
طوافِ خانۂ کعبہ عجب دلچسپ منظر ہے

## حضرت معاویہ بادشاہ ہیں

بزرگ فرمارہے تھے "حضرت معاویہ بادشاہ ہیں"۔

بزرگو! آپ نے صحیح فرمایا، واقعی حضرت معاویہ بادشاہ ہیں۔۔۔۔۔ لیکن اعلیٰ حضرت رحمہ اللہ کہتے ہیں:

آپ رضی اللہ عنہ سلطنت محمدیہ کے بادشاہ ہیں!

بادشاہ ہونا کوئی کمی والی بات نہیں، اللہ کے نبی سیدنا داود علیہ السلام بادشاہ تھے، آپ کے بیٹے سیدنا سلیمان علیہ السلام بھی بادشاہ تھے۔۔۔۔۔ بلکہ آپ علیہ السلام تو ایسے بادشاہ تھے کہ بادشاہ ہونے کے باوجود "ھَبۡ لِیۡ مُلۡکًا لَّا یَنۡۢبَغِیۡ لِاَحَدٍ

مِّن ۚ بَعۡدِیۡ "کہہ کر، اللہ پاک سے بے مثال بادشاہی مانگتے رہے۔۔۔۔۔۔۔

بھولے بادشاہو! اچھی نیت سے حضرت معاویہ کو بے شک بادشاہ کہا کرو، کوئی ہرج نہیں؛ بس نیت کو فتور سے محفوظ رکھو۔

دیکھو، ہم اہل سنت نورٌ علی نور نبی ﷺ کو بشر سمجھتے ہیں، لیکن اُس طرح کا بشر نہیں سمجھتے جیسے وہابی سمجھتے ہیں۔۔۔۔۔۔۔!!

"پیر سید عرفان شاہ صاحب" فرماتے تھے: اگر کوئی شخص تنقیص کی نیت سے رسول اللہ کو "بشر" بھی کہے گا تو اس پر حکم کفر ہوگا۔

اس لیے بزرگو! سچی بات کے پیچھے اگر جھوٹی نیت کارفرما ہو تو وہ بات کہیں سے کہیں چلی جاتی ہے۔ ؎

بات سے ، بات کی گہرائی چلی جاتی ہے
جھوٹ آ جائے تو سچائی چلی جاتی ہے
رات بھر جاگتے رہنے کا عمل ٹھیک نہیں
چاند کے عشق میں " بینائی " چلی جاتی ہے

ہم اپنے لیے، اور آپ کے لیے بھی دعا کرتے ہیں کہ اللہ کریم ہمیں اصحاب رسول کا ہمیشہ مودب رکھے، ہم مولا علی پاک سے بے لوث اور بے حد وانتہا محبت کریں۔۔۔۔۔۔ مگر سیدنا معاویہ سمیت کسی صحابیِ رسول کی تنقیص کا کبھی سوچیں بھی ناں۔

وَالسَّلَامُ عَلَی مَنِ اتَّبَعَ الْھُدٰی!

## ماہِ ذِی القَعدَہ میں

سیدہ طیبہ طاہرہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنھا فرماتی تھیں:

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے جتنے عمرے ادا کیے ہیں سارے ماہِ ذِی القَعدَہ میں کیے ہیں۔ (ابن ماجہ، ر2997)

بلکہ سیدنا عبداللہ بن عمر رضی اللہ عنھما نے کہا تھا کہ رسول اللہ ﷺ نے رجب شریف میں عمرہ کیا ہے تو اس پر سیدہ پاک نے فرمایا:

ابو عبدالرحمان (عبداللہ بن عمر) کو اللہ بخشے، ان سے بھول ہوگئی ہے، رسول اللہ ﷺ نے ماہِ رجب میں کوئی عمرہ نہیں کیا۔ (مسند احمد، ر4122)

شوال کا پہلا عشرہ گزر رہا ہے، ماہِ ذِی القعدہ آنے والا ہے، جنھیں اللہ توفیق دے وہ اتباعِ رسول میں اس ماہِ مبارک میں ضرور عمرہ ادا کریں۔

ویسے بھی بار بار حج و عمرہ غربت اور گناہ ختم ہونے کا بہترین ذریعہ ہیں۔

آقا کریم ﷺ کا فرمان ہے: حج اور عمرہ بار بار کیا کرو، یقیناً یہ غربت اور گناہوں کو اس طرح ختم کر دیتے ہیں جیسے بھٹی

۔۔۔۔۔۔۔لوہے، سونے اور چاندی کا زنگ اتار دیتی ہے۔(سنن نسائی، ر2632)

## حضرت جنید بغدادی

حضرت جنید بغدادی رحمہ اللہ روزانہ چار سو رکعت نماز پڑھا کرتے تھے، اور چالیس سال تک عشا کے وضو سے فجر کی نماز پڑھتے رہے۔

( تذکرۃ الاولیاء فی تراجم الائمۃ والمتصوفۃ والزھاد فی بغداد وماجاورھا من البلدان، القسم الثانی تحقیق النص، الجنید البغدادی، ص۲۳۹,۲۴۰، ط اھلال للطباعۃ والنشر والتوزیع بیروت، س۲۰۱۲ء )

کیا آج بھی حضرت جنید بغدادی جیسے عابد و زاہد موجود ہیں؟

اگر کسی کے علم میں ہوں تو ضرور مطلع فرمائیں، تاکہ ان کی زیارت کا شرف حاصل کیا جا سکے۔

صحیح حدیث کا مفہوم ہے کہ نفل پڑھنے والا بندہ اللہ کے اتنا قریب، اتنا قریب ہو جاتا ہے کہ وہ جَلَّ جَلَالُہٗ اس کے کان، آنکھ، زبان، دل اور ہاتھ پیر ہو جاتا ہے۔۔۔۔۔۔۔اور اُس بندے کا ہر سوال پورا فرماتا ہے۔

## یومِ عَرَفہ کا روزہ

یومِ عَرَفہ (یعنی 9 ذُوالْحِجَّہ) کا روزہ رکھنا بڑی سعادت مندی ہے، سید عالم صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا ارشاد مبارک ہے:

یوم عرفہ کے روزے کے متعلق میں اللہ پاک سے امید رکھتا ہوں کہ ایک سال پہلے، اور ایک سال بعد کے گناہوں کا کفارہ بن جائے گا۔

(صحیح مسلم، ر2746 وغیرہ)

جنھوں نے یہ روزہ رکھا، اللہ پاک ان کا قبول فرمائے اور جو کسی وجہ سے نہیں رکھ سکے وہ اچھی اچھی نیتوں سے اللہ کی نعمتیں کھائیں، اس دن کھانا پینا بھی باعث برکت ہے۔

رحمت عالم صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کا ارشاد مبارک ہے:

یوم عرفہ، یوم نحر اور ایام تشریق (یعنی 9 ذوالحجہ سے لے کر 13 تک جو پانچ دن ہیں، یہ) ہم اہل اسلام کی عید کے دن ہیں، اور کھانے پینے کے دن ہیں۔(ترمذی، ر773، ابوداود، ر2419 وغیرہ)

میری جان قربان اپنے آقا و مولا صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم پر، آپ فرمایا کرتے:

"سب سے بہترین دعا یومِ عَرَفہ (یعنی حج والے دن) کی دعا ہے، میں نے جو کچھ کہا ہے، اور مجھ سے پہلے نبیوں نے جو کہا ہے اس میں سے بہترین یہ کلمات ہیں:

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ، لَہُ الْمُلْکُ وَلَہُ الْحَمْدُ وَھُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۔ "

(جامع ترمذی، ر3585)

آج مکہ پاک میں یوم عرفہ ہے، خدا یہ دن ہمیں مکہ پاک میں بھی دکھائے، اور بار بار دکھائے۔

ہو سکے تو ان کلمات کو اٹھتے بیٹھتے اور چلتے پھرتے پڑھتے رہیے۔۔۔۔۔۔۔۔ شاید انھی کلمات طیبات کے طفیل سرکار مدینہ ﷺ ہم سے راضی ہو جائیں!

ویسے بھی عرفہ کے دن کی جانے والی ایک نیکی کا ثواب سیکڑوں نیکیوں سے بڑھ کر ہے۔

## سلطان باہو

رات کو کسی کام سے جھنگ جانا ہوا تو ولی کامل حضرت سلطان باہو رحمۃ اللہ علیہ کی درگاہ شریف میں بھی حاضری کا شرف ملا۔

اللہ اللہ، وہ ولی کامل جو اپنے رب کی محبت میں فنا تھے، زندگی بھر اسی پیارے جَلَّ جَلَالُہٗ کا نام جپتے رہے۔

آپ صرف درویش ہی نہیں، ایک متبحر عالم بھی تھے؛ ڈیڑھ سو کے قریب کتابیں آپ نے لکھی ہیں۔

آپ زندگی بھر طالبان حق کو درس توحید دیتے رہے، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔ محبت رسول کے سائے میں!

آپ کے جملہ ملفوظات اللہ و رسول کی معرفت سکھاتے ہیں اور بندے کو حضوری بنا دیتے ہیں:

آپ کا ایک ارشاد مبارک ہے:

"جو شخص اخلاص و یقین سے حضور ﷺ کی خدمت میں یہ عرض کرے:

یا رسول اللہ ﷺ! میری فریاد کو پہنچیے، تو حضور اُسی وقت تشریف لا کر زیارت سے مستفیض فرماتے ہیں؛ اور فریاد کرنے والا آپ کی خاکِ پا کو سُرمہ بناتا ہے۔

لیکن بے اخلاص اور بے یقین، اگر دن رات بھی نوافل ادا کرتا رہے تب بھی حجاب میں ہی رہے گا۔"

(فیضان سلطان باہو، ص25، 26، ط المدینۃ العلمیۃ)

آپ کا وصال سلطان اورنگ زیب عالمگیر رحمہ اللہ کے زمانے میں ہوا تھا۔

وصال کے تقریباً 77 سال بعد سیلاب کی وجہ سے آپ کی قبر مبارک سے، جسد اطہر ظاہر ہوا تو کفن تک سلامت تھا۔

اس کے 158 سال بعد، 1918ء میں پھر سیلاب کی وجہ سے آپ کی قبر مبارک کو نقصان پہنچا تو آپ کا جب جسد مبارک نکالا گیا، بالکل صحیح سلامت تھا۔ اللہ کریم ہمیں آپ رحمہ اللہ کا روحانی فیض عطا فرمائے!

# (20) بیسواں باب: شان و عظمت مصطفی ﷺ

یہ باب حضور اکرم ﷺ کی شان و عظمت پر مشتمل تحریروں سے سجایا گیا ہے۔

## وہ نظر، اللہ اللہ!

جسے زندگی میں لمحہ بھر رسول اللہ ﷺ کی معیت نصیب ہوئی، اس کے لیے شرف صحابیت ثابت ہوگیا؛ البتہ تابعی ہونے کے لیے ضروری ہے کہ طویل عرصے تک صحابی کی مصاحبت اختیار کرے۔ یہی بات اصولیین کے نزدیک صحیح ہے۔

اس فرق کی وجہ منصب نبوت کی عظمت و نور ہے؛ اگر رسول اکرم ﷺ کی نگاہ مبارک کسی اُجڈ اعرابی پر پڑجائے تو وہ بھی حکمت بھری باتیں کرنے لگے!

(انظر: جواہر البحار فی فضائل النبی المختار ﷺ، و من جواہر الامام القسطلانی، ج2، ص22، ط دار الکتب العلمیۃ بیروت، س۱۴۱۹ھ)

## ساری گل سرکار دی اے!

مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

حضرت علی رضی اللہ عنہ سے محبت اور آپ کے ادب کی وجہ، ذاتِ مصطفی کریم ﷺ ہونی چاہیے۔

جو شخص حضور ﷺ کے بغیر، آپ سے ویسے ہی محبت کرے وہ قابلِ تکلم ہی نہیں؛ اس کی غرض دین کو باطل کرنا اور شریعت کو گرانا ہے!

وہ چاہتا ہے کہ آپ ﷺ کی وساطت کے بغیر راستہ اختیار کرے، اور محمد پاک ﷺ کو چھوڑ کر علی رضی اللہ عنہ کی طرف آجائے؛ جب کہ:

وھو عین الکفر و محض الزندقۃ۔ یہ سراسر کفر و زندیقیت ہے—

(دیکھیے: مکتوبات شریف، مکتوب 36، حصہ 6، دفتر 2، صفحہ 85، 86، مکتبہ امدادیہ کانسی روڈ کوئٹہ)

## بارگاہِ ناز

اگر کوئی حافظے کی کمزوری، لاپروائی، جہالت یا زبان پھسلنے کی وجہ سے توہین رسالت کا مرتکب ہوا.....، اگرچہ وہ نہ ایسا عقیدہ رکھتا تھا، نہ ہی اُس کی نیت بری تھی؛ اُس پر بھی حکم کفر ہے، اُسے بہ طور سزا قتل کیا جائے گا۔

(ملخصًا: کتاب الشفاء بتعریف حقوق المصطفی للقاضی عیاض (م 544ھ)، الباب الاول، فیما یختص بالامور الدینیۃ..... الفصل الرابع، حکم من فعل ذلک دون قصد، ص 551، دار الفکر بیروت)

میں نے جب یہ عبارت پڑھی تو میرے رونگٹے کھڑے ہوگئے..... اِتنی نازک بارگاہ!! احبابِ اہل سنت! اگرچہ ہم نے آغوشِ مادر میں "صدقے یا رسول اللہ" کی لوریاں سُنی ہیں اور:

ہم وہ سُنی ہیں جمیلِ قادری مرنے کے بعد

جن کا لاشہ بھی کہے گا الصَّلاۃ و السَّلام

لیکن اللہ تعالیٰ کی خفیہ تدبیر سے ہر وقت ڈرتے رہنا چاہیے!

ہمارے اِرد گرد صلح کلی دَندناتے پھر رہے ہیں، جو بارگاہِ ناز کی نزاکتوں سے ناآشنا ہیں؛ ان کے تئیں عظمتِ رسول کے پاسبان متشدد اور گستاخان معتدل ہیں - ایسے خبیثوں سے اپنا دامن بچا کر رکھیں، کہیں ایسا نہ ہو کہ آپ اِن کی صحبتِ بد کی نحوست سے کسی گستاخانہ کلمے کو ہلکا سمجھ بیٹھیں اور ایمان جیسی بھاری نعمت چلی جائے — اے اللہ! ہم تجھ سے عافیت کا سوال کرتے ہیں!!

## پیاری طبیعت

غزوہ حنین کے موقع پر ایک شخص کا پاؤں، رسول اللہ کے پاؤں مبارک پر آگیا۔ اُس نے بھاری تلے والا جوتا پہن رکھا تھا جس سے پیر مبارک کو بہت تکلیف پہنچی۔ حضور کے ہاتھ میں اس وقت کوڑا تھا، آپ نے اسے کوڑا مار کر کہا:

بسم اللہ، تو نے مجھے تکلیف دی۔

اس شخص کو بہت دکھ ہوا، اور ساری رات اپنے آپ کو ملامت کرتا رہا (کہ میں نے بے احتیاطی میں رسول اللہ ﷺ کو کیوں اذیت دے دی)۔

صبح کے وقت حضور نے اسے بلوایا اور کہا:

کل تُو نے میرا پیر کچلا تھا، جس سے مجھے تکلیف ہوئی، اور میں نے تجھے کوڑا مارا؛ یہ لو اُس کوڑے کے بدلے 80 اونٹ۔ (اور خوش ہو جاؤ)

(ملخصًا: سنن الدارمی، ج1، ص36، ر72، ط دار الحدیث القاھرہ، س1420ھ)

میں قربان! محبوب کریم ﷺ کی کتنی پیاری طبیعت تھی۔

اگر آپ بڑے ہیں تو آپ کا ظرف بھی بڑا ہونا چاہیے۔

بڑا وہ نہیں ہوتا جو بات بات پر چھوٹوں کو جھڑک دے، بڑا وہ ہوتا ہے جو چھوٹوں کی لغزشیں معاف کر دے اور ان کی دل جوئی کرتا رہے۔

معذرت ہمیشہ غلطی پر ہی نہیں کی جاتی، کبھی غلطی دوسرے کی ہو تب بھی ہمیں معذرت کر لینی چاہیے؛ اس سے ہمارا مرتبہ کم نہیں ہو گا بلکہ سامنے والے کے دل میں ہمارا مقام و مرتبہ بڑھ جائے گا۔

دل جیتنے کے لیے زبانی جمع خرچ سے ہی کام نہیں لینا چاہیے، حسبِ توفیق تحفہ بھی پیش کرنا چاہیے۔

اور تحفہ دے کر اسے اپنا بہت بڑا کارنامہ بھی نہیں سمجھنا چاہیے۔

حبیب پاک ﷺ نے اَسی اونٹوں کا تحفہ عطا فرمایا تھا، اگر ایک اونٹ کی قیمت دو لاکھ بھی ہو تو یہ تحفہ ڈیڑھ کروڑ سے زیادہ

مالیت کا بنتا ہے۔
جب اس پیارے ﷺ نے اتنا بڑا تحفہ دے کر نہیں جتلایا تو ہم چھوٹے چھوٹے تحفے دے کر کیوں جتلائیں!!
کسی کو دے دیا تو بس دے دیا، کسی پر احسان کر دیا، تو کر دیا؛ اسے یاد رکھنے کا کیا فائدہ۔۔۔۔۔۔۔۔!
وہ خلوصِ نیت سے ہوا تو بغیر یاد رکھنے کے بھی بارگاہِ الٰہی میں شرفِ قبولیت پالے گا۔

## میں تو محمد ہوں

کافروں نے رسولِ پاک کی بے ادبی کرنے کا یہ طریقہ نکالا کہ نامِ پاک محمد لینے کے بجائے، آپ کو مُذَمَّم کہ کر اول فول بکنے لگے۔
حضور کو معلوم ہوا تو آپ نے صحابہ سے فرمایا:
کیا تم تعجب نہیں کرتے کہ اللہ تعالیٰ نے کس طرح (کُفَّارِ) قریش کے لعن طعن کو مجھ سے پھیر دیا۔۔۔۔۔۔۔وہ مذمم پر لعن طعن کرتے ہیں، جب کہ میں تو محمد ہوں۔ ﷺ ﷺ ﷺ ﷺ
(بخاری شریف، ر3533)
خاکے بنانے والے، خاک ہو جائیں گے لیکن ہمارے آقا محمد پاک ﷺ کا خاکہ کبھی نہیں بنا پائیں گے۔
کفار قریش کی طرح اللہ پاک نے ان کا طعن انھی کی طرف پھیر دیا ہے، یہ دنیا و آخرت میں رسوا رہیں گے۔

## چشمے جاری ہو گئے

ایک دفعہ صحابہ کرام کو پیاس لگی، پانی موجود نہیں تھا، وہ پریشان ہو کر بارگاہِ رسالت میں حاضر ہوئے۔
سرکار ﷺ نے اپنا دستِ مبارک برتن میں رکھا تو چشمے جاری ہو گئے، اور تمام صحابہ نے سیر ہو کر پانی پیا۔
سیدنا جابر نے کسی نے پوچھا تھا:
جب رحمتِ عالم کی مبارک انگلیوں سے پانی نکلا، اس وقت آپ کتنے لوگ تھے؟
آپ نے فرمایا: ہم پندرہ سو تھے، اگر ایک لاکھ بھی ہوتے تو وہ پانی ہمارے لیے کافی ہوتا۔
(سنن الدارمی، ج1، ص16، ر27، ط دار الحدیث القاہرہ، س1420ھ۔ قال المحقق: صحیح)
اے خشک برتنوں میں چشمے جاری کرنے والے حبیب، ہمارے دلوں کی خشک کھیتیوں میں بھی اپنی محبت کے چشمے جاری فرما دیں۔
اے صحابہ کو شکم سیر کرنے والے، ہمیں بھی جرات و حکمت سے سیراب فرما دیں۔
حضور! ہمارے زمانے میں آپ کے گستاخ دندناتے پھر رہے ہیں، ہمیں انھیں کیفرِ کردار تک پہنچانے کی توفیق بخش دیں۔

## کائنات کا دولھا

شیخ فریدالدین عطار سے کسی نے کہا:

تم کہتے ہو ہمارے نبی دنیا جہان کے خزانوں کے مالک ہیں، جب کہ سیرت کی کتابوں میں تو لکھا ہے کہ:

آپ ﷺ کے گھر کئی کئی دن تک چولھا بھی نہیں جلتا تھا۔

آپ نے جواب دیا:

جب دولھا گھوڑی پر بیٹھتا ہے تو لوگ اس پر پیسے لٹاتے ہیں، مال و دولت نچھاور کرتے ہیں، صدقہ اتارتے ہیں؛ جسے دولھا نہیں، براتی اٹھاتے ہیں۔

اللہ پاک نے میرے نبی کو کائنات کا دولھا بنایا، اور دنیا کی نعمتیں آپ کا صدقہ اتار دیا۔

اب آپ اپنے سر سے واری چیزیں کیسے اٹھائیں گے !!

یوں تو سارے نبی محترم ہیں مگر، سرورِ انبیا تیری کیا بات ہے. حق تعالیٰ نے دولھا بنایا تجھے، اور سارا جہاں تیری بارات ہے

## دولھا ایک ہوتا ہے

سلطان الواعظین مولانا ابوالنور محمد بشیر کوٹلوی رحمہ اللہ فرماتے تھے:

بارات میں، باراتی سیکڑوں ہوتے ہیں، لیکن دولھا ایک ہوتا ہے۔

اور وہ ایک ایسا بے مثل ہوتا ہے کہ کوئی بھی باراتی..... اس جیسا ہونے کا دعوی نہیں کر سکتا۔

اگر کوئی ڈُوم ڈھاڑی اس کی مثل بننے کی کوشش کرے اور کہے:

دولھا میں ہوں، تو اُسے جوتے پڑتے ہیں؛ اس کی بات نہیں مانی جاتی۔

میرا نبی کائنات کا دولھا ہے اور یہ سارا جہاں سرکار کا باراتی ہے۔ کوئی بھی فردِ بشر اُس پیارے کی مثل نہیں ہو سکتا۔

قادیانی ڈوم نے جب کہا تھا:

منم محمد و احمد کہ مجتبیٰ باشد

میں محمد و احمد اور مجتبیٰ ہوں

تو اسے ہر جگہ سے جوتے پڑے تھے۔

لوگوں نے کہا چول آدمی تو اس دولھے کی مثل بنتا ہے، جس کی نظیر اللہ نے پیدا ہی نہیں کی۔ ؎

یوں تو سارے نبی محترم ہیں مگر، سرورِ انبیا تیری کیا بات ہے

حق تعالیٰ نے دولھا بنایا تجھے، اور سارا جہاں تیری بارات ہے

## لطیف

سبحان اللہ، حضرت مجدد الف ثانی رحمہ اللہ نے کیسی عمدہ بات ارشاد فرمائی کہ:

"سرورِ عالم ﷺ کا سایہ نہ تھا، کیوں کہ عالمِ شہادت میں ہر شخص کا سایہ اُس سے لطیف تر ہوتا ہے، اور حضور ﷺ سے لطیف تر عالم میں کوئی چیز نہیں ہو سکتی۔"

(البرہان الانظف فی لطافت سید الالطف)

# (21)اکیسواں باب: عقائد و معمولات اہل سنت

اس باب میں اہل سنت و جماعت کے عقائد اور معمولات سے متعلق تحریریں ہیں۔

## امام ربانی اور عظمت صحابہ

امام ربانی مجدد الف ثانی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

صحابہ کرام علیہم الرضوان کو آں سرور ﷺ کی پہلی صُحبت میں ہی وہ کمال نصیب ہو جاتا ہے، جس کا کچھ حصہ اولیاے امت کو (ولایت کے) آخری سے آخری درجے میں بھی بہ مشکل نصیب ہوتا ہے—

اسی لیے (زمانہ کفر میں) حضرت حمزہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو شہید کرنے والے وحشی بن حرب، جو ابتدائے اسلام میں صرف ایک مرتبہ سید اولین و آخرین ﷺ کی صحبت سے مشرف ہوئے.....، خیر التابعین حضرت اویس قرنی رحمہ اللہ سے افضل ہیں!

جو (نعمت) حضرت وحشی رضی اللہ عنہ کو خیر البشر ﷺ کی پہلی صحبت میں نصیب ہوگئی، وہ خصوصیت حضرت اویس قرنی کو (ولایت کے) انتہائی درجے میں بھی میسر نہ آسکی—

(مکتوبات، دفتر اول، حصہ دوم، مکتوب 66، ص 47، مکتبہ امدادیہ کوئٹہ)

یہ مکتوب پڑھ کر آنکھوں سے بے ساختہ آنسو جاری ہوگئے.....اللہ اللہ، اتنا بلند مقام!!

## امام احمد بن حنبل اور مقام صحابہ

تقریباً دس لاکھ حدیثوں کے حافظ.....، بخاری، مسلم اور ابوداود جیسے ائمہ کے استاد.....، امام اہل سنت سیدنا احمد بن حنبل رضی اللہ عنہ نے اپنے شاگرد سے فرمایا: لوگوں کو سیدنا معاویہ کی بابت کیا ہوگیا! (آپ کے متعلق غلط باتیں کرتے ہیں)

ہم اللہ تعالیٰ سے عافیت مانگتے ہیں۔ اے ابوالحسن! جب تم کسی شخص کو رسول اللہ ﷺ کے صحابہ کرام علیہم الرضوان کا برے لفظوں میں تذکرہ کرتے دیکھو، تو سمجھو اس کا اسلام مشکوک ہے!

(الحجۃ فی بیان المحجۃ و شرح عقیدۃ اہل السنۃ، ج 2، ص 371، رقم 367، دار الرایۃ الریاض، 1411ھ۔)

## محبت اہل بیت رفض نہیں

امام اہل سنت سیدنا امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

جب ہم کسی محفل میں حضرت علی، آپ کی اولاد اور سیدہ فاطمہ پاک کا ذکر کرتے ہیں تو کہا جاتا ہے: اے قوم! یہ رافضیوں والی باتیں چھوڑ دو۔

میں حفاظت فرمانے والے (رب) کی طرف سے ایسے لوگوں سے اظہارِ برات کرتا ہوں جو اولادِ فاطمہ کی محبت کو رفض کہتے ہیں۔

(دیوان الامام الشافعی، قافیۃ الیاء، حب علی وسبطیہ وفاطمۃ، ص 183، دار الغد الجدید القاھرہ، 1429ھ)

## حدیث عمار

آج ایک مولانا صاحب سے حدیث عمار پر دل چسپ گفتگو ہوئی، آخر میں کہنے لگے:

آپ کی ساری باتیں بجا، لیکن ایک بات میرے ذہن میں بہت کھٹکتی ہے۔ میں نے پوچھا: کون سی؟

کہتے ہیں: حضرت عبداللہ بن عمرو نے جب حدیث عمار بیان کی تو حضرت عمرو بن عاص نے کہا:

اے معاویہ! آپ نے سنا یہ کیا کہہ رہا ہے؟

اس پر حضرت معاویہ نے کہا:

لا تزال داحضا فی بولك انحن قتلناہ۔ تم ہمیشہ اپنے پیشاب میں پھسلتے ہو، کیا ہم نے عمار کو قتل کیا!!

مولانا کہتے ہیں: حدیث سن کر ایک معزز صحابی کو اتنے سخت جملے کہنا کہاں کا انصاف ہے!

میں نے عرض کی: حضرت معاویہ سے یہ جملے سن کر نہ صحابی نے نوٹس لیا اور نہ ان کے بیٹے نے، لیکن آپ چیف جسٹس بن بیٹھے! اچھا مجھے یہ بتاؤ کہ اگر حدیث سن کر سیدنا علی پاک نے بھی اسی سے ملتے جلتے جملے کہے ہوں، تو آپ کی کیا رائے ہوگی؟ کہتے ہیں: حضرت علی نے کیا کہا؟

میں نے عرض کی: حضرت عبداللہ بن مسعود سے ایک مسئلہ پوچھا گیا جس پر آپ نے پورا مہینہ غور وفکر کرنے کے بعد فتوی دیا اور کہا: میں نے اس بارے میں رسول اللہ ﷺ سے کچھ نہیں سنا، یہ میری ذاتی رائے ہے۔

اسی مجمع میں معزز صحابی سیدنا مَعقِل بن سِنان بیٹھے تھے، وہ کہنے لگے:

میں گواہی دیتا ہوں کہ رسول اللہ ﷺ نے بِرْوَع بنت واشِق کے متعلق یہی فیصلہ کیا تھا (جو حضرت عبداللہ بن مسعود نے کیا ہے)۔

سیدنا ابن مسعود یہ حدیث سن کر اتنے خوش ہوئے کہ پہلے کبھی اتنے مسرور نہیں دیکھے گئے تھے۔

لیکن.....

حضرت علی پاک نے حضرت معقل سے کہا:

ما نصنع بقول اعرابی بوال علی عقبیہ۔

اپنی ایڑیوں پر پیشاب کرنے والے دیہاتی کی بات پر ہم کان نہیں دھرتے!!

میں نے مولانا سے کہا: آپ کو سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ کی بات کھٹکتی ہے تو کسی کو سیدنا علی رضی اللہ عنہ کی کھٹکے گی، لیکن ہمیں کسی کی نہیں کھٹکتی!! یہ دونوں ہمارے آقا، اور ہم ان کے غلام ـــ! غلام کا فرض آقا کے متعلق اچھی بات کہنا ہے، عقلِ خام کے گھوڑے دوڑانا نہیں۔ ہمیں امام اہل سنت سیدنا احمد بن حنبل کا سبق یاد ہے۔

جب آپ سے کسی نے پوچھا تھا: حضرت! آپ سیدنا علی و معاویہ کے متعلق کیا کہتے ہیں؟
تو آپ نے فرمایا تھا: اچھی بات کے سوا کچھ نہیں کہتا!
(السنۃ، ذکر صفین والجمل.....ج 1، ص 362، الفاروق الحدیثۃ.....قاہرہ)

## تکلیف دِہ خواب

فقہ حنفی کے بہت بڑے امام، حضرت شمس الائمہ محمد بن احمد سرخسی رحمۃ اللہ علیہ (متوفی 483ھ) کہتے ہیں:
ابوبکر محمد بن فضل رحمہ اللہ پہلے پہل سیدنا معاویہ رضی اللہ عنہ کی عیب جوئی کرتے تھے۔
انھوں نے خواب میں دیکھا کہ میری زبان سے بال نکل کر پاؤں تک آگیا ہے جسے روند رہا ہوں، جس کی وجہ سے تکلیف میں مبتلا ہوں اور زبان سے خون جاری ہے۔ جب معبر (خواب کی تعبیر بتانے والے عالم) سے تعبیر پوچھی تو انھوں نے کہا:
"آپ بزرگ صحابہ میں سے کسی کی عیب جوئی کرتے ہیں، اس سے باز آجائیں یہ اسی کا وبال ہے۔"
(کتاب المبسوط للامام السرخسی، کتاب الاکراہ، ج 8، جز 24، ص 48، داراحیاء التراث العربی بیروت)

## سازوالی قوالی

سلسلہ چشتیہ کے عظیم بزرگ، حضرت خواجہ محمد بن احمد (نظام الدین اولیا) قدس سرہ فرماتے ہیں:
سماع نہ مطلقاً حلال ہے، نہ مطلقاً حرام۔ پوچھا گیا حضور! سماع کیا ہے؟
ارشاد فرمایا: سننے والا کون ہے؟ (اس کے مطابق حکم بیان ہوگا) سماع تو ایک موزوں آواز کا نام ہے، یہ کیوں حرام ہوگا!
"وسماع مزامیر حرام ست" ہاں جو سماع (قوالی) مزامیر کے ساتھ ہو وہ حرام ہے۔
(اخبار الاخیار، ص 59، نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور، 2009ء)

ایک دفعہ خواجہ صاحب کے بعض مریدوں نے ساز کے ساتھ قوالی سنی اور رقص کیا۔ جب آپ کو معلوم ہوا تو آپ نے اسے اچھا نہ سمجھا۔
کسی نے کہا حضرت! جب وہ مزامیر کے ساتھ قوالی سن کر باہر آئے تو انھیں کہا گیا:
تم نے یہ کیا کیا، وہاں تو مزامیر تھے؛ تم نے نہ صرف وہاں قوالی سنی بلکہ رقص بھی کیا!!
انھوں نے جواب دیا: ہم سماع میں اس قدر مستغرق ہوئے کہ ہمیں معلوم تک نہ ہوا کہ یہاں مزامیر ہے یا نہیں۔
خواجہ صاحب فرمانے لگے: اس جواب کی کوئی حیثیت نہیں!
(ملخصاً: فوائد الفواد، ج پنجم، ص 140، مطبوعہ دہلی)

## قابلِ زیارت سُنی

سیدنا عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ کہتے ہیں: قرآن پاک کی زیارت عبادت ہے اور اُس سُنی کو دیکھنا (بھی) عبادت ہے جو سنت کی طرف بلاتا اور بدعت سے منع کرتا ہے۔

(الابانۃ، باب ما امر بہ من التمسک بالسنۃ والجماعۃ.....ج 1، ص 103، رقم 214، دارالحدیث قاہرہ، 1427ھ)

گستاخانہ عبارات بہت بُری بدعت ہیں، جب کہ رسول اللہ کی محبت و ادب بڑی اعلیٰ سنت۔

جو سُنی اس بدعت سے منع کرتا اور سنت کی طرف بلاتا ہے، وہ بھی قابل زیارت ہے۔

اللہ توفیق دے تو ایسے باخدا کی زیارت کرنی چاہیے!

## اہل سنت

امام اہل سنت، سیدنا احمد بن حنبل نوراللہ مرقدہ فرماتے ہیں:

فساق اهل السنة اولياء الله، وزهاد اهل البدعة اعداء الله

سُنیوں کے فاسق اللہ کے ولی، اور بدعتیوں کے زاہد بھی اللہ کے دشمن۔

(طبقات الحنابلۃ، ابن ابی یعلیٰ (متوفی 526ھ)، باب العین، ذکر من اسمہ عبداللہ، عبداللہ بن امامنا احمد ابو عبدالرحمٰن، ج 1، ص 184، دارالمعرفۃ بیروت)

اللہ کریم ہمیں زندگی بھر سُنی رکھے، اور مسلکِ حق اہل سنت و جماعت میں ہمارا خاتمہ فرمائے!!

## سبحان اللہ

حضرت مجدد الف ثانی رحمہ اللہ کے شیخ المشائخ، خواجہ عبیداللہ احرار رضی اللہ عنہ صاحب کرامت ولی تھے۔ آپ کے ایک فرمان مبارک کا خلاصہ: "اگر کوئی ہم میں ساری خوبیاں جمع کردے مگر یہ نہ کہے کہ (خواجہ صاحب) عقیدے کے اعتبار سے سُنی ہیں؛ تو ہم سمجھیں گے اُس نے سوائے خرابی کے کچھ نہیں کہا۔

اور اگر ساری خرابیاں ہم میں جمع کردے مگر ہمیں سُنی کہہ دے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔، تو پھر ہمیں کوئی خوف نہیں"

(ملخصا: مکتوبات امام ربانی، دفتر اول، حصہ سوم، مکتوب 193، ص 81)

اللہ کریم ہمیں بھی ایسی ہی پاکیزہ فکر نصیب فرمائے!!

میں ہوں سُنی ، رہوں سُنی ، مروں سُنی مدینے میں
بقیعِ پاک میں بن جائے تُربت یارسول اللہ ﷺ

## میلاد شریف کا لنگر

معزز صحابی حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں:

"اعلانِ نبوت کے بعد رسول اللہ ﷺ نے اپنا عقیقہ کیا تھا"

امام جلال الدین سیوطی رحمہ اللہ اِس کی وضاحت کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

"رسول اللہ ﷺ کا عقیقہ تو آپ کی پیدائش کے ساتویں روز، آپ کے دادا حضرت عبدالمطلب کر چکے تھے، عقیقہ دوبارہ نہیں ہوتا۔ نبی مکرم ﷺ کا یہ عمل مبارک دراصل اِس شکرانے میں تھا کہ اللہ نے آپ کو رحمۃ للعالمین بنا کر بھیجا ہے (یعنی اپنی ولادت کے شکرانے میں آپ ﷺ نے لوگوں کو گوشت کھلایا)..... ، اِس لیے ہم پر مستحب ہے کہ ہم بھی اجتماعِ میلاد میں لوگوں کو کھانا کھلا کر اظہارِ مسرت کریں اور اللہ تعالیٰ کا شکر ادا کریں۔ (ملتقطاً: الحاوی للفتاوی، امام سیوطی م 911ھ، ص206، دارالکتاب العربی بیروت، ط1425ھ)

امام سیوطی جیسے متبحر عالم و حافظ الحدیث نے اِس اصل سے استنباط کر کے ہمیں ترغیب دلائی ہے کہ ہم بھی رسولِ محتشم ﷺ کی ولادتِ باسعادت کی خوشی میں لوگوں میں لنگر تقسیم کریں—

آج بارہ ربیع الاول شریف ہے، اور صحیح حدیث کے مطابق یہی دن ولادت شریف کا ہے؛ میں نیت کرتا ہوں، آپ بھی کریں کہ آج سرکارِ دوعالم ﷺ کی ولادت کی خوشی میں مسلمانوں کو کھانا وغیرہ کھلائیں گے، ان شاء اللہ!

اللہ تعالیٰ ہمیں اس کارِ خیر میں بھرپور حصہ لینے کی توفیق عطا فرمائے!

## سیدنا امام احمد بن حنبل کی نصیحت

"حضرت علی کو حضرت ابوبکر (رضی اللہ عنہما) سے افضل سمجھنے والا بُرا آدمی ہے؛ نہ اُس کے ساتھ تعلق رکھنا، نہ اُس کے پاس بیٹھنا!"

(انظر: السنۃ للخلال، ج1، ص294)

امام احمد بن حنبل رحمہ اللہ، امام بخاری و مسلم رحمہما اللہ سے بھی بڑے امام ہیں؛ بلکہ پاکستانی و انگلستانی فرقہ تفضیلیہ کے بزرگ، پیر عبدالقادر شاہ صاحب ٹُنچ بھاٹوی کہتے ہیں:

"لاکھ میں سے ایک آدمی ایسا نہیں ملے گا جو کہے کہ اگر ایک لاکھ بخاری ملا یا جائے تو ایک احمد حنبل بنتا ہے"

(کذا: ویڈیو خطاب)

ہمیں غور کرنا چاہیے کہ اہل سنت کے اتنے عظیم امام جن لوگوں کو بُرا فرما رہے ہیں اور اُن سے دُور رہنے کی تاکید کر رہے ہیں، کیا ہم واقعی اُن لوگوں سے دور رہتے ہیں؟ اگر دور رہتے ہیں تو شکر کریں، ورنہ فکر کریں!! حضرت معاویہ افضل ہیں یا عمر بن عبدالعزیز؟

حضرت بِشر حافی کے استاد، امام معافیٰ بن عمران رحمہ اللہ بہت بڑے عالم، محدث اور باکرامت ولی تھے۔
امام سیوطی کہتے ہیں: ایک شخص نے تدفین کے بعد اِن کی قبر پر بہ طورِ تلقین کہا: لا الہ الا اللہ، تو انھوں نے بھی کہنا شروع کر دیا: لا الہ الا اللہ!
آپ رحمۃ اللہ علیہ سے پوچھا گیا: حضرت معاویہ افضل ہیں یا عمر بن عبد العزیز؟
آپ نے جواب دیا: حضرت معاویہ رضی اللہ عنہ عمر بن عبد العزیز رحمۃ اللہ علیہ جیسے "چھے سو" بزرگوں سے (بھی) افضل ہیں۔
(السنۃ، امام ابوبکر خلال، ج 1، ص 341)
اللہ کریم ہمیں آج کل کے رفض زدہ جعلی پیروں اور مولویوں کے بجائے، ایسے سچے اولیا و علما جیسے عقائد رکھنے کی توفیق بخشے!

## بریلوی شدت پسند!!

اگر خدا لگتی کہوں تو بریلوی انتہائی محتاط اور بہت زیادہ نرم گوشہ رکھنے والے ہیں۔
یہ خواہ مخواہ کسی کو کافر، مشرک، بدعتی، گمراہ نہیں کہتے اور نہ ہی بے جا کسی مسلمان کے فعل کو ناجائز و حرام اور بدعت کہتے ہیں۔
بریلوی صرف ایک مسئلے میں شدت کرتے ہیں اور وہ مسئلہ ناموس رسالت ہے۔
بریلوی بہت کچھ برداشت کر لینے کے باوجود، اپنے آقا و مولا ﷺ کی شان میں ہلکا سا بول بھی برداشت نہیں کر سکتے!!

## گیارھویں شریف

ہمارے گاؤں میں ایک غریب گھرانہ آباد تھا، جو حضور غوث پاک کے سچے عقیدت مندوں میں سے تھا۔
انھوں نے اپنی غربت دور کرنے کے لیے غوث پاک کو وسیلہ بنایا، اور گھر میں پابندی سے گیارھویں شریف کا اہتمام شروع کر دیا۔
اُن کی حُسنِ نیت کی برکت سے اللہ کریم نے اُن پر فراخی کر دی۔
وہ ابتداءً تھوڑی سی کھیر پکاتے تھے اور ختم شریف دِلا کر تقسیم کر دیتے تھے، پھر آہستہ آہستہ اُن کے گھر دیگیں پکنے لگیں اور مخلوق خدا سیر ہو کر کھانے لگی۔ لوگوں کو کھانا کھلانے کا یہ عمل بہت پیارا تھا، کیوں کہ ہمارے پیارے نبی ﷺ نے کھانا کھلانے کو اسلام کا افضل ترین عمل قرار دیا تھا۔
(دیکھیے: صحیح البخاری، رقم 6236)
خوش عقیدہ مسلمان صدیوں سے گیارھویں شریف دلاتے آرہے ہیں جو کہ ایک مُستحسن عمل ہے۔

گیارھویں شریف یہ ہے کہ چاند کی گیارہ تاریخ یا جس تاریخ کو بھی آپ چاہیں کچھ کھانے وغیرہ کا اہتمام کریں اور اسے اللہ کی رضا کے لیے مسلمانوں میں تقسیم کر کے دعا کریں:

اے مالک جَلَّ جَلَالُہٗ! اس نیک کام کا ثواب ہمارے آقا غوث پاک کو عطا فرمادے اور ان کے طفیل ہم پر مزید کرم فرما۔

## شَطْحِیَّات

بعض صُوفیہ کرام سے جو ایسی باتیں صادر ہوتی ہیں جن کا ظاہر خلافِ شرع ہوتا ہے، انھیں تصوف کی زبان میں شَطْحِیَّات کہتے ہیں۔

دو دن پہلے محمد علی ابن طفیل ازہری نے حضور غوث پاک کے فرمان: "قدمی ھذہ علی رقبۃ کل ولی اللہ" کے متعلق شطحیات کا قول نقل کیا، جو کہ حضور غوث پاک کے سچے مریدوں کے لیے انتہائی دل آزاری کا سبب بنا۔

پیر مہر علی شاہ صاحب رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے تھے:

(سیدنا غوث اعظم) کا سچا اور پاک فرمان۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔: یہ قدم میرا ہر ولی کی گردن پر ہے، از قبیل شطحیات نہیں؛ جیسا کہ کم ظرف لوگ، کم حوصلگی کی وجہ سے ایسے دعاوی کیا کرتے ہیں۔

(فتاوی مہریہ، ص45، ر20، ط گولڑا شریف، س1418ھ)

کم ظرف ابن طفیل نے بھی یوں ہی کیا اور بغیر تحقیقِ انیق قولِ شطح نقل کر کے لوگوں کو گمراہ کرنے کی کوشش کی، جیسے خارجی لوگ بعض حنابلہ کے اقوال لے کر یزید کی حمایت کرتے ہیں۔

دکھ کی بات یہ ہے کہ بعض سمجھدار بھی اس کے نقل کردہ قول تلے دب کر، تشکیک کا شکار ہو گئے۔

او اللہ کے بندو! غوث اعظم کے جس قول کے برحق ہونے پر اولیاے کاملین اور علماے ربانیین صدیوں سے متفق ہیں، آپ اس کے متعلق کیوں تشکیک میں مبتلا ہو گئے؟

کیا آپ کو معلوم نہیں: وسیع الظرف، کم ظرفوں کی باتوں سے کبھی متاثر نہیں ہوا کرتے!!

حضور غوث پاک کے فرمانِ برحق: قَدَمِی ھٰذِہٖ عَلٰی رَقَبَۃِ کُلِّ وَلِیِّ اللہ، میرا یہ قدم ہر ولی کی گردن پر ہے، کی تحقیق و تفصیل اور اس پر کیے گئے جملہ اعتراضات کے جوابات پر مشتمل کتاب: قدم الشیخ عبد القادر ملاحظہ فرمائیں۔

## رئیس المتکلّمین

رئیس المتکلّمین مولانا نقی علی خان رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ لکھتے ہیں:

"اہل سنت کی خوبیوں میں سے ہے کہ کسی پر لعنت نہیں کرتے، اور کسی کو کافر نہیں کہتے۔"

(احسن الوعاء لآداب الدعاء، مع شرح: ذیل المدعاء لاحسن الوعاء، ص198، ط مکتبۃ المدینہ کراچی)

اللہ کریم معاف فرمائے، اگر آج سے پہلے کسی پر بے جا لعنت کر دی ہے تو اس سے توبہ!!
انشاءاللہ تعالیٰ آئندہ ایسا نہیں ہو گا۔
اور اللہ کریم اپنے حبیب پاک ﷺ کے طفیل مسلمانوں کی تکفیر سے بھی محفوظ رکھے، بے شک یہ بلائے عظیم ہے۔

## علیہ السلام

ایک دوست نے آج مسئلہ پوچھا:
حضرت علی اور امام حسین، حسین کے نام کے ساتھ علیہ السلام لکھنا کیسا ہے؟
میں نے کہا: اگر رسول اللہ ﷺ کی متابعت میں لکھیں، تو علیہ و علیہم الصلاۃ والسلام بھی لکھ سکتے ہیں۔
لیکن تنہا علیہ السلام کہنے سے محقق علما نے منع فرمایا ہے، رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہنا چاہیے۔
مجھے کہتے ہیں:
تو اس کا مطلب یہ ہوا کہ کسی کو نبی علیہ السلام کی متابعت کے بغیر "السلام علیکم" بھی نہیں کہنا چاہیے، کیوں کہ السلام علیکم کا مطلب بھی "علیہ السلام" ہے۔ میں نے عرض کی:
اگر السلام علیکم کا یہی مطلب ہے جو آپ بیان کر رہے ہیں تو پھر ہر زندہ، مردہ مسلمان کو علیہ السلام کہا کریں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ آپ ایسا کیوں نہیں کرتے!!
پھر السلام علیکم کے آگے و "رحمۃ اللہ" بھی آتا ہے۔
اس لیے آج کے بعد میں آپ کو غلام فرید رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کہا کروں گا، اور آپ بھی ہر زندہ کو یہی کہا کریں۔
کہتے ہیں: بعض علما و محدثین بھی امام حسین علیہ السلام کہتے رہے ہیں۔
میں نے عرض کی:
شہزادۂ رسول، سیدنا و مولانا حسین پاک پر لاکھوں، کروڑوں، اربوں سلام؛ لیکن آپ کو معلوم ہونا چاہیے کہ:
بعض علما و محدثین نے صحابہ کرام کے ناموں کے ساتھ بھی "رحمہ اللہ" لکھا ہے، بلکہ خود سرکار دو عالم ﷺ نے "رحم اللہ ابا بکر" فرمایا ہے۔
تو پھر آپ صحابہ کرام کے ناموں کے ساتھ رحمہ اللہ کیوں نہیں لکھتے؟
کہتے ہیں: نہیں، علیہ السلام اہل بیت کا خاصہ ہے۔
میں نے کہا: اگر خاصہ ہے تو تمام اہل بیت کا خاصہ ہونا چاہیے!
پھر تو آپ کو کہنا چاہیے: جعفر علیہ السلام، عقیل علیہ السلام، حسن علیہ السلام، حسین علیہ السلام، مُحَسِّن علیہ السلام، علی بن ابوالعاص علیہ السلام، سلمان فارسی علیہ السلام۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

اب وہ کچھ ٹھنڈے ہوئے، تومیں نے عرض کی:

میرے بھائی! اعلیٰ حضرت اور امام نووی رحمہما اللہ سے بڑھ کر آپ کی تحقیق نہیں ہے۔

بہتر ہے ان کے حسبِ تحقیق موقف اپنائیں، اسی میں سلامتی اور عافیت ہے۔

ولی اللہ کے نام کے ساتھ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ لکھیں، صحابیِ رسول کے نام کے ساتھ رضی اللہ تعالیٰ عنہ، اور اللہ کے نبی کے نام ساتھ علیہ السلام لکھیں۔ باقی، خوش رہیں اور خوش رکھیں!

اچھا پھر: میرے پیارے غلام فرید "علیہ السلام ورحمۃ اللہ وبرکاتہ"

## سَبّ

ابھی ایک حدیث شریف پڑھی کہ:

غزوہ خندق کے موقع پر سیدنا عمر پاک نے کافروں پر سَبّ کیا (یعنی انھیں برا بھلا کہا)۔

اس کی شرح میں علامہ عینی رحمہ اللہ نے بڑی پیاری بات کی۔ کہتے ہیں:

"اِس سَبّ سے مراد فحش گالیاں نہیں، اس لیے کہ یہی سیدنا عمر رضی اللہ عنہ کے منصب کے لائق ہے۔"

سبحان اللہ! یہ ہوتا ہے ادب۔-------------------------

سَبّ کا معنیٰ اگرچہ گالی بھی ہے، لیکن جب اس کی نسبت صحابیِ رسول کی طرف ہوگی تو اُن کے منصب کا بھی لحاظ رکھا جائے گا!

جو کہا جاتا ہے کہ بعض صحابہ کرام نے بعض صحابہ کرام پر سَبّ کیا، تو اس کا مطلب صرف اتنا ہے کہ:

انھوں نے ایک دوسرے کی سیاسی پالیسیوں پر تنقید کی، یا ایک دوسرے سے اختلاف کیا؛ اور یہی ان کے منصب کے لائق ہے کیوں کہ وہ رسول اللہ ﷺ کے تربیت یافتہ تھے۔

## خاندانی لوگ

ہمارے بزرگ جب کسی اہم کام کے لیے گھر سے نکلتے، تو کہتے:

"اللہ کرے کوئی بندے دا پُتر مَتھے لگے" اور یہ بھی کہتے تھے کہ:

دعا کرو کسی کو گھٹیا دشمن بھی نہ ملے، دشمن بھی خاندانی ہونا چاہیے۔ ؎

شکست کھائے ذرا بھی تو پانی پانی ہو
میں چاہتا ہوں کہ دشمن بھی خاندانی ہو

یہ بھی کہتے کہ:

عالم اور امام مسجد خاندانی ہونے چاہییں، جونڈر، بے باک اور غیرت مند ہوں۔
بزرگوں کی یہ باتیں کسی وقت یاد آتی ہیں، اور بہت یاد آتی ہیں!! آج ایک تبرائی رافضی کی تقریر سُنی جسے لوگ بڑا معتدل سمجھتے ہیں، وہ کہہ رہا تھا:
خاندانی زمین دار ہوں، اگر وزیر اعظم سے ملا ہوں تو کسی لالچ میں نہیں، اُس کے سامنے اپنی قوم (روافض) کے اٹھارہ مسئلے رکھے ہیں۔
اس کے کہنے کا مطلب تھا:
میں اپنی قوم سے دھوکا نہیں کر سکتا؛ جہاں جاؤں گا اپنی قوم (روافض) سے وفا نبھاؤں گا۔
اپنوں سے دھوکا، گھٹیا اور رذیل لوگ کرتے ہیں، خاندانی لوگ نہیں!
جو مذہبی پیشوا چند ٹکوں کی خاطر رافضیوں، ہندوؤں، بدمذہبوں کی گود میں جا بیٹھتے ہیں اور اپنے ساتھ سُنیوں کو بھی "نانک شاہی" بننے کی دعوت دیتے ہیں، وہ گھٹیا اور رذیل قسم کے لوگ تو ہو سکتے ہیں، خاندانی نہیں!
خاندانی لوگ تو مر جاتے ہیں، اپنی قوم سے دھوکا نہیں کرتے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اور قوم بھی اگر "اہل سنت و جماعت" ہو، تو اُس پر تو ہزار جانیں فدا کر دینی چاہییں!!
مسلک اہل سنت کے وفادار تمام سُنی علمائے کرام اور پیرانِ عظام، ہمارے سروں کے تاج ہیں؛ اللہ کریم ان کا سایہ ہم پر دراز فرمائے!
رہے، تعفن زدہ نانک شاہی؛ تو رب تعالیٰ ان کی سرانڈ سے بھی ہمیں محفوظ رکھے۔

## فسقِ یزید

صحابیِ رسول سیدنا عبداللہ بن مُطیع رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے تھے:
"یزید شرابی، نماز کا تارک، اور کتابِ الٰہی کے حکم سے سرکشی کرنے والا ہے۔"
اس روایت کی سند کو ہمارے زمانے کے یزیدی صحیح تسلیم کرتے ہیں، اور اِسے صحیح نہ کہنے والوں کا رد کرتے ہیں۔
(دیکھیے: یزید بن معاویہ پر الزامات کا تحقیقی جائزہ، ص 707۔۔۔۔۔۔۔۔)

لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اس لیے صحیح تسلیم نہیں کرتے کہ صحابیِ رسول نے یزید کا فسق بیان کیا ہے، بلکہ وہ اس روایت کے اگلے حصہ کو لیتے ہیں جس میں محمد بن حنفیہ تابعی نے یزید کے فاسق ہونے کی نفی کی ہے۔
لیکن یہ یاد رہنا چاہیے کہ عبداللہ بن مطیع صحابیِ رسول ہیں، اِنھیں گھٹی بھی رسول پاک ﷺ نے دی تھی۔
گویا ان کے پیٹ میں جو سب سے پہلی غذا پہنچی وہ لعابِ رسول تھا۔
اور محمد بن حنفیہ رحمہ اللہ تابعی ہیں۔

تابعی ایسے جلیل القدر صحابی کے رتبے تک نہیں پہنچ سکتا، نہ اس کا قول صحابی کے قول پر فائق ہو سکتا ہے۔
حضرت مجدد الف ثانی رحمہ اللہ نے تو صحابی کی خطا کو بھی رسول اللہ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے شرفِ صحبت کی وجہ سے تابعی کے صواب سے بہتر قرار دیا ہے۔
(دیکھیے: مکتوبات، دفتر اول، حصہ دوم، مکتوب 120، ص 123، مکتبہ امدادیہ کوئٹہ)
اس لیے ہم صحابی کی بات کو تابعی کی بات پر ترجیح دیں گے اور یزید کو فاسق و فاجر ہی سمجھیں گے۔
شیخ الاسلام امام احمد رضا نور اللہ مرقدہ نے یزید کے متعلق اِن چند سطروں میں، سیکڑوں کتابوں کا خلاصہ بیان کر دیا۔
میں نے ایک ایک حرف پر غور کیا تو اس سے بہتر اور محتاط قول کوئی نظر نہیں آیا۔
فرماتے ہیں:
یزید کے فسق و فجور سے انکار کرنا، اور امامِ مظلوم (امام حسین رضی اللہ عنہ) پر الزام رکھنا، "ضروریاتِ مذہبِ اہل سنت" کے خلاف ہے؛ اور ضَلالت و بدمذہبی صاف ہے۔
بلکہ انصافاً یہ اُس قلب سے متصور نہیں جس میں محبت سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا شَمَّہ (یعنی تھوڑا سا بھی حصہ) ہو۔
(فتاوی رضویہ ج 14، ص 529)

کچھ عرصہ پہلے ایک صاحب نے کہا تھا:

## یزید نے امام حسین کو شہید نہیں کیا

یزید نے امام حسین کو شہید نہیں کیا، انھیں شہید کرنے والے اور لوگ تھے؛ اس لیے یزید کو برا کہنے کے بجائے انھیں برا کہنا چاہیے۔
میں نے جواب دیا تھا:
جب حضرت ممتاز رحمہ اللہ شہید ہوئے تھے تو آپ نواز شریف کو بڑی بڑی گالیاں دیتے تھے۔
کیا انھیں نواز شریف نے پھانسی چڑھایا تھا؟ بالکل نہیں!! پھانسی تو ججوں نے چڑھایا تھا۔
نواز شریف کا قصور یہ تھا کہ بادشاہ ہوتے ہوئے وہ پھانسی رکوا نہ سکا۔

اب اگر اِسی زاویے سے دیکھا جائے تو کیا یزید قصوروار نہیں بنتا؟؟ وہ لشکر روک سکتا تھا، اس نے نہیں روکا۔
وہ قاتلین کو سزا دے سکتا تھا، لیکن اس نے نہیں دی۔ تو کیا وہ بے قصور ہے!!
آج اگر مہنگائی بڑھتی ہے تو ذمے دار وزیر اعظم، ڈالر کی قیمت میں اضافہ ہوتا ہے تو ذمے دار وزیر اعظم، پٹرول مہنگا ہوتا ہے تو ذمے دار وزیر اعظم، ملک میں بدامنی اور افراتفری پھیلیتی ہے تو ذمے دار وزیر اعظم۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔

لیکن شہزادۂ رسول ظالمانہ طریقے سے شہید کر دیے جاتے ہیں پھر بھی یزید ذمے دار نہیں۔
کیا عجیب منطق ہے!!
آپ رسولِ پاک کے امتی ہیں، اور سیدنا حسین پاک رسول اللہ ﷺ کے نواسے ہیں۔
آپ یزید کی صفائیاں دینے کے بجائے نواسۂ رسول سے محبت کریں، اُن کی شانیں بیان کریں، اُن کا ذکرِ خیر کریں تاکہ آپ سے، آپ کے نبی ﷺ خوش ہوں۔

حُسین فَرحتِ اہلِ وفا ، دَمِ اِیفا
یزید ماتمِ اہلِ ریا ، پَسِ بیداد
ہزار ہا صَلَوَاتُ و ہزار تَسْلِیمَات
برُوحِ سیِّدِ کَوْنَین وَآلِہِ الاَمجاد

## مزارات

پاکستان میں کچھ مزارات ایسے ہیں جو انبیا و صحابہ سے منسوب ہیں، جیسے:
حضرت طانوح، حضرت امنون، حضرت یوشع بن نون، حضرت صفدان، حضرت موسیٰ حجازی، حضرت جعفر بن زیاد، حضرت مرطوش وغیرہ۔
ان مزارات کے متعلق، مَیں سکوت (خاموشی) کا قائل ہوں۔
کیوں کہ جو تاریخی کتابیں ہماری دسترس میں ہیں اُن میں اِن کا کوئی تذکرہ نہیں ملتا۔
بعض اہلِ کشف نے انھیں تسلیم کیا ہے، اور اِس سے انکار نہیں کیا جاسکتا کہ کشف ایسا علم ہے جس سے تہِ زمین کے معاملات دیکھے جاسکتے ہیں۔
اور اگر صاحبِ کشف صحیح العقیدہ عالم اور نیک ہو تو اُس کی بات تسلیم بھی کر لینی چاہیے۔
لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
چوں کہ ہماری اُن اہلِ کشف سے نہ ملاقات ہوئی، نہ اُن کے کشف کا تجربہ ہوا، نہ ہم نے اُسے شریعت کی میزان پر پرکھا؛ اس لیے ہم پر اِس کا اتباع لازم نہیں۔
بس عوام و خواص میں معروف ہونے کی بِنا پر شَد و مَد سے انکار بھی روا نہیں سمجھتے، اس لیے سکوت کو اَحوَط سمجھتے ہیں۔

## شیعیت کے داغ

گجرات کے ایک نامی گرامی خطیب ختمِ قل کے موقع پر ایصالِ ثواب کا بیان کر رہے تھے، کہ دورانِ تقریر شیعہ

مذہب سے تعلق رکھنے والا ایک شخص آگیا۔
اُنھوں نے اُسے دیکھتے ہی اپنی تقریر کا رُخ حضرت علی کی طرف پھیر دیا اور خوب گلا پھاڑ پھاڑ کر ذکرِ علی کرنے لگے۔
اُس شیعہ نے کھڑے ہو کر اُن پر تقریباً پانچ دس ہزار پھینکا۔
اِس پر خطیبِ محترم کہنے لگے:
"مجھے معلوم ہے شاہ صاحب کے پاس تھے ہی اتنے پیسے، اگر اس سے زیادہ ہوتے تو مولا علی کے نام پر وہ بھی وار دیتے۔"

استغفر اللہ، ثم استغفر اللہ!

یہ کیا ہے؟؟ یہ شیعیت کے وہ بدنما داغ ہیں، جو کئی سُنی دلوں اور دامنوں پر نظر آتے ہیں۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!
حضرت علی رضی اللہ عنہ کا ذکرِ خیر تو عبادت تھا اور عبادت صرف اللہ کے لیے ہونی چاہیے تھی، کسی اور کے لیے نہیں!
اگر عبادت دکھاوے کے لیے کی جائے تو وہ عبادت رہتی ہی نہیں، شرک اصغر بن جاتا ہے۔
لیکن خطیب صاحب نے یہ بات نہ سمجھی اور " پاک ذکر " کو ناپاک نیت کی بھینٹ چڑھا دیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔
اللہ پاک انھیں ہدایت عطا فرمائے!
ذکرِ اہل بیت ہو یا ذِکر صحابہ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ ہمیں نام و نمود، تَصنُّع بناوٹ اور ریا و سمع کی خاطر نہیں، اللہ و رسول کی رضا کے لیے کرنا چاہیے۔
یہ نہ ہو کہ رافضیوں کی دیکھا دیکھی:
جشن مولود کعبہ، عید غدیر، عشرہ محرم تو پورے تُزک و احتشام سے منایا جائے، لیکن۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ امام مظلوم سیدنا عثمان غنی یا شہزادہ رسول سیدنا امام حسن مجتبیٰ کا یوم آئے تو نہ جلسے جلوس ہوں، نہ ریلیاں نکلیں، نہ لنگر پکیں اور نہ ہی سبیلیں لگیں۔

## دشمنِ صحابہ سے نفرت

محدث اعظم پاکستان علامہ ابوالفضل سردار احمد رحمہ اللہ کے پاس ایک دفعہ ڈی سی ملاقات کے لیے آیا۔
اُس نے مصافحہ کرنا چاہا تو آپ نے ہاتھ پیچھے کر لیا اور فرمایا:
میں نے سُنا ہے آپ کا تعلق ایسے لوگوں سے ہے جو صحابہ کرام کی توہین کرتے ہیں۔
سردار احمد ایسے کسی شخص سے ہاتھ نہیں ملاتا جس کے دل میں نبی پاک ﷺ کے صحابہ کا بُغض ہو۔
وہ شرمندہ ہوا اور آپ سے باتیں کرنے لگا۔
لیکن جب آپ کی کچھ باتیں سنیں تو رو پڑا، اور کہنے لگا:

مجھے توبہ کروادیجیے!

آپ یہ سن کر بہت خوش ہوئے، اسے توبہ کروائی اور کھڑے ہو کر اسے سینے سے لگالیا۔

اِسی طرح کچھ لوگ آپ رحمہ اللہ کو اپنے ہاں جلسے میں صدارت کی دعوت دینے آئے، تو آپ نے فرمایا:

میں شرکت نہیں کروں گا، کیوں کہ اس میں حامد شاہ تقریر کے لیے آرہا ہے اور وہ سیدنا امیر معاویہ سے بغض رکھتا ہے۔

میں ایسے جلسوں کی "صدارت" نہیں کرتا، اِن کا "سَدارَد" کرتا ہوں۔

سبحان اللہ! ہمارے اسلاف کتنے کامل الایمان تھے۔

اللہ کریم ہمیں بھی ان کے نقش قدم پر چلنے کی توفیق عطا فرمائے!

## سنی بریلوی

میرے بچوں کے اتالیق نے انھیں یہ بات ازبر کرادی ہے کہ:

ہم مسلمان، سُنی بریلوی ہیں۔ ان سے جب بھی پوچھا جائے کہ تم کون ہو؟

تو کہتے ہیں: مسلمان سنی بریلوی۔

ان کا جواب سن کر میرا دل ٹھنڈا ہو جاتا ہے اور میں کہتا ہوں:

بیٹا! ملحد، سیکولر، رافضی اور نیچری بھی خود کو مسلمان کہتے ہیں، جب کہ ان کے بعض عقائد و نظریات کافروں جیسے ہیں۔

اگر سچے مسلمان کی پہچان کرنی ہو تو آپ کو دیکھنا ہوگا کہ وہ "سُنی" مسلمان ہے یا نہیں۔

پھر۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ بعض سنی کہلانے والے بھی آج کل تفسیقی، تفضیلی اور صلح کلی وغیرہ بن چکے ہیں۔

اس لیے ہمارے ملک میں سچے سنی کی پہچان "سُنی بریلوی" سے ہوتی ہے۔

اگرچہ اہل سنت میں بہت ساری نسبتیں رائج ہیں، مثلاً: ماتریدی، اشعری، قادری، چشتی، نقشبدی وغیرہ۔

لیکن یہ سب نسبتیں بدمذہب لوگ استعمال کر کے معاملہ مشتبہ کرنے لگے ہیں۔

اس لیے برصغیر کے اکابر علما نے "بریلوی" لفظ کو سچے اہل سنت کی پہچان قرار دیا، کیوں کہ بدمذہب یہ نسبت استعمال نہیں کرتے۔

اس لیے بہ وقتِ ضرورت خود کو "سنی بریلوی" کہنا ضروری ہو جاتا ہے۔

یاد رکھو! بریلوی ایسے راسخ العقیدہ سُنی مسلمان کا تشخص ہے جو رسول پاک ﷺ کی حد درجہ تعظیم کرے، اور سب کچھ آپ پر قربان کر کے کہے:

دِل ہے وہ دِل جو تری یاد سے مَعمور رہا

سر ہے وہ سر جو ترے قدموں پہ قربان گیا
انھیں جانا انھیں مانا نہ رکھا غیر سے کام
للہِ الحمد میں دُنیا سے مسلمان گیا!!

## بریلوی!!

ایک ہندستانی بادشاہ کو "سنگترے" کے نام پر اعتراض ہوا۔
اس کے مطابق: چوں کہ "سنگ" پتھر کو کہتے ہیں، اس لیے پھل کے لیے یہ نام غیر موزوں ہے!
اس نے منادی کروادی کہ آئندہ سے سنگترے کو رَنگترہ کہا جائے گا۔
چوں کہ وہ بادشاہ تھا (اس کا حکم نافذ ہوا اور) اس کی زندگی تک لوگ سنگترہ کو رنگترہ کہتے رہے، لیکن اس کی موت کے بعد رنگترہ دوبارہ سنگترہ ہو گیا۔
(دیکھیے: تیسرا جنم، ت ڈاکٹر خالد جمیل اختر، ص52، م زیب پبلشر زلاہور، س2015ء)
اسی طرح پاکستان میں نعرہ تحقیق: حق چار یار لگایا جاتا ہے۔
کچھ عرصہ پہلے اس نعرے کا شدومد سے، یہ کہ کر انکار کیا گیا کہ:
یہ دیوبندیوں کا وضع کردہ ہے۔
اس پر مناظرے ہوئے، مباحثے ہوئے، لیکن نعرہ جوں کا توں ہی رہا۔
جو الفاظ، خاص مفاہیم کے لیے عوام و خواص میں رائج ہو جاتے ہیں، وہ جہاں سے بھی آئے ہوں، وقت ان پر مہر تصدیق ثبت کر دیتا ہے۔
انھیں بدلنے والے منطقی، فلسفی خود بدل جاتے ہیں لیکن وہ نہیں بدل پاتے۔
نمک دانی کو نمک دانی اس لیے کہتے ہیں کہ اس میں نمک ہوتا ہے، اور صابن دانی کا نام اس لیے صابن دانی پڑا کہ اس میں صابن رکھا جاتا ہے۔
مگر۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ مچھر دانی تو مچھر رکھنے کے لیے استعمال نہیں ہوتی، اسے کیوں مچھر دانی کہا جاتا ہے؟؟!!
کوئی منطقی جتنا چاہے سر کھپا لے، مچھر دانی، مچھر دانی ہی رہے گی۔
سچے مسلمانوں کو اہل سنت کہا جائے اور سچے اہل سنت کو بریلوی؛ تو کوئی جتنا چاہے اعتراض کر لے، یہ اصطلاحیں بدلنے والی نہیں؛ وقت نے ان پر مہر جو لگا دی ہے۔ آج ایک پورا فرقہ معرض وجود میں آگیا، جو کہتا ہے:
خود کو صرف مسلمان کہو، جب اللہ نے "سَمّٰکُمُ الْمُسْلِمِیْنَ" کہ کر تمھارا نام مسلمان رکھا تو تم خود کو سنی وغیرہ کیوں کہتے ہو!
اور اسی طرح اہل سنت میں کچھ "ذی شعور" ایسے ہیں جو لفظِ بریلوی کو اہل سنت کی ضد سمجھے بیٹھے ہیں۔

یہ محض لفظی نزاع ہے، جو بے کار پر اصرار ہے۔
آپ نہر پر کھڑے ہوں اور کوئی "ذی شعور" آکر پوچھے:
میاں یہ نہر کہاں جاتی ہے؟
آپ کہیں: دریا میں۔
تو وہ کہے گا: عقل سے کام لو، نہر کہیں بھی نہیں جاتی، اس کا پانی دریا میں جاتا ہے۔
اسی طرح سڑک پر کھڑے شخص سے پوچھے کہ یہ سڑک کہاں جاتی ہے، اور وہ کہے: اسلام آباد۔
تو "ذی شعور" صاحب کہیں گے:
سڑک تو جب سے بنی ہے یہیں ٹھہری ہے، کہیں نہیں گئی؛ اپنے الفاظ درست کرو! سڑک پر صرف مسافر اسلام آباد جاتے ہیں۔
اب آپ ایسے "ذی شعور" کو کیا کہیں گے!!
جو نام اس ذی شعور کے شعور کو دیں گے، وہی نام لفظِ بریلوی سے چِڑ کھانے والوں کو دے کر، سلام پیش کر دیں۔

## میلاد شریف کی خوشی

قاسم سردار بڑا پیارا ہے، کبھی کبھی کوئی سوال پوچھ لیتا ہے۔
پرسوں کسی نے اُسے وسوسہ ڈالا کہ:
کیا میلاد شریف کی خوشی میں گلیاں بازار سجانے اور لائٹنگ کرنے کا کسی حدیث سے ثبوت ملتا ہے؟
میں نے اُسے کہا:
قاسم! جس نے تجھ سے یہ بات کہی ہے اسے کہو کہ:
اونچی مسجدیں بنانے، ان پر مینار نصب کرنے اور زیبائش و زینت کے لیے ٹائل پتھر لگانے کا ثبوت کس حدیث سے ملتا ہے؟؟
رسول اللہ ﷺ تو فرماتے تھے:
مجھے مسجدیں بلند کرنے کا حکم نہیں دیا گیا۔ (سنن ابوداود، ر448)
سیدنا ابن عباس فرماتے تھے:
تم مسجدیں ایسے سجاؤ گے جیسے یہودی اور عیسائی سجاتے رہے۔ (ایضًا)
تمھیں وہ جو جواب اس سوال کا دے گا، وہی جواب میلاد مصطفی پر سجاوٹ کرنے کا ہو گا۔
اللہ پاک نجدیوں سے ہمارے ایمان محفوظ رکھے، اِن کے سوالوں کے جواب دینے سے پہلے، اِن پر بھی کوئی علمی سوال کیا

کریں۔ ؎

ذِکر روکے ، فضل کاٹے ، نَقص کا جویاں رہے
پھر کہے مَردَک کہ ہوں اُمّت رسول اللہ کی

## کیسے تسلیم کرلیا جائے گا۔۔۔۔۔!!

ایک شخص نے امام جعفر صادق رضی اللہ عنہ سے عرض کی:
میں نے خواب دیکھا ہے کہ حضور پُر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مجھے مے کشی (شراب نوشی) کا حکم دیتے ہیں۔
امام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا:
حضور نے مے کشی سے نَہی (ممانعت) فرمائی، تیرے سُننے میں اُلٹی آئی۔
(فتاوی رضویہ شریف، ج5، ص100)

اگر کوئی شخص یہ دعویٰ کرتا ہے کہ میرے خواب میں رسول اللہ ﷺ نے آکر یہ یہ فرمایا ہے، تو ہم اُس کے خواب کو آقا کریم ﷺ کی ظاہری تعلیمات کے مطابق پرکھیں گے، اگر ان کے موافق ہوا تو درست تسلیم کریں گے، ورنہ خواب دیکھنے والے کی غلطی قرار دیں گے۔
ایسی تو حدیث بھی تسلیم نہیں کی جاتی جو رسول اللہ ﷺ کی تعلیمات کے منافی ہو، چاہے اسے بیان کرنے والے راوی ثقہ ہوں؛ تو فردِ واحد کا خلافِ شرع خواب کیسے تسلیم کرلیا جائے گا۔۔۔۔۔!!
ہر خیر اور بھلائی کی توفیق اللہ کریم کی طرف سے ہے، وہی ہمیں سیدھی راہ دکھانے والا اور اس پر قائم رکھنے والا ہے۔

## مقامِ ابراہیم کو بوسہ

بعض خوش عقیدہ مسلمان جب بیت اللہ شریف کا طواف کر لیتے ہیں تو مقامِ ابراہیم کو بوسہ دے کر، آنکھوں سے لگاتے ہیں۔
یہ محبت بھرا فِعل ہے، جس سے منع کرنے کا کسی کو حق حاصل نہیں۔
بعض لوگوں کا اِسے حرام و بدعت کہنا، کھلی "فِکری دہشت گردی" ہے۔
[1] اگر مقام ابراہیم کو بوسہ دینا حرام ہے تو اُسے سونے کی جالی میں بند کرکے ، شیشہ چڑھانا کیسے حلال ہوگیا ؟؟ پھر۔۔۔۔۔۔
طُرفہ یہ کہ:
[2] جہاں سیدنا ابراہیم علیہ السلام کے پاؤں مبارک کے نِشانات ہیں، اُن پر آیت الکرسی لکھی ہوئی ہے، وہ کیسے حلال

ہوگئی؟؟

[3]جب اِن کاموں کا آثار و سنت میں کوئی ثبوت نہیں ہے، تو پھر انھیں کیوں برقرار رکھا ہوا ہے؟؟

اگر کوئی شخص آپ کو مقامِ ابراہیم کا بوسہ لینے سے منع کرے، تو اُس سے یہ تین سوال ضرور کیجیے گا!!

## تفضیلی

پیر نصیر الدین نصیرؔ گولڑوی نے ایک شعر کہا۔

دے کے بستر کردیا تھا فیصلہ ہجرت کی شب
عقل کا اندھا ابھی ترتیب کے چکر میں ہے

مطلب: ہجرت کی رات رسول اللہ نے حضرت علی کو اپنے بستر پر سلا کر گویا یہ فیصلہ کر دیا تھا کہ میرے بعد علی ہے۔

لیکن عقل کے اندھے (ائمہ اہل سنت) ابھی بھی ترتیب افضلیت (کہ علی کا چوتھا نمبر) لیے بیٹھے ہیں۔

اس شعر میں نصیرؔ نے تفضیلی مذہب کی ترجمانی کی ہے، اور دلیل بھی انھی والی دی ہے۔

اس کا علمی و فنی جواب تو کئی طرح سے دیا جاسکتا ہے، اور ہمارے علما نے دیا بھی ہے؛ لیکن جو جواب مولانا محمد عاصم صدیقی حفظہ اللہ نے دیا ہے وہ لاجواب ہے۔ مولانا تک جب یہ شعر پہنچا تو انھوں نے اس کا پہلا مصرع بدل کر نصیر صاحب کو یوں ارسال کیا۔

ثانیِ اثنین کا ہے فیصلہ قرآن میں
عقل کا اندھا ابھی ترتیب کے چکر میں ہے

مطلب: ہجرت کی رات رسول اللہ صدیق اکبر کو اپنے ساتھ لے گئے تھے تو اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ نے قرآن پاک میں حضرت صدیق کو نبی کا "دوسرا" کہا، یعنی سرکار صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم کے بعد جس کا سب سے پہلا نمبر ہے۔ گویا رب تعالی نے نبی کے بعد صدیق کو پہلا نمبر دے دیا، لیکن عقل کے اندھے (تفضیلی) کو ابھی بھی سمجھ نہیں آرہی، وہ رب تعالیٰ کی عطا کردہ ترتیب کے خلاف مولا علی پاک کو پہلا نمبر دینے کے چکر میں ہے۔

## صرف اور صرف اللہ و رسول

اہل سنت کے ہاں نہ اہلِ بیت کو صحابہ کی وجہ سے مانا جاتا ہے، نہ صحابہ کو اہل بیت کی وجہ سے۔

ان ہستیوں کو صرف اور صرف اللہ و رسول کے لیے مانا جاتا ہے۔

امام نبھانی رحمہ اللہ فرماتے ہیں: اے عاقل و مُنصِف مومن! تجھ پر مخفی نہیں رہنا چاہیے کہ:

بلا شبہہ ہم سیدنا علی المرتضی سے محبت اللہ و رسول کے لیے کرتے ہیں، اور اسی طرح تمام اہل بیت اور جمیع صحابہ سے محبت

محض اللہ اور اس کے رسول کے لیے کرتے ہیں۔

(اسالیب البدیعة فی فضل الصحابة واقناع الشیعة مع شواهد الحق، فصل فی شوؤن رؤسا الاصحاب الذین خالفوا علیا رضی الله عنه عنهم و طلحة۔۔۔۔۔۔۔۔۔، ص399)

اللہ پاک راہِ راست سے بھٹک جانے والوں کو ہدایت دے، اور ہمیں صراط مستقیم پر قائم رکھے؛ نجات صرف اور صرف اتباعِ اہل سنت میں ہے۔

## ہمارا مزاج

ہمارا مزاج ساری دنیا سے الگ ہے، ہم اپنے نبی سے اتنی محبت کرتے ہیں، اتنی محبت کرتے ہیں، اتنی محبت کرتے ہیں ۔۔۔۔۔۔۔ جو لفظوں میں بیان ہی نہیں کی جاسکتی۔ ہم اپنے آقا ﷺ سے منسوب ہر چیز کو عزت کی نظر سے دیکھتے ہیں ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ جن چیزوں سے حضور نے محبت فرمائی اُن سے خاص اُنس رکھتے ہیں۔ بعض شاطر اسی عقیدت سے فائدہ اٹھا کر ہمیں بلیک میل کرنے لگ جاتے ہیں۔

بلیک میلروں سے بچنے کے لیے ضروری ہے کہ حضور ﷺ کی ذات پاک کو ہی معیار سمجھا جائے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ جس سے محبت و مودت کریں، جس کا ادب و احترام کریں، جس کی تعریف و توصیف کریں حضور ہی کے لیے کریں۔

مثلاً: صحابہ کرام سے اس طرح محبت کا اظہار نہ کریں کہ انھیں بات بات میں اہلِ بیت پاک کے مقابل لا کھڑا کریں، اہلِ بیت پاک کے ذکر کو کم کرنے کے لیے ان کا بار بار تذکرہ کریں ۔۔۔۔۔۔۔۔۔ کیوں کہ یہ طرز خارجیوں اور ناصبیوں کی تو ہو سکتی ہے حضور ﷺ کے سچے غلاموں کی نہیں ہو سکتی۔ اِسی طرح: اہلِ بیت پاک کا ذکر اِس لیے کرنا کہ صحابہ کرام کا ذکر مٹایا جائے، صحابہ کو ان کے مقابلے میں معاذاللہ حقیر قرار دیا جائے ۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔ رافضیت و تفضیلیت ہے، حبیبِ پاک ﷺ کے عاشقوں کی "روشِ سُنیت" نہیں۔

## صحابہ کرام سے بغض

پاک و ہند کے مسلمانوں کے عظیم رہنما حضرت مجدد الف ثانی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں:

بدعتی کے پاس بیٹھنے کا فساد کافر کے پاس بیٹھنے سے زیادہ ہے، اور سارے بدعتی فرقوں میں بدترین وہ ہیں جو صحابہ کرام سے بغض رکھتے ہیں؛ اللہ پاک نے خود قرآن مجید میں لیغیظ بھم الکفار فرما کر اُن کا نام "کُفّار" رکھا ہے۔

(مکتوبات امام ربانی، دفتر اول، حصہ دوم، مکتوب 54، ص28)

آج صحابیِ رسول سیدنا امیر معاویہ کا یوم تھا، خوش بختوں نے تو سرورِ عالم نور مجسم ﷺ کی نسبتِ صحبت کا لحاظ رکھتے ہوئے آپ کو ایصال ثواب کیا ہوگا، لیکن بدبخت لِيَغِيظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ کے مصداق بنے، جل رہے ہوں گے۔

اللہ پاک جَلَّ جَلَالُہٗ امام حسن رضی اللہ عنہ کے طفیل ان کی جلن سے عاشقانِ رسول کو محفوظ رکھے!

## رفض

امام اہل سنت حضرت امام شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں:

جب ہم کسی محفل میں حضرت علی، آپ کی اولاد، اور سیدہ فاطمہ پاک کا ذکر کرتے ہیں تو کہا جاتا ہے:

اے قوم، یہ رافضیوں والی باتیں چھوڑ دو۔۔۔۔۔۔!

میں حفاظت فرمانے والے (رب جَلَّ جَلَالُہٗ) کی طرف سے ایسے لوگوں سے اظہارِ برات کرتا ہوں جو اولادِ فاطمہ کی محبت کو رفض کہتے ہیں۔

(دیوان الامام الشافعی، قافیۃ الیاء، حب علی وسبطیہ وفاطمۃ، ص183، دار الغد الجدید القاھرہ، 1429ھ)

## اصحابِ رسول پر تنقید

مشہور ولی اللہ حضرتِ بشر بن حارث حافی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے تھے:

سارے لوگوں کو توبہ کی توفیق مل جاتی ہے، مگر اصحابِ رسول پر تنقید کرنے والوں کو نہیں ملتی؛ کیوں کہ اللہ جَلَّ جَلَالُہٗ نے اُن سے توبہ کی توفیق سلب کرلی ہے۔

(انظر: المجالسة وجواهر العلم، ج7، ص397، ر2816)

خواجہ غلام حسن نقشبندی (پیر سواگ) رحمہ اللہ م1358ھ، صاحبِ کشف وکرامت ولی گزرے ہیں۔

آپ رحمہ اللہ کے دستِ مبارک پر ہزاروں ہندو مسلمان ہوئے، اور لاکھوں لوگوں نے توبہ وبیعت کی۔

آپ فرماتے تھے: ہندو کی مثال اُس درخت کی طرح ہوتی ہے جس کا تنا سَڑ چکا ہو، لیکن جڑیں ہری ہوں؛ اور (ان جڑوں میں تبلیغِ دین کا) پانی ڈالنے سے تنے کے ہرا ہونے کی امید ہوتی ہے۔ لیکن رافضی کی مثال اُس سڑے ہوئے درخت کی طرح ہے جو جڑوں سمیت سَڑ گیا ہو، اور پانی کی وافر مقدار بھی اسے ہرا نہ کرسکتی ہو۔ یہی وجہ ہے کہ میرے ہاتھوں پر تیرہ سو کراڑ (بدترین ہندو) مسلمان ہوگئے لیکن ایک بھی شیعہ تائب نہ ہوسکا۔

ہم اللہ تعالیٰ سے ایمان وعافیت کا سوال کرتے ہیں اور رفض وکفر سے اُس جَلَّ جَلَالُہٗ کی پناہ چاہتے ہیں۔

## یہ ناصبیت نہیں

ایک شاگرد نے کہا:

"جب ہم حضرت امیر معاویہ کا ذکر کرتے ہیں، یا جمل وصفین میں شامل تمام صحابہ کرام کو خیر سے یاد کرتے ہیں تو فلاں

مولوی صاحب ہمیں ناصبیت زدہ اور ناصبی فکر والا کہتے ہیں، ان کا کیا کیا جائے؟"

میں نے عرض کی:

اگر صحابہ کرام کا ذکرِ خیر کرنے، اور جملہ شرکاے جمل وصفین کے لیے جنابِ الٰہی سے خیر کی امید رکھنے کی وجہ سے کوئی مولوی صاحب آپ کو ناصبی کہتے ہیں تو رنجیدہ خاطر نہ ہوا کریں، بلکہ یہ سمجھ لیا کریں کہ:

مولوی صاحب کا شمار ان لوگوں میں ہوتا ہے جنھیں "اپنے پیر و مرشد" کی طرف سے ایسی باتوں کی تلقین کی جاتی ہے۔

(اِنَّ الشَّیٰطِیْنَ لَیُوْحُوْنَ اِلٰٓی اَوْلِیٰٓـِٕهِمْ)

اور ایسی باتوں کی مرزا قادیانی کو بھی تلقین کی جاتی تھی تو وہ مسلمانوں کے خلاف یاوہ گوئی کرتا رہتا تھا۔

آپ سید عالم ﷺ کے صحابہ کا جب ذکر کریں، جہاں ذکر کریں، خیر سے ہی کریں؛ چاہے کوئی بدبخت آپ کو ناصبی کہے یا خارجی۔

جس طرح بعض صحابہ کرام مشاجرات میں شریک ہوئے اسی طرح بعض کنارہ کش بھی رہے، جن میں:

سیدنا سعد بن ابی وقاص، سیدنا عبداللہ بن عمر، سیدنا عمران بن حُصین، سیدنا کعب بن عجرہ، سیدنا ابو بکرہ اور سیدنا معاویہ بن خدیج رضی اللہ عنھم بھی ہیں۔

سیدنا سعد رضی اللہ عنہ کی غیر جانب داری پر تو خود مولی علی پاک بھی رشک کیا کرتے تھے۔

(اعتزل الفتنة ولم يقاتل مع علي و معاوية ثم كان علي يغبطه على ذلك)

اِس لیے جو صحابہ رضی اللہ عنھم شامل نہ ہوئے، یا ہوئے اور جس طرف سے بھی ہوئے۔۔۔۔۔۔۔۔ ہم ان سب کا صحابیِ رسول ہونے کی وجہ سے ہمیشہ احترام ہی کریں گے، اور یہ احترام انشاءاللہ ہماری اخروی فوز و فلاح کا سبب بنے گا۔

## صرف علی علی

حضرت پیر سید مظہر قیوم شاہ (ثانی صاحب) مشہدی رحمہ اللہ سے ایک عالم نے سوال کیا:

کیا وجہ ہے، بعض صوفی صرف علی علی ہی کرتے رہتے ہیں، عثمان و فاروق پاک کا نام نہیں لیتے؟

تو انھوں نے فرمایا:

اُن صوفیوں کی بساط ہی اتنی ہوتی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔

وہ جب مولا علی پاک کا مقام و مرتبہ دیکھتے ہیں تو ادھر ہی انوار و تجلیات میں گم ہو کے رہ جاتے ہیں، آگے نہیں بڑھ سکتے۔

جب کہ اُس مرتبے سے آگے مرتبہ عثمانی ہوتا ہے، پھر اُس سے آگے مرتبہ فاروقی، پھر اس سے بھی آگے مرتبہ صدیقی ہوتا ہے (جو کہ "فیض نبوت" سے مستفیض اولیں درجہ ہے)۔

جو کامل واکمل اولیا ہوتے ہیں، وہی جملہ انوار و تجلیات کی تاب لاسکتے ہیں، اور وہی وردِ علی کے ساتھ ساتھ۔۔۔۔۔۔۔۔ وردِ صدیق وفاروق کرتے ہیں؛ دوسروں کو یہ نعمت نصیب نہیں ہوتی۔

## عید کی نماز

ایک بدمذہب نے عید میلاد النبی کی بابت طنزیہ سوال کیا کہ:

آپ لوگ آج عید کی نماز کیسے اور کس وقت ادا کریں گے؟

میں نے تین بار تعوذ پڑھ کر کہا:

سیدنا عیسی علیہ السلام نے دعا مانگی تھی:

رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا۔

اے ہمارے پروردگار! ہم پر آسمان سے ایک دسترخوان اتار، جو ہمارے لیے اور ہمارے بعد والوں کے لیے عید ہوجائے۔

اللہ کریم نے آپ کی دعا قبول فرمائی، وہ دسترخوان آگیا۔۔۔۔۔۔۔۔ اور عید ہوگئی۔

اب عید ہوجانے کے بعد جس طرح سیدنا روح اللہ علیہ السلام نے "نمازِ عید" ادا کی تھی، اور جس وقت ادا کی تھی، ہم بھی سید عالم، نور مجسم ﷺ کی آمد پر ویسے ہی ادا کرتے ہیں۔

آپ کو اس لیے نظر نہیں آتا کیوں کہ آپ کا تعلق اس طبقے سے ہے جنھوں نے سیدنا روح اللہ علیہ السلام کی "عید" پر شکر ادا نہیں کیا تھا تو خنزیر بنا دیے گئے تھے۔

## وصیت

آج ایک منکر و مبغضِ میلاد النبی سے کہا:

آپ لوگ اپنی محفلوں اور کتابوں میں جب سیدنا معاویہ کا ذکر کرتے ہیں تو ساتھ بڑے ذوق شوق سے آپ رضی اللہ عنہ کی وہ آخری وصیت بھی بیان کرتے ہیں جس میں آپ نے کہا تھا:

"بعد از وصال سیدِ عالم ﷺ کی قمیص مبارک میرے کفن میں، میرے بدن کے ساتھ لگا کے رکھنا، اور حضور کے بال مبارک اور ناخن شریف میرے منھ، آنکھوں اور سجدے کی جگہوں پر رکھ دینا۔"

اب سوال یہ ہے کہ آپ رضی اللہ عنہ نے ایسا کس بِنا پر کہا تھا، اور کیا یہ کام آپ سے پہلے سیدنا صدیق اکبر، سیدنا فاروق اعظم، سیدنا عثمان غنی، سیدنا علی پاک یا دیگر اجلہ صحابہ میں سے کسی نے کیا؟

اگر کسی نے نہیں کیا، اور اللہ و رسول نے اس کا حکم بھی نہیں دیا تو پھر آپ نے کیوں کیا؟

اور طُرفہ یہ کہ آپ رضی اللہ عنہ کی یہ وصیت لکھنے کا حکم نہ اللہ و رسول نے دیا، نہ خلفاے راشدین وعشرہ مبشرہ نے دیا، نہ خود آپ رضی اللہ عنہ نے دیا۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔اس کے باوجود اِس وصیت کو علما و محدثین نے نقل کیا اور کرتے آرہے ہیں ،آخر کیوں ؟؟

(جو جواب اس سوال کا ہوگا، اسی سے اہل سنت کا عید میلاد النبی منانا ثابت ہوجائے گا)

## یارسول اللہ

محدث وفقیہ محمد بن موسی رحمہ اللہ کہتے ہیں:

مجھے ایک نیک شخص نے بتایا کہ:

میں کافروں کے شہروں میں گرفتار تھا، (اللہ انھیں ذلیل کرے) میں جس شہر میں تھا وہاں کے بادشاہ یا اس کے بھائی کا ایک بحری جہاز آیا تو انھوں نے تمام قیدیوں کو اکٹھا کیا، (کہ جہاز کو پانی سے نکال کر کنارے تک لے آئیں) ان قیدیوں کی تعداد تین ہزار سے زیادہ تھی، لیکن جہاز اتنا بڑا تھا کہ سارے مل کر بھی اسے سمندر سے نہ کھینچ سکے۔

آخر ایک شخص بادشاہ کے پاس آیا اور کہنے لگا:

اس جہاز کو صرف مسلمان نکال سکتے ہیں، لیکن شرط یہ ہے کہ وہ (جہاز نکالتے وقت) جو بھی کہیں انھیں روکا نہ جائے۔

انھوں نے ہمیں جمع کیا اور کہا جو چاہے کہو (لیکن ہمارا بحری جہاز کنارے لگادو)۔

ہم ساڑھے چار سو لوگ تھے، ہم نے مل کر "یارسول اللہ!" کہا اور ایک ہی ہلے میں جہاز کو کھینچ کر خشکی پر لے آئے، ببرکۃ استغاثنا بالنبی ﷺ یہ ساری برکت سرکار ﷺ سے مدد مانگنے کی تھی۔

(مصباح الظلام فی المستغیثین بخیر الانام علیہ الصلاۃ والسلام فی الیقظۃ والمنام ،ص114، 115، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

آج بھی اگر کوئی اپنے نبی ﷺ سے مدد مانگتا ہے تو وہ اللہ کی عطا سے اس کی مدد فرماتے ہیں۔

آپ کے مدد فرمانے کے بے شمار واقعات ہیں جو صحابہ، تابعین اور ائمہ دین کے علاوہ ہم جیسے گناہ گار آج بھی ملاحظہ کرتے رہتے ہیں۔

فریاد اُمّتی جو کرے حالِ زار میں
ممکن نہیں کہ خیرِ بشر کو خبر نہ ہو

## مرزا جہلمی

ہر زمانے میں اولیاء اللہ کے کچھ دشمن ہوتے ہیں جو ان پر بہتان باندھتے اور جھوٹ سچ کی آمیزش سے اُن کی رفعتِ شان کم کرنے کی کوشش کرتے ہیں۔ یہ مسلمانوں کے لیے "دجال" کی طرح آزمائش، اور ایمان کا امتحان ہوتے ہیں۔

ہمارے زمانے میں مرزا جہلمی کا شمار بھی ایسے حرماں نصیبوں میں ہوتا ہے۔
یہ صرف اولیا کرام کا ہی گستاخ نہیں، صحابہ کرام پر بھی طعن کرنے سے باز نہیں آتا۔

اس نیم خواندہ اور چرب زبان شخص کا دیگر علماے اہل سنت کے علاوہ قبلہ مفتی راشد محمود رضوی صاحب بھی خوب رد کر رہے ہیں، اللہ کریم ان کی مدد فرمائے اور انھیں حق پر قائم رکھے۔

قبلہ مفتی صاحب مستند، علمی، فکری اور سنجیدہ و متین عالم دین ہیں؛ آپ مرزا صاحب کے اول فول سن کر بھی سنجیدگی و متانت کو ہاتھ سے نہیں جانے دیتے۔

جو لوگ مرزا کی تلبیس کا شکار ہیں یا اس کی باتوں سے تشویش میں مبتلا ہیں وہ قبلہ مفتی صاحب کو سنیں انشاء اللہ اصلاح ہوگی
۔

اللہ پاک علماے اہل سنت کی حفاظت فرمائے، انھیں فتنوں کی سرکوبی کے لیے مستعد رہنے کی توفیق بخشے؛ اور عوام اہل سنت کو ہر فتنے سے محفوظ رکھے!

# آخری باب: سفرنامے

اس باب میں مختلف مقامات کے سفرنامے ہیں۔

# سفر میں گیم

دو مثالیں

﴿1﴾ چند دن پہلے ایک بزرگ عالمِ دین عمرہ شریف کرنے گئے ہیں۔ میں نے انھیں دیکھا کہ تقریباً ایک ماہ تک دن رات ایسی کتابوں کا مطالعہ کرتے رہے جو مکہ، مدینہ شریف اور عمرے وغیرہ کے احکام پر تھیں۔ یہ نہیں کہ وہ پہلی بار عمرے پر گئے ہیں، انھیں بنیادی معلومات کی ضرورت تھی؛ بلکہ پہلے بھی کئی دفعہ حج، عمرے ادا کر چکے ہیں اور انھوں نے احکامِ حج و عمرہ پر کتاب بھی لکھی ہے۔ اب نئے سِرے سے بیسیوں کتابیں اور ابواب پڑھنا صرف محبت علم و تحقیق ہے۔

﴿2﴾ میں گجرات سے لاہور جانے والی گاڑی پر سوار ہوا تو میرے ساتھ والی سیٹ پر ایک نوجوان عالم بیٹھے تھے۔ علیک سلیک کے بعد انھوں نے بتایا: میں فقہ میں تخصص کر رہا ہوں۔

اس مختصر سے تعارف کے بعد وہ موبائل پر گیم کھیلنے میں مشغول ہو گئے اور اڑھائی تین گھنٹے کا سفر پورے انہماک سے گیم کھیلتے گزار دیا۔

اللہ کرے ہمارے نوجوان علما اپنے ذوقِ موبائل کو ذوقِ مطالعہ میں تبدیل کر دیں، اور اگر موبائل استعمال بھی کریں تو ذوقِ علم کی آبیاری کے لیے۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔۔!!

# بچی کو اغوا کر لیا

سفرِ مدینہ میں یہ واقعہ پیش آیا کہ:

ہندستان کے ایک سید صاحب ہوٹل کے گراؤنڈ فلور سے اپنے کمرے میں جانے کے لیے لفٹ میں داخل ہوئے تو وہاں ایک عربی فیملی بھی تھی جن کے ساتھ چند سالہ ایک بچی تھی۔ وہ فیملی پہلی منزل پر اتر رہی تھی کہ بچی پیچھے رہ گئی اور لفٹ بند ہونے لگی تو سید صاحب نے اس بچی کو بازو سے پکڑ کر کھینچ لیا تاکہ لفٹ میں نہ آجائے۔ خیر بچی اتر گئی اور سید صاحب ساتویں منزل پر اپنے روم میں چلے گئے۔ تھوڑی دیر ہی گزری تھی کہ ایک شور اٹھا اور پولیس آگئی۔ اُس بچی کی ماں نے شکایت کر دی تھی فلاں حاجی میری بچی کو اغوا کرنے لگا تھا۔

پولیس سید صاحب کو گرفتار کر کے لے گئی اور انھیں پابند سلاسل کر دیا۔

سید صاحب کی وطن واپسی تھی، ان کے ساتھی واپس آگئے لیکن یہ وہیں رہے۔ کچھ دن بعد قاضی صاحب نے انھیں طلب کیا، ان سے صورت حال پوچھی اور ساتھ لفٹ والی ویڈیو بھی دیکھی تو اُن کی سمجھ میں آیا کہ یہ سچے ہیں، بچی کو اغوا کرنے کی اِن کی کوئی نیت نہیں تھی؛ تو انھوں نے سید صاحب کو باعزت بری کر دیا، اور ساتھ کہا:

اگر آپ اس عورت کے خلاف ہتک عزت کا دعوی کرنا چاہیں تب بھی کر سکتے ہیں، معاوضہ لینا چاہیں، لے سکتے ہیں؛ آپ

کی جو سیٹ ضائع ہوئی، کہتے ہیں تو اس کی رقم دلوا دیتا ہوں؛ لیکن سید صاحب نے کہا کہ مجھے کچھ بھی نہیں چاہیے۔
سید صاحب کو محبتِ مدینہ نے صبر کرنا سکھا دیا، خدا کرے ہم بھی سیکھ جائیں!

حرمین طیبین یا جہاں کہیں بھی لفٹ میں داخل ہونے لگیں تو یہ ضرور خیال فرمالیا کریں کہ کوئی اجنبی خاتون تو ساتھ نہیں، اگر ساتھ ہو تو اسے جانے دیا کریں، خود باہر انتظار کر لیا کریں۔ حرمین طیبین میں کسی چھوٹی بچی کے سر پر بھی شفقت سے ہاتھ نہ پھیریں اسی میں عافیت ہے۔۔۔۔۔ یہاں بچوں کے وسیلے سے دعا ضرور کر لیا کریں، یہ رسول اللہ ﷺ کے پڑوسی ہیں۔

## ملک کی فلائٹ

ویٹنگ ہال میں قریب بیٹھے شخص نے پوچھا:
آپ کس فلائیٹ سے جا رہے ہیں؟ میں نے کہا: پی آئی اے سے۔
کہنے لگا: میں پی آئی اے کی سیٹ کروانا چاہتا تھا لیکن بہنوئی نے کہا وہ نہ کروانا، پی آئی اے کے جہاز کریش ہو جاتے ہیں۔
میں نے کہا: جہاز تو ایمرٹس کا بھی کریش ہو گیا تھا اور ترقی یافتہ ممالک کے جدید ترین جہاز بھی کریش ہو جاتے ہیں، یہ کون سی بات ہوئی۔ میرے بھائی! ہمیں اپنے ملک کے اداروں سے پیار کرنا چاہیے، ان کا ایسا نقشہ پیش نہیں کرنا چاہیے جو وحشت کا سبب بنے۔

ہماری تنزلی کا ایک سبب یہ بھی ہے کہ ہم نے ذہنی طور پر قومی اداروں کو تسلیم ہی نہیں کیا؛ ہم جملہ سرکاری اداروں پر بے جا تنقید کے تو ماہر ہیں لیکن ان کی خوبیاں اجاگر نہیں کر سکتے۔ پاکستان ہمارا اپنا ہے، اس کا ہر ادارہ ہمارا اپنا ہے جس کے ساتھ تعاون کرنا ہمارا ملکی فریضہ ہے؛ سرکاری اداروں کو ہر طرح سے مضبوط کریں، ان شاء اللہ ملک مضبوط ہو جائے گا۔

## سلطان قطب الدین ایبک کے مزار پر

آج مجاہد اسلام حضرت سلطان قطب الدین ایبک رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کی قبر انور پر حاضر ہوا۔

وہ قطب الدین ، وہ مردِ مجاہد جس کی ہیبت سے
یہ دنیا از سرِ نو جاگ اُٹھی تھی خوابِ غفلت سے
اُکھاڑیں ہند سے جس نے ستم گاری کی بنیادیں
رکھیں ہر دل میں اسلامی رواداری کی بنیادیں !

قطب الدین ایبک سلطان شہاب الدین غوری رحمہ اللہ کے گورنر تھے، جو آپ کی شہادت کے بعد تخت نشین ہوئے اور سرزمین ہند پر باقاعدہ اسلامی حکومت کا آغاز کیا۔ صد افسوس ہم نے اپنے حقیقی محسنوں کو بھلا بیٹھے؛ شاید یہی

وجہ ہے کہ ہماری قوم میں کوئی دوسرا قطب الدین پیدا نہیں ہوسکا!!

ابوالاثر حفیظ جالندھری جب قبرِ قطب الدین پر حاضر ہوا تو یہ رثائیہ اشعار لکھے، جو ہمارے ضمیروں کو جھنجوڑنے کے لیے کافی ہیں۔ آہ! وہ قطب الدین جو:

یہاں لاہور میں سوتا ہے اک گم نام کوچے میں
پڑی ہے یادگارِ دولتِ اسلام کوچے میں
یہ تُربت ماتمی ہے ان حجازی شہ سواروں کی
مسلمانوں نے مٹی بیچ لی جن کے مزاروں کی
یہاں تک ابرِ باراں کی رسائی ہو نہیں سکتی
گھٹا روتی ہوئی آتی ہے لیکن رو نہیں سکتی
شعاعوں سے یہاں خورشید دامن بھر نہیں سکتا
فلک اس پر ستاروں کو نچھاور کر نہیں سکتا
یہ تربت چادرِ مہتاب سے محروم رہتی ہے
نگاہوں سے چھپی رہتی ہے ، نامعلوم رہتی ہے
یہاں سہرے کہاں ؟ کیا ذکر پھولوں کے چڑھاوے کا !
کوئی سامان نہیں ہے اہلِ ظاہر کے دکھاوے کا!!
نہ پڑھتا ہے یہاں پر فاتحہ کوئی ، نہ روتا ہے
کسے معلوم ہے اس چھت کے نیچے کون سوتا ہے
مرے نزدیک اس تربت سے اب بھی شان ہے پیدا
مزارِ مردِ غازی سے عجب ایمان ہے پیدا
یہی ایمانِ اوجِ زندگی کا قطب تارا ہے
یہی طوفانِ ظلمت میں مسلماں کا سہارا ہے

## سفرنامہ لقمان سے

(میرا کافی وقت سفر میں گزرتا ہے، بعض احباب کے اِیما پر سفرنامہ مرتب کرنا شروع کیا تھا، یہ سطور اسی سے مقتبس ہیں)

بیت اللہ شریف کی زیارت کے بعد:

۱!تربہ ۲خرما ۳رنیہ ۴بیشہ ۵وادی بن اشبھل ۶روضان السلیل
۷زبران ۸خمیس مشیط
(ھراس، الحفایر، الشعبہ، جبل البراعیم، العرقین، مسرہ، شقیب، الجزلات وغیرہ)

پہاڑوں اور صحراؤں میں بہ سلسلہ عملیات پانچ دن اور راتیں گزاریں۔ کچھ دوست معاون رہے جنھوں نے طعام و قیام اور دیگر سہولیات کا بہت خیال رکھا؛ گھنٹوں ساتھ سفر کیا، پہاڑوں اور صحراؤں میں بھی دن رات ساتھ رہے۔
میں جوں ہی وظائف سے فارغ ہوتا جنات کا موضوع چھیڑ دیتے؛ یہ موضوع ان کے لیے خاصہ دل چسپ تھا، میں بھی خوش دلی سے انھیں کچھ آپ بیتیاں اور کچھ جگ بیتیاں سناتا۔ پینتالیس سالہ فہد عبدالرحمن الشھرانی تو تسخیر جنات کے لیے بھی تیار ہوگئے تھے، جنھیں بڑی مشکل سے ٹالا۔ مجھے عملیات کے لیے مخصوص قسم کے پہاڑی علاقے میں جانا تھا، جس کے لیے مقامی رہبر کی ضرورت تھی، میزبان مکرم نے اپنے کچھ دوستوں سے رابطہ کیا جو مجھے وہاں لے جانے کے لیے تیار ہوگئے۔
میں تقریباً تین گھنٹے کے سفر کے بعد ان کے ہاں پہنچا، وہ بڑے پرتپاک طریقے سے ملے "جیسے آج کل عرب ملتے ہیں"، پھر مجھے ساتھ لے کر چل پڑے۔ ہم نماز عشا کے بعد ایک صحرا میں داخل ہوئے، تقریباً دو گھنٹے کے عجیب و غریب سفر کے بعد اس کنویں تک پہنچے، جہاں سے سمت کا تعین کر کے پہاڑی تک پہنچنا تھا۔
جب مطلوبہ مقام تک پہنچے تو انھوں نے مجھے گاڑی سے اتار دیا، میں مصلا وغیرہ لیے اپنی منزل کی طرف چلا گیا۔
فجر کے قریب جب واپس لوٹا تو دیکھا کہ کچھ لوگ پہاڑیوں کی مختلف چوٹیوں پر گھوم رہے ہیں، میں نے پوچھا: اس پہر ان لوگوں کا یہاں کیا کام؟ کہنے لگے: یہ سونا تلاش کر رہے ہیں، یہاں کچھ پہاڑیوں سے سونے کے ٹکڑے برآمد ہوئے تھے جس کی وجہ سے یہ علاقہ قسمت آزماؤں کا مرکزِ نظر بن گیا۔ ہم وہاں سے پلٹے تو فجر کا وقت شروع ہوگیا تھا لیکن پانی کا دور دور تک نشان نہیں تھا، گاڑی میں پینے والے پانی کا کاٹن پڑا تھا، میں نے اسی سے مسنون وضو کیا، جس پر چار چھوٹی بوتلیں استعمال ہوئیں۔
جب وضو سے فارغ ہوا تو دیکھا کہ میرے "چار" سعودی رفقا "ایک" چھوٹی بوتل سے وضو کر کے باجماعت نماز پڑھ رہے تھے؛ حیرانی اور ہنسی کی ملی جلی کیفیت میں مَیں انھیں دیکھتا رہا، میرے ساتھ ایک پاکستانی دوست بھی تھے، وہ کہنے لگے آپ انھیں کرنے دیں جو کرتے ہیں!! میں نے کہا:
یہ لوگ میری بات سمجھیں نہ سمجھیں، میں یہ سمجھنا چاہتا ہوں کہ ایک چھوٹی سی بوتل سے چار بندے کیسے وضو کر لیتے ہیں؛ کیا سفر میں وضو کی بھی قصر ہوتی ہے؟؟
پھر جب ان کے وضو کی حقیقت معلوم ہوئی تو بڑی اماں کی بات یاد آگئی: "کے کولے بدو"
کاشکے! متشدد مطوعوں نے انھیں شرک و بدعت کے علاوہ بھی کچھ سکھایا ہوتا۔

## جبل احد شریف کی زیارت

آج جبل احد شریف کی زیارت نصیب ہوئی تو یاد آیا، میرے آقا ﷺ نے فرمایا تھا:

"احد پہاڑ ہم سے محبت کرتا ہے، ہم اِس سے محبت کرتے ہیں"

محبت وہ پر خلوص جذبہ ہے جو دل میں پیدا ہوتا ہے، اور دل کے اُس گہرے حصے میں، جس کی خود دل کو بھی خبر نہیں ہوتی جو نبی پتھریلے پہاڑ کے دل کی گہرائی میں پیدا ہونے والے جذبے کی نہ صرف خبر رکھتا ہو، بلکہ اُس کا جواب اپنے دل کی گہرائی سے عطا فرماتا ہو وہ اپنے غلام کی محبت کا جواب کیوں نہیں دے گا!!

واللہ! وہ سن لیں گے فریاد کو پہنچیں گے
اِتنا بھی تو ہو ، کوئی جو آہ کرے دل سے

## خوب صورت سفر

کل رات کراچی جانا ہوا، سوچا راستے میں مطالعے کے لیے کوئی کتاب لیتا چلوں سفر اچھا گزر جائے گا، تو لاہور سے حضرت علامہ فقیہ محمد ہاشم حنفی ٹھٹھوی رحمہ اللہ کی کتاب: "السیف الجلی علیٰ ساب النبی" خریدی۔

لاہور سے کراچی آتے جاتے (تقریباً تین گھنٹے میں) اس کے آٹھوں ابتدائی مباحث و دراسۃ الکتاب، (93 صفحات) کا مطالعہ کر لیا۔

حضرت کی سیرت و عقائد پڑھ کر بہت خوشی ہوئی، جس نے سفر خوب صورت بنا دیا۔

ان شاء اللہ آج یا کل تک اس کتاب کو مکمل پڑھنے کی کوشش کروں گا۔

علامہ ٹھٹھوی رحمہ اللہ نے انبیا علیہم السلام کے متعلق ایک عقیدہ بیان کیا ہے:

علما کا اجماع ہے کہ انبیاے کرام علیہم السلام چار گناہوں سے پاک ہوتے ہیں، نبوت و بلوغت سے پہلے بھی اور نبوت و بلوغت کے بعد بھی: کفر، جھوٹ، خیانت، اور وعدہ خلافی سے۔

(السیف الجلی علیٰ ساب النبی، المبحث السادس عقیدتہ و مذھبہ، ص60)

سبحان اللہ! میں نے اِس سے نتیجہ اخذ کیا کہ ہم امتی جس طرح کفر سے بچتے ہیں اسی طرح اگر جھوٹ، خیانت، اور وعدہ خلافی سے بھی بچیں تو ہمیں انبیا علیہم السلام کا نہ صرف قرب نصیب ہو جائے بلکہ زیارت سے بھی مستفیض ہوا کریں!

## سیر و سیاحت

رمضان شریف کے بعد ماہِ شَوّال آتا ہے۔

دیگر مہینوں کی طرح، اس مہینے کا نام رکھنے کی ایک وجہ یہ بھی تھی کہ: عرب، اس مہینے میں سیر و تفریح کے لیے گھروں سے باہر جایا کرتے تھے۔

اسی لیے انھوں نے اس کا نام شوال رکھا، کیوں کہ لفظِ شوال میں "اونٹنی کے دم اٹھانے" کے معنے پائے جاتے ہیں، جو سفر کی طرف اشارہ کرتے ہیں۔

زمانہ قدیم سے یہ رسم آج تک چلی آرہی ہے۔

ہمارے ہاں بھی لوگ اس مہینے میں سیر سپاٹا کرنے مختلف علاقوں کی طرف جاتے ہیں۔

اگر اللہ و رسول کی نافرنی نہ ہو، تو سیر کرنے میں کوئی ہرج نہیں!

سیر، انسانی صحت اور شعور پر اچھے اثرات ڈالتی ہے۔

اگر آپ اکیلے ہیں تو اچھے دوستوں کے ساتھ، اچھے اچھے مقامات کی سیر کو نکلیں، قدرتی مناظر سے لطف حاصل کریں اور اللہ پاک کی تسبیح بیان کریں۔ اگر صاحبِ اولاد ہیں، تو بیوی بچوں کے ساتھ سیر و سیاحت کے لیے نکلیں، وہ آپ کو اپنے ساتھ دیکھ کر قلبی سکون محسوس کریں گے۔

مذہبی حال حُلیے کے لوگ بھی مع اہل و عیال سیر کے لیے جاسکتے ہیں، یہ کوئی قابل گرفت عمل نہیں؛ اس سلسلے میں بالکل احساس کم تری اور عار میں مبتلا نہیں ہونا چاہیے۔

صُوفیِ باصفا، عابدِ بے ریا، شیخ الحدیث علامہ عبدالحکیم شرف قادری رحمہ اللہ جمعرات کو اپنے اہل و عیال سمیت کسی پارک میں چلے جاتے تھے، وہیں رات کا کھانا کھاتے اور نمازِ عشا کے بعد دیر سے گھر لوٹتے۔

اللہ کرے ہم سب ؎

طیبہ کی سیر کو چلیں ، قدموں میں اُن کے جان دیں
دفن ہوں اُن کے شہر میں ، ہے یہی التجا فقط !

## کوہِ حِرَا

کوہِ حِرَا پر رحمتِ عالم ﷺ بڑا عرصہ عبادت کے لیے تشریف لے جاتے رہے۔

اِسی پہاڑ پر جبریل امین علیہ السلام وحی لے کر حاضر ہوئے تھے۔

مسند احمد میں قوی سند کے ساتھ حدیث ہے کہ:

رسول اللہ ﷺ اس پہاڑ پر تشریف فرما ہوئے تو یہ پہاڑ جھومنے لگ گیا۔ (خوشی سے اِس پر وجد طاری ہو گیا کہ میرے اوپر اللہ کے نبی آگئے!!)

(انظر: مسند احمد، ر11580)

سورت مُرسلات شریف بھی اسی پہاڑ پر نازل ہوئی تھی، جسے بعض صحابہ کرام نے یہیں پر رسول اللہ ﷺ سے سیکھا۔

(ایضًا، ر6487)

الحمدللہ آج کوہِ حِرا (جَبَلِ نور) پر جانے کی توفیق ملی۔

ویسے تو سورت مرسلات کئی دفعہ پڑھی تھی، لیکن جو لطف یہاں پر تلاوت کا آیا، وہ لفظوں میں بیان نہیں ہو سکتا۔

عرصہ ہوا طیبہ کی گلیوں سے " وہ گزرے تھے "
اِس وقت بھی گلیوں میں ، خوشبو ہے پسینے کی

## صحرائے تھل

گذشتہ رات صحرائے تھل میں گزاری، بعض اوراد و وظائف کے لیے صحرائی راتیں بڑی موزوں اور پر سکون ہوتی ہیں۔

یہاں ایک خودرو بوٹی ہے جسے لُدّڑی (یا لُدھڑی) کہتے ہیں، اس کا ایک نام "محبت بوٹی" بھی ہے، اور یہ واقعی محبت کی طرح ظالم ہے۔۔۔۔۔۔۔۔۔ پاس سے گزرو تو بدن سے چمٹ جاتی ہے، اتارنے کی کوشش کرو تو کانٹے چُبھتے ہیں؛ اور جب کانٹے چبھتے ہیں تو زبان پہ بے ساختہ جاری ہو جاتا ہے۔

اے محبت تِرے انجام پہ رونا آیا
جانے کیوں آج ترے نام پہ رونا آیا

جہاں صحرا کی گرمی، سردی لاجواب ہوتی ہے، وہیں صحرائی گیدڑ بھی تنگ کرنے میں اپنا ثانی نہیں رکھتے۔

ان آفتوں سے نپٹنے کے لیے صحرانشینوں نے کچھ کتے پال رکھے ہوتے ہیں۔

ایک کتا جسے پَٹھنکا اور پَیوَند کا بولتے ہیں، اس میں خوبی یہ ہے کہ سخت سردی میں بھی صحن میں بیٹھ کر پہرا دیتا رہتا ہے۔

نیز کچھ نر مادہ کتے بھی ہیں، جب انھیں گیدڑوں کے غول کی بھنک پڑتی ہے تو مادہ "بادِ نسیم" کی طرح آواز نکالنا شروع کر دیتی ہے۔۔۔۔۔۔۔۔ گیدڑ اِس "پر سکون" آواز کی طرف متوجہ ہو جاتے ہیں تو نر صاحب خاموشی سے انھیں جا دبوچتے ہیں، اور منظر کچھ یوں بن جاتا ہے۔

رات یوں دل میں تِری کھوئی ہوئی یاد آئی
جیسے ویرانے میں چپکے سے بہار آ جائے
جیسے صحراؤں میں ہولے سے چلے بادِ نسیم
جیسے بیمار کو بے وجہ قرار آ جائے

## مدینہ طیبہ کی طرف روانگی

آج مکہ مکرمہ سے مدینہ طیبہ کی طرف روانگی ہے۔

سیدعالم ﷺ جب سفر سے مدینہ پاک کی طرف لوٹتے تو "دَابَّۃٍ حَرَّکَھَا مِنْ حُبِّھَا" مدینہ پاک سے محبت کی وجہ سے سواری کو تیز کر دیا کرتے تھے۔

(بخاری شریف، ر1802)

ہم مکہ سے مدینہ اگر پیدل جائیں تو تقریباً تین چار دن لگتے ہیں، اور گاڑی پر تین چار گھنٹے۔

اب ایک حرمین ٹرین چلی ہے جو تقریباً دو گھنٹے میں مکہ مکرمہ سے، مدینہ طیبہ پہنچا دیتی ہے؛ اور اِس وقت تک مدینہ منورہ جانے والی یہی سب سے تیز رفتار سواری ہے۔

میں نے تیزی سے مدینہ پاک پہنچنے کے لیے اِس کی ٹکٹ لی ہے، اور عازم مدینہ ہونے لگا ہوں؛ ان شاءاللہ جلدی درِ حبیب تک پہنچ جاؤں گا۔

مجھ سے ناشاد کو پہنچا دے دَرِ احمد تک
میرے خالق ، میرے بچھڑوں کے ملانے والے !

دورانِ سفر "مصارع العشاق" کتاب زیرِ مطالعہ رہے گی جو کہ اپنے زمانے کے فقیہ، محدث، لغوی اور قاری ابو محمد جعفر بن احمد السراج بغدادی م 500ھ کی ہے، اور رات کو ہی بازارِ مکہ سے خریدی ہے۔ بعض لوگ تو اس کتاب کو خطرناک کہتے ہیں، لیکن میری نظر میں یہ مکتبِ عشق کی ایک نصابی کتاب ہے۔ سالک جب اِسے پڑھے گا تو اُسے راہِ عشق پر چلنے کا شعور آجائے گا۔۔۔۔۔۔ اور اُس کا عشقِ الٰہی اور عشقِ رسول محض دعووں کی حد تک نہیں رہے گا۔

اے عشق تِرے صَدقے ، جلنے سے چُھٹے سَستے
جو آگ بجھا دے گی ، وہ آگ لگائی ہے

## مسافر مدینہ محمد بشیر کی ڈائری

حضرت مولانا ابوالنور محمد بشیر رحمہ اللہ سچے عاشق رسول تھے، آپ کی تحریریں اور تقریریں بڑی ایمان افروز ہیں۔

آپ جب دوسری مرتبہ سفرِ حرمین پر روانہ ہوئے تو ایک ڈائری پر اپنا مبارک سفرنامہ لکھتے رہے، اور اس کا نام رکھا "مسافر مدینہ محمد بشیر کی ڈائری"

یہ سفرنامہ عشق و محبت کی ایک داستان ہے، مدینے شریف جانے والوں کو اس کا مطالعہ کرنا چاہیے۔

دِل ہے وہ دِل جو تری یاد سے مَعمور رہا
سر ہے وہ سر جو ترے قدموں پہ قربان گیا

جان و دل ہوش و خِرد سب تو مدینے پہنچے
تم نہیں چلتے رضاؔ سارا تو سامان گیا

## صحرائے طیبہ کی زیارت

آج شہرِ مدینہ کے ایک رہائشی کو ساتھ لیا اور صحرائے طیبہ کی زیارت کے لیے نکلے۔

رنگِ چمن پسند ، نہ پھولوں کی بُو پسند
صحرائے طیبہ ! ہے دلِ بلبل کو تُو پسند

ہم نے اس راستے کا انتخاب کیا جہاں سے رسول اللہ ﷺ گزرا کرتے تھے، اور مولا علی پاک بھی اسی راستے یَنْبُع جایا کرتے تھے۔

کاش ہم اس راستے کی خاک ہوتے اور قدمین شریفین کے بوسے کا شرف پاتے رہتے۔۔۔۔۔۔

دیگر زیارات کے علاوہ۔۔۔۔۔۔۔۔ سیدِ عالم ﷺ کی گزر گاہ میں آنے والے مبارک کنویں دیکھے، ستر انبیاے کرام علیہم السلام کی گزر گاہ دیکھی، جنتی پہاڑ جبل وَرِقان دیکھا، قبیلۂ سیدنا ابوذر غفاری کے آثار دیکھے؛ مقام بدر حاضری دی، جبال الملائکہ دیکھے، اور شہدائے بدر رضوان اللہ علیہم اجمعین کو سلام پیش کیا۔

بدر شریف میں یہ دیکھ کر خوشی ہوئی کہ یہاں قبرستان پر جو لال رومال والے مسلط رہتے تھے اور زائرین کو بے جا تنگ کیا کرتے تھے، وہ اب نہیں، نہ ان کا دفتر موجود ہے؛ زائرین پوری عقیدت و محبت سے آتے ہیں اور بغیر روک ٹوک سلام و دعا کرتے ہیں۔

یہی حال اب الحمدللہ روضہ اقدس پر ہے، آپ بغیر روک ٹوک سلام پیش کر سکتے ہیں، اور لوگوں کے راستے کا خیال رکھتے ہوئے کعبۂ کعبہ ﷺ کی طرف چاہیں تو گھنٹوں رُخ کر کے بیٹھ سکتے ہیں، کوئی لال رومال والا آپ کو اِدھر پشت کرنے پر مجبور نہیں کر سکتا۔

یہاں ہر جگہ میں نے ایک دعا کی ہے، دعا فرمائیں اللہ کریم اسے شرف قبولیت عطا فرمائے!

## ہماری اردو کتابیں:

**(1) بہار تحریر۔عبد مصطفی آفیشل**

علمی تحقیقی اور اصلاحی تحریروں پر مشتمل ایک گلدستہ جس کے اب تک چودہ حصے شائع ہو چکے ہیں۔ ہر حصے میں پچیس تحریریں ہیں جو مختلف موضوعات پر ہیں۔

**(2) اللہ تعالی کو اوپر والا یا اللہ میاں کہنا کیسا؟۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں کئی حوالوں سے ثابت کیا گیا ہے کہ اللہ تعالی کو اوپر والا یا اللہ میاں کہنا جائز نہیں ہے۔

**(3) اذان بلال اور سورج کا نکلنا۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں ایک واقعے کی تحقیق پیش کی گئی ہے جس میں حضرت بلال کے اذان نہ دینے پر سورج نہ نکلنے کا ذکر ہے۔

**(4) عشق مجازی (منتخب مضامین کا مجموعہ)۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں کئی احباب کے مضامین شامل کیے گئے ہیں جو عشق مجازی کے تعلق سے ہیں، عشق مجازی کے مختلف پہلوؤں پر یہ ایک حسین سنگم ہے۔

**(5) گانا بجانا بند کرو، تم مسلمان ہو!۔عبد مصطفی آفیشل**

اس مختصر سے رسالے میں گانے بجانے کی مذمت پر کلام کیا گیا ہے اور گانوں کے کفریہ اشعار بیان کئے گئے ہیں جسے پڑھ کر کئی لوگوں نے گانے بجانے سے توبہ کی ہے۔

**(6) شب معراج غوث پاک۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں ایک مشہور واقعے کی تحقیق بیان کی گئی ہے جس میں حضرت غوث اعظم کی شب معراج ہمارے نبی علیہ السلام سے ملنے کا ذکر ہے۔

**(7) شب معراج نعلین عرش پر۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں ایک واقعے کی تحقیق پیش کی گئی ہے جس میں معراج کی شب حضور نبی کریم علیہ السلام کا نعلین پہن کر عرش پر جانے کا ذکر ہے۔

**(8) حضرت اویس قرنی کا ایک واقعہ۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں حضرت اویس قرنی کے اپنے دندان شہید کر دینے والے واقعے کی تحقیق بیان کی گئی ہے اور ساتھ یہ بھی کہ اللہ کے آخری رسول علیہ السلام کے دندان شہید ہوئے تھے یا نہیں اور ہوئے تو اس کی کیفیت کیا تھی اور کئی تحقیقی نکات شامل بیان ہیں۔

**(9) ڈاکٹر طاہر اور وقار ملت۔عبد مصطفی آفیشل**

یہ رسالہ مجموعہ ہے ان فتاوی کا جو حضرت علامہ مفتی وقار الدین قادری علیہ الرحمہ نے ڈاکٹر طاہر القادری کے لیے لکھے ہیں، یہ فتاوی ڈاکٹر طاہر القادری کی گمراہی ثابت کرتے ہیں۔

**(10) مقرر کیسا ہو؟۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں آپ پڑھیں گے کہ تقریر کرنے کا اہل کون ہے، یہ کس کے لیے جائز ہے اور ایک مقرر کے اندر کون کون سی باتیں ہونی چاہییں۔

**(11) غیر صحابہ میں ترضی۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں کئی دلائل سے ثابت کیا گیا ہے کہ صحابہ کے علاوہ بھی ترضی (یعنی رضی اللہ تعالی عنہ) کا استعمال کیا جا سکتا ہے۔

**(12) اختلاف اختلاف اختلاف۔عبد مصطفی آفیشل**

یہ رسالہ اہل سنت میں موجود فروعی اختلافات کے حوالے سے ہے، اس میں اس بات کا بیان ہے کہ جب کبھی علماے اہل سنت کے مابین کوئی مسئلہ اختلافی ہو جائے تو اس میں کیسی روش اختیار کی جانی چاہیے۔

**(13) چند واقعات کربلا کا تحقیقی جائزہ۔عبد مصطفی آفیشل**

واقعات کربلا کے حوالے سے اہل سنت میں بے شمار واقعات ایسے آ گئے ہیں جو شیعوں کی پیداوار ہیں، اس رسالے میں ہم نے چند واقعات کی تحقیق پیش کی ہے جو کہ اپنی نوعیت کا منفرد کام ہے، اس تحقیقی رسالے میں کئی علمی نکات مرقوم ہیں۔

**(14) بنت حوا (ایک سنجیدہ تحریر)۔کنیز اختر**

عورتوں کی زندگی میں پیدائش سے لے کر نکاح اور پھر بعدہ کے معاملات کی اصلاح کے لیے اس رسالے کو ایک الگ انداز میں لکھا گیا ہے۔

**(15) سیکس نالج (اسلام میں صحبت کے آداب)۔عبد مصطفی آفیشل**

اسلام میں جنسی تعلقات اور اس حوالے سے جدید مسائل پر یہ رسالہ بڑے ہی عام فہم انداز میں لکھا گیا ہے اور آسان ہونے کے ساتھ ساتھ یہ رسالہ دلائل سے بھی مزین ہے۔

**(16) حضرت ایوب علیہ السلام کے واقعے پر تحقیق۔عبد مصطفی آفیشل**

حضرت ایوب علیہ السلام کے متعلق مشہور واقعات کی تحقیق پر یہ رسالہ لکھا گیا ہے، کئی حوالوں سے اصل روایات اور ان کی کیفیت کو انبیا کی عظمت کو مد نظر رکھتے ہوئے بیان کیا گیا ہے۔

**(17) عورت کا جنازہ۔جناب غزل صاحبہ**

عورت کے جنازے کو کون کون دیکھ سکتا ہے؟ کون کون کندھا دے سکتا ہے؟ کیا شوہر کندھا نہیں دے سکتا؟ اور ایسے کئی سوالات کے جوابات آپ کو اس رسالے میں ملیں گے۔

**(18) ایک عاشق کی کہانی علامہ ابن جوزی کی زبانی۔عبد مصطفی آفیشل**

ایک عاشق کی بڑی دل چسپ کہانی ہے جس میں مزاح ہے، تفریح ہے، سبق ہے اور عبرت ہے۔ اس واقعے کو علامہ ابن جوزی کی کتاب ذم الھوی سے لیا گیا ہے۔

**(19) آئیے نماز سیکھیں۔عبد مصطفی آفیشل**

اس کتاب میں نماز پڑھنے اور اس سے متعلق زیادہ سے زیادہ مسائل کو جمع کرنے کی کوشش کی گئی ہے۔ اصطلاحات کو آسان انداز میں بیان کیا گیا ہے، اس کے اگلے حصوں پر بھی کام جاری ہے۔

**(20) قیامت کے دن لوگوں کو کس کے نام کے ساتھ پکارا جائے گا۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں اس بات کی تفصیل بیان کی گئی ہے کہ قیامت کے دن لوگوں کو ماں کے نام کے ساتھ پکارا جائے گا یا باپ کے نام سے

**(21) محرم میں نکاح۔عبد مصطفی آفیشل**

اس رسالے میں بیان کیا گیا ہے کہ ماہ محرم الحرام میں بھی نکاح جائز ہے اور اسے ناجائز کہنا بالکل غلط ہے، محرم میں غم منانا یہ کوئی اسلامی رسم نہیں

اور چاہے گھر بنانا ہو یا مچھلی، انڈہ اور گوشت وغیرہ کھانا سب محرم میں جائز ہیں۔

### (22) روایتوں کی تحقیق (پہلا حصہ)۔عبد مصطفی آفیشل

یہ رسالہ اہل سنت میں مشہور روایتوں کی تحقیق پر مشتمل ہے، اس میں روایتوں کی تحقیق بیان کی گئی ہے۔ صحیح روایتوں کی صحت پر اور باطل روایتوں کے موضوع و بے اصل ہونے پر دلائل پیش کیے گئے ہیں، اس کے اور بھی حصوں پر کام جاری ہے۔

### (23) روایتوں کی تحقیق (دوسرا حصہ)۔عبد مصطفی آفیشل

یہ روایتوں کی تحقیق کا دوسرا حصہ ہے، اس کے اور بھی حصوں پر کام جاری ہے۔

### (24) بریک اپ کے بعد کیا کریں؟۔عبد مصطفی آفیشل

یہ رسالہ ان نوجوانوں کے لیے لکھا گیا ہے جو عشق مجازی میں دھوکا کھا کر اپنی زندگی کے سفر کو جاری رکھنے کے لیے راہ تلاش کر رہے ہیں۔

### (25) ایک نکاح ایسا بھی۔عبد مصطفی آفیشل

یہ ایک سچی کہانی ہے، ایک نکاح کی کہانی، اس میں جہاں اسلامی طریقے سے نکاح کو بیان کیا گیا ہے وہیں اس پر عمل کی کوشش بھی کی گئی ہے، ہے تو یہ ایک کہانی پر اس میں آپ تحقیقی نکات بھی ملاحظہ فرمائیں گے۔

### (26) کافر سے سود۔عبد مصطفی آفیشل

اس رسالے میں آپ پڑھیں گے کہ ایک کافر اور مسلمان کے درمیان سود کی کیا صورتیں ہیں؟ اور ساتھ ہی لون، بینک اور ڈاک سے ملنے والے منافع پر علماے اہل سنت کی تحقیق بھی شامل رسالہ ہے۔

### (27) میں خان تو انصاری۔عبد مصطفی آفیشل

اسلام میں قوم، ذات اور برادری وغیرہ کی اصل پر یہ ایک تحقیقی کتاب ہے، اس مساوات کو قائم کرنے کی ترغیب دلائی گئی ہے، کفو کے مسئلے پر تحقیقی مواد بھی شامل کتاب ہے۔

### (28) روایتوں کی تحقیق (تیسرا حصہ)۔عبد مصطفی آفیشل

یہ روایتوں کی تحقیق کا تیسرا حصہ ہے، اس کے دو حصوں کا ذکر ہم کر آئے ہیں، اس کے چوتھے حصے پر کام جاری ہے۔

### (29) جرمانہ۔عبد مصطفی آفیشل

یہ رسالہ مالی جرمانے کے متعلق لکھا گیا ہے۔ مالی جرمانہ فقہ حنفی میں جائز نہیں ہے اور اسے دلائل سے ثابت کیا گیا ہے۔

### (30) لا الہ الا اللہ، چشتی رسول اللہ؟۔عبد مصطفی آفیشل

یہ رسالہ اولیا کی ایک خاص حالت کے بیان میں ہے جسے "سکر" اور "شطحیات" وغیرہ سے تعبیر کیا جاتا ہے۔ اس تعلق سے اہل سنت کے معتدل موقف کو دلائل کے ساتھ بیان کیا گیا ہے۔ یہ رسالہ ان کے لیے دعوت فکر ہے جو افراط و تفریط کے شکار ہیں۔

### (31) تحقیق عرفان فی تخریج شمول الاسلام۔عرفان برکاتی

یہ اعلی حضرت، امام احمد رضا بریلوی کی کتاب شمول الاسلام پر تخریج ہے۔

### (32) اصلاح معاشرہ (منتخب احادیث کی روشنی میں)۔عرفان برکاتی

اس کتاب میں اصلاح معاشرہ کے لیے احادیث کا انتخاب کیا گیا ہے۔ اصلاح معاشرہ کے حوالے سے یہ ایک اچھی کتاب ہے۔

### (33)کلام عبید رضا۔عبد مصطفی آفیشل

یہ الحاج اویس رضا قادری پاکستانی کے کلام کا مجموعہ ہے۔

### (34)مسائل شریعت (جلد 1)۔سید محمد سکندر وارثی

اس کتاب میں تقریباً سات سو سوال جواب ہیں۔ روزمرہ زندگی میں پیش آنے والے مسائل کثرت سے موجود ہیں۔ فقہ حنفی کی روشنی میں مسائل کو بڑے اچھے انداز میں بیان کیا گیا ہے۔

### (35)اے گروہ علما گہ دو میں نہیں جانتا- مولانا حسن نوری گونڈوی

یہ مختصر سا رسالہ ایک اہم پیغام پر مشتمل ہے کہ علما و عوام سب کو چاہیے کہ لاعلمی کا اعتراف کرنے کی عادت ڈالیں اور جہاں علم نہ ہو وہاں تکلف کر کے جواب نہ دیتے ہوئے کہ دیا جائے کہ میں نہیں جانتا۔

### (36)سفرنامہ بلاد خمسہ - عبد مصطفی آفیشل

یہ ایک سفرنامہ ہے، ہندستان کے پانچ بلاد کے سفر کے احوال پر مشتمل ہے۔ اس کے مطالعے سے جہاں آپ پانچ بلاد کے متعلق معلومات حاصل کریں گے وہیں کئی علمی نکات بھی آپ ملاحظہ فرمائیں گے۔

### (37)منصور حلاج۔ عبد مصطفی آفیشل

یہ مختصر سا رسالہ حضرت منصور حلاج رحمہ اللہ کے حالات پر ہے جس میں علمائے اہل سنت کی تحقیق کو بیان کیا گیا ہے اور حضرت منصور حلاج کے بارے میں رکھے جانے والے نظریات کو پیش کر کے جائزہ لیا گیا ہے۔

### (38)مقام صحابہ امام احمد بن حنبل کی نظر میں

اس رسالے میں علامہ وقار رضا القادری المدنی سلمہ الباری نے امام احمد بن حنبل کے صحابہ کرام کے متعلق نظریات کو پیش کیا ہے اور حضرت امیر معاویہ کے حوالے سے بھی کلام کیا گیا ہے۔

# DONATE

## ABDE MUSTAFA OFFICIAL

**TO DONATE :**

Account Details :
**Airtel Payments Bank**
Account No.: 9102520764
(Sabir Ansari)
IFSC Code : AIRP0000001

**SCAN HERE**

PhonePe G Pay Paytm 9102520764

**OUR DEPARTMENTS:**

enikah
E NIKAH MATRIMONIAL SERVICE

SABIYA
SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

BOOKS
ROMAN BOOKS

PS graphics
PURE SUNNI GRAPHICS
GRAPHIC DESIGNING DEPARTMENT

ACAG MOVEMENT
TO CONNECT AHLE SUNNAT

/abdemustafaofficial
for more details WhatsApp on **+919102520764**

## ABOUT US

**Abde Mustafa Official** is a team from **Ahle Sunnat Wa Jama'at** working since 2014 on the Aim to propagate **Quraan and Sunnah** through electronic and print media.

**We are :**

blogging, publishing books and pamphlets in multiple languages on various topics, running a special matrimonial service for Sunni Muslims.

Visit our official website :

**www.abdemustafa.in**

about thousands of articles & 200+ pamphlets and books are available in multiple languages.

## E Nikah Matrimony

if you are searching a Sunni life partner then **E Nikah** is a right platform for you.

Visit **www.enikah.in**

Or join our Telegram Channel

t.me/enikah (search "E Nikah Service" in Telegram)

Follow us on Social Media Networks :

/abdemustafaofficial

For more details WhatsApp **+91 91025 20764**

OUR BRANDS :

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

enikah E NIKAH MATRIMONY SERVICE

BOOKS ROMAN BOOKS

niii NIKAH AGAIN SERVICE

POWERED BY:

AMO

ABDE MUSTAFA OFFICIAL